किम इल सुंग

हिन्दी संस्करण : फरवरी १९७७

मूल्य : १५ रुपये

मुद्रक : हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, नारायणा फेस-२, दिल्ली-२८
प्रकाशक : अखिल भारतीय भारत-कोरिया मैत्री संघ,
एफ. ६०, भगत सिंह मार्केट, नयी दिल्ली-१

विषय-सूची

पार्टी काम में मुख्य चीज़ है तमाम लोगों को शिक्षित, दीक्षित और एकजुट करना

रिह्योन-री सुंगहो जिला, प्योंगयांग नगर के पार्टी संगठन के साधारण सदस्यों की बैठक में दिया गया भाषण

२३ जनवरी १९६१

साथियो,

इस बार रिह्योन-री पार्टी संगठन के सक्रिय कार्यकर्ताओं के साथ बातचीत करने और आज री पार्टी के साधारण सदस्यों की बैठक में रिपोर्ट और बहस को सुनने के बाद हमने री की स्थिति और आप के काम के बारे में एक आम धारणा बनायी है।

आप की वास्तविक स्थिति की और भी विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए हमें इस बैठक में शामिल होने से पहले दो या तीन प्राथमिक पार्टी संगठनों के सक्रिय कार्यकर्ताओं के साथ वार्तालाप करनी चाहिए थी, प्राथमिक पार्टी संगठन की कम से कम एक आम बैठक में सम्मिलित होना चाहिए था और री पार्टी समिति के सदस्यों के साथ एक या दो बार व्यक्तिगत रूप में बातचीत करनी चाहिए थी। परन्तु परिस्थितियों ने हमें ऐसा करने न दिया। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि हमने वास्तविक स्थिति को पूर्णत: समझ लिया है।

जब पथप्रदर्शन टोली के सदस्य अन्य जिलों या री में काम करेंगे तो निम्न-लिखित प्रक्रियाओं का पालन करना उचित होगा :

सबसे पहले री पार्टी समिति के सदस्यों के जिम्मे यह काम लगाना होगा कि वे प्राथमिक पार्टी संगठनों में जाएं, पार्टी सदस्यों की बैठक बुलाएं और छोंगसान-री भावना को किस प्रकार अमल में लाया गया है,इस बारे में उनके साथ आमने-सामने बैठकर बातचीत करें। उन्हें पहले पार्टी कार्य की उपलब्धियों और त्रुटियों पर विचार करना चाहिए और इसके बाद इस संदर्भ में उत्पादन के क्षेत्र की सफ-

लताओं और कमियों पर विचार करना चाहिए।

यदि आप उत्पादन की असफलताओं के कारणों को पार्टी के त्रुटिपूर्ण कार्य में न खोज कर केवल उर्वरकों या कृषि यन्त्रों को उनके लिए दोषी ठहरायेंगे तो आप समस्याओं को सुलझा न पाएंगे, छोंगसान-री में पार्टी द्वारा निर्धारित कार्यों को स्वीकृत करने में पार्टी सदस्यों की मनोवृत्ति क्या रही थी, उन्होंने किन कार्यों को स्वीकार किया और किन को नहीं, और जिन कार्यों को स्वीकार किया उनमें से किस-किस को पूरा करने में वे विफल रहे, इस बारे में पर्याप्त बहस की जानी चाहिए। इसके पश्चात उनके उत्पादनमूलक कार्यकलाप के गुणों और अवगुणों का विश्लेषण किया जाना चाहिए।

इस प्रकार पार्टी सदस्यों को इस बात की पूरी-पूरी अनुभूति करायी जानी चाहिए कि पार्टी कार्य और वैचारिक चेतना में वह क्या चीज है जिससे उत्पादन में सफलताएं और खामियां प्रकट होती हैं। फिर उन्हें इन प्रश्नों को उठाना चाहिए कि पार्टी की केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन द्वारा निश्चित कार्यों के सम्बन्ध में नये साल में क्या करना होगा और किस काम पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। यदि यह सब करने के बाद प्राथमिक पार्टी संगठन की आम बैठक आयोजित की जाए तो उसे बहुत ही थोड़े समय में सफलतापूर्वक सम्पन्न किया जा सकता है, क्योंकि बैठक में भाग लेने वाले प्रत्येक पार्टी सदस्य को अपने काम के गुणों और अवगुणों की मौजूदगी और कारणों की और आगे पूरा किये जाने वाले कार्यों की पूर्ण जानकारी होगी।

किसी भी बैठक के लिए तैयारी करना हमेशा कठिन होता है, परन्तु यदि समुचित ढंग से तैयारियां की जाएं तो वह सुचारु रूप से चलेगी। यदि तैयारियां अपर्याप्त हों तो भिन्न-भिन्न रायें पैदा हो जाएंगी और फिर बैठक अनिवार्यत: थका देने वाली होगी और लम्बी चलेगी। लेकिन पूरी तैयारियों के बाद होने वाली बैठक अति तीव्र गति से चल सकती है, क्योंकि आमतौर पर प्रत्येक का दृष्टिकोण एक-सा ही होता है।

यह आश्वस्त करने के बाद कि प्राथमिक पार्टी संगठन इस ढंग से अपनी साधारण बैठकें आयोजित करेंगे, री पार्टी समिति को री पार्टी की आम बैठक में पेश करने के लिए अपने सभी सुझावों को इकट्ठा करना चाहिए और अपनी रिपोर्ट तैयार करनी चाहिए। अन्ततः जब री पार्टी की आम बैठक होगी तो वह बड़ी सफल और संक्षिप्त होगी।

ऐसा लगता है कि यहां, रिह्योन-री में री पार्टी की आम बैठक के लिए तैयारियां अपेक्षाकृत भलीभांति की गयी हैं। आज रिह्योन-री पार्टी संगठन की साधारण बैठक में यह देख कर मैं बहुत खुश हुआ हूं कि छोंगसान-री के पथप्रद-

र्शन के वाद एक साल से भी कम समय में हमारे ग्रामीण पार्टी संगठनों के काम में भारी प्रगति की गयी है।

ग्रामीण क्षेत्रों में री पार्टी संगठनों के काम में कौन-से परिवर्तन आये हैं ?

प्रथमतः, प्रमुख कार्यकर्ताओं को अपने-अपने कामों का साफ-साफ ज्ञान हुआ है। पिछले साल जब मैं छोंगसान-री गया था तो मैंने देखा कि कई कार्यकर्ताओं को इस बारे में कम ही जानकारी थी कि पार्टी कार्य का कैसे संचालन किया जाना चाहिए या कृषि कार्य को कैसे संगठित किया जाना चाहिए। लेकिन अब पार्टी समितियों के अध्यक्षगण, सहकारी प्रबन्धमंडलों के अध्यक्षगण, कर्मीदल, नेतागण, जनवादी तरुण लीग संगठनों के अध्यक्षगण और आन्दोलनकर्ता सभी यह समझ गये हैं कि उन्हें क्या करना है और कैसे करना है।

कार्यकर्ता अकेले ही हल्लाशाही मचाने की बजाए अब अपने कार्य को पूरा करने में पार्टी संगठन और धुरी तत्वों का सहारा लेते हैं। जब किसी कार्यदल को किन्हीं कठिनाइयों से दो-चार होना पड़ जाता है तो वह पार्टी की बैठक बुलाता है और पार्टी सदस्यों के उत्साह को उजागर कर तथा कई एक की बुद्धिमत्ता को इकट्ठा कर उनसे जटिल समस्या को सुलझाने में मदद की अपील करता है। यह काम करने का वस्तुतः एक शानदार तरीका है।

यही वह तरीका है, जिसका प्रयोग अतीत में जापान-विरोधी छापामारों ने किया था, और यही वह रास्ता है जिसे जन-सेवा के हमारे जवानों ने शत्रु के साथ मौत को चुनौती देने वाली लड़ाई की पूर्वसंध्या में गोलीबारी के मोर्चे पर पार्टी की बैठक बुलाने में अपनाया था।

जनसाधारण की अक्षय शक्ति में विश्वास रखना, उनका सहारा लेना, उनके साथ विचार-विमर्श करना और उनके विवेक और सृजनात्मक गतिविधि को कार्यरूप में साकार करना—यही क्रांति और निर्माण में हमारी पार्टी की काम करने की अचल पद्धति रही है।

हमारी पार्टी की केन्द्रीय समिति के दिसम्बर १९५६ में आयोजित पूर्णाधिवेशन ने काम के इस ढंग का एक ढांचा तय किया। उन दिनों हमारा देश बहुत ही कठिन स्थिति में था। एक बड़े ही जुझारू संघर्ष द्वारा हम अभी युद्ध से हुई क्षति से बाहर निकले ही थे और अभी उद्योगीकरण की नींवें रखने का काम हाथों में लेने की स्थिति में नहीं थे। उधर पार्टी-विरोधी तत्व पार्टी पर धावा बोलने को उभर रहे थे और उनके साथ ही सिंगमन री हमें "उत्तर की ओर कूच" करने की धमकियां दे रहा था।

इस विकट बेला में हमारी पार्टी तनिक भी दुलमुलपन से काम किये बिना अपने पथ पर दृढ़ता से आगे बढ़ी और अपने समस्त सदस्यों और जनता की देशभक्ति

की भावना को उभार कर दिक्कतों पर विजय पा ली और अब तक के पूरे चार साल महान छोलिमा बढ़ाव जारी रखा।

रिह्योन-री के पार्टी संगठन ने हमारी पार्टी के कामकाज के तौर-तरीके को सही-सही अपनाया और अमल में उतारा है।

पिछले साल अन्तर्पार्टी कार्य के बारे में भी काफी प्रगति हुई है। इससे पूर्व पार्टी समितियों को यह मालूम न होता था कि पार्टी सदस्यों को ठीक ढंग से कैसे काम सौंपे जाएं, लेकिन अब वे प्रत्येक को ठीक ढंग से काम सौंपने में सक्षम हैं और इस प्रकार उन्होंने हमारी पार्टी को काम करने वाली पार्टी में बदल दिया है, ऐसी पार्टी में बदल दिया है जो आगे बढ़ने वाली है। यह एक बड़ी ही महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

कामकाज की एक ऐसी विधि कायम रखना तथा विकसित करना जरूरी है, जिससे प्रत्येक पार्टी सदस्य को काम मिले और उसे गतिविधियों में शामिल किया जाए। प्रत्येक को उसकी प्रकृति और योग्यता के अनुरूप उपयुक्त काम दिये जाने चाहिए। चु-को लियांग ने, जिसका "तीन राज्यों का एक इतिहास" नामक एक प्राचीन गाथा में उल्लेख आया है, जो भी लड़ाई लड़ी, उसी में वह विजयी रहा, क्योंकि वह जानता था कि लोगों का उनके मिजाज और योग्यता के अनुसार कैसे सदुपयोग किया जा सकता है।

सेना में जब कभी स्थिति में कोई परिवर्तन आता है, योग्य प्लाटून नेता अपने जवानों को उनके व्यक्तिगत गुणों और क्षमताओं के अनुरूप उन्हें नये काम सौंपता और उन कामों को पूरा करने के विशिष्ट तरीके तक भी उन्हें सिखाता है। मिसाल के तौर पर जब कोई सर्वेक्षण मिशन भेजना हो तो वह स्थिति के अनुसार मिशन की सर्वोत्तम सफलता को आश्वस्त करने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त व्यक्ति को चुनेगा और उसे सौंपा जा रहा काम विस्तार से समझाएगा। वह उसे बताएगा कि यदि पर्वत का चक्कर लगाना पड़े तो उसे क्या करना होगा, और यदि कोई संकरा मार्ग आ जाए तो किस बात की चौकसी बरतनी होगी और यदि वह किसी पुल के मार्ग पर पहुंच जाए तो किस बात का ध्यान रखना होगा, इत्यादि। यदि प्लाटून नेता इस ढंग से काम का संचालन करेगा तो निश्चिततः कोई विफलता हाथ न लगेगी। लेकिन यदि वह एकदम इसके विपरीत ढंग से काम सौंपता है और अपने आदमियों को उसे पूरा करने तथा शत्रु को पकड़ने की केवल आज्ञा देता है तो उस काम का असफल होना अनिवार्य है।

ठीक यही बात किसी भी कार्यदल के बारे में कही जा सकती है। कार्यदल में कुछ लोग कुशाग्र बुद्धि होते हैं और अन्य मन्द बुद्धि, कुछेक अपनी पीठ पर बोझ ढोने में समर्थ होते हैं और कुछ अन्य धान की रोपाई में कुशल होते हैं। अतएव

कार्यदल नेता को अपने दल के सदस्यों को उन की व्यक्तिगत योग्यताओं और गुणों के अनुरूप उपयुक्त काम सौंपने चाहिए और फिर उन्हें विस्तार से समझाना चाहिए कि धान के पौधे उगने की ठंडा-सांचा विधि क्या है, खेतों में खाद कैसे पहुंचायी जाती है और धान के पौधे कैसे रोपे जाते हैं।

सारे कार्यकर्ताओं को निरपवाद इसी पद्धति से काम करना चाहिए। यदि कोई यह सोचता है कि उस जैसे महत्वपूर्ण व्यक्ति को इन छोटी-छोटी बातों पर अपना दिमाग नहीं खपाना चाहिए तो वह गलती पर है। कोई व्यक्ति जितना ही बड़ा हो, उसे छोटी-छोटी बातों की उतनी ही ज्यादा जानकारी होनी चाहिए और उसे हमेशा मामूली-मामूली मामलों में अभिरुचि लेनी चाहिए।

अब एक दूसरा विषय उठायें। छोंगसान-री में दिये नये हमारे निर्देशों पर अमल के लिए संघर्ष के दौरान बहुत बड़ी संख्या में पार्टी सदस्य सक्रिय हो गये हैं और समस्त पार्टी सदस्यों की सक्रियता और उत्साह में भारी वृद्धि हुई है।

जब पिछले साल मैं छोंगसान-री में था, तो मैंने कई पार्टी सदस्यों का खामियों के लिए अपने दायित्व को दूसरों पर थोपने और अपनी त्रुटियों को स्वीकारने की बजाय दूसरों के दोष ढूंढने का यत्न करते देखा था, लेकिन आज हर कोई कठिन परिश्रम में आगे बढ़ जाने को, पिछड़े रहने वालों को साथ चलाने को और जिन का जीवनस्तर अभी नीचा है, उनका स्तर उठाने को प्रयासशील है। यही नहीं, जिन्हें कभी तिरस्कृत किया जाता था और दुश्मन समझा जाता था, उन लोगों को भी बदलने और हमारी पार्टी के निकटतर लाने के प्रयास किये जा रहे हैं।

पहले जन सेना के जवानों के कुछ परिजन और शत्रु द्वारा मारे गये लोगों के परिवारों के कुछ लोग उन्हें राशन का गल्ला पाने और दूसरों के मूल्य पर जिन्दा रहने के पुराने विचार से ही चिपके थे, लेकिन अब वे दूसरों के लिए आदर्श पेश करने तथा पार्टी और राज्य के हित में और ज्यादा काम करने को अत्यंत कृतसंकल्प हैं। परिणामस्वरूप री पार्टी समिति और सहकारी समिति, जो पहले उन्हें एक मुसीबत और भारी बोझ समझती थीं, अब उनका बड़ा ही सम्मान करने लगी हैं और उनमें से जो जरूरतमंद हैं उनकी सहायता करने का सच्चे मन से प्रयास करती हैं।

अब सहकारी समितियां एक समरस परिवार बन गयी हैं और री पार्टी समिति पूर्णतया एकजुट और जीवन से परिपूर्ण सुदृढ़ जुझारू संगठन बन गयी है।

यह हमारी पार्टी की जन लाइन की एक महान विजय है। समाजवाद और कम्युनिज्म के हमारे निर्माण का उद्देश्य प्रत्येक के लिए समृद्ध जीवन उपलब्ध करना है। यह बिलकुल साफ है कि यह उद्देश्य मात्र मुट्ठी भर लोगों के प्रयास

और बूते से प्राप्त नहीं हो सकता। लाखों श्रमजीवी लोगों के उत्साह और रचनात्मक सक्रियता का सहयोग प्राप्त किये बिना समाजवाद और कम्युनिज्म के निर्माण का लक्ष्य प्राप्त करना असम्भव है।

कामरेड ली सिन जा ने इस सत्य को समझा है और इसे स्वतः एक वास्तविकता में साकार किया है। रिह्योन-री पार्टी संगठन में एक ऐसे आदर्श कम्युनिस्ट लड़ाकू का उभरना उस के लिए निश्चय ही महान गर्व की बात है। हम कह सकते हैं कि कामरेड ली सिन जा रिह्योन-री की किल ह्वाक सिल हैं।

साथी ली सिन जा ने पिछड़े रहने वालों को नयी दीक्षा दे कर उनमें काम करने की स्फूर्ति भरी है। कठिनाई महसूस करने वालों को उन्होंने सहायता और समर्थन दिया और उन्होंने जन साधारण के बीच इस उद्देश्य से शिक्षा, प्रचार और आन्दोलन का कार्य किया कि वे हमारी पार्टी के और भी निकट आकर उस से एकजुट हो जाएं तथा एक मन और मन्तव्य से काम करें। उन्होंने हमेशा अपने कहने के अनुरूप ही काम किया तथा पार्टी और जन-साधारण के सेवार्थ अपने भरसक कोई कोर कसर उठा नहीं रखी और ऐसा करने में उन्होंने अपने कष्टों और कुर्बानियों तक की कोई परवाह न की। उन्होंने हमेशा दूसरों के लिए मिसाल कायम की। हम कह सकते हैं कि वह एक सच्ची कम्युनिस्ट शिक्षिका हैं।

मेरा यह विश्वास है कि रिह्योन-री में कई ली सिन जा हैं और ऐसे साथी सुंगो जिले की अन्य सभी री में विद्यमान हैं।

छोंगसान-री में पथप्रदर्शन के बाद हमारे ग्रामीण क्षेत्रों में कई किल ह्वाक सिल और ली सिन जा—शानदार कम्युनिस्ट शिक्षक—सामने आये हैं। यह हमारी पार्टी द्वारा प्राप्त सर्वाधिक मूल्यवान् सुफल हैं और यह उसकी सर्वाधिक कीमती निधि है।

हमारे पार्टी सदस्यों ने लोगों की विचारधारा को बदलने, उनकी क्रान्तिकारी उमंग को उभारने और आम जनता को क्रान्तिकारी काम के लिए संगठित करने में बड़ी ही योग्यता प्रदर्शित की है और उन्हें अपनी शक्ति में काफी विश्वास हासिल हुआ है। मुझे पूरा विश्वास है कि यदि हमारे सभी पार्टी सदस्य ऐसी ही भावना और भरोसे से आगे बढ़ना जारी रखें तो कोरियाई क्रान्ति निश्चित रूप से विजयी होगी।

सत्य तो यह है कि छोंगसान-री की अपनी यात्रा के बाद मैं हमेशा सोचता था कि कब हमारे देहात में भारी संख्या में सक्रिय सदस्य पैदा होंगे जो सब सुस्त लोगों को बदलेंगे और प्रत्येक को समाजवाद का उत्कट निर्माता बनने की प्रेरणा देंगे। यह बात मेरे मन पर बुरी तरह छायी रही।

जैसा कि आप सब जानते हैं, विदेशी साम्राज्यवादियों के हमलों और दमन

ने हमारे लोगों की वैचारिक चेतना पर लम्बे समय तक अहितकारी असर डाले रखा। भारी संख्या में कोरियाइयों की चेतना करीब ४० वर्ष तक जापानी साम्राज्यवादी शासन के दौरान विषाक्त हुई और मातृभूमि मुक्ति युद्ध में अस्थायी तौर पर पीछे हटने के दौरान अमरीकी दानवों ने, भले ही थोड़े समय के लिए, हमारे लोगों के दिलों में विषैले विचारधारात्मक कीटाणु भरे और इस प्रकार उनमें से कई एक को भ्रष्ट किया।

इन परिस्थितियों में हमारी पार्टी ने लोगों पर साम्राज्यवादियों के हमले और विध्वंस कार्य के वैचारिक कुप्रभावों का उन्मूलन करने, जीर्णशीर्ण विचारों से ओतप्रोत लोगों को नये सिरे से दीक्षित करने और इस प्रकार जीवन के हर क्षेत्र के तमाम लोगों को अपने इर्दगिर्द एकजुट करने की नीति का निरन्तर अनुसरण किया है।

आप ने हमारी पार्टी की इस नीति को अमल में लाने के लिए बड़ी मेहनत से काम किया है। कई वर्षों तक होगा ई, पाक चांग ओक, पाक उइ वान और पाक योंग बिन सरीखे नौकरशाहों ने हमारी पार्टी को अत्यधिक नुकसान पहुंचाया है। अब हमने उनके दुष्प्रभावों का उन्मूलन शुरू किया है। इस विपदा से छुटकारा पाने के लिए हमें सतत और सशक्त संघर्ष करना होगा। बहरहाल, यह एक तथ्य है कि हम इस क्षेत्र में सफल हो रहे हैं। हम कह सकते हैं कि काफी बड़ी संख्या में हमारे कार्यकर्ताओं और पार्टी सदस्यों ने हाल ही में काम करने की वास्तविक कम्युनिस्ट परिपाटी को अपनाना शुरू किया है, जिसमें लोगों पर रौब दिखाने और हुक्म चलाने की बजाय वे उनके बीच जाते हैं, समझा-बुझा कर और शिक्षा देकर उन्हें चैतन्य करते हैं और पिछड़ों का पथप्रदर्शन करते हैं, ताकि वे स्वतः हरावल दस्ते का सदस्य बनने का उद्यम करें।

मैं समझता हूं कि आज जबकि हमारे साथी इतना अधिक आगे बढ़ चुके हैं, वे अन्न उत्पादन में आसानी से दस लाख टन की वृद्धि कर सकते हैं। अन्न उपज में दस लाख टन की बढ़ोतरी के साथ यह प्रश्न जुड़ा हुआ है कि कैसे प्रकृति से संघर्ष कर उस पर विजय प्राप्त की जाए। मेरी राय में यह लोगों को नये सिरे से ढालने की अपेक्षा कहीं अधिक सरल है। लोगों को दीक्षित करने से अधिक कठिन और कुछ भी नहीं है।

लोगों को शिक्षित और दीक्षित करने के इस कठिनतम काम को अब हमारी पार्टी और उसके सदस्यों ने अपने हाथों में ले लिया है। हमारे पार्टी सदस्य न केवल अपनी पार्टी से असीम प्यार और विश्वास करते हैं, बल्कि उन्होंने आम जनता को उसके साथ एकजुट करने के संघर्ष में अपने-आप को समर्पित कर दिया है।

चूंकि हमारे पार्टी संगठन इस काम से निपटने में समर्थ आस्थावान् कम्युनिस्ट लड़ाकुओं की अजेय जुझारू पांतें बन गये हैं, हमें किसी से भी भय नहीं रहा है और कतई कोई भी मुश्किल आगे बढ़ने के हमारे मार्ग को रोक नहीं सकती।

अपने ग्रामीण री पार्टी संगठनों के काम में विगत वर्ष में हुए ऐसे महान परिवर्तनों पर मैं अत्यधिक सन्तुष्ट हूं।

हमने जो ये उपलब्धियां प्राप्त की हैं, वे स्वर्ण या लाखों टन चावल से अधिक मूल्यवान् हैं और उनका किसी भी चीज से सौदा नहीं किया जा सकता।

री पार्टी संगठन ने न केवल अन्तर्पार्टी काम के बारे में और जनता के काम के बारे में क्रान्तिकारी प्रगति की है, बल्कि अर्थतन्त्र के क्षेत्र में अपने कार्य में भी भारी परिवर्तन ला दिया है।

पिछले साल रिह्योन-री ने यह शानदार उपलब्धि प्राप्त की कि अनाज और नकदी के मामले में प्रति कुटुंब का हिस्सा क्रमश, २·०७२ किलोग्राम और ७६४ वोन रहा। इसका अर्थ है कि १९५९ की तुलना में प्रति कुटुंब के अनाज के हिस्से में २.४ गुनी और नकदी में ३.७ गुनी वृद्धि हुई। यह उस रिह्योन-री की हालत है जिसे प्योंगयांग नगर में कोई बहुत अनुकूल परिस्थितियां उपलब्ध नहीं हैं।

क्या ऐसा परिणाम इसलिए निकला कि हमने १९५९ की तुलना में इस बार आप पर विशेष कृपादृष्टि दिखायी? हमने आपके लिए कुछ अधिक नहीं किया। आप के पास वैसी ही भूमि, वैसे ही मकान और वैसे ही लोग रहे हैं। हर चीज अपरिवर्तित रही है। आप कहते हैं कि आप को सफलता प्रधान मंत्री या पार्टी की केन्द्रीय समिति ने दिलायी है। यह सत्य है कि पार्टी की केन्द्रीय समिति की नीति सही रही है। और इसी तरह उस का नेतृत्व भी सही रहा है। वे पहले भी सही थे। इसके बावजूद १९५९ में हालत अच्छी नहीं रही, जबकि १९६० में अच्छे परिणाम निकले। कारण क्या है? कारण इस तथ्य में निहित है कि हमारे पार्टी संगठन, विशेषतः री स्तरीय संगठन और री पार्टी समितियों के अध्यक्ष, प्रबन्धमंडलों के अध्यक्ष, कार्यदलों के नेता-गण, समस्त पार्टी सदस्य, जनवादी तरुण लीग और महिला यूनियन के सदस्य एकजुट हो गये और उन्होंने पार्टी निर्णयों तथा निर्देशों को पूरी तरह कार्यान्वित किया।

यदि पार्टी के निर्णयों और निर्देशों को, चाहे वे कितने ही सही क्यों न हों, पार्टी सदस्यों और जनता द्वारा क्रियान्वित नहीं किया जाता, तो वे कागज के टुकड़ों से अधिक कुछ न होंगे। सब कुछ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ, क्योंकि आप ने हमारी पार्टी नीतियों को अमल में लाने के लिए हार्दिक प्रयास किया।

इस लिए मेरी राय में, आप को पार्टी की केन्द्रीय समिति को धन्यवाद नहीं देना चाहिए, बल्कि अपनी पार्टी की केन्द्रीय समिति की ओर से मुझे आप को

धन्यवाद देना चाहिए।

तथ्य स्पष्टतः प्रकट करते हैं कि काम वहां अच्छा रहा, जहां पार्टी की नीतियों को पूर्णरूपेण कार्यरूप दिया गया, लेकिन जहां ऐसा नहीं हुआ, वहां परिणाम भी ऐसा न निकला।

आखिर यह क्या बात है कि छोंगसान काउंटी के लोग, जो पहले बड़ा ही कठिन जीवन बिताते थे, आज समृद्ध हैं? कारण यह है कि काउंटी पार्टी समिति के अध्यक्ष पर्वतीय क्षेत्रों में पर्वतों का उपयोग करने की पार्टी नीति को कार्यरूप देने में वफादार रहे।

गत वर्ष रियांगगांग प्रान्त कृषि के मामले में असफल क्यों रहा, जबकि अन्य सभी प्रान्तों की हालत अच्छी रही? गत वर्ष रियांगगांग प्रान्त में फसल की उपज कम रही क्योंकि कुछ कांउटियों ने अधिक उपज वाले आलू बोने की बजाए, जैसा कि पार्टी ने निर्देश दिया था, बहुत ज्यादा जौ बोया। रियांगगांग प्रान्त में प्रति छोंगबो आठ टन आलू हुआ, जबकि जौ का अनुपात केवल ३०० किलोग्राम रहा। अब आप देखिए, आलुओं और चावल की विनिमय दर ४ के बदले १ है, इसका अर्थ यह हुआ कि रियांगगांग प्रान्त ने प्रति छोंगबो उत्पादित हर ३०० किलोग्राम जौ के लिए दो टन चावल के बराबर नुकसान उठाया। यह स्पष्टतः पार्टी की नीतियों को अमल में लाने में उनकी असफलता का ही फल है।

तो फिर १९५९ में क्यों हमारे देश में फसल बरबाद हुई? इसके अनेक कारण हैं। एक कारण तो यह है कि कृषि सहकारों, और प्रबन्धमंडलों के अध्यक्ष, जिन्होंने केवल ३० से ४० कुटुंबों के लघु सहकारों का ही संचालन किया था, विलय हुए अधिक समय न हुआ था और इस कारण एकाएक विस्तारित सहकारी अर्थव्यवस्था का समुचित प्रबन्ध करने में समर्थ न थे।

सहकारों ने यह विश्वास करके कई कार्यदल गठित कर लिये कि इससे उनका लाभ होगा।

इसके अलावा दो सर्वाधिक व्यस्त महीनों—मई और जून—में श्रम की बड़ी बरबादी हुई, जब कि युवा लोगों को कृषि कार्य से हटाकर तथाकथित भरपूर फसल के उपलक्ष्य में फुटबाल मैच के लिए इधर से उधर ले जाया जाता रहा। मैच की व्यवस्था उस पतित को चांग उन ने की, जोकि उस समय कृषि मन्त्रालय में एक पद पर तैनात था।

इस बीच कुछ सहकारों ने समुचित कार्य-नियम निर्धारित न किये, कार्य दिवसों का सही-सही आंकलन न किया और अटकलपच्चू ढंग से अपनी फसल का बंटवारा किया। इस प्रकार उन्होंने वितरण के समाजवादी सिद्धान्त का उल्लंघन किया।

यही नहीं, हम कमोबेश कठमुल्लावाद के शिकार हो गये। बाद की फसल के रूप में बोयी गयी सारी की सारी मक्का साइलेज के रूप में रख दी गयी। इस तरह हम न तो तत्काल उसका उपयोग पशुओं के चारे के तौर पर कर सके और न ही वह मनुष्य के खाने के काम आ सकी।

इस के अतिरिक्त बड़े पैमाने पर सिंचाई योजनायें स्थापित की गयीं,—जो कि निश्चिततः आवश्यक थीं—और उनके कारण उस वर्ष कृषि कार्य के लिए हम पर्याप्त प्रयास न कर सके।

अन्तिम विश्लेषण में यह सवाल उठता है कि आखिर दोषी कौन है? आम-तौर पर दोष उन्हीं के सिर आता है जो कृषि का निर्देशन करते हैं। री पार्टी संगठनों और पार्टी सदस्यों के पास ऊपर से मिले निर्देशों का अनुसरण करने के सिवाय और कोई उपाय न था। यही कारण है कि १९५९ में कृषि का ऐसा बुरा हाल हुआ।

छोंगसान-री के पथप्रदर्शन का भारी महत्व इस तथ्य में निहित है कि इसने हमें समय पर ग्रामीण कार्य की खामियों का पता चलाने और उनके सही निदान प्रस्तावित करने के योग्य बनाया।

इस तथ्य के कारण ही, कि हमारी पार्टी का अवाम से निकट का नाता है और तमाम पार्टी संगठन तथा पार्टी सदस्य पार्टी की केन्द्रीय समिति के साथ दृढ़तापूर्वक एकजुट हैं, हम समय रहते ग्रामीण कार्य में त्रुटियों का पता चला पाये और उन्हें सुधारने के लिए उपयुक्त कार्यवाही कर सके।

छोंगसान-री में हमने इस बात पर जोर दिया कि छोटे फार्मों के विलय के बाद जैसे ही सहकारों का आकार विशाल हो, उनके नियोजन कार्य में सुधार लाया जाए और कृषि कार्य पर ध्यान केन्द्रित किया जाए। हमने इस बात पर जोर दिया कि कार्य के मानदण्ड समुचित ढंग से निश्चित करने होंगे और कार्य दिवसों का सही-सही आंकलन करना होगा, सहकारी सदस्यों के स्वैच्छिक उत्साह का अवलंब लेना होगा और साथ ही वितरण के समाजवादी सिद्धांत का कड़ाई से पालन करना होगा, ताकि उत्पादन के लिए उनका जोश बढ़ाया जा सके। हमने जोर दिया कि काउंटी पार्टी समितियों और काउंटी जन-समितियों के कार्य का आमूल-चूल पुनर्गठन किया जाए, ताकि उनके कार्यकर्ता उत्पादन के संगठन और निर्देशन हेतु स्वयं री में जाएं।

खामियों के दूर किये जाने और पार्टी द्वारा निर्धारित उपरोक्त नीति के अमल में लाये जाने का परिणाम यह हुआ कि पिछले साल हमें कृषि उत्पादन में महान विजय प्राप्त हुई।

जैसा कि आप जानते हैं, गत वर्ष पार्टी के विचारधारात्मक और राजनीतिक

कार्य और आर्थिक कार्य, दोनों में भारी परिवर्तन किये गये।

हमने बहुत बड़ी सफलताएं प्राप्त की हैं, लेकिन आत्मतुष्टि का कोई कारण नहीं है। हमारी पार्टी हमेशा विजय से मदमस्त या आत्मतुष्ट होने की विरोधी रही है।

हमारे लिए अभी उत्तरी आधे भाग में समाजवाद के उच्च शिखर पर चढ़ने और देश का पुनरेकीकरण सम्पन्न करने का कठिन क्रान्तिकारी कर्तव्य अधूरा ही है। देश के उत्तरी आधे भाग में समाजवाद के ऊंचे शिखर पर पहुंचने के लिए हमें कृषि क्षेत्र में एक लम्बी छलांग लगानी है। हमें अन्न की उपज ३८,००,००० टन की बजाय बढ़ाकर कम से कम ५०,००,००० टन पहुंचाना है और उसे बढ़ाते-बढ़ाते ६०,००,००० या ७०,००,००० टन के लक्ष्य तक ले जाना है। तभी, जैसा कि हम कहते हैं, देश के उत्तरी आधे भाग में हर कोई चावल पर निर्वाह कर सकेगा। यदि हम उस स्तर को पहुंच जाते हैं, जिसमें हमें चावल और मांस का सूप प्राप्त हो, हमें बढ़िया वस्त्र उपलब्ध हों और हम टाइल की छत वाले मकानों में रहें तो वह स्वर्ग ही होगा।

भविष्य में और अधिक उत्पादन करके हमें ऐसी स्थिति ला देनी चाहिए, जिसमें हर व्यक्ति प्रचुरता और समृद्धि का आनन्दमय जीवन भोगे और साथ ही सुगम और मनोनुकूल ढंग से काम करे। यद्यपि हमने उत्तरी आधे भाग में शोषण करने वाली समस्त संस्थाओं का उन्मूलन कर दिया है, फिर भी अभी हमें अपने श्रमजीवी लोगों को भारी और दुष्कर मेहनत से मुक्त करना शेष है।

इसलिए अब हमारे सामने उत्पादन में वृद्धि करने का महान क्रान्तिकारी कर्तव्य पेश है, ताकि समस्त लोग प्रचुरता का जीवन जी सकें, और साथ ही उत्पादन का यन्त्रीकरण करने का भी क्रान्तिकारी कर्तव्य पेश है, ताकि लोग कठिन और दुष्कर मेहनत से छुटकारा प्राप्त कर सकें। सात-वर्षीय योजना का उद्देश्य ही इसी कर्तव्य को पूरा करना है। इस सम्मानजनक क्रान्तिकारी कर्तव्य की पूर्ति की जिम्मेदारी हमारी मजदूर पार्टी के सदस्यों, कम्युनिस्टों के कन्धों पर ही आती है।

यहां ग्रामीण क्षेत्रों में पार्टी सदस्यों को एक बहुत गुरुतर और महत्वपूर्ण कार्य सौंपा गया है। उन्हें देहात में समस्त कार्य का यन्त्रीकरण करने और कृषि उत्पादन में तेजी से वृद्धि लाने का दायित्व निभाना है और इस तरह कृषकों के जीवन-स्तर को खाते-पीते मध्यम कृषक के स्तर तक बढ़ाना है।

उत्पादन में वृद्धि करने और कार्य को सुकर बनाने के लिए हमें देहाती क्षेत्र में यन्त्रीकरण को बड़ी सक्रियता से आगे बढ़ाना चाहिए। जुताई, खरपतवार की सफाई, फसल कटाई और भूसे से अन्न की गहाई आदि सभी कामों में यन्त्रीकरण लागू किया जाना चाहिए।

यन्त्रीकरण के अतिरिक्त कृषि में रसायनीकरण भी लागू किया जाना चाहिए। रसायनीकरण क्या है? यह कृषि उत्पादन में रासायनिक विधियों का व्यापक उपयोग है। भूमि को उपजाऊ बनाने वाली विविध रासायनिक खादों, तृणनाशकों और अन्य प्रकार के कृषि रसायनों का निर्माण और उपयोग करना—इस सबको रसायनीकरण कहा जा सकता है। हमें हरी खाद चाहिए, लेकिन हम अकेले इसी पर निर्भर नहीं रह सकते। इसलिए हमें देहातों को भारी परिमाण में विविध प्रकार के रासायनिक उर्वरक उपलब्ध कराने हैं। तृणनाशकों का भी उपयोग किया जाना चाहिए ताकि निराई का काम पूरी तरह समाप्त किया जा सके या कम से कम उसे अधिक आसान बनाया जा सके।

हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि भविष्य में धान के पौध की रोपाई की विधि को खत्म करके उसके स्थान पर धनखेतों में सीधे यन्त्रों द्वारा बीज की बुवाई का प्रचलन करना है। अपने देश में धन खेतों के सीमित क्षेत्र की वजह से इस समय हम पौध-रोपाई की विधि काम में लाते हैं और यदि हमारे पास पर्याप्त धान क्षेत्र हों तो हम इस का त्याग कर सकते हैं। यदि उत्तरी आधे भाग में धान क्षेत्र ७,००,०००—८,००,००० छोंगबो हो जाएं, तो हम पौध-रोपाई की वजाय सीधे धान के बीजों से बुवाई कर सकते हैं।

यदि धान के खेत ७,००,००० छोंगबो हों और प्रत्येक छोंगबो की उपज कम से कम ५ टन हो तो चावल की उपज ३५,००,००० टन होगी। तब उत्तरी आधे भाग में सभी लोग चावल पर निर्वाह करने में समर्थ हो जाएंगे। उस चरण में पहुंचने पर हमें धान के पौधों की रोपाई की जरूरत न रह जाएगी। इसकी बजाय हम सिचाई से पूर्व धान क्षेत्रों में सीधे ही बीज की बुवाई करेंगे, खरपतवार को उगने से रोकने के लिए दवाइयों का प्रयोग करेंगे और धान की कटाई के लिए मशीन का इस्तेमाल करेंगे। तव कृषक भी उतनी ही सरलता से काम कर सकेंगे, जितनी सरलता से मजदूर करते हैं।

इस सब को संभव बनाने के लिए हमें कई बातों का अध्ययन करना होगा और अधिक काम करना होगा।

इस वर्ष सर्वाधिक महत्वपूर्ण कृषि कार्य यह है कि दस लाख टन और भी अन्न पैदा किया जाय।

यदि हम अतिरिक्त दस लाख टन अन्न की उपज कर सकें, तो हमारे देश का वार्षिक अन्न उत्पादन ५० लाख टन हो जाएगा। इस का अभिप्राय यह है कि हमें दूसरे देशों से अनाज खरीदने की कोई आवश्यकता न रहेगी और हम चावल की बजाय मशीनें आयात कर और अधिक फैक्टरियां लगा सकेंगे। इससे हम अपने

उद्योग का अतिरिक्त विकास कर सकेंगे और साथ ही अधिक तेजी से कृषि का यन्त्रीकरण और रसायनीकरण कर सकेंगे।

इस तरह स्पष्ट हो जाता है कि अन्न की उपज में दस लाख टन वृद्धि का अर्थ मात्र यह नहीं है कि खाद्यान्न की बहुतायत हो जाएगी, बल्कि इसका अर्थ यह भी है कि यह अपने देश के आर्थिक विकास को बड़ी गति देने का एक अति महत्वपूर्ण क्रान्तिकारी काम होगा।

हमें न केवल अन्न की पैदावार में वृद्धि के लिए प्रयास करना होगा बल्कि पशुधन को भी विकसित करना होगा। पशुधन के विकास से ही मांस की समस्या और उपभोक्ता उद्योग के लिए कच्चे माल की समस्या का समाधान संभव होगा।

यदि प्रत्येक परिवार दो सूअर पैदा करे तो हमारे पास २० लाख सूअर की खालें होंगी, जिनसे ४० लाख जोड़ी जूते बन सकेंगे। चूंकि हम कृत्रिम चमड़े के जूते भी बना सकते हैं, इसलिए हम रबड़ के जूतों की बजाय चमड़े के जूते पहन सकेंगे।

यदि हर कुटुंब दस खरगोश पैदा करे तो हमारे पास एक करोड़ खरगोश की खालें हो जाएंगी, जिनसे बच्चों के लिए ५,००,००० कोट बन सकेंगे। ऐसा होने पर हमारे सब बच्चों को खरगोश के फर के कोट उपलब्ध होंगे। माता-पिता कितने प्रसन्न होंगे, जब वे चमड़े के जूते पहन सकेंगे और अपने बच्चों को खरगोश के फर के कोट पहना कर स्कूल भेज सकेंगे।

यदि उत्तर और दक्षिण के बीच यातायात प्रारम्भ हो जाए और दक्षिण कोरिया के कृषि प्रतिनिधि यहां आ कर हमारे आधुनिक और समृद्ध जीवन का अवलोकन करें तो यह निश्चित है कि वे यांकियों को खदेड़ बाहर करने और जमींदारों का सफाया कर डालने का संकल्प कर लेंगे।

हमारा उपभोक्ता उद्योग अभी भी लोगों की मांगों को पूर्णतया पूरा करने में असमर्थ है। पार्टी ने उसमें दो या तीन वर्षों में आमूलचूल सुधार लाने को कहा है। इस काम को पूर्ण करने के लिए जरूरी है कि कृषि और पशुपालन दोनों में अच्छे परिणाम हासिल किये जाएं और इस तरह बैलों तथा सूअरों की खालें और खरगोश के फर भारी परिमाण में उपलब्ध हों। उसी-स्थिति में पर्याप्त संख्या में चमड़े के जूते, ओवरकोट, पुरुषों की फर की टोपियां, महिलाओं की फर की जैकटें और चमड़े तथा फर की अन्य आवश्यक चीजें बनाना संभव होगा।

हमें यह बात याद रखनी चाहिए कि अच्छी खेती और भारी परिमाण में अच्छी किस्म के उत्पादकों के निर्माण द्वारा हम न केवल अपने जीवन को और अधिक आधुनिक और समृद्ध बना लेंगे बल्कि देश के पुनरेकीकरण में तेजी लाने के क्रान्तिकारी कर्तव्य को भी पूरा कर लेंगे।

खैर, यदि मजदूर पार्टी का कोई सदस्य इसलिए अधिक कड़ी मेहनत करता है कि उसे अधिक चावल मिलेगा, तो हमें समझ लेना चाहिए कि वह अत्यधिक अदूरदर्शी और संकीर्ण मनोवृत्ति वाला है। हमारी पार्टी के सदस्यों को जनता के लिए एक समृद्ध और प्रचुरता के जीवन की प्राप्ति और राष्ट्रीय पुनरेकीकरण के महान कर्तव्य की क्रियान्विति को ही अपने काम का मूल लक्ष्य निर्धारित करना होगा।

यदि हमारे पार्टी सदस्य ऐसे ऊंचे उद्देश्यों की अन्तःप्रेरणा से काम करें तो वे अब तक प्राप्त परिणामों को पर्याप्त समझ कर ढिलाई से कैसे काम ले सकते हैं और आलसी कैसे बन सकते हैं? क्रान्ति के विधाता रुक कर समय व्यर्थ नहीं गुजारते। क्रान्तिकारियों के लिए केवल निरंतर नूतनता और प्रगति ही एक मात्र मार्ग है। निर्भीकता से कठिनाइयों का सामना कर और दिलेरी से उन पर काबू पा कर ही हम क्रान्ति में विजयश्री प्राप्त कर सकते हैं।

यह बात नहीं कि जापान-विरोधी छापामारों ने इसलिए कठिनाइयों और मुश्किलों को वहन किया कि वे किसी स्नेहपूर्ण घर में पारिवारिक जीवन के सुखों से अनभिज्ञ थे। वे मुश्किलों और कष्टों की परवाह न कर अन्त तक इसलिए जूझे, कि उनके सामने जापानी साम्राज्यवाद को कुचलने और देश की स्वतन्त्रता हासिल करने का पवित्र उद्देश्य था। और हम यांकियों के विरुद्ध एक ऐसी दुष्कर लड़ाई कैसे लड़ सकते हैं, यदि हमें केवल अपने लिए निर्विघ्न जीवन में ही दिलचस्पी हो।

हम फिर साम्राज्यवादियों के गुलाम कदापि नहीं बनना चाहते थे, भले ही मृत्यु को अंगीकार करना पड़े। इसीलिए हमने लड़कर विजयश्री प्राप्त की और इसमें हम कभी भी कठोर संकटों के समक्ष नहीं डगमगाये। यदि हमने अपनी जान बचाने के लिए यांकियों के सामने भीरुतापूर्ण आत्मसमर्पण किया होता तो हम अपने आपको दयनीय दशा में ही पाते, उनके कुत्तों और सूअरों से भी अधम दशा में पाते। यह बात दक्षिण कोरिया की वर्तमान स्थिति से सुस्पष्ट हो जाती है। वहां हमारे भाइयों को दुष्ट अमरीकियों द्वारा किये जाने वाले अपमानों को विनीत होकर सहन करना पड़ता है। चाहे यांकी हमारी बहनों के कपड़े उतार कर नंगा कर दें, उनके शरीरों पर रोगन पोत दें और उनके बाल काट दें फिर भी वे मुंह नहीं खोल सकते।

मानव सरीखा जीवन बिताने के लिए दक्षिणी आधे भाग के हमारे देशवासियों को अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके पिट्ठुओं के विरुद्ध मुक्ति संघर्ष में वीरतापूर्वक उठ खड़े होना होगा।

उत्तरी आधे भाग के लोगों को समाजवाद के उच्च शिखर पर पहुंचाने और

अपने दक्षिण कोरियाई देशवासियों को यथाशीघ्र उनकी वर्तमान दुखद स्थिति से त्राण दिलाने के लिए दृढ़ संकल्प से लड़ाई जारी रखनी होगी।

मैंने अब तक उन आम कामों की चर्चा की है, जो आप को पूरे करने हैं।

जहां तक उन विशिष्ट कामों का सम्बन्ध है, जो आपको पूरे करने हैं, वे आम बैठक में पेश रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से बताये गये हैं।

मेरे विचार में आपका यह सुझाव सही है कि आप को और अधिक भूमि कृषि योग्य बनानी चाहिए, और अधिक मक्का की बुवाई करके, जोकि ज्यादा उपज देने वाली फसल है, प्रति छोंगबो उपज में अतिरिक्त बढ़ोत्तरी करनी चाहिए तथा ज्यादा खाद बनानी चाहिए।

अतएव, मैं आपके विशिष्ट कामों का जिक्र न करूंगा। मैं केवल आपकी बहस में उठाये गये प्रश्नों से सम्बद्ध कुछ और नुकतों पर जोर देना चाहूंगा।

रिपोर्ट और बहस में आपने कहा कि शत्रु तत्वों की विध्वंसक गतिविधियों के कई मामले आये हैं परन्तु इस बारे में कोई चर्चा नहीं की गयी कि आपने उनसे कैसे छुटकारा प्राप्त किया। ऐसा प्रतीत होता है कि आपको रिह्योन-री में एक बड़े सिर दर्द का सामना करना पड़ा है। यदि आपने उन्हें कुचल दिया तो यह बहुत अच्छा रहा। आपको उन शत्रु तत्वों अर्थात, उन दुष्टों के विरुद्ध निर्मम संघर्ष करना होगा, जो हमें अपना शत्रु समझते हैं और जो हमारी पार्टी तथा जनता की सत्ता का विरोध करते हैं।

हम कैसे लोग हैं ? हम ऐसे लोग हैं, जो मानव द्वारा मानव के शोषण की प्रणाली के उन्मूलन के संघर्ष में, ताकि प्रत्येक अच्छा जीवन बिता सके, और अपने देश के पुनरेकीकरण के संघर्ष में, ताकि पूरा राष्ट्र समृद्ध जीवन बिता सके, अपना वह सब कुछ सर्मापित कर देते हैं जो हमें प्रिय होता है।

हमने जमींदारों को उनकी जमीनों से वंचित कर उन जमीनों को भूमिहीनों या गरीब किसानों में बांटा, सूदखोरी के जरिए सब प्रकार के शोषण का निषेध किया तथा जापानी साम्राज्यवादियों और देशद्रोहियों के स्वामित्व वाली रेलवे, फैक्टरियों, खानों, बैंकों आदि को राष्ट्र के पक्ष में जब्त तथा राष्ट्रीयकृत किया। हमने कृषि के सहकारीकरण और निजी व्यापार और उद्योग के समाजवादी रूपांतरण के कामों को पूर्ण किया और इस तरह हर प्रकार के पूंजीवादी शोषण और उसके स्रोत का पूर्णतया सफाया किया।

वे किस प्रकार के लोग हैं, जो हमें अपना शत्रु समझते हैं और हमारा विरोध करते हैं ? वे ऐसे भूतपूर्व जमींदार हैं जो अपनी खोयी भूमि को पुनः प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हैं, वे ऐसे भूतपूर्व साहूकार हैं, जो पहले की तरह सूदखोरी करना चाहते हैं, वे ऐसे लफंगे हैं, जो देश को नीच अमरीकियों के हाथों में बेच डालना

चाहते हैं और जो दक्षिण कोरिया के चांग मियोन की नाईं हमारे देश को पुन: जापानी धूर्तों के हवाले करने को उतारू हैं।

संक्षेप में, जो जोग हमें शत्रु समझते हैं और हमारा विरोध करते हैं, वे ऐसे कपटी लोग हैं जो साम्राज्यवादी शक्तियों पर निर्भर रहते हुए हमारे देश में सामंती जमींदारी और पूंजीवादी प्रणालियां पुन:संस्थापित करने और समूचे राष्ट्र को साम्राज्यवादी दासता के शिकंजे में डालने को सचेष्ट हैं।

हमें ऐसे शत्रु तत्वों के विरुद्ध दृढ़तापूर्वक लड़ाई लड़नी चाहिए। हमें सिवाय उनके अन्य किसी से घृणा और भय नहीं।

हमें उन लोगों से भयभीत नहीं होना चाहिए, जो कभी "शान्ति रक्षा दल" से सम्बद्ध थे और न ही हमें उन लोगों के परिवारों से भयभीत होना चाहिए जो दक्षिण को चले गये थे। कई लोग यांकियों द्वारा "शान्ति रक्षा दल" में शामिल होने को बाध्य किये गये थे। यांकियों की यह कोशिश रहती है कि हमारे लोग अपराध करें और कोरियाई कोरियाइयों से लड़ें। "शान्ति रक्षा दल" के भूतपूर्व सदस्य काफी संख्या में उनके जाल में फंस गये।

यही बात उन लोगों के बारे में कही जा सकती है, जो दक्षिण में चले गये थे, जो मजदूर और किसान दक्षिण चले गये थे, उनसे डर का कोई कारण नहीं है। उनमें से अधिकतर इस डर से दक्षिण कोरिया भाग गये थे, कि यांकियों ने उन्हें अपराध करने को बाध्य किया था। यांकियों ने उन्हें दक्षिण कोरिया जाने के लिए फुसलाया था। दक्षिण कोरिया में उनके पास सिवाय इसके कोई विकल्प न था कि टीन के कप लेकर भीख मांगें और या शेष जीवन के लिए व्यावहारिक रूप से दास बनने को बिकना और दक्षिण अमरीका भेजा जाना मंजूर करें। ज्यादा से ज्यादा यह हो सकता है कि कुछ ऐसे पुराने दोस्तों से, जो अब भी यांकियों के साथ हों, उनकी मुलाकात हो जाय और वे उन्हें उन अमरीकी दुष्टों के लिए जासूसी का एजेंट बनने में मदद कर दें।

दक्षिण कोरिया में ऐसा कोई नहीं जो उनके सामने जमीन या मकान की पेशकश करे, और न ही वहां कोई ऐसा कृपालु है जो बिना कुछ लिये उनकी उदरपूर्ति करे। दक्षिण में सभी कोरियाई इतने कंगाल हो चुके हैं कि उनके पास अपने लिए भी पर्याप्त नहीं है और वे उत्तरी आधे भाग के भगोड़ों को मुफ्त आहार तक देने की स्थिति में नहीं हैं।

जब हालत ऐसी है तो इस बात की संभावना हो सकती है कि जो लोग दक्षिण चले गये और वहां उन्होंने यांकियों के प्रभुत्व में दक्षिण कोरिया की दयनीय दशा को अपनी आंखों देखा और अनुभव किया कि उन्हें यांकियों ने धोखा दिया है, यांकियों के विरुद्ध लड़ने के लिए क्रान्ति के पथ पर लौट आयें।

इसलिए जो लोग पहले "शान्ति रक्षा दल" से सम्बद्ध थे, उनके परिवारों से तथा उन लोगों से जो दक्षिण चले गये थे, आपको घृणा नहीं करनी चाहिए बल्कि उनके प्रति दया का भाव रखना चाहिए। आपको चाहिए कि उन सब लोगों को अच्छे नागरिक बनाने और अपनी पांती में लाने के लिए आप उन्हें धैर्य के साथ शिक्षित करें।

निस्सन्देह आप को यह कदापि नहीं भूलना चाहिए कि उन लोगों में, जो कभी "शान्ति रक्षा दल" में शामिल हुए थे, या दक्षिण चले गये थे, बुरे तत्व भी हैं। आपको उन भूतपूर्व जमींदारों और पूंजीपतियों के परिवारों पर कड़ी निगरानी रखनी होगी जिन्होंने जापानी और अमरीकी गिरोहों के गुर्गों के रूप में काम किया था और फिर भाग खड़े हुए थे। उन्हें शिक्षित और दीक्षित भी किया जाना चाहिए, परन्तु साथ ही उन पर सतर्कतापूर्ण दृष्टि रखना जरूरी है।

किंतु जिन लोगों ने पहले कठिन जीवन बिताया हो, चाहे भागने से पूर्व वे "शान्ति रक्षा दल" के सन्देशवाहक के रूप में काम करते रहे हों, उनसे डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। यदि वे हमारे विरुद्ध खड़े होते हैं, तो यह अलग बात है। लेकिन जब तक वे हमारा अनुसरण और हमारा समर्थन करते हैं, हम उन्हें परे क्यों धकेलें ?

आपको उनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, जैसे कि आप उनसे कहना चाहते हों, "आप बुरे हैं और अब हमारे बीच आपका स्थान नहीं है। मैं तो आपकी ओर देखूंगा भी नहीं।" जो लोग हमारे साथ आना चाहते हैं, आप उनको निरन्तर यह समझाएं कि आप अच्छे नागरिक बनिये बावजूद इस तथ्य के कि आपके पिताओं और पतियों का यांकियों के बहकावे में आ जाना और भाग जाना गलत था; आपको उन्हें स्नेहपूर्वक गले लगाना चाहिए।

अब मैं अध्ययन के प्रश्न पर आता हूं। आपको समझ लेना होगा कि उत्पादन महत्वपूर्ण है, लेकिन अध्ययन भी पार्टी सदस्यों के लिए उत्पादन से कोई कम महत्व का दायित्व नहीं है। सभी परिस्थितियों में अध्ययन करना पार्टी सदस्यों का एक अनिवार्य कर्तव्य है। यदि वे अध्ययन नहीं करते, तो वे उत्पादन में अच्छे परिणाम प्राप्त नहीं कर सकते और न ही अपने अन्य क्रान्तिकारी उद्देश्यों को पूरा कर सकते हैं।

कतिपय साथियों का ऐसा विचार लगता है कि अध्ययन और उत्पादन परस्पर-विरोधी होते हैं, लेकिन वे गलती पर हैं। इसके उलट, उत्पादन में सफलता को आश्वस्त बनाने में अध्ययन एक आवश्यक हेतु है।

पार्टी सदस्य वह नहीं होता जो अपने विचार से उचित आजीविका के लिए मात्र एक लकीर पर चलता रहता है। पार्टी सदस्य समूचे समाज को नये रूप में

ढालने का बीड़ा उठाता है—वह ध्येय जो रोटी, कपड़ा और मकान की उसकी निजी समस्याओं के सुलझाव की अपेक्षा कहीं अधिक मूल्यवान और उदात्त है।

हमारे देश में समाजवाद और फिर कम्युनिज्म का निर्माण पार्टी सदस्यों का अन्तिम लक्ष्य है। ऐसे उच्च लक्ष्य और ध्येय के होते हुए यह कैसे संभव है कि अपने आपको मात्र अपने हिस्से में रुचि रखने तक सीमित रहने दें (यद्यपि, निस्सन्देह यह आवश्यक है) और सिवाय अपने घरेलू मामलों के अन्य किसी भी बात की चिंता न करें ? पार्टी सदस्यों को यह जानकारी होनी चाहिए कि पार्टी कार्य कैसे किया जाना है और उन्हें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्थिति को भी समझना चाहिए। इसीलिए यह आवश्यक है कि वे परिश्रम के साथ अध्ययन करें।

हमारा पार्टी समाचारपत्र पार्टी संबंधी अध्ययन कार्य के लिए सर्वोत्तम सामग्री उपलब्ध करता है। उसे पढ़ते रहकर ही सतत परिवर्तनशील अन्तर्राष्ट्रीय और आन्तरिक स्थिति को समझा जा सकता है और स्थिति के तकाजों के अनुसार पार्टी द्वारा निर्धारित नीतियों और कार्यों के बारे में सूचना पायी जा सकती है। लगातार अध्ययन के बगैर सदा बदलती स्थिति की नवीनतम जानकारी रखना प्राय: असम्भव होगा और पार्टी द्वारा निर्धारित क्रान्तिकारी कार्यों को पूरा करना भी संभव न होगा।

यही कारण है कि आप को अवश्य ही नित्य पार्टी समाचारपत्र पढ़ना चाहिए, भले ही आप कितने भी व्यस्त हों। ऐसा कोई इन्सान नहीं है जो काम के कारण-वश भोजन न करता हो। क्या है कोई ऐसा ? पार्टी सदस्यों को सोचना चाहिए कि पार्टी समाचारपत्र को पढ़ना ठीक ऐसे ही है, जैसे खाना। यदि आप खाते नहीं हैं तो आप पेट में खालीपन महसूस करते हैं, और यदि आप एक दिन भी समाचारपत्र नहीं पढ़ते हैं तो आप का दिमाग उसी सीमा तक और खाली रह जाता है।

भूतकाल में जब हम जापानी लुटेरों के विरुद्ध लड़ रहे थे, उन दिनों यदि हमारे हाथ पार्टी समाचारपत्र या कोमिन्टर्न समाचारपत्र की कोई प्रति लग जाती तो हम उसे बारी-बारी पढ़ते, यहां तक कि वह जर्जर हो जाता। हमारे लिए समाचारपत्र इतना कीमती होता था और आमतौर पर उसे प्राप्त करना कठिन होता था। अब हमारे पार्टी सदस्यों में से कई एक समाचारपत्र के प्रति उदासीन हैं। लगता है, वे संभवत: नहीं समझते कि समाचारपत्र कितना मूल्यवान् होता है, क्योंकि हम उसे प्रतिदिन बढ़िया कागज पर बड़ी संख्या में निकालते हैं। पार्टी समाचारपत्र के प्रति गलत रवैये को पूर्णतया बदलना होगा। हमें यह स्थिति आश्वस्त करनी होगी, कि अध्ययनमंडलों और सामूहिक अध्ययन अधिवेशनों द्वारा समस्त पार्टी सदस्यों को समाचारपत्र की मुख्य-मुख्य बातों की जानकारी

दी जाए।

यह सोचना भी निस्सन्देह गलत है कि पार्टी अध्ययन का संचालन केवल अधिक जानकारी रखने वाले सदस्यों द्वारा किया जा सकता है, और उन सदस्यों द्वारा नहीं किया जा सकता जो कम जानकारी रखते हैं। कुछ पार्टी सदस्यों की इस गलत धारणा के लिए काउंटी और री पार्टी संगठन भी दोषी हैं क्योंकि वे पार्टी अध्ययनों की समुचित व्यवस्था करने में असमर्थ रहे हैं। यदि वक्ता ऐसे लम्बे भाषण दें जो समझने में मुश्किल हों तो पार्टी सदस्यों से अपने अध्ययन में रुचि लेने की अपेक्षा कर सकना मुश्किल है। जब वक्ताओं को प्रशिक्षण दिया जाता है या जब स्वतः वक्ता पार्टी सदस्यों की पांतों के सामने बोलते हैं तो उस समय सरल भाषा का उपयोग करने और भाषण को दिलचस्प बनाने का पूरा प्रयास किया जाना चाहिए।

कुछ लोग पार्टी सदस्यों की चेतना को उनके सांस्कृतिक स्तर के समान मान लेते हैं। यह भी एक मिथ्या धारणा है। कई सदस्य हैं जो इतने अज्ञानी हैं कि वे क ख ग भी नहीं जानते परन्तु उनमें जमींदारों, पूंजीपतियों और साम्राज्यवादियों के प्रति बड़ी घृणा होती है। दूसरी ओर कालेज स्नातकों सरीखे बड़े ज्ञानी लोगों में भी कुछ ऐसे होते हैं, जो मजदूर वर्ग की चेतना से लैस नहीं होते।

सभी भूतपूर्व छापामार योद्धा कोई बड़े ज्ञानी या अच्छे लेखक नहीं थे। वे मजदूर या किसान मूल के थे और इस कारणवश कुछ साथियों का सांस्कृतिक स्तर काफी निम्न था। इस पर भी उन सब में काफी ऊंचे स्तर की वर्ग-चेतना और देश और जनता की खातिर आत्म बलिदान करने की महान क्रान्तिकारी भावना विद्यमान थी। अतः पार्टी सदस्यों के चेतना के स्तर को उनके सांस्कृतिक स्तर से आंका नहीं जाना चाहिए।

यह बहुत अच्छी बात है कि आप में अन्य री की अच्छी मिसालों का अनुसरण करने का रुझान है। लोगों को शिक्षित करने की हमारी पार्टी की पद्धति यही है कि नकारात्मक पर सकारात्मक के बूते काबू पाया जाए और अनुकरणीय कृत्यों द्वारा आम लोगों को प्रभावित किया जाए।

आपको न केवल अन्य री की मिसालों से स्पर्धा करनी चाहिए, बल्कि अपने री में श्रेष्ठतम कार्यदलों और व्यक्तियों को समर्थन देना चाहिए, ताकि दूसरे उनके उदाहरण का अनुकरण करें।

यहां एक साथी ने जो सांझा सम्पत्ति की रक्षा करने में प्रबन्धमंडल की असमर्थता के लिए उसकी आलोचना की, वह ठीक ही है। इस तथ्य के बावजूद कि हमारे देश में इमारती लकड़ी एक अत्यंत बहुमूल्य वस्तु है, आपने ठंडे-सांचे के धान के पौधों के काम में लाये गये लकड़ी के सांचों की कोई देखभाल नहीं की और मात्र

एक बार उपयोग के बाद उन्हें नष्ट हो जाने दिया। यह बिल्कुल गलत बात है।

सहकार की सारी सम्पत्ति समुदाय और अवाम की होती है। अतः किसी भी चीज की, किसी एक पेड़ की या तिनकों के एक ढेर की भी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए।

मिसाल के तौर पर, पूंजीवादी समाज में किसी ग्रामीण को इस बात से कोई सरोकार नहीं होता कि स्थानीय चिकित्सालय तरक्की करता है या उसका दीवाला पिट जाता है। परन्तु अब हमारे कृषि गांवों में चिकित्सालय कोई निजी सम्पत्ति नहीं है, बल्कि सहकारों की सांझा सम्पत्ति है। इसलिए प्रत्येक सहकारी सदस्य को उनकी कद्र करनी चाहिए। चिकित्सालय के चिकित्सा कर्मियों और उसका उपयोग करने वाले सहकारी सदस्यों दोनों को ही उसके साजसामान और साधनों को साफ-सुथरा रखना चाहिए और उनका सावधानी से इस्तेमाल करना चाहिए।

सहकार की सांझा सम्पत्ति और राज्य की सम्पत्ति के सम्मान और देखभाल में, पार्टी सदस्यों को हमेशा दूसरों के लिए आदर्श पेश करना चाहिए।

जनवादी तरुण लीग संगठन के अध्यक्ष और साथी ली सिन जा ने बिल्कुल सही कहा है कि युवा लोगों को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए कि वे देहात से प्यार करें और वहां काम करना एक सम्मान समझें।

शहर और गांव के अंतर्विरोध का निवारण करना और फिर उनके बीच भेदों तक को मिटा देना ही कम्युनिज्म का उद्देश्य है। अतएव युवकों को कृषि गांवों को छोड़ कर शहरों की ओर जाने का यत्न नहीं करना चाहिए, इसके विपरीत उन्हें भरसक संघर्ष कर अपने गांवों को उतना ही खूबसूरत और आधुनिक बनाना चाहिए, जितने कि शहर हैं। इतने अधिक उत्साह और उद्यम की भावना से ओतप्रोत युवक क्यों ऐसे स्थानों की अभिलाषा करते हैं, जहां जीवन अच्छा है और काम करना सहज है ?

जब सब गांवों में आधुनिक आवासों, क्लब भवनों और सिनेमाघरों की कतारें बन जाएंगी और जब वहां रेडियो सेट उपलब्ध हो जाएंगे तो गांवों में भावी सांस्कृतिक जीवन उतना ही अच्छा हो जायेगा, जितना कि प्योंगयांग का है। प्योंगयांग या गांवों में फिल्में देखने और रेडियो सुनने में वास्तविक अंतर क्या है ? कोई अंतर नहीं है। भविष्य में शहर और गांव के बीच भेद क्रमशः मिट जाएंगे।

जिन्स वितरण के क्षेत्र में, शहर और गांव के बीच भेद पहले ही लुप्त हो चुका है। अतीत में प्योंगयांग में कई चीजें बहुतायत से उपलब्ध होती थीं और वे सस्ती होती थीं, जबकि गांवों में उन चीजों का अभाव रहता था और जो उपलब्ध होतीं भी, वे मंहगी होती थीं। लेकिन आज दूरस्थ पर्वतीय क्षेत्रों में भी आप

को ठीक उसी प्रकार की चीजें मिल सकती हैं, जिस प्रकार कि शहरों में उपलब्ध हैं और उनके मूल्य हर जगह समान हैं। साथ ही गांवों में भी उतनी ही चीजें उपलब्ध होती हैं, जितनी कि शहरों में उपलब्ध हैं।

और आज जहां तक स्कूली शिक्षा का प्रश्न है, शहर और देहात के बीच कोई अन्तर नहीं है। सर्वत्र शिक्षा अनिवार्य है और सब विद्यार्थी अपने अध्ययनों के लिए एक सी पाठ्य-पुस्तकों का उपयोग करते हैं।

यदि अभी तक शहर और देहात के बीच कोई अन्तर विद्यमान है तो वह यह है कि कृषि श्रम औद्योगिक श्रम की तुलना में तनिक अधिक कड़ा और कठिन है। लेकिन भविष्य में, जब कृषि का यन्त्रीकरण हो जाएगा, लोग शहरों की अपेक्षा ताजी हवा और सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर गांवों को ही प्राथमिकता देंगे।

अतः युवकों को आधुनिक समाजवादी देहातों के निर्माण के सम्मानजनक संघर्ष में साहसपूर्वक आगे बढ़ कर काम करना चाहिए।

रिपोर्ट में इस ओर ध्यान दिलाया गया है कि आप री के लिए एक सही ग्रामीण आर्थिक योजना तैयार करने में असमर्थ रहे। इस का अर्थ यह है कि प्रबन्ध-मंडल में सहकार की वास्तविक स्थिति की जानकारी का अभाव है और कार्यदलों के नेताओं को अपने कार्यदलों की वास्तविक स्थिति की सही-सही जानकारी नहीं है।

जुताई और बुवाई, दोनों कामों के लिए सही योजनाएं तभी तैयार की जा सकती हैं, जब कार्यदलों के नेताओं को अपने काम का पूरा-पूरा ज्ञान हो। उदाहरणतः, किसी विशिष्ट फसल की बुवाई हेतु सही योजना तैयार करने के लिए यह पड़ताल जरूरी होती है कि आया भूमि गीली है या सूखी, उपजाऊ है या ऊसर और साथ ही काम करने वालों की तथा उनकी दक्षता की स्थिति को दृष्टिगत रखना होगा। असफलता तभी हाथ लगती है, जब कार्य योजनाएं बिना इन बातों को जाने ऊटपटांग ढंग से तैयार की जाती हैं।

यही बात राजकीय योजना के बारे में कही जा सकती है। तकनीकी जानकारी, कार्य की परिस्थितियों और जनता की भावनाओं की जानकारी प्राप्त कर के ही सही योजना की रूपरेखा तैयार करना संभव होता है। ऐसे लोग सही योजना तैयार नहीं कर सकते जिन्हें तकनीकी ज्ञान तो हो परन्तु जनता की मनोवृत्ति को वे समझने में असमर्थ हों। हो सकता है, ये लोग निशान अति निम्न स्तर के तय करें, क्योंकि वे केवल तकनीकी पहलू को ही सामने रखते हैं।

सही कृषि योजना की तैयारी में असफलता का कारण इस तथ्य में भी छिपा है कि जो लोग व्यक्तिगत रूप से जनता में काम करते हैं, वे ग्रामीण स्थितियों से भलीभांति परिचित नहीं होते और उनमें इस बारे में स्पष्ट समझ का अभाव

होता है कि उन से क्या करने की अपेक्षा की जा रही है। चूंकि ग्रामीण कार्यकर्ताओं का नियोजन स्तर अभी भी निम्न स्तर पर है, इसलिए हम अभी उन्हें वस्तुत: दो तरह की योजनाएं भेजते हैं। सही-सही कहा जाए, तो उनमें से एक राज्य योजना होती है और दूसरी संघर्ष का लक्ष्य। इस वर्ष रबी धान की उपज में १० लाख टन की वृद्धि का कार्य कोई राज्य योजना न होकर संघर्ष का एक लक्ष्य ही है। राज्य योजना तनिक कम की तय जाती है ताकि कोई भूल-चूक न हो, और संघर्ष लक्ष्य जरा ऊंचा निर्धारित किया जाता है।

इस प्रकार की परिपाटी को तज कर एक ही राज्य योजना भेजना हमारे लिए कब संभव हो सकेगा ? हम सही राज्य योजना तभी तैयार करने में समर्थ होंगे, जब आप अपने कार्य को भली-भांति पूरा करें। जब प्रत्येक री एक सही योजना तैयार करेगी, तो इससे जिले को एक सही योजना तैयार करने में मदद मिलेगी; जब जिला एक पूर्णत: सोची-समझी योजना तैयार करेगा, तो शहर एक निश्चित योजना बनाने में समर्थ होगा; और जब शहर द्वारा एक सही योजना प्रस्तुत की जाएगी तो राज्य योजना भी सही-सही बनायी जा सकेगी। लेकिन, फैक्टरी कार्यकर्ताओं की तुलना में हमारे ग्रामीण कार्यकर्ताओं का नियोजन स्तर अभी भी बहुत नीचा है।

जब तक प्रबन्धमंडल के अधिकारी टांग-पर-टांग रखे बैठे रहेंगे और केवल आज्ञाएं जारी करते रहेंगे, तब तक वास्तविक स्थितियों के अनुरूप कोई भी सही योजना कदापि तैयार न हो सकेगी। इसलिए प्रबन्धमंडल के कार्यकर्ताओं और री पार्टी समिति को री की प्राकृतिक परिस्थितियों और सभी सहकारी सदस्यों की वास्तविक क्षमताओं की गम्भीरतापूर्वक छानबीन और अध्ययन करना चाहिए और अपनी हथेली की रेखाओं की तरह री की समूची स्थिति की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए और इस प्रकार स्वयं को सही योजना निर्धारण के लिए तैयार करना चाहिए।

आपने अपनी बहस में सुझाव दिया कि कार्यदलों या कार्यटोलियों को सुदृढ़ किया जाए। मेरे विचार में आप का सुझाव ठीक है। कार्यटोली काम करने की निम्नतम इकाई है, जहां काम सीधे जनता में संचालित किया जाता है। आखिरकार, अपने काम में सहकार की सफलता या असफलता इस बात पर निर्भर करती है कि आम कार्यटोलियां ठीक-ठीक काम कर पाती हैं या नहीं। अतएव कार्यटोलियों और उनका पथप्रदर्शन करने वाले प्राथमिक पार्टी संगठनों के काम को हर दृष्टि से तेज किया जाना चाहिए।

अब मैं कृषि कार्य में प्रबन्धमंडल के अध्यक्ष द्वारा भाग लिए जाने के प्रश्न को लेता हूं। मेरे विचार में अध्यक्ष के लिए एक वर्ष में लगभग ३० या ४० दिन

तक शारीरिक श्रम में भाग लेना उचित रहेगा।

प्रबन्धमंडल के अध्यक्ष के लिए शारीरिक श्रम में शामिल होना ठीक क्यों है? जब उसे जुताई, गुड़ाई और निराई का अनुभव होगा, तभी वह जान सकेगा कि कौन-सा काम अधिक कठिन है और कार्य के जो नियम तय किये गये हैं, वे उचित हैं या नहीं। चूंकि प्रबन्धमंडल का अध्यक्ष कृषि कार्य में शामिल नहीं होता, इसलिए वह इस हद तक चला जाता है कि उस व्यक्ति को, जो अपनी पेटी से एक चिमटी लटकाये बिजली की 'बत्तियों की मरम्मत करता फिरता है, काम करने के ज्यादा-से-ज्यादा अंक प्रदान कर देता है।

सबसे तात्विक बात यह है कि यदि अध्यक्ष अवाम में जाएगा और उनके साथ श्रम में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेगा तो वह उनकी भावनाओं को समझेगा और उसी हवा में सांस लेगा जिसमें वे लेते हैं और उनका निकट का साथी बन जाएगा। सहकारी सदस्यों ने अपने अध्यक्ष को इसलिए नहीं चुना, कि वह श्रेष्ठता की मुद्रा अपना ले या अपनी सत्ता का सर्वस्व दिखाने लगे, बल्कि इसलिए चुना, कि वे चाहते थे कि वह हर दृष्टि से उनके आज्ञाकारी सेवक के रूप में अपनी भूमिका निभाये। परन्तु यदि प्रबन्धमंडल का अध्यक्ष दम्भपूर्वक जेब में हाथ डाले हुए लोगों पर चीखते-चिल्लाते अपना समय बर्बाद करता रहे तो सहकारी सदस्य उसे किसी भूतपूर्व अवर सरकारी अधिकारी जैसा उच्चतर-श्रेणी का व्यक्ति समझ कर उसके साथ बात तक करने में संकुचित होंगे। यदि उसका ऐसा व्यवहार रहता है तो वह सहकार की वास्तविक स्थिति और जनता की मनोभावना को कैसे जान पाएगा? जब वह जनता के बीच जाएगा, उनके साथ काम कर[illegible] मात्र तभी लोग उसके नजदीक आएंगे, उसके साथ दिल खोल कर बातें करेंगे और उसे अपनी [illegible]तेयां देंगे।

यही नहीं, यदि प्रबन्धमंडल का अध्यक्ष शारीरिक श्रम में भाग लेता है तो उसे अपने अनुभव से शारीरिक और दिमागी मेहनत का अन्तर समझ में आ जाएगा, शारीरिक श्रम की दुष्करता और कठिनाई का पता चल जाएगा और इस प्रकार उसे कार्य के यन्त्रीकरण तथा लोगों को कठोर और कठिन मेहनत से मुक्ति दिलाने की आवश्यकता की और भी अधिक तीव्रता से अनुभूति होगी।

इस प्रकार प्रबन्धमंडल के अध्यक्ष को शारीरिक श्रम में लगाने से हमारा उद्देश्य एक और कर्मी बढ़ा देना मात्र नहीं है, बल्कि उसे कृषि कार्य से पूर्णरूपेण अवगत कराना और उसे जनता में भेज कर कठोर कार्य का निजी अनुभव हासिल कराना है।

इसलिए यदि प्रबन्धमंडल का अध्यक्ष इस आधार पर अन्य मामलों के बारे

में ध्यान नहीं देता, कि वह शारीरिक श्रम में लिप्त है और केवल साधारण सहकारी सदस्यों की तरह आज्ञानुसार काम करता रहे तो इसका भी कोई कारण नहीं। उसे शारीरिक श्रम की अवधि को प्रबन्धमंडल के अध्यक्ष पद के अपने काम से सम्बद्ध कर उसका कारगर ढंग से उपयोग करना चाहिए।

आपकी बहस से मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि आप अब भी कई क्षेत्रों में काम के अंकों का गलत मूल्यांकन करते हैं और वितरण के समाजवादी सिद्धान्त का कड़ाई से पालन नहीं करते। आपको हमेशा काम के अंकों का सही-सही मूल्यांकन करना चाहिए, कार्यटोली बोनस प्रणाली को सांगो-पांग लागू करना चाहिए और वितरण के समाजवादी सिद्धान्त का कड़ाई से पालन करना चाहिए।

जैसी कि नियमों में व्यवस्था है, आपको अनिवार्यत: हर दस दिन में एक बार सहकारी सदस्यों के समक्ष घोषित करना चाहिए कि उन्होंने कितने काम के अंक कमाये हैं। ऐसा कर, आप सहकारी सदस्यों में उनके श्रम के फल में भौतिक अभिरुचि बढ़ाएंगे और साथ ही उनके उत्साह को तीव्र करेंगे। वितरण का समाजवादी सिद्धान्त इस सिद्धान्त पर आधारित है "जो काम नहीं करेगा, वह खाएगा भी नहीं।" इसलिए आप अपने दिमाग में यह बात बैठा लें कि इस सिद्धांत का कड़ाई से पालन कम्युनिस्ट शिक्षा का एक शानदार तरीका है।

इस वर्ष हर किसी को वितरण के समाजवादी सिद्धान्त के और भी भरपूर पालन करने का जोरदार प्रयास करना चाहिए। गत वर्ष की पतझड़ ऋतु में हम दक्षिण प्योंगान प्रांत की सुनान काउंटी की छाएगयोंग-री और प्योंगयांग की सोंग-नाम-री गये थे और आजमाइशी आधार पर लेखा-जोखा और आय वितरण के संबंध में बैठकें आयोजित कीं। उनमें हम जिन निष्कर्षों पर पहुंचे, उनके अनुसार पार्टी की केन्द्रीय समिति के अध्यक्षमंडल ने अपने निर्देश भेजे, लेकिन काफी संख्या में री पार्टी समितियों के अध्यक्ष और काउंटी पार्टी तथा जन समितियों के कार्यकर्ता अब भी नहीं जानते कि आमदनी का समुचित वितरण कैसे किया जाए।

हमें सहकारी प्रबन्ध कर्मीदल का व्यावसायिक स्तर ऊंचा उठाना चाहिए, ताकि सहकारी प्रबन्धमंडल के अध्यक्ष और री-पार्टी समिति तथा कार्यटोलियों के नेता भी जान लें कि लेखा-जोखा कैसे रखा जाना चाहिए।

आपकी बहस में उठाये गये प्रश्नों के बारे में आमतौर पर ये कुछ मामले थे, जिन पर मैं जोर देना चाहता था।

मुझे दृढ़ विश्वास है कि यदि आपको पिछले साल की सफलता पर घमंड न हो गया और यदि आप उस सफलता को ओर अधिक मजबूत बनाकर पार्टी नीतियों का परिचय बुलन्द करते हुए वीरतापूर्वक आगे बढ़ना जारी रखेंगे तो आप और भी बड़ी विजय प्राप्त करेंगे।

इस बार आपको री-पार्टी समिति में अच्छे साथियों को चुनना चाहिए, नव-निर्वाचित समिति को सामूहिक नेतृत्व को और सुदृढ़ बनाना चाहिए और प्रत्येक पार्टी सदस्य को क्रियाशील बनाने के लिए उसे उचित काम देना चाहिए। समिति को चाहिए कि वह सभी पार्टी सदस्यों को हर स्थिति में संघर्ष की भावना में शिक्षित करना, पार्टी की केन्द्रीय समिति की रक्षा करना और पार्टी की नीतियों को पूरा करना धैर्यपूर्वक जारी रखे। उसे दृढ़तापूर्वक जनता पर निर्भर रहना चाहिए, सहृदयता देकर उन्हें शिक्षित करना चाहिए, प्रत्येक शक्ति के साथ एकजुट होना चाहिए और आम लोगों को अपनी पार्टी के साथ गोलबंद करना चाहिए।

यदि आप इस ढंग से काम करेंगे और जिला पार्टी समितियां नीचे आकर आपके काम में लगातार मदद देंगी, तो आप खाद्यान्न की उपज में वृद्धि के इस साल के कर्तव्य को पूरा करने में पूर्णतः समर्थ होंगे। इसमें संशय की कोई बात नहीं है।

अन्त में, मैं आशा व्यक्त करता हूं कि आप २ सूअर और १५ खरगोश प्रति कुटुंब उत्पन्न करने के लिए आन्दोलन छेड़ेंगे और पशु पालन तथा अन्न उत्पादन में और भी परिणाम हासिल करेंगे।

अखिल जन आंदोलन द्वारा फलोद्यानों की स्थापना के विषय में

कोरिया की मजदूर पार्टी की केन्द्रीय समिति के अध्यक्षमंडल की पुकचोंग में आयोजित विस्तारित बैठक में समापन भाषण

७ अप्रैल १९६१

हम चूंकि पुकचोंग में पार्टी की केन्द्रीय समिति के अध्यक्ष मंडल की यह विस्तारित बैठक आयोजित कर रहे हैं, इसलिए हम इसे पुकचोंग बैठक का नाम दे सकते हैं। पुकचोंग बैठक को हमारे देश में फल उगाने के विकास में महान ऐतिहासिक महत्व प्राप्त होगा।

मुक्ति के तुरन्त पश्चात हमारी पार्टी ने यह नारा दिया : "पर्वतीय क्षेत्रों में पर्वतों का खूब प्रयोग करो और तटीय क्षेत्रों में समुद्र का खूब उपयोग करो।" हमारा देश पर्वतीय है और हमारे पुरखे भी यहां पर्वतों को भरपूर प्रयोग में लगाने पर जोर देते थे। अतः यह कहा जा सकता है कि पर्वतों के सदुपयोग का हमारी पार्टी का नारा ऐसा है, जो हमारे लोगों की शानदार परम्परा को सजीव बनाये रखता है।

अब तक हमने पर्वतों का प्रयोग करने में काफी बड़ी उपलब्धि हासिल कर ली है। हम पहले ही पहाड़ी भूमियों पर ८०,००० छोंगबो फल वाटिकाएं लगा चुके हैं। यह काम १९५७ के बाद कुछ ही वर्षों में सम्पन्न किया गया है। नये लगाये गये ८०,००० छोंगबो से फल प्राप्ति के लिए पांच या छह वर्ष काफी होंगे। यह मानते हुए कि हम औसतन १२ टन फल प्रति छोंगबो प्राप्त करेंगे, ऐसे पूरे क्षेत्रों से करीब दस लाख टन फल उपलब्ध होंगे। यह बहुत बड़ी मात्रा है और प्रति व्यक्ति लगभग १०० किलोग्राम बैठती है। इस प्रकार हमारे लोगों के पास काफी फल होंगे और काफी परिमाण में बचेंगे भी। यदि हम केवल पांच लाख टन खायें और शेष पांच लाख टन दूसरे देशों को बेचें तो हम भारी परिमाण में विदेशी

मुद्रा अर्जित कर सकेंगे। यह दस लाख टन गेहूं या १२ लाख टन मक्का का मूल्य चुकाने के लिए काफी होगी। यदि फलों के बदले प्राप्त अनाज का पशुओं के चारे के रूप में प्रयोग किया जाए तो यह पशु संवर्धन के सफल विकास को संभव बनाएगा, जोकि हमारे देश के समक्ष पेश एक अत्यंत जटिल समस्या है।

लेकिन जब अन्य देशों से मुकाबला किया जाए, तो ८०,००० छोंगबो फलोद्यान कोई बहुत ज्यादा नहीं हैं। मिसाल के तौर पर, रूमानिया के पास न केवल हम से बहुत अधिक कृषि भूमि ही है, बल्कि करीब ४,००,००० छोंगबो फलोद्यान भी हैं। चूंकि हमारे देश के पास अन्य देशों के मुकाबले में कम धान क्षेत्र और शुष्क जमीन है, इसलिए कम-से-कम हमें यह करना होगा कि फलोद्यान बहुतायत से लगाएं। क्या यह सही नहीं है ? हमें कम से कम ३,००,००० से ४ ००,००० छोंगबो फल वाटिकाएं लगानी होंगी।

हमारे देश में समतल भूमियां सीमित और पर्वतीय क्षेत्र व्यापक हैं, अतः हमारे पास सिवाय इसके कोई विकल्प नहीं है कि यदि हमें अन्य देशों के बराबर फल के बाग चाहिए, तो हम पर्वतों का इस्तेमाल करें। पर्वतों के इस्तेमाल का आप मात्र यह अर्थ न लें कि हमें जंगली फल तोड़ने हैं या पर्वतीय खाद्य जड़ी-बूटियां एकत्र करनी हैं। यह भी जरूरी है, लेकिन इससे भी अधिक महत्वपूर्ण काम यह है कि पहाड़ियों को बागों के उपयुक्त बनायें और कच्चे माल के लिए वनों का निर्माण करें, ताकि भारी मात्रा में फल और औद्योगिक कच्चा माल प्राप्त हो।

यदि हम इस तरह पर्वतों का पूरा प्रयोग करेंगे तो वे भी मैदानों की अपेक्षा कोई कम उपयोगी न होंगे। अतएव मैदानी क्षेत्र के अभाव की शिकायत करने की बजाय हमें पर्वतों के बेहतर उपयोग की विधि सोचनी चाहिए।

निस्सन्देह, हमारे देश के पास वाटिकाओं के उपयुक्त कितनी ही पहाड़ियां हैं। यदि हम देश भर में पहाड़ियों को इस योग्य बनायें और उन पर बहुत-सी वाटिकाएं लगायें तो हम उनसे भारी लाभ हासिल कर सकते हैं और इससे हमारे लोग प्रचुरता का जीवन बिताने में समर्थ होंगे। तथापि, काम शुरू करने से पहले ही कुछ लोग शंकित है कि देश में सेब की बहुत अधिक वाटिकाएं हो जाएंगी। उनका कहना है कि यदि बहुत-सी वाटिकाएं लगायी गयीं तो उनकी देखभाल करना मुश्किल होगा और भारी संख्या में जन शक्ति की जरूरत पड़ेगी। वे पूछते हैं कि हम इस बारे में क्या करेंगे। इस समय तो समस्या सेब के बागों की कमी की है। हमें सेब के बहुत ज्यादा हो जाने की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। जब हमारे पास अनेक वाटिकाएं हो जाएंगी, तो उनकी देखभाल के उपाय स्वतः उभर आएंगे। अभी से चिन्तित होने और शिथिलता की मनोवृत्ति में फंसने की कोई

जरूरत नहीं है।

फल उगाने के क्षेत्र में सफलतापूर्वक विस्तार करने के लिए हमें इस क्षेत्र में अब तक पायी जाने वाली खामियों को दूर करना होगा।

सर्वप्रथम आपको केवल सेब उगाने पर बढ़ा-चढ़ाकर जोर देने की भूल को सुधारना चाहिए। सेब के वृक्ष का पालना बड़ा कठिन होता है और उसमें फल आने में सात या आठ वर्ष लगते हैं। यदि हमने शुरू में ही सेब वृक्षों के साथ-साथ अंगूर, आड़ू और खूबानी जैसी बेलें या पौधे लगाये होते और उनकी समुचित देखभाल की होती, तो हम अब तक भिन्न-भिन्न प्रकार के फल भारी संख्या में प्राप्त कर चुके होते। आगे से स्थानीय जलवायु और भूमि की स्थितियों के अनुरूप मन्द और तेज गति से पकने वाले फलों के वृक्षों में उपयुक्त तालमेल बैठा कर उन्हें लगाया जाना चाहिए।

पहले से विद्यमान सेब के पेड़ों के बीच आड़ू के पेड़ लगाना अच्छा रहेगा। तब आप सेब उतारने के मौसम से पहले आड़ू तोड़ सकेंगे। यदि सेब के पेड़ खूब बढ़ रहे हैं लेकिन आड़ू के पेड़ों की मौजूदगी उन्हें फल लाने में बाधा डाल रही हो तो आपको आड़ू के पेड़ काट देने चाहिए।

जहां की स्थितियां आड़ू के अनुकुल न हों, वहां चारे की फसलें बोयी जानी चाहिए।

रियांगगांग प्रान्त जैसे पहाड़ी प्रदेशों में नाशपाती, ब्लूबेरी, जंगली स्ट्राबेरी आदि खूब फल देने वाले पौधे लगाना अच्छा रहेगा।

फल उगाने में विविध जातियों और किस्मों के फलों के उपयुक्त संयोग का प्रयोग कई पहलुओं से फायदेमंद है। इससे सभी मौसमों में हमें ताजा फल मिल सकेंगे और साथ ही जनशक्ति की कमी की हमारी समस्या भी सुलझेगी।

फिर जिस भूमि का उपयोग अन्य फसलों के लिए हो सकता है, उन्हें फलों की खेती के काम में नहीं लाया जाना जाहिए। जो पहाड़ियां अन्य फसलों के अनुपयुक्त हैं, उनका ही वाटिकाएं लगाने के लिए उपयोग किया जाना चाहिए। परन्तु कई काउंटियों ने बागान उपजाऊ भूमि पर लगाये हैं। इससे भी बदतर स्थिति पश्चिम तट के कुछ क्षेत्रों की है, जहां चावल बुवाई के लिए उपयुक्त समतल जमीनों पर वाटिकाएं लगायी गयी हैं। यह बिल्कुल गलत बात है। यदि हमें आराम के साथ मैदानों में ही वाटिकाएं लगानी हैं तो इस बैठक के आयोजन हेतु हमें यहां पुकचोंग में आने का कष्ट उठाने की कोई जरूरत न थी।

पुकचोंग के लोगों की विशेषता इस तथ्य से प्रकट होती है कि उन्होंने अन्य फसलों के अनुपयुक्त पहाड़ियों की ढलानों पर अच्छी-अच्छी वाटिकाएं स्थापित की हैं। ऐसी ढलानों का उपयोग कर उन्होंने अनुपम चबूतरों-सी वाटिकाएं बिछा

दी हैं।

कुछ लोगों का संभवतः यह ख्याल है कि पुकचोंग के लोग स्थल क्षेत्र की अत्यधिक कमी की वजह से इस ढंग से पर्वतों का इस्तेमाल करने को वाध्य हुए हैं। यह उनकी भारी भूल है। पुकचोंग कोई एकमात्र ऐसा स्थान नहीं है, जिसमें जमीन का अभाव है। हमारे देश में कोई भी ऐसा इलाका नहीं है, जिसके पास ज्यादा जमीन हो। हमारे पास गणतन्त्र के उत्तरी आधे भाग में कुल मिलाकर १८ लाख छोंगबो से अधिक जोतने-बोने योग्य भूमि नहीं है। यह १२० लाख आबादी के लिए बिलकुल अपर्याप्त है। अतः जोतने-बोने योग्य भूमि की कमी को पूरा करने के प्रयोजन से पहाड़ी ढलानों का सर्वोत्तम उपयोग कर वाटिकाएं लगाना अति महत्व की बात है। हमारा विचार है कि पहाड़ी ढलानों पर शानदार वाटिकाएं लगाने का पुकचोंग काउंटी का अनुभव एक मूल्यवान अनुभव है, ऐसा अनुभव जिसका हमारे देश की अन्य समस्त काउंटियों को अनुसरण करना चाहिए।

फलों को खेती का विस्तार देना महत्वपूर्ण है, लेकिन वर्तमान वाटिकाओं की समुचित देखभाल करना भी बड़ा महत्वपूर्ण है।

आप को इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि पुकचोंग के लोग कितनी मेहनत से अपनी सेब-बाटिकाओं का पालन-रक्षण करते हैं और उन्हें उचित ढंग से खाद देते हैं। इस समय अन्य इलाकों में फल के पेड़ों को एक बार लगाने के बाद उन्हें न खाद दी जाती है और न आवश्यक घासपात की उचित ढंग से सफाई की जाती है। उन्हें अपने भाग्य पर छोड़ दिया जाता है, भले ही मौसम खुश्क हो या नम, भले ही सर्दियां आ रही हों या न आ रही हों। यदि इसी तरह काम किया जाना है तो फलों के पेड़ कभी भी फलें-फूलेंगे नहीं। हमने इस प्रयोजन से वाटिकाएं लगायी थीं कि उनसे भारी मात्रा में फल पैदा होंगे और उनसे मिलने वाली कमाई से लोगों के जीवन में सुधार होगा। परन्तु यदि इतनी कड़ी मेहनत से लगायी नयी वाटिकाओं की हम भलीभांति देखभाल नहीं करते और इस बात का मौका देते हैं कि पेड़ों को पाला मार जाये और वे अनुर्वर हो जायें तो हमारे लिए उन्हें लगाने में इतनी सारी मेहनत करने की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। हमें इस गलती को दोहराना नहीं चाहिए।

इन त्रुटियों को पूर्णरूपेण दूर करना होगा। आपको अखिल जन अभियान द्वारा बड़े पैमाने पर फल बोने के लिए क्षेत्र को विकसित करना होगा, और साथ ही वर्तमान वाटिकाओं का सावधानी से पालन-रक्षण करना होगा। वाटिकाओं के व्यापक विस्तार का अर्थ है प्रकृति के पुनर्निर्माण की विशाल परियोजना और जनता के रहन-सहन की स्थितियों में सुधार के लिए क्रान्तिकारी उद्यम। यह न केवल हमारी वर्तमान पीढ़ी के कल्याण का कार्य है, बल्कि यह भावी पीढ़ियों के

कल्याण का भी एक सम्मानजनक कार्य है। इस महान उद्यम को बगैर पूरी पार्टी और तमाम लोगों को लामबंद किये पूरा नहीं किया जा सकता।

प्रकृति के पुनर्निर्माण की इस विशाल परियोजना को सफलतापूर्वक पूरा करने का तकाजा है कि सर्वप्रथम श्रमजीवी जनता को कम्युनिस्ट विचारधारा और समाजवादी देशभक्ति की शिक्षा दी जाए, अर्थात उसके दिलों में अपने-अपने जन्म स्थानों और अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम उजागर किया जाए। वह व्यक्ति जिसमें कम्युनिस्ट विचारधारा और देशभक्ति का अभाव है, देश की सुख-समृद्धि के लिए कदापि संघर्ष नहीं कर सकता 'या भावी पीढ़ियों के सुखद जीवन के लिए अपना पसीना और खून नहीं बहा सकता।

हमारे पुरखों ने अपनी सन्तानों के लिए बहुत ही कम काम किया। हमें पुरखों से मिली वाटिकाएं केवल कुछ हजार छोंगबो ही हैं। यदि हमारे पुरखे हमारे लिए कम से कम १,००,००० छोंगबो वाटिकाएं छोड़ गये होते, तो हमें फलों के बारे में कोई चिन्ता न होती। ली वंश के सामन्ती शासन और जापानी साम्राज्यवादी शासन के दिनों में जनता नौकरशाही शासकों और शोषकों के अत्याचार के नीचे फटे हाल और भूखी थी तथा अपनी भावी सन्तानों की खातिर अपनी मातृभूमि के पर्वतों और नदियों का विकास एवं उपयोग करने के अधिकार से भी वंचित थी।

केवल हमारी व्यवस्था में ही जिसमें सत्ता जनता के हाथों में है, श्रमजीवी जनता में देशभक्ति पनप सकती है. यहां श्रमजीवी जनता अपनी खुशहाली के लिए और भावी पीढ़ियों की खुशहाली के लिए प्रकृति को बदलने की ऐसी बड़ी-बड़ी परियोजनाओं को हाथ में लेने में सक्षम है जिनकी हमारे पुरखे कभी कल्पना भी नहीं कर सकते थे। हमारे समाज में न कोई शोषक है न शोषित, और चूंकि हर आदमी अपने लिए और साथ ही पूरे समाज के लिए काम करता है, इसलिए ऐसी स्थितियां उत्पन्न हो चुकी हैं, जिनसे लोगों में काम से प्यार की भावना उभरती है और जो उन्हें अपनी महान सृजनात्मक शक्ति को प्रदर्शित करने का पूरा अवसर प्रदान करती है। लेकिन समाजवादी देशभक्ति और काम के प्रति कम्युनिस्ट दृष्टिकोण मात्र इस बात से अपने-आप नहीं उत्पन्न हो जाते हैं कि सत्ता जनता के हाथों में है और शोषक व्यवस्था लुप्त हो चुकी है। ये उच्च आदर्श पार्टी और मजदूर वर्ग के समुन्नत तत्वों द्वारा धैर्यपूर्ण और उत्साहपूर्वक शिक्षण से ही जनता के विशाल तबकों में प्रवेश कर उनके जीवन का एक अविचल सिद्धान्त बन सकते हैं। यह सत्य स्वतः हमारे अपने अनुभवों से भी पूर्णतः पुष्ट हो चुका है।

जब समस्त श्रमजीवी लोग समाजवादी देशभक्ति—अपने देश और अपनी जनता से प्यार—में शिक्षित हो जाएंगे, तो वे उस सामूहिक सम्पदा के निर्माण के

लिए संघर्ष में अपने आप को लगा देंगे जो हमारी और भावी पीढ़ियों दोनों को खुशहाली का जीवन बिताने के योग्य बनाएगी और वे इस बात का प्रयास करेंगे कि भूमि के कम-से-कम एक और खण्ड पर खेती कर डालें तथा एक और वृक्ष लगा लें।

कम्युनिस्ट नैतिकता के जोरदार शिक्षण के परिणामस्वरूप विशाल जनता में श्रम से प्यार और देश की सम्पदा को अपनी समझ कर उसकी कद्र करने जैसे सुन्दर लक्षण प्रकट हुए हैं और दूसरे के प्राण बचाने के लिए अपने शरीर का निःसंकोच बलिदान दे देने जैसी श्लाघ्य घटनाएं अक्सर घटित होती रहती हैं। तथापि यह नहीं कहा जा सकता कि बिना अपवाद तमाम लोग देश से प्यार करते हैं और उसकी सम्पदा का सम्मान करते हैं। ऐसे लोग भी हैं जो उगाये गये पेड़ों को पूर्णतया अनदेखा कर उनका पालन-रक्षण भी नहीं करते। तटबंधों के निर्माण के लिए तनिक प्रयास कर वे पानी से जमीन के कटाव को या धनखेतों और बागनी खेतों के बह जाने की प्रक्रिया को रोक सकते हैं। लेकिन वे ऐसा नहीं करते। यह काम से घृणा के पिछड़े हुए विचार की अभिव्यक्ति है। हमारे कार्यकर्ताओं में भी जिन्हें आम लोगों के लिए आदर्श होना चाहिए, अभी तक समाजवादी देशभक्ति और काम से प्यार के कम्युनिस्ट विचार का अभाव है। उनमें हमारी मातृभूमि के पर्वतों और नदियों को और अधिक सुन्दर बनाने के उत्साह का अभाव है।

प्रकृति को बदलने की महान परियोजना को हाथ में लेने के लिए काम के तिरस्कार की बोसीदा परिपाटी को जड़ से उखाड़ फेंकना होगा। पुरानी विचारधाराओं के अवशेषों का उन्मूलन किये बिना हम स्वयं को कम्युनिस्ट विचारधारा से लैस नहीं कर सकते और इस प्रकार समाजवाद और कम्युनिज्म का निर्माण करने के योग्य भी नहीं हो सकते।

समाजवाद और कम्युनिज्म का निर्माण केवल ऐसे लाखों लोगों के स्वेच्छया श्रम द्वारा ही सम्पन्न हो सकता है जो भविष्य के लिए जूझने को तैयार हों। यह सोचना बहुत गलत है कि हम बगैर निःस्वार्थ श्रम के समाजवाद का निर्माण कर सकते हैं और कम्युनिस्ट समाज के चरण में पहुंच सकते हैं।

यदि हम फल उगाने के क्षेत्र में विस्तार जैसी प्रकृति के पुनर्निर्माण की महान परियोजनाओं की क्रियान्विति में सफल होना चाहते हैं तो यह आवश्यक है कि मैंने अभी-अभी जिन कार्यों का जिक्र किया है, अवाम को उनका महत्व समझाया जाय।

अब मैं वाटिकाएं लगाने से सम्बद्ध कुछ व्यावहारिक प्रश्नों की चर्चा करना चाहूंगा।

सबसे पहले यह महत्वपूर्ण है कि वाटिकाएं लगाने के लिए दरकार भारी

परिमाण में जनशक्ति की समस्या का उपयुक्त हल खोजा जाए। इस समस्या को बड़ी आसानी से सुलझाया जा सकता है, यदि हम कारखाना और कार्यालय कर्मचारियों के परिवारों के गैर मेहनतकश सदस्यों समेत राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के समस्त क्षेत्रों में पायी जाने वाली जनशक्ति क्षमता का लाभ उठाएं।

जैसा कि आप आज प्रातः विचार कर चुके हैं, यदि हम इस काम के लिए यन्त्रों का उपयोग करें तो पूर्व और पश्चिम तटीय क्षेत्रों में एक छोंगबो भूमि को जोतने-बोने योग्य बनाने के लिए २०० कार्यदिवसों की बजाय १०० या शायद केवल ८० कार्यदिवसों का काम पर्याप्त होगा। यदि हम कल्पना करें कि एक छोंगबो को बोने योग्य बनाने के लिए १०० कार्यदिवस श्रम दरकार है, तो १० कारखाना या कार्यालय कर्मचारी एक साल में केवल १० रविवार लगाकर इतना काय पूरा लेंगे। संक्षेप में इसका अर्थ यह है कि पूरे देश के कारखाना और कार्यालय कर्मचारी ही करीब १,५०,००० छोंगबो भूमि को फल बोने योग्य बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त हम विश्वविद्यालय और कालेज छात्रों तथा उच्चतर और माध्यमिक तकनीकी स्कूली छात्रों के श्रम द्वारा दसियों हजार छोंगबो जोतने-बोने योग्य बना सकते हैं। यदि हम समस्त गृहिणियों से सहायता लें तो आंकड़े और भी ऊंचे हो जाएंगे। यह सब हमारे पास श्रम के विशाल सुसज्जित भण्डार को प्रकट करता है। अब सवाल केवल यह रह जाता है कि आया हम जनता को पूर्णरूपेण समाजवादी देशभक्ति में शिक्षित करते हैं या नहीं और उसे समुन्नत देशभक्ति पूर्ण उत्साह के साथ इस काम को निपटाने को प्रेरित करते हैं या नहीं।

यदि हम सावधानी नहीं बरतते हैं, तो हो सकता है कि साथ-साथ फल की पैदावार के क्षेत्र में व्यापक विस्तार करने लगने से अन्न की उपज में दस लाख टन वृद्धि के हमारे प्रयास क्षतिग्रस्त हो जाएं। यदि स्वैच्छिक कार्य का समुचित उपयोग हो, तो इस काम पर किसानों को लगाने से बचाया जा सकता है। स्थिति का तकाजा है कि वाटिकाएं लगाने के काम में किसानों को शामिल न किया जाए, ताकि वे अन्न उत्पादन के काम में अपनी शक्ति केन्द्रित कर सकें। मेरा विचार है कि यदि हम स्वैच्छिक जनशक्ति का उत्तम उपयोग कर सकें तो हम एक वर्ष में ५०,००० छोंगबो बागान और १०,००० छोंगबो शहतूत वृक्ष बोने में पूर्णतया समर्थ हो जायेंगे और साथ ही अन्न की उपज में १० लाख टन की वृद्धि के अभियान में हम किसानों की मदद भी कर सकेंगे।

यदि हम पांच वर्ष के लिए इस ढंग से कड़ी मेहनत करते रहें तो २,५०,००० छोंगबो नये बनाने और ५०,००० छोंगबो शहतूत के नये पेड़ लगा लेंगे। इस काम के लिए कोई भारी मात्रा में सामग्री और धन की जरूरत भी न होगी। इसके लिए केवल यह जरूरी होगा कि सभी लोग एक साल में केवल दस रविवारों को अपने

कंधों पर कुदालियां और फांवड़े लेकर निकल पड़ें और कम्युनिस्टों की भावना के साथ काम करें। वाटिकाएं लगाये जाने के पांच या छह साल वाद हम उनके अति मधुर फल उतारने लगेंगे।

वाटिकाएं लगाते समय जोतने-बोने के लिए योग्य भूमि का समुचित चयन एक अति महत्वपूर्ण काम होता है। इसके लिए अच्छी संभावनाओं वाले घने जंगलों और जंगली क्षेत्रों का चयन नहीं किया जाना चाहिए। जंगल हमारी बहुमूल्य सम्पदा हैं। जब वृक्ष स्वस्थ रूप में बढ़ते हैं तो उनका इमारती सामग्री और उद्योगों के लिए विभिन्न कच्चे मालों के रूप में प्रयोग हो सकता है—उद्यान लगाने के उद्देश्य से ऐसे कीमती वनों को नष्ट करने की कोई आवश्यकता नहीं है। हमें वंजर पहाड़ियों, नये चीड़ कुन्जों या कीड़ों द्वारा ध्वस्त क्षेत्रों का चयन कर उन्हें बोने के योग्य बनाना चाहिए। ऊसर भूमियों का उपयोग करना भी ठीक रहेगा। यदि हम केवल इन्हीं भूमियों को बोने योग्य बना देंगे तो हमें विशाल क्षेत्र प्राप्त हो जाएगा।

दक्षिण हामग्योंग प्रान्त की सुदोंग काउंटी और दक्षिण प्योंगान प्रान्त की तोकछोन काउंटी में जिस तरह पर्वतों को बोने योग्य बनाने के लिए हरियाली का बिलकुल सफाया करके उन्हें नंगा कर दिया गया उस तरह आप न करें। यह बहुत खतरनाक है, क्योंकि इससे भूस्खलन हो सकता है। जो कोई भी वाटिका लगा रहा है उसे कदापि इसका अनुसरण नहीं करना चाहिए। इस प्रक्रिया में राष्ट्र की घरेलू अर्थव्यवस्था के प्रति स्वामी का रुख कतई परिलक्षित नहीं होता। निःसन्देह उद्यान लगाये जाने चाहिए लेकिन ऐसा कोई भी काम नहीं किया जाना चाहिए जिससे हमारी राष्ट्रीय सम्पदा का नुकसान हो। वाटिकाएं लगाते समय हमें भूस्खलनों को रोकने के लिए भूमि को काट-काट कर सिलसिलेबार चबूतरे बनाने चाहिए। यह उचित ही होगा कि पहले से विद्यमान वाटिकाओं का एक बार फिर निरीक्षण किया जाए और भूमि को पानी द्वारा बहा लिये जाने से रोकने के लिए पूरी तौर पर कदम उठाये जाएं।

इसके बाद हमें वाटिका लगाने के लिए अपेक्षित छोटे पौधों के उत्पादन को प्राथमिकता देना भूलना न चाहिए। निःसन्देह छोटे पौधे उपजाऊ भूमि पर उगाना अच्छा होता है लेकिन जहाँ तक संभव हो, हमें इस उद्देश्य के लिए अपनी मूल कृषि भूमि का उपयोग न करना चाहिए। हमें अपनी कृषि भूमि की पूरी देख-भाल करनी है और अन्न उत्पादन के लिए उसका क्षेत्रफल और विस्तृत करना है। अतः हमें वृक्षारोपण के लिए नर्सरियों के रूप में उसका अंधाधुंध उपयोग नहीं करना चाहिए। यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं है, कि अनाज हमारे लिए अधिक महत्व रखता है। बेहतर यही है कि वर्तमान नर्सरियों में या ऐसी अपेक्षाकृत

अधिक उपजाऊ भूमियों में पौध पास-पास लगायें जहां पहले से ही फलों की बाग-बानी हो रही हो। काफी परिमाण में खाद देने से ये पौधे खूब बढ़ेंगे। पौधे लगाने की समस्या को इसी ढंग से सुलझाया जाना चाहिए।

वाटिकाएं लगाने में हमें सड़कों के निर्माण की जरूरत की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। वाटिकाओं के विशाल क्षेत्रों को उपजाऊ बनाने के लिए हमें भारी परिमाण में खाद ऊपर को पहुंचानी पड़ेगी और इसी प्रकार फलों को नीचे लाना होगा। अत: छोटे ट्रैकटरों या बैलगाड़ियों के आवागमन के लिए सड़कें बनानी होंगी। यदि खाद और फल लोग पीठ पर लाद कर ले जाते हैं तो काम में प्रगति नहीं होगी। और हम समाजवाद के निर्माता ऐसे पिछड़े ढंग से काम जारी नहीं रख सकते।

यदि हम यह चाहते हैं कि हम बाग लगायें और इसमें हमें अवश्य सफलता प्राप्त हो तो काम को शुरू करने से पहले आप के लिए प्रदर्शन कक्षाओं की व्यवस्था करना अच्छा रहेगा।

प्रदर्शन कक्षाओं की पद्धति काम करने की एक ऐसी पद्धति है, जिसका मूलत: जापान-विरोधी छापामारों ने अनुसरण किया था। अब जनसेवा में इसका व्यापक रूप से अनुसरण किया जाता है। हम ने इसे पार्टी, प्रशासनिक और आर्थिक कार्य में और अन्य सभी क्षेत्रों में लागू किया है और यह पद्धति बड़ी कारगर सिद्ध हुई है।

प्रदर्शन कक्षाओं के आयोजन के लिए किसी विशिष्ट विशेषज्ञ की जरूरत नहीं होती। आप को केवल पुकचोंग काउंटी के अनुभवी फल उत्पादकों और कोई १०० से २०० सरकारी कर्मचारियों का उपयोग करना होगा।

प्रदर्शन कक्षाओं के संचालन हेतु आप को पहले नमूने के भूखण्ड तैयार करने होंगे। पुकचोंग काउंटी के अनुभवी फल उत्पादकों और सरकारी कर्मचारियों के निर्देशन के अन्तर्गत प्रत्येक प्रान्त में तीन से चार नमूने के प्लाट तैयार कीजिए। इस से काम चल जाएगा। यदि हम दक्षिण प्योंगान प्रान्त में करीब चार नमूने के भूखण्ड—एक नाम्पो या रियोंगगांग जिले में और अन्य सोंगछोन, आनजु और कांगदोंग जिलों में—तैयार करें तो हम पर्याप्त रूप से प्रदर्शन कक्षाएं चला सकेंगे।

यथासंभव वर्तमान नमूने के भूखण्डों के पास ही उनकी व्यवस्था करना अच्छा रहेगा, क्योंकि इस प्रकार उन दोनों की तुलना की जा सकेगी। नमूने के भूखण्डों के लिए वाञ्छित छोटे पौधों या कलमों की तैयारी अभी से शुरू कर दी जानी चाहिए।

नमूने के इन भूखण्डों पर व्यावहारिक प्रदर्शन से सभी भाग लेने वालों को

फल उत्पादन में पुकचोंग के लोगों के मूल्यवान अनुभव प्राप्त हो जायेंगे। यदि कक्षाओं का संचालन मात्र पाठ्य-पुस्तकों की विधि से किया जाता है तो निर्देशकों के लिए सिखाना और सीखने वालों के लिए समझना कठिन होता है। अपनी आंखों से वास्तविक वस्तुओं को देखते हुए उनकी व्याख्याएं सुनकर बहुत से लोग आसानी से पाठों को समझ सकेंगे और साथ ही अपने काम की त्रुटियों का तत्काल पता लगा कर उन्हें दूर कर सकेंगे। मिसाल के तौर पर यदि पश्चिमी तट के लोग, जिन्हें मैदानों या समतल खेतों में बागबानी करने की आदत पड़ी हुई है, व्यावहारिक उदाहरणों को देखेंगे तो वे अपने तौर-तरीके बदलने की आवश्यकता को बड़ी आसानी से अनुभव करने लगेंगे।

कार्यदलों के नेताओं के स्तर से ऊपर के कृषि सहकारों के सभी कर्मियों को प्रदर्शन कक्षाओं में शामिल करना वांछनीय होगा। हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कृषि सहकारों के अतिरिक्त प्रत्येक संस्था भी अनेक व्यक्तियों का चयन कर उन्हें अल्पकालिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में भेजे।

मैं समझता हूं कि प्रदर्शन कक्षाएं डेढ़ मास में पूरी हो सकती हैं। यदि इतना समय कम लगे तो उसे दो या तीन मास चलाने में भी कोई हर्ज नहीं है।

प्रदर्शन कक्षाओं की एक अनुसूची प्रत्येक काउंटी को भेजी जानी चाहिए, ताकि वे सब लोग जिन से प्रशिक्षण लेने की अपेक्षा की जा सकती है, उन में आयें और समुचित ढंग से अध्ययन करें।

प्रशिक्षण पाठ्यक्रम नमूने के भूखण्ड तैयार कर लिये जाने तथा प्रदर्शन कक्षाओं के लिए सभी व्यवस्थाएं पूरी हो जाने के बाद आयोजित किये जाने चाहिए। प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में इस बारे में व्यावहारिक दृष्टान्त दिये जाने चाहिए, कि बाग कहाँ और कैसे लगाये जाएं और भूक्षरण को पानी से कैसे रोका जाए।

यदि यह सब करने की बजाय आप निचली इकाइयों के कार्यकर्ताओं को बुला भेजें, उन्हें विशिष्ट कार्य सौंप दें और उन्हें पूरा करने की आज्ञा जारी कर दें, तो आप यह अपेक्षा नहीं कर सकते कि प्रकृति के पुनर्निर्माण की महान परियोजना को सन्तोषजनक ढंग से पूरा किया जा सकेगा। पार्टी की केन्द्रीय समिति के अध्यक्षमंडल ने पुकचोंग काउंटी के अनुभव को लोकप्रिय बनाने की जो मिसाल इस बार स्थापित की है आपको उसका अनुसरण करना होगा।

फल उत्पादन में पुकचोंग काउंटी के अनुभवों का प्रचार करने के लिए हमें न केवल प्रदर्शन कक्षाएं आयोजित करनी चाहिए, बल्कि पोस्टर, भित्तिचित्र, पर्चे आदि भी तैयार कर उन्हें कृषि सहकारों, संस्थाओं और उद्यमों को भेजना चाहिए। इसके अलावा हमें पुकचोंग काउंटी के फल-उत्पादन संबंधी अनुभव को

रेडियो प्रसारणों में व्यापक स्थान देना चाहिए और वैज्ञानिक तथा वृत्त चित्रों के माध्यम से उसकी परम्परागत विधि का प्रचार करना चाहिए।

फल उत्पादन के पुकचोंग काउंटी के अनुभव को पूर्णत: आत्मसात करने के बाद आप बाग लगाने का काम शुरू कर सकते हैं। परन्तु इसमें एक निश्चित प्रक्रिया का पालन करना जरूरी होगा। सर्वप्रथम प्रत्येक काउंटी पार्टी समिति अध्यक्ष को अपनी काउंटी में उपलब्ध जनशक्ति का अनुमान लगाना होगा, वाटिकाओं के लिए उपयुक्त स्थलों की छानबीन कर उनका पंजीकरण करना होगा और उनके बारे में प्रान्तीय पार्टी समिति को रिपोर्ट देनी होगी। काउंटी की रिपोर्ट मिलने पर प्रान्तीय पार्टी समिति को स्थलों के सर्वेक्षण और मानचित्र तैयार करने के लिए तकनीशियनों को भेजना चाहिए। इस प्रकार जो नक्शे तैयार हों, उनके आधार पर प्रान्तीय पार्टी समिति द्वारा वाटिकाओं की स्थापना के लिए प्रत्येक काउटी की योजना को स्वीकृति प्रदान की जानी चाहिए। यदि हम ऐसी प्रक्रिया का पालन नहीं करेंगे, तो संभव है कि कई स्थानीय क्षेत्रों में ऊटपटांग ढंग से वाटिकाओं की स्थापना कर ली जाये, जिससे देश की भारी हानि हो।

हमें इस प्रकार पर्याप्त संगठनात्मक और राजनीतिक कार्य पूरा करने के बाद बाग लगाने का काम प्रारम्भ करना चाहिए।

सातवर्षीय योजना के दौरान हमें कोई २,००,००० छोंगबो नयी वाटिकाएं लगानी होंगी और इस प्रकार कुल फल क्षेत्र बढ़ाकर ३,००,००० छोंगबो करना होगा। अलबत्ता हम बाद में काम की वास्तविक स्थिति के अनुसार इसमें वृद्धि कर सकते हैं। फिलहाल यह क्षेत्रफल २,००,००० छोंगबो निश्चित करना बेहतर होगा। हमें वाटिकाओं के विशाल क्षेत्रों की स्थापना की परियोजना को अखिल जन आन्दोलन द्वारा चलाना चाहिए।

विशेषकर पड़ोसी कृषि सहकारों के लिए उद्यानों की स्थापना में छात्रों, मजदूरों, कार्यालय कर्मचारियों और सैनिकों की सेवाएं प्राप्त की जानी चाहिए। इस समय हमारे देश में ४००० से अधिक कृषि सहकारियां हैं। इस प्रकार आपको २,००,००० छोंगबो नयी वाटिकाएं लगाने के लिए प्रत्येक कृषि सहकारी में मात्र ५० छोंगबो में फल के पौधे लगाने की जरूरत होगी।

इसके अतिरिक्त संस्थाएं और उद्यम स्वयं अपनी-अपनी वाटिकाएं लगा सकते हैं।

इस समय हमारे पास काफी संख्या में स्थानीय औद्योगिक फैक्टरियां हैं। यदि उनमें से प्रत्येक १० छोंगबो में वाटिकाएं लगायें, तो दसियों हजार छोंगबो में फलों के बाग लग जाएंगे।

हमारे देश में राज्य द्वारा संचालित सैकड़ों फैक्टरियां भी हैं। चूंकि इन

फैक्टरियों में भारी संख्या में मजदूर काम करते हैं, अतः उनमें से प्रत्येक के लिए वीसियों छोंगवो भूमि में बाग लगाना कठिन न होगा। यदि राज्य द्वारा संचालित फैक्टरियों को एक साथ लिया जाए, तो वे फलोद्यानों के इलाके में उल्लेखनीय वृद्धि कर सकती हैं।

हमारे देश में राज्य और प्रान्त द्वारा संचालित अनेक फार्म हैं। इस समय ये फार्म काफी जनशक्ति व्यर्थ गंवाते हैं। इस अवसर पर उनकी अतिरिक्त जनशक्ति को घटाने की बजाय उन्हें अधिक काम सौंपना अधिक उचित होगा।

मैं कल पुकचोंग फल फार्म में गया और वहां पाया कि १०० से अधिक लोगों की श्रमशक्ति व्यर्थ जा रही है। मेरे ख्याल में इस फार्म को ३०-४० छोंगवो वाटिकाएं लगाने का अतिरिक्त कार्य सौंपा जा सकता है।

स्कूलों के लिए भी बेहतर है कि बे अपनी वाटिकाएं लगायें। छात्रों और विद्यार्थियों को पड़ोस के कृषि सहकारों के लिए वाटिकाएं लगाने के काम में तो भरती किया ही जाना चाहिए, साथ ही उन्हें अपने-अपने स्कूलों में भी वाटिकाएं लगाने के लिमें लामबंद किया जाना चाहिए। उस हालत में उनमें इस काम के बारे में अधिक रुचि उत्पन्न होगी। काउंटी पार्टी और जन समितियों को भी कुछ अपनी वाटिकाएं लगानी चाहिए।

इस तरह देश भर में सहकारी फार्मों, संस्थाओं, उद्यमों, स्कूलों और राज्य द्वारा संचालित फार्मों समेत सभी क्षेत्रों से मजदूरों, कार्यालय कर्मचारियों, छात्रों और सैनिकों की सक्रिय सहायता का एक अखिल जन आन्दोलन के माध्यम से २,००,००० छोंगबो वाटिकाओं की स्थापना के महान प्रकृति-पुर्ननिर्माण परि-योजना को हाथ में लिया जाना चाहिए। यदि हम कुछ वर्षों के लिए अपनी शक्ति को एक जगह इकट्ठी कर कड़ी मेहनत करें तो हम निश्चित देख पाएंगे कि हमारे प्रयास व्यर्थ नहीं रहे हैं। इस उपयोगी, सम्मानजनक कार्य के लिए हर व्यक्ति को वीरतापूर्वक आगे आना चाहिए।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि आप एक साहसपूर्ण और सक्रिय संघर्ष छेड़ेंगे और इस पावन क्रान्तिकारी कार्य को शानदार ढंग से पूरा करेंगे।

बच्चों और युवकों की शिक्षा-दीक्षा में शैक्षणिक कार्यकर्ताओं के कर्तव्य

सक्रिय शैक्षणिक कार्यकर्ताओं के राष्ट्रीय सम्मेलन में दिया गया भाषण

२५ अप्रैल, १९६१

आप लोग २५,००,००० बच्चों और युवकों को, हमारे देश के भावी स्वामियों को, विश्वस्त कम्युनिस्टों के रूप में शिक्षित और दीक्षित करने का सम्मानपूर्ण कार्य सफलतापूर्वक संचालित कर रहे हैं।

प्रारम्भ में पार्टी की केन्द्रीय समिति की ओर से मैं आप अध्यापकों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करना चाहूंगा जो हमारे देश के बच्चों और युवकों के शिक्षण और प्रशिक्षण के कार्य में अपने-आप को लगा रहे हैं, और इस सम्मेलन की महान सफलता की कामना करना चाहूंगा।

इस अवसर का लाभ उठाकर मैं बच्चों और युवकों की शिक्षा और शिक्षण से सम्बन्धित कुछ प्रश्नों पर बोलना चाहूंगा।

जैसा कि अनेक साथियों ने अपने भाषणों में बार-बार कहा है, पार्टी ने शैक्षणिक कार्यकर्ताओं के सामने जो महत्वपूर्ण कर्तव्य प्रस्तुत किया है, वह यह है कि हमारी युवा पीढ़ी को समाजवाद और कम्युनिज्म के विश्वस्त निर्माताओं के रूप में, सभी पहलुओं से विकसित श्रेष्ठ कम्युनिस्टों के रूप में शिक्षित-दीक्षित किया जाय। यह बहुत कठिन और उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य है।

पार्टी की नीति का पालन करते हुए आप लगन के साथ जूझे हैं और अब इस कठिन कार्य को सम्पन्न करने में महान परिणाम प्राप्त कर रहे हैं।

मैं इस तथ्य से प्रसन्न हूं कि हमारे देश में बच्चों और युवकों की शिक्षा ठीक ढंग से चल रही है और आपने जो सफलताएं प्राप्त की हैं, उनकी मैं अत्यधिक सराहना करता हूं। यह ठीक है कि हमारे काम में कई कमियां भी हैं। इस कठिन

कार्य को सफलतापूर्वक करते रहने के लिए हमें और अधिक स्फूर्ति तथा उत्साह प्रदर्शित करना चाहिए तथा अपने विवेक का कुछ और बड़े पैमाने पर उपयोग करना चाहिए।

हम अब एक नये समाज में रह रहे हैं। स्वयं आप सभी वे नये इन्सान हैं जो मजदूर पार्टी के युग में शिक्षित होकर पले-बढ़े हैं। आप एक नये समाज में एक नये प्रकार के इन्सान को शिक्षित-दीक्षित करने में लगे हुए लाल शिक्षक हैं। पुराने समाज में जैसा हुआ करता था, उसके विपरीत हमें नये समाज के इन्सान के पालन-पोषण के लिए शिक्षा की नयी नीति और नयी प्रणालियों का अनुसरण करना चाहिए। कम्युनिस्ट शिक्षा संबंधी हमारी पार्टी की नीति ऐसी सही नीति है जिस पर आज के नये इन्सान के शिक्षण के लिए हमें अवश्य चलना चाहिए।

कम्युनिस्ट लाइनों पर लोगों के पुनः संस्कार का काम एक ऐसे कम्युनिस्ट समाज के निर्माण के लिए, जिसमें सभी लोग समृद्धिपूर्वक रहें, अत्यन्त महत्त्व का है।

समाजवादी समाज कम्युनिस्ट समाज का प्रथम चरण है। समाजवादी समाज के निर्माण के लिए भौतिक और तकनीकी आधारों के निर्माण के कार्य को मनुष्य की चेतना के पुनःसंस्कार के साथ-साथ किया जाना चाहिए। अगर उत्पादन सम्बन्धों का समाजवादी रूपान्तर हो जाय और नयी तकनीकें लागू हो जायें, तब भी हम उस समय तक यह नहीं कह सकेंगे कि समाजवाद का निर्माण पूरा हो गया है, जब तक कि जनता का, समाज और प्रविधि को अपने नियंत्रण में रखने वाले स्वामियों का पुनःसंस्कार नहीं हो जाता।

जनता के पुनःसंस्कार का काम समाज-व्यवस्था का रूपान्तर करने या प्रविधि को विकसित करने की अपेक्षा कहीं अधिक जटिल और कठिन है।

समाज की भौतिक परिस्थितियों से मनुष्य की चेतना निर्धारित होती है और भौतिक परिस्थितियों की अपेक्षा मनुष्य की चेतना धीमी गति से बदलती है। पुराने विचार और पुरानी आदतें बड़ी अड़ियल होती हैं। सामाजिक जीवन की भौतिक परिस्थितियों के बदल दिये जाने के बाद भी पुराने विचार और पुरानी आदतें एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुंचती और फैलती हुई काफी लम्बे अर्से तक जमी रहती हैं।

वैचारिक चेतना में परिवर्तन की विशेषता यह है कि सामाजिक जीवन की भौतिक परिस्थितियों के परिवर्तन की भांति, वह उतना गोचर नहीं होता। एक फैक्टरी बनाते हुए आप स्पष्ट देख सकते हैं कि एक दिन नींव पड़ी, दूसरे दिन पहली मंजिल उठ खड़ी हुई, फिर एक और दिन दूसरी मंजिल बन गयी। मशीन-निर्माण के मामले में भी जो कुछ कर लिया गया और जो कुछ करना बाकी है,

उसके बीच स्पष्ट अन्तर है—आज एक विशेष हिस्सा बना, कल दूसरा और फिर उनको जोड़ दिया गया। लेकिन मनुष्य की चेतना गोचर नहीं होती और न उसके रूपान्तर को हम किसी पैमाने से माप सकते हैं। अन्ततः किसी मनुष्य के क्या विचार हैं, इसको उसके आचार-व्यवहार से ही आंका जा सकता है। और चेतना के विकास का परिमाण व्यक्ति-व्यक्ति में भिन्न होता है। और हर मनुष्य के विचार की अन्तर्वस्तु अत्यन्त जटिल होती है।

इसलिए, मनुष्य की चेतना के पुनःसंस्कार के काम में लम्बे और धैर्यपूर्ण प्रयत्नों की आवश्यकता होती है और उसको सावधान अध्ययन के आधार पर वैज्ञानिक पद्धति से किया जाना चाहिए। शिक्षा कार्य बहुत महत्वपूर्ण और साथ ही बड़ा कठिन काम है।

हर समाज में जनता के शिक्षण में विद्यालय का जीवन्त स्थान होता है। विशेषकर समाजवादी निर्माण जितना आगे बढ़ता है और हम कम्युनिस्ट समाज के जितने निकटतर आते जाते हैं, राज्य के शिक्षात्मक-सांस्कृतिक कार्य को पूरा करने में विद्यालयों का कर्तव्य उतना ही बढ़ता जाता है।

गृह शिक्षा, सामाजिक शिक्षा और विद्यालयी शिक्षा को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता; उन्हें हमेशा साथ-साथ चलना चाहिए और उनको उचित रीति से संयुक्त किया जाना चाहिए। लोगों की शिक्षा घर से शुरू होती है, उसकी नींव विद्यालय में पड़ती है और सामाजिक शिक्षा के दौरान वह सर्वांग सम्पन्न होती है।

विद्यालय मनुष्य को उनके बचपन तथा युवा अवस्था में, जीवन के ऐसे अत्यन्त प्रभाव-ग्रहणशील काल में शिक्षा देते हैं जब उनका मानसिक और शारीरिक विकास तीव्र होता है। बच्चे और युवक नयी बातें सीखने के लिए अत्यन्त उत्सुक होते हैं; वे कोई महान, गौरवशाली और असाधारण कार्य करने की आकांक्षा से परिपूर्ण होते हैं; वे दूसरों के ऐसे उदाहरण का अनुसरण करने के लिए तैयार रहते हैं जिसका उन पर गहरा असर पड़ता है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि इस काल में भी गृह और सामाजिक शिक्षा आवश्यक है, किन्तु अधिक दायित्व अध्यापकों पर ही होता है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि हमारे बच्चे और युवा अच्छे लोग बनेंगे या नहीं, यह इस पर निर्भर करता है कि अध्यापक उन्हें कैसे शिक्षित करते हैं। माता-पिता के स्थान पर अध्यापकों का यह भारी दायित्व है कि वे बच्चों और युवकों को ऐसे कुशल स्त्री-पुरुष के रूप में शिक्षित करें जिनकी कि पार्टी और राज्य को अपेक्षा है। इसीलिए प्राचीन काल से ही लोग शिक्षण को एक पवित्र कार्य मानते आये हैं और उदीयमान पीढ़ी की शिक्षा में जुटे हुए अध्यापकों का बड़ा सम्मान करते

आये हैं।

हमारे समाज में भी अध्यापकों का सम्मान किया जाता है और पार्टी, राज्य तथा समस्त जनता उनसे बड़ी आशाएं रखती है। आपसे पार्टी और राज्य जितनी महान आशाए लगाय हैं, उनकी रोशनी में आपको स्वयं अपने सम्मान और दायित्व का गहनतर बोध होना चाहिए जैसा कि याकसू मिडिल स्कूल के प्रिंसिपल ने अपने भाषण में अभी कहा, आज शिक्षण का कार्य एक सम्मानपूर्ण क्रान्तिकारी कार्य है।

अपने शिष्यों और छात्रों को अच्छे कम्युनिस्ट के रूप में शिक्षित ओर दीक्षित करने के लिए सर्वोपरि स्वयं शिक्षकों को सम्मानित कम्युनिस्ट और क्रान्तिकारी बनना चाहिए।

पुरानी कहावत है : उपदेश से उदाहरण भला। इसका अर्थ है कि स्वयं अपने अमल से आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। बच्चों और युवकों को शिक्षित करने के लिए अध्यापकों को स्वयं अपनी करनी द्वारा उदाहरण पेश करना चाहिए। इसके लिए स्वयं अध्यापकों को कम्युनिस्ट विचारधारा और एक क्रान्तिकारी जैसी उदात्त नैतिक विशेषताओं से लैस सम्मानित कम्युनिस्ट बनना चाहिए। अगर एक अध्यापक में ही वैचारिक या नैतिक दुर्बलताएं हैं तो कोई उसका सम्मान नहीं करेगा और न उसके शब्दों पर विश्वास करेगा, फिर चाहे वे शब्द कितने ही सुन्दर क्यों न हों।

उदीयमान पीढ़ी के हमारे शिक्षकों को पुराने समाज के अवशिष्ट विभिन्न कुत्सित विचारों को पूर्णतया तिलांजलि दे देनी चाहिए और शिक्षा के मोर्चे पर कम्युनिस्ट विचारधारा से लैस लाल क्रान्तिकारी योद्धा की भांति खड़े होना चाहिए।

कम्युनिस्ट कोई सामान्येतर लोग नहीं हैं। जो भी व्यक्ति सभी प्रकार के शोषण और उत्पीड़न से जनता को मुक्ति दिलाने के लिए तथा समस्त जनता को सुखी जीवन उपलब्ध कराने के लिए आत्म-बलिदान की भावना से लड़ता है, वह कम्यु-निस्ट हो सकता है। और फिर हमारे समाज में जहां जनता देश और समाज की स्वामी है, कम्युनिस्ट बनना किसी व्यक्ति के लिए उतना कठिन भी नहीं है। जो भी व्यक्ति पुरानी विचारधारा से दृढ़तापूर्वक लड़ता है और हमारी पार्टी की विचार-धारा से अपने को लैस करने के लिए ईमानदारी से प्रयत्न करता है, कम्युनिस्ट बन सकता है। इसमें रत्ती भर सन्देह नहीं कि विशेषकर आप लोग, हमारे शिक्षक-गण, जिन्हें हमारी पार्टी ने लगातार शिक्षित किया है और जो मुक्ति के बाद से ही पार्टी की नीतियों पर अमल करने के लिए अनवरत कार्य करते रहे हैं, श्रेष्ठ कम्युनिस्ट बन सकते हैं। मेरा सुदृढ़ विश्वास है कि आप सभी निरपवाद रूप से

पार्टी की लाल विचारधारा से लैस श्रेष्ठ कम्युनिस्ट शिक्षक बन जायेंगे।

अब कुछ शब्द बच्चों और युवकों की कम्युनिस्ट शिक्षा के विषय में कहना चाहूंगा।

अनेक लोग सोचते हैं कि कम्युनिस्ट शिक्षा कोई रहस्यपूर्ण वस्तु है। पहले तो लोग यह समझते थे कि यह ऐसा कार्य है जिसे पूरा कर सकना लगभग असम्भव है। लेकिन जब इसका सामना करना पड़ा और इस काम को लगन के साथ किया गया तो हमने स्पष्ट देखा कि कम्युनिस्ट शिक्षा के बारे में कोई रहस्यपूर्ण बात नहीं है। हम भारी सफलताएं प्राप्त कर चुके हैं और इस क्षेत्र में काफी समृद्ध अनुभव संजो चुके हैं।

हमारे अनुभव से प्रकट है कि बच्चों और युवकों की कम्युनिस्ट शिक्षा में सर्वोपरि महत्व इस बात का है कि उनके अन्दर जनता के प्रति, मित्रों, संगठन और सामूहिक के प्रति प्रेम-भाव पैदा किया जाय।

पूंजीवादी समाज में व्यक्ति एक-दूसरे से होड़ करते हैं और जूझते हैं ताकि वे अकेले स्वयं समृद्धशाशी जीवन का उपभोग कर सकें, किन्तु कम्युनिस्ट समाज में सारी जनता समान रूप से सुखी होगी। हम कम्युनिज्म का निर्माण कर रहे हैं तो इसलिए नहीं कि चंद लोग समृद्धि का उपभोग करें, बल्कि इसलिए कि सारी जनता समान रूप से काम करे और समान रूप से समृद्धि भोगे। कम्युनिस्ट समाज में जनता में से हर एक के हित और उद्देश्य समान होते हैं और वे पारस्परिक सहायता के साथी बन घनिष्ट रिश्ते स्थापित करते हैं। कम्युनिस्ट समाज में "एक सब के लिए और सब एक के लिए" के नारे के साथ सारे लोग एक बहुत बड़ा सयुक्त और सामंजस्यपूर्ण परिवार बन जाते हैं जो एक-दूसरे की सहायता करते हैं, एक-दूसरे के सुख-दुःख के भागीदार बनते हैं।

इस समाज में स्वार्थपरता को जो मात्र व्यक्तिगत सुख और गौरव की चिन्ता करती है, सहन नहीं किया जा सकता। ऐसी स्वार्थी मनोवृत्ति वाला व्यक्ति न तो कम्युनिस्ट समाज का निर्माण कर सकता है और न उसमें रह सकता है। कम्यु-निस्ट बनने के लिए व्यक्ति को स्वार्थपरता त्याग देनी होगी और जनता से प्रेम करना सीखना होगा।

हमारे बच्चों को घर में माता-पिता और भाई-बहनों से प्यार करना चाहिए, स्कूल में अध्यापकों और मित्रों से प्रेम करना चाहिए और बाहर समाज में निक-लने पर समस्त मेहनतकश जनता से प्रेम करना चाहिए। हमें अपनी भावी पीढ़ी को बचपन से ही ऐसी आदतें ग्रहण करने के लिए शिक्षित करना चाहिए। जो दूसरों को प्यार करता है, वही दूसरों से प्यार पाने का अधिकारी होता है और सामूहिक जीवन में सामंजस्यपूर्वक निर्वाह कर सकता है।

हमें कभी-कभी ऐसे लोग मिलते हैं जो एकाकी जीवन पसन्द करते हैं। ऐसे लोग हैं जो अलग-अलग मकानों में अपनी तईं रहना चाहते हैं, अकेले आनन्द उठाना चाहते हैं और मित्रों से कतराते हैं। इस तरह के लोग दूसरों के प्रति बहुत निर्मम होते हैं और दूसरों के सुख-दुःख के प्रति उदासीन होते है। ऐसे लोग क्रान्तिकारी नहीं बन सकते।

कम्युनिस्ट बनने के लिए व्यक्ति को जनता और समूह के हितों को अपने हितों से ऊपर रखना चाहिए और मात्र अपनी ही चिन्ता नहीं करनी चाहिए, बल्कि अपने साथियों और जनता की फिक्र करना सीखना चाहिए। वास्तव में, अपने साथियों के साथ एक लम्बे समय तक क्रान्तिकारी काम करने से हम अपने परिवार की अपेक्षा साथियों से ज्यादा स्नेहबद्ध हो जाते हैं। जिनके साथ हम जिन्दगी और मौत के, मधुर और कटु परिस्थितियों के साझीदार रहते हैं और कठिन परिस्थितियों में एक दूसरे की रक्षा करते हैं, उन क्रान्तिकारी साथियों से अधिक प्रिय और कोई नहीं होता। यही कारण है कि क्रान्तिकारी साथियों के सामूहिक किसी भी परिवार से अधिक संयुक्त और सामजंस्यपूर्ण होते हैं। क्रान्तिकारी अपने साथियों और अपने क्रान्तिकारीं सामूहिक के लिए अपने जीवन की बाजी लगाकर लड़ते हैं।

और ऐसी सामूहिकता सारतः मनुष्य के प्रति प्रेम पर आधारित होती है। अपने सामूहिक को वे लोग प्यार कर सकते हैं जो अपने साथियों और जनता को प्यार करते हैं। इसलिए कम्युनिस्ट शिक्षा में यह आवश्यक है कि बच्चों और युवकों में अपने मित्रों और जनता के प्रति प्रेम-भाव पैदा किया जाय ताकि उनमें सामूहिकता की भावना विकसित हो।

व्यक्तिवादी नायकवाद जिसकी विशेषता होती है मात्र अपने को महत्व देना, और स्वेच्छाचार जिसका लक्षण है दूसरों की राय को तुच्छ जताते हुए मात्र अपने मत को गले लगाये रखना, दोनों ही पूंजीवादी स्वार्थपरायणता की अभिव्यक्ति हैं तथा सामूहिक की एकता और सौहार्द के लिए हानिकारक हैं। इन दूषित विचारों का पूर्णतया उन्मूलन करने के लिए यह आवश्यक है कि बचपन से ही समूह को प्यार करने की आदत पैदा की जाय।

घर और स्कूल दोनों ही सामूहिक भी हैं, घर में बच्चों को अपने माता-पिता तथा भाई-बहनों को, स्कूल में अपने साथी विद्यार्थियों और अध्यापकों को और मुहल्ले में अपने पड़ोसियों को प्यार करना चाहिए। इस प्रकार उन्हें अपने देश तथा जनता से प्रेम करना और पार्टी, राज्य तथा जनता के लिए संघर्ष करने में अपना सर्वस्व अर्पण करना सीखना चाहिए। जो लोग इस भावना में दीक्षित होते हैं, वे ही समस्त कठिनाइयों को आसानी से पार कर पाते हैं, समाज को और तेजी

से विकसित करते हैं तथा कम्युनिस्ट समाज में समानता से सामजंस्य और सुख के साथ रहते हैं।

सामूहिकता की शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण यह है कि बच्चों को सामूहिक की महान शक्ति में विश्वास हो। किंडरगार्टन और तरुण पायनियरों के जीवनकाल से ही बच्चों को यह भलीभांति दिखा देना चाहिए कि जब समूह मिलकर प्रयत्न करता है तो वह ऐसे काम पूरे कर लेता है जो व्यक्ति की शक्ति के बाहर होते हैं। इस प्रकार हर व्यक्ति को समूह की शक्ति में आस्था रखने, जीवन में उस पर भरोसा करने और उसके लिए लड़ने की शिक्षा मिलनी चाहिए।

कम्युनिस्ट शिक्षा में एक और महत्वपूर्ण तत्व यह है कि नयी पीढ़ी को सार्वजनिक सम्पत्ति को मूल्यवान् मानने और उसकी चिन्ता करने की भावना से दीक्षित करना चाहिए।

हमारे समाज में समस्त मूल्यवान् सम्पत्ति जनता की सांझा संपत्ति है। उत्पादन और यातायात सभी के साधन फैक्टरियां, खानें, वन, खेत, रेलें और जहाज—जनता के हैं और समस्त सांस्कृतिक और स्वास्थ्य संस्थाएं जैसे स्कूल, अस्पताल और थियेटर भी जनता की सम्पत्ति हैं। ये सभी सम्पत्तियां किसी व्यक्ति की नहीं, पूरी जनता की हैं; उनसे वर्तमान पीढ़ी की सेवा होती है और भावी पीढ़ियों की भी सेवा होगी। यह सार्वजनिक सम्पत्ति सामूहिक के सभी सदस्यों द्वारा अच्छे जीवन के उपयोग के लिए अपरिहार्य एक अमूल्य निधि है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अगर कोई व्यक्ति सामूहिक से प्रेम करता है तो उसे उसकी सांझा सम्पत्ति से भी प्रेम करना चाहिए।

हमें अपनी सड़कों, इमारतों और गलियों तथा राज्य और समाज की समस्त सम्पत्ति के प्रति प्रेम भाव रखना चाहिए। आज हम जिन मकानों में रह रहे हैं, कल उनमें दूसरे लोग रह सकते हैं। आज हम जिन कुर्सियों का उपयोग कर रहे हैं, वे कल दूसरों को दी जा सकती हैं। हम जिन मकानों में रहते हैं, और जिन मेज-कुर्सियों का हम उपयोग करते हैं, उनकी हमें भलीभांति देखभाल करनी चाहिए; हमें अपने सभी स्कूलों-फैक्टरियों से प्यार करना चाहिए।

देशभक्ति अंततः सामूहिकता की ही अभिव्यक्ति है। देशभक्ति की भावना, सर्वोपरि, जनता के प्रति प्रेम के रूप में और जनता की सम्पत्ति की अच्छी देखभाल के रूप में प्रकट होती है। देशभक्त बनने के लिए हर व्यक्ति को अपने परिवार और मित्रों से, अपने साथी ग्रामवासियों और अपने स्थान के निवासियों से प्रेम करना चाहिए और अपनी जनता से प्यार करना चाहिए; उसे अपने स्कूल, फैक्टरी और गांव से प्यार होना चाहिए और राज्य की समस्त सम्पत्ति की अच्छी देखभाल करनी चाहिए।

सार्वजनिक सम्पत्ति की उपेक्षा करना और केवल अपनी मिल्कियत की देखरेख करना पूंजीवादी विचारधारा की अभिव्यक्ति है।

हमने भारी संख्या में मकान, स्कूल और थियेटर बनाये हैं। लेकिन ऐसे उदाहरण हैं कि इमारतें थोड़े ही दिनों के बाद उपयोग के लायक नहीं रह गयीं, क्योंकि लोगों ने उनका मूल्य नहीं समझा और अच्छी देखभाल नहीं की। यह अत्यन्त खेदजनक है।

अगर हम एक पेड़ भी लगायें तो हमें इसका अच्छी तरह अहसास होना चाहिए कि वह हमारे और हमारे उत्तराधिकारियों के भले के लिए है और उसकी हमें भलीभांति देखभाल करनी चाहिए। लोग कहते हैं कि याकसू मिडिल स्कूल में विद्यार्थियों को अपने समस्त स्कूली जीवन में कुर्सियों पर चाकू से एक भी निशान न बनाने की शिक्षा दी गयी है। यह बड़ी अच्छी बात है। मैंने सुना कि जब याकसू मिडिल स्कूल में एक अतिथि ने कुछ लिखने के लिए अपनी पेंसिल की नोंक बनाने की कोशिश की तो उनको देख रहे एक छात्र ने छीलन पकड़ने के लिए अपनी हथेली फैला दी। वे विद्यार्थी अपने स्कूल को अत्यधिक सावधानी से साफ-सुथरा रखते हैं और उसको साफ और बेदाग रखने के लिए इतने आतुर रहते हैं। मुझे बताया गया है कि जो व्यक्ति पेंसिल बना रहा था, वह अत्यधिक प्रभावित हुआ। हमारे सभी छात्रों को उसी विद्यार्थी की तरह बन जाना चाहिए।

देशभक्ति कोई खोखली धारणा नहीं है। देशभक्ति की शिक्षा मात्र यह नारा लिख देने से नहीं दी जा सकती : "आइये, हम अपने को समाजवादी देशभक्ति की भावना से लैस करें!" लोगों को देशभक्ति की भावना में दीक्षित करने का काम हमें सड़क के किनारे लगाये गये एक-एक पौधे और स्कूल में एक-एक कुर्सी और मेज की चिन्ता करने से शुरू करना चाहिए। जो चीजें नयी पीढ़ी की समझ के अन्दर हैं, उनके जीवन से सम्बन्धित हैं, हमें शुरूआत उनसे करनी चाहिए और फिर धीरे-धीरे उन्हें स्वेच्छा से देश तथा जनता के हितों की रक्षा करना सिखाने की ओर बढ़ना चाहिए। निःसन्देह जो व्यक्ति बचपन से ही सार्वजनिक सम्पत्ति को संजोने की आदत डाल लेगा, वह बड़ा होकर श्रेष्ठ देशभक्त बनेगा।

कम्युनिस्ट शिक्षा में एक और महत्वपूर्ण विषय है बच्चों और युवकों को श्रम से प्रेम करना सिखाना।

पूंजीवादी समाज में, मेहनतकश लोगों के साथ दुर्व्यवहार होता है और श्रम को हीन समझा जाता है। अतः स्वयं मेहनतकश जनता अनजाने में यह सोचने लगती है कि निठल्ली जिन्दगी बढ़िया चीज है। हमारे देश में भी अनेक लोग सोचते थे कि जो निठल्ली जिन्दगी बिताता है, वह अत्यन्त सौभाग्यशाली आदमी है। जब किसी सुन्दर बालक की सराहना की जाती थी तो कहा जाता था कि

बिना काम-काज सुख भोगना इस बच्चे की किस्मत में लिखा है। जब कोई सुन्दर लड़की होती थी तो लोग कहते थे कि वह किसी अमीर घराने की सबसे बड़ी बहू बनने योग्य है। हमारे पूर्वज कमरतोड़ मेहनत के बोझ से दबे होने के कारण उन लोगों से ईर्ष्या करते थे जो बिना काम-काज किये रोटी खाते थे और आकांक्षा करते थे कि उनको भी ऐसा सौभाग्य प्राप्त हो जिससे कि वे भी इसी तरह रोटी खा सकें।

आज भी कुछ लोग यह सोचते हैं कि कम्युनिस्ट समाज में लोग महज आवारा-गर्दी करके जी सकते हैं। यह विचार गलत है। कम्युनिस्ट समाज ऐसा समाज नहीं है जिसमें कोई भी काहिलपन की रोटी तोड़ सके।

कम्युनिस्ट समाज ऐसा समाज है जिसमें सभी काम करते और सुख से रहते हैं। कालान्तर में जैसे-जैसे प्रविधि विकसित होती जायेगी ऐसे समाज में श्रम आसान होता जायगा। तब सभी कठिन और दुःसाध्य कार्यों का मशीनीकरण और स्वचालन हो जायगा; भारी और हलके काम तथा बौद्धिक और शारीरिक श्रम का अन्तर मिट जायगा। काम कष्टकर नहीं, सुखद और आनन्दपूर्ण बन जायगा; वह जीवन की आवश्यकता बन जायगा। फिर भी श्रम की आवश्यकता तो बनी ही रहेगी। सभी दौलत श्रम की उपज है। श्रम के बिना समाज कायम नहीं रखा जा सकता और न उसकी प्रगति हो सकती है।

प्रश्न है : काम किसके लिए किया जाता है ? पूंजीवादी समाज में मेहनतकश जनता अपने लिए नहीं, पूंजीपतियों के लिए काम करती है। श्रम-फल जनता की सम्पत्ति नहीं बनता, बल्कि शोषकों द्वारा हरण कर लिया जाता है। ऐसे समाज में मजदूरों को उत्साह प्रदर्शित करने की प्रेरणा नहीं मिलती और श्रम केवल पीड़ादायक होता है। लेकिन समाजवादी समाज में श्रम के फल को स्वयं मजदूरों और समस्त आम जनता की सेवा में पेश किया जाता है। इसलिए हमारे समाज में श्रम पवित्र रचनात्मक वस्तु है; वह एक ऐसा सम्मानजनक काम है जिससे सारी जनता और पूरे देश की समृद्धि होती है। हमारी व्यवस्था में वे लोग जो श्रम का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, जनता का प्रेम और सम्मान प्राप्त करते हैं क्योंकि वे देश और जनता की भलाई के लिए अन्य सभी की अपेक्षा कहीं बढ़ कर कार्य करते हैं। हम कह सकते हैं कि हमारे देश के श्रमवीर देश और जनता की वफादारी से सेवा करने वाले श्रेष्ठ देशभक्त हैं।

पूंजीवादी समाज में ऐसे अनेक लोग हैं जो बिना काम-काज किये जिन्दगी बिताते हैं। लेकिन हमारे देश में सभी प्रकार के शोषण का अन्त हो गया है और किसी प्रकार के निठल्लेपन की इजाजत नहीं है। हम कह सकते हैं कि निठल्ले लोग दूसरों की मेहनत पर जीने वाले पिस्सू हैं। चूंकि पूंजीवादी देशों में ऐसे

पिस्सुओं की बहुतायत होती है, इसलिए मेहनतकश जनता अच्छी तरह गुजर-बसर नहीं कर पाती। लेकिन हमारे समाज में प्रत्येक व्यक्ति काम करता है, इस लिए पूंजीवादी समाज की तुलना में अधिक दौलत पैदा की जा सकती है और सभी लोग समृद्धि के साथ जी सकते हैं।

पिछले जमाने में जो लोग अमीर थे, वे शिकायत करते हैं कि उनका जीवन जैसा पूंजीवाद में था, आज उससे बदतर है। निश्चय ही उस समय जमींदार और पूंजीपति आज की बनिस्बत बहुत खुशहाल थे क्योंकि वे लोग कई लोगों के श्रम के फल को अपने लिए छीन लेते थे। मगर दूसरी ओर, शोषित लोग कष्ट से रहते थे। अब केवल वही लोग यह शिकायत करते हैं कि उनका वर्तमान अतीत से बुरा है, जो जमींदार और पूंजीपति थे और जिनमें अभी सुधार नहीं किया जा सका है।

कुछ लोग सोचते हैं कि अध्ययन का श्रम से कोई सम्बन्ध नहीं है। लेकिन यह गलत है। सारतः हम श्रम के लिए आवश्यक ज्ञान और तकनीक प्राप्त करने के उद्देश्य से अध्ययन करते हैं। जिस ज्ञान का कोई व्यावहारिक मूल्य नहीं, वह हमारे लिए व्यर्थ है।

पिछले काल में, कुछ लोग एक अक्षर भी उचित ढंग से नहीं लिख पाते थे, हालांकि पुरानी शैली के प्राइवेट स्कूलों में वे सूत्र पाठ करते हुए पुरोहितों की तरह कन्फ्युशियस का "सूक्ति-संग्रह" और मेन्शियस के "प्रवचन" दोनों ही पढ़ डाला करते थे। पिछले काल में जापान-विरोधी छापामारों में बहुत से विद्वान थे, लेकिन उनमें से कुछ लोग अपने ज्ञान का उपयोग करना नहीं जानते थे। इसलिए हम उन्हें "ज्ञान की तालाबन्द पिटारी" कहा करते थे।

जनता के लिए मानसिक श्रम उतना ही उपयोगी है जितना शारीरिक श्रम। जो मानसिक श्रम करते हैं वे मशीनों का आविष्कार कर सकते हैं। लेकिन अगर उसको फलदायक होना है तो यह आवश्यक होगा कि उसको शारीरिक श्रम से संयुक्त किया जाय। मशीन का आविष्कार करने के लिए व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से मशीनों को बरत कर उनसे परिचित हो जाना चाहिए और मजदूरों का दृष्टिकोण भी सुनना चाहिए। अध्ययन में मात्र कल्पना से कुछ हासिल नहीं होगा।

हम सीखते हैं ताकि काम कर सकें और श्रम द्वारा हम और बेहतर ढंग से सीख सकते हैं। इसलिए हमारे अध्ययन को हर सूरत में श्रम से संयुक्त होना चाहिए।

हमें शिष्यों और छात्रों को यह बोध करा देना चाहिए कि श्रम पवित्र और अत्यन्त मूल्यवान् वस्तु है और उन्हें जमींदारों और पूंजीपतियों से घृणा करना सिखाना चाहिए क्योंकि वे काम नहीं करते बल्कि अन्य लोगों का शोषण करके भरपेट खाकर और भरपूर कपड़े पहनकर जीवित रहते हैं। और हमें शिष्यों तथा

छात्रों में प्रारम्भिक आयु से ही श्रमशील बनने की आदत पैदा करनी चाहिए, समस्त ज्ञान श्रम से संयुक्त करके दिया जाना चाहिए और श्रम के दौरान प्राप्त ज्ञान को सुदृढ़ करने में उनकी सहायता की जानी चाहिए।

कम्युनिस्ट शिक्षा में एक और महत्वपूर्ण विषय है बच्चों और युवकों को समाजवादी व्यवस्था की श्रेष्ठता समझाना।

हमारे देश में जो समाजवादी व्यवस्था स्थापित की गयी है वह हमारी जनता द्वारा हासिल की गयी महानतम क्रान्तिकारी उपलब्धि है। हमारी जनता सुख का उपभोग कर सकती है और हमारा देश तीव्र गति से विकसित और समृद्ध हो सकता है क्योंकि हमने एक ऐसी समाजवादी व्यवस्था स्थापित कर ली है जो शोषण और उत्पीड़न से मुक्त है और जहां जनता सत्ता की स्वामी है। हमें अपने शिष्यों और छात्रों को बतलाना चाहिए कि इस समाजवादी व्यवस्था को स्थापित करने के लिए कितने देशभक्तों और क्रान्तिकारियों ने कठोर संघर्ष किये हैं और यह स्पष्ट रूप से समझाना चाहिए कि हमारी समाज-व्यवस्था पुरानी व्यवस्था से कितनी उत्कृष्ट है।

नयी पीढ़ी को यह बतलाना कि पुरानी व्यवस्था में जीवन कैसा था और हमारी जनता को आज के सुखी जीवन से उसकी विपरीत स्थिति से परिचित करना महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए शिक्षा को लें। मुक्ति-पूर्व के दिनों में और आज की स्थिति में बड़ा भारी अन्तर है। मुक्ति से पहले मजदूरों और किसानों के पुत्र-पुत्रियां स्कूल तक नहीं जा पाती थीं और उच्च शिक्षा प्राप्त करने की कल्पना तक नहीं कर सकती थीं। लेकिन आज हमारे देश के सभी बच्चे बिना कोई फीस दिये स्कूल जाते हैं और हर कोई कालेज जा सकता है। बच्चों और युवकों को समाजवादी व्यवस्था की उत्कृष्टता बताने के लिए ऐसे अनेक उदाहरण दिये जाने चाहिए और यह सिखाया जाना चाहिए कि उन्हें इस व्यवस्था से प्रेम करना चाहिए और इसकी रक्षा के लिए लड़ना चाहिए।

आज नयी पीढ़ी में जमींदारों और पूंजीपतियों के विषय में अस्पष्ट-सी धारणा है और वह भली-भांति नहीं जानती कि मुक्ति से पहले हमारी जनता का जीवन कैसा था।

हमारे देश में क्रान्ति का अभी अन्त नहीं हुआ, और जमींदारों तथा पूंजीपतियों की शोषण-व्यवस्था अभी देश के दक्षिणी आधे भाग में शेष है। हमें दक्षिणी आधे भाग में भी जमींदारों और पूंजीपतियों से लड़ना है और भविष्य में दक्षिणी कोरिया में भी समाजवाद का निर्माण करना है।

इसलिए अपने देश के अतीत और वर्तमान की, गणतंत्र के उत्तरी भाग और आज के दक्षिणी कोरिया के बीच तुलना करते हुए हमें शिष्यों और छात्रों को

जमींदारी और पूंजीवादी व्यवस्था के बीच के अन्तर को स्पष्ट करना चाहिए और उन्हें अपनी समाजवादी व्यवस्था की रक्षा के लिए लड़ना और कोरियाई क्रान्ति को अन्त तक पूर्ण करना सिखाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त नयी पीढ़ी में भविष्य के प्रति अनुराग की भावना का संचार करना महत्वपूर्ण है।

भविष्य को प्यार करना किसी भी क्रान्तिकारी की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। क्रान्तिकारी वर्तमान में अपने लिए आराम की जिन्दगी पाने के लिए नहीं, उज्ज्वल भविष्य के लिए, आने वाली पीढ़ियों की खातिर नये सुखद जीवन के लिए, समस्त कठिनाइयों और अग्नि-परीक्षाओं को पार करते हुए लड़ते हैं और इस लक्ष्य के लिए वे उस सबको दांव पर लगा देते हैं जो उनके लिए मूल्यवान् होता है।

मगर अधकचरे लोग केवल अपनी फिक्र करते हैं और पुरानी शक्तियों का साथ देकर और उनके सामने घुटने टेक कर अपनी सुरक्षा और सुख को बचाने का प्रयत्न करते हुए संघर्ष से दूर रहते हैं।

अमरीकी साम्राज्यवादी आज दक्षिणी कोरिया में यह प्रचार कर रहे हैं कि सबसे सुरक्षित और सुखी जीवन का रास्ता है जनता द्वारा अपने आदर्शों का त्याग दिया जाना और जैसी परिस्थिति हो, उसी के अनुकूल फौरन अपने को ढाल कर क्षणिक आनन्द उपलब्ध करना। इससे वे मेहनतकश जनता की क्रान्तिकारी चेतना को कुण्ठित करते हैं और युवकों को भ्रष्ट करते हैं। आदर्शहीन मनुष्य, भविष्य को प्यार न करने वाले मनुष्य, क्रान्तिकारी नहीं बन सकते।

क्रान्तिकारीगण नवीनता की विजय के लिए पुरानी वस्तुओं के खिलाफ इस-लिए सदा लड़ते हैं कि वे भविष्य को और नवीनता को प्यार करते हैं। जो मनुष्य नवीनता को यानी भविष्य को प्यार करते हैं, वे रूढ़िवादी और निष्क्रिय नहीं हो सकते। वे वर्तमान से सन्तुष्ट नहीं हो सकते, बल्कि और भी अच्छे भविष्य के लिए आगे बढ़ना चाहते हैं।

अनेक कम्युनिस्ट आज की दुनिया देखे बिना ही चल बसे। फिर भी वे कम्यु-निज्म की विजय में दृढ़ विश्वास के साथ डट कर लड़े। यद्यपि वे आज के सुखी जीवन को देखने के लिए जीवित न रह सके, फिर भी उन्होंने महान और सुयोग्य जीवन जिया और संघर्ष में उनके वीरतापूर्ण कार्य अमर हुए।

पूंजीवाद के दिन लद गये हैं और अब वह नष्ट-भ्रष्ट हो रहा है। भविष्य कम्युनिज्म का है।

आज भविष्य के लिए संघर्ष करना कम्युनिज्म की विजय के लिए लड़ना है। जो लोग नवीनता और भविष्य को प्यार करते हैं, वे निश्चय ही कम्युनिस्ट बनेंगे। कम्युनिस्ट ऐसे मनुष्य हैं जो कम्युनिस्ट समाज के निर्माण का आदर्श संजोते हुए

उसको यथार्थ में रूपान्तरित करने के लिए संकल्पपूर्वक संघर्ष करते हैं।

बच्चों और युवकों को भविष्य से प्यार करना सिखाने के प्रश्न के सिलसिले में मैं उनके अन्दर क्रान्तिकारी आशावाद पैदा करने पर विशेष रूप से जोर देना चाहूंगा।

क्रान्ति एक कठिन और जटिल कार्य है। क्रान्ति सम्पन्न करने के लिए, अर्थात पुराने को समाप्त करने और नये की सृष्टि करने के लिए आपको कई कठिनाइयां और अग्नि-परीक्षाएं पार करनी होंगी। अगर आप साहस खो बैठेंगे, जब भी कठिनाइयां उठ खड़ी होंगी तब आप निराशाग्रस्त और संतप्त हो बैठेंगे, तो क्रान्तिकारी नहीं बन सकेंगे। जापान-विरोधी छापामार अनन्त कठिनाइयों और अग्नि-परीक्षाओं से गुजरते हुए लड़ते रहे, मगर उनका जीवन सदा प्रसन्नता और क्रान्तिकारी आशावाद से पूर्ण रहा। क्रान्तिकारियों को जब शत्रु ने चक्र पर चक्र बना कर घेर लिया या जब उन्हें कैद में डाल दिया गया या फांसी के तख्ते पर चढ़ा दिया गया, तव भी वे रत्ती भर निराश न हुए और न उन्होंने साहस खोया। यह इसलिए हुआ कि उन्हें अपने लक्ष्य की न्यायसंगतता का, और कम्युनिज्म की तथा उज्ज्वल भविष्य के लक्ष्य की विजय पर दृढ़ विश्वास था। यह उस क्रान्तिकारी का दृष्टिकोण है जिसे भविष्य से प्यार होता है।

जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष के दौरान हमें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, मगर कठिनाइयों के सामने हमने कभी आंसू नहीं बहाये। हमारी आंखों में आंसू तभी आये जब हम हृदय से द्रवित हो उठे। ऐसा भी समय आता है जब क्रान्तिकारी संघर्ष को धक्का लगता है, मगर वह अस्थायी होता है। अन्त में कम्युनिज्म की विजय निश्चित रूप से होती है। इसलिए क्षणिक असफलता से किसी को हतोत्साह नहीं होना चाहिए, बल्कि उससे उबर कर बाहर आना चाहिए तथा और आगे क्रान्तिकारी आशावाद प्रदर्शित करते हुए नयी जीतें हासिल करनी चाहिए।

मातृभूमि मुक्ति युद्ध में अस्थायी रूप से पीछे हटते हुए हमने एक क्षण के लिए भी विजय में विश्वास नहीं खोया। अनेक विदेशी साथियों ने, जो हमारे देश आये थे, हमारी जनता में उत्साहहीनता का रत्ती भर भी चिन्ह न देखकर उलटे देश के सामने प्रस्तुत संकट के बावजूद उन्हें खुशमिजाज और स्फूर्त देख कर, कोरियाई जनता की सराहना की थी। हम अस्थायी रूप से उस समय पीछे हटे, मगर हम भलीभांति जानते थे कि हमें ऐसा शक्ति और लड़ाकू भावना की कमी के कारण नहीं, बल्कि इसलिए करना पड़ रहा है, कि हमारे पास हथियार काफी नहीं हैं। हमें दृढ़ विश्वास था कि अगर हमारे पास और अधिक हथियार होते तो हम शत्रु को फिर हरा देते और कुचल देते क्योंकि हमारी जनता में लड़ाक

भावना गहरी है और हमारी जन-सेना के सैनिक साहसी हैं। लेकिन ऐसी लड़ाकू भावना और विजय में ऐसा विश्वास कहीं अन्यत्र प्राप्त नहीं किया जा सकता। ऐसे विश्वास के बिना कठिनाइयों को दूर नहीं किया जा सकता और विजय असम्भव है।

युद्ध-विराम के वाद भी हमारे सामने अनेक कठिनाइयां थीं। यांकियों का ख्याल था कि हमें अपने पैरों खड़े होने में सौ वर्ष लग जायेंगे। अगर हम पराजय-वादी होते तो हम राख के ढेर पर बैठ कर रोये होते और सिर्फ विलाप करते। मगर क्रान्तिकारी आशावाद से परिपूर्ण हमारी पार्टी और जनता ने वीरतापूर्ण संघर्ष किया, दो से तीन वर्ष के अन्दर पुनर्वास का कार्य पूरा कर लिया और फिर पंचवर्षीय योजना के भारी लक्ष्य ढाई वर्ष के अन्दर पूरे किये और इस प्रकार हमारे देश का रूप-रंग इतना वदल दिया कि उसे पहचाना नहीं जा सकता था। आप सबके साथ हम सभी अपनी जनता के महान अग्रगामी अभियान के गवाह हैं और हमने प्रत्यक्षतः इस अभियान में भाग लिया है और अपनी जनता की विजय को अनुभव किया है।

हमें पराजयवाद, निराशावाद, पस्ती और गतिरोध के विरुद्ध डटकर लड़ना चाहिए; हमें देखना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति हर समय प्रसन्न भाव और आनन्द-पूर्वक दोगुने उत्साह से काम करे।

मैं समझता हूं कि शिष्यों और छात्रों को शिक्षित करने में सामान्यतः ऊपर बताये गये विषयों की ओर गहरा ध्यान देना परमावश्यक है।

हमारी विद्यालयी शिक्षा का उद्देश्य है कि कम्युनिस्ट विचारधारा से और एक नये समाज के निर्माण के लिए आवश्यक ज्ञान और तकनीक से लैस, कम्युनिज्म के निर्माताओं को प्रशिक्षित किया जाय। कम्युनिस्ट विचारधारा से विलग ज्ञान का हमारे लिए कोई उपयोग नहीं है क्योंकि हम कम्युनिज्म की ओर अभियान कर रहे हैं। हमें शिष्यों और छात्रों की कम्युनिस्ट शिक्षा और सुदृढ़ करनी चाहिए और सदा कम्युनिस्ट ढंग से अध्ययन करने और रहने में उनका पथ-निर्देशन करना चाहिए।

बच्चों और युवकों को शिक्षित करने में नकारात्मक तत्वों को सकारात्मक तत्वों से दूर करना महत्वपूर्ण है। हमारे लम्बे अनुभव ने हमें दृढ़ विश्वास दिया है कि लोगों को शिक्षित करने में यह अत्यन्त प्रभावशील प्रणाली है। नकारात्मक तत्वों को सकारात्मक उदाहरणों से दूर करना आम शिक्षात्मक कार्य में हमारी पार्टी की जन-नीति का मूर्त्त रूप है।

आम जनता सकारात्मकता की आकांक्षा करती है और वह नकारात्मकता को दूर करने तथा सकारात्मकता का सृजन करने में सक्षम होती है। इसलिए आम

जनता की शिक्षा में महत्वपूर्ण यह है कि उसके गुणों को खोजा जाय और उनको विस्तार से लोकप्रिय बनाया जाय तथा हर प्रकार से विकसित किया जाय ताकि आम जनता अपने अवगुणों को सहर्ष सुधार सके।

स्कूल में अभीष्ट यह होगा कि सभी शिष्यों और छात्रों को अनुकरणीय तथ्यों की व्यापक जानकारी दी जाय और उदाहरणों के जरिए उन्हें शिक्षित किया जाय। नकारात्मक पहलुओं की आलोचना करना और जो गलती करें, उन्हें दण्ड देना भी शिक्षा का एक तरीका है। फिर भी आम जनता को शिक्षित करने में सकारात्मक प्रभाव डालने के तरीके का उपयोग करना अधिक प्रभावशील होता है। अपेक्षित यही है कि अच्छे कार्य स्वेच्छा से किये जायें। अगर कोई व्यक्ति विवशता या दबाव से अच्छा काम करता है तो यह जरूरी नहीं कि वह एक अच्छा व्यक्ति बन गया है।

दूसरों का अनुकरण करते हुए एक समय हमारे देश में भी नकारात्मक प्रवृत्तियों का पर्दाफाश करने के लिए व्यंग्यात्मक टिप्पणियां लिखी जाती थीं। मगर वह हमारी वास्तविक परिस्थितियों के अनुकूल नहीं सिद्ध हुईं। हमारी जनता प्राचीनकाल से ही एक विकसित सांस्कृतिक जीवन बिताती आयी है और उसमें सत्य के शोध की महान भावना है और न्याय से गहरा प्यार है। कहा जा सकता है कि सत्य और नैतिकता को धन और सत्ता से अधिक मूल्यवान् समझना हमारी जनता का परम्परागत सुन्दर गुण है जो सदियों से चला आ रहा है। ऐसे सशक्त नैतिक भाव वाले राष्ट्र में सकारात्मक उदाहरणों से प्रभावित करना कहीं अधिक प्रभावकारी होता है।

फौज में नजरबन्दी व्यवस्था का उन्मूलन कर दिया गया है और इसके स्थान पर साथियों जैसे हार्दिक प्रेम और उदाहरण से प्रभावित करने की नीति अपनायी गयी है। फलस्वरूप अनुशासन और अधिक सुदृढ़ हो गया है और सैनिकों और कमाण्डरों के बीच एकता और भी मजबूत हो गयी है।

छोलिमा कार्यटोलियों में जनता के पुनःसंस्कार का काम भी उन्हें सकारात्मक उदाहरणों से प्रभावित करने की प्रणाली पर आधारित है। छोलिमा अश्वारोही अब उन लोगों को सकारात्मक प्रभाव के तरीके से अच्छे मनुष्यों के रूप में, अग्रगामी व्यक्तियों के रूप में, सफलतापूर्वक ढाल रहे हैं, जिन्हें पहले बिल्कुल बेकाबू माना जाता था।

शिष्य और छात्र विशेषकर अपने अध्यापकों का अनुकरण करना पसन्द करते हैं। वे निष्कलुष और बहुत भाव-प्रवण हैं। वे सभी सही रास्ते जाना चाहते हैं और गलत रास्ते चलना पसन्द नहीं करते। अच्छे उदाहरणों का उन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। हमारे बचपन में अध्यापकों ने जो शिक्षाप्रद कहानियां सुनाया

थीं, वे आज भी हमारे मस्तिष्क में स्पष्ट अंकित हैं। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि शिष्य और छात्र शीघ्र ही कम्युनिस्ट के रूप में विकसित होंगे या नहीं, यह इस पर निर्भर करेगा कि अध्यापक उनके सामने अच्छे सकारात्मक उदाहरण पेश करते हैं या नहीं। बच्चों और युवकों में जो सकारात्मक तत्व विकसित हो रहे हैं उन्हें हमें सक्रियतापूर्वक प्रोत्साहित करना चाहिए और अपने भरसक अधिक से अधिक सकारात्मक उदाहरण पेश करने चाहिए।

बच्चों और युवकों की शिक्षा की प्रणाली के सम्बन्ध में जिस एक और बात पर मैं जोर देना चाहूंगा, वह यह है कि हमें छोटी-छोटी बातों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, बल्कि छोटी बातों से ही शुरू करना चाहिए और बड़ी बातों की ओर बढ़ना चाहिए।

कम्युनिस्ट विधि से लोगों को शिक्षित करना एक कठिन और महान कार्य है। किन्तु लोगों को शिक्षित करने की प्रक्रिया छोटी चीजों से शुरू होनी चाहिए। हम व्यावहारिक जीवन की ठोस चीजों की उपेक्षा करते हुए, मात्र अमूर्त सिद्धान्तों पर बल देकर उन्हें कम्युनिस्ट नहीं बना सकते। बच्चों और युवकों की शिक्षा विशेषकर दैनिक जीवन से सम्बन्धित ठोस मामलों से शुरू होनी चाहिए। वे मामले छोटे लग सकते हैं, मगर बूंद-बूंद से ही सागर बनता है।

इसलिए अध्यापकों को शिष्यों और छात्रों के जीवन के सभी विवरणों की गहराई में जाना चाहिए, छोटी कमजोरियों की कभी भी उपेक्षा न करते हुए उनको दुरुस्त करना चाहिए, और छोटे सकारात्मक उदाहरणों तक की उपेक्षा न करके उनको बढ़ावा देना चाहिए।

जनता को कम्युनिस्ट बनने की शिक्षा देते समय यह आवश्यक है कि केंद्रक को पुष्ट किया जाय और उसी पर भरोसा किया जाय। अध्यापकों और छात्रों दोनों के ही बीच इस केंद्रक को पुष्ट किया जाना चाहिए। जब केन्द्रक की पांतें विस्तृत और सुदृढ़ होंगी तब सभी को कम्युनिस्ट विधि से शिक्षित करना सम्भव होगा।

हमने अब पार्टी सदस्यों की केन्द्रीय भूमिका द्वारा सारी आम जनता को कम्युनिस्टों के रूप में शिक्षित और पुनर्दीक्षित करने का नया कर्तव्य निर्धारित किया है और हम उसको पूरा करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

बच्चों और युवकों की शिक्षा में सबसे पहले अध्यापकों को केन्द्रीय भूमिका अदा करनी चाहिए। अगर लाल अध्यापकों के समूह बनाये जाते हैं और वे शिष्यों और छात्रों के बीच जाते हैं तथा केन्द्रक की पांतों का निर्माण करने के लिए जोर-दार प्रयत्न करते हैं तो बच्चों और युवकों की कम्युनिस्ट शिक्षा में महान सफलताएं उपलब्ध की जा सकेंगी।

अंत में मैं स्कूलों में शारीरिक व्यायाम की शिक्षा को सुदृढ़ करने के प्रश्न पर जोर देना चाहूंगा।

शारीरिक रूप से कमजोर लोग क्रान्ति में भलीभांति हिस्सा नहीं ले सकते। यही कारण है कि मैं जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष के दिनों से ही शारीरिक व्यायाम के प्रश्न पर जोर देता रहा हूं।

फौज में तीन विषयों की परीक्षा होती है : कार्यनीति या दांवपेंच, निशानेबाजी और शारीरिक व्यायाम प्रशिक्षण। कार्यनीति शत्रु से लड़ने में बुद्धिमानी है; निशानेबाजी शत्रु को नष्ट करने का कौशल है। दूसरे शब्दों में, इनका संबंध ऐसे ज्ञान और तकनीक से है जो लड़ने के लिए अपरिहार्य हैं। लेकिन जो व्यक्ति शारीरिक रूप से दुर्बल है, वह कितना ही चतुर और अत्यन्त कुशल क्यों न हो, शत्रु से लड़ और जीत नहीं सकता। पंगु व्यक्ति निशानेबाजी के कौशल में कितनी ही निपुणता क्यों न प्राप्त कर ले, वह शत्रु तक पहुंच और उससे लड़ नहीं सकता।

समाजवाद के निर्माण के मामले में भी यही सच है। ज्ञान, कौशल और स्वस्थ शरीर, ये सभी साथ-साथ होने चाहिए। स्कूल में सिखाये गये विज्ञान और प्रविधि को व्यावहारिक उपयोग में लाने के लिए हमारे पास सबल शरीर-गठन भी होना चाहिए। यह स्पष्ट है कि जो कमजोर है और सदा बीमार रहता है, वह अध्ययन में कितना ही अच्छा क्यों न हो, देश की भलाई के लिए कुछ नहीं कर सकता। लेकिन कुछ अध्यापक हैं जो इस सीधी-सादी सचाई की अवहेलना करके शिक्षा में शारीरिक व्यायाम के प्रश्न को गम्भीरता से नहीं लेते। इस प्रवृत्ति को अवश्य सुधारा जाना चाहिए।

यह निराधार नहीं है कि प्राचीन-काल से ही यह कहा जाता रहा है कि ज्ञान, नैतिकता और स्वस्थ शरीर साथ-साथ चलते हैं। शिष्यों और विद्यार्थियों को कम्युनिस्ट विचारधारा में शिक्षित करते हुए और उन्हें आवश्यक ज्ञान तथा तकनीक सिखाते हुए हमें उनके शारीरिक व्यायाम प्रशिक्षण की गम्भीरता से चिन्ता करनी चाहिए। अपने को साफ-सुथरा रखने और अपने शरीर को प्रशिक्षित करने के काम में सक्रिय रहने के मामले में हमें शिष्यों और छात्रों का सदा मार्ग-निर्देशन करना चाहिए। इस प्रकार हमें सभी शिष्यों और छात्रों को सर्वतोमुखी रूप से विकसित एक नये प्रकार के इन्सान के रूप में—जो अध्ययन, काम और खेलकूद में अच्छे हों—शिक्षित और दीक्षित करना चाहिए।

हमारी पार्टी बच्चों और युवकों के शिक्षण और विकास की ओर बड़ा ध्यान देती है और इसके लिए उसने सही नीति निर्धारित की है। पार्टी की केन्द्रीय समिति के इर्दगिर्द दृढ़ता से एकताबद्ध होकर आपको पार्टी की शिक्षा-नीति पर और भी अधिक उत्साह से अमल करने का प्रयत्न करना चाहिये।

मुझे आशा है कि इस सम्मेलन को एक मोड़ मान कर आपने पार्टी की शिक्षा-नीति पर सर्वांगतः अमल करने के संघर्ष में जो अच्छे और समृद्ध अनुभव एकत्र किये हैं, उनका आप आदान-प्रदान करेंगे और उनसे निष्कर्ष निकालेंगे ताकि आपका काम विकास के एक और ऊंचे दौर में पहुंचे। मैं उदीयमान पीढ़ी को समाजवाद तथा कम्युनिज्म के निर्माताओं के रूप में शिक्षित-दीक्षित करने के आपके काम में और नयी तथा गौरवपूर्ण सफलताओं की कामना करता हूं।

कोरिया की मजदूर पार्टी की चौथी कांग्रेस में केन्द्रीय समिति के कार्य पर रिपोर्ट

११ सितम्बर १९६१

साथियो,

हमारी पार्टी की तीसरी कांग्रेस को हुए पांच वर्ष से अधिक समय बीत चुका है। इस अवधि में हमारी जनता के राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जीवन में ऐतिहासिक महत्व के बड़े-बड़े परिवर्तन हुए हैं।

समीक्षाधीन अवधि में कोरियाई जनता का नेतृत्व करते हुए हमारी पार्टी ने गणतन्त्र के उत्तरी आधे भाग में समाजवादी क्रान्ति और समाजवादी निर्माण में महान विजय प्राप्त की है और देश के शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण के लिए संघर्ष में बड़ी प्रगति की है। शहरों और गांवों में समाजवादी परिवर्तन को सम्पन्न करने तथा समाजवाद की नींवों का निर्माण करने के ऐतिहासिक क्रान्तिकारी कार्यों को पूर्ण सफलता के साथ पूरा किया गया है। पार्टी के नेतृत्व में, हमारे लोगों ने, सारी कठिनाइयों पर काबू पाकर और महान छोलिमा अभियान कर समाजवादी निर्माण की पहली बुलन्दी को पार कर लिया है और गणतन्त्र के उत्तरी आधे भाग में क्रान्तिकारी जनवादी आधार को एक अजेय दुर्ग बना दिया है।

उत्तर कोरिया में समाजवादी निर्माण में अपार सफलताओं और देश के शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण के बारे में हमारी पार्टी की सही नीति से प्रेरित होकर दक्षिण कोरिया में जनता के विशाल समूहों ने अमरीकी साम्राज्यवाद और उसके पिट्ठुओं के विरुद्ध वीरोचित संघर्ष का झंडा बुलन्द कर दिया है। उन्होंने दक्षिण कोरिया में अमरीकी साम्राज्यवाद के औपनिवेशिक शासन को करारा आघात लगाया है। समीक्षाधीन अवधि में पार्टी ने समाजवादी शिविर के बिराद-राना जनगण और विश्व भर के शान्तिप्रिय जनगण के साथ हमारी मैत्री और एकजुटता को सुदृढ़ किया है। उसने एशिया और सुदूर-पूर्व में शान्ति के लिए

संघर्ष में सक्रिय योगदान किया है और हमारे देश की अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा को बहुत बढ़ाया है।

हमारी पार्टी सुदृढ़ हुई है और उसने बढ़कर अपनी केन्द्रीय समिति के इर्द गिर्द एक ही उद्देश्य से प्रतिबद्ध एक अजेय लड़ाकू दस्ते का रूप ले लिया है। पार्टी और जनता की एकता अटूट हो गयी है।

अब हम पार्टी की इस चौथी कांग्रेस में उस समय आये हैं, जबकि श्रम उभार और सृजनात्मक उत्साह से रोमांचित पूरा देश हमारी क्रान्ति के विकास के एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है, जब हमारी पार्टी समस्त श्रमजीवी अवाम की पूर्ण आस्था और आशा का अधिष्ठान है, और जब हमारे मित्र हमें निर्विरोध समर्थन और प्रोत्साहन दे रहे हैं।

समाजवाद के उच्च शिखर को जीतने के लिए हमारी पार्टी और जनता के संघर्ष में यह कांग्रेस नयी शानदार संभावनाओं के द्वार खोलेगी और देश के शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण को त्वरित करेगी। यह हमारे देश की समस्त श्रमजीवी जनता को महान जीतों की ओर प्रेरित करेगी।

१. शानदार परिणाम

साथियो,

हमारी पार्टी की तीसरी कांग्रेस उस समय हुई थी, जब कि राष्ट्रीय अर्थतन्त्र का युद्धोत्तर पुनर्वास कुल मिलाकर प्राय: पूर्ण हो चुका था। उस समय हमारे देश के अर्थतन्त्र और संस्कृति दोनों अभी पिछड़े थे और उत्पादन के सम्बन्धों का समाजवादी पुनर्गठन पूरे जोरों पर था।

युद्ध के बाद के वर्षों में हमारे मेहनतकशों के वीरोचित प्रयासों की बदौलत औद्योगिक और कृषि उत्पादन युद्ध से पूर्व के स्तर पर बहाल हो गया था। लेकिन हमारा देश अभी एक कृषि प्रधान देश ही बना हुआ था और हमारे अवाम का जीवन बड़ा कठिन था। गांवों में निजी कृषि को अभी एक महत्वपूर्ण मुकाम हासिल था और शहरों में निजी व्यापार और उद्योगों का कायाकल्प अभी शुरू ही हुआ था।

इस हालत में समाजवादी क्रान्ति और समाजवाद के निर्माण को हर संभव तरीके से बढ़ावा देने के लिए हमें अपनी सारी ताकत लगानी पड़ी।

उत्तरी आधे भाग में सामाजिक-आर्थिक विकास के कानूनों और कोरियाई-

क्रान्ति के बुनियादी कर्तव्यों के तकाजों पर आधारित हमारी पार्टी ने पुनर्वास के युद्धोत्तर काल में यथाशीघ्र गणतन्त्र के उत्तरी आधे भाग में समाजवाद की बुनियादें डालने के आम कर्तव्य को पेश किया। इसका अर्थ यह था कि राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की सभी शाखाओं में लघु जिन्स और पूंजीवादी क्षेत्रों का समाजवादी पद्धतियों पर पुनर्गठन करके और साथ ही उत्पादक शक्तियों को बहाल करके तथा और विकसित करके समाजवादी आर्थिक क्षेत्र को विस्तृत तथा और मजबूत करना होगा, और इस तरह एक स्वतन्त्र राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के लिए ठोस बुनियादें निर्मित करनी होंगी तथा जनता के रहन-सहन के हालात में तेजी से सुधार लाना होगा।

तीसरी पार्टी कांग्रेस ने समाजवाद की बुनियादें डालने के लिए पार्टी की केन्द्रीय समिति की नीति को स्वीकारा और इस आधार पर पंचवर्षीय योजना के नये स्वरूप और बुनियादी कर्तव्यों की व्याख्या की।

कांग्रेस ने पंचवर्षीय योजनाकाल के लिए शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में तेजी से समाजवादी क्रान्ति का संचालन करके कृषि के सहकारीकरण और निजी व्यापार तथा उद्योग के समाजवादी कायाकल्प संपन्न करने का कर्तव्य पेश किया।

पंचवर्षीय योजना के दौरान समाजवादी निर्माण का मुख्य कर्तव्य था समाजवादी उद्योगीकरण की बुनियादें रखना और मोटे तौर पर अवाम की रोटी, कपड़े और मकान की समस्याओं को हल करना। इस काम को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए पार्टी आर्थिक निर्माण की बुनियादी लाइन—भारी उद्योगों के बढ़ाव को—प्राथमिकता देने और साथ-ही-साथ उपभोक्ता उद्योगों और कृषि को विकसित करने की लाइन—पर लगातार डटी रही। विराम-संधि के तुरन्त पश्चात स्वीकृत की जा चुकी इस लाइन की सत्यता और प्रभावशीलता युद्ध के बाद के पुनर्वास के दौरान अमल में बिल्कुल खरी उतरी थी।

भारी उद्योगों को प्राथमिकता दिये बगैर हलके अथवा उपभोक्ता उद्योगों और कृषि का विकास नहीं किया जा सकता और न ही विस्तारित पुनरुत्पादन की कभी गारंटी की जा सकती है। भारी उद्योग हमारे राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की सब से बड़ी निधि हैं। ये हमारे सभी मसलों को सफलतापूर्वक सुलझाने की कुंजी हैं। हमारी पार्टी ने महसूस किया कि भारी उद्योग का जम कर किया गया विकास और फिर हलके उद्योग और कृषि का तेजी से किया गया विकास हमें समाजवादी उद्योगीकरण के लिए बुनियादें तामीर करने देंगे और साथ ही पंचवर्षीय योजना अवधि के दौरान अवाम की रोटी, कपड़े और मकान की समस्याओं को बुनियादी तौर पर हल कर देंगे।

जिन्दगी की सचाइयां साफ तौर पर बताती हैं कि तीसरी पार्टी कांग्रेस में

तय की गयी हमारी पार्टी की लाइनें और नीतियां मुकम्मिल तौर पर सही थीं। समाजवादी कायाकल्प और समाजवाद के निर्माण के लिए हम ने जो कर्तव्य तय किये थे, वे सभी निश्चित समय से बहुत पहले ही पूरे कर लिये गये। हमारे देश के श्रमजीवी लोगों ने उच्चस्तरीय क्रान्तिकारी जोश, अदम्य लड़ाकू भावना और विपुल निर्माणात्मक क्षमता का प्रदर्शन कर हमारी पार्टी के जांचे-परखे नेतृत्व में तमाम मुश्किलों और रुकावटों को पार किया, शहरों और गांवों में समाजवादी-क्रान्ति की चहुंमुखी विजय आश्वस्त की और हमारे अर्थतन्त्र तथा संस्कृति के विकास में आमूल परिवर्तन ला दिए।

पार्टी और जनता ने एक व्यक्ति की तरह मजबूती से एकजुट होकर घनघोर लड़ाइयों के जरिये जो महान जीतें और सफलताएं प्राप्त की हैं, उनका निचोड़ पेश करते हुए आज इस कांग्रेस में हम असीम गर्व अनुभव करते हैं।

१. समाजवादी कायाकल्प की संपूर्त्ति

साथियो,

पुराने अर्थतन्त्र का समाजवादी कायाकल्प समाजवादी क्रान्ति के विकास के नियमों द्वारा शासित एक प्रक्रिया है। यह एक ऐसा मुख्य कर्तव्य है, जिसे पूंजीवाद से समाजवाद में संक्रमण के काल में पूरा करना पड़ता है।

मुक्ति के बाद साम्राज्यवाद-विरोधी, जागीरदारी-विरोधी जनवादी क्रान्ति के सफलतापूर्वक पूरा कर लिये जाने के साथ हमारे देश का उत्तरी आधा भाग क्रमिक गति से समाजवाद में संक्रमण के मार्ग पर चल पड़ा और उसी समय हमारे समाजवादी रूपांतरण की भी शुरूआत हो गयी।

लेकिन युद्ध से पहले आवश्यक सामाजिक, आर्थिक और भौतिक स्थितियां अभी पूरी तरह परिपक्व न हुई थीं और समाजवादी रूपांतर का काम केवल आंशिक रूप से चला था। अतः मुख्य काम था इसके लिए तैयारी करना। हमारे देश में युद्धोत्तर वर्षों में, और १९५८ में कृषि, दस्तकारी, पूंजीवादी व्यापार और उद्योग को नये सिरे से समाजवाद में ढालने के तमाम काम पूरे पैमाने पर हाथ में लिये गये और उन्हें प्रायः एक ही साथ पूर्ण किया गया।

कृषि का सहकारीकरण समाजवादी रूपांतरण का बुनियादी तत्व है और हमारे देश के विशिष्ट मामले में यह बात और भी महत्व रखती है, जहां आधी से ज्यादा आबादी कृषक है।

विराम-संधि के तत्काल बाद के दिनों में हमारे गांवों में निजी कृषि हावी थी और समाजवादी क्षेत्र पूरे तन्त्र का एक लघु अंश ही था। जैसा कि आप सब जानते हैं, जब तक ग्रामीण क्षेत्रों में लघु जिन्स उत्पादन हावी रहता है, शोषण और गरीबी के स्रोत को दूर नहीं किया जा सकता और न ही किसानों के जीवन-स्तर में मूलभूत सुधार लाया जा सकता है। लघु और बिखरी हुई निजी कृषि न तो नियोजित ढंग से विकसित हो सकती है और न ही समुन्नत तकनीक को व्यापक पैमाने पर लागू कर सकती है। इसके अलावा अधिकांश मामलों में इस प्रकार की कृषि विस्तारित पुनरुत्थान की ओर नहीं ले जा सकती।

हमारे देश में निजी कृषि की समस्त सीमाएं युद्ध बाद के काल में बिलकुल साफ तौर पर प्रकट हो गयीं और हम उन्हें अब और बने रहने की इजाजत नहीं दे सकते थे। युद्ध की वजह से कृषि की भौतिक बुनियादें चरमरा उठीं, किसानी अर्थतन्त्र पहले की अपेक्षा और भी ज्यादा टुकड़े-टुकड़े हो गया और देहात में श्रमिकों और पशुओं की कमी को बहुत बुरी तरह महसूस किया जाने लगा। इन हालात में अगर निजी कृषि को और अधिक समय तक बनाये रखा जाता तो उससे तबाह उत्पादक शक्तियों की तेजी से बहाली असंभव बना दी जाती और सबसे बढ़कर तो लोगों की खाद्य समस्या का समाधान दुष्कर हो जाता। इस बात का खतरा उत्पन्न हो गया कि कहीं समाजवादी राजकीय उद्योग और निजी कृषि के बीच का अंतर्विरोध युद्धोत्तर-काल में तेजी से पुनर्निर्मित और विकसित किये जा रहे उद्योग और बड़ी मन्द गति से पुनर्वासित की जा रही कृषि के मध्य असमानता न उत्पन्न कर दे। इसके अलावा लघु कृषि के साथ हम अपने कंगाल हो गये किसानों के रहन-सहन की स्थिति में तेजी से सुधार लाने में और खासतौर पर युद्धजन्य गरीब किसानों की बढ़ती संख्या की समस्या को सुलझाने में असमर्थ रहते।

कृषि का समाजवादी सहकारीकरण ही एक मात्र ऐसा उपाय है, जो कृषि की उत्पादक शक्तियों को उत्पादन के पुराने सम्बन्धों की जंजीरों से पूर्णतया मुक्त कर सकता है, और किसानों को लूट-खसूट से हमेशा के लिए छुटकारा दिला सकता है। हमारे देश में युद्धोत्तर स्थिति कृषि सहकारीकरण के लिए परिपक्व थी और अतिरिक्त देरी असह्य हो गयी थी। स्वतः किसान भी अपने कष्टों के संदर्भ में समझ चुके थे कि वे अब और अधिक समय तक जीवन के पुराने ढर्रे को सहन नहीं कर सकते। यही कारण है कि क्यों हमारी पार्टी ने विराम-संधि के तुरन्त बाद कृषि सहकारीकरण के लक्ष्य का प्रस्ताव किया और किसानों के बढ़ते उत्साह के बूते पर उसे तत्परता से आगे बढ़ाया।

कृषि सहकारी आन्दोलन का नेतृत्व करने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि किसानों को सहकारी अर्थतन्त्र के फायदों के व्यावहारिक दृष्टान्त देते हुए

आन्दोलन की बढ़ोत्तरी और स्वेच्छया काम करने के लेनिनवादी सिद्धान्त का कड़ाई से पालन किया जाए।

विराम-संधि के तुरन्त बाद के दिनों में हमारे देहात में गरीब किसान कृषि सहकारीकरण के सर्वाधिक सक्रिय समर्थक थे। देहात में गरीब किसानों और पार्टी केन्द्रों को पहले चुनकर हमारी पार्टी ने प्रत्येक काउंटी में आजमाइशी तौर पर कुछेक कृषि सहकारों के संगठन और सुदृढ़ीकरण से शुरूआत की। इस कार्य के दौरान हम अपने देहात की वास्तविक स्थिति के अनुकूल विशिष्ट तौर-तरीकों और सहकारीकरण की गति का सही तौर पर निर्धारण करने में समर्थ रहे, और हमने अपने कार्यकर्ताओं को सहकारी आन्दोलन का नेतृत्व करने के मामले में अनुभव संचित करने तथा विश्वास अर्जित करने को प्रोत्साहित किया। इसके अतिरिक्त हम स्वयं अपने अनुभव के आधार पर सहकारी अर्थतन्त्र के व्यावहारिक फायदों को प्रदर्शित कर किसानों, विशेषतः मध्यम किसानों के विशाल तबकों को उनकी स्वतन्त्र इच्छा से सहकारों में शामिल होने के लिए राजी करने तथा उसका अंग बनने के लिए मनाने में सफल रहे।

कृषि सहकारीकरण में न केवल दरमियानी किसानों पर, बल्कि देहाती आबादी के सभी तबकों पर, जिनमें धनी किसान भी शामिल थे, स्वेच्छा के सिद्धान्त को लागू किया गया। जब सहकारी आन्दोलन विकसित हुआ, तो हमारे गांवों की, जहां धनी किसान अर्थतन्त्र बहुत कमजोर था, विशिष्ट स्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए, हमारी पार्टी ने अमीर किसानों के शोषक तौर-तरीकों पर कड़ी पाबन्दियां लगाते हुए उन्हें धीरे-धीरे बदलने की नीति अपनायी। हमने उन तमाम अमीर किसानों को सहकारों में शामिल किया, जिन्होंने समाजवादी रूपांतर को स्वीकार किया और जो सहकारी अर्थतन्त्र में ईमानदारी से काम करने को तैयार थे। हमने उन मुट्ठी भर लोगों के विरुद्ध उपयुक्त पाबन्दियां लगायीं, जिन्होंने सहकारी आन्दोलन में रोड़े अटकाने चाहे। आन्दोलन के अन्तिम चरण में, जब सहकारी अर्थतन्त्र व्यापक और मजबूत हो चुका था और शोषण के तत्वों का गांवों में लोप हो चुका था, अधिकांश अमीर किसान स्वेच्छया सहकारी आन्दोलन में शामिल हो गये।

इस तरह यथार्थवादी तबकों और स्वेच्छा के सिद्धान्तों के आधार पर किसानों की विभिन्न श्रेणियों को सहकारी आन्दोलन में शामिल करने में हमारी पार्टी ने गरीब किसानों पर दृढ़तापूर्वक निर्भरता, दरमियानी किसान के साथ नाते के सुदृढ़ीकरण और अमीर किसानों के क्रमिक बदलाव की सही वर्ग नीति का निरन्तर पालन किया। हमने इस बात का ध्यान रखा कि गरीब किसान तमाम कृषि सहकारियों में केन्द्र बिन्दु की भूमिका निभाएं। हमने यह भी आश्वस्त किया कि सहकार केवल

अपेक्षाकृत खाते-पीते किसानों पर ही आधारित न हों और अमीर किसानों को सहकारी काम पर असर न डालने दिया जाए। साथ ही दरमियानी किसानों को सहकारी अर्थतन्त्र में जबर्दस्ती शामिल कर या उनके हितों पर कुठाराघात कर उनके साथ नाते को कमजोर करने की प्रवृत्तियों के विरुद्ध हमने कड़ी सावधानी बरती।

इन सब नीतियों से ऐसा कोई नुकसान नहीं हुआ जो देहात में मूलगामी परिवर्तनों के क्रम में हो सकता था। साथ ही सहकारी आन्दोलन को ठोस आधार पर विकसित किया जा सका और कृषि उत्पादन में निरन्तर बढ़ाव को यकीनी बनाया जा सका।

कृषि सहकारी आन्दोलन में स्वेच्छा के सिद्धान्त के पालन का कतई यह अर्थ नहीं है कि ऐसे आन्दोलन को स्वयं स्फूर्तता की मर्जी पर छोड़ दिया गया है। जैसा कि आमतौर पर समाजवादी प्रणाली में होता है, देहात में सहकारी आर्थिक प्रणाली अपने-आप न उभरेगी, न विकसित होगी और न वह स्वत: मजबूत होगी। इसके लिए तो पार्टी और राज्य के मजबूत नेतृत्व और सहायता की जरूरत होगी।

कृषि सहकारी आन्दोलन को बढ़ावा देने के लिए हमारी पार्टी ने किसानों के बीच निरन्तर संगठनात्मक और राजनीतिक काम किया और नवस्थापित सहकारों को राजनीतिक तथा आर्थिक रूप से सशक्त किया।

सहकारों में दृढ़तापूर्वक समाजवादी प्रणाली और व्यवस्था की स्थापना करने और उनके सदस्यों की समाजवादी चेतना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हमने गांवों में पार्टी संगठनों को मजबूत किया और सहकारों में भारी संख्या में प्रबन्ध कर्मचारी नियुक्त किये तथा मजबूत नेतृत्व प्रदान किया।

लेनिन ने कहा है कि प्रत्येक सामाजिक प्रणाली एक निश्चित वर्ग की आर्थिक मदद से ही उभरती है और जिस प्रणाली की समाजवादी राज्य द्वारा मदद की जानी चाहिए, वह है सहकारी प्रणाली। लेनिन की शिक्षा को सामने रखते हुए हमने सहकारों को पूर्णरूपेण राज्य की मदद दी। तेजी से विकसित हो रहे समाजवादी उद्योग के आधार पर किसानों को राज्य द्वारा प्रदत्त सशक्त भौतिक सहायता ने कृषि सहकारों को मजबूत बनाया, जोकि अभी किशोरावस्था में ही था और जो मात्र गरीब किसानों के साथ शुरू हुआ था। इसने निजी कृषि पर उनकी श्रेष्ठता सिद्ध करने में तो निर्णायक भूमिका निभायी ही, लेकिन साथ ही सहकारों को आर्थिक रूप से मजबूत भी बनाया, और उन्होंने अल्पकाल में ही तेजी से मात्रात्मक उन्नति प्राप्त कर ली।

केवल मजदूर वर्ग और पार्टी के मजबूत नेतृत्व पर निर्भरता और समाजवादी

राज्य द्वारा संचालित उद्योग के सशक्त समर्थन से ही हम युद्धोत्तर-काल की असंख्य दिक्कतों पर काबू पाने, लाखों किसानों और युवकों को समाजवादी सामूहिकीकरण के पथ पर ले जाने, और अपने देहात में सहकारी अर्थतन्त्र की समाजवादी प्रणाली के लिए ठोस विजय को आश्वस्त करने में समर्थ रहे।

कृषि सहकारीकरण को पूरा कर लेने के बाद भी ऐसी आर्थिक प्रणाली को एक जगह रुके नहीं रहना चाहिए। इसे निरन्तर आगे बढ़ना चाहिए और परिपूर्णता के लिए कोशिश करनी चाहिए।

हमारे देश में कृषि सहकार अपेक्षाकृत लघु पैमाने पर संगठित किये गये। जब सहकारी आन्दोलन चल रहा था, तो हमारी पार्टी ने इस बात का ध्यान रखा कि प्रत्येक सहकार ४० से १०० किसानी घरानों पर आधारित हो। पार्टी ने बहुत बड़े पैमाने पर संगठन या सहकारों के विलयन की अनुमति न दी। यह उस समय के हालात के पूर्णतया अनुरूप था, जबकि हमारी कृषि की तकनीक पिछड़ी हुई थी और प्रबन्ध कर्मचारियों की योग्यता और अनुभव अपर्याप्त था।

परन्तु कृषि की उत्पादक शक्तियों की और अधिक प्रगति और खासतौर पर देहात में प्राविधिक कायाकल्प के तकाजों के साथ धीरे-धीरे अपेक्षाकृत लघु आकार के सहकार अनमेल-से हो गये। इस तरह उपयुक्त विलय द्वारा कृषि सहकारों के आकार को बड़ा करने की जरूरत उत्पन्न हुई। चूंकि सहकार राजनीतिक और आर्थिक रूप से सुदृढ़ हो चुके थे और उनके प्रवन्ध कर्मचारियों का स्तर ऊंचा हो चुका था, अतः उनका सम्मिलन एक परिपक्व तकाजे का रूप धारण कर गया और स्वतः किसानों को इसकी जरूरत का अहसास हुआ।

अतः १९५८ के अन्त में प्रत्येक री के लिए एक सहकार के सिद्धान्त के आधार पर सहकारों का विकल्प किया गया और री जन समिति के अध्यक्ष को सहकारी प्रबन्धमंडल की अध्यक्षता भी सौंप दी गयी।

कृषि सहकारों का आकार बढ़ने से भूमि और उत्पादन के अन्य साधनों का और भी विवेकपूर्ण उपयोग किया जा सका और व्यापक पैमाने पर आधुनिक कृषि यन्त्रों तथा समुन्नत कृषि तकनीक को लागू किया जा सका। इससे प्रकृति को रूपांतरित करने की परियोजनाओं—सिंचाई, वनरोपण और जल संरक्षण की परियोजनाओं को बड़ी तेजी से आगे बढ़ाने, और श्रम के संगठन में सुधार करने तथा अधिक विविधतापूर्ण सहकारी अर्थतन्त्र विकसित करने का मार्ग साफ हो गया।

जब री की कृषि उत्पाद इकाई और प्रशासनिक इकाई एक हो गयी और जब री जन समिति के अध्यक्ष ने प्रबन्धमंडल की अध्यक्षता भी संभाल ली तो री जनवादी समिति ने कृषि सहकारों को मजबूत बनाने और कृषि उत्पादन का

विकास करने पर अपने प्रयासों को केन्द्रित करना शुरू कर दिया। इस तरह कुल मिलाकर अर्थतन्त्र और संस्कृति के निर्माण में स्थानीय जन समिति की भूमिका और कामकाज में नयी वृद्धि हुई।

कृषि सहकारों के विलयन के बाद उपभोक्ता सहकारों और ऋण सहकारों को उन्हीं के प्रबन्ध के अन्तर्गत कर दिया गया। इससे कृषि सहकार सम्मिलित ढंग से उत्पादन, वस्तु वितरण और ऋण की योजना बनाने और उनकी व्यवस्था करने में समर्थ हुए। साथ ही वे सहकारी अर्थतन्त्र का विकास करने तथा अपने सदस्यों की सुख-समृद्धि को बढ़ावा देने में अधिक स्वतंत्रता और पहलकदमी से काम करने में समर्थ हुए। खासतौर पर कृषि सहकारों द्वारा ग्रामीण वाणिज्य के सीधे निपटाने से शहर और देहात के बीच वस्तु विनिमय और भी अधिक सुचारु रूप से होने लगा और उद्योग एवं कृषि के बीच आर्थिक नाता मजबूत हुआ।

इस तरह हमारे कृषि सहकार अर्थतन्त्र का समुन्नत ठोस समाजवादी क्षेत्र बन गये। समस्त तथ्यों और अनुभवों के आधार पर हम अब कह सकते हैं कि जहां तक उसके संगठनात्मक रूप और आकार का सम्बन्ध है, हमारा ग्रामीण सहकारी अर्थतन्त्र वर्तमान काल में हमारे देश के विशिष्ट हालात के अनुकूल नितान्त युक्तियुक्त और फायदेमन्द समाजवादी आर्थिक ढांचा है।

पूरे समाज में समाजवादी उत्पादन सम्बन्धों की सम्पूर्ण व्यवस्था लागू करने के लिए हमें देहात में निजी कृषि का सहकारीकरण करना पड़ा, और साथ ही शहरी क्षेत्रों में दस्तकारी, पूंजीवादी व्यापार और उद्योग का समाजवादी रूपांतरण लाना पड़ा।

हमारे देश में दस्तकारी के समाजवादी रूपांतरण का काम युद्ध से पूर्व ही आजमाइशी आधार पर शुरू हो चुका था।

मुक्ति के बाद जन शक्ति की मदद से हमारे देश के दस्तकारों ने, जो जापानी साम्राज्यवादी शासन के वर्षों में तबाह और कंगाल हो चुके थे, अर्थतन्त्र के अपने क्षेत्र को बहाल किया और उसमें नया विकास किया तथा अपने रहन-सहन में सुधार लाये। फिर भी, खण्डित और तकनीकी दृष्टि से पिछड़ा दस्तकारी अर्थतन्त्र अस्थिर रहा और उसके विकास की कोई भी संभावना नहीं थी। बिखरे दस्तकारी अर्थतन्त्र का सहकारीकरण ही एक मात्र उपाय था, जिससे उसके उत्पादन और तकनीक में और विकास हो सकता, तथा दस्तकारों का जीवन-स्तर ऊंचा किया जा सकता है।

१९४७ में, अन्तरिम-काल के प्रारम्भ में दस्तकारों के निजी अर्थतन्त्र को समाजवादी, सहकारी तन्त्र के रूप में पुनर्गठित करने के लिए, हमारी पार्टी ने

उनको लेकर उत्पादक सहकारियों का गठन करने की नीति निर्धारित की। इस तरह, युद्ध से पूर्व भी दस्तकारी के समाजवादी पद्धति में रूपांतरण के लिए प्रारम्भिक सफलताएं प्राप्त की गयीं और कुछ अनुभव जमा किये गये।

चूंकि राज्य द्वारा संचालित बड़ी-बड़ी फैक्टरियां अधिकांशत: युद्ध के दौरान नष्ट हो गयी थीं, इसलिए हमारी पार्टी के लोगों के लिए स्थिरतापूर्ण जीवन आश्वस्त करने के उद्देश्य से राज्य के स्वामित्व वाले स्थानीय उद्योग के साथ-साथ सहकारी उद्योग के विस्तार और विकास की ओर अधिक ध्यान दिया गया। युद्ध के बाद पार्टी ने दस्तकारी के सहकारीकरण के आन्दोलन को और जोरों से आगे बढ़ाया। युद्ध ने दस्तकारी अर्थतन्त्र पर कहर ढाकर उसे और बर्बाद कर दिया था। दस्तकार अपने अर्थतन्त्र को एकताबद्ध करके और राज्य की सक्रिय सहायता पर निर्भर होकर ही अपने रहन-सहन में सुधार ला सकते थे। इन हालात में उन्होंने सहकारीकरण की हमारी पार्टी की नीति का सक्रिय समर्थन किया। अत: दस्तकारी सहकारी आन्दोलन ने तेजी से प्रगति की और युद्ध के बाद कुछ वर्षों में ही यह आन्दोलन सफलतापूर्वक पूर्ण होगया।

मुक्ति के बाद उद्योगों, परिवहन, संचार, बैंकों आदि के, जो पहले जापानी साम्राज्यवादियों और उनके सहयोगी पूंजीपतियों के हाथों में थे, राष्ट्रीयकरण से, हमारे राष्ट्रीय अर्थतन्त्र पर समाजवादी राजकीय क्षेत्र का वर्चस्व कायम हो गया। संक्रमण-काल के प्रारम्भ से ही पूंजीवादी व्यापार और उद्योग बहुत कमजोर चले आ रहे थे। हमारे देश की इस स्थिति से हमें शान्तिपूर्ण उपायों द्वारा पूंजीपति व्यापारियों और उद्योगपतियों को समाजवादी निर्माण में शामिल करने और उनके अर्थतन्त्र को पुनर्गठित करने के लिए उपयुक्त स्थितियां उपलब्ध हो गयीं।

संक्रमण-काल के दौरान पूंजीवादी व्यापार और उद्योग के सम्बन्ध में हमारी पार्टी की नीति यह थी कि उनके सकारात्मक पहलुओं को उपयोग में लाते और उनके नकारात्मक पहलुओं को नियन्त्रित करते हुए उन्हें धीरे-धीरे समाजवादी अर्थतन्त्र में बदला जाए।

युद्धोत्तर-काल में पूंजीवादी व्यापार और उद्योग का समाजवादी रूपांतरण परिपक्व हुआ। युद्ध ने पूंजीवादी व्यापार और उद्योग को गम्भीर क्षति पहुंचायी थी। काफी संख्या में उद्यमी और व्यापारी बर्बाद हो गये और राज्य के स्वामित्व वाले निकायों में कारखाना या कार्यालय श्रमिक बन गये। शेष पूंजीवादी व्यापारी और निर्माता उस स्तर पर आ गिरे, जो लगभग वैसा ही था, जैसा कि दस्तकारों या छोटे व्यापारियों का था। इस तरह पूंजीवादी व्यापारियों और निर्माताओं को अहसास हुआ कि बग़ैर राज्य और समाजवादी अर्थतन्त्र की मदद का सहारा

लिये और बगैर अपने उत्पादन साधनों, धन और प्रयासों को एक जगह इकट्ठा किये उनके लिए अपने बर्बाद अर्थतन्त्र को बहाल करना असंभव है। इसके अलावा कृषि और दस्तकारी को सहकारी रूप मिलने पर उन्हें निजी बाजार में कच्चे माल और अन्य सामग्रियां नहीं मिल सकती थीं। जब समाजवादी आर्थिक क्षेत्र राष्ट्रीय अर्थतन्त्र पर पूरी तरह हावी हो तो थोड़े से निर्माताओं और व्यापारियों के लिए अपने निजी क्षेत्र को बनाये रखना संभव नहीं हो सकता।

निर्माता और व्यापारी तभी अपनी हालत सुधार सकते हैं, भविष्य का मार्ग पा सकते हैं और देश एवं समाज की बेहतर सेवा कर सकते हैं, जब वे अर्थतन्त्र के समाजवादी क्षेत्र में शामिल हो जाएं।

अपने देश के विशिष्ट हालात को दृष्टिगत रखते हुए हमारी पार्टी ने सहकारी अर्थतन्त्र के अनेक रूपों द्वारा पूंजीवादी व्यापार और उद्योग के रूपांतरण की नीति पेश की। निर्माताओं और व्यापारियों ने यह महसूस करते हुए सहकारीकरण की पार्टी नीति का समर्थन किया कि यह उनके हितों के अनुरूप है और यही उनके लिए सही दिशा है। इस तरह पूंजीवादी व्यापार और उद्योग का समाजवादी पुनर्गठन अल्पकाल में ही पूरा हो गया।

यह हमारी पार्टी के सही नेतृत्व और राज्य की सक्रिय सहायता का ही करिश्मा है कि दस्तकारी और पूंजीवादी व्यापार तथा उद्योग का समाजवादी पुनर्गठन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। स्वेच्छा के सिद्धान्त का कड़ाई से पालन करते हुए पार्टी ने दस्तकारों और दरमियानी तथा छोटे निर्माताओं को उनके विशिष्ट धंधों के अनुसार विभिन्न उत्पादक सहकारों में शामिल किया। दस्तकारों के उत्पादन सहकारों को प्राथमिकता देते हुए निर्माताओं को क्रमिक रूप से सहकारी अर्थतन्त्र में मिलाया गया। विशेषतः इस मामले में सहकारी अर्थतन्त्र के अर्ध-समाजवादी स्वरूप को व्यापक तौर पर लागू किया गया। व्यापारियों को समाजवादी पद्धति के अनुसार बदलने के लिए बाजार-सहकारों या उत्पादन-बाजार-सहकारों का गठन किया गया और बाद में उनकी उत्पादक गतिविधियों के अनुपात में क्रमशः वृद्धि कर उन्हें उत्पादक-सहकारों के रूप में पुनर्गठित कर दिया गया।

निजी-व्यापार और उद्योग का समाजवादी पद्धति के अनुसार रूपांतरण करने में पार्टी ने आर्थिक ढांचे में परिवर्तन को लोगों को नये सिरे से ढालने के साथ घनिष्ठ रूप से जोड़ दिया। उत्पादक सहकारों में शामिल होकर उद्यमियों और व्यापारियों ने दूसरों की लूट-खसूट पर आधारित अपने भूतपूर्व जीवन से नाता पूर्णतया तोड़ लिया। उन्हें समाजवादी श्रमजीवी लोगों में बदल दिया गया है, जो अपने ही श्रम से भौतिक सम्पदा पैदा करते हैं। इससे उनका वैचारिक कायाकल्प भी तेज हो गया है।

दस्तकारी और पूंजीवादी व्यापार और उद्योग के समाजवादी रूपांतरण को जोरदार ढंग से सम्पन्न करते हुए हमने नवगठित उत्पादक सहकारों को मजबूत बनाने के लिए राज्य में भारी मदद दी। समाजवादी सहकारी अर्थतन्त्र के फायदों, सक्रिय राजकीय सहायता तथा कार्य में उत्पादक-सहकारों के सदस्यों की उत्सुकता-पूर्ण शिरकत से इन सहकारों की आर्थिक बुनियादें तेजी से और भी मजबूत हो गयी हैं और उनके जीवनस्तर में और अधिक सुधार हुआ है। आज राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के विकास में सहकारी उद्योग एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हमारे उत्पादक सहकारों के सदस्य सम्मान्य समाजवादी श्रमजीवी जनता के महान गौरव और जोश के साथ समाजवाद के निर्माण में योगदान कर रहे हैं।

साथियो, कृषि, दस्तकारी और पूंजीवादी व्यापार और उद्योग के समाजवादी पुनर्गठन के बाद शहरों और देहातों में उत्पादन के समाजवादी सम्बन्धों का पूर्ण वर्चस्व है। उत्पादक शक्तियां उत्पादन के पुराने सम्बन्धों की जंजीरों से मुक्त कर दी गयी हैं और मानव द्वारा मानव का शोषण समाप्त कर दिया गया है।

अपने देश के उत्तरी आधे भाग में हमने शोषण और दमन से रहित एक सामाजिक प्रणाली स्थापित की है—वह प्रणाली जिसकी हमारे श्रमजीवी लोग लम्बे समय से आकांक्षा करते आये थे और जिसके लिए अनेक कोरियाई कम्यु-निस्टों ने लड़ाई की और अपना खून बहाया। हमारे पार्टी के नेतृत्व में हासिल की गयी यह हमारी जनता की महानतम विजय है।

हमारे देश के समाजवादी रूपांतरण का एक महत्वपूर्ण पहलू इस तथ्य में निहित है कि इस काम को प्राविधिक पिछड़ेपन और अपनी उत्पादक शक्तियों के विकास के अपेक्षाकृत निम्न स्तर के बावजूद इतने अल्पकाल में, युद्ध के बाद चार या पांच वर्षों में, पूरा कर लिया गया।

एक समय ऐसी बात कहते हुए कि "बगैर समाजवादी उद्योगीकरण के उत्पा-दन के सम्बन्धों में परिवर्तन लाना असंभव है", "बगैर आधुनिकतम कृषि यन्त्रों के कृषि सहकारीकरण नहीं हो सकता", "समाजवादी रूपांतरण की गति जरूरत से ज्यादा तेज है", कुछ कट्टरपंथियों ने समाजवादी रूपांतरण की हमारी पार्टी की नीति पर संशय व्यक्त किया था और वे ढुलमुल हो गए थे। उन्होंने यह अनुभव नहीं किया कि समाजवादी रूपांतरण की तीव्र प्रगति कानून द्वारा नियन्त्रित वह चीज है जो युद्धोतर काल के दौरान हमारे देश में विशिष्ट स्थितियों को प्रति-बिम्बित करती है।

कृषि सुधार, उद्योगों का राष्ट्रीयकरण और अन्य जनवादी सुधार मुक्ति के बाद सम्पन्न किये गये। इन तब्दीलियों पर आधारित समाजवादी राज्य अर्थतन्त्र तेज़ी से विकसित हुआ तथा उद्योग और व्यापार पर प्रचंड रूप में हावी हो गया।

रेलवे, संचार, बैंकिग और विदेश व्यापार प्रतिष्ठान संक्रमण-काल के पहले दिनों में ही राज्य के नियन्त्रण में ला दिये गये थे। इस तरह राष्ट्रीय अर्थतन्त्र में हावी समाजवादी आर्थिक क्षेत्र ने अर्थव्यवस्था के लघु जिन्स और पूंजीवादी क्षेत्रों पर निर्णायक असर डाला और उन्हें अन्ततः समाजवाद की ओर मोड़ा। खासतौर पर राज्य द्वारा संचालित उद्योग के तीव्र विकास ने एक ऐसा भौतिक आधार उपलब्ध कर दिया जो कृषि, दस्तकारी और पूंजीवादी व्यापार एवं उद्योग के समाजवादी पुनर्गठन को सशक्त अवलंब दे सकता था।

हमारे देश में वर्गों के बीच शक्तियों के सम्बन्ध ने भी समाजवादी रूपांतरण के लिए निश्चिततः अनुकूल हालात उपलब्ध किये। युद्धोत्तर वर्षों में हमारे बाहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में इस बदलाव का विरोध करने वाली शक्तियां नगण्य थीं। जापानी साम्राज्यवादियों और जमींदारों के विरुद्ध लम्बे क्रान्तिकारी संघर्ष, मुक्ति के बाद नवजीवन की सृष्टि करने के लिए अपने संघर्ष और खासतौर पर मातृ-भूमि मुक्ति-युद्ध के जबर्दस्त कष्टों के संदर्भ में हमारे किसान अवाम राजनीतिक दृष्टि से जागरूक और पार्टी के साथ दृढ़तापूर्वक एकजुट थे। अधिकांश उद्यमियों और व्यापारियों तथा अन्य सभी लोगों ने मुक्ति के बाद न केवल जनवादी क्रान्ति में भाग लिया बल्कि हमारी पार्टी और अवामी शक्ति द्वारा स्थापित समाजवादी निर्माण की नीतियों का भी समर्थन किया। समाजवादी परिवर्तन को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने में आम जनता के बीच पार्टी की महान प्रतिष्ठा, उसके इर्द-गिर्द जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों की एकजुटता और जनता की उच्चकोटि की राजनीतिक चेतना सर्वाधिक महत्वपूर्ण गारंटी सिद्ध हुई है।

जहां तक समाजवादी उद्योगीकरण और आधुनिक कृषि यन्त्रों का सम्बन्ध है, यह कहने की कोई जरूरत नहीं कि हम बिना उद्योग के और आगे विकास तथा बिना कृषि समेत राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की सभी शाखाओं को नयी तकनीक से लैस किये समाजवाद की पूर्ण विजय को आश्वस्त नहीं कर सकते। तथापि समाजवादी रूपांतरण को ऐसी स्थिति में रोके नहीं रखा जा सकता, जबकि स्वत: जीवन का तकाजा हो कि उत्पादन के बोसीदा सम्बन्धों का अविलम्ब पुनर्गठन किया जाय और जब इस काम को पूरा करने के लिए क्रान्तिकारी शक्तियां तैयार हों। उत्पादक शक्तियों और प्राविधिक विकास के स्तर के अपेक्षाकृत निम्न होने के बावजूद यही बात लागू होती है।

उस दिन की प्रतीक्षा किये बगैर जब उद्योग इस हद तक विकसित हो जाएगा कि वह राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के प्राविधिक पुनर्निर्माण को सम्पन्न कर सकेगा, सामाजिक विकास के तात्कालिक तकाजों के अनुसार उत्पादक शक्तियों की तीव्र प्रगति को आश्वस्त करना और खासतौर पर उत्पादन के सम्बन्धों को समाजवादी दिशा

में रूपांतर करके प्राविधिक क्रान्ति के लिए आम मार्ग खोलना ही हमारी पार्टी की नीति का उद्देश्य था। हम उत्पादन के सम्बन्धों के बदलाव द्वारा ही उन उत्पादक शक्तियों की, जो युद्ध से बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गयी थीं, तेजी से बहाली तथा और अधिक विकास कर सकेंगे और उद्योग के विकास के अनुसार बगैर देरी किए पूरी तत्परता से प्राविधिक क्रान्ति को बढ़ावा दे सकेंगे।

विराम-संधि के बाद जब हमारी पार्टी ने समग्र समाजवादी परिवर्तन का लक्ष्य पेश किया तो कुछ लोगों ने दलील दी कि यह अभी समय से पूर्व की बात है। उन्होंने हठपूर्वक कहा कि उत्तरी आधे भाग में क्रान्ति में तब तक और तेजी नहीं लानी चाहिए, जब तक कि उत्तर और दक्षिण कोरिया का पुनरेकीकरण नहीं हो जाता और पूरे देश में साम्राज्यवाद-विरोधी, जागीरदारी-विरोधी लोकतन्त्री क्रान्ति विजयी नहीं हो जाती। उनका ख्याल था कि उत्तरी आधे भाग में समाजवादी-क्रान्ति देश के पुनरेकीकरण के हित से टकराएगी और खासतौर पर वह दक्षिण कोरिया में साम्राज्यवाद-विरोधी और जागीरदारी-विरोधी संघर्ष के लिए समस्त देशभक्त, जनवादी तत्वों को लामबंद करने के प्रयासों के प्रतिकूल होगी। निःसन्देह वे गलती पर थे।

दक्षिण कोरिया को अब तक मुक्त नहीं कराया जा सका है और वहां जनवादी क्रान्ति विजयी नहीं हुई है, इसलिए उत्तर कोरिया इंतजार करे, इसका कोई औचित्य नहीं है। गणतन्त्र के उत्तरी आधे भाग में समाजवादी क्रान्ति और समाजवादी निर्माण के जो प्रश्न उठे हैं, वे न केवल उत्तरी आधे भाग के सामाजिक विकास के अदम्य तकाजे को अभिव्यक्त करते हैं, वरन उत्तरी आधे भाग में जनवादी आधार को राजनीतिक और आर्थिक रूप से मजबूत बनाने की कोरियाई क्रान्ति की महत्वपूर्ण मांग का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। कोरियाई क्रान्ति की विजय के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण गारंटी इसी बात में छिपी है कि पूंजीवादी तत्वों का सफाया हो, प्रतिक्रान्ति के गढ़ों का पूर्णतया उन्मूलन हो और उत्तरी आधे भाग के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में समाजवाद के सुदृढ़ दुर्ग का निर्माण हो।

हमारी पार्टी ने उत्तरी आधे भाग में आम जन-समुदाय को लामबंद कर समाजवादी प्रणाली स्थापित की और उसे पूर्णतः सुदृढ़ बनाया। इस तरह उसने उसे कोरियाई-क्रान्ति के ठोस आधार तथा देश के शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण को तेज करने के लिए निर्णायक शक्ति में परिणत कर दिया। आज गणतन्त्र के उत्तरी आधे भाग में समाजवादी शक्तियों की जो उन्नति हो रही है और समाजवादी प्रणाली के अन्तर्गत यहां के लोगों का जो आजाद और खुशहाल जीवन है, उनसे दक्षिण कोरिया में मजदूरों और किसानों की तो बात ही क्या, वहां के राष्ट्रीय

पूजीपति वर्ग समेत समस्त देशभक्त शक्तियों पर व्यापक क्रान्तिकारी असर पड़ रहा है। ये स्थितियां अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके पिट्ठुओं के विरुद्ध दक्षिण कोरियाई जनता के संघर्ष को असीम प्रेरणा देती हैं।

जैसी कि ऊपर चर्चा की गयी है, मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त के सार्वभौम सत्य को अपने देश के विशिष्ट हालात में सृजनात्मक ढंग से लागू कर हमारी पार्टी ने हमारे सामाजिक विकास की परिपक्व जरूरतों के आधार पर उपयुक्त समय पर समाजवादी रूपांतरण का कार्य शुरू किया। उसने अपने कर्तव्य के निर्वाह के लिए सही नीतियां तैयार कीं और सब प्रकार के दक्षिणपंथी और "वामपंथी" भटकावों पर काबू पा कर उन्हें दृढ़तापूर्वक पूरा किया। चूंकि समाजवादी रूपांतरण की पार्टी नीति सही थी, चूंकि अवाम ने हृदय से उसे स्वीकार किया और भारी-क्रान्तिकारी उत्साह के साथ उसके क्रियान्वयन में भाग लिया, इसलिए हम थोड़े से समय में ही कृषि, दस्तकारी और पूंजीवादी व्यापार तथा उद्योग को समाजवादी लाइन पर नये सिरे से ढालने के नितान्त पेचीदा और कठिन क्रान्तिकारी कर्तव्य को बड़े ही सुचारु रूप से पूरा करने और अपने देश के उत्तरी आधे भाग में समुन्नत, समाजवादी प्रणाली स्थापित करने में समर्थ हो गये।

२. समाजवाद का निर्माण

साथियो,

युद्धोत्तर तीनवर्षीय योजना के सफलतापूर्वक सम्पन्न होने पर हमारा देश राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के पुनर्वास के चरण से प्राविधिक पुनर्निर्माण के दौर में दाखिल हुआ। उत्पादन सम्बन्धों के समाजवादी रूपांतरण के पूर्णता के निकट पहुंच जाने पर समाजवादी उद्योगीकरण ने राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के प्राविधिक पुनर्निर्माण की प्राप्ति हेतु एक अत्यावश्यक तकाजे का रूप धारण कर लिया।

हमारी पार्टी ने पंचवर्षीय योजनाकाल को प्राविधिक पुनर्निर्माण के प्रथम चरण के रूप में परिभाषित किया और पार्टी ने उद्योग के लिए यह केन्द्रीय लक्ष्य निश्चित किया कि वह इस अवधि में समाजवादी उद्योगीकरण के लिए नींव रखें और इस तरह एक स्वतन्त्र राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की बुनियाद को और मजबूत करें, और साथ ही राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की सभी शाखाओं को आधुनिक प्रविधि से लैस करने के लिए भौतिक और तकनीकी स्थितियां तैयार की जाएं। इसका तकाजा न केवल यह है कि भारी उद्योग की प्राथमिकता के आधार पर वृद्धि करते हुए औद्यो-

गिक उत्पादन का तेजी से समग्र विकास हो, बल्कि हमारे उद्योग के औपनिवेशिक एकांगी असंतुलन का पूर्ण सफाया भी हो और साथ ही उसके पुराने पड़ चुके तकनीकी साजसामान का निर्णयात्मक पुनर्निर्माण हो।

यद्यपि पंचवर्षीय योजना द्वारा उद्योग को सौंपा गया दायित्व बहुत बड़ा और कठिन था, फिर भी उसे समय से पहले ही सफलतापूर्वक समपन्न कर लिया गया। पंचवर्षीय योजना में कुल औद्योगिक उत्पाद मूल्य में २.६ गुनी वृद्धि का जो लक्ष्य निर्धारित किया गया था, उसे ढाई साल में ही पूरा कर लिया गया। मुख्य-मुख्य औद्योगिक उत्पादों के सभी लक्ष्य चार साल में कुल लक्ष्य से बढ़ कर पूरे कर लिये गये। १९५७ से १९६० तक के चार वर्षों में कुल औद्योगिक उत्पाद की कीमत ३.५ गुनी बढ़ी—उत्पादन के साधनों के निर्माण में ३.६ गुनी और उपभोक्ता चीजों में ३.३ गुनी। इस अवधि में औद्योगिक उत्पादन में औसतन वार्षिक वृद्धि की दर ३६.६ प्रतिशत थी। इस तरह इस तथ्य के बावजूद कि मुक्ति के बाद १५ वर्षों में से १० वर्षों से भी अधिक का समय युद्ध में और फिर एक तबाह हाल अर्थतन्त्र के पुनर्वास में निकल गया, १९६० में औद्योगिक उत्पादन मुक्ति से पूर्व के १९४४ के वर्ष की तुलना में ७.६ गुना था। यह सब हमारे उद्योग की उन्नति की असाधारण रूप में तेज गति का बखान करता है।

भारी उद्योग समूचे राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के विकास का आधार होता है। सशक्त भारी उद्योग के निर्माण के बगैर राष्ट्रीय अर्थतन्त्र का प्राविधिक पुनर्निर्माण या स्वतन्त्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की बुनियाद का सुदृढ़ीकरण असंभव है।

अपने प्रचुर प्राकृतिक साधनों के आधार पर हमारी पार्टी ऐसे भारी उद्योग केन्द्रों के निर्माण के लिए, जो मुख्यतः अपने बूते पर राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के विकास के लिए जरूरी कच्चे माल और अन्य सामग्री, ईंधन, विद्युत, मशीनें और अन्य साजसामान का निर्माण और संभरण सक्षम कर सकें, जिस हद तक संभव हो सका, आगे बढ़ती गयी। इस सम्बन्ध में यह महत्वपूर्ण है कि वर्तमान भारी उद्योग का पूरा उपयोग करते हुए उसे प्राविधिक रूप से पुनर्निर्मित किया जाए और उस में विस्तार जारी रखा जाए और साथ ही उद्योग की अनेक नयी शाखाएं कायम की जाएं। इस दृष्टि से आगे बढ़ते हुए हमारी पार्टी ने भारी उद्योग के निर्माण में इस नीति का अनुसरण किया कि जिन उद्योगों का अभी तक पुनर्वास नहीं हुआ है उनका पूर्ण पुनर्वास करने, विद्यमान उद्यमों को परिपूर्ण बनाने, पुनर्निर्माण और विस्तृत करने तथा उद्योग की जिन शाखाओं और जिन उद्यमों का पहले हमारे देश में अस्तित्व नहीं था, उनका निर्माण करने पर जोर दिया जाय। इस नीति से एक तो हम अपेक्षाकृत सीमित धन से एक सशक्त भारी उद्योग का निर्माण कर पायें, और इस प्रकार उपभोक्ता उद्योग तथा कृषि के साथ-साथ

तेजतर गति से विकास के लिए अनुकूल हालात पैदा कर सकें और दूसरे, हम उत्पादन में बढ़ोत्तरी की ऊंची दर आश्वस्त करते हुए उद्योग के प्राविधिक पुनर्निर्माण को बहुत ही तेजी से आगे बढ़ा सकें।

१९५७ से १९६० के चार वर्षों में विद्युत शक्ति उद्योग बढ़ कर १.८ गुना हो गया, ईंधन उद्योग २.८ गुना, खनिज धातु उद्योग २.६ गुना, धातु कार्य उद्योग ३ गुना, रसायन उद्योग ४.५ गुना और यन्त्र निर्माण उद्योग ४.७ गुना हो गया। भारी उद्योग में इस वर्ष हम ९.७ अरब किलोवाट विद्युत, लगभग १२० लाख टन कोयला, ९,६०,००० टन खनिज लोहा और दानेदार लोहा, ७,९०,००० टन इस्पात, ७,००,००० टन से अधिक रसायनिक खाद और करीब २४ लाख टन सीमेंट पैदा करेंगे।

समस्त भारी औद्योगिक उद्यमों के प्राविधिक उपकरणों में जबर्दस्त सुधार किया गया है, उत्पादन की समुन्नत पद्धतियां और समुन्नत प्राविधिक विधियां व्यापक रूप से लागू की गयी हैं तथा नये उत्पादों के लिए और भी कर्मशालाएं स्थापित की गयी हैं। इसके साथ ही आधुनिक प्रविधि से युक्त नयी फैक्टरियां बनायी गयी हैं।

लौह धातु उद्योग में हमने केवल ढलवां लोहा पैदा करने में पेश आने वाली सीमा को दूर किया है। अब यह उद्योग भारी परिमाण में विभिन्न किस्मों के स्टैंडर्ड आकार के चपटे इस्पात, गोल इस्पात, चद्दर इस्पात और विशेष इस्पात तैयार कर पूंजीगत निर्माण और यन्त्र-निर्माण उद्योग में इस्पात की बढ़ती मांगें पूरी करने लगा है। फिर हमने खनिज धातु को और विकसित किया है और साथ ही देश में प्रचुरता से पायी जाने वाली विभिन्न अलौह धातुओंऔर दुर्लभ खनिजों को खानों से निकालने और प्रोसेस करने तथा राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के विकास हेतु उनके अधिक कारगर उपयोग के लिए प्रोसेसिंग और प्रद्रावण की सुविधाएं निर्मित की हैं।

हमने रसायन उद्योग को विकसित करने में भी बड़ी सफलता प्राप्त की है। अतीत में हमारे देश का रसायन उद्योग केवल अजैव रसायनों, मुख्यतः नाइट्रोजन खादों का उत्पादन करता था। परन्तु अब हमारे पास एक जैव कृत्रिम रसायन उद्योग मौजूद है जिसमें विनालोन तथा विनाइल क्लोराइड फैक्टरियों समेत अनेक नवनिर्मित रसायन कारखाने शामिल हैं। इस तरह हमने सर्वथा अपने कच्चे माल पर निर्भर रहते हुए रसायन उद्योग की समस्त शाखाओं के व्यापक विकास के लिए ठोस बुनियाद कायम कर ली है। इन शाखाओं में विभिन्न उर्वरक, कृषि रसायन, एवं औषधियों के अतिरिक्त प्लास्टिक, कृत्रिम रेशा और कृत्रिम रबड़ शामिल हैं।

नयी प्रविधि के आधार पर हमने सुपुंग और चांगजिनगांग बिजलीघरों और अन्य मौजूदा केन्द्रों का पुनर्वास कर लिया है और नये विशाल विद्युत केन्द्र निर्मित

कर लिये हैं जिनमें तोकनो-गांग नदी का विजलीघर भी शामिल है। हमने कोयला खदानों का विस्तार किया है और उनके तकनीकी साजसामान में सुधार किया है। परिणामस्वरूप हमने अपने देश की ईंधन शक्ति के आधारों को और मजबूत किया है।

समीक्षाधीन अवधि के दौरान मशीन-निर्माण उद्योग की स्थापना उद्योग के क्षेत्र में प्राप्त महानतम सफलताओं में से एक थी। हमारी पार्टी ने इस उद्योग का युद्ध के दौरान और उसकी समाप्ति के वाद भी विकास करने का प्रयास किया। युद्धोत्तर पुनर्वास काल में कई नयी मशीन-निर्माण फैक्टरियां कायम की गयीं। पंचवर्षीय योजना के दौरान मुख्यत: घरेलू उत्पादों से मशीनों और साजसामान संवंधी देश की जरूरतों को पूरा करने के लिए हमने वर्तमान मशीन-निर्माण फैक्टरियों के उपकरणों में सुधार किया और उनकी उत्पादन-क्षमता वढ़ायी, साथ ही हमने नई फैक्टरियां लगायीं, और इस तरह इस उद्योग का व्यापक विस्तार किया गया। १९६० में कुल औद्योगिक उत्पादन मूल्य में मशीन-निर्माण उद्योग का भाग २१·३ प्रतिशत रहा जवकि १९५६ में वह १७·३ था, और हमारा देश मशीनों और साजसामानों में ९०·६ प्रतिशत आत्मनिर्भर हो गया जवकि पहले वह केवल ४६·५ प्रतिशत आत्मनिर्भर था। भूतकाल में हमारे देश में एक भी मशीन-निर्माण उद्योग न था। लेकिन आज यह न केवल दरमियानी और लघु आकार के यंत्र और साजसामान स्वत: निर्मित करने में पूर्णत: सक्षम है, वल्कि धातु-शोधन और विद्युत-उत्पादन यंत्रों, मोटर वाहनों, ट्रैक्टरों, एक्सकेवेटरों और अन्य प्रकार की वड़ी-वड़ी मशीनों तथा साजसामान का निर्माण करने में भी समर्थ है। अब हमारे पास अपने देश में कुल मिलाकर प्राविधिक क्रांति को वढ़ावा देने में सक्षम अपना मशीन-निर्माण उद्योग है।

उपभोक्ता उद्योग हमारे देश के सब से पिछड़े उद्योगों में से एक था। हमने पंचवर्षीय योजना के दौरान कपड़ा उद्योग में और विस्तार कर तथा आहार-निर्माण उद्योग को तेजी से विकसित कर तथा दैनिक आवश्यकता की वस्तुओं के उत्पादन में तीव्रता से विकास लाकर उपभोक्ता उद्योगों के मजबूत केन्द्र कायम कर लिये हैं।

१९५७ और १९६० के बीच वस्त्र उद्योग का उत्पादन बढ़कर ३·५ गुना हो गया, खाद्य और पेय सामग्रियों तथा तम्बाकू उद्योग का उत्पादन ४·२ गुना तथा सांस्कृतिक और घरेलू इस्तेमाल की चीजों का उत्पादन ६·८ गुना हो गया। १९६० में विभिन्न प्रकार के करीब १९ करोड़ मीटर कपड़े तैयार हुए। यह १९४९ के स्तर पर १५ गुना और १९४४ के स्तर पर १३८ गुना वृद्धि रही। कई पक्के मालों और खाद्य पदार्थों का उत्पादन बड़ी तेजी से बढ़ा, उनकी किस्में भी बढ़ीं

और उनकी क्वालिटी में उल्लेखनीय सुधार हुआ।

हम जनता के लिए उपभोक्ता मालों के उत्पादन की रीढ़, बड़े पैमाने के आधुनिक उपभोक्ता उद्योग, के कारखानों के विकास के लिए गंभीर प्रयास करने का निरंतर निर्देश देते रहे हैं। समीक्षाधीन अवधि में अधिकांश फैक्टरियां पुनर्निर्मित की गयीं और उनका विस्तार किया गया, तथा उपभोक्ता उद्योग की आधुनिक तकनीक से सज्जित कई नयी फैक्टरियां कायम की गयीं।

हमारा अनुभव बताता है कि उपभोक्ता मालों के उत्पादन में विशाल फैक्ट-रियों के साथ-साथ दरमियानी और छोटे आकार की स्थानीय फैक्टरियां विकसित करना विवेकपूर्ण है। हलके या उपभोक्ता उद्योग को आमतौर पर देश भर में उपलब्ध नाना प्रकार के कच्चे मालों को प्रोसेस करना चाहिए। और इस प्रकार तमाम स्थानीय जिलों में श्रमजीवियों की भिन्न-भिन्न प्रकार की मांगों को पूरा करना चाहिए। इस प्रकार के उत्पादन का मात्र विशाल फैक्टरियों के आधार पर युक्तियुक्त संगठन संभव नहीं है। अपने देश में यदि हम केवल बड़े-बड़े और केन्द्रीय तौर पर नियंत्रित उद्योगों पर निर्भर करें, तो हम लोगों के लिए उपभोक्ता मालों के पिछड़े हुए उत्पादन को तेजी से नहीं बढ़ा सकते अथवा उनकी बढ़ती मांगों को कतई पूरा नहीं कर सकते। बड़े-बड़े एवं केन्द्रीय तौर पर नियंत्रित उद्योगों के अतिरिक्त दरमियानी और लघु आकार के स्थानीय उद्योगों का व्यापक रूप से विकास करना और आधुनिक प्रविधि के साथ-साथ दस्तकारी पद्धतियों का उपयोग करना जरूरी है।

इस विचार से प्रेरित होकर हमारी पार्टी की केन्द्रीय समिति ने अपने जून १९५८ के पूर्णाधिवेशन में संपूर्ण जनता के आंदोलन द्वारा सब उपलब्ध साधनों का उपयोग कर उपभोक्ता सामानों के उत्पादन को विकसित करने का कर्तव्य पेश किया। इस लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में प्रत्येक नगर या काउंटी में एक से अधिक स्थानीय उद्योग फैक्टरियां कायम की जाएंगी। पूर्णाधिवेशन के फैसले ने स्थानीय क्षेत्रों में छिपे अपार भंडारों का उपयोग करने की संभावना के द्वार खोल दिये और जनता के लिए उपभोक्ता सामानों के बढ़ते उत्पादन में बड़ी-बड़ी नवीनताएं लाने की राहें खोल दीं। जून के पूर्णाधिवेशन के बाद केवल कुछ महीनों में ही एक हजार से अधिक उद्योग फैक्टरियां देश-भर में कायम हो गयीं। इन फैक्टरियों पर कोई सरकारी धन खर्च न हुआ और ये बेकार पड़े स्थानीय सामानों और जन-शक्ति के उपयोग द्वारा कायम हुईं। परिणामस्वरूप विभिन्न उपभोक्ता माल भारी परिमाण में तैयार हुए। इस समय हमारे राज्य स्वामित्व और सहकारी स्वामित्व वाले उद्योग आधे उपभोक्ता मालों का उत्पादन करते हैं। वे लोगों की जरूरतों को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका

निभा रहे हैं।

स्थानीय उद्योगों की स्थापना के फलस्वरूप आर्थिक निर्माण में प्रांतों की पहल और सक्रियता बढ़ी है, और स्थानीय रूप से प्राप्य कच्चे माल को लेकर बड़े पैमाने पर उनका उपयोग किया जा रहा है। इसके अलावा कई गृहिणियों ने स्थानीय उद्योगों में नौकरी कर ली है। इस तरह श्रमजीवी लोगों की प्रति कुटुंब आय बढ़ गयी है और महिलाओं का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्तर तेजी से ऊंचा हुआ है।

हमने मत्स्य उद्योग के विकास में भी बड़ी-बड़ी सफलताएं प्राप्त की हैं जोकि हमारे श्रमजीवी लोगों के जीवनस्तर में सुधार करने के लिए जरूरी हैं। मत्स्य उद्योग के भौतिक और तकनीकी आधार को मजबूत किया गया है और मत्स्य-पालन, समुद्री पौध और मत्स्य संवर्धन तथा समुद्री आहार प्रोसेसिंग में नयी प्रगति की गयी है। अब हम सालाना ५,००,००० से ६,००,००० टन मछली पकड़ते हैं और उच्च कोटि की डिब्बाबन्द मछली हमारे श्रमजीवी लोगों को उपलब्ध की जा सकती है।

जैसा कि ऊपर के तथ्यों से स्पष्ट होता है, हमारा उद्योग न केवल बड़ी ऊंची दर से बढ़ा है बल्कि उसकी शाखाओं और उसके तकनीकी साजसामान की बनावट में भी भारी परिवर्तन हुआ है।

हमने उद्योग को विदेशों के लिए निर्मित और विकसित नहीं किया है बल्कि घरेलू बाजारों के लिए, अर्थात पक्के मालों की घरेलू जरूरतों को पूरा करने और अपने अर्थतन्त्र की बुनियादों को मजबूत बनाने के लिए निर्मित और विकसित किया है। हमने अपने उद्योग में, जोकि पहले मुख्यत: कच्चे माल और अर्धनिर्मित सामान तैयार करता था और जो मशीनों, साजसामान और उपभोक्ता मालों के लिए प्राय: पूर्णत: विदेशों पर निर्भर था, असंतुलन का अंत कर दिया है। हमारा उद्योग अब विदेशों के कच्चे मालों पर निर्भर नहीं हैं, वह मूलत: आंतरिक प्राकृतिक संपदा और कच्चे मालों पर निर्भर करता है। इससे साबित होता है कि हमने अपने उद्योग को एक ठोस स्वतंत्र आधार पर ला दिया है।

नि:सन्देह हमारे देश का औद्योगिक उत्पादन अब भी मांग से कहीं कम है और हमारे औद्योगिक उत्पादों में से कुछ की क्वालिटी कोई ऊंची नहीं हैं। तथापि बिजलीघरों, धातुशोध कारखानों, रसायन फैक्टरियों और अन्य विशाल आधुनिक औद्योगिक उद्यमों का निर्माण अब उन सामग्रियों, मशीनों और साजसामानों से हो रहा है जिनका उत्पादन हम करते हैं। प्राविधिक पुनर्निर्माण मुख्यत: अपने भारी उद्योग पर निर्भर रह कर राष्ट्रीय अर्थतंत्र को बड़ी तेजी से आगे बढ़ा रहा है और जनता की रोजमर्रा की जरूरतें घरेलू उपभोक्ता मालों से पूरी की जा

रही हैं।

हमने एक पिछड़े औपनिवेशिक उद्योग को, जिसकी हालत युद्ध में बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो जाने से बद से बदतर हो गयी थी, अल्पकाल में एक स्वतंत्र आधुनिक उद्योग में बदल दिया है। इस प्रकार हमने अपने राष्ट्रीय अर्थतंत्र की सब शाखाओं को नवीनतम तकनीक से सज्जित करने और आने वाले वर्षों में अपने लोगों के जीवन में सुधार करने के लिए भौतिक और प्राविधिक बुनियाद रख दी है।

समीक्षाधीन अवधि के दौरान कृषि के समक्ष मूल कार्य यह था कि उसकी भौतिक और प्राविधिक बुनियाद को मजबूत बनाया जाए और कृषि उत्पादन में तेजी से वृद्धि की जाए।

हमारे देश के कृषि सहकारों ने एक पुरानी प्रविधि के आधार पर गठित होने के बावजूद निजी कृषि की तुलना में जबर्दस्त श्रेष्ठता प्रदर्शित की है। लेकिन अपनी पिछड़ी कृषि तकनीक को नूतनता प्रदान किये बगैर हम न तो सहकारी अर्थतंत्र की श्रेष्ठता को पूर्णतया प्रदर्शित कर सकते हैं और न ही कृषि की उत्पादक शक्तियों का और अधिक विकास कर सकते हैं।

कृषि के सहकारीकरण के प्रायः पूर्ण होने के बाद हमारी पार्टी तत्परता से उसके प्राविधिक कायाकल्प के मार्ग पर चल पड़ी। पार्टी ने सिंचाई, विद्युतीकरण और यंत्रीकरण को देहात में तकनीकी क्रांति के मुख्य तत्व घोषित किया और उसके पहले लक्ष्य के रूप में सिंचाई पर अपने समस्त प्रयास केंद्रित कर दिये।

हमारी कृषि के तकनीकी उद्धार में पहला महत्वपूर्ण कर्तव्य है सिंचाई। विराम-संधि के तुरंत बाद हमने कृषि सहकारीकरण के साथ-साथ बड़े पैमाने पर सिंचाई साधनों का निर्माण किया। सहकारीकरण के पूर्ण होने के बाद पंचवर्षीय योजना के दौरान हमने सिंचाई के लिए प्रकृति के कायाकल्प की परियोजना को आगे बढ़ाने के वास्ते खासतौर पर एक जोरदार समग्र जन आंदोलन चलाया। १९५७ से १९६० तक राज्य ने सिंचाई में कुल मिलाकर १,७५,००,००० वोन की धनराशि लगायी और गांवों को पम्पों और मोटरों सहित भारी परिमाण में यंत्र और साजसामान तथा इमारती सामग्री उपलब्ध की। राज्य के कोष से बड़े पैमाने पर सिंचाई और नदी तटबंध परियोजनाएं संपन्न की गयीं, तथा कृषि सहकारों को अपने खर्चे और राज्य की तकनीकी मदद से लघु और दरमियानी परियोजनाएं चालू करने को व्यापक रूप से प्रोत्साहित किया गया। परिणामस्वरूप इस समय ८,००,००० छोंगबो भूमि सिंचाई के अंतर्गत है जो मुक्ति-पूर्व दिनों के क्षेत्र से सात गुनी है। समस्त धान क्षेत्र सिंचित हैं, और हाल ही में शुष्क खेतों को सिंचित करने की एक प्रणाली लागू की गई है। इसका आशय यह है कि हमने सिंचाई के मामले को बुनियादी तौर पर हल कर दिया है। इसका अर्थ है कि

हजारों साल से सूखे और बाढ़ से त्रस्त हमारे किसानों का सदियों पुराना स्वप्न साकार हो उठा है।

सिंचाई की ही तरह, ग्रामीण विद्युतीकरण में भी भारी प्रगति हुई है। बड़े-बड़े विद्युत संयंत्रों के साथ-साथ देहात में विद्युतीकरण को और तेज करने के लिए व्यापक पैमाने पर छोटे और दरमियानी बिजलीघर हमने बनाये हैं। इस समय समस्त ग्रामीण री में से ९२.१ प्रतिशत और हमारे देश में तमाम किसानों में से ६२ प्रतिशत को बिजली की आपूर्ति की जाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में न केवल रोशनी के लिए बल्कि पानी को नीचे से ऊपर ले जाने, भूसे से दानों को अलग करने और चारे को प्रोसेस करने जैसे विभिन्न कार्यों के यंत्रीकरण के लिए पावर के रूप में भी बिजली का अधिकाधिक प्रयोग किया जा रहा है।

हमारी कृषि के प्राविधिक पुर्निर्माण में यंत्रीकरण सबसे मुश्किल काम है। पहले मशीन-निर्माण उद्योग के पिछड़े होने के कारण हम देहात को बड़े परिमाण में आधुनिक यंत्र उपलब्ध करने में असमर्थ थे, फिर हमने परम्परागत कृषि उपकरणों में सुधार के प्रयासों द्वारा पशुओं द्वारा खींचे जाने वाले कृषि यंत्रों के व्यापक उपयोग के साथ नयी शुरूआत की। इस कार्यवाही ने श्रम उत्पादकता बढ़ाने और कृषि उत्पादन में वृद्धि लाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

साथ ही खासतौर पर १९६० के बाद आधुनिक कृषि यन्त्रों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ायी गयी है, जबकि हमारे मशीन-निर्माण करने के उद्योग ने ट्रैक्टरों का बड़े पैमाने पर उत्पादन शुरू किया, कृषि यन्त्रीकरण में बड़ी गति आ गयी है और हम काफी सफलता हासिल कर चुके हैं। १९५८ के मुकाबले में १९६० में खेती मशीन केन्द्रों की संख्या करीब-करीब दुगुनी हो चुकी थी, देहात में इस्तेमाल हो रहे ट्रैक्टरों (१५ हार्स पावर यूनिटों के हिसाब से) की कुल संख्या ४.२ गुना और उतने ही समय में ट्रैक्टरों द्वारा जोता जाने वाला क्षेत्र १० गुना हो चुका था। देहाती क्षेत्रों के पास इस समय १३,००० से अधिक ट्रैक्टर और भारी संख्या में तरह-तरह की खेती की मशीनें हैं। कृषि कार्य के यन्त्रीकरण के स्तर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

कृषि के सहकारीकरण और उसकी भौतिक तथा तकनीकी बुनियाद के दृढ़ीकरण के परिणामस्वरूप कृषि उत्पादन तेजी से बढ़ा है।

पहले हमारी खेती का अन्न-उपज की तरफ बहुत प्रबल रुझान था। फिर भी यह इतनी पिछड़ी हुई थी कि यह लोगों के मुख्य खाद्यान्नों की जरूरत पूरी नहीं कर सकती थी। हमारा दायित्व अपने देहात को न केवल एक विश्वसनीय खाद्य-पूर्ति केन्द्र में बदलना था बल्कि अन्न समस्या को सुलझा कर और खेती की कई शाखाओं को विकसित करके हलके उद्योग के लिए कच्चे माल का स्रोत

बनाना भी था। इस तरह हमारी पार्टी ने अन्न-उत्पादन को प्राथमिकता देने और साथ ही औद्योगिक फसलों के उत्पादन, पशु संवर्धन, रेशम-कीड़ा पालने और फलों की बागबानी को विकसित करने की नीति को आगे बढ़ाया।

खासतौर पर हमारे देश के लिए बुनियादी कृषि समस्या अनाज की है, जिसे अन्न के गंभीर अभाव का सामना करना पड़ा है। अन्न की पैदावार में वृद्धि की दृष्टि से हमने भूमि के अधिक कारगर उपयोग, फसल क्षेत्रों के वितरण में सुधार, अधिक उर्वरकों और खादों के इस्तेमाल और खेती के समुन्नत तरीकों के व्यापक प्रयोग आदि के विभिन्न तकनीकी और आर्थिक कदम उठाते हुए कृषि के भौतिक और तकनीकी आधार को मजबूत किया है। १९५६ में भूमि का १३८ प्रतिशत उपयोग हुआ जो १९६० में बढ़ कर १७४ प्रतिशत हो गया और अधिक उपज वाली फसलों, चावल और मक्के का क्षेत्र ११,०१,००० छोंगबो से बढ़ कर १२,८४,००० छोंगबो हो गया। इसी अवधि में प्रयुक्त उर्वरक की मात्रा ४२ प्रतिशत और खाद की इससे भी बहुत अधिक बढ़ गयी। इसके अलावा विभिन्न समुन्नत कृषि तकनीकों को बड़े पैमाने पर लागू किया गया, और कुल मिलाकर खेती के तौर-तरीकों में और सुधार हुआ। इसका नतीजा यह हुआ है कि पिछले कुछ वर्षों में अन्न उत्पादन में भारी वृद्धि हुई है, यहां तक कि यह उत्पादन १९६० में ३८,०३,००० टन हो गया। यह १९५६ के मुकाबले में ३२ प्रतिशत की वृद्धि है।

इस साल हमारी पार्टी ने अब तक हासिल हुए परिणामों के आधार पर पिछले साल के मुकाबले में अन्न उत्पादन में दस लाख टन वृद्धि का बड़ा भारी लक्ष्य तय किया है और इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसने हर संभव पग उठाया है। अब शरद् फसल के अवसर पर सारे देहातों में खेत अभूतपूर्व प्रचुर फसलें दे रहे हैं। इससे साफ दिखायी देता है कि हम निश्चित रूप से दस लाख टन वृद्धि का लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे।

हम कह सकते हैं कि हमने खाद्य समस्या को, जोकि हमारे देश के आर्थिक निर्माण में कठिनतम समस्याओं में से एक थी, बुनियादी तौर पर हल कर लिया है।

अनाज के अलावा कपास और तम्बाकू जैसी औद्योगिक फसलों की उपज काफी बढ़ी है और सब्जियों का उत्पादन बड़ी तेजी से उन्नत हुआ है।

पशु-पालन हमारी कृषि की सर्वाधिक पिछड़ी शाखा रही है। हमारी पार्टी ने सहकारों और उनके सदस्यों द्वारा पशुओं की आबादी बढ़ाये जाने के मूल कर्तव्य के आधार पर पशुधन के और भी विकास के लिए बुनियाद पैदा की है। १९५६ के मुकाबले में १९६० में गाय-बैलों की संख्या ३९ प्रतिशत, भेड़-बकरियों की १०० प्रतिशत से अधिक, सुअरों की ५८ प्रतिशत और खरगोशों की करीब १७००

प्रतिशत वृद्धि हुई।

फल उत्पादन में भूमि के १,००,००० छोंगवो जोतने-बोने योग्य बनाये गये हैं। इसका नतीजा यह हुआ है कि फल के पेड़ों का क्षेत्र बढ़कर छह गुना हो गया है और कुल उत्पादन ३.६ गुना हो गया है।

रेशम के कीड़े पालने में और भी प्रगति की गयी है। इसी प्रकार कृषि के अन्य पूरकों, मधुमक्खी पालन आदि में नयी-नयी प्रगतियां की गयी हैं। खासतौर पर पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि सहकार पहाड़ियों का कारगर उपयोग कर अपनी आमदनी बढ़ा रहे हैं।

हमारे देश की समाजवादी कृषि अब बाढ़ और सूखे के नुकसानों से सुरक्षित है। यह पुरानी पड़ चुकी प्रविधि को बड़ी तेजी से तिलांजलि दे कर नवीनतम प्रविधि को अपना रही है और यह अर्थतंत्र का एक समुन्नत और कारगर क्षेत्र बन रही है।

राष्ट्रीय अर्थतंत्र के तीव्र विकास के साथ-साथ अपनी परिवहन जरूरतों को पूरा करना एक अत्यावश्यक कार्य बन गया है।

इन तेजी से बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए हमें कोई भी पग उठाने से पहले अपने रेलवे परिवहन को मजबूत करना पड़ा। समीक्षाधीन वर्षों के दौरान हमने हाएजू और हासोंग, प्योंगसान और चिहारी, तथा सुसोंग और कोमुसान को जोड़ने वाली या तो नयी लाइनें बिछायीं या पुरानी लाइनों को दोहरा किया, और हमने सौ किलोमीटर से अधिक रेलपथ का विद्युतीकरण किया। हमने रेलवे के प्राविधिक साजसामान में काफी सुधार किया और रेल इंजनों का अधिक प्रभावशाली इस्तेमाल किया। इसके साथ ही रेल यातायात में अनुशासन और व्यवस्था को मजबूत किया गया तथा उसके संगठन में सुधार लाया गया।

रेल माल का कुल कारोबार १९५६ के आंकड़ों से १९६० में दुगुने से भी ज्यादा हो गया, माल और यात्री दोनों ही यातायातों में, रेलवे पर सेवा के सांस्कृतिक स्तर और सेवा की क्वालिटी दोनों में आमतौर पर उन्नति हुई है।

सड़क, समुद्र और नदी परिवहन भी तेजी से विकसित हुए हैं। १९५७-६० में मोटर वाहनों की संख्या करीब-करीब दुगुनी हो गयी है, मोटर वाहनों द्वारा माल की ढुलाई में ४.३ गुने की वृद्धि हुई और जहाजों द्वारा माल की ढुलाई में ४.४ गुने की।

संचार के क्षेत्र में तार और टेलीफोन के तानेबाने का विस्तार हुआ, तार प्रसारण सेवा समस्त देहाती री में से ८८ प्रतिशत को उपलब्ध की गयी, और रेडियो प्रसारण सुविधाओं को और अधिक मजबूत बनाया गया।

उत्पादन के विस्तार और लोगों के जीवनस्तरों में सुधार के लिए अति

महत्वपूर्ण काम है पूंजीगत निर्माण। हमें खासतौर पर हमारे देश में, जो पहले पिछड़ा रहा है और जिसने युद्ध में भीषण विनाश सहा है, पंचवर्षीय योजना के दौरान भारी परिमाण में निर्माण-कार्य हाथ में लेना पड़ा।

राज्य ने १९५७ और १९६० के बीच राष्ट्रीय अर्थतंत्र और सांस्कृतिक निर्माण के लिए पूंजीगत निर्माण पर दो अरब से अधिक वोन लगाये। तीनवर्षीय योजनाकाल के मुकाबले में यह औसतन ४० प्रतिशत वार्षिक वृद्धि का सूचक है।

बड़े-बड़े निर्माण कार्यों को सफलतापूर्वक संपन्न करने के लिए यह बात महत्वपूर्ण है कि निर्माण तेजी से, कुशलता से और सस्ती लागत पर संपन्न किये जाएं। ये सब काम जीर्ण-शीर्ण आदिम तौर-तरीकों को हमेशा-हमेशा के लिए त्याग कर तथा निर्माण कार्यों को औद्योगिक, संयोजन-लाइन पद्धतियों पर आधारित करके संपन्न किये जा सकते हैं। पूंजीगत निर्माण का औद्योगीकरण—यह एक बुनियादी निर्माण नीति रही है जिसका हमारी पार्टी ने दृढ़तापूर्वक अनुसरण किया है।

तमाम मुश्किलों और रुकावटों पर काबू पाकर हमने पार्टी की नीति को पूरी तरह कार्य रूप दिया है और बड़े पूंजीगत निर्माण में एक महान परिवर्तन ला दिया है। १९६० में हमने २० प्रतिशत से अधिक औद्योगिक निर्माण और लगभग ६० प्रतिशत आवास निर्माण में संयोजन-लाइन पद्धति का उपयोग किया। निर्माण-कार्य में खुदाई के काम में यंत्रीकरण की दर बढ़ कर ५३ प्रतिशत हो गयी जबकि लदाई और उतराई में यह वृद्धि ५० प्रतिशत, उत्तोलन में लगभग ९० प्रतिशत और कंकरीट मिलाने में ७० प्रतिशत रही। हमने निर्माण सामग्री के उत्पादन में भारी विस्तार किया है और उनकी क्वालिटी को ऊंचा उठाया है। हमने अपने डिजाइन कार्य में भी उल्लेखनीय सुधार किया है।

इसके साथ ही हमने एक अखिल जन-आन्दोलन द्वारा शहरी और देहाती निर्माण को संपन्न किया है। खासतौर पर दूरस्थ क्षेत्रों में अनेक भवनों और सांस्कृतिक तथा कल्याणकारी सुविधाओं के निर्माण हेतु स्थानीय निर्माण सामग्रियों का बड़े पैमाने पर प्रयोग किया गया।

पूंजीगत निर्माण में प्राप्त सफलताओं के परिणामस्वरूप अनेक फैक्टरियों, उद्यमों और उत्पादन प्रतिष्ठानों का उद्धार, पुनःसंस्थापित, विस्तार या नवीन निर्माण किया गया है और हमारे नगरों और देहातों का स्वरूप इतना बदल गया है कि उन्हें पहचान पाना मुश्किल है। जनवादी राजधानी प्योंगयांग एक आधुनिक, सुन्दर और शानदार नगर बन गया है। हमारे देश में तमाम नगर बिल्कुल नये बने हैं और वे एक नूतन, सुन्दर दृश्य उपस्थित करते हैं। अब हमारे कृषि गांवों में पुराने मिट्टी के झोंपड़े गिरा दिये गये हैं और वे भी आकर्षक, आधुनिक और

रहने योग्य सुखद स्थान बनने जा रहे हैं

निर्माण कार्य की बड़ी सफलताओं में से एक यह है कि भौतिक और तकनीकी बुनियादें मजबूत की गयी हैं, भवन-निर्माण उद्योग के लिए कार्यकर्ता प्रशिक्षित किये गये हैं और विपुल अनुभव संग्रहीत किया गया है। बड़े-बड़े नगरों और औद्योगिक केन्द्रों में हमने नयी तकनीक से सज्जित निर्माण उद्यम कायम किये हैं और भवन-निर्माण सामग्री उद्योग के लिए ठोस आधार रखे हैं। हमारे डिजाइनरों, निर्माण तकनीशियनों और मजदूरों ने स्वतः शानदार आधुनिक फैक्टरियों, उद्यमों और सांस्कृतिक प्रतिष्ठानों के डिजाइन तैयार करना और उनका निर्माण करना सीख लिया है। ये उपलब्धियां भविष्य में बड़े पैमाने पर निर्माण-कार्य हाथ में लेने में एक निधि के तौर पर काम आएंगी।

साथियो, सांस्कृतिक क्रांति समाजवादी निर्माण का एक महत्वपूर्ण तत्व है। समीक्षाधीन वर्षों में हमने सार्वजनिक शिक्षा को सुधारने और मजबूत बनाने में, श्रमजीवी लोगों के सांस्कृतिक और तकनीकी स्तर को उठाने में और राष्ट्रीय संस्कृति और कला का विकास करने में भारी सफलताएं पायी हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में १९५६ में अनिवार्य प्राथमिक स्कूल प्रणाली और १९५८ में अनिवार्य माध्यमिक स्कूल प्रणाली लागू की गयी। इस समय अनिवार्य नौ-वर्षीय तकनीकी शिक्षा लागू करने के लिए तैयारियां सुचारु रूप से चल रही हैं। विभिन्न स्तरों के स्कूलों का तानावाना बड़े पैमाने पर विस्तारित किया गया है और उनमें प्रवेश बढ़ गया है। आज हमारे देश में २५,३०,००० छात्र, या करीब एक चौथाई आबादी, विभिन्न स्तरों के आठ हजार से अधिक स्कूलों में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

समाजवाद और कम्युनिज्म के निर्माण के उद्देश्य से नयी पीढ़ी को सामान्य प्रारम्भिक ज्ञान और आधुनिक प्रविधि से लैस, सुसंस्कृत और सुचारु रूप से विकसित श्रमिकों के रूप में शिक्षित किया जाना चाहिए। समाजवादी निर्माण के इन व्यावहारिक तकाजों को दृष्टिगत रखते हुए हमारी पार्टी ने १९५९ में सार्वजनिक स्कूल प्रणाली को पुनर्गठित किया और तमाम स्कूलों के कामकाज के आमूल सुधार के महत्वपूर्ण पग उठाये। सीनियर मिडिल स्कूलों की पिछली प्रणाली को, जो वास्तविक जीवन से दूर थी और जिसमें छात्रों के लिए प्रशिक्षण की अनदेखी की गयी थी, समाप्त कर हमने उसके स्थान पर माध्यमिक और उच्चतर तकनीकी स्कूलों की प्रणाली स्थापित की, जिससे हमारे तमाम बच्चों को न केवल विज्ञान की बुनियादी बातों की आम जानकारी प्राप्त करने बल्कि एक विशिष्ट क्षेत्र में तकनीकी जानकारी प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया गया। इसके साथ ही हमने शिक्षा को उत्पादन से और सिद्धांत को अमल से जोड़ने के सिद्धांत के आधार पर अपने सभी स्कूलों में शिक्षा के विषय और पद्धति, दोनों में सुधार

किया। सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली के इस पुनर्गठन ने शिक्षा के क्षेत्र में पुराने समाज के अवशेषों का पूर्ण उन्मूलन कर दिया है। इसने शिक्षा के मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धांत को पूर्णतया साकार कर दिया है और यह हमारे देश में समाजवादी निर्माण के तकाजों से पूर्णतया मेल खाता है।

हमारे राष्ट्र के तकनीकी कर्मचारियों का प्रशिक्षण हमारे देश के लिए, जो कभी एक अविकसित उपनिवेश था, एक बहुत ही महत्वपूर्ण समस्या थी। हमारी पार्टी ने मुक्ति के बाद राष्ट्रीय कर्मीदल के प्रशिक्षण की ओर काफी ध्यान दिया है और इस मामले में शानदार परिणाम प्राप्त किये हैं। समीक्षाधीन काल के दौरान माध्यमिक और उच्चतर तकनीकी शिक्षा में की गयी निरंतर प्रगति के नतीजे के तौर पर तकनीकी कर्मीदल की पांतों में तेजी से वृद्धि हुई है। इस समय राष्ट्रीय अर्थतंत्र के सभी क्षेत्रों में १,३३,००० इन्जीनियर, सहायक इन्जीनियर और विशेषज्ञ काम कर रहे हैं। यह संख्या १९५६ के मुकाबले में दुगुनी है। आज हमारे देश में तमाम आधुनिक फैक्टरियों का प्रबंध और संचालन हमारे अपने तकनीशियनों और विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है। यह एक नये समाज के निर्माण में हमारी पार्टी और जनता द्वारा हासिल की गयी महानतम सफलताओं में से एक है।

लेकिन समाजवादी निर्माण में और भी तेजी लाने के लिए अधिक संख्या में तकनीकी कर्मियों की जरूरत है। तकनीकी कर्मचारियों की बढ़ती जरूरत को पूरा करने के लिए हमारी पार्टी ने उच्चतर शिक्षण संस्थानों की संख्या बढ़ाने और कर्मीदल प्रशिक्षण के स्तर को सुधारने के लिए भारी प्रयास किये। पंचवर्षीय योजना के दौरान विश्वविद्यालयों और कालेजों की संख्या १९ से बढ़कर ७८ हो गयी। इनमें ९७,००० छात्र थे। यह पांचगुनी वृद्धि थी। खासतौर पर श्रमजीवी लोगों को उत्पादन में रुकावट डाले बिना उच्चतर शिक्षा का अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से हमने रात्रि स्कूलों और पत्राचार पाठ्यक्रमों के तानेबाने का बड़े पैमाने पर विस्तार किया, और साथ ही कारखानों और कम्युनिस्ट कालेजों जैसे नये कालेज खोले। फैक्टरी कालेज अब बीस से अधिक बड़ी-बड़ी फैक्टरियों और उद्यमों में खोले गये हैं और प्रत्येक प्रांतीय केन्द्र में एक कम्युनिस्ट कालेज कायम किया गया है। इन कालेजों ने भारी संख्या में मजदूरों, स्थानीय राजकीय संस्थाओं के कार्यकर्ताओं और आर्थिक संस्थाओं के कर्मचारियों को भर्ती किया जो काम भी करते हैं और अध्ययन भी। इस तरह अब हम कार्यकर्ताओं को न केवल साधारण कालेजों में बल्कि उत्पादन स्थलों में भी प्रशिक्षित कर सकते हैं। हमारे देश में फैक्टरियां और अन्य उद्यम उत्पादन केन्द्रों और कार्यकर्ता प्रशिक्षण केन्द्रों का दोहरा काम कर रहे हैं।

फैक्टरी और कम्युनिस्ट कालेजों की स्थापना के बाद एक साल के हमारे परीक्षण ने साबित कर दिया है कि एक फैक्टरी एक कालेज की व्यवस्था करने में सक्षम है। फिर ऐसे कालेजों के कई फायदे भी हैं। ये कालेज श्रमिक वर्ग से आने वाले नयी किस्म के बुद्धिजीवियों के व्यापक प्रशिक्षण को संभव बनाते हैं और शिक्षा को उत्पादन के साथ और सिद्धान्त को अमल के साथ अति निकट से जोड़ने की संभावना उपलब्ध करते हैं। इस के अलावा भारी संख्या में महत्वपूर्ण मजदूरों ने उत्पादन से अलग हुए बगैर उच्चतर शिक्षा ग्रहण की है, और उत्पादन तथा प्रविधि के विकास में तेजी आई है।

हमारे श्रमजीवी लोगों के सांस्कृतिक और तकनीकी स्तरों में आम उन्नति सांस्कृतिक क्रान्ति में एक बड़ी सफलता की द्योतक है। श्रमजीवी लोगों के सांस्कृतिक और तकनीकी स्तरों में सुधार के लिए पार्टी ने निम्न मुख्य नारा पेश किया है: तमाम मजदूरों और किसानों को कम से कम जूनियर मिडिल स्कूल स्तर की आम शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए और एक से अधिक तकनीकी कौशल में पारंगत होना चाहिए। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हमने उत्पादन इकाइयों को केन्द्र बना कर किसानों और मजदूरों में आम और तकनीकी शिक्षा का जोरदार ढंग से प्रसार किया है। अब नगरों और गांवों में कई वयस्क प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल हैं जिनमें लगभग १० लाख मजदूरों और किसानों ने नाम लिखवा रखे हैं। साथ ही फैक्टरियों और दूसरे उद्यमों में तकनीकी अध्ययनों और काम पर तकनीकी प्रशिक्षण ने श्रमजीवी लोगों के तकनीकी और कौशल स्तरों में सुधार किया है।

समीक्षा काल में विज्ञान के विकास में भी काफी सफलताएं प्राप्त हुईं। १९५६ के मुकाबले में १९६० में वैज्ञानिक अनुसन्धान संस्थानों की संख्या २.६ गुना और वैज्ञानिक कार्यकर्ताओं की संख्या २.८ गुना बढ़ी है। हमारी पार्टी ने इस बात का ध्यान रखा कि विज्ञान में हमारे मुख्य प्रयासों का उद्देश्य यह होना चाहिए कि समाजवादी आर्थिक निर्माण में उत्पन्न होने वाली व्यावहारिक समस्याओं, खासतौर पर घरेलू कच्चे मालों का प्रयोग करते हुए और आगे का औद्योगिक विकास करने से सम्बन्धित, प्रविधि की गंभीर समस्याओं को सुलझाया जाय। पार्टी की नीति का पालन करते हुए हमारे वैज्ञानिकों और तकनीशियनों ने उत्पादन के साथ गहरा तालमेल रखते हुए अपने वैज्ञानिक अनुसंधान का संचालन किया तथा विनालोन अनुसंधान, ऐन्थ्रेसाइट गैसीकरण की समस्या के समाधान, अर्धचालक अनुसंधान आदि में महान सफलताएं प्राप्त कीं। इस तरह उन्होंने हमारे राष्ट्रीय अर्थतंत्र के विकास में बड़ा भारी योगदान किया।

हमारा साहित्य और कला पूर्ण प्रस्फुटन के चरण में दाखिल हो गये हैं। साहित्य और कला के मामले में हमारी पार्टी की सुसंगत नीति यह बनी हुई है कि

समाजवादी प्रणाली के अंतर्गत अपने लोगों के जीवन और उमंगों को प्रतिबिम्बित करने वाली एक नयी राष्ट्रीय संस्कृति को विकसित किया जाए और साथ ही हमारी युगों पुरानी सांस्कृतिक विरासत को आलोचनात्मक ढंग से आगे बढ़ाया जाये और आलोचनात्मक ढंग से ही विदेशों की समुन्नत संस्कृति की उपलब्धियों को भी आत्मसात किया जाए। हमने साहित्य और कला में प्रतिक्रियावादी पूंजीवादी विचारधारा के सभी लक्षणों और बाहर से उनकी घुसपैठ के विरुद्ध दृढ़तापूर्वक लड़ाई की है। हमने श्रमजीवी जनता की सच्ची सेवा करने वाले क्रांतिकारी साहित्य और कला का विकास करने का प्रयास किया है।

साहित्य और कला पर पार्टी की नीति का निरंतर अनुसरण करते हुए हमारे लेखकों और कलाकारों ने ऐसी अनेक शानदार साहित्यिक और कलात्मक रचनाएं रची हैं, जोकि हमारे लोगों के गौरवशाली संघर्ष के इतिहास और वर्तमान समय के हमारे श्रमजीवी लोगों के गुरुतर संघर्ष को अभिव्यक्त करती हैं। हमारा साहित्य और कला मजदूरों और किसानों की निधि बन गये हैं और वे आम लोगों में और भी ज्यादा पुरजोर ढंग से पनप रहे हैं।

इस तरह एक नये समाज के निर्माण के श्रमजीवी लोगों के संघर्ष को प्रेरणा प्रदान करते हुए साहित्य और कला हमारे देश में उनके कम्युनिस्ट शिक्षण के लिए एक मजबूत माध्यम बन गये हैं।

उद्योग, कृषि और राष्ट्रीय अर्थतंत्र की समस्त अन्य शाखाओं के तेजी से विकास और सब प्रकार की लूट-खसोट की समाप्ति से लोगों के भौतिक और सांस्कृतिक जीवन में और भी अधिक सुधार आया है।

राष्ट्रीय आय १९५६ के मुकाबले में १९६० में २.१ गुना अधिक थी। हमारे देश में यह आमदनी समस्त लोगों की होती है। इसका उपयोग समाजवादी उत्पादन का विस्तार करने और श्रमजीवी जन की सुख-समृद्धि बढ़ाने के कार्यों पर किया जाता है। यहां यह बात महत्वपूर्ण है कि मजदूरों और किसानों के जीवनस्तरों में भारी अन्तरों को दूर करने के लिए संचय और खपत को समुचित रूप से जोड़ा जाए और उनका सही-सही संतुलन कायम किया जाए।

हमारे देश में अब राष्ट्रीय आमदनी का एक चौथाई संचय के लिए निश्चित किया जाता है और करीब तीन चौथाई व्यक्तिगत खपत के लिए श्रमजीवी जनता के हिस्से में आता है।

कारखाना और कार्यालय कर्मचारियों के वास्तविक वेतन १९५६ के मुकाबले में १९६० में २.१ गुना थे। अब उनके वास्तविक वेतन रहन-सहन की स्थिरतापूर्ण स्थितियां उपलब्ध करने के लिए आवश्यक स्तर पर पहुंच गये हैं।

इसी अवधि में किसानों की वास्तविक आमदनी में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

पर्वतीय क्षेत्रों में भी किसानों की रहन-सहन की स्थितियों में सुधार हुआ है और उन्होंने मैदानी किसानों के समान स्तर प्राप्त कर लिया है। गरीब किसानों की समस्या को भी, जो लम्बे समय तक हमारे देश में उलझी रही थी, पूर्णतया सुलझा दिया गया है। इस तरह कुल मिला कर हमारे किसानों के जीवनस्तर भूतपूर्व मध्यम किसानों या खाते-पीते मध्यम किसानों के स्तर तक पहुंच गये हैं।

देहाती और शहरी क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर मकानों के निर्माण से श्रमजीवी लोगों की आवासीय स्थितियों में भी सुधार आया है। केवल १९५७ से १९६० के बीच हमने शहरों में ६२,२०,००० वर्ग मीटर और देहातों में ५०,६०,००० वर्ग मीटर नये मकान उपलब्ध किये गये हैं।

आज हमारे श्रमजीवी लोग रोटी, कपड़ा और मकान की चिंताओं से मुक्त हैं, यद्यपि वे अभी भी प्रचुरता का जीवन नहीं बिता रहे।

न केवल रोटी, कपड़ा और मकान की आवश्यक समस्याएं ही सुलझा दी गयी हैं बल्कि श्रमजीवी लोगों को चीजों की आपूर्ति भी आमतौर पर सुधरी है। १९५६ के मुकाबले में १९६० में फुटकर व्यापार का कुल कारोबार बढ़कर ३.१ गुना हो गया—खाद्यान्नों में यह वृद्धि २.५ गुनी और दूसरी चीजों में ३.७ गुनी रही। इस अवधि में व्यापार के तानेबाने में १.९ गुने की बढ़ोत्तरी हुई। परिणाम-स्वरूप हमारे श्रमजीवी लोग कहीं भी एक ही मूल्य पर वस्तुएं खरीद सकते हैं—भले ही वे शहरों में हों, गांवों में हों या दूरदराज पर्वतीय क्षेत्रों में।

हमारे देश में अपने श्रम से कमायी गयी आमदनी के अलावा श्रमजीवी लोगों को बड़े पैमाने पर राजकीय और सामाजिक लाभ प्राप्त होते हैं। १९६० में सामाजिक और सांस्कृतिक सेवाओं पर राजकीय बजट के खर्चे १९५६ की तुलना में लगभग चार गुना रहे।

शिक्षण शुल्क तमाम स्कूलों में समाप्त कर दिये गये हैं। इस तरह युवा पीढ़ी मुफ्त शिक्षा प्राप्त करती है। इसके अलावा बहुत बड़ी संख्या में विश्वविद्यालय, कालेज, और विशिष्ट स्कूल छात्रों को राज्य की ओर से वजीफे भी प्राप्त होते हैं।

हमारे देश में चिकित्सा सेवा पहले ही सार्वभौम की जा चुकी है। १९५६ के मुकाबले में १९६० में सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं में डाक्टरों की संख्या बढ़ कर दोगुनी तथा अस्पतालों और चिकित्सालयों की २.९ गुनी हो गयी है। श्रमजीवी लोगों के लिए चिकित्सा-सेवा में लगातार सुधार होता जा रहा है। १९६० में आबादी की मृत्यु दर जापानी साम्राज्यवादी शासन के वर्षों की तुलना में आधी रह गयी है जबकि जन्म दर २.७ गुना बढ़ गयी है।

मजदूरों और कार्यालय कर्मचारियों को सवेतन छुट्टियों का लाभ प्राप्त है। हर साल लाखों श्रमजीवी लोग विश्रामगृहों और स्वास्थ्य केन्द्रों में राज्य के

खर्चे पर विश्राम का आनन्द लेते हैं। राजकीय और सार्वजनिक व्यय से भारी संख्या में शिशुगृह और बाल-बाड़ियां स्थापित की गयी हैं, जहां बच्चों का शानदार ढंग से पालन होता है और उनकी देखभाल की जाती है। इस तरह औरतों को सामाजिक श्रम में भाग लेने के लिए आवश्यक हालात उपलब्ध किये गये हैं। १९५६ के मुकाबले १९६० में शिशु-गृहों और बाल-बाड़ियों की संख्या ३१ गुना हो गयी थी और उनमें लगभग सात लाख बच्चों को रखने की व्यवस्था थी।

यह सब श्रमजीवी लोगों के सम्बन्ध में हमारी पार्टी और राज्य की जबर्दस्त अभिरुचि है, और हमारे देश में कम्युनिज्म के सच्चे अभ्युदय की मुंह बोलती तस्वीर है।

साथियो, हमने समाजवाद के निर्माण में महान सफलताएं हासिल की हैं। हमारा अर्थतन्त्र और संस्कृति अभूतपूर्व तीव्र गति से विकसित हुई हैं और हनारे समाज के तमाम पहलुओं में आमूल परिवर्तन हुआ है।

हमारा देश कभी पिछड़ा औपनिवेशिक, कृषि प्रधान राज्य था जिसे युद्ध ने ध्वस्त करके राख बना दिया था, किंतु अब स्वतंत्र आर्थिक बुनियादों पर आधारित एक समाजवादी औद्योगिक-कृषि राज्य में बदल गया है। भूतकाल में हमारे मेहनती लोगों के बदन पर बहुत कम कपड़े होते थे, वे भूखे थे और सुसभ्य दुनिया से कटे हुए जहालत और अज्ञान का जीवन बिताते थे। लेकिन आज वे आशाओं से परि-पूर्ण तथा चिंताओं और परेशानियों से मुक्त एक खुशहाल जीवन बिता रहे हैं, वे विज्ञान और प्रविधि में पारंगत हो रहे हैं और सुशिक्षित और समाज के जागरूक निर्माता बनते जा रहे हैं।

आज हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि हमारे देश और हमारे लोगों ने युगों पुराने पिछड़ेपन और गरीबी से स्वयं को पूर्णतः मुक्त कर लिया है।

३. छोलिमा आंदोलन

साथियो,

हमारे देश ने अपने महान उभार और छोलिमा आंदोलन की प्रगति के मध्य समाजवादी निर्माण में जबर्दस्त सफलताएं प्राप्त की हैं।

छोलिमा आंदोलन हमारी पार्टी के गिर्द दृढ़तापूर्वक एकजुट हमारे लोगों की महान रचनात्मक शक्ति को अभिव्यक्त करता है। यह समाजवाद के निर्माण को पराकाष्ठा तक ले जाने का एक समग्र जन-आंदोलन है।

हमारे देश को पुराने समाज से विरासत में एक पिछड़ा अर्थतंत्र और संस्कृति मिली थी। इसके अतिरिक्त इसे एक तीनवर्षीय घनघोर युद्ध में से गुजरना पड़ा। हमारा देश उत्तर और दक्षिण में बंटा हुआ है और हम अमरीकी साम्राज्यवाद के साथ सीधी टक्कर लेते हुए समाजवाद का निर्माण कर रहे हैं और साथ ही मातृ-भूमि के शांतिपूर्वक पुनरेकीकरण के लिए संघर्ष कर रहे हैं। इस स्थिति ने हमसे एक दुर्घर्ष और अडिग संघर्ष का तकाजा किया। अपने ऐतिहासिक पिछड़ेपन को तेजी से दूर करने के लिए, देश के पुनरेकीकरण को, जोकि हमारा सर्वोच्च राष्ट्रीय लक्ष्य है, तत्वर सम्पन्न करने के लिए, हमें दूसरे लोगों की अपेक्षा कहीं अधिक तीव्र गति से आगे बढ़ना पड़ा।

क्रांति के विकास के लिए इस विशिष्ट आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए हमारी पार्टी ने गणतंत्र के उत्तरी आधे भाग में समाजवाद के निर्माण को निश्चित तौर पर तेज करने की नीति तैयार की और इस आधार पर उसने वीरोचित संघर्ष के लिए तमाम श्रमजीवी लोगों को संगठित और लामबंद किया।

हमारी पार्टी द्वारा शिक्षित और प्रशिक्षित हमारे देश के श्रमजीवी लोगों में हमारी क्रांति के विकास के फौरी तकाजों और अपने ऐतिहासिक ध्येय की गहरी चेतना थी और उन्होंने समाजवादी निर्माण को तेज करने की पार्टी की नीति का सर्वसम्मति से समर्थन किया।

"छोलिमा की रफ्तार से आगे बढ़ो," पार्टी के इस आह्वान को उत्सुकता-पूर्वक स्वीकार करते हुए हमारे श्रमजीवी लोगों ने पार्टी द्वारा प्रस्तावित कर्तव्यों को पूरा करने के लिए हर उतार-चढ़ाव में लड़ाई लड़ी, तथा वे एकदूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश में और तमाम रुकावटों और दिक्कतों पर वीरतापूर्वक काबू पाते हुए सीमा तक बढ़ते गये।

इस तरह हमने समाजवादी निर्माण के तमाम मोर्चों पर प्रायः हर रोज नयी-नयी तब्दीलियां कीं और विस्मयकारी चमत्कार दिखाये।

हमारे बहादुर श्रमिक वर्ग ने एक वर्ष से भी कम समय में तीन लाख से चार लाख टन क्षमता की धमन भट्टियां निर्मित कीं, ७५ दिनों में ८० किलोमीटर से भी लंबी स्टैंडर्ड गाज की रेल लाइन बिछायी, और एक वर्ष से कुछ अधिक समय में एक ऐसे स्थान पर जो बेकार पड़ा था, एक विशाल आधुनिक विनालोन फैक्टरी खड़ी की। "एक मशीनी उपकरण से कई मशीनी उपकरण बनाओ" आंदोलन द्वारा हमारे श्रमजीवी लोगों ने राजकीय योजना के अतिरिक्त एक वर्ष के अंदर तेरह हजार से अधिक अतिरिक्त मशीनी उपकरण निर्मित किये। तीन से चार महीने के अंदर उन्होंने इलाकों में बेकार की सामग्री और जन-शक्ति का उपयोग कर स्थानीय उद्योग के लिए एक हजार से अधिक फैक्टरियां बना दीं और छह

महीनों में उन्होंने ३,७०,००० छोंगबो धान क्षेत्रों और शुष्क खेतों को सिंचित करने के उद्देश्य से प्रकृति को बदलने के लिए जबर्दस्त परियोजनाओं को संपन्न कर दिखाया। इस प्रकार के दृष्टांतों की संख्या अनगिनत है।

ये सब हमारी जनता की, जो पार्टी के नेतृत्व में छोलिमा की रफ्तार से आगे बढ़ रही है, वीरोचित भावना और रचनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्त करते हैं।

छोलिमा आंदोलन को मजबूती से आगे बढ़ाते हुए हमने कम से कम ३० से ४० प्रतिशत वार्षिक औद्योगिक बढ़ोत्तरी की दर आश्वस्त की है, अल्पकाल में अपने पिछड़े देहाती अर्थतंत्र को बहुत आगे बढ़ा दिया है और खंडहरों से शहरों और गांव का पुनर्निर्माण किया है जो अब सर्वथा नयी तस्वीर पेश करते हैं। हमारे देश में समाजवादी निर्माण का महान उभार और छोलिमा आंदोलन ऐसी विधिसम्मत घटनाएं हैं जोकि युद्धोत्तर काल में किये गये महान सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों और अपने लम्बे, कठिन संघर्ष के दौरान हमारी पार्टी और जनता द्वारा निर्मित समस्त भौतिक और नैतिक शक्तियों के आधार पर घटित हुई हैं।

समाजवादी क्रांति की निर्णायक विजय और देश की स्वतंत्र आर्थिक बुनियाद की स्थापना से आर्थिक और सांस्कृतिक निर्माण में एक महान उभार के लिए सामाजिक, आर्थिक और भौतिक परिस्थितियां उपलब्ध हो गयीं और वे छोलिमा आंदोलन के वस्तुगत हेतु थीं।

बहरहाल, वस्तुगत पार्टी स्थितियां और संभावनाएं ही समाजवादी निर्माण में महान उभार लाने के लिए हमेशा काफी नहीं होतीं। हमें अपनी आंतरिक शक्तियों की भी, अर्थात अवाम को क्रांतिकारी उभार की दिशा में ले जाने की पार्टी की क्षमता तथा पार्टी की इच्छा को चरितार्थ करने के अवाम के दृढ़संकल्प की भी जरूरत होती है। अपने कठिन संघर्षों द्वारा पार्टी ने अवाम में निर्विवाद प्रतिष्ठा और विश्वास अर्जित किया है और उन्हें दृढ़तापूर्वक अपने इर्द-गिर्द गोलबद्ध किया है। पार्टी की पांतों की इस्पात जैसी एकता और पार्टी में मार्क्सवादी-लेनिनवादी नेतृत्व प्रणाली की व्यापक स्थापना से उसकी लड़ाकू क्षमता बढ़ गयी और अवाम में उसकी प्रतिष्ठा और प्रभाव में वृद्धि हुई। इस तरह पार्टी के संकल्प और विचार अवाम में गहराई तक घर कर गये हैं और ये उनके अपने संकल्प और विचार बन गये हैं।

हमारी जनता ने पार्टी की लाइनों और नीतियों को अपने मूलभूत व्यक्तिगत हित का विषय मानकर उन्हें अंगीकार किया है तथा क्रांतिकारी ध्येय और अपने देश की खुशहाली तथा प्रगति के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया है। यह स्वाभाविक ही है कि हमारी जनता अपने पिछड़े देश को समुन्नत देशों की पंक्ति

में लाने और यथाशीघ्र अपनी मुश्किल जीवन परिस्थितियों में सुधार लाने के लिए असाधारण क्रांतिकारी जोश का प्रदर्शन करें। यह स्वाभाविक ही है क्योंकि, जहां अतीत में हमारे देशवासी सत्ता से वंचित थे, वहां अब उस पर उनका अपना कब्जा है और उन्होंने अपने खून से उसकी रक्षा की है, और साथ ही जहां पहले वे कुचले हुए और अपमानित थे, वहां अब उन्होंने स्वयं को हर प्रकार के शोषण और दमन से मुक्त कर लिया है।

हमारी पार्टी ने श्रमजीवी लोगों के उच्च राजनीतिक उत्साह और अथक रचनात्मक शक्ति पर दृढ़तापूर्वक निर्भर रहते हुए समाजवादी निर्माण के तमाम मोर्चों पर दिलेराना परियोजनाएं शुरू की हैं और उन्हें बड़े उत्साह से सम्पन्न किया है।

हमारी क्रान्ति के विकास के प्रत्येक दौर के लिए अपनी नीति के निर्धारण में हमारी पार्टी ने न केवल वर्तमान और निकट भविष्य का विश्लेषण किया, बल्कि हमेशा देश के विकास की दीर्घकालीन संभावनाओं की वैज्ञानिक रूप से पूर्व-कल्पना की। उसने अवाम को आगे बढ़ने का सही रास्ता दिखाया और उनके संघर्ष की स्पष्ट मंजिल दर्शायी। जब एक बार नीति निर्धारित हो गयी, फिर हमारी पार्टी किसी भी पेचीदा और कठिन परिस्थिति में एक क्षण के लिए भी नहीं डगमगायी और अटल दृढ़ता से उसने अपनी नीतियों और फैसलों को सम्पन्न करके ही दम लिया।

अवाम को जबर्दस्त क्रान्तिकारी उत्साह से मैदान में कूदने को प्रेरित कर पार्टी एक समस्या को सुलझाती और इसके तुरन्त बाद दूसरी समस्या को हाथ में लेती और समाजवादी निर्माण के तमाम क्षेत्रों में लगातार पेशकदमी और निर्बाध गति से नई-नई सफलताओं की प्राप्ति के संकल्प की ज्वाला को हमेशा प्रज्वलित रखती। साथ ही पार्टी ने समाजवादी निर्माण के प्रत्येक चरण की आधारभूत कड़ी को समझा और उस पर ध्यान केन्द्रित किया। इस प्रकार वह एक के बाद एक समस्या को पूर्णतया हल करती और समाजवादी निर्माण की पूरी श्रृंखला का पूर्ण नियन्त्रण हासिल करती चली गई।

वैज्ञानिक दूरदर्शिता जो हमारी पार्टी के प्रत्येक नीति-निर्णय में पायी जाती है, मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्तों में उसकी निष्ठा और नीति के क्रियान्वयन में अपूर्व-क्रान्तिकारी उत्साह हमेशा श्रमजीवी लोगों को उनके काम में पूर्ण विश्वास देते और समाजवाद के महान मन्तव्य की विजय की दिशा में पार्टी द्वारा बतलाए गए मार्ग पर बगैर लेशमात्र ढुलमुल के आगे बढ़ने में उनकी सहायता करते रहे।

पार्टी का विवेकपूर्ण नेतृत्व, जनता के साथ उसकी मजबूत एकजुटता, तेजी से आगे बढ़ने का उनका अपूर्व संकल्प और उनका क्रान्तिकारी जोश—इन सबने

समाजवादी निर्माण में महान उभार और छोलिमा आन्दोलन का आधार पेश किया है और यही हमारी सब विजयों की निर्णायिक गारंटी है।

साथियो, जैसा कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद हमें सिखाता है, अवाम के विशाल तबके इतिहास बनाते हैं। लाखों श्रमजीवी लोगों के जागरूक, सृजनात्मक श्रम द्वारा ही समाजवाद और कम्युनिज्म का निर्माण होता है। इसलिए समाजवाद के निर्माण में यह महत्वपूर्ण है कि अवाम की सृजनात्मक शक्ति को पूर्णरूपेण जागृत किया जाए और उनके जोश, पहल तथा योग्यताओं को पूरी हरकत दी जाए। हमारे देश में छोलिमा आन्दोलन की शक्ति इसी तथ्य में निहित है कि यह एक अवामी आन्दोलन है, जोकि हमारे लोगों के क्रान्तिकारी उत्साह और सृजनात्मक प्रतिभा के लिए पूरी-पूरी गुंजाइश पेश करता है।

जैसा कि परिवर्तन के सभी अवामी आन्दोलनों के बारे में कहा जाता है, छोलिमा आन्दोलन भी पुराने विचारों के विरुद्ध संघर्ष में, कठिनाइयों और बाधाओं को पार कर आगे बढ़ने के दौरान शुरू और विकसित हुआ है। जब हमारे देश में समाजवादी निर्माण उभार के चरण में दाखिल हुआ, श्रमजीवी लोगों के क्रान्तिकारी उत्साह और रचनात्मक सक्रियता को उभारने में जो मुख्य बाधायें सामने आयीं, वे थीं प्रविधि को गूढ़ बनाकर रखने की मनोवृत्ति। समाजवादी निर्माण में निराशावाद और संकीर्णता हमारे बहादुर श्रमिक वर्ग की शक्ति और हमारे लोगों की अथक रचनात्मक भावना और प्रतिभा पर अविश्वास के रूप में अभिव्यक्त हुए। पुरानी मान्यता की क्षमताओं और स्तरों से चिपके रह कर और विज्ञान तथा प्रविधि को रहस्यपूर्ण बताकर निराशावादियों और पुरातनपंथियों ने अवाम की रचनात्मकता को दबाने का प्रयत्न किया। कठिनाइयों से घबराकर और नूतनताओं से डर कर उन्होंने महान जनता के अग्रगामी आन्दोलन को रोकने की कोशिश की। निराशावाद, पुरातनपंथ और प्रविधि को रहस्यमंडित करने की कोशिशों को नाकाम किये बिना हम समाजवादी निर्माण में महान उभार नहीं ला सकते थे और न ही छोलिमा आन्दोलन को विकसित कर सकते थे।

हमारी पार्टी ने निराशावाद और पुरातनपंथ के विरुद्ध कार्यकर्ताओं और श्रमजीवी लोगों में एक सशक्त विचारधारात्मक संघर्ष छेड़ा। दिलेरी से सोचने, दिलेरी से बात करने और लगातार बढ़ाव तथा निर्बाध गति से नये-नये परिवर्तन लाने की क्रान्तिकारी भावना से उन्हें लैस करने के लिए उसने अथक परिश्रम किया। पार्टी को हमेशा जनता की महान रचनात्मक शक्ति में विश्वास रहा है और उसने उसके साहसपूर्ण सुझावों और पहलकदमियों का सक्रिय रूप से समर्थन किया है और उन सुझावों तथा पहलकदमियों को अमली रूप देने के लिए उनकी यथासंभव मदद की है। पार्टी के सही नेतृत्व से असीम प्रेरणा प्राप्त कर हमारे

श्रमजीवी लोगों ने निराशावाद और पुरातनपंथ को धराशायी कर दिया है, बड़ी हिम्मत से सब प्रकार की दिक्कतों को पार किया है और कार्य में ऐसी अनेक सफलताएं हासिल की हैं, जिनकी भूतकाल में कभी कल्पना तक न की जा सकती थी।

जन-समुदाय में समाजवादी निर्माण के लिए उच्च कोटि के श्रम-उत्साह और रचनात्मक सक्रियता को बढ़ावा देने के लिए यह अति महत्वपूर्ण है कि इसे भौतिक प्रोत्साहन के सिद्धान्त के साथ समुचित ढंग से जोड़ते हुए उनकी राजनीतिक और सैद्धांतिक चेतना का स्तर ऊंचा किया जाए।

समाजवादी निर्माण में अवाम के श्रम में वास्तविक उभार और सच्ची सामूहिक वीरता तभी संभव होगी, जब श्रमजीवी लोगों के व्यापक तबके पार्टी और क्रान्ति की वफादारी से सेवा की भावना और देश तथा जनता के लिए संघर्ष में आस्था की भावना से ओतप्रोत हों। जब तक हम अवाम की राजनीतिक जागरूकता और चेतना के स्तर को लगातार ऊंचा नहीं करते, तब तक उनमें काम के प्रति सच्ची कम्युनिस्ट प्रवृत्तियां पैदा नहीं की जा सकतीं।

समाजवाद के अन्तर्गत श्रम करने का राजनीतिक और नैतिक प्रोत्साहन देने के साथ-साथ भौतिक उत्प्रेरक की हमेशा व्यवस्था की जानी चाहिए। किये गये काम के गुण और परिमाण के अनुसार वितरण समाजवादी समाज में एक यथार्थवादी कानून है। यह उन लोगों का विरोध करने का, जो काम नहीं करते और दूसरों के काम पर जिन्दा रहने का यत्न करते हैं, और उत्पादन के लिए श्रमजीवी लोगों के जोश को भौतिक प्रोत्साहन देने का एक सशक्त उपाय है।

हमारी पार्टी ने सब गतिविधियों में राजनीतिक काम को प्राथमिकता देने और श्रमिक लोगों में कम्युनिस्ट शिक्षा को मजबूत बनाने की नीति का सतत अनुसरण किया है, ताकि वे काम में स्वेच्छया उत्साह और निष्ठा का परिचय दें। साथ ही पार्टी ने भौतिक रुचि को तेज करने के लिए वितरण के समाजवादी सिद्धांत का समुचित ढंग से पालन किया है।

इस पार्टी नीति की सत्यता हमारे श्रमिक लोगों के अभूतपूर्व श्रम उभार में साफतौर पर अभिव्यक्त हुई है। आज वे राज्य और समाज के लाभ के लिए, अपनी खुशहाली के लिए, अपनी पूरी शक्ति और प्रतिभा से काम कर रहे हैं। काम से प्यार करना और उसे उच्चतम सम्मान मानना, एक-दूसरे की मदद करना, सामूहिक रूप से काम करना और एक साथ मिलकर सुखद जीवन बिताना, ये शानदार कम्युनिस्ट लक्षण हमारे श्रमजीवी लोगों में तेजी से पैदा किये जा रहे हैं।

जनता की रचनात्मक पहल और काम के लिए उत्साह वस्तुतः तभी कारगर हो सकते हैं, जब वे विज्ञान और प्रविधि से युक्त हों। वैज्ञानिक विकास और तकनीकी प्रगति के बगैर मात्र जन-उत्साह न तो हमें बहुत दूर ले जाता है और न ही

निरन्तर नये परिवर्तनों को प्रोत्साहित करता है।

विज्ञान और प्रविधि के तीव्र गति से विकास के लिए, मेहनतकशों के व्यापक समुदायों का सक्रिय योगदान जरूरी है और मजदूरों, किसानों, वैज्ञानिकों और तकनीशियनों के बीच रचनात्मक सहयोग को मजबूत बनाया जाना चाहिए। हमने इस गलत दृष्टिकोण को पूर्णतया ठुकरा दिया है कि के ।ल विशिष्ट योग्यता प्राप्त लोग ही विज्ञान और प्रविधि को विकसित कर सकते हैं। हमने नयी तकनीकी जानकारी ग्रहण करने के लिए मेहनतकशों में एक जन आन्दोलन चलाया है और उन्हें सतत तकनीकी नूतनताएं लाने के लिए प्रेरित किया है। प्रविधि के विकास के मामले में हमने मजदूरों और किसानों के रचनात्मक सुझावों और पहलकद-मियों का मूल्य कम आंकने की प्रवृत्ति का प्रबल विरोध किया है, और साथ ही विज्ञान के महत्व और वैज्ञानिकों की भूमिका की अनदेखी करने की प्रवृत्ति के विरुद्ध कड़ी सावधानी बरती है। हमने हमेशा श्रम और विज्ञान को संयुक्त करने तथा मजदूरों एवं किसानों और वैज्ञानिकों एवं तकनीशियनों के बीच गहरे सह-योग को बढ़ावा देने की कोशिश की है। चूंकि श्रमजीवी जन-समुदाय विज्ञान और प्रविधि की जानकारी ग्रहण करते जा रहे हैं और मजदूरों एवं किसानों और वैज्ञानिकों तथा तकनीशियनों के बीच सहयोग सुदृढ़ हो गया है, इसलिए विज्ञान और प्रविधि हमारे देश में तीव्रतर गति से विकसित हुई हैं और राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के तमाम क्षेत्रों में प्राविधिक परिवर्तनों के लिए एक सामूहिक आन्दोलन व्यापक रूप से शुरू कर दिया गया है।

इसका नतीजा यह हुआ है कि हमारे लोगों की सारी विद्वता, प्रतिभा, उत्साह और रचनात्मक शक्ति, जो पहले कुचल दी गयी, अपमानित की गयी और दबा दी गयी थी, अब छोलिमा आन्दोलन में पनप रही है और उन्होंने हमारे अर्थतन्त्र एवं संस्कृति के निर्माण में निर्बाध नये-नये परिवर्तन किये हैं।

छोलिमा आन्दोलन का मुख्य राजनीतिक और आर्थिक महत्व सर्वप्रथम इस तथ्य में छिपा है कि उसने समाजवादी निर्माण की ऊंची गति को आश्वस्त किया है।

आर्थिक प्रगति की उच्च गति समाजवादी समाज का एक नियम है और इसमें राष्ट्रीय अर्थतन्त्र का सुनियोजित और अनुपातीय विकास पूर्व-कल्पित होता है। यदि हम आर्थिक विकास में नियोजन और संतुलन के सिद्धान्तों का उल्लंघन करते हैं तो भारी परिमाण में सामग्री, धन और श्रम व्यर्थ जाएंगे और आम आर्थिक विकास की गति अन्ततोगत्वा धीमी पड़ जाएगी, यद्यपि हो सकता है कि कतिपय शाखाएं अस्थायी रूप से विकास की उच्च गति प्राप्त कर लें।

हमने राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के नियोजित और अनुपातीय विकास के आधार पर

अपने देश में समाजवादी निर्माण की उच्च गति प्राप्त की। इसी कारण हम बढ़ोत्तरी की निरन्तर उच्च दर को मजबूती से बनाये रख सके और पूरे पंचवर्षीय योजनाकाल में सभी क्षेत्रों में समाजवादी निर्माण को और भी तेज कर सके।

आर्थिक विकास की गति कितनी भी ऊंची क्यों न हो, तब तक असमानताएं कदापि न होंगी, जब तक वह पूर्णतः यथार्थवादी संभावनाओं पर आधारित रहेगा। निस्सन्देह तेजी से आगे बढ़ते हुए स्थिति को सन्तुलित बनाये रखना नितान्त कठिन है। लेकिन समानता बनाये रखने के प्रयोजन से विकास की दर में कमी न की जानी चाहिए। नियोजन और सन्तुलन कोई साध्य नहीं हैं, बल्कि वे तो विकास की उच्च दर प्राप्त करने के साधन मात्र हैं। इसलिए यह जरूरी है कि हम समाजवादी प्रणाली के फायदों और जनता की रचनात्मक शक्ति पर निर्भर रह कर और अपने राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की क्षमताओं और छिपे भण्डारों का अधिकतम उपयोग कर, तीव्र गति से सब शाखाओं का एक साथ विकास करें। समाजवादी निर्माण के अपने काम में हमने भौतिक स्थितियों और संभावनाओं का हमेशा सही-सही आकलन किया है और कठिन संघर्ष में तपे अपने लोगों के क्रान्तिकारी जोश और रचनात्मक शक्तियों पर भरोसा किया है। इस आधार पर हमने लगातार महत्वाकांक्षी और गतिशील योजनाएं तैयार की हैं और जनता को उन्हें पूरा करने के लिए लामबंद किया है।

साथ ही हमारी पार्टी ने राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की सभी शाखाओं के विकास को समुचित रूप से संयुक्त किया और पर्याप्त रूप से समन्वित किया, इस तरह समय रहते पिछड़ी हुई शाखाओं को आगे बढ़ाया और संभावित असंतुलनों को रोका। हमारी पार्टी ने १९६० के साल को समायोजन काल की संज्ञा दी। राष्ट्रीय अर्थतन्त्र में सही सन्तुलन की प्राप्ति और विकास की उच्चतर दर को बनाये रखने का यह एक नितान्त विवेकपूर्ण और उचित तरीका था। १९६० में हमने राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के त्वरित विकास की प्रक्रिया में कुछ शाखाओं द्वारा अनुभव किये गये दबाव को घटाया, कतिपय पिछड़ी शाखाओं को बढ़ावा दिया और अपने लोगों के भौतिक तथा सांस्कृतिक स्तरों को और ऊंचा किया। इस तरह हमने समस्त शाखाओं में पंचवर्षीय योजना के लक्ष्यों को पूरा किया या लक्ष्यों से भी आगे बढ़ोत्तरी प्राप्त की और नयी संभावित योजना की सफलतापूर्ण सम्पन्नता के लिए पूरी तैयारियां कीं। इससे हम समाजवादी निर्माण में उभार को बनाये रखने तथा और आगे बढ़ाने में समर्थ रहे। इसने हमें छोलिमा प्रगति को एक उच्चतर स्तर पर जारी रखने के योग्य बनाया।

साथियो,

छोलिमा आन्दोलन में हमारी पार्टी ने अपने देश में समाजवाद के सफलता-

पूर्वक निर्माण की एक निश्चित गारण्टी पायी। उसने इस आन्दोलन की बागडोर दृढ़तापूर्वक हाथों में पकड़े रखी और उसकी परिधि तथा गहराई को लगातार विकसित किया।

उत्पादक सम्बन्धों के समाजवादी परिवर्तन के पूर्ण होने के बाद और निराशावाद, पुरातनपंथ और रहस्यवाद सरीखे सभी बोसीदा विचारों के अवशेषों के विरुद्ध अखिल दलीय संघर्ष के दौरान छोलिमा आन्दोलन ने गति प्राप्त की। इसे अवाम में कम्युनिस्ट शिक्षण में तेजी और पार्टी कार्य के लोगों के साथ सक्रिय, रचनात्मक कार्य में आमूल कायाकल्प के दौरान विशेष बढ़ावा दिया गया।

तमाम लोगों को शिक्षित करने और नये सिरे से ढालने और उन्हें अपने इर्द-गिर्द मजबूती से एकजुट करने को पार्टी कार्य में प्राथमिक कर्तव्य मानते हुए हमारी पार्टी ने हर तरह से लोगों के साथ अपने कार्य को सुदृढ़ किया। सबसे बढ़कर उसने अवाम में व्यापक कम्युनिस्ट शिक्षा फैलायी जोकि क्रान्तिकारी परम्पराओं में शिक्षण के साथ संबद्ध थी। चूंकि जनता ने समस्त लोगों को शिक्षित और दीक्षित करने की पार्टी नीति को स्वीकार कर लिया था, अतः मनुष्यों को नये सिरे से ढालने का काम स्वतः जनता ने अपने हाथों में लिया और उसे उनकी उत्पादक गतिविधियों के साथ अत्यंत प्रगाढ़ता के साथ जोड़ दिया गया।

छोलिमा कार्यदल आन्दोलन का, जो हमारे मेहतनकशों में अब व्यापक रूप से फैल गया है, मुख्य पहलू यह है कि यह उत्पादन में सामूहिक नूतन परिवर्तन के अभियान को श्रमजीवी लोगों को शिक्षित और दीक्षित करने के काम के साथ जोड़ता है।

छोलिमा आन्दोलन के सघन और विकसित रूप के बतौर छोलिमा कर्मीदल आन्दोलन राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के विकास के लिए एक सशक्त बढ़ावा और श्रमजीवी लोगों द्वारा जन आर्थिक प्रबंध की एक आदर्श विधि बन गया है। साथ ही यह प्रत्येक को नयी किस्म के कम्युनिस्ट मनुष्य के रूप में नये सिरे से ढालने के लिए शिक्षा का एक शानदार साधन बन गया है। हमारे छोलिमा अश्वारोही के दल उत्पादन में नयी-नयी चीजों का आविष्कार ही नहीं करते, बल्कि वे योग्य प्रबंधदर्शी, कुशल संगठनकर्ता और सच्चे कम्युनिस्ट शिक्षक भी होते हैं।

हमारे देश में इस समय, उद्योग, कृषि, परिवहन, निर्माण, विज्ञान, शिक्षा, संस्कृति, सार्वजनिक स्वास्थ्य आदि सभी क्षेत्रों में छोलिमा कार्यटोली आन्दोलन चालू है और छोलिमा सवारों—हमारे युग के नायकों की पांत, दिनों-दिन बढ़ रही है। इस वर्ष अगस्त के अन्त में २० लाख से अधिक श्रमजीवी लोग आन्दोलन में शामिल हो चुके थे। १,२५,०२८ लोगों पर आधारित ४,६५८ कर्मीदलों और कर्मशालाओं को छोलिमा का खिताब मिल चुका था और १,४३९ लोगों के

५५ कर्मीदल युगल छोलिमा की उपाधि से विभूषित किये जा चुके थे।

इस तरह अर्थतन्त्र, संस्कृति, विचारधारा और नैतिकता के तमाम क्षेत्रों से हर बोसीदा तत्व का सफाया कर और निरन्तर नूतन परिवर्तन कर तथा अभूतपूर्व गति पर समाजवादी निर्माण को तेज कर छोलिमा आन्दोलन हमारे देश के लाखों श्रमजीवियों का एक महान क्रान्तिकारी आन्दोलन बन गया है। यह आन्दोलन समाजवाद के निर्माण में हमारी पार्टी की आम धारा बन गया है।

तमाम श्रमजीवी लोगों को कम्युनिस्ट विचारधारा में शिक्षित और दीक्षित कर उन्हें पार्टी के इर्द-गिर्द और मजबूती से एकजुट करना और उनके क्रान्तिकारी उत्साह तथा रचनात्मक योग्यता को पूर्ण अभिव्यक्ति का मौका देकर अधिक ठोस और तेज गति से समाजवाद का निर्माण करना—ये इस धारा का निचोड़ है। इस धारा की अटूट क्षमता इस तथ्य में छिपी है कि जनता ने इसकी शुरूआत की, पार्टी ने अवाम के संकल्प को प्रतिबिम्बित करते हुए तथा संघर्ष में उनके व्यावहारिक अनुभव का दृष्टान्त बना कर इस धारा को पेश किया, और इस कारणवश जन समुदाय ने इसे तहे दिल से स्वीकार किया।

इस धारा के बूते पर हमारी पार्टी ने समाजवादी निर्माण में महान विजय प्राप्त की है। इसका अनुसरण जारी रखते हुए पार्टी भविष्य में और भी बड़ी विजय हासिल करेगी।

४ : राज्य और समाज व्यवस्था का सुदृढ़ीकरण

साथियो,

हमारे देश में हुए महान सामाजिक, आर्थिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप जन-सत्ता और अधिक मजबूत हुई है और हमारी राज्यीय तथा सामाजिक प्रणाली इतनी सुदृढ़ हुई है जितनी कि पहले कभी नहीं हुई।

समाजवादी क्रान्ति और समाजवाद के निर्माण के एक सशक्त हथियार, हमारी जन-सत्ता ने अपने कर्तव्यों को अच्छी तरह पूरा किया है और अपनी अविनश्वर क्षमता को प्रदर्शित किया है। आज हमारे राज्य का आधार समाजवादी आर्थिक प्रणाली है, जिसका शहरों और गांवों में पूर्ण सर्वस्व है। हमारा राज्य स्वतन्त्र राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की बुनियाद पर निर्भर है। जन-सत्ता का अपना मजबूत आधार है और वह लोगों के कल्याण के लिए तथा राष्ट्रीय खुशहाली के लिए देश के तमाम साधनों का अधिक कारगर ढंग से उपयोग कर सकती है।

हमारे समाज के वर्ग ढांचे में भी एक बुनियादी परिवर्तन आया है।

हमारे समाज की नेतृत्वकारी शक्ति के रूप में मजदूर वर्ग ने अपनी स्थिति को दृढ़तापूर्वक बनाये रखा है। समीक्षाधीन अवधि के दौरान श्रमजीवी वर्ग की पांतों में तेजी से बढ़ोत्तरी हुई है, उनके संगठन और राजनीतिक चेतना को सुदृढ़ किया गया है तथा उनके प्राविधिक और सांस्कृतिक स्तरों को और भी ऊंचा कर दिया गया है।

आज हमारे देश में कारखानों और कार्यालय कर्मचारियों की संख्या कुल आबादी का ५२ प्रतिशत है। सत्ता को अपने हाथों में लेकर हमारे मजदूर वर्ग ने तमाम श्रमजीवी लोगों और गैर-श्रमजीवी लोगों को भी समाजवाद के पथ पर नेतृत्व करने में अथक जुझारू भावना और क्रान्तिकारी ओजस्विता का परिचय दिया है। इस तरह उसने शोषण की तमाम पद्धतियों का हमेशा-हमेशा के लिए उन्मूलन करने हेतु अपने ऐतिहासिक दायित्व को सम्मानजनक ढंग से सम्पन्न किया है। अपनी अक्षय सृजनात्मक शक्ति और प्रतिभा को प्रकट करते हुए हमारे मजदूर वर्ग ने समाजवादी निर्माण में चमत्कारपूर्ण सफलताएं प्राप्त की हैं और वह अब समूची जनता के छोलिमा आन्दोलन के आगे-आगे बढ़ता जा रहा है।

किसान अब सामूहिक समाजवादी अर्थतन्त्र में भाग लेते हैं और उन्होंने स्वयं को सदियों के शोषण और गरीबी से हमेशा-हमेशा के लिए मुक्त कर लिया है। समाज और अर्थतन्त्र में किसानों की स्थिति में न केवल परिवर्तन हुआ है, बल्कि उनकी विचारधारात्मक चेतना भी काफी बदल गयी है और उनका सांस्कृतिक स्तर तेजी से ऊंचा हो रहा है। आज समाजवादी निर्माण में श्रमिक वर्ग का एक विश्वसनीय मित्र—किसान—एक मजबूत शक्ति बन गया है और उसने सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन के तमाम क्षेत्रों में उच्च कोटि का देशभक्तिपूर्ण उत्साह प्रदर्शित किया है।

हमारे बुद्धिजीवी भी आमूलचूल बदल गये हैं। यह हमारी पार्टी के धैर्यपूर्ण शिक्षण और क्रान्ति तथा निर्माण के संघर्षों का ही करिश्मा है कि पुराने समाज से आये बुद्धिजीवी समाजवादी बुद्धिजीवियों में परिणत हो गये हैं। साथ ही मेहनतकश जनता से नये बुद्धिजीवियों की एक विशाल फौज प्रशिक्षित की गयी है। आज हमारे बुद्धिजीवी वफादारी से पार्टी और श्रमिक वर्ग की सेवा करते हैं और समाजवादी निर्माण में एक बहुत बड़ी भूमिका निभाते हैं।

अब हमारे देश में न कोई शोषक वर्ग है और न ही कोई शोषित। समाजवादी आर्थिक प्रणाली में भाग लेते हुए हमारे तमाम लोगों ने एक-दूसरे के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित कर लिये हैं। वे अपने समान हितों और सुख-समृद्धि के लिए गहरे सहयोग से मिलकर काम करते हैं। समाजवाद की नींव पर मजदूर-किसान गठबंधन और भी अधिक ठोस हो गया है। इस गठबंधन के आधार पर

हमारी समूची जनता की राजनीतिक और नैतिक एकता इस्पात की तरह मजबूत हो गयी है।

इस तरह हमारी जन-सत्ता ने एक ऐसी सुदृढ़तर राजनीतिक बुनियाद कायम कर ली है, जैसी कि पहले कभी न थी।

जन-सत्ता सफलतापूर्वक काम कर सके, इसके लिए हमें प्रत्येक स्तर पर राज्य के अंगों को निरन्तर मजबूत बनाना होगा और राज्य के काम में बराबर सुधार लाना होगा। समीक्षाधीन काल में नयी परिवर्तनशील वास्तविकताओं के अनुरूप इन अंगों के कार्य को पुनर्गठित करने और समाजवादी निर्माण में उनकी भूमिका और कामकाज में बढ़ोत्तरी लाने के उद्देश्य से हमने एक के बाद एक कई महत्वपूर्ण पग उठाये।

उत्पादन के समाजवादी सम्बन्धों की पूर्ण विजय और राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की तमाम शाखाओं को राज्य नियोजन-प्रणाली के अन्तर्गत लगाये जाने के बाद अर्थ-तन्त्र की व्यवस्था के संदर्भ में राज्य के अंगों, खासतौर पर स्थानीय जन-समितियों के कार्य को बढ़ाने और उनके नियोजन स्तर को ऊंचा करने के काम सर्वाधिक महत्वपूर्ण थे। भूतकाल में, जन-समितियों का काम मुख्यत: निजी अर्थतन्त्र से ही सम्बद्ध था और ज्यादा-से-ज्यादा उसके विकास को नियन्त्रित और व्यवस्थित करने की भूमिका निभाता था। लेकिन समाजवादी अर्थतन्त्र का निर्देशन इस ढंग से नहीं हो सकता। नयी स्थिति का तकाजा था कि जन-समितियां नियोजित ढंग से स्थानीय उद्योग और ग्रामीण अर्थव्यवस्था का पथ-प्रदर्शन करें और वे मेहनत-कश लोगों की आपूर्ति सेवाओं, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक कार्य तथा नगर प्रशासन का प्रत्यक्षत: संगठन और प्रबंध करें। जन-समितियां इन आर्थिक-संगठनात्मक और सांस्कृतिक-शैक्षणिक कामों का सफलतापूर्वक संचालन कर सकें, इसे दृष्टि-गत रखते हुए हमने जन-समितियों के कार्य का पुनर्गठन किया, निजी अर्थतन्त्र के निर्देशन की पूर्ववर्ती-प्रणाली को समाजवादी अर्थतन्त्र के मार्गदर्शन की प्रणाली में बदला। इसके अतिरिक्त हमने स्थानीय जन-समितियों के योजना आयोगों को और मजबूत बनाया।

इसके अलावा चूंकि उद्योग का विशाल पैमाने पर विस्तार किया गया था और खासतौर पर स्थानीय उद्योग ने महान प्रगति कर ली थी, इसलिए औद्योगिक प्रबन्ध की पुरानी प्रणाली वास्तविकता से बेमेल हो गयी थी। उद्योग के राजकीय अंगों के मार्गदर्शन को स्थानीय स्तर के निकटतर लाने और ठोस तथा लचीले मार्गदर्शन की गारंटी करने के लिए यह जरूरी था कि केन्द्रीय मन्त्रालयों और विभागों को उनके दायित्वों के एक बड़े भाग से मुक्त किया जाए और निश्चत रूप से औद्योगिक प्रबन्ध के स्थानीय निकायों को सुदृढ़ किया जाए।

अतः हमारी पार्टी ने इस ओर ध्यान दिया कि काफी संख्या में औद्योगिक निकाय, जो पहले सीधे केन्द्रीय मन्त्रालयों और विभागों द्वारा नियन्त्रित किये जाते थे, प्रान्तों को हस्तान्तरित किये जाएं और स्थानीय उद्योग तथा निर्माण का प्रबन्ध करने के लिए प्रान्तीय आर्थिक आयोग स्थापित किये जाएं। इसके साथ ही हमने कुछ मन्त्रालयों और विभागों के ढांचे को सरल बनाते हुए उनका विलय किया, और भारी संख्या में प्रबन्ध और तकनीकी कर्मचारियों को स्थानीय क्षेत्रों में काम करने के लिए भेजा। औद्योगिक प्रबन्ध प्रणाली के पुनर्गठन का परिणाम औद्योगिक प्रबन्ध में केन्द्रीयकृत, ऐक्यबद्ध मार्गदर्शन के सुदृढ़ीकरण और साथ ही प्रान्तों की भूमिका में वृद्धि और लोकतन्त्र की उन्नति के रूप में सामने आया। इस पुनर्गठन ने एक ओर तो मन्त्रालयों और विभागों को लम्बे कागजी काम से मुक्ति दिला कर राष्ट्रीय महत्व के औद्योगिक निकायों पर नियन्त्रण के लिए अपने प्रयासों के केन्द्रित करने में समर्थ बनाया, और दूसरी ओर इसने औद्योगिक प्रबन्ध के स्थानीय निकायों को मजबूती प्रदान कर उन्हें स्थानीय उद्योग के और अधिक तेजी से विकास में योगदान करने की क्षमता दी। प्रान्तीय आर्थिक आयोगों की स्थापना ने प्रान्तों की स्वतन्त्रता और पहल को विस्तार दिया और कच्चे मालों के स्थानीय साधनों तथा दूरस्थ क्षेत्रों में छिपे समस्त भण्डारों के आर्थिक प्रभावशाली उपयोग को संभव बनाया।

राज्य निकायों को सुदृढ़ बनाने के लिए कर्मीदल के मार्गदर्शन-स्तर को ऊंचा करना और काम करने की उनकी शैली में सुधार लाना महत्वपूर्ण है।

ऐसी स्थिति का अन्त करने के लिए जिसमें हमारे कार्यकर्ताओं का मार्ग-दर्शन स्तर आर्थिक विकास की गति से पिछड़ा हो, हमने कार्यकर्ताओं के निर्माण और शिक्षण, दोनों को ही तेज किया और उच्चतर निकायों द्वारा निचले निकायों के पथ-प्रदर्शन तथा सहायता को सुदृढ़ किया है। साथ ही हमने नौकरशाही के उन्मूलन और तमाम स्तरों पर राज्यीय निकायों में काम की लोकप्रिय पद्धति की स्थापना के लिए लगातार एक जोरदार संघर्ष किया है। आज तमाम राज्यीय निकायों में, जहां कार्यकर्ता केवल अपनी डेस्कों पर बैठते हैं, पेचीदे आंकड़े एकत्र करते हैं और विभिन्न आज्ञाएं जारी करते हैं, हमने आवश्यक रूप से नौकरशाही के और आरामकुर्सी पर बैठे-बैठे काम करने के तौर-तरीकों को सुधार दिया है। इसके स्थान पर हम काम करने की इस पद्धति को लागू कर रहे हैं कि यह देखने के लिए कि मौके पर क्या हालत चल रही है, निचले स्तर के संगठनों, कारखानों और उद्यमों में जाया जाए और निचले निकायों के कार्यकर्ताओं को वास्तविक मदद दी जाए। इसके अतिरिक्त राज्यीय और आर्थिक निकायों में हमारे अहल-कार काम करने की वस्तुतः लोकप्रिय शैली को ग्रहण कर रहे हैं। वे अवाम के

बीच जाते हैं और उनके साथ काम करते हैं, उस समय अपने साथ वे पार्टी के दृष्टि-कोण तथा नीतियों को ही रखते हैं और तमाम समस्याओं को सीधे अवाम के साथ वाद-विवाद कर और उनके उत्साह तथा पहल को प्रखर बनाकर सुलझाते हैं।

परिणामस्वरूप समाजवाद के निर्माण में तमाम स्तरों पर राज्यीय निकायों की भूमिका और कर्तव्य बढ़े हैं, राजकीय निकायों ने लोगों को गहराई से प्रभावित करना शुरू कर दिया है और मेहनतकश लोगों के व्यापक तबके राज्य के मामलों में सक्रिय भाग ले रहे हैं।

साथियो, जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया समान कोरियाई जनता की वास्तविक मातृभूमि है और उसे उनका निःशेष समर्थन और प्यार प्राप्त है। हमारा राज्य सच्चा जन राज्य है, जो लोगों को न केवल राजनीतिक स्वतन्त्रता और अधिकारों की गारंटी देता है बल्कि एक समृद्ध भौतिक तथा सांस्कृतिक जीवन की भी गारंटी देता है। हमारा राज्य सर्वाधिक लोकतन्त्री और स्थिर है। जनता ने इसे स्थापित किया; मजदूर वर्ग इसका नेतृत्व करता है; वह मजदूर-किसान मैत्री पर आधारित तमाम जनता की एकजुट संयुक्त शक्ति पर निर्भर करता है; और यह राज्य के मामलों में अपने आम अवाम के विशाल बहुमत को शामिल करता है।

हमारी जनता गणतन्त्र की समृद्धि और विकास में ही अपनी भावी स्वतन्त्रता और सुख-समृद्धि देखती है और उसे इसकी अजेयता में अटूट आस्था है। हमारे मेहनतकश लोगों को पूर्ण विश्वास है कि वे अपने वतन की धरती पर समाजवाद और कम्युनिज्म का स्वर्ग निर्मित कर सकते हैं, और वे अपने देश की स्थायी खुशहाली के लिए संघर्ष में अपनी सारी शक्ति और प्रतिभा लगा रहे हैं। हमारी जनता गणतन्त्र की राजनीतिक, आर्थिक और फौजी शक्ति को और सुदृढ़ बना कर किसी भी साम्राज्यवादी हमले को निर्णयात्मक रूप से कुचलने, अपने देश की स्वतन्त्रता और गौरव की रक्षा करने और अपनी विभक्त धरती का पुनरेकीकरण करने को दृढ़संकल्प है।

हमारे गणतन्त्र की खुशहाली और विकास का दक्षिण कोरियाई लोगों पर, जो अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके पिट्ठुओं के निर्मम दमन और शोषण के अन्तर्गत कष्ट भोग रहे हैं, एक सशक्त क्रान्तिकारी असर पड़ता है। उत्तर और दक्षिण कोरिया की स्थिति में जबर्दस्त फर्क से दक्षिण कोरियाई लोगों को और भी स्पष्ट रूप से यह अहसास हो रहा है कि वे तभी सच्ची स्वाधीनता और खुशहाली हासिल कर सकते हैं, जब वे विदेशी साम्राज्यवादी दासता से पूर्णतया आजाद हों. और जब वे सत्ता को अपने हाथों में ले लें। दक्षिण कोरिया के लोग अपना उज्ज्वल भविष्य हमारे गणतन्त्र की सुख-समृद्धि और विकास में ही प्रतिबिम्बित होता

देखते हैं और वे उसकी बढ़ती शक्ति से असीम बल और साहस प्राप्त कर रहे हैं। हमारे गणराज्य को देश के पुनरेकीकरण के लिए मजबूत अड्डा मानते हुए वे अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनकी कठपुतलियों के खिलाफ और भी मजबूती से लड़ते हैं।

जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया विदेशों में रहने वाले सभी कोरियाई नागरिकों पर जबर्दस्त असर डाल रहा है। अपना कोई देश न होने के कारणवश भारी संख्या में कोरियाइयों को पहले विदेशों में राष्ट्रीय भेदभाव और हर प्रकार के अपमान का शिकार होना पड़ा और वे अधिकारों के पूर्ण अभाव और कंगाली से उत्पीड़ित होते रहे। लेकिन आज एक गौरवशाली स्वतन्त्र राज्य के नागरिक होने के नाते वे अपने अधिकार जतला सकते हैं और साथ ही सुखपूर्वक रहने के लिए अपने वतन की गोदी में लौट आ सकते हैं। पहले ही जापान से हमारे दसियों हजार देशवासी गणराज्य में लौट चुके हैं और हर असुविधा या परेशानी से आजाद होकर आबाद हो चुके हैं और अभी तक वहां से और लोग यहां आ रहे हैं।

ये तमाम तथ्य प्रकट करते हैं कि समस्त कोरियाई लोगों का यशस्वी वतन, जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया उनकी आजादी और खुशहाली का परचम बन चुका है और उसका प्रभाव निरन्तर बढ़ रहा है।

करीब आधी सदी तक कोरियाई लोग अपने देश से वंचित रहे। आज हमारे लोगों के पास अपना एक शक्तिशाली देश है—ऐसा देश है जो अभूतपूर्व सुख-समृद्धि के दौर से गुजर रहा है। हमारे लोगों को अपनी मातृभूमि, जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया पर बेहद गर्व है और वे उसके नागरिक होने को एक बड़ा सम्मान मानते हैं।

अब जब कि कोरियाई लोग गणतन्त्र के झंडे तले एकजुट हो गये हैं, कोई भी ताकत उनकी शक्ति को तोड़ नहीं सकती या उन के बढ़ाव को रोक नहीं सकती।

२ : दूरगामी संभावनाएं

१ : सातवर्षीय योजना के बुनियादी कर्तव्य

साथियो,

हमारे देशवासियों के लिए, जो पहले ही एक नये समाज के निर्माण में शानदार सफलताएं प्राप्त कर चुके हैं विशाल नये क्षितिज खुल रहे हैं। असीम गौरव की विजयी भावना के साथ, भविष्य की महान आशाओं के साथ, हमारे तमाम

मेहनतकश लोगों ने राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के विकास की सातवर्षीय योजना की सम्पन्नता के लिए आगे कदम बढ़ाया है। हमारे देश के समाजवादी निर्माण में यह सात वर्ष एक निर्णायक काल होंगे।

सातवर्षीय योजना के बुनियादी काम हैं, विजयी समाजवादी प्रणाली का सहारा लेते हुए व्यापक प्राविधिक पुर्ननिर्माण और सांस्कृतिक क्रान्ति सम्पन्न करना और जन-जीवन की स्थितियों में आमूलचूल परिवर्तन लाना। हमें समाजवादी उद्योगीकरण को पूरा करना होगा, राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की तमाम शाखाओं को आधुनिक प्रविधि से लैस करना होगा और सारी आबादी के भौतिक और सांस्कृतिक स्तरों को निर्णायक रूप से ऊंचा करना होगा। इस तरह हम समाजवाद के उच्च शिखर को पहुंच पाएंगे।

अपनी पार्टी के नेतृत्व में हमारी जनता ने थोड़े से समय में अपने समाज और अर्थतन्त्र में ऐतिहासिक परिवर्तन किये हैं तथा शोषण और दमन से मुक्त एक समाजवादी व्यवस्था निर्मित की है। लेकिन समाजवाद की पूर्ण विजय के लिए ये उपलब्धियां पर्याप्त नहीं हैं। हमें देश का पूर्ण उद्योगीकरण कर और प्राविधिक क्रान्ति लाकर समाजवाद के लिए एक सुदृढ़ भौतिक और प्राविधिक बुनियाद कायम करनी होगी।

प्राविधिक क्रान्ति—यह एक महत्वपूर्ण क्रान्तिकारी कर्तव्य है, जो शोषण से मुक्त हमारे देशवासियों को कड़ी मेहनत से राहत दिलाएगी और सरलता से काम करते हुए उन्हें अधिक भौतिक सम्पदा पैदा करने के योग्य बनाएगी और उनके लिए प्रचुरता के साथ अधिक सुसंस्कृत जीवन आश्वस्त करेगी। तकनीकी क्रान्ति हमारे देश में—एक ऐसे देश में जिसे अतीत से पिछड़ी हुई उत्पादक शक्तियां विरासत में मिली हैं, एक नयी समाज-व्यवस्था की अन्ततः विजय के सर्वाधिक निर्णायक प्रश्न को हल कर देगी।

पंचवर्षीय योजना की सम्पन्ता के साथ हमारे देश ने एक स्वतन्त्र उद्योग के निर्माण और राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के प्राविधिक पुर्ननिर्माण की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया। लेकिन इसका यह अर्थ है कि हमने केवल उद्योगीकरण की बुनियाद रखी है और तकनीकी क्रान्ति की दिशा में मात्र प्रारम्भिक पग उठाये हैं। इस तरह सातवर्षीय योजना के मूल कर्तव्य हैं समाजवादी पुर्ननिर्माण की सम्पन्नता और राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के तमाम क्षेत्रों में सर्वांग प्राविधिक क्रान्ति की क्रियान्विति। हमें उद्योग का तेजी से विकास जारी रखना होगा और कृषि समेत राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की सभी शाखाओं को नवीनतम प्रविधि से लैस करना होगा। और इस तरह अपने देश को आधुनिक उद्योगों तथा समुन्नत कृषि के साथ एक समाजवादी औद्योगिक देश में बदलना होगा।

राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के सर्वांग प्राविधिक पुनर्निर्माण का तकाजा है कि वैज्ञानिक तथा तकनीकी कार्यकर्ता और ज्यादा हों और मेहनतकश जनता के सांस्कृतिक और तकनीकी स्तर ऊंचे हों। तकनीकी और सांस्कृतिक क्रान्तियां एकदूसरे से घनिष्ठ रूप में सम्बद्ध हैं और बगैर दूसरी के, हम पहली की सफलतापूर्वक क्रियान्विति की प्राय: अपेक्षा नहीं कर सकते। यद्यपि देश के सांस्कृतिक पिछड़ेपन को दूर करने में महत्वपूर्ण सफलताएं प्राप्त हुई हैं, फिर भी इस क्षेत्र में भी क्रान्ति को निरन्तर आगे बढ़ाना होगा। हमें वैज्ञानिक और तकनीकी कार्यकर्ताओं की पांतों में बहुत विस्तार करना होगा। हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि तमाम मेहनतकश लोग आधुनिक यन्त्रों के दक्षतापूर्वक संचालन की जानकारी और कौशल प्राप्त करें और हमें भावी पीढ़ी को शिक्षित करना होगा, ताकि वह कम्युनिज्म के सौष्ठवपूर्ण और दक्ष निर्माता हों।

आखिरकार समाजवादी निर्माण का उद्देश्य तमाम लोगों के लिए एक भरे-पूरे और सांस्कृतिक जीवन को आश्वस्त करना ही है। हमारी पार्टी ने शोषण और गरीबी के सामाजिक स्रोत का अन्त कर दिया और उत्पादक शक्तियों को विकसित किया, इस तरह उसने हमारी जनता के भौतिक जीवन की सबसे बुनियादी समस्या को हल कर दिया। अब हमारा काम उसके आम जीवनस्तर को समाजवादी समाज के यथोचित उच्च स्तर तक ले जाना है। सातवर्षीय योजना के पूर्वार्घ में मेहनतकश लोगों की सुख-सुविधा में बेहतरी के लिए ही हमें प्रयासरत होना चाहिए। उत्तरार्ध में हमें इस पर गम्भीरतापूर्वक ध्यान देना जारी रखना चाहिए ताकि ६ या ७ वर्षों में तमाम लोग हर दृष्टि से सुखी-संपन्न हो सकें।

गणतन्त्र के उत्तरी आधे भाग में समाजवादी निर्माण कोरियाई क्रान्ति की राष्ट्रव्यापी विजय के लिए निर्णायक पहलू है। राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के विकास के लिए सातवर्षीय योजना की सम्पन्नता उत्तरी आधे भाग में स्थापित क्रान्तिकारी अड्डे को एक अजेय शक्ति के रूप में और विकसित करेगी और वह देश के शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण को बढ़ावा देने में निर्णायक होगा। इस योजना की पूर्णता न केवल उत्तरी आधे भाग में हमारे लोगों के खुशहाल भौतिक और सांस्कृतिक जीवन के लिए एक पर्याप्त बुनियाद कायम करेगी, बल्कि दक्षिण कोरिया के ध्वस्त अर्थतन्त्र के पुनर्वास के लिए स्वतन्त्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की नींव को और सुदृढ़ बनाएगी तथा उसकी जनता को भविष्य में अकाल और गरीबी से मुक्त करेगी।

सातवर्षीय योजना के ऐतिहासिक कर्तव्यों को पूरा करने के लिए हमें उपभोक्ता उद्योग और कृषि को विकसित करने और विज्ञान तथा संस्कृति को पूर्णत: विकसित करने के साथ-साथ भारी उद्योग की वृद्धि को प्राथमिकता देने की पार्टी

की नीति का अनुसरण जारी रखना होगा। युद्धोत्तर काल में हमने इस नीति को सफल बनाने के लिए तमाम मुश्किलों को पार किया और मलबे पर राष्ट्रीय अर्थ-तन्त्र की बुनियाद कायम की, उसे और सुदृढ़ किया और लोगों के भौतिक तथा सांस्कृतिक जीवन में भारी सुधार किया। भविष्य में भी हमें इस दृष्टिकोण का दृढ़तापूर्वक पालन करना होगा। इस तरह हम पूर्णरूपेण प्राविधिक नूतनता ला सकेंगे, राष्ट्रीय अर्थतन्त्र का फलना-फूलना संभव बना सकेंगे और लोगों के जीवन-स्तर को तेजी से ऊंचा उठा सकेंगे।

समाजवादी निर्माण में एक और लम्बी छलांग के लिए हमें अपने बढ़ाव की तेज रफ्तार को बनाये रखना होगा और इस से भी ज्यादा तीव्रता से आगे बढ़ना होगा। हमारी वास्तविकताएं इसका तकाजा करती हैं, क्योंकि देश आर्थिक और प्राविधिक रूप से अब भी पिछड़ा हुआ है, और हमारे देश की स्थिति का यही तकाजा है, क्योंकि उसका दक्षिणी आधा भाग अभी भी अमरीकी साम्राज्य-वादियों के कब्जे में है। हमारे लोग नये जोश के साथ गणतन्त्र के उत्तरी आधे भाग में समाजवादी निर्माण को तेज करने का प्रयत्न कर रहे हैं। वे एक सजीव नरक—दक्षिण कोरिया के अपने भाइयों को यथाशीघ्र बचाने के क्रान्तिकारी संकल्प से ओतप्रोत हैं।

हमें समाजवादी प्रणाणी को, जिसे हम हासिल कर चुके हैं, मजबूत बनाना होगा और मेहनतकश लोगों की कम्युनिस्ट चेतना को और भी ऊंचा उठाना होगा, ताकि तमाम लोग उत्साह के साथ समाजवाद के निर्माण में भाग लें। साथ ही हमें महान छोलिमा बढ़ाव को जारी रखना होगा। तमाम पार्टी सदस्यों और मेहनत-कश लोगों को अपनी पूरी शक्ति नयी प्रविधि में पारंगत होने में लगानी होगी, समुन्नत वैज्ञानिक जानकारी से अपने आपको लैस करना होगा। तमाम बोसीदा और पुरातनपंथी बातों को मिटाना होगा, सर्वत्र नयी मान्यताएं और कीर्तिमान पैदा करने होंगे और निर्बाध नये-नये परिवर्तन लाकर आगे बढ़ना जारी रखना होगा।

इसलिए हमारा यह दायित्व हो जाता है कि हम हर संभव तरीके से जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया की सत्ता को मजबूत बनाएं और कोरिया की मजदूर पार्टी तथा गणतन्त्र की सरकार के साथ उत्तर और दक्षिण कोरिया के तमाम लोगों की और भी मजबूत एकता कायम करें। इस तरह हम एक एकीकृत, स्वाधीन, समृद्ध और सुदृढ़ कोरिया के निर्माण के लिए मजबूत राजनीतिक और आर्थिक शक्तियों को तैयार कर सकेंगे।

२ : उद्योग

सातवर्षीय योजना में उद्योग में मात्रात्मक और गुणात्मक प्रगति की परिकल्पना की गयी है।

औद्योगिक उत्पाद की कुल कीमत में औसतन १८ प्रतिशत वार्षिक वृद्धि होगी। १९६७ में यह १९६० के मुकाबले में ३.२ गुनी हो जाएगी। इसका अर्थ है उत्पादन के साधनों की पैदावार में ३.२ गुनी और उपभोक्त चीजों की पैदावार में ३.१ गुनी वृद्धि। फिर औद्योगिक उत्पादन युद्ध से पूर्व के स्तर से २० गुना से भी अधिक बढ़ जाएगा और पिछली पंचवर्षीय योजना के पूरे काल में जितना निर्मित माल तैयार हुआ, उससे कहीं अधिक एक साल में ही निर्मित होने लगेगा। इसका मतलब यह है कि हमारा उद्योग छोलिमा आन्दोलन की गति से बढ़ता जाएगा और हमारा देश अल्पकाल में ही उद्योगीकृत हो जाएगा।

सातवर्षीय योजनाकाल में उद्योग के समक्ष उपस्थित केन्द्रीय कार्य यह है कि हमारे देश में एक स्वतन्त्र औद्योगिक प्रणाली कायम हो, जिसका चहुंमुखी विकास हो, जिसका कच्चे माल का अपना मजबूत आधार हो और जो नवीनतम प्रविधि से पूर्णतया लैस हो। यह काम औद्योगिक उत्पादन के ढाँचे की और अधिक परिपूर्णता और उसकी प्राविधिक बुनियाद के और अधिक सुदृढ़ीकरण द्वारा ही सम्पन्न किया जाना है। केवल इसी प्रकार का उद्योग इस बात को संभव बनाएगा कि पूरे राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के प्राविधिक पुनर्निर्माण को अमल में लाने और हमारी जनता के जीवन-स्तर में मूलगामी सुधार लाने के उद्देश्य से देश के प्रचुर और विविध प्राकृतिक साधनों का युक्तियुक्त विकास और उपयोग हो।

उद्योगीकरण की प्राप्ति और जन-कल्याण की बढ़ोत्तरी के काम में भारी उद्योग प्रमुख भूमिका निभाएगा।

भारी उद्योग को विकसित करने की दिशा में हमारी पार्टी द्वारा किये गये प्रयासों का परिणाम मशीन-निर्माण उद्योग और भारी उद्योग की अन्य महत्वपूर्ण शाखाओं की स्थापना में निकला है। लेकिन हमारे देश के भारी उद्योग में, जो अल्पकाल में तेजी से विकसित हुआ है, अब भी पूरक पुर्जों की शाखाओं का अभाव है और वह कई पहलुओं से नाकाफी है। वास्तव में हमने भारी उद्योग का ढाँचा बनाया है, लेकिन अभी तक उसमें काफी हद तक प्राण-संचार नहीं कर पाये हैं।

अतः हमारे सामने पहला महत्वपूर्ण कर्तव्य यह है कि हम भारी उद्योग में छिद्रों को भरें, उसके अस्थिपंजर पर मांस पेशियां चढ़ायें, और फिर उसकी नीवों का विस्तार करें। इस उद्देश्य से हमें वर्तमान भारी उद्योग फैक्टरियों को नये-नये उपकरणों से सज्जित करना होगा, उनमें विस्तार लाना होगा और उन्हें नये

प्राविधिक ज्ञान से लैस करना होगा। साथ-ही-साथ राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की सभी शाखाओं की जरूरत की मशीनें, उपकरण, कच्चे और अन्य मालों के उत्पादन और संभरण के लिए हमें नये, व्यापक पैमाने पर उद्यम लगाने होंगे। सातवर्षीय योजना के दौरान हमें बड़ी तेजी से मशीन-निर्माण, रसायन, ईंधन और विद्युत तथा लोहा और इस्पात उद्योगों को विकसित करना होगा। हमें कुल मिलाकर भारी उद्योग को पुनर्निमित और बेहतर तौर पर उपकरणों से लैस करना होगा। इस तरह हमें देश की आर्थिक शक्ति में उल्लेखनीय वृद्धि लानी चाहिए और अपने भारी उद्योग को हल्के उद्योग तथा कृषि की ओर ज्यादा कारगर ढंग से विकास की सेवा के लिए सक्षम बनाना चाहिए।

राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के तेजी से विकास को आश्वस्त करने के लिए पहली आवश्यकता इस बात की है कि हमारे ईंधन और विद्युत आधारों ;को विस्तृत और सुदृढ़ किया जाए। खासतौर पर देश के विद्युतीकरण की गति को तेज करने के लिए जोकि प्राविधिक प्रगति में भारी महत्व रखता है, अन्य शाखाओं की तुलना में विद्युत शक्ति उद्योग का विकास पहले किया जाना चाहिए।

विद्युत उद्योग के विकास के लिए हमारी पार्टी की नीति यह है कि अपने देश के प्रचुर जल-शक्ति संसाधनों के व्यापक उपयोग से विशाल पन बिजलीघरों का निर्माण और ताप बिजलीघरों के निर्माण को बढ़ावा देना जारी रखा जाए। न केवल हम एक ताप बिजलीघर को पन बिजलीघर की अपेक्षा कम समय में और कम खर्चे से निर्मित कर सकते हैं बल्कि इससे हमें खुश्क मौसम के दौरान भी विद्युत की नियमित आपूर्ति का आश्वासन मिल सकेगा, और साथ ही हम विद्युत का कई प्रयोजनों के लिए इस्तेमाल कर सकेंगे। युक्तियुक्त ढंग से जल और ताप बिजलीघरों के निर्माण को संयुक्त करके ही हम अल्पकाल में अपनी विद्युत उत्पादन क्षमता को काफी बढ़ा सकते हैं, अपने विद्युत उद्योग के पन बिजली की ओर रुझान को समाप्त कर सकते हैं और इस प्रकार विद्युत शक्ति आधारों को गुणात्मक रूप से मजबूत बना सकते हैं।

सातवर्षीय योजनाकाल के दौरान विद्युत उत्पादन क्षमता में २०,००,००० किलोवाट से अधिक की वृद्धि करके लाने और कुल उत्पादन क्षमता को ३३,००,००० से ३५,००,००० किलोवाट तक ले जाने के लिए हमें कई नये ताप बिजलीघर और साथ-ही-साथ विशाल पन बिजलीघरों का निर्माण करना चाहिए।

अपनी विद्युत बुनियादों में विस्तार लाने में एक बड़ी समस्या अपने विद्युत-उत्पादक यंत्रों के उत्पादन की है। बेशक यह एक मुश्किल काम है, लेकिन हमें जल और ताप बिजलीघरों के लिए, जिनमें विशाल आकार के जेनरेटर भी शामिल हैं, थोड़ा-थोड़ा करके स्वदेश में ही उपकरणों के पूर्ण सेट निर्मित और सप्लाई करने

का यत्न करना चाहिए।

जहां तक ईंधन उद्योग का संबंध है, कोयला उत्पादन को तेजी से बढ़ाने के लिए हमें पूंजी लगाने का काम विशाल भंडारों और खुदाई की अनुकूल परिस्थितियों वाली कोयला खानों पर केन्द्रित करना चाहिए और पूंजीगत निर्माण-कार्य को तेज करना चाहिए ताकि प्रत्येक कोयला खान के अंदर के तंग रास्तों पर प्रायः पूर्णतः कंकरीट के स्तर बिछ जाएं। सभी कोयला खानों को चाहिए कि वे हर संभव तरीके से अपने यंत्रीकरण के स्तर को ऊंचा करें और शुरू-शुरू में कोयला काटने की जल-चाप विधि को व्यापक तौर पर लागू करके तकनीकी सुधार के लिए जबर्दस्त आंदोलन चलायें। इस तरह हमें सातवर्षीय योजना के अंत तक वार्षिक कोयला उत्पादन को २,३०,००,००० से २,५०,००,००० टन तक बढ़ाना चाहिए।

धातु उद्योग का, खासतौर पर लौह धातु कर्म का, राष्ट्रीय अर्थतंत्र के प्राविधिक पुनर्निर्माण में तेजी लाने और देश के स्वतंत्र अर्थतंत्र की बुनियाद में मजबूती लाने के काम में अधिक महत्व है। जब तक हम लौह सामग्रियों का बड़े परिमाण में उत्पादन और संभरण नहीं करते, तब तक बहुत-सी मशीनों और साजसामानों का निर्माण करना तथा बड़े पैमाने पर निर्माण-कार्य संपन्न करना संभव न होगा।

हमें वर्तमान लौह और इस्पात कर्मशालाओं को नये सिरे से लैस और विस्तृत करना चाहिए और विविध धातुकर्म सुविधाओं का बेहतर इस्तेमाल करना चाहिए। हमें किम छाएक आयरन वर्क्स के विकास के लिए व्यापक निर्माण शुरू करना चाहिए ताकि अगले दस वर्षों के अंदर वह ३०,००,००० टन की वार्षिक क्षमता का एक इस्पात उत्पादक केन्द्र बन जाए। परियोजना का पहला चरण सात-वर्षीय योजना के दौरान १८,००,००० टन की वार्षिक उत्पादन क्षमता के निर्माण का होना चाहिए। इसके अलावा पश्चिमी तट पर प्रचुर मात्रा में पाये जाने वाले अयस्क के चूर्ण के शोधन के लिए एक नया इस्पात संयंत्र निर्मित किया जाना चाहिए।

इस तरह सातवर्षीय योजना के अंत में कच्चे और दानेदार लोहे का वार्षिक उत्पादन २२,००,००० से २५,००,००० टन तक, इस्पात का २२,००,००० से २५,००,००० टन तक तथा इस्पात की चद्दरों का १६,००,००० से १८,००,००० टन तक पहुंच जाना चाहिए। साथ ही हमें इस्पात सामग्रियों की किस्मों में विस्तार लाने और खासतौर पर मिश्र धातु इस्पात को विकसित करने के उद्देश्य से प्रयास करने चाहिए।

अलौह धातु कर्म के क्षेत्र में हम वर्तमान प्रगलन भट्टियों की उत्पादन क्षमता का विस्तार करेंगे और अलौह धातुओं के लिए चद्दर ढलाई मिलों का निर्माण

करेंगे ताकि घरेलू उत्पादन विभिन्न अलौह चद्दरों के सामानों की मांगों को पूरा कर सकें।

हमें हल्के धातुओं के उत्पादन पर अधिक ध्यान देना चाहिए। सबसे पहले हमें नेफेलाइट का व्यापक रूप से शोधन करना चाहिए और इस प्रकार औद्योगिक प्रयोग के लिए अपना ऐलुमिनियम तैयार करना चाहिए।

विभिन्न अयस्कों के लिए धातु उद्योग की बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए हमें सातवर्षीय योजना के दौरान वर्तमान खानों का विस्तार करना चाहिए, उनके प्राविधिक उपकरणों में सुधार लाना चाहिए और नयी-नयी खानों को विकसित करना चाहिए।

इसके साथ ही हमें हर तरीके से भूगर्भीय अन्वेषण को तेज करना चाहिए। हमें इस क्षेत्र के लिए और ज्यादा उपकरण और सामान तैयार और सप्लाई करना चाहिए तथा इस क्षेत्र में प्रशिक्षण विशेषज्ञों पर अधिक जोर देते हुए काफी संख्या में प्रयोगशालाएं और प्रयोग केन्द्र स्थापित करने चाहिए।

सातवर्षीय योजना के अंतर्गत सर्वाधिक महत्वपूर्ण कामों में एक है रसायन उद्योग का व्यापक विकास करना।

रसायन उद्योग का विकास न केवल राष्ट्रीय अर्थतंत्र में तकनीकी प्रगति को त्वरित करेगा बल्कि घरेलू प्राकृतिक संसाधनों के विविधतापूर्ण और अधिक कारगर उपयोग को आश्वस्त करने में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। हमारे देश में उपलब्ध साधनों से रसायन उद्योग अनुपलब्ध साधनों के विकल्प सुलभ करता है। यह हमें उत्पादन और निर्माण के लिए प्राकृतिक तत्वों से भी कहीं अधिक श्रेष्ठ गुणों से परिपूर्ण विभिन्न किस्मों की कृत्रिम चीजें उपलब्ध करता है। हमें खासतौर पर इसलिए कि हमारे देश को, जहां कृषि भूमि सीमित है, कृषि हल्के उद्योग को पर्याप्त मात्रा में कच्चे माल उपलब्ध नहीं कर सकती, रासायनिक कृत्रिम चीजों द्वारा ही कच्चे माल की अपनी जरूरतों को पूरा करना होगा। यही कारण है कि हमारी पार्टी रसायन उद्योग जैसे कार्बनिक सिंथैटिक उद्योग के विकास और राष्ट्रीय अर्थतंत्र के रसायनीकरण को अत्यधिक महत्व देती है।

शुरूआती तौर पर हमें कृत्रिम रेशे का उत्पादन काफी बढ़ाना चाहिए और एक विशाल विनालोन फैक्टरी और एक विचलोन फैक्टरी निर्मित करनी चाहिए। इसी तरह हम कपड़े के धागों के लिए कच्चे माल की समस्या पूर्णतया हल कर सकेंगे। हमें विनाइल क्लोराइड समेत कृत्रिम रालों (रेजिनों) के उत्पादन को शीघ्रता से बढ़ाना चाहिए और रसायन उद्योग का एक नया आधार कायम करना चाहिए ताकि यह कृत्रिम रबर का व्यापक उत्पादन कर सके।

देहातों को भारी परिमाण में विभिन्न उर्वरक उपलब्ध करने और कीटाणु-नाशकों और जंगली घास संहारकों जैसे कृषि रसायनों और यूरिया का उत्पादन बढ़ाने के लिए हमें संबद्ध रसायन उद्योग के केन्द्रों में विस्तार और मजबूती लानी चाहिए।

इस तरह सातवर्षीय योजना के अंत में कृत्रिम और नकली रेशों का वार्षिक उत्पादन ८०,००० से १,००,००० टन, कृत्रिम रालों का ६०,००० से ७०,००० टन, और कृत्रिम रबर का १५,००० से २०,००० टन तक पहुंच जाना चाहिए। रासायनिक खादों का उत्पादन बढ़ कर १५,००,००० से १७,००,००० टन हो जाना चाहिए। इसके साथ ही हमें एक तेलशोधक कारखाना निर्मित करना चाहिए जो अपने पहले चरण में आओजि क्षेत्र में १०,००,००० टन कच्चे तेल का शोधन करे। फिर हम उद्योग और कृषि में रसायनों की मुख्य घरेलू मांगों को पूरा कर लेंगे और राष्ट्रीय अर्थतंत्र के लिए रसायनीकरण की दिशा में एक लम्बा डग आगे भर सकेंगे।

रसायन उद्योग के आधार अम्ल और क्षार उद्योगों को विकसित किया जाना चाहिए और औषधि-निर्माण उद्योग को विस्तारित किया जाना चाहिए, ताकि हम अपने देश में उत्पन्न चीजों से औषधियों और पशु सम्बन्धी दवाइयों की अपनी जरूरतों को पूरा कर सकें।

समूची सातवर्षीय योजनावधि राष्ट्रीय अर्थतंत्र की सभी शाखाओं में संपूर्ण तकनीकी क्रांति लाने का काल है। यदि हम यंत्र-निर्माण उद्योग को शीघ्रता से विकसित करने और इस तरह काफी परिमाण में आधुनिक यंत्र और उपकरण निर्मित और सुलभ करने में असफल रहे तो हम एक भी पग आगे बढ़ाने में समर्थ नहीं हो सकेंगे। उत्पादन प्रक्रियाओं के यंत्रीकरण और स्वचालन, विद्युतीकरण और रसायनीकरण जैसे प्राविधिक नवीनीकरण की तमाम समस्याओं का हल अंततोगत्वा यंत्र-निर्माण उद्योग के विकास पर निर्भर करता है।

हमें खनन यंत्रों, धातु-शोध और रासायनिक उपकरणों, विद्युत यंत्रों और भारी उद्योग के लिए अन्य उपकरणों, हल्के उद्योग के विभिन्न प्रकार के उपकरणों, गृह-निर्माण यंत्रों और परिवहन उपकरणों की मांग को पूरा करना होगा। हमें अपनी पिछड़ी कृषि और मत्स्य उद्योगों के यंत्रीकरण के लिए भारी संख्या में ट्रैक्टर और दूसरे कृषि यंत्र, जहाज और मछली पकड़ने के अन्य किस्मों के उपकरण तैयार करने चाहिए। इसके लिए वर्तमान यंत्र-निर्माण संयंत्रों का विस्तार करना होगा, उनके तकनीकी उपकरणों को मजबूत बनाना होगा और यंत्र-निर्माण उद्योग के लिए नये केन्द्र निर्मित करने होंगे।

यंत्रों के डिजाइन तैयार करने की हमारी क्षमता में महत्वपूर्ण वृद्धि की जानी

चाहिए ताकि और भी विविधतापूर्ण नये प्रकार के यंत्रों और उपकरणों के, जिनमें भारी यंत्र और सूक्ष्म यंत्र भी शामिल हैं, डिजाइन तैयार हों और उनका निर्माण हो। खासतौर पर हमें राष्ट्रीय अर्थतंत्र की प्राविधिक प्रगति और स्वचालन के लिए विभिन्न किस्मों के मीटरों, इलेक्ट्रान ट्यूबों और मंद तरंग उपकरणों के उत्पादन को तेजी से बढ़ाना चाहिए।

यंत्र-निर्माण उद्योग में तकनीकी नवीनीकरण—चीजों के उत्पादन में समुन्नत ढलाई विधियों के सक्रिय उपयोग, कटिंग के साथ-साथ स्टैम्पिग विधियों के व्यापक अमल और यंत्रों को संवारने और जोड़ने में असेम्बली लाइन या क्रमानुसार उत्पादन विधियों के प्रयोग की ओर गंभीरतापूर्वक ध्यान देना चाहिए।

अब तक यंत्र-निर्माण उद्योग की जो बुनियादें निर्मित हो चुकी हैं उन पर निर्भर रहते हुए हमें उत्पादन में व्यापक विशिष्टीकरण और सहयोग लागू करना होगा। हमें श्रम और लोहे की बरबादी का खात्मा करना होगा और कास्टिंग्स, फोरजिंग्स और फालतू कलपुर्जों के उत्पादन में विशिष्टीकरण के द्वारा निर्मित यंत्रों के स्तर को काफी ऊंचा करना होगा।

सातवर्षीय योजना में प्रतिपादित बड़े पैमाने के निर्माण कार्यों की सफलता को आश्वस्त करने के लिए भवन-निर्माण सामग्री उद्योग को योजनाबद्ध ढंग से विकसित करना होगा।

हमें सीमेंट फैक्टरियों का विस्तार करना चाहिए और नयी फैक्टरियां लगानी चाहिए ताकि सीमेंट उत्पादन १९६७ में ४०,००,००० से ४५,००,००० टन तक पहुंच सके। हमें पत्थरों के उपयोग और इमारतों में प्रयुक्त होने वाले सख्त पत्थरों के इस्तेमाल के लिए भी पग उठाने चाहिए और निर्माण में स्थानीय सामग्री का व्यापक उपयोग करना चाहिए।

लोहे और इमारती लकड़ी में अधिकतम किफायत के लिए हमें लकड़ी की छीलनी और लकड़ी रेशों के बोर्डों, कृत्रिम रालों आदि का उपयोग करने वाली नयी भवन-निर्माण सामग्रियों की फैक्टरियां निर्मित करनी होंगी। हमें तरह-तरह की फिटिंग्स तैयार करने वाली सैनिटरी के सामान की फैक्टरियों, अलक तारा-युक्त कागज मिलों और संयंत्रों का निर्माण या विस्तार करना चाहिए।

निर्माण में उद्योगीकरण के स्तर को ऊंचा करने के लिए हमें इमारती संरचनाओं के उत्पादन का निरन्तर विस्तार करना चाहिए और उन्हें बड़े और हल्के दोनों आकारों में बनाना शुरू करना चाहिए।

उद्योग के सामने महत्वपूर्ण कामों में एक यह है कि उपभोक्ता चीजों के बारे में मेहनतकश लोगों की बढ़ती मांगों को पूरा किया जाए। कुल मिलाकर हमारे देश का हल्का उद्योग अभी तक असन्तोषजनक है। सातवर्षीय योजनाकाल के

दौरान हमें भारी उद्योग के प्राथमिकता के साथ वढ़ोत्तरी के आधार पर हल्के उद्योग का जबर्दस्त विकास करना चाहिए।

उपभोक्ता मालों के उत्पादन में हमारी पार्टी केन्द्रीय नियन्त्रित उद्योग को, जोकि तकनीकी तौर पर अपेक्षाकृत पेचीदा है और जिसका बड़े पैमाने पर विकास किया जाना है, और स्थानीय उद्योग को, जोकि स्थानीय तौर पर उपलब्ध कच्चे सामानों का इस्तेमाल कर मध्यम या छोटे पैमाने पर विकसित किया जाना है, एक साथ आगे बढ़ाने की नीति को बराबर जारी रखेगी। कई नये विशाल हल्के उद्योगों का निर्माण किया जायेगा और वर्तमान उद्यमों का पुर्ननिर्माण या विस्तार किया जायेगा। खासतौर पर स्थानीय उद्योग में अब भी प्रयुक्त हो रही दस्तकारी की तकनीक को क्रमिक गति से बदल कर उसके स्थान पर आधुनिक प्रविधि को लागू करने के लिए पग उठाये जाने चाहिए।

हल्के उद्योग में सर्वाधिक महत्वपूर्ण समस्या उत्पादों की विविधता में विस्तार और उनके गुणात्मक सुधार की ही है। हमें अपने सभी साधनों तथा संभावनाओं का प्रयोग कर मेहनतकश लोगों के रोजमर्रा के जीवन के लिए जरूरी, तरह-तरह की उच्च कोटि की उपभोक्ता चीजें बनानी चाहिए। हमें हल्के उद्योग के उत्पादनों की गुणात्मक श्रेष्ठता के मामले में समुन्नत देशों का समकक्ष होना चाहिए।

इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए, कि हमारे देश में कपास की खेती अति सीमित होती है, हमें कपड़ा उद्योग में विनालोन, स्टेपल रेशों, कृत्रिम रेशम और अन्य रसायनिक रेशों से कपड़े और लिनेन के उत्पादन पर अपने प्रयासों को केन्द्रित करना चाहिए। रेशमी और ऊनी वस्त्रों का उत्पादन भी तेजी से बढ़ाना चाहिए। ये पग उठाते हुए हमें सातवर्षीय योजना के प्रथम आधे भाग में वस्त्र उत्पादन की वार्षिक क्षमता को बढ़ा कर ३० करोड़ मीटर और १९६७ तक ४० करोड़ से ५० करोड़ मीटर कर देना चाहिए। तब पूरी आबादी को काफी मात्रा में विभिन्न किस्मों के कपड़े उपलब्ध हो सकेंगे और कपड़े की समस्या सन्तोषजनक ढंग से हल हो जाएगी।

अवाम के दैनिक जीवन के लिए आवश्यक कागज के अतिरिक्त हमें क्राफ्ट पेपर और कार्डबोर्ड काफी परिमाण में उत्पादित और उपलब्ध करने के लिए कागज उद्योग का विस्तृत रूप में विकास करना चाहिए। उन क्षेत्रों में, जहां लुगदी वाली लकड़ी की बहुतायत है, हमें बड़ी-बड़ी कागज मिलें लगानी चाहिए और साथ-ही-साथ अनेक मध्यम और छोटे आकार की मिलें स्थापित कर उन्हें चालू करना चाहिए और उन्हें स्थानीय रूप से उपलब्ध विभिन्न प्रकार के कच्चे मालों का उपयोग करना चाहिए।

रबड़ उत्पादों के सम्बन्ध में राष्ट्रीय अर्थतन्त्र और लोगों की मांगों को पूरा

करने के लिए हमें रबड़ उद्योग का भी विकास करना होगा और कृत्रिम बरोजे या रालों से बनने वाली दैनिक आवश्यकता की चीजों के उत्पादन को तेजी से विस्तृत करना होगा। जहां तक जूतों का सम्बन्ध है, रबड़ के जूतों का स्थान चमड़े के जूतों को देने के लिए वास्तविक और कृत्रिम चमड़े के जूतों का उत्पादन धीरे-धीरे बढ़ाना चाहिए। हमें भारी परिमाण में दैनिक उपयोग के विद्युत उपकरणों और लिखने की सामग्री समेत तमाम किस्मों की घरेलू चीजों का उत्पादन करना चाहिए और तरह-तरह के फर्नीचर का, जिनकी मेहनतकश लोगों को अपने घरों के लिए जरूरत हो, काफी मात्रा में निर्माण और संभरण करना चाहिए।

अपने मेहनतकश लोगों की जरूरतों को पूरा करने और घरों में औरतों पर बोझ घटाने के लिए हमें खाद्य उद्योग का तेजी से विकास जारी रखना चाहिए। मक्का प्रोसेसिंग फैक्टरियों का बड़े पैमाने पर विस्तार किया जाना चाहिए। सोया और बीन के झोल, खाद्य तेल, बीन का जमाया हुआ दूध, मांस और मछली की सप्लाई के लिए हमें फैक्टरियों और प्रोसेसिंग संयंत्रों को निर्मित या विस्तृत करना चाहिए। उनकी उत्पादन-क्षमता को भी काफी बढ़ाया जाना चाहिए।

हमारे देश की सीमाएं तीन तरफ समुद्र से लगती हैं, इसलिए जन-जीवन स्तर में सुधार लाने के क्षेत्र में समुद्री साधनों का समुचित उपयोग बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। हमें इन साधनों की प्राप्ति में भारी वृद्धि लाने के लिए जोरदार प्रयासों को जारी रखने के साथ-साथ और अधिक धन लगाना चाहिए। सातवर्षीय योजना के अन्तिम वर्ष तक समुद्री उत्पादन १०,००,००० से १२,००,००० टन हो जाने चाहिए। समुद्र-तट पर मछलियां पकड़ने के अतिरिक्त गहरे सागर में मछलियां प्राप्त करने के लिए उपयुक्त स्थितियां उत्पन्न करने की दृष्टि से हमें अपनी तमाम वर्तमान पोतों का निर्माण करना चाहिए। मछलियां पकड़ने की नौकाओं का यन्त्रीकरण करना चाहिए और बड़ी-बड़ी मछलियां पकड़ने की नौकाओं को संचार-यन्त्र, मछलियों के समुदायों का पता चलाने वाले यन्त्रों और वैज्ञानिक रीति से मछलियां पकड़ने के लिए उनके भारी वजन के चढ़ाने और उतारने वाले आधुनिक यन्त्रों से सज्जित किया जाना चाहिए।

हमें अपने वर्तमान बन्दरगाहों को नया रूप देकर उन्हें अच्छी हालत में लाना चाहिए। मछलियां पकड़ने के लिए नये बन्दरगाह बनाये जाने चाहिए और मत्स्य केन्द्रों को निरन्तर विस्तृत किया जाना चाहिए। हमें समुद्री उत्पादनों के प्रोसेसिंग की सुविधाओं में सुधार करना चाहिए और इस क्षेत्र में तकनीकी नवीनता लानी चाहिए।

छिछले समुद्र में ताजे जल में मत्स्य संवर्धन और समुद्री पौधों तथा मछलियों की नयी-नयी किस्मों को विकसित करने के लिए सभी क्षेत्रों में नर्सरियां कायम

की जानी चाहिए, और हमें उनको आवश्यक सामग्री काफी मात्रा में उपलब्ध करनी चाहिए।

मत्स्य सहकारों के संगठन और अर्थव्यबस्था को और सुदृढ़ किया जाना चाहिए। आवश्यक सामग्री की पर्याप्त आपूर्ति को आश्वस्त करने के लिए हमें मछलियां पकड़ने के सामान तैयार करने वाली फैक्टरियों का विस्तार और उनकी संभरण प्रणाली में सुधार करना चाहिए।

लोगों को समुद्री आहार की आपूर्ति में सुधार करने के लिए शहरों में प्रशीतन संयंत्र लगाये जाने चाहिए, रेफ्रिजरेटर कारों की संख्या बढ़ायी जानी चाहिए और समुद्री मालवाही पोतों में भी रेफ्रिजरेटर लगाये जाने चाहिए।

इस तरह हम सातवर्षीय योजनाकाल के दौरान भारी और हल्के उद्योग का तीव्रगति से विकास जारी रखेंगे और फिर हम राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के समग्र प्राविधिक पुनर्निर्माण और जन-जीवन स्तर में आमूल सुधार के लिए आवश्यक विभिन्न प्रकारों की सामग्री, मशीनें, साजसामान और उपभोक्ता वस्तुएं उपलब्ध कर सकेंगे। हमारा उद्योग आधुनिक, विकसित और विविधतापूर्ण हो जाएगा, और यह स्थिति हमारे देश के स्वतन्त्र अर्थतन्त्र की बुनियादों को और ज्यादा मजबूत बनाएगी।

३ : कृषि

सातवर्षीय योजना में कृषि के सामने मुख्य काम यह है कि कृषि का यन्त्रीकरण किया जाए और प्राविधिक पुनर्निर्माण में तेजी लाकर कृषि उत्पादन को और बढ़ाया जाए।

इस समय हमारे देश की तकनीकी क्रान्ति में सर्वाधिक महत्व का काम यह है कि पुरानी पड़ चुकी कृषि प्रविधि को हटा कर उसका स्थान आधुनिक मशीन प्रविधि को दिया जाए। समाजवादी सहकारीकरण के सम्पन्न होने के बाद कृषि क्षेत्र में उत्पादक शक्तियों के और अधिक विकास तथा सहकारी अर्थतन्त्र के सुदृढ़ीकरण के लिए कृषि का यन्त्रीकरण अनिवार्य है। आधुनिक यन्त्रों से सज्जित होने पर ही कृषि तेजी से विकसित हो रहे उद्योग के साथ कदम से कदम मिला कर चल सकेगी और तब कहीं जा कर किसानों के काम को सुगम और उनके जीवन को भरापूरा बनाना संभव होगा।

हमें कृषि के यन्त्रीकरण को तेज करने के काम पर सभी प्रयास लगा देने होंगे। कृषि-यन्त्र केन्द्रों को बढ़ाया जाना चाहिए, ताकि प्रत्येक काउंटी में अपने

केन्द्र हों और ट्रैक्टरों, लारियों और विभिन्न कृषि मशीनों की तादाद में भारी वृद्धि लायी जानी चाहिए। १५ हार्स पावर यूनिटों की दृष्टि से ट्रैक्टरों की संख्या जो इस समय १३,००० है, १९६७ तक बढ़ाकर ८०,००० से भी अधिक कर दी जानी चाहिए।

कृषि यन्त्रीकरण में महत्वपूर्ण बात यह है कि भौगोलिक हालात के अनुसार बड़े, मध्यम और छोटे ट्रैक्टरों और लारियों का विवेकपूर्ण ढंग से वितरण हो और विभिन्न कृषि यन्त्रों के साथ तालमेल से उनका इस्तेमाल हो। केवल यही एक विधि है, जिससे हम पूरे देहाती क्षेत्र का—मैदानों से दूरस्थ पर्वतीय क्षेत्रों तक—पूर्ण यन्त्रीकरण सम्पन्न कर सकते हैं और जुताई, बुआई, गुड़ाई और निराई कटाई, गहाई सरीखे सभी मुख्य कामों और उनके साथ ही पशु-संवर्धन तथा परिवहन का यन्त्रीकरण कर सकते हैं।

साथ ही हमें सिंचाई में नयी-नयी सफलताएं प्राप्त करनी चाहिए। हमारे देश की जो जलवायु है, उसके कारण हमें धान की खेती से अति स्थिर और सर्वाधिक उपज उपलब्ध होती है। सातवर्षीय योजना के दौरान धान के खेतों का क्षेत्र विस्तृत करके ७,००,००० छोंगबो पहुंचा दिया जाना चाहिए और सिंचित शुष्क खेतों के क्षेत्र में भी वृद्धि की जानी चाहिए। पूर्व तट के क्षेत्रों में हमें जंगल लगाने और जल-भण्डार तथा नदी-सुधार, जलाशय और नदी तटबंध परियोजनाओं जैसे बाढ़ की क्षति को रोकने वाले कामों को जारी रखना चाहिए।

हमारी पार्टी अन्न उत्पादन को प्राथमिकता देने और उसके साथ ही औद्योगिक फसलों की खेती, पशु-संवर्धन, फल उगाने तथा रेशमी कीड़े पालने के कामों को विकसित करने की नीति का अनुसरण जारी रखेगी।

समाजवादी निर्माण में अन्न समस्या का समाधान सर्वाधिक बुनियादी कर्तव्यों में से एक है। अन्न उत्पादन में निर्णायक वृद्धि के बिना लोगों को काफी आहार उपलब्ध करना और कृषि की अन्न शाखाओं को और ज्यादा विकसित करना असंभव है। हमें अन्न उत्पादन पर अपने विशिष्ट प्रयास केन्द्रित करने चाहिए, और इस आधार पर विविध उपयोग की कृषि को विकसित करना चाहिए।

हमारे देश में कृषि भूमि सीमित परिमाण में ही है, अतः हमें प्रकृति का कायापलट करके नयी भूमि को कृषि योग्य बनाना होगा, हमें वर्तमान भूमि को सुरक्षित रखना होगा और उसे सुधार कर उसका अधिक कारगर उपयोग करना होगा। काश्त की भूमि का योजनाबद्ध विस्तार अन्न उत्पादन में तीव्रगति से वृद्धि और कृषि के चहुंमुखी विकास की एक महत्वपूर्ण गारंटी है। अगले दस सालों में और भी दस लाख छोंगबो भूमि की प्राप्ति के एक दूरगामी कार्यक्रम के आधार पर हमें पश्चिम तट के ज्वार-क्षेत्रों, देश भर की पहाड़ियों और पोछोन तथा पाएगाम जैसे

पठारों को कृषि योग्य बनाने के लिए प्रकृति के कायाकल्प की शानदार परियोजनाओं को पूरे वेग से आगे बढ़ाना जारी रखना होगा। इस तरह हमें कृषि-भूमि का कुल क्षेत्र बढ़ाकर २५,००,००० छोंगबो तक पहुंचा देने के लिए सात-वर्षीय योजनाकाल के दौरान और भी ३,००,००० छोंगबो भूमि को जुताई के अन्तर्गत ला देने की सुनिश्चित व्यवस्था करनी है।

साथ ही दोहरी फसल प्रणाली को व्यापक ढंग से लागू कर तथा अपनी कृषि भूमि के उपयोग को बढ़ाकर कुल बुवाई क्षेत्र में काफी विस्तार किया जाना चाहिए।

हमारे देश में अन्न उपज बढ़ाने का मुख्य आधार यही हो सकता है कि व्यापक कृषि की समुन्नत विधियों को विकसित कर खेतों की इकाई पर होने वाली पैदावार में वृद्धि की जाए।

गल्ले की पैदावार बढ़ाने के लिए हमें सक्रियतापूर्वक भूमि सुधार, गहरी जुताई, अधिक उपज देने वाले बीजों की बुवाई, काफी मात्रा में सिंचाई, काफी मात्रा में खाद देने, निराई और वनस्पति रोगों तथा हानिप्रद कीड़ों की रोकथाम जैसी तमाम कार्यवाहियां पूरी तरह की जानी चाहिए।

खासतौर पर हमें कृषि के रसायनीकरण की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए। भूमि की उर्वरता में वृद्धि, फसल की वृद्धि में तेजी, निराई और हानिकारक कीड़ों का विनाश, यह सारे काम रसायनिक विधियों द्वारा किए जाने चाहिए।। ग्रामीण क्षेत्रों में यन्त्रीकरण के साथ-साथ रसायनीकरण के लागू होने पर ही हम कठिन और थका देने वाली मेहनत को कम कर सकते हैं, थोड़ी जन-शक्ति से ज्यादा कृषि कर सकते हैं और निर्णायक ढंग से अपनी उपजें बढ़ा सकते हैं।

सातवर्षीय योजना के अन्त तक कुल वार्षिक अन्न उपज को ६०,००,००० टन के निशाने पर पहुंचाने के लिए हमें ये सब आर्थिक और तकनीकी पग उठाने होंगे। यह बढ़ोत्तरी न केवल हमारे देश को खाद्य समस्या का निश्चित रूप से हल करने में समर्थ बनाएगी, वरन् कृषि की तमाम शाखाओं के तेजी से विकास के लिए एक मजबूत बुनियाद कायम करने में भी सक्षम बनाएगी।

अन्न की उपज बढ़ाते हुए हमें उपयुक्त भूमि पर कपास, महुआ और रेशे देने वाली अन्य फसलें, तिलहन, तम्बाकू, चुकन्दर, इनसाम और सदाबहार लताएं उगाने और उनकी पैदावार बढ़ाने पर ध्यान केन्द्रित करना होगा, ताकि उद्योग को कच्चे माल मिल सकें। हमें सब्जियों का उत्पादन भी बढ़ाना चाहिए ताकि शहरी आबादी को वे ज्यादा मात्रा में उपलब्ध की जा सकें।

सातवर्षीय योजनाकाल के दौरान कृषि के बड़े कामों में एक यह है कि पशु-

पालन में काफी प्रगति की जाए। हमें अब तक बड़ी मेहनत से तैयार की गयी पशु-पालन की बुनियादों को सुदृढ़ करते रहना चाहिए, पशु-पालन के ऐतिहासिक पिछड़ेपन को दूर करना चाहिए तथा मांस और अन्य पशु उत्पादों की उपज और बढ़ानी चाहिए।

इस अवधि में मांस और दूध उत्पादन को शीघ्रता से बढ़ाने के लिए हमें सुअरों की संख्या बढ़ा कर ३० लाख से अधिक और दुधारू पशुओं की १० लाख करनी होगी। बकरियों जैसे चरने वाले पशुओं और खरगोशों की संख्या बहुत बढ़ानी चाहिए तथा कृषि के यन्त्रीकरण में प्रगति के फलस्वरूप कृषि कार्य के लिए अनावश्यक नई गायों में से दुधारू गायें हासिल करने के सतत प्रयास करने चाहिए। ऊन की पैदावार में भारी वृद्धि हेतु मैदानी और पर्वतीय क्षेत्रों में व्यापक रूप से भेड़ पालन किया जाना चाहिए और मुर्गी पालन क्षेत्रों का विकास भी जारी रखा जाना चाहिए।

पशुधन बढ़ाने के सिलसिले में हमारी सतत नीति यह है कि सहकारी सदस्य तो गौण व्यवसाय के रूप में पशु-पालन करें ही, राज्य भी पशु-पालन करे और कृषि सहकार भी सांझा पशु-पालन करें और मुख्य रूप से इन्हीं पर जोर दिया जाए। अपने सांझा पशु-पालन को दृढ़ता से विकसित करते हुए प्रत्येक सहकार को जवान सांड आदि की व्यवस्था करनी चाहिए और तमाम किसान परिवारों को सूअर, खरगोश, चूजे और बत्तखें पालने के व्यापक आन्दोलन में भाग लेना चाहिए।

पशु-पालन में चारे के विश्वसनीय केन्द्रों का निर्माण मूल महत्व रखता है। इस समस्या को हल करने के लिए हमें धान क्षेत्रों और शुष्क खेतों में छमाही फसल के तौर पर व्यापक रूप से चारा बोना चाहिए और पर्वतों की तलहटियों में, घाटियों में, तराइयों में और अन्य क्षेत्रों में जहां कहीं भी संभव हो—चारे के खेत और चरागाहें बनानी चाहिए।

व्यापक पशु रोगों के विरुद्ध अपने काम के सुदृढ़ीकरण द्वारा हमें संवर्धन वाले पशुओं में सुधार लाना चाहिए, बीमारियों से होने वाली पशुओं की मौत की रोकथाम के लिए निर्णायक पग उठाने चाहिए और पशु उत्पादकता काफी बढ़ानी चाहिए।

राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के विकास में पर्वतों को, जोकि हमारे देश के स्थलीय क्षेत्र का लगभग ८० प्रतिशत भाग घेरे हुए हैं, व्यापक और कारगर इस्तेमाल भारी महत्व रखता है। पर्वतों का न केवल कम महत्व के उत्पादनों के विकास में ही उपयोग हो सकता हैं, बल्कि फल उगाने और रेशम के कीड़े पालने में और आर्थिक तौर पर मूल्यवान् जंगलों के निर्माण द्वारा विभिन्न कच्चे मालों की औद्योगिक ज़रूरतों को पूरा करने के काम में भी उनका अति महत्वपूर्ण उपयोग हो

सकता है।

सातवर्षीय योजना में फल-उत्पादन के व्यापक विकास की परिकल्पना की गयी है। पहाड़ियों को जोतने-बोने योग्य बनाकर और २०,००,००० छोंगबो वाटिकाएं लगा कर हमें अपने देश में फलोद्यानों के क्षेत्र को बढ़ाकर ३,००,००० से ३,५०,००० छोंगबो करना होगा। साथ ही नये पौधों के समुचित संरक्षण द्वारा फल देने वाले क्षेत्र में तेजी से विस्तार करना होगा। इस प्रकार हमें १९६७ में ५,००,००० टन फल पैदा करने चाहिए, ताकि लोगों को तमाम मौसमों में तरह-तरह के फल उपलब्ध किए जा सकें।

उच्च कोटि के और अधिक परिमाण में रेशमी वस्त्र तैयार करने के लिए रेशम के कीड़े पालने के काम का अधिक विकास करना होगा। पहाड़ियों पर शहतूत की ४०,००० छोंगबो नयी वाटिकाएं लगाकर शहतूत के खेतों का क्षेत्र बढ़ाकर १,००,००० छोंगबो करना होगा और शहतूत के पेड़ों की उत्पादकता और देखभाल में सुधार कर उनकी पत्तियों तथा रेशम के कोवों की प्रति छोंगबो उत्पत्ति बढ़ानी होगी। टसर के कीड़े पालने की कुंजों और रेंडी की फलियों के क्षेत्र को विस्तृत करना होगा और उनमें वृद्धि की समुन्नत विधियों का बड़े पैमाने पर उपयोग करना होगा।

वनों को कम महत्व की उपजों की बजाय रेशों और तेल के लिए कच्चे माल उपलब्ध करने वाली आर्थिक उपजों के क्षेत्र में परिणत करने का काम भी दूर-दर्शिता के साथ और सुनियोजित ढंग से सम्पन्न करना होगा। अल्प समय में लुगदी के लिए कच्चे मालों की उपलब्धि को आश्वस्त करने के वास्ते हमें हर जगह, खेतों में और पहाड़ियों पर चिनार और सफेद भूर्जवृक्ष जैसे—जल्दी बढ़ने वाले पेड़ लगाने चाहिए। भविष्य में हल्के उद्योग के लिए कच्चे मालों के रूप में उपयोग के लिए हमें पालोनिया, अखरोट, काला अखरोट शाहबलूत और अनानास के पेड़ बोने चाहिए। आर्थिक महत्व के वनों के निर्माण में इस्तेमाल होने वाले पेड़ उपलब्ध करने के लिए कलमें उगाने को प्राथमिकता देनी होगी और जंगल लगाने के काम के लिए पूर्ण उत्साह के साथ एक सर्वजन आन्दोलन छेड़ना होगा।

सातवर्षीय योजना में कृषिजन्य उत्पादन के भरपूर विकास और साथ ही निरन्तर व्यापक ग्राम्य निर्माण की परिकल्पना की गयी है।

हमें धनखेतों और अन्य खेतों में नये सिरे से तालमेल बैठानी होगी, सड़कें और पुल निर्मित करने होंगे, और भारी संख्या में मकान, स्कूल, अस्पताल और अन्य सांस्कृतिक तथा सार्वजनिक सेवा प्रतिष्ठान खड़े करने होंगे। इतने विशाल पैमाने पर निर्माण को आश्वस्त करने के लिए राज्य आवश्यक मशीनें, उपकरण

और सामग्री तथा तकनीकी सहायता उपलब्ध करेगा। ग्राम्य निर्माण के लिए यह भी जरूरी है कि स्थानीय सामग्री का और उसके साथ ही कृषि सहकारों के वित्तीय साधनों का भरपूर प्रयोग किया जाए।

कृषि का त्वरित विकास और ग्राम्य निर्माण की सफलतापूर्वक पूर्णता हमारे देहातों की युगों पुरानी गरीबी और पिछड़ेपन के तमाम लक्षणों का पूरी तरह उन्मूलन कर देंगे, उन्हें एक आधुनिक और सुसभ्य ग्रामीण समाज में बदल देंगे और किसानों की सुख-समृद्धि में मूलगामी तौर पर वृद्धि कर देंगे।

४ : परिवहन और संचार

राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की तेजी से प्रगति का तकाजा है कि सातवर्षीय योजना-काल के दौरान माल ढुलाई व्यवस्था में भारी उन्नति हो। रेल, जल और मोटर परिवहनों के शीघ्रता से विकास के बिना परिवहन की बढ़ती अपनी मांगों को पूरा करना असंभव है।

सबसे पहली महत्व की बात यह है कि रेल परिवहन के भौतिक और तक-नीकी आधार को मजबूत किया जाए और हर संभव तरीके से उसकी यातायात क्षमता को विस्तृत किया जाए।

प्योंगसान-पोकग्ये और छोंगजिन-राजिन लाइनों को पूरा किया जाना चाहिए और दक्षिण ह्वांगहाए प्रान्त में तंग पटरी की रेल को, जो अब भी विद्यमान है, हटाकर उसके स्थान पर चौड़ी पटरी की लाइन बिछायी जानी चाहिए।

रेलों का विद्युतीकरण स्पष्टत: उनकी आर्थिक कुशलता और आधुनिक संचा-लन क्षमता को बढ़ाता है। विद्युतीकरण ईंधन की खपत को घटाकर २० प्रतिशत पर ला देगा, परिवहन में जन-शक्ति को काफी बचाएगा और यातायात क्षमता को प्राय: दुगुना कर देगा। बड़े-बड़े रेल पथों के बुनियादी विद्युतीकरण को पूरा करने के लिए सातवर्षीय योजना के दौरान प्योंगयांग-छोंगजिन, प्योंगयांग-सिनुइजु, प्योंगयांग-काएसोंग और हुईछोन-कोइन लाइनों का विद्युतीकरण करना होगा।

इसके अतिरिक्त रेलवे को काफी संख्या में विद्युत इंजन, माल डिब्बे, यात्री डिब्बे और अन्य आवश्यक यन्त्र तथा सामग्री उपलब्ध करने के लिए रेल फैक्टरियों की उत्पादन क्षमता बढ़ानी होगी।

इस तरह तकनीकी उपकरणों का दृढ़ीकरण कर और साथ ही इंजनों के उप-योग में सुधार लाकर १९६७ तक रेलवे की माल ढोने की कुल क्षमता बढ़ाकर

७.५ करोड़ टन की जानी चाहिए।

रेल परिवहन पर दबाव कम करने तथा राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के लिए अधिक सुचारु रूप से माल की ढुलाई आश्वस्त करने के उद्देश्य से जल परिवहन का व्यापक विकास किया जाना चाहिए। जल परिवहन की क्षमता में काफी वृद्धि लाने के लिए समुद्र और नदी परिवहन के योग्य पोत निर्मित किये जाने चाहिए। खासतौर पर विदेशी व्यापार के विस्तार के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलने के लिए लम्बी दूरी तय करने वाली समुद्री जहाजरानी के वास्ते पग उठाये जाने चाहिए। इसके अलावा पूर्व और पश्चिम तटों पर बड़े बन्दरगाहों को अच्छी दशा में ले आना चाहिए।

मोटर परिवहन क्षमता में वृद्धि के लिए हमें सड़कों और पुलों की मरम्मत और निर्माण को बड़ी तेजी से आगे बढ़ाना चाहिए, उन क्षेत्रों में, जहां बहुत ज्यादा यातायात है, बड़े पैमाने पर सड़कें बिछायी जानी चाहिए और मोटर वाहनों तथा ट्रेलरों के उपयोग में भारी वृद्धि की जानी चाहिए।

संचार के क्षेत्र में हमें काउंटी और री के मध्य टेलीफोन के जाल बिछाने का काम पूरा करना चाहिए और तमाम शहरों में आटोमैटिक एक्सचेंज क्षमता बढ़ानी चाहिए। तार-प्रसारण के तानेबाने का विस्तार करना चाहिए ताकि प्रत्येक देहाती री में प्रसारण की सुविधाएं स्थापित की जा सकें। साथ ही हमें रेडियो प्रसारण के सुदृढ़ीकरण के लिए उत्पादन में भारी वृद्धि करनी चाहिए और दूर-दर्शन प्रसारण शुरू करना चाहिए।

५ : विज्ञान और संस्कृति का विकास

राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के सर्वांग तकनीकी पुनर्निर्माण का तकाजा है कि विज्ञान की तमाम शाखाओं में उल्लेखनीय प्रगति हो। विज्ञान उत्पादन शक्तियों के विकास में एक बढ़ती हुई महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और विज्ञान की सरहदों को पार करने के बाद ही हम ऊंची श्रम उत्पादकता हासिल कर सकते हैं और समाजवाद के लिए सम्पूर्ण विजय आश्वस्त कर सकते हैं।

समाजवाद के व्यावहारिक निर्माण में उत्पन्न होने वाली अत्यावश्यक वैज्ञानिक और प्राविधिक समस्याओं को हमें समय रहते सुलझाना होगा। हमें प्रगतिशील मानवता की आधुनिक वैज्ञानिक सफलताओं को निरन्तर समाविष्ट करते हुए निकट भविष्य में अपने देश के तमाम विज्ञान को अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर ले आना होगा।

इस समय हमारे देश के विज्ञान के सामने बुनियादी दायित्व है ठोस रीति से तकनीकी क्रान्ति की सेवा करना।

हमें तकनीकी नवीनीकरण, कृषि समेत राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की तमाम शाखाओं के यन्त्रीकरण, कतिपय क्षेत्रों में व्यापक यन्त्रीकरण और स्वचालन लागू करने, देश में विद्युतीकरण को आगे बढ़ाने आदि के अनेक कठिन और जटिल कामों का सामना करना पड़ रहा है। इन कामों को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए, हमें अपने देश की वास्तविक स्थितियों के अनुरूप योजनाबद्ध ढंग से विभिन्न यन्त्रों और उपकरणों का आविष्कार करना होगा, ऊंची दक्षता वाले स्वचालित यन्त्रों और स्वचालन के लिए उपकरणों, इन दोनों किस्मों के डिजाइन तैयार करने होंगे और स्वचालन की युक्तिसंगत विधियों का अन्वेषण करना होगा।

देश के प्राकृतिक साधनों की खोज और उनके प्रभावशाली ढंग से इस्तेमाल की विधि के अध्ययन के कामों में विज्ञान की शक्ति की मदद ली जानी चाहिए। साथ ही इसे घरेलू प्राकृतिक संसाधनों के आधार पर एक स्वावलम्वी औद्योगिक प्रणाली की स्थापना के लिए काम करना चाहिए।

सबसे बढ़कर महत्वपूर्ण काम है घरेलू ईंधन संसाधनों पर निर्भर रहते हुए लौह धातु उद्योग का विकास करना। पत्थरी कोयले के अभाव के बारे में शोर करने की वजाय हमें ऐन्थ्रेसाइट से, जोकि हमारे देश में बहुतायत से पाया जाता है, लोहा निर्मित करने की विधियों का अध्ययन करना चाहिए। इस उद्देश्य से हमें दानेदार लोहे से इस्पात का निर्माण करने की भस्मीकृत गोलियों की प्रक्रिया और अविराम उत्पादन प्रक्रिया में यथासंभव शीघ्र दक्षता प्राप्त करनी होगी।

यह भी आवश्यक है कि आन्तरिक साधनों का उपयोग कर राष्ट्रीय अर्थतन्त्र का रसायनीकरण तेज किया जाए और अपनी रसायनिक प्रक्रियाओं में विद्युत की यथासंभव बचत की जाए। इस प्रयोजन से हमें अनुसन्धान को आगे बढ़ाना चाहिए और अमोनिया के संश्लेषण और रसायन उद्योग की अन्य शाखाओं में, धातु शोधन में और राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के अन्य क्षेत्रों में ऐन्थ्रेसाईट के गैसीकरण के परिणामों को व्यापक रूप से लागू करना चाहिए। हमें आक्सीजन ताप-उपचार द्वारा दूसरे तत्वों के साथ कार्बन का यौगिक—कार्बाइड—और उच्च तापमान में लिगनाईट के कार्बनीकरण के कामों को भी पूरा करना चाहिए। इसके अलावा, हमें कृत्रिम रेशा और कृत्रिम रेजिन उद्योगों को विकसित करने और कृत्रिम रबड़ उत्पादन का उद्योगीकरण करने के लिए अनुसन्धान को सतत बढ़ावा देना चाहिए। इन उद्योगों में प्रयुक्त होने वाले कच्चे माल ऐन्थ्रेसाईट और चूने का पत्थर हैं, जो देश भर में विपुल मात्रा में दबे पड़े हैं।

हमें विज्ञान के नये-नये क्षेत्र कायम करने होंगे, सारे राष्ट्रीय अर्थतंत्र में

विज्ञान और प्रविधि की नवीनतम उपलब्धियों को लागू करना होगा और आधारभूत विज्ञानों के महत्वपूर्ण क्षेत्रों का सक्रिय रूप से विकास करना होगा।

परमाणु ऊर्जा उत्पादन चालू करने के लिए एक दूरगामी कार्यक्रम के अन्तर्गत अनुसंधान कार्य किया जाना चाहिए। रेडियो आइसोटोपों और विकिरणों का उद्योग और कृषि समेत विभिन्न क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर प्रयोग किया जाना चाहिए। हमें अतिध्वनि तरंगों और उच्चावृत्ति इलेक्ट्रानिकी का गहन अध्ययन कर इन तकनीकों का उत्पादन और निर्माण में दक्षतापूर्वक प्रयोग करना चाहिए और घरेलू कच्चे मालों के उपयोग द्वारा अर्धचालक सामग्रियों का उत्पादन चालू करना चाहिए तथा उनके प्रयोग की परिधि में भी विस्तार करना चाहिए। हमें राष्ट्रीय अर्थतन्त्र में भारी महत्व रखने वाले इलेक्ट्रॉनिकी के विकास पर उचित ध्यान देना होगा। राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के तमाम क्षेत्रों में उत्पन्न होने वाली तकनीकी समस्यायों के समाधान में योगदान हेतु गणितशास्त्र, भौतिकी, रसायन, जैविकी आदि मूल विज्ञानों में काम को निर्णायक रूप से सुधारना होगा।

अधिक कृषि पैदावार आश्वस्त करने और पशुधन के विकास में सहायता पाने के लिए अनेक आवश्यक पग उठाने होंगे। मेहनतकश लोगों के लिए बेहतर स्वास्थ्य और लम्बे जीवन की व्यवस्था करने के वास्ते हमें आधुनिक औषधियों के साथ-साथ तोंगुईहाक या परम्परागत कोरियाई दवाओं के विकास हेतु चिकित्सा अनुसन्धान-कार्य को तेज करना चाहिए और अपने पुरखों से विरसे में मिले लोक-उपचारों के मूल सिद्धान्तों की प्रणाली तैयार करनी चाहिए।

समाज के क्रान्तिकारी कायाकल्प और आर्थिक और सांस्कृतिक निर्माण में हमारी पार्टी और लोगों ने बहुमूल्य अनुभवों की एक सम्पदा संचित की है। समाजशास्त्र को इस अनुभव का सैद्धान्तिक सामान्यीकरण प्रस्तुत करना चाहिए, मार्क्सवाद-लेनिनवाद के आधार पर पार्टी दृष्टिकोण और नीतियों का पूर्णतया स्पष्टीकरण और प्रचार करना चाहिए और पार्टी की क्रान्तिकारी परम्पराओं और राष्ट्र की साँस्कृतिक विरासत का सम्पूर्ण अध्ययन करना चाहिए। साथ ही राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की बढ़ोत्तरी में सहायता के लिए समाजवादी निर्माण में उत्पन्न होनेवाली नयी सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को तत्काल हल करना चाहिए। खासतौर पर, समाज वैज्ञानिकों को दक्षिण कोरिया की वर्तमान अर्थ-व्यवस्था और संस्कृति का गहन अध्ययन करना चाहिए और भविष्य में उनके पुनर्वास और विकास के लिए उपाय सामूहिक रूप से सुझाने चाहिए।

मेहनतकशों के साधारण और तकनीकी ज्ञान में वृद्धि करना साँस्कृतिक क्रान्ति का एक महत्वपूर्ण काम है। बगैर इसके हम न तो तकनीकी क्रान्ति को सम्पन्न कर सकते हैं और न ही समाजवाद की सम्पूर्ण विजय हासिल कर सकते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में हमारे कर्तव्य हैं श्रमजीवी अवाम को प्रकृति और समाज के बारे में सही जानकारी और बास्तविक दृष्टिकोण से लैस करना और उनके साँस्कृतिक और तकनीकी स्तरों को ऊंचा उठाना। सार्वजनिक शिक्षा प्रतिष्ठानों को बच्चों और युवकों को विज्ञान और संस्कृति की नवीनतम उपलब्धियों में शिक्षित और प्रशिक्षित करना चाहिए और साथ ही स्कूल और व्यावहारिक जीवन के बीच सम्पर्क बढ़ा कर और शिक्षा को उत्पादक श्रम के साथ निकट से संयुक्त कर उन्हें कम्युनिस्ट विश्व दृष्टिकोण में भी शिक्षित और प्रशिक्षित करना चाहिए। इस रीति से हमें युवा पीढ़ी को एक नये प्रकार का इन्सान बनाना चाहिए, जो पार्टी और क्रान्ति के प्रति वफादार हों और उनके विकास से भलीभांति अवगत हों। इस तरह हमें अपने समाज में सुसभ्य और जागरूक मेहनतकशों की पांतों को लगातार भरपूर बनाये रखना चाहिए।

अनिवार्य माध्यमिक शिक्षा के सफलतापूर्वक लागू किये जाने पर आधारित ९-वर्षीय अनिवार्य तकनीकी शिक्षा सातवर्षीय योजनाकाल के दौरान पूर्णतया लागू की जानी चाहिए। सब लोगों पर अनिवार्य तकनीकी शिक्षा लागू करने का अर्थ है—समाजवादी शिक्षा प्रणाली का और विकास। यह स्थिति युवा पीढ़ी को कम्युनिज्म के सक्षम निर्माता बनाने के लिए उनके प्रशिक्षण में क्रातिकारी परिवर्तन का सूचक है।

राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की तमाम शाखाओं में हो रही तकनीकी क्रान्ति के संदर्भ में तकनीकी कर्मीदल की आज जितनी जरूरत है, उतनी पहले कभी न थी। यदि तकनीकी कर्मचारियों का प्रशिक्षण उत्पादक शक्तियों और देश में तकनीकी क्रान्ति के विकास की तीव्र गति के समकक्ष नहीं होता, तो प्रगति जारी न रहेगी।

तकनीकी कर्मीदल के बारे में राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की वर्तमान और भावी मांगों को पूरा करने के लिए हमें सातवर्षीय योजना के दौरान ४,६०,००० सहायक इंजीनियरों और अवर विशेषज्ञों को प्रशिक्षित करना होगा और १,८०,००० इंजीनियरों तथा विशेषज्ञों के प्रशिक्षण के लिए उच्चतर शिक्षा सुदृढ़ करनी होगी। खासतौर पर हमें यन्त्र-निर्माण, विद्युत, रसायन, भूगर्भ विद्या, परिवहन, मत्स्य-पालन, कृषि, पशु-पालन और सार्वजनिक स्वास्थ्य सरीखे क्षेत्रों के विशेषज्ञों के प्रशिक्षण पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए जिनकी वहां अत्यावश्यकता है।

हमारी पार्टी की अटल नीतियों में से एक यह है कि उच्चतर शिक्षा की नियमित प्रणाली के साथ-साथ उसके विभिन्न स्वरूपों की एक ऐसी प्रणाली विकसित करना जो श्रमजीवी लोगों को अपने उत्पादन कार्य को छोड़े बिना अध्ययन का अवसर प्रदान करे। विशेष रूप से हमें फैक्टरी कालेजों की, जिनके लाभों की जानकारी हम अनुभव से प्राप्त कर चुके है, संख्या बहुत बढ़ानी चाहिए और भारी

तादाद में मेहनतकश वर्ग के प्रतिभावान् तकनीकी कार्यकर्ताओं को, जो सिद्धान्त और व्यवहार, दोनों में पारंगत हों, प्रशिक्षित करना चाहिए।

वयस्क शिक्षा का सुदृढ़ीकरण कर और नियमित आधार पर उत्पादन उद्यमों में प्रविधि और हुनर सीखने की प्रणाली को व्यवहार में लाकर मेहनतकशों का सांस्कृतिक और तकनीकी स्तर मूलगामी तौर पर ऊंचा किया जाना चाहिए और पार्टी के इस आह्वान को कार्य रूप दिया जाना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति एक से अधिक तकनीकी कौशल सीखे।

आम अवाम के कम्युनिस्ट शिक्षण में साहित्य और कला एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। लेखकों और कलाकारों को हमारी क्रान्ति और नवजीवन के निर्माण, दोनों के वास्तविक नायकों को चित्रित करने और इस तरह लोगों को पार्टी तथा मजदूर वर्ग के विचारों की शिक्षा देने का महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा गया है।

सबसे महत्वपूर्ण काम है, हमारी वास्तविकता का विशद चित्रण करना—उस वास्तविकता का जिसमें सर्वत्र चमत्कार किये जाते रहे हैं, प्रत्येक व्यक्ति को एक नये कम्युनिस्ट किस्म के इन्सान में नये सिरे से ढाला जा रहा है, और महान छोलिमा प्रगति जारी है,—और छोलिमा अश्वारोहियों, हमारे युग के वीरों, की विशिष्ट प्रतिमाएं निर्मित करना। आज हमारा जीवन तीव्रतर गति से एक नये समाज का निर्माण करने के मेहनतकशों के अदम्य संकल्प और आशावादी गरिमा से दमक रहा है, और यह सब कुछ मानव के लिए असीम प्यार और सामूहिक नैतिकता को साकार करने वाली अनगिनत सुन्दर गाथाएं उपलब्ध करता है, लेखकों और कलाकारों को हमारे इस मूल्यवान् जीवन में गहराई से पैठना चाहिए और शानदार साहित्यिक और कला कृतियां रचनी चाहिए—ऐसी रचनाएं जो लोगों के विचारों को नये सिरे से ढालने तथा अवाम को क्रान्तिकारी ध्येय की ओर प्रेरित करने में सक्रिय योगदान करे।

मातृभूमि को मुक्त करने और क्रान्ति को सम्पन्न करने के लम्बे, कठिन संघर्ष में जूझने वाले कम्युनिस्ट लड़ाकुओं की प्रतिमाओं के सृजन के साथ-साथ उन्हें इन योद्धाओं की महान क्रांतिकारी भावना में हमारी पीढ़ी को शिक्षित करने में अपने स्तर को और भी ऊंचा करते जाना चाहिये।

सर्वोत्तम साहित्यिक और कला कृति की विलक्षण विशेषता उस उच्च वैचारिक विषयवस्तु और कलात्मक मूल्य पर निर्भर है जो समय के तकाजों और जन आकांक्षाओं के अनुरूप हो। ऐसी बहुमूल्य रचनाएं केवल समाजवादी यथार्थवाद के आधार पर ही रची जा सकती हैं, जोकि वर्तमान समय में रचनात्मक अभिव्यक्ति की एक मात्र सही पद्धति है।

हमारे समाज में उस पूंजीवादी साहित्य और कला के लिए लेशमात्र भी गुंजाइश नहीं है जोकि क्रान्ति के विपरीत जाती है, और लोगों के उत्थान में बाधा डालती है। हमारे पास आज क्रान्तिकारी साहित्य और कला की खोज करने की असीमित संभावनाएं हैं—ऐसे साहित्य और कला की खोज करने की, जो मजदूरों और किसानों की सेवा करेगी। लेखकों और कलाकारों को प्रति-क्रियावादी पूंजीवादी साहित्य और कला द्वारा फैलाये जा रहे सभी विषयों के खिलाफ दृढ़तापूर्वक संघर्ष करना चाहिये और उनको हमारे कम्युनिस्ट साहित्य तथा कला को और ज्यादा जुझारू बनाते हुए उन्हें अधिक ओजस्विता प्रदान करने के लिए अपनी सारी प्रतिभा और रचनात्मक उत्साह लगा देना चाहिए।

साहित्य और कला हमारे लोगों के दिलों को तभी छू सकते हैं, जब समाज-वादी विषय हमारे राष्ट्र की विविध और शानदार विशिष्टताओं से सही ढंग से युक्त हों। हमें अपनी शानदार राष्ट्रीय कला की परम्पराओं को आत्मसात और विकसित करना चाहिए, ताकि हमारे दौर में हमारे पुरखों के समस्त सुन्दर और प्रगतिशील योगदान पूर्णतया देदीप्यमान हो सकें।

हमें अवामी सांस्कृतिक कार्य को कर्मठतापूर्वक विकसित करना चाहिए, अपनी जनता में प्रतिभा की खोज करनी चाहिए, और इस प्रतिभा को पूर्णतया सक्रिय रूप देना चाहिये ताकि मेहनतकश स्वतः साहित्यिक और कलात्मक गतिविधियों में भाग लें और वे जहाँ कहीं भी हों, कला का मनवाञ्छित आनन्द लें।

सांस्कृतिक क्रान्ति की प्रक्रिया में उत्पन्न तमाम कर्तव्यों को पूर्ण रूप से सम्पन्न कर हम अपने देश को आधुनिक विज्ञान और विकसित संस्कृति से ओत-प्रोत एक समुन्नत समाजवदी राज्य में बदला देंगे।

६ : जनता के जीवनस्तर में सुधार

समाजवादी व्यवस्था में इन्सान की परवाह करना सर्वोच्च सिद्धान्त है। इस व्यवस्था में प्रविधि और उत्पादन में निरन्तर प्रगति होती है और इस तरह वे तमाम मेहनतकशों की भौतिक और सांस्कृतिक सुख-समृद्धि को बढ़ावा देते हैं। राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के विकास की सातवर्षीय योजना में समाजवाद के इस सिद्धान्त की ज्वलंत अभिव्यक्ति होती है।

सांगोपांग प्राविधिक नवीनीकरण और उत्पादन में महान उभार के आधार पर यथासंभव अल्प-से-अल्प समय में लोगों के जीवनस्तर में आमूल सुधार लाना हमारी पार्टी के सामने पेश एक महत्वपूर्ण कर्तव्य है।

सातवर्षीय योजना में राष्ट्रीय आमदनी में २·७ गुनी वृद्धि की परिकल्पना की गई है, जोकि १९६७ में युद्ध से पहले के स्तर के ९ गुने से भी अधिक हो जायगी।

हम संचय और खपत में तालमेल बैठाएंगे, ताकि राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के भावी विकास को जनता की तात्कालिक आवश्यकताओं की तुष्टि से ठीक-ठीक जोड़ा जा सके और हम समूचे समाज के हितों को मेहनतकशों के निजी हितों के साथ संयुक्त कर सकें। भविष्य में भी हम संचय की निरन्तर बढ़ोत्तरी आश्वस्त करते हुए राष्ट्रीय आय का एक बड़ा अंश जनता की खपत के लिए आवंटित करते रहेंगे।

सातवर्षीय योजनाकाल के दौरान कारखाना और कार्यालय कर्मचारियों की वास्तविक आमदनी में १·७ गुनी वृद्धि होने की सम्भावना है। इसी अवधि में कारखाना और कार्यालय कर्मचारियों की संख्या बढ़कर १·५ गुनी हो जायेगी। कारखाना और कार्यालय कर्मचारियों के परिवारों के नौकरी करने वाले सदस्यों की संख्या बढ़ती जाएगी, और सात साल में वास्तविक प्रति परिवार आमदनी दुगुनी से अधिक हो जायगी। इसी अवधि में किसानों की वास्तविक आमदनी भी दुगुनी से अधिक हो जाएगी, जोकि उनके आम जीवनस्तर को बढ़ाकर भूतपूर्व अच्छे खाते-पीते मध्यम किसानों के स्तर पर पहुंचा देगी।

हम अर्थतन्त्र की तमाम शाखाओं में मजदूरों के लिए और अधिक युक्ति-संगत वेतन दर और विभिन्न क्षेत्रों में किसानों की आमदनी में भी समान वृद्धि करेंगे। साथ ही जैसा कि हमने हमेशा किया है, हमें कारखाना और कार्यालय कर्मचारियों और किसानों के आम जीवनस्तर में सानुपात वृद्धि के सिद्धान्त का सही तौर पर पालन करना चाहिये।

हमारी पार्टी यथासंभव शीघ्र-से-शीघ्र जनता के ऊपर लगाये गये करों के उन्मूलन की परिकल्पना करती है।

इस समय हमारे राज्यीय राजस्व को सबसे बड़ा अंश समाजवादी राज्यीय उद्यमों में होने वाले संचय से प्राप्त होता है। लोगों से नाममात्र का ही कर राजस्व हासिल होता है। अब जबकि आर्थिक और सांस्कृतिक निर्माण के लिए आवश्यक धन पूर्णतया राजकीय संचय से मिल सकता है, इसलिए हम इन्हीं दिनों में कभी भी करों को सर्वथा समाप्त करने की स्थिति में हो जाएंगे।

कारखाना और कार्यालय कर्मचारियों पर लागू आयकर और किसानों पर लागू जिन्स के रूप में कृषि-कर को उड़ाकर हम अन्तिम रूप से पुराने समाज की देन-कर प्रणाली का उन्मूलन कर देंगे। हम मेहनतकश लोगों को तमाम करों के बोझ से पूर्णतया मुक्त कर देंगे और इस तरह उनकी वास्तविक आमदनी में और

अधिक वृद्धि करेंगे। इस परिकल्पना को साकार रूप केवल कम्युनिस्टों की पार्टी ही दे सकती है, जोकि मेहनतकशों की खुशहाली बढ़ाना अपना नियमानुशासित कार्य मानता है। यह केवल समाजवादी प्रणाली के अन्तर्गत ही संभव है, जहां कि मेहनतकश स्वयं ही देश के स्वामी बन गये हैं।

श्रमजीवी लोगों की आमदनी में वृद्धि के अनुसार हमें जिन्सों की आपूर्ति बढ़ा देनी चाहिए और सार्वजनिक खानपान को और विकसित करना चाहिये।

शहरों और गांवों में फुटकर व्यापार के कारबार के सातवर्षीय योजनाकाल के दौरान बढ़ कर ३·२ गुना हो जाने की संभावना है।

जिन्सों के वितरण ढांचे में भी भारी परिवर्तन संभावित हैं। अब जब कि रोटी, कपड़ा और मकान की समस्याएं मूल रूप से हल हो चुकी हैं, मेहनतकश लोग उच्च-कोटि के खाद्यान्नों और कपड़े तथा अधिक मात्रा में सांस्कृतिक उपयोग की विभिन्न चीजों की मांग करते हैं। हमें यथासंभव कम-से-कम समय में काफी मात्रा में खाना पकाने का तेल और मछलियां उपलब्ध करने की समस्या को सुलझाना चाहिए और सब्जियों, मांस, दूध और अण्डों की आपूर्ति में पर्याप्त बढ़ोत्तरी करनी चाहिए। इसी तरह ओवरकोट और सूट की सामग्री तथा अन्य विभिन्न कपड़ों, अण्डरवियरों, जूतों और साथ ही सिलाई की मशीनों, घरेलू इस्तेमाल के विद्युत उपकरणों, रेडियो, रेफ्रिजरेटरों, बाइसिकलों, फर्नीचरों और दैनिक आवश्यकता की अन्य चीजों की बिक्री भी तेजी से बढ़ायी जानी चाहिए।

हमें व्यापारिक तानेबाने में बिस्तार करके, उसकी सुविधाओं को और आधुनिक बनाकर, चीजों की पैकिंग और डिलीवरी बढ़िया ढंग से करके रात्रि-सेवा की दुकानों या चलते-फिरते स्टालों की स्थापना करके अपने वाणिज्य-व्यवसाय को निर्णायक रूप से आधुनिक बनाना चाहिए और सेवा में सुधार लाना चाहिए।

विभिन्न किस्मों के रेस्तरों की तादाद बढ़ायी जानी चाहिए और सार्वजनिक खान-पान व्यवस्था में गुणात्मक सुधार लाया जाना चाहिए। मेहनतकशों की सुविधा के लिए खाद्यान्न स्टोरों को विविध प्रकार के अनेक पूरक आहार तैयार करने चाहिए।

साथ ही, हमें कपड़े धोने की दूकानों, सार्वजनिक स्नानागारों, नाई की दूकानों और होटलों आदि सार्वजनिक सेवा प्रतिष्ठानों का विस्तार कर मेहनतकश लोगों को बेहतर सेवा उपलब्ध करनी चाहिए।

अपने मेहनतकशों की आवास समस्या का बेहतर हल खोजने के लिए बड़े पैमाने पर नये घरों का निर्माण शुरू किया जाना चाहिए।

सातवर्षीय योजनाकाल के दौरान शहरों और मजदूरों के जिलों में

६,००,००० परिवारों के लिए नये फ्लैट निर्मित किये जायेंगे। अधिक आकर्षक, आधुनिक और सुविधाजनक मकानों के निर्माण के लिये मानक डिजाइनें विकसित की जानी चाहिए। बड़े-बड़े नगरों में क्रमिक रूप से केन्द्रीय तापन प्रणाली लागू की जानी चाहिए।

सातवर्षीय योजना में देहाती क्षेत्रों में ६,००,००० आधुनिक मकान निर्मित करने की भी परिकल्पना की गई है। इस व्यापक निर्माण कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए राज्य को प्रत्येक काउंटी में एक ग्रामीण निर्माण दल का गठन करना चाहिये, जो किसानों के वास्ते सुविधाजनक, आरामदेह मकान बनाने के लिए एक दीर्घकालिक कार्यक्रम का अनुसरण करे। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत अगले कुछ सालों में ग्रामवासियों का विशाल बहुमत पुराने फूस के घरों से नये आधुनिक मकानों में जा सकेगा।

राज्य बजट के खर्चों से मेहनतकशों को जो अतिरिक्त लाभ मिलते हैं, उनमें बड़े पैमाने पर वृद्धि होगी।

सामाजिक सुरक्षा के मद में अधिक खर्च किया जायेगा तथा ज्यादा वित्तीय मदद तथा अधिक पेंशनें दी जा सकेंगी और अधिकाधिक मेहनतकश राज्य के अवकाश केन्द्रों, स्वास्थ्य लाभ केन्द्रों और शिविरों में मुफ्त छुट्टियां बिता सकेंगे।

शिक्षा, संस्कृति और सार्वजनिक स्वास्थ्य के विकास पर राज्यीय व्यय में वृद्धि से लोगों के सांस्कृतिक जीवन का और अभ्युत्थान होगा। सातवर्षीय योजना के अन्तिम वर्ष में हमारे देश में सभी स्तरों के स्कूलों में कुल प्रवेश संख्या बढ़ कर ३१,००,००० से अधिक हो जाएगी, जिनमें से २,२०,००० से अधिक उच्चतर शिक्षा संस्थानों के छात्र होंगे। हम आसानी से कल्पना कर सकते हैं कि छात्रों की इतनी बड़ी तादाद को मुफ्त शिक्षा देने और विशिष्ट स्कूलों तथा कालेजों में छात्रों को सरकारी वजीफे देने पर राज्य को कितना भारी व्यय वहन करना होगा। ऐसे राज्यीय व्यय और अन्य सामाजिक तथा सांस्कृतिक जरूरतों पर खर्च केवल हमारे कारखाना मजदूरों, कार्यालय कर्मियों और किसानों की सुख-सुविधा के लिए ही किये जाते हैं।

हमारी समाज-व्यवस्था में मानव से बढ़ कर और कुछ भी अधिक कीमती नहीं है। मानव के जीवन की रक्षा और श्रमजीवी लोगों के स्वास्थ्य की अभिवृद्धि के लिए हमें सार्वजनिक स्यास्थ्य सेवा को विकसित करते रहना होगा। शहरों और काउंटियों में सार्वजनिक अस्पतालों और प्रत्येक री में चिकित्सालयों को विस्तृत किया जाना चाहिए तथा ज्यादा डाक्टरों को नियुक्त किया जाना चाहिए, ताकि निकट भविष्य में एक समुन्नत चिकित्सा सेवा—प्रभाग चिकित्सा देख-रेख प्रणाली लागू की जा सके। साथ ही विभिन्न स्थानों में और ज्यादा प्रसूति-गृह,

बच्चों के अस्पताल, क्षयरोग के अस्पताल और अन्य विशिष्ट रोगों के अस्पताल कायम किये जाने चाहिए और हमारे मुख्य-मुख्य गर्म जल के सोतों और खनिज सोतों के आसपास और अधिक स्वास्थालय निर्मित किये जाने चाहिए। सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में निरोधक दवाइयों की व्यवस्था को मजबूती से कायम रखा जाना चाहिये और शहरी और देहाती क्षेत्रों में सफाई और संक्रामक रोग विरोधी काम नियमित रूप से और जोरदार ढंग से किये जाने चाहिए।

हमें और ज्यादा नर्सरी स्कूल और बाल-बाड़ियां (किंडरगार्टन) निर्मित करने चाहिए और उनका काम मूलगामी तौर पर सुधारना चाहिए जिससे भविष्य की आशा अपने बच्चों की उत्तम-से-उत्तम देखभाल हो सके, और माताओं के जीवन को अधिक सुख-सुविधा से संपन्न बनाना चाहिए।

इस तरह हमें यह आश्वस्त करना होगा कि तमाम मेहनतकश नर-नारी अधिक सुविधा से काम करें और भरा-पूरा तथा सुसंस्कृत जीवन बितायें।

साथियो,

राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के विकास की सातवर्षीय योजना हमारे देश के इतिहास में सर्वाधिक दूरगामी और दीर्घकालीन योजना है। यह वतन की खुशहाली और प्रगति के लिए तथा जनता की सुख-समृद्धि के लिए आर्थिक और सांस्कृतिक निर्माण की एक शानदार रूपरेखा है। आर्थिक विकास की उच्च गति की परि-कल्पना करने वाली यह विशाल योजना हमारे देश की स्थिति के तकाजों को प्रतिबिम्बित करती है और यह पूर्णतया हमारी जनता की आकांक्षाओं के अनुरूप है।

हमारी सातवर्षीय योजना सम्पन्न हो जाने पर हमारा देश पहले की अपेक्षा कहीं अधिक मजबूत हो जायेगा और हमारा समाज एक नया रूप ले लेगा।

सातवर्षीय योजना के अन्त में हमारे पास एक विकसित समाजवादी उद्योग होगा, जो हमेशा राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के तमाम क्षेत्रों को नये और अधिक कारगर यन्त्र और उपकरण उपलब्ध करने में और तमाम लोगों की जरूरतों को सन्तोष-जनक ढंग से पूरा करने में सक्षम होगा। हम बड़े पैमाने पर अपने देश की प्रकृति का भी कायाकल्प कर देंगे और कृषि को आधुनिक यन्त्रों तथा प्रविधि से सज्जित कर प्रतिवर्ष भारी परिमाण में पैदावार प्राप्त करेंगे। हमारे शहर और देहात अधिक सुन्दर बन जाएंगे और हमारी जनता के जीवन के तमाम पहलू शानदार, आधुनिक और अधिक आनन्दमय बन जाएंगे।

सातवर्षीय योजना की पूर्ति हमारे देश की आम स्थिति पर गहरा असर डालेगी। गणतन्त्र के उत्तरी आधे भाग में हमारी क्रान्तिकारी बुनियाद एक अजेय दुर्ग बन जाएगी और देश के पुनरेकीकरण तथा भावी खुशहाली के लिए राष्ट्रीय

अर्थतन्त्र की नींव मजबूत होगी। यह दक्षिण कोरिया के लोगों को नये जीवन के लिए संघर्ष करने की दिशा में प्रेरित करेगी।

पार्टी द्वारा प्रस्तुत समाजवादी निर्माण के महान कार्यक्रम को सम्पन्न करने के लिए यह जरूरी है कि राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के तमाम क्षेत्रों में निरन्तर तकनीकी नवीनीकरण लागू किये जाएं, अपने समस्त साधनों को पूर्णतया इकट्ठा किया जाए और सख्त किफायतशारी की प्रणाली लागू की जाए।

तकनीकी विकास को बढ़ावा देकर, मेहनतकश लोगों की तकनीक और कौशल का स्तर ऊंचा कर और जनता में काम के प्रति कम्युनिस्ट रवैया पनपाते हुए श्रम के संगठन में लगातार सुधार कर हमें पूरे अर्थतन्त्र की श्रम-उत्पादकता में निर्णायक रूप से वृद्धि लानी चाहिए।

साथ ही श्रम साधनों का अधिक कारगर उपयोग करके, हर तरीके से विद्युत, कोयला, धातु, इमारती लकड़ी और अन्य सामग्रियों की बचत करके और गैर-उत्पादक खर्चों में कटौती करके हमें उत्पादन और निर्माण खर्चों में योजनाबद्ध ढंग से कमी करनी होगी।

तमाम मेहनतकश लोगों को हमेशा गहन और सादा जीवन बिताना चाहिए, फिजूलखर्ची और हर प्रकार की भ्रष्टता का मुकाबला करना चाहिए और समाजवाद के निर्माण के लिए समस्त क्षमताओं को सक्रिय रूप से लगाना चाहिए।

समाजवाद की पूर्ण विजय को त्वरित करने के लिए तमाम पार्टी सदस्यों और मेहनतकशों को उत्सुकतापूर्वक विज्ञान और प्रविधि का अध्ययन करना चाहिए, प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करते हुए हमेशा अधिकाधिक जोश के साथ काम करना चाहिए, अपने उत्पादों की गुणात्मक और परिमाणात्मक स्थिति बढ़ानी चाहिए और निर्माण को अधिक शीघ्रता से पूरा करना चाहिए।

यदि हम अपने युग के महान छोलिमा आन्दोलन को आगे बढ़ाते जायें और पार्टी के आम दृष्टिकोण पर चलते रहें तो ऐसी कोई चोटी नहीं, जिसे हम फतह न कर सकें।

नित्य नये-नये लोगों को उजागर करने वाली विजयी समाजवादी व्यवस्था देश की उत्पादक शक्तियों के विकास को जोरदार गति प्रदान कर रही है। स्वतन्त्र अर्थतन्त्र के लिए हम जो बुनियाद कायम कर चुके हैं, उसकी संभावनाएं विपुल हैं।

तमाम मजदूर, किसान और बुद्धिजीवी हमारी पार्टी के इर्द-गिर्द पहले की तुलना में कहीं अधिक दृढ़ता से एकजुट हो गये हैं—उस पार्टी के इर्द-गिर्द, जो उन्हें खुशहाली और गौरवपूर्ण जीवन की ओर ले जा रही है। उन्हें दृढ़ विश्वास है कि उनका भविष्य उज्ज्वल है और विजय उन्हीं की होगी।

समाजवाद के पथ पर हमारे देशवासी बिना रुके छोलिमा गति से आगे

बढ़ते जा रहे हैं। जिस प्रकार उन्होंने तमाम कठिनाइयों और दिक्कतों को पार कर सफलतापूर्वक समाजवाद की बुनियादें कायम की हैं, उसी प्रकार वे पार्टी द्वारा निर्धारित महान दूरगामी कर्तव्यों को पूरा करने तथा समाजवाद के ऊंचे शिखर को जीतने की नयी लड़ाई में निश्चित रूप से एक और शानदार विजय प्राप्त करेंगे।

३ : देश के शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण के लिए

साथियो,

समीक्षाधीन अवधि के दौरान दक्षिण कोरिया की स्थिति में जबरदस्त परिवर्तन हुआ है। उत्तर कोरिया में समाजवादी निर्माण की महान उपलब्धियों ने कोरिया में क्रान्ति और प्रतिक्रान्ति के मध्य शक्तियों के सन्तुलन को निर्णायक ढंग से क्रान्तिकारी शक्तियों के पक्ष में मोड़ दिया है।

इस समय दक्षिण कोरियाई घटनाक्रम का मुख्यतः रुझान यह है कि जहां देश के शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण और जनतन्त्र के लिए संघर्षरत क्रान्तिकारी शक्तियां निरन्तर सुदृढ़ होती जा रही हैं, वहां आम अवाम से अलग-थलग होकर प्रति-क्रान्तिवादी शक्तियां अपनी बंद गली से बाहर निकलने के अन्तिम प्रयास के रूप में फौजी आतंकवाद के दुस्साहसपूर्ण हथकंडों पर उतर आई हैं।

पिछले साल की वसन्त में अमरीकी औपनिवेशिक शासन के अन्तर्गत भ्रष्टा-चार और आतंकवाद को और अधिक न सह सकते हुए दक्षिण कोरिया के लोग अन्ततः एक नई सरकार और नए जीवन का झंडा बुलन्द कर वीरोचित प्रति-रोधात्मक संघर्ष के लिए उठ खड़े हुए और उन्होंने सिंगमन-री सरकार को उलट कर रख दिया। यह राष्ट्र को बचाने के अपने संघर्ष में उनकी एक महान विजय थी। यह कोरिया में हमले की अमरीकी साम्राज्यवादी नीति पर एक घातक प्रहार था।

अप्रैल जन-उभार राष्ट्रीय मुक्ति के लिए दक्षिण कोरिया की जनता के अमरीका-विरोधी संघर्ष में एक नया मोड़ था। इस प्रतिरोध के दौरान दक्षिण कोरियाई लोगों की राजनीतिक चेतना में उल्लेखनीय अभिवृद्धि हुई। उन के प्रतिरोध के वेग ने संघर्ष के रुख को धीरे-धीरे अमरीकी साम्राज्यवाद के विरुद्ध मोड़ना शुरू कर दिया।

दक्षिण कोरिया का जन-उभार और बाद का घटनाक्रम स्पष्ट करते हैं कि अमरीकी साम्राज्यवादी कदापि दक्षिण कोरियाई लोगों को दबा नहीं सकते, चाहे वे कितना भी खूनी दमन क्यों न करें।

छांग म्योन हुकूमत के समाप्त होने पर दक्षिण कोरिया में राजनीतिक और आर्थिक संकट अत्यन्त उग्र हो गया। जनता के लिए जीवन दूभर हो गया और दिन-प्रतिदिन भ्रष्टाचार और सामाजिक अव्यवस्था में बदतरी आने लगी।

लोगों के व्यापक तबकों में यह अनुभूति और भी अधिक तेज हो गयी कि बगैर देश के पुनरेकीकरण के वे अपनेआप को गरीबी, अधिकारों के पूर्णतया अभाव और औपनिवेशिक दासता से मुक्त नहीं करा सकते। उत्तर-दक्षिण आवागमन, देश के स्वतन्त्र शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण और उत्तर-दक्षिण वार्ता की मांगों को लेकर एक अवामी संघर्ष बड़े जोरों से विकसित हुआ। दक्षिण कोरिया के युवक और छात्र उत्तर-दक्षिण वार्ता और आवागमन का प्रस्ताव लेकर उठ खड़े हुए और विशाल जन-समूहों ने उनका साथ दिया। बड़ी तेजी से आम रुझान देश के शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण का समर्थन करने वाले लोगों के समूहों के पक्ष में हो गया।

एक मुश्किल स्थिति में फंसने पर अमरीकी साम्राज्यवादियों और दक्षिण कोरियाई प्रतिक्रियावादियों ने अपने संकटपूर्ण शासन को बनाए रखने का यत्न करते हुए एक फासिस्ट सैनिक तानाशाही की स्थापना की दुस्साहसिक कार्यवाही शुरू कर दी।

दक्षिण कोरिया में अधिनायकवादी सैनिक शासन की स्थापना इस तथ्य को पुष्ट करती है कि कोरिया में अमरीकी साम्राज्यवादियों की स्थिति मजबूत नहीं हुई, बल्कि कमजोर हुई है। भले ही वे कुछ भी करें, अमरीकी साम्राज्यवादी दक्षिण कोरिया में पस्त हो चुके और टूटते हुए औपनिवेशिक शासन को किसी हालत में भी बचा नहीं सकते। फासिस्ट सैनिक शासन तो जनता के संघर्ष को और भी अधिक भड़काएगा और दक्षिण कोरिया में अमरीकी साम्राज्यवादी औपनिवेशिक शासन के अन्ततोगत्वा पतन को तेज करेगा।

आज दक्षिण कोरिया अंधकारपूर्ण धरती में—जहां तमाम जनवादी आजादियों और अधिकारों का हनन हो गया है—जनता की वधशाला में, जहां व्यापक आतंकवाद और हत्याओं का दौर-दौरा चल रहा है, बदल दिया गया है। दक्षिण कोरिया के सैनिक शासन ने तमाम राजनीतिक पार्टियों और सामाजिक संगठनों को भंग कर दिया है, तमाम प्रगतिशील समाचारपत्रों को बंद कर दिया है और अब तक वह एक लाख से अधिक देशभक्तों और निर्दोष लोगों को गिरफ्तार कर जेल में डाल चुकी है या उनका संहार कर चुकी है।

राजनीतिक अराजकता और असन्तोष दक्षिण कोरिया में प्रबलता से बढ़ रहे हैं और सैनिक क्षेत्रों के बीच अंतर्विरोध तथा टकराव विस्मयकारी गति से तेज हो रहे हैं। दक्षिण कोरियाई अर्थतन्त्र बद से बदतर होता जा रहा है और पूरे

दक्षिण में व्यापक भुखमरी कहर ढा रही है। जब तक अमरीकी साम्राज्यवाद दक्षिण कोरिया पर हावी रहेगा, स्थिति बदल नहीं सकती।

दक्षिण कोरिया के सैनिक हुक्मरान अब "सुधार", "एक आत्मनिर्भर अर्थ-तन्त्र के निर्माण" और "जनता में राहत" की बड़ी-बड़ी बातें कर रहे हैं। लेकिन ये जन-असन्तोष को शान्त करने और फासिस्ट दमन को तेज करने के धोखे से भरे प्रयासों के सिवाय कुछ भी नहीं है। दक्षिण कोरिया की घटनाएं साफतौर पर उद्घाटित कर रही हैं कि ये नारे सिवाय खोखले नारों के और कुछ भी नहीं हैं।

दक्षिण कोरिया में सत्ता पूर्णतया अमरीकी साम्राज्यवादियों के हाथों में है। जब तक अमरीकी साम्राज्यवाद के औपनिवेशिक शासन का सफाया नहीं कर दिया जाता, तब तक दक्षिण कोरिया में जो भी सरकार बनेगी, वह अनिवार्य रूप से अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके दलालों-जमींदारों और दलाल पूंजी-पतियों—के हितों का ही प्रतिनिधित्व करेगी और दक्षिण कोरियाई जनता की हालत में सुधार की आशा नहीं की जा सकती।

"मदद" के जरिए अमरीकी साम्राज्यवादियों ने दक्षिण कोरिया के अर्थतन्त्र की मुख्य धमनियों को अपने कब्जे में ले लिया है और उन्हें अपने फौजी मकसदों का पूरक बनाकर दक्षिण कोरिया में राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के स्वतन्त्र विकास के मार्ग को पूर्णतया रोक दिया है। अमरीकी साम्राज्यवाद का सैनिक अनुवर्ती बना दिये जाने पर दक्षिण कोरियाई अर्थतन्त्र को निश्चित विनाश का सामना करना पड़ रहा है।

दक्षिण कोरिया का उद्योग दिवालिया हो गया है। अमरीकी एकाधिकारी पूंजी और दलाल पूंजी द्वारा कुचला जा रहा राष्ट्रीय उद्योग और भी अधिक विघटित हो रहा है और दिवालियापन तथा विनाश की ओर तेजी से बढ़ रहा है। राष्ट्रीय पूंजीपतियों के उद्यमों में भारी बहुसंख्या मध्यम और लघु आकार की इकाइयों की है और इस समय इनमें से ८० प्रतिशत से अधिक या तो बंद पड़ी हैं या कम क्षमता से काम कर रही हैं।

आज दक्षिण कोरिया का नाम मात्र का उपभोक्ता उद्योग प्राय: पूर्णतया अमरीकी यन्त्रों, उपकरणों और कच्चे माल पर निर्भर है। अधिकांश उद्योग युद्ध उद्योग हैं, जो अमरीकी भाड़े के टट्टुओं को मौके पर पूरक युद्ध सामग्रियां उपलब्ध करते हैं। इस युद्ध उद्योग के आका अमरीकी साम्राज्यवाद के अधीन दलाल पूंजीपति हैं।

दक्षिण कोरिया के बाजारों में समुद्र पार के अमरीकी मालों की बाढ़ आयी हुई है और अमरीकी "सहायता" से किया जाने वाला आयात दक्षिण कोरिया के

कुल आयातों का ८० प्रतिशत है, जबकि आयातों का कुल कारबार निर्यातों के पूरे कारबार से २० गुना है ।

इस तरह आज भी दक्षिण कोरिया बगैर स्वतन्त्र उद्योग के एक पिछड़ा कृषि क्षेत्र बना हुआ है ।

उद्योग का दिवाला पिटने के साथ-ही-साथ दक्षिण कोरिया के ग्राम्य अर्थ-तन्त्र को भी सर्वथा ध्वस्त कर दिया गया है ।

गांवों में अब भी जागीरदारी-जमींदारी का बोलवाला है । किसानों के लिए "वितरित भूमि" का बड़ा भाग फिर से जमींदारों और धनी किसानों के कब्जे में चला गया हैं और किसान निर्मम जागीरदारी शोषण का शिकार हो रहे हैं ।

अमरीकी साम्राज्यवादियों और जमींदारों की लूट और शोषण ने न केवल दक्षिण कोरिया की कृषि के विकास को रोक रखा है, बल्कि उसे जिस हद तक निचोड़ा जा सकता था, निचोड़ भी लिया है । मुक्ति-पूर्व के वर्षों की तुलना में खेती की भूमि दो लाख छोंगबो कम हो गयी है और बुवाई क्षेत्र चार लाख छोंग-बो कम हो गया है । अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामक सेनाओं ने सैनिक प्रयोग के लिए दक्षिण कोरियाई किसानों से एक लाख छोंगबो से अधिक भूमि अधि-ग्रहीत कर ली है । दिवालिया उद्योग और पूर्णतया विघटित ग्राम्य अर्थतन्त्र के साथ कृषि प्रविधि भयावह हद तक पिछड़ गयी है ।

कृषि उत्पादक शक्तियों के विनाश और निश्चलता ने उत्पादन में भारी गिरावट ला दी हैं । १९६० में अन्न की उपज १९३७ के मुक्ति पूर्व-स्तर के दो तिहाई पर आ गिरी ।

आर्थिक दिवालियापन और जमींदारों तथा दलाल पूंजीपतियों के निर्मम शोषण ने मेहनतकश लोगों को अवर्णनीय कष्टपूर्ण स्थिति में ला पटका है ।

साठ लाख से अधिक लोग अर्थात दक्षिण कोरिया की आधी श्रमिक शक्ति लम्बे समय से बेरोजगार या अर्ध-बेरोजगार हैं ।

दक्षिण कोरिया की सरकार प्रतिवर्ष अपने बजट का ७० प्रतिशत से अधिक धन सैनिक व्यय के लिए नियत करती है । इसे पूरा करने के लिए वह और भी ज्यादा टैक्स लगा रही है । बहुत ही बढ़े-चढ़े सैन्य व्यय से उत्पन्न मुद्रास्फीति में वृद्धि मेहनतकश लोगों पर भारी बोझ डालती है । १९४९ के मुकाबले में जुलाई १९६१ में जारी मुद्रा का परिमाण बढ़कर २०६ गुना हो गया और चीजों के मूल्य १२६ गुने । युद्ध के बाद सात सालों में दक्षिण कोरियाई लोगों पर टैक्सों का भार १० गुना से अधिक बढ़ा है । मजदूरों को १०-१८ घंटे प्रतिदिन काम करने को बाध्य किया जाता है, जबकि उन का पारिश्रमिक न्यूनतम जीवन-यापन व्यय के लिए आवश्यक आमदनी के एक तिहाई से भी कम है ।

किसानों के विशाल समूह जमींदारों और साहूकारों के ऋणी-गुलाम बनकर रह गए हैं। युद्धोत्तर-काल में किसानों पर ऋण २० गुना हो गये हैं। हर साल दसियों हजार किसान परिवार तबाह होते हैं और वे कृषि से हटने को बाध्य किये जाते हैं। उधर उद्योग तबाह हुई ग्रामीण आबादी को खपा नहीं सकता। अतः उनमें से अधिकांश भिखारी बन कर दर-दर घूम-फिर रहे हैं।

यह परिणाम है—अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके पिट्ठुओं के १६ वर्षीय शासन का। दक्षिण कोरिया को अमरीका द्वारा प्रदत्त "मदद" का यह परिणाम है।

दक्षिण कोरिया पर अमरीकी सैन्य आधिपत्य और उनकी आक्रामक नीति हमारे देश के शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण और दक्षिण कोरियाई समाज के जनवादी विकास में मुख्य बाधाएं हैं। वे दक्षिण कोरियाई जनता की तमाम वर्तमान पीड़ाओं और दुर्भाग्यों की बुनियाद हैं। अमरीकी साम्राज्यवादियों ने दक्षिण कोरिया को अपने उपनिवेश और सैन्य अड्डे में परिणत कर दिया है। वे कोरिया में शान्ति के लिए निरन्तर खतरा उत्पन्न कर रहे हैं और हमारे देश के शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण को रोकने के लिए जो कुछ कर सकते हैं, वह सब कर रहे हैं। उन्होंने दक्षिण कोरियाई अर्थतन्त्र को सर्वथा नष्ट कर दिया है, दक्षिण के लोगों को अकाल और गरीबी के गहरे गर्त में ठेल दिया है और समूचे दक्षिण कोरिया को आतंकवाद और अत्याचारों के एक जीवित नरक में बदल दिया है। अमरीकी लुटेरों के जुल्मों के कारणवश असंख्य देशभक्त और निर्दोष ग्रामीण अपना खून बहा रहे हैं और दक्षिण कोरिया में हमारी बहनें अपमानित और प्रताड़ित की जा रही हैं।

आज कम्युनिस्ट हमले से दक्षिण कोरिया की "रक्षा करने" की आड़ में अमरीकी साम्राज्यवादी युद्ध की अपनी तैयारियों को तेज कर रहे हैं और वे दक्षिण कोरियाई लोगों को अपने भाइयों के साथ जा टकराने को मजबूर करने की जहरीली योजना बना रहे हैं।

अमरीकी साम्राज्यवाद दक्षिण कोरिया में जन संघर्ष का मुख्य निशाना और तमाम कोरियाई जनता का कट्टर दुश्मन है। जब तक अमरीकी सशस्त्र सेनाएं दक्षिण पर आधिपत्य जमाये रहेंगी, तब तक हम कोरिया में स्थायी शान्ति और देश के शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण की आशा नहीं कर सकते, और दक्षिण कोरियाई जनता वास्तविक स्वतन्त्रता तथा मुक्ति हासिल नहीं कर सकती।

दक्षिण कोरिया में अपने औपनिवेशिक शासन को बनाये रखने में अमरीकी साम्राज्यवादी जमींदारों, दलाल पूंजीपतियों और प्रतिक्रियावादी नौकरशाहों पर निर्भर हैं जो उनके आक्रमण में गाइडों और वफादार सहयोगियों के रूप में उनकी

सेवा करते हैं। अमरीकी साम्राज्यवादी संरक्षण के अन्तर्गत जमींदार वर्ग किसान अवाम का निर्दयतापूर्वक शोषण और दमन करता है। दलाल पूंजीपति अमरीकी चीजें और पूंजी लाकर, अपने देश के प्राकृतिक साधनों को लूट कर और उन्हें अपने आकाओं के पास बेच कर तथा अमरीकी भाड़े के टट्टुओं को युद्ध सामग्रियां उपलब्ध कर अपने खजाने भर रहे हैं।

इस तरह दक्षिण कोरिया की क्रान्ति साम्राज्यवाद के खिलाफ एक अमरीकी साम्राज्यवादी राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति है और इसके साथ ही सामंती शक्तियों के खिलाफ एक लोकतन्त्री क्रान्ति है। इस क्रान्ति का बुनियादी तकाजा है कि अमरीकी साम्राज्यवाद की आक्रामक शक्तियों को कोरिया से बाहर धकेला जाए, उसके औपनिवेशिक शासन को चकनाचूर किया जाय और दक्षिण कोरियाई समाज में जनवादी विकास तथा देश का पुनरेकीकरण प्राप्त किया जाए।

साथियो,

साम्राज्यवाद-विरोधी, सामंतवाद-विरोधी संघर्ष के सफलतापूर्वक संचालन और विजय प्राप्ति के लिए दक्षिण कोरियाई लोगों के पास एक ऐसी क्रान्तिकारी पार्टी का होना जरूरी है, जो मार्क्सवाद-लेनिनवाद से मार्गदर्शन ग्रहण करती हो और जो मजदूरों-किसानों और आम लोगों के अन्य विशाल तबकों के हितों का प्रतिनिधित्व करती हो। बगैर ऐसी राजनीतिक पार्टी के लोगों के लिए स्पष्टत: एक लड़ाकू कार्यक्रम का निर्धारण क्रान्तिकारी जनता की ठोस एकजुटता की स्थापना और सुसंगठित ढंग से जन-संघर्ष का संचालन करना असम्भव है।

चूंकि वहां कोई क्रान्तिकारी पार्टी न थी और संघर्ष का कोई साफ-साफ कार्यक्रम न था और चूंकि इस कारणवश मुख्य अवाम—मजदूर और किसान प्रतिरोध में व्यापक रूप से भाग लेने में असफल रहे, इसलिये अप्रैल जन-उभार को सुसंगठित ढंग से सफलतापूर्वक सम्पन्न न किया जा सका और फिर अमरीकी साम्राज्यवाद के नये पिट्ठुओं ने दक्षिण कोरियाई जनता को उन सफलताओं से वंचित कर दिया, जिसे उसने अपना खून बहाकर प्राप्त किया था। इसके अलावा क्रान्तिकारी पार्टी के नेतृत्व का अभाव था और मजदूर, किसान तथा सैनिक अवाम जागरूक नहीं थे। अत: दक्षिण कोरियाई लोग सेना के ऊपरी स्तरों के फासिस्ट तत्वों द्वारा सत्ता हथियाए जाने को रोक न सके और जनवादी अधिकारों पर शत्रु के प्रहार के विरुद्ध एक कारगर जवाबी प्रहार संगठित न कर सके।

दक्षिण कोरिया की जनता को इस कटु अनुभव से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। उसे किसानों और मजदूरों की एक स्वतन्त्र पार्टी—आम लोगों में गहरी जड़े रखने वाली पार्टी—का निर्माण करना होगा और उसके लिए कानूनी

मान्यता प्राप्त करनी होगी।

दक्षिण कोरिया में मेहनतकश लोगों द्वारा गठित की जाने वाली इस राजनीतिक पार्टी को तमाम देशभक्त शक्तियों को एकजुट करना होगा और पूर्णतया साम्राज्यवाद-विरोधी, सामंतवाद-विरोधी कार्यक्रम तथा दक्षिण कोरियाई जनता की अत्यावश्यक मांगों की सफलता के लिये लड़ाई लड़नी होगी।

दक्षिण कोरियाई लोगों के सामने पहला काम यह है कि अमरीकी साम्राज्यवादियों द्वारा दक्षिण कोरिया के आधिपत्य के खिलाफ लड़ाई लड़ी जाए और आक्रान्ता अमरीकी सेनाओं की वापसी के लिए संघर्ष किया जाए।

दक्षिण कोरियाई लोगों को "कम्युनिस्ट हमले" की रोकथाम के बहाने हमारे भाइयों को एक-दूसरे के खिलाफ भिड़ाने के अमरीकी साम्राज्यवादियों के जघन्य मन्सूबों को पूर्णतया बेनकाब कर उन्हें कुचल देना होगा। कोरियाई लोग भाइयों के बीच कोई टकराव नहीं चाहते। हमारे बीच अलग-अलग विचार और अलग-अलग राजनीतिक दृष्टिकोण हो सकते हैं, लेकिन मतभेद युद्ध का कारण तो क्या, देश के शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण में भी बाधक नहीं होने चाहिये। "कम्युनिस्ट आक्रमण" की शब्दावली अमरीकी साम्राज्यवादियों द्वारा गढ़ा गया एक झूठ है और यह दक्षिण कोरिया पर अपने आधिपत्य को न्यायोचित सिद्ध करने, पूरे कोरिया पर हमला करने के अपने इरादे पर पर्दा डालने और दक्षिण में लोगों को डराने-धमकाने के ढकोसले के सिवाय और कुछ भी नहीं है।

आक्रमण की अमरीकी साम्राज्यवादी नीतियों और युद्ध की तैयारियों को परास्त करने के लिए दक्षिण कोरियाई लोगों को एक सर्वजन प्रतिरोध का परिचम बुलन्द करना होगा। युवकों की बलात् भरती के विरुद्ध लड़ना होगा। शत्रु द्वारा शस्त्रास्त्रों के उत्पादन और युद्ध सामग्री के आवागमन को रोकने के लिए मजदूरों को काम धीरे-धीरे करने के अभियानों और हड़तालों का आयोजन करना होगा और दक्षिण कोरिया में तमाम लोगों को सैनिक अड्डों और प्रतिष्ठानों के निर्माण के विरुद्ध लड़ना होगा।

दक्षिण कोरिया के लोगों को अमरीकी सेनाओं की दस्युतापूर्ण कार्रवाइयों —हमारे देश भाइयों का तिरस्कार, लूट और संहार की दृढ़तापूर्ण भर्त्सना करनी होगी और उन्हें कुचलना होगा तथा आक्रान्ताओं के मुंह में लगाम लगानी होगी ताकि वे अंधाधुंध कुछ न कर सकें। उन्हें किसी भी तरह अमरीकी आक्रान्ता सेना के साथ सहयोग से दृढ़तापूर्वक इन्कार करना होगा और उन्हें एक दाना चावल या एक बूंद जल तक नहीं देना होगा। यह जरूरी होगा कि आक्रान्ताओं को गुस्से में भरे लोगों के प्रतिरोध के सामने भय से थर-थर कांपने को बाध्य कर दिया जाये और अपनी धरती पर आक्रान्ताओं के खड़े होने के लिए एक फुट जमीन

भी न रहने दी जाये। इस तरह आक्रमण की अमरीकी सेनाओं को यथाशीघ्र वापस जाने को बाध्य किया जाना चाहिए, दक्षिण कोरिया और अमरीका के बीच बेड़ियों में जकड़ने वाली तमाम सैनिक और आर्थिक संधियों को रद्द किया जाना चाहिए और अमरीकी औपनिवेशिक बेड़ियों को हमेशा-हमेशा के लिए काट दिया जाना चाहिए।

जब दक्षिण कोरिया में तमाम देशभक्त शक्तियां दृढ़तापूर्वक एकजुट हो जाएंगी और दृढ़संकल्प से अमरीका-विरोधी संघर्ष के लिए उठ खड़ी होंगी तो अमरीकी साम्राज्यवादी हमारे इलाके से चिपके रहना संभव न पाएंगे और वे अनिवार्य रूप से दक्षिण कोरिया से धकेल बाहर किये जाएंगे।

इसके साथ ही दक्षिण कोरियाई जनता को जमींदारों और दलाल पूंजीपतियों द्वारा, जोकि अमरीकी साम्राज्यवादियों से मिले हुए हैं, शोषण और दमन के खिलाफ संघर्ष करना होगा। उन्हें दक्षिण कोरियाई समाज के जनवादी विकास के लिए भी लड़ना होगा।

इस समय दक्षिण कोरिया में यह जोरदार मांग उठ रही है कि सामाजिक और राजनीतिक जीवन का जनतन्त्रीकरण किया जाए, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में जनवादी सुधार लागू किये जाएं और जन-जीवन के हालात की समस्या को सुलझाया जाए।

दक्षिण कोरियाई सैनिक शासन ने जनता को निहायत प्राथमिक जनवादी अधिकारों से भी वंचित कर दिया है और उसके हाथों-पैरों को बेड़ियों से जकड़ दिया है।

दक्षिण कोरियाई सैनिक शासक जनता के फासिस्ट दमन को तेज कर रहे हैं और कम्युनिज्म से लड़ने के बहाने मनमाने ढंग से भारी संख्या में देशभक्तों को पकड़कर कारागार में बंद कर रहे हैं। उनके अत्याचार इस असहाय स्थिति को पहुंच गये हैं कि संवाददाताओं को मात्र इसलिए मृत्युदण्ड सुना रहे हैं कि वे अमरीकी साम्राज्यवादियों के वापस जाने और बिना बाहरी हस्तक्षेप के पुनरेकीकरण संपन्न किये जाने के पक्ष में हैं।

दक्षिण कोरिया के लोगों को फासिस्ट तानाशाही का सिर कुचल देना होगा और अपनी जनवादी आजादियों तथा अधिकारों के लिए लड़ना होगा। भाषण, प्रेस, संस्थागठन, जलसे, प्रदर्शन और हड़ताल की आजादी को आश्वस्त और तमाम राजनीतिक पार्टियों तथा सामाजिक संगठनों के लिए गतिविधियों की स्वतन्त्रता को बहाल किया जाना चाहिए। सैनिक हुक्मरान के बर्बरतापूर्ण आतंकवाद को अवश्य ही अविलंब बंद किया जाना चाहिए। गिरफ्तार या जेलों में पड़े तमाम देशभक्त राजनीतिक बंदियों और निर्दोष लोगों को तत्काल रिहा किया जाना

चाहिए और अमरीकी साम्राज्यवाद के गुर्गों और राष्ट्र के गद्दारों, दोनों तत्वों को दंडित किया जाना चाहिए।

दक्षिण कोरिया में जनवादी क्रान्ति के समक्ष प्रस्तुत सर्वाधिक महत्व के कर्तव्यों में एक है भूमि समस्या का समाधान। जब तक यह समस्या हल नहीं हो जाती और कृषि-उत्पादक शक्तियां उनकी सामंती बेड़ियों से मुक्त नहीं कर दी जातीं, तब तक किसानी अवाम को, जो दक्षिण कोरिया की कुल आबादी के ७० प्रतिशत से भी अधिक है, न तो भूख और गरीबी से बचाया जा सकता है और न ही उनकी जीवन स्थितियों को स्थिर किया जा सकता है।

दक्षिण कोरिया के किसानों को एक संगठन में गोलबंद होना होगा और जनवादी कृषि सुधार लागू करने तथा सामंतवादी शोषण प्रणाली का अन्त करने के लिए संघर्ष छेड़ना होगा। भूमि का स्वामित्व उन्हीं किसानों के पास होना चाहिए जो उसे जोतते-बोते हैं। जमींदारों की जमीन को बगैर मुआवजे के जब्त कर भूमिहीन और कम भूमि वाले किसानों में बांटा जाना चाहिए, ताकि भूमि के बारे में उनकी युगों पुरानी इच्छा साकार हो सके। जिन लोगों ने अमरीकी साम्राज्यवाद का विरोध किया है और देश के शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण के हित में योगदान किया है, उनको भूमि के लिए मुआवजा दिया जा सकता है।

सैनिक इस्तेमाल के लिए अमरीकी काबिज सेनाओं द्वारा अधिग्रहीत भूमि अविलम्ब किसानों को लौटायी जानी चाहिए।

एक सांगोपांग जनवादी कृषि सुधार लागू किया जाना चाहिए। साथ ही भूमि को व्यापक रूप से कृषि योग्य बना कर कम भूमि वाले किसानों और कृषि तजने को मजबूर किये गये बेरोजगार लोगों में मुफ्त बांटी जानी चाहिए।

विभिन्न किस्मों की सूदखोरी द्वारा किसानों के शोषण का निषेध किया जाना चाहिए। उनके भूमि कर्जों तथा गरीब किसानों के तमाम कर्जों को भी रद्द किया जाना चाहिए।

दक्षिण कोरिया के देहात में सामंतवादी सम्बन्धों का उन्मूलन न केवल कृषि-उत्पादक शक्तियों के विकास का मार्ग प्रशस्त कर किसानों की जीवन-स्थितियों में सुधार आश्वस्त करेगा, बल्कि राष्ट्रीय उद्योग के विकास के लिए भी अनुकूल स्थितियां पैदा करेगा।

बगैर स्वतन्त्र राष्ट्रीय उद्योग के न तो जन-कल्याण में वृद्धि की जा सकती है और न ही राष्ट्रीय स्वाधीनता हासिल की जा सकती है। विदेशी साम्राज्यवाद और देशद्रोही स्वदेशी शक्तियों के आर्थिक आधारों की समाप्ति की जानी चाहिए और राष्ट्रीय उद्योग के विकास के लिए अमरीकी साम्राज्यवादियों, दलाल पूंजी-पतियों और राष्ट्र के गद्दारों के स्वामित्व वाली फैक्टरियों, खानों, रेल सुविधाओं

और बैंकों को जब्त कर उनका राष्ट्रीयकरण किया जाना चाहिए। खासतौर पर मध्यम और लघु उद्यमियों के आर्थिक क्षेत्र को संरक्षण देकर और उनके लिए कच्चे माल, धन तथा बाजार आश्वस्त कर उन्हें निर्बाध रूप से विकास करने की इजाजत दी जानी चाहिए।

दक्षिण कोरियाई मजदूरों को आठ घंटे के दिन, सामाजिक सुरक्षा, वेतन वृद्धि और काम की हालतों में सुधार लागू करने के लिए संघर्ष छेड़ना होगा। यथाशीघ्र लाखों बेरोजगारों को काम दिया जाना चाहिए और कम-से-कम न्यूनतम जीवन-यापन व्यय को पूरा करने के लिए मजदूरों के वेतन बढ़ाये जाने चाहिए। जिन्सों के मूल्य भी स्थिर करने होंगे और विविध टैक्सों के उन्मूलन के साथ-साथ मेहनतकश लोगों के टैक्स भार में जबर्दस्त कटौती करनी होगी।

दक्षिण कोरिया में वैज्ञानिकों और तकनीशियनों के लिए भी कोई काम नहीं। उनके वैज्ञानिक अनुसन्धान के लिए न तो कोई अनुकूल हालात ही उपलब्ध हैं और न स्वतन्त्रता। प्रतिक्रियावादी, ह्रासोन्मुख अमरीकी संस्कृति द्वारा जनता के दिलों में विष भरा जाता है, जबकि हमारे राष्ट्र की विशिष्ट संस्कृति को पैरों तले कुचला जाता है और उसे बेहाल किया जाता है। संस्कृति और कला में कार्यरत लोगों और वैज्ञानिकों को प्रतिक्रियावादी अमरीकी संस्कृति की घुसपैठ के खिलाफ लड़ना चाहिए, अपनी जीवन-स्थितियों में सुधार के लिए संघर्ष करना चाहिए और राष्ट्र के स्वतन्त्र विकास और जन-हितों की सेवा करने वाली एक जनवादी राष्ट्रीय संस्कृति के निर्माण के लिए बहादुरी से संघर्ष करना चाहिए।

दक्षिण कोरिया के युवकों और बुद्धिजीवियों को स्कूलों के सैन्यीकरण और वाणिज्यीकरण के विरुद्ध और शिक्षा-प्रणाली के जनवादी सुधार के लिए लड़ना चाहिए। राज्य के खर्चे पर स्कूली आयु के तमाम बच्चों को शिक्षित करने के लिए सार्वभौम अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा लागू की जानी चाहिए और श्रमजीवी लोगों को शिक्षा ग्रहण करने का अवसर देने और निरक्षरता के उन्मूलन के लिए सार्वजनीन वयस्क शिक्षा प्रणाली लागू की जानी चाहिये।

जनता की दयनीय जीवन स्थितियों और सार्वजनिक स्वास्थ्य के प्रति शासकों की उपेक्षापूर्ण उदासीनता के कारणवश इस समय दक्षिण कोरिया में विभिन्न संक्रामक रोग और पुरानी बीमारियों का दौर-दौरा है। चिकित्सा के अभाव में अनगिनत लोग कष्ट भोग रहे हैं और मर रहे हैं। अतः जनता के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए मुफ्त चिकित्सा-सेवा की प्रणाली लागू की जानी चाहिए और विभिन्न किस्मों के संक्रामक रोगों के उन्मूलन के लिए राज्य को पग उठाने चाहिए।

दक्षिण कोरिया में जन-जीवन के तमाम पहलुओं के जनवादीकरण में मुख्य कर्तव्यों में से एक यह है कि दक्षिण की महिलाओं को पुरुषों के समान सामाजिक स्तर और अधिकारों की गारंटी दी जानी चाहिए। महिलाओं को दुर्व्यवहार और तिरस्कार की अपमानजनक स्थिति से मुक्त किया जाना चाहिए, उनकी व्यक्तिगत मर्यादा का सम्मान किया जाना चाहिए और उनके लिए शिक्षा के समान अवसर आश्वस्त किये जाने चाहिए। उन्हें समाज के कार्य में सक्रिय रूप से शामिल किया जाना चाहिए और समान काम के लिए समान वेतन के सिद्धान्त की परिधि में लाया जाना चाहिए।

अमरीकी साम्राज्यवादी दक्षिण कोरिया में सात लाख भाड़े के टट्टू सैनिकों को रखे हुए हैं। तथाकथित "कोरिया गणराज्य की सेना" ("आर ओ के सेना") की कमान अमरीकी साम्राज्यवादियों के हाथों में है। उसके सेनापति अमरीकी जनरल हैं। दक्षिण कोरियाई सेना की भारी बहुसंख्या फौजी वर्दी में किसान और मजदूर ही हैं। वे अमरीकी साम्राज्यवाद के भृत्यों द्वारा "आर ओ के सेना" में जबर्दस्ती भरती किये गये युवा मेहनतकश हैं।

दक्षिण कोरियाई सेना के जवानों को उत्तर कोरिया में अपने देश भाइयों को बन्दूक का निशाना बनाने और आजादी और अस्तित्व के लिए लड़ने वाले अपने पिताओं और भाइयों पर गोली चलाने को मजबूर किया जाता है।

उत्तर कोरिया में "आर ओ के सेना" का कोई दुश्मन नहीं है। जन सेना, जो मजदूरों और किसानों की सेना है, कभी भी दक्षिण कोरिया में अपने भाइयों से लड़ना नहीं चाहती। "आर ओ के सेना" के वास्तविक दुश्मन हैं अमरीकी साम्राज्यवादी जो उनके क्षेत्र पर कब्जा जमाए हुए हैं और उनके पिट्ठू हैं।

दक्षिण कोरियाई सेना को जनता के देशभक्तिपूर्ण और जनवादी आन्दोलन के दमन और पूरे कोरिया पर हमले में अब अमरीकी साम्राज्यवादियों के अंधे अनुगामी नहीं बने रहना चाहिए। इसकी बजाय उसे विदेशी साम्राज्यवादियों के खिलाफ मजदूरों, किसानों और शेष अवामी समूहों के हितों की रक्षा करने वाली एक राष्ट्रीय सेना, लोक सेना बन जाना चाहिए। "आर ओ के सेना" की कमान अमरीकी साम्राज्यवादियों के हाथों से छीन ली जानी चाहिए। जन-विरोधी सैनिक सेवा प्रणाली को समाप्त कर दिया जाना चाहिए और फासिस्ट सैनिक प्रणाली को जनवादी प्रणाली में बदल दिया जाना चाहिए।

"आर ओ के सेना" के आम जवानों और जूनियर अफसरों को कोरियाइयों से कोरियाइयों को भिड़ाने के अमरीकी साम्राज्यवादियों के विनाशकारी कुचक्र के भुलावे में न आना चाहिए। उन्हें जनता के पक्ष में आगे आना चाहिए। उन्हें अमरीकी कमांडरों और "आर ओ के सेना" के ऊपरी स्तर के गद्दार गुट की

आज्ञाओं को दृढ़तापूर्वक ठुकरा देना चाहिए और अमरीकी साम्राज्यवादियों तथा उनके चाकरों के खिलाफ लड़ना चाहिए।

लोग अपने संघर्ष द्वारा ही आजादी और मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं। विदेशी आक्रामक शक्तियों और स्वदेशी शोषकों के खिलाफ वीरोचित संघर्ष की दक्षिण कोरियाई जनता की अपनी एक शानदार परम्परा है। काबो किसान युद्ध, पहली मार्च आन्दोलन, दस जून स्वतन्त्रता आन्दोलन और क्वांग जू छात्र कांड, सरीखे आम जनता के मुक्ति संघर्ष अविराम गति से छेड़े जाते रहे हैं और दमनकारियों को करारे आघात लगाते रहे हैं। जब आम लोगों की विशाल बहुसंख्या एकजुट होकर अपने दमनकारियों के खिलाफ उठ खड़ी होती है तो किसी भी साम्राज्य-वादी गढ़ को चकनाचूर किया जा सकता है। अमरीकी साम्राज्यवादी शेखी बघारा करते थे कि सिंगमन री शासन एशिया में सबसे मजबूत कम्युनिस्ट-विरोधी शासन है, लेकिन उसे दक्षिण कोरियाई जनता के अवामी संघर्ष ने उलट कर रख दिया।

दक्षिण कोरिया में मजदूरों, किसानों, युवकों, बुद्धिजीवियों और लोगों के आम विशाल समूहों को जनवाद के लिए और जिन्दा रहने के अधिकार के लिए अमरीकी साम्राज्यवाद तथा उसकी कठपुतलियों के खिलाफ संघर्ष हेतु बहादुरी से उठ खड़े होना चाहिए।

साथियो,

दक्षिण कोरियाई जनता के सामने अपनी वर्तमान दुखद स्थिति से पूर्णतया मुक्ति का एकमात्र मार्ग यही है कि वह अमरीकी सेना को निकाल बाहर करे, फासिस्ट तानाशाही को उलट दे, और शान्तिपूर्वक देश को फिर से एक सूत्र में पिरो दे। १६ वर्ष पूर्व मुक्ति से लेकर आज तक अपने उथल-पुथल पूर्ण इतिहास से दक्षिण कोरियाई जनता को यह अनुभूति हो गयी है कि वह उत्तर और दक्षिण में देश के बंटे रहने को और अधिक सहन नहीं कर सकती।

दक्षिण कोरिया में अर्थतन्त्र के पुनर्वास और विकास तथा जन-जीवन स्थितियों में सुधार का एकमात्र उपाय यह है कि उत्तर और दक्षिण कोरिया की संयुक्त शक्ति द्वारा देश का पुनरेकीकरण सम्पन्न हो।

हमारे देश का शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण तमाम कोरियाइयों की सर्वसम्मत आकांक्षा और सर्वोच्च राष्ट्रीय दायित्व है जिसे बिना विलम्ब के पूरा करना होगा।

कोरियाई पुनरेकीकरण के प्रश्न पर हमारी पार्टी की स्थिति स्पष्ट है। पार्टी ने निरन्तर यह विचार पेश किया है कि हमारे देश के पुनरेकीकरण की समस्या को जनवादी सिद्धान्तों पर आधारित शान्तिपूर्ण उपायों द्वारा स्वतन्त्रतापूर्वक

सुलझाया जाना चाहिए। कोरियाई लोग शान्तिपूर्ण राष्ट्रीय पुनरेकीकरण प्राप्त कर सकते हैं और स्वत: उन्हें ही यह कर्तव्य पूरा करना चाहिए।

हमारे देश के पुनरेकीकरण के सवाल को पूर्णतया सुलझाने के लिए समूचे कोरिया में जनवादी सिद्धान्तों के आधार पर बगैर बाहरी शक्तियों के किसी भी हस्तक्षेप के स्वतन्त्र चुनाव करके एक एकीकृत सरकार स्थापित की जानी चाहिए। केवल दक्षिण कोरिया में पृथक चुनाव से स्थिति कभी भी बदल नहीं सकती। जन उमंगों का सच्चा प्रतिनिधित्व करने वाली एक एकीकृत सरकार केवल ऐसे अखिल कोरिया चुनाव द्वारा ही गठित की जा सकती है, जिसमें उत्तरी आधे भाग के लोग और दक्षिण कोरिया के मजदूर, किसान और जनता के अन्य विभिन्न स्तरों के लोग भाग लें, और ऐसी सरकार का गठन करके ही दक्षिण कोरियाई लोग अपनी आजादी और अधिकार जीत सकते हैं और अपनी वर्तमान जीवनस्थितियों में परिवर्तन ला सकते हैं।

हमारा विचार है कि ऐसे चुनाव सार्वभौमिक, समान और प्रत्यक्ष मताधिकार के सिद्धान्त पर गुप्त मतदान द्वारा कराये जाने चाहिए।

कोरिया का पुनरेकीकरण हमारे राष्ट्र का एक आंतरिक मामला है और कोरियाई जनता को स्वतन्त्रतापूर्वक अपनी इच्छा अभिव्यक्त करके ही इसका निपटारा करना होगा। जनता तब तक स्वतन्त्रतापूर्वक अपनी इच्छा अभिव्यक्त नहीं कर सकती, जब तक कि देश साम्राज्यवादी आक्रामक सेनाओं के कब्जे में है और जब तक बाहरी दखलअन्दाजी को सहन किया जाता रहेगा। अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामक सेना को कोरिया से निकाल बाहर करना और किसी भी बाहरी दखलअन्दाजी को ठुकराना, ये वास्तविक स्वतन्त्र चुनाव की पूर्व शर्तें हैं।

इसके साथ ही पूरे उत्तर और दक्षिण कोरिया में राजनीतिक गतिविधियों की स्वतन्त्रता आश्वस्त की जानी चाहिए। दोनों भागों में तमाम राजनीतिक दलों, सामाजिक संगठनों और सार्वजनिक व्यक्तियों को खुले रूप से अपने राजनीतिक मंचों की घोषणा करने, बिना किसी पाबन्दी के जनता के सामने अपना राजनीतिक दृष्टिकोण पेश करने और देश में जहां कहीं भी वे हों, स्वतन्त्रतापूर्वक गतिविधियां करने की आजादी दी जानी चाहिए। जब ये हालात आश्वस्त कर दिये जाएं, तभी कोरियाई लोग वस्तुत: स्वतन्त्र चुनाव द्वारा एक एकीकृत सरकार कायम कर सकते हैं।

देश के शान्तिपूर्वक पुनरेकीकरण पर हमारी पार्टी और गणतन्त्र की सरकार के सुझाव नितान्त विवेकपूर्ण, यथार्थवादी और समुचित हैं। हमारे पुनरेकीकरण कार्यक्रम को सम्पूर्ण कोरियाई जनता का प्रबल समर्थन और विश्व के तमाम देशों के शान्तिप्रिय लोगों का अनुमोदन प्राप्त है। केवल अमरीकी साम्राज्यवादी और

उनकी पिछलग्गू, देशद्रोही प्रतिक्रियावादी शक्तियां पूरे उत्तर और दक्षिण कोरिया में स्वतन्त्र, आम चुनाव के आयोजन को रोकती हैं और देश के शान्तिपूर्वक पुन-रेकीकरण का विरोध करती हैं।

शत्रु की विघ्न पैदा करने की चालबाजियों को नाकाम बनाने के लिए दक्षिण कोरिया में समस्त देशभक्त लोगों को सारे उत्तर और दक्षिण कोरिया में आम चुनावों के आयोजन के लिए साहसपूर्वक संघर्ष करना चाहिए। दक्षिण में मजदूरों, किसानों और जनता के अन्य तबकों को आक्रमण की अमरीकी सेना की वापसी के लिए और देश के स्वतन्त्र, जनवादी और शान्तिपूर्वक पुनरेकीकरण की प्राप्ति के लिए सुदृढ़ संघर्ष छेड़ना चाहिए।

यद्यपि कठिन उतार-चढ़ावों के कारण देश के शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण के लिए कोरियाई जनता का संघर्ष पेचीदा हो गया है, फिर भी क्रान्तिकारी स्थिति हमारे पक्ष में विकसित हो रही है। तमाम कोरियाई जन राष्ट्रीय पुनरेकीकरण की महान घटना का उत्सुकतापूर्वक इन्तजार कर रहे हैं और पुनरेकीकरण की प्राप्ति का दिन निकटतर आता जा रहा है।

इस राष्ट्रीय आकांक्षा की पूर्ति हेतु उत्तर और दक्षिण के कोरियाई लोगों को अपनी तमाम शक्तियां एकजुट करनी चाहिए और दक्षिण कोरिया पर अमरीकी साम्राज्यवादियों के कब्जे के खिलाफ और देश के शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण के लिए संघर्ष में प्रविष्ट हो जाना चाहिए।

इस समय क्रान्ति के विकास में सर्वाधिक गम्भीर आवश्यकता इस बात की है कि दक्षिण कोरिया में एक अमरीका-विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति संयुक्त मोर्चा गठित किया जाए, जिसमें तमाम देशभक्त शक्तियां शामिल हों। दक्षिण कोरिया में मजदूर, किसान, शहरी निम्न पूंजीपति, युवक और छात्र, बुद्धिजीवी और राष्ट्रीय पूंजीपति तक देश के विभाजन और अमरीकी साम्राज्यवादी औपनिवेशिक शासन से पीड़ित हो रहे हैं। वे सब समान राष्ट्रीय हितों से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। इन तमाम वर्गों और स्तरों की शक्तियों को ठोस रूप से एकजुट किया जाना चाहिए और उन्हें कोरियाई जनता के मुख्य शत्रु, अमरीकी साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष में निर्दिष्ट किया जाना चाहिए। ऐसा करके ही दक्षिण कोरियाई जनता आम शत्रु को परास्त कर सकती है, मुक्ति के संघर्ष को जीत सकती है और राष्ट्रीय पुनरेकीकरण के कर्तव्य को पूरा कर सकती है।

अमरीका-विरोधी राष्ट्रीय-मुक्ति संयुक्त मोर्चे के गठन में अति महत्वपूर्ण बात यह है कि मजदूर वर्ग के नेतृत्व में मजदूर-किसान गठबंधन को सुदृढ़ किया जाए। मजदूर-किसान गठबंधन को संयुक्त मोर्चे का राजनीतिक और सामाजिक आधार बनना चाहिए।

मजदूर-किसान गठबन्धन को मजबूत बनाते हुए युवकों, छात्रों और बुद्धि-जीवियों के साथ एकता को सुदृढ़ करने के लिए संघर्ष छेड़ा जाना चाहिए। उन्हें और ज्यादा सक्रियता से अमरीका-विरोधी, राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष में शामिल करना चाहिए, और उन्हें अवाम के विशाल समूहों, जिनमें किसान और मजदूर भी शामिल हैं गहराई तक जाने और आम लोगों के साथ गहरे नाते कायम करने को प्रेरित करना चाहिए।

इस तरह अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके पिट्ठुओं को अलग-अलग कर, दक्षिण कोरिया के तमाम देशभक्त, जनवादी तत्वों को स्वतन्त्र शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण के झंडे तले इकट्ठा किया जाना चाहिए, और दक्षिण कोरिया की देशभक्त, जनवादी शक्तियों और उत्तर कोरिया की देशभक्त समाजवादी शक्तियों के बीच एकता स्थापित की जानी चाहिए।

हम अमरीकी साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्षरत लोगों के अतीत, उनकी वर्ग पृष्ठभूमि, सामाजिक स्तर, राजनीतिक दृष्टिकोण और धार्मिक आस्थाओं के बारे में पूछे बिना, उनके साथ हाथ-से-हाथ मिलाकर आगे बढ़ेंगे। हम उन लोगों का भी सौहार्दपूर्ण ढंग से स्वागत करेंगे, जिन्होंने भूतकाल में वतन और अवाम के खिलाफ अपराध किये हैं, बशर्ते कि वे अपने अपराधों पर पश्चात्ताप करें और खुल्लमखुल्ला देश के शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण का समर्थन करें। पुनरेकीकरण के बाद कभी भी हम उन्हें गले लगाने में संकोच न करेंगे।

इस समय हम साम्राज्यवादी औपनिवेशिक प्रणाली के विघटन के दौर में, और राष्ट्रीय-मुक्ति क्रान्ति के महान् युग में रह रहे हैं। कल तक जो करोड़ों लोग विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा पददलित और शोषित थे, अब उन्होंने औपनिवेशिक जुए को परे फेंक कर स्वतन्त्रता और स्वाधीनता जीत ली है। संसार के वे तमाम लोग, जो साम्राज्यवादी दमन के नीचे कराह रहे हैं आक्रान्ताओं के खिलाफ वीरतापूर्ण संघर्ष छेड़ रहे हैं। उपनिवेशवाद का उन्मूलन समय का तकाजा है, जिसे कोई भी शक्ति रोक नहीं सकती।

राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति के इस महान् युग में अपने लम्बे इतिहास और गौरव-शाली संस्कृति के साथ हमारा राष्ट्र कैसे अमरीकी साम्राज्यवादी औपनिवेशिक शासन के साथ निर्वाह कर सकता है और राष्ट्रीय अपमान तथा दमन को सहन कर सकता है ?

उन तमाम लोगों को, जो अपने देश और जनता से प्यार करते हैं, आक्रान्ताओं को खदेड़ बाहर करने और शान्तिपूर्वक देश को फिर से एक करने के लिए राष्ट्र की रक्षा के संघर्ष में भाग लेने के वास्ते एकजुट हो जाना चाहिए और उठ खड़े होना चाहिए।

एक बार जब तमाम कोरियाई लोग अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रान्ताओं और उनके पिट्ठुओं से टक्कर लेने के लिए दृढ़तापूर्वक एकजुट हो जाएं, तो वे शत्रु को, भले ही वह कितना भी बौखलाया क्यों न हो, पराजित करने और शानदार विजय प्राप्त करने में समर्थ हो जाएंगे।

समूचे राष्ट्र की संगठित शक्ति द्वारा अमरीकी साम्राज्यवादी कोरिया से बाहर खदेड़े जाएंगे और राष्ट्रीय पुनरेकीकरण का कर्तव्य निश्चित रूप से पूरा हो जाएगा।

४: पार्टी

साथियो,

समाजवादी निर्माण और मातृभूमि के शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण के संघर्ष में हमारी जनता ने जो शानदार जीतें हासिल की हैं, उन सबका श्रेय हमारी पार्टी के मार्क्सवादी-लेनिनवादी नेतृत्व को ही जाता है और ये जीतें हमारी पार्टी के दृष्टिकोणों तथा नीतियों की यथार्थता का दो टूक प्रमाण प्रस्तुत करती हैं।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद द्वारा निर्दिष्ट पथ पर चलते हुए, हमारी पार्टी ने पूरे भरोसे के साथ कोरियाई जनता का नेतृत्व कर उसे जीतें दिलायी हैं और क्रान्ति के अनुभवी जनरल स्टाफ के रूप में अपने दायित्व को ससम्मान पूरा किया है।

आज हमारी पार्टी ने कोरियाई जनता का जो सम्पूर्ण समर्थन और विश्वास प्राप्त किया है, उसका सारा श्रेय उसके विवेकपूर्ण नेतृत्व, उसके सुदृढ़ मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्तों, कोरियाई मजदूर वर्ग और मेहनतकश लोगों के हितों के प्रति उसकी असीम वफादारी और शत्रु के खिलाफ उसके अटूट और मजबूत संघर्ष को ही जाता है। वह उनकी विश्वसनीय मार्गदर्शक शक्ति बन गयी है और लोगों ने अपना भाग्य पूरी तरह उसके हवाले कर दिया है। आन्तरिक और बाहरी दुश्मनों के खिलाफ जुझारू संघर्षों और कठोर क्रान्तिकारी कर्तव्यों को सम्पन्न करने के क्रम में पार्टी और भी तप कर निखरी है और लौह जैसी एकता और एकजुटता के साथ बढ़ते हुए एक लेनिनवादी पार्टी के तौर पर विकसित हुई है।

समीक्षाधीन दौर कठिन आजमाइशों और हमारे देश की क्रान्ति तथा पार्टी के विकास में ऐतिहासिक परिवर्तनों का दौर रहा है।

इन वर्षों के दौरान अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में साम्राज्यवादियों ने समाजवादी शिविर की एकता और अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन की एकजुटता को ध्वस्त करने के प्रयासस्वरूप अपने घृणित कम्युनिस्ट-विरोधी अभियान को जारी रखा।

साम्राज्यवादियों के साथ सुर में सुर मिलाते हुए अन्तर्राष्ट्रीय संशोधनवादी भी मार्क्सवाद-लेनिनवाद के विरुद्ध और खुल कर सामने आए।

खासतौर पर, हमारे देश में, जो विभाजित है और जहां हमारी अमरीकी साम्राज्यवाद से आमने-सामने की टक्कर है, स्थिति अधिक गम्भीर, अधिक पेचीदा हो गयी है। शत्रु का विध्वंस-कार्य और तोड़फोड़ जारी है और हमारे समाजवादी निर्माण में कई कठिनाइयां उभरी हैं। शहरों और गांवों में कुल मिलाकर निर्माण और समाजवादी बदलाव की प्रक्रिया के साथ-साथ घनघोर वर्ग संघर्ष भी चले हैं। देश के अन्दर और विदेशों का वर्ग संघर्ष भी पार्टी के अन्दर अभिव्यक्त हुआ और गम्भीर बेला में पार्टी-विरोधी गुट के तत्व पार्टी और क्रान्ति के खिलाफ खुल कर सामने आये।

लेकिन हमारी पार्टी हर आजमाइश में खरी उतरी और संघर्ष के तमाम मोर्चों पर विजयी रही।

शत्रु के कुचक्र जितने भी ज्यादा दृष्टतापूर्ण हुए, पार्टी ने उनको चूर-चूर करने का निर्णायक संघर्ष छेड़ते हुए, अपनी क्रान्तिकारी पांतें पूर्व की अपेक्षा अधिक सुदृढ़ता से निर्मित करने का संघर्ष करते हुए और कोरिया में क्रान्तिकारी कर्तव्य का अन्त तक समर्थन करते हुए, मार्क्सवाद-लेनिनवाद और सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के परचम को उतना ही ऊंचा उठाये रखा।

साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष में और समाजवाद और कम्युनिज्म के संयुक्त हित में हमारी पार्टी ने हमेशा मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्तों का परचम बुलन्द रखने और समाजवादी शिविर की एकता तथा बन्धुत्व वाली पार्टियों के बीच सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीय एकजुटता को मजबूत बनाने के लिए सुदृढ़ता से लड़ाई लड़ी है। इसके साथ ही उसने अपने देश की क्रान्तिकारी बुनियाद को, जोकि अन्तर्राष्ट्रीय क्रान्तिकारी मोर्चे की पूरी श्रृंखला में एक कड़ी है, मजबूती से निर्मित करने पर अपने मूल प्रयासों को केन्द्रित किया।

अपने क्रान्तिकारी अड्डे—गणतन्त्र के उत्तरी आधे भाग—को अल्पकाल में समाजवाद के एक शक्तिशाली दुर्ग में परिणत करने के क्रान्तिकारी काम के साथ पार्टी और भी अधिक उत्साह से आगे बढ़ी है। इसके साथ ही उसने तमाम अवाम के आन्दोलन के द्वारा क्रान्ति के शत्रु के विरुद्ध संघर्ष छेड़ा। इसने हमें तमाम अवाम को पार्टी के इर्दगिर्द एकजुट कर शत्रु को अपनी धरती पर कदम रखने से रोकने और उसकी घुसपैंठ से समाजवादी लाभों की रक्षा करने में समर्थ बनाया।

सबसे पहले हमने पार्टी की पांतों के संगठन और विचारधारा को मजबूत बनाया और पार्टी एकता और एकजुटता की दृढ़तापूर्वक रक्षा की।

पार्टी ने संशोधनवाद और सब प्रकार के प्रतिक्रियावादी पूंजीवादी विचारों की घुसपैंठ के विरुद्ध और अपने अन्दर गुटबाजी, कुनबापरस्ती तथा अन्य मार्क्स-वाद-विरोधी, पार्टी-विरोधी वैचारिक तत्वों के विरुद्ध सतत जोरदार विचारधारा-त्मक संघर्ष छेड़ा है। इस तरह उसने हमेशा अपनी विचारधारात्मक शुद्धता और कथनी व करनी की एकता की रक्षा की तथा अपनी सही क्रान्तिकारी लाइनों को कार्यान्वित किया। खासतौर पर अगस्त १९५६ के पूर्णाधिवेशन और मार्च १९५८ के पार्टी सम्मेलन की प्रेरणा से पार्टी ने पार्टी-विरोधी गुटबाज तत्वों से स्वयं को मुक्त किया और अपनी एकता तथा एकजुटता की रक्षा की लड़ाई में महान विजय हासिल की। पार्टी-विरोधी गुटबाज तत्व क्रान्ति के दुश्मन थे, जोकि हमारे देश में सामाजिक क्रान्ति के अधिक तेज होने और वर्ग संघर्ष के घनघोर रूप में भड़कने पर क्रान्तिकारी पांतों के अन्दर स्वयं को और छिपाये रखने में असमर्थ और अपने-आप को वास्तविक रूप में प्रकट करने को विवश हो गये। वे आत्मसमर्पणकारियों और अदेशी तत्वों का एक गिरोह थे, जिनका क्रान्ति की दुष्कर स्थितियों में पतन हो गया था।

पार्टी-विरोधी गुटबाजों और उनके हानिप्रद वैचारिक संस्कारों के खिलाफ अपने प्रचंड संघर्ष द्वारा हमारी पार्टी ने उन गुटों को कुचल दिया जिन्होंने लम्बे समय तक हमारे देश के मजदूर वर्ग आन्दोलन का बहुत ज्यादा नुकसान किया था। इस तरह उसने अपनी एकता और एकजुटता को निर्णायक रूप से सुदृढ़ किया और कोरिया में कम्युनिस्ट आन्दोलन के एकीकरण के ऐतिहासिक दायित्व को पूरा किया। यह अपने लम्बे, कठिन संघर्ष में कोरियाई कम्युनिस्टों द्वारा हासिल की गयी सर्वाधिक मूल्यवान् उपलब्धि और हमारी पार्टी के विकास में ऐतिहासिक महत्व की एक महान जीत थी।

गुटबाजी के वैचारिक प्रभावों और संशोधनवाद के विरुद्ध लड़ते हुए पार्टी ने क्रान्तिकारी व्यवहार से दूर हटने वाले कठमुल्लापन के हानिप्रद प्रभावों पर काबू पाने के लिए एक जोरदार विचारधारात्मक संघर्ष जारी रखा और इस तरह उसने हमारे काम के तमाम क्षेत्रों में जूछे को और ज्यादा मजबूती से कायम कर प्रमुख पार्टी सदस्यों तथा अवाम को अपनी पहल के भरपूर उपयोग की प्रेरणा दी।

इन विचारधारात्मक संघर्षों के द्वारा तमाम सदस्यों की पार्टी भावना में और भी प्रखरता आयी है। सारी पार्टी के अन्दर पार्टी विचारधारात्मक प्रणाली को मजबूती से कायम किया गया है। हर परिस्थितियों में प्रत्येक पार्टी सदस्य मार्क्स-वादी-लेनिनवादी सिद्धान्तों और पार्टी दृष्टिकोणों की पताका को हमेशा बुलन्द रखता है और उसकी नीतियों को सम्पन्न करने के लिए अपनी शक्ति भर अन्त तक लड़ता है। यह हमारी पार्टी की एकता और जुझारू क्षमता में जबर्दस्त

मजबूती लाई है और यह हमारी तमाम जीतों के लिए बुनियादी गारंटी की द्योतक है।

अपनी पांतों को सुदृढ़ बनाते हुए और आन्तरिक तथा बाहरी दुश्मनों के खिलाफ जोरदार संघर्ष छेड़ते हुए पार्टी ने समाजवादी अर्थतन्त्र के निर्माण के संघर्ष में आम लोगों की क्रान्तिकारी शक्तियों को संगठित और लामबंद किया, उन्हें पार्टी के इर्दगिर्द दृढ़तापूर्वक गोलबंद किया।

नितान्त कठिन आन्तरिक और बाहरी परिस्थितियों में आयोजित दिसम्बर १९५६ के पूर्णाधिवेशन के निर्णयों पर अमल के दौरान अवाम का रचनात्मक उत्साह और बढ़ा, हमारे समाजवादी निर्माण में एक महान उभार शुरू हुआ और श्रमजीवी लोगों के ऐतिहासिक छोलिमा आन्दोलन की शुरूआत हुई। पार्टी ने अवाम पर भरोसा किया और इसके बदले में अवाम ने एकजुट होकर प्रत्येक बाधा पर काबू पाते हुए पार्टी का अनुसरण किया। पार्टी और अवाम ने समाजवाद की विजय के लिए अथक लड़ाई लड़ी है। इस तरह हमने अपने देश की—उस देश की, जो कभी एक पिछड़ा औपनिवेशिक अर्धसामंती समाज था और जो युद्ध में तहस-नहस हो गया था—धरती पर अभूतपूर्व तीव्र गति से समाजवाद की ठोस बुनियादें रखने के ऐतिहासिक कर्तव्य को विजयपूर्ण ढंग से पूरा किया है और समाजवादी शिविर की पूर्वी चौकी पर शान्ति और समाजवाद का एक सुदृढ़ दुर्ग निर्मित किया है।

अपनी मार्क्सवादी-लेनिनवादी स्थिति के कड़ाई से पालन के संघर्ष और समाजवादी निर्माण में अपनी व्यावहारिक उपलब्धियों के द्वारा पार्टी ने दुश्मन के तमाम षड्यन्त्रों को पूर्णतया चकनाचूर कर दिया और मार्क्सवादी-लेनिनवादी ध्येय और हमारी जनता की संगठित शक्ति की अजेयता को स्पष्टतः प्रदर्शित किया। यह सब कुछ करने में हम कोरियाई जनता और अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक वर्ग के प्रति अपने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय कर्तव्यों के बारे में लगातार वफादार रहे हैं।

पेचीदा वर्ग संघर्ष और समाजवाद के निर्माण में प्राप्त महान जीतों ने हमारी पार्टी के तमाम मेहनतकश अवाम को अपने इर्दगिर्द और भी अधिक एकजुट करने तथा अवाम के साथ सम्बन्ध को सुदृढ़ करने में सक्षम बनाया है। इन जीतों ने पार्टी कार्य के तमाम क्षेत्रों में महान परिवर्तन किये हैं।

पार्टी केन्द्रीय समिति से लेकर प्राथमिकता पार्टी संगठन तक तमाम पार्टी संगठन और समस्त पार्टी सदस्य विचारधारा और संकल्प की एकता के साथ गहराई से जुड़े हुए हैं। पार्टी काम में पुरानी रीति समाप्त कर दी गयी है, और अब सारी पार्टी में क्रान्तिकारी कार्यशैली तथा रीति लागू कर दी गयी है। तमाम पार्टी

सदस्य पार्टी केन्द्रीय समिति के साथ एक होकर चलते हैं और पार्टी की पताका तले, तमाम कठिनाइयां झेलते हुए हमारे तमाम अवाम ओजस्वी भावना से विजय की ओर आगे बढ़ रहे हैं। हमारे देश के श्रमिक वर्ग और कम्युनिस्ट आन्दोलनों के इतिहास में पहले कभी भी हमारी पार्टी संगठनात्मक और विचारधारात्मक दृष्टियों से इतनी ठोस नहीं थी, जितनी कि आज है। पहले कभी भी सारी पार्टी और सारी जनता इतनी मजबूती से एकदूसरे के साथ जुड़े हुए और एक ही विचारधारा और संकल्प के साथ इतने एकजुट हुए नहीं थे, जितने कि वे आज हैं।

आज हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि हमारे पास एक शक्तिशाली मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी है, जो किसी भी मुसीबत या दिक्कत की परवाह न कर निश्चित रूप से कोरियाई लोगों को विजय की ओर ले जा सकती है।

समीक्षाधीन काल में अपने विकास के दौरान हमारी पार्टी ने जो महान विजय प्राप्त की है, मोटेतौर पर यही उसका सार है।

साथियो,

समीक्षाधीन काल के दौरान हमारी पार्टी ने सदस्य संख्या में महत्वपूर्ण प्रगति की है और वह गुणात्मक दृष्टि से भी अधिक ठोस हो गयी है।

१ अगस्त १९६१ को हमारी पार्टी की कुल संख्या १३,११,५६३ थी। इन में ११,६६,३५९ पूरे सदस्य और १,४५,२०४ उम्मीदवार सदस्य थे। यह १९५६ की तीसरी पार्टी कांग्रेस के समय से १,४६,६१८ अधिक है।

पार्टी की पांतों में उन छोलिमा अश्वारोहियों, नयी श्रमरीतियां चलाने वालों और अन्य कई अग्रिम पंक्ति के श्रमजीवी लोगों को, जिन्होंने समाजवादी निर्माण के तमाम क्षेत्रों में देशभक्तिपूर्ण लगन प्रदर्शित की और जो कठोर संघर्षों में कसौटी पर खरे उतरे और तप-मंज गये, शामिल किया गया है, और पार्टी ने मजदूर वर्ग में अपनी जड़ें गहरी कर ली हैं। पूरी पार्टी सदस्यता में मजदूरों का अनुपात, जो तीसरी पार्टी कांग्रेस के समय १७.३ प्रतिशत था, अब बढ़कर ३० प्रतिशत हो गया है।

हमारी पार्टी की बढ़ोत्तरी मजदूर वर्ग के नेतृत्व में हमारे देश के श्रमजीवी अवाम की क्रान्तिकारी शक्ति में वृद्धि को प्रतिबिम्बित करती है। यह हमारी पार्टी के लिए आम लोगों के प्यार और विश्वास की गहरी भावना की एक अभिव्यक्ति है।

समीक्षाधीन काल में हमारे पार्टी-निर्माण के विशिष्ट इतिहास और उसके कठिन क्रान्तिकारी दायित्वों के संदर्भ में पार्टी केन्द्रीय समिति ने उसकी संगठनात्मक और विचारधारात्मक एकता की मजबूती और उसके नेतृत्व की भूमिका के

निर्णायक सुदृढ़ीकरण के लिए अपने बूते के अनुसार सब कुछ किया है।

चूंकि हमारी पार्टी तेजी से एक अवामी पार्टी के रूप में विकसित हो रही थी, अतः उसके सदस्यों का गुणात्मक सुधार पार्टी निर्माण में एक बुनियादी कर्तव्य बन गया। खासतौर पर हमारे देश में घनघोर वर्ग संघर्ष और समाजवादी निर्माण के अपार काम के कारण यह अनिवार्य हो गया कि पार्टी शहरी तथा देहाती क्षेत्रों में अपनी शक्तियों को और भी ज्यादा विस्तृत करे और सुदृढ़ बनाये, तथा अपने तमाम संगठनों की लड़ाकू क्षमता को मजबूत करे।

हमारी पार्टी ने हमेशा अपनी पांतों को विकसित करने में पार्टी निर्माण के लेनिनवादी सिद्धान्तों के अनुरूप विशेष ध्यान देने का निर्देश दिया है।

पार्टी की पांतों के सुदृढ़ीकरण और उसके लड़ाकूपन में बढ़ोत्तरी में सर्वाधिक महत्व की बात है कार्यकर्ताओं के साथ काम करना।

कार्यकर्ता पार्टी की धुरी और क्रान्तिकारी कामों को सम्पन्न करने में उसका कमांडिंग स्टाफ हैं। कार्यकर्ता के साथ काम करना न-केवल पार्टी की धुरी पांतों के सुदृढ़ीकरण में महत्व रखता है, बल्कि इसे पार्टी शक्तियों को कार्य सौंपने में भी सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू कहा जा सकता है।

समीक्षाधीन काल में कार्यकर्ताओं की नियुक्ति के सम्वन्ध में हमारी पार्टी के समक्ष प्रस्तुत मुख्य काम थे कार्यकर्ता पांतों के गुणात्मक संगठन में सुधार करना, और उन्हें निचले पार्टी संगठनों तथा स्थानीय सत्ता निकायों समेत पार्टी और राज्यीय निकायों में कार्य के लिए अधिक दक्षता से तैयार करना।

हमने उन पुराने क्रान्तिकारी कार्यकर्ताओं के बीच, जिन्होंने मातृभूमि की मुक्ति के संघर्ष में सक्रिय भूमिका निभायी थी तथा उन मजदूरों के बीच से आये कार्यकर्ताओं के बीच, जो अमल में परखे जा चुके हैं, धुरी का निर्माण करने तथा भारी संख्या में उन नये युवा कार्यकर्ताओं को, जोकि मुक्ति के बाद मेहनतकश लोगों के बीच बड़ी तेजी से विकसित हुए हैं, साहसपूर्वक आगे बढ़ाने के सिद्धान्त का पालन किया है।

हमने बड़े पैमाने पर श्रमिक वर्ग मूल के कार्यकर्ताओं का चयन कर उन्हें प्रशिक्षित किया है तथा दिलेरी से उन्हें बड़े-वड़े मुख्य पद दिये हैं। हमने कई शानदार भूतपूर्व सैनिकों और निर्माण के संघर्ष में तपकर कुन्दन बने धुरी पार्टी सदस्यों को लेकर दृढ़तापूर्वक कारखानों और देहातों में कार्यकर्ताओं की पांतें निर्मित की हैं। इसके साथ ही हमने योजनाबद्ध रीति से केन्द्र से योग्य कार्यकर्ताओं को नीचे स्थानीय क्षेत्रों में भेजा है ताकि वहां कार्यकर्ताओं की पांतें मजबूत हों।

मजदूरों और किसानों में से भारी संख्या में नये बुद्धिजीवियों को प्रशिक्षित करते हुए पार्टी ने साहसपूर्वक पुराने बुद्धिजीवियों को पदोन्नति दी है और शिक्षा

द्वारा लगातार उनका विकास किया है। पार्टी ने सहीतौर पर मजदूर वर्ग मूल के कार्यकर्ताओं को बुद्धिजीवी भूमिका वाले कार्यकर्ताओं के साथ मिलाकर कार्यकर्ताओं की पातों की नेतृत्व क्षमता में और सुधार किया है।

हमने तमाम पार्टी संगठनों को हमेशा कार्यकर्ताओं की नियुक्तियों के मामलों पर मुख्य रूप से ध्यान देने को प्रोत्साहित किया है। हमने कार्यकर्ताओं के चयन और कार्य वितरण में कुनबापरस्ती और क्षेत्रीयता की प्रवृत्तियों के खिलाफ और कार्यकर्ताओं के बारे में भ्रम रखने के खिलाफ संघर्ष किया है, और पदाधिकारियों के मनमाने निर्णयों और आत्मनिष्ठता को दूर करने की कोशिश की है।

इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए कि कार्यकर्ता पांतों के गठन में परिवर्तन किया गया है और बहुत से नये कार्यकर्ताओं को पदोन्नत किया गया है, पार्टी ने उनके पथप्रदर्शन और शिक्षण की ओर विशेष ध्यान देने की हिदायत की है। हमने कार्यकर्ताओं को लगातार व्यावहारिक काम से प्रशिक्षित किया है। उन्हें अधिक मेहनत से अध्ययन के लिए प्रेरित करने के लिए हमने पार्टीगत और राज्यीय दोनों ही तरह के कदम उठाये हैं और सारी पार्टी में अध्ययन की आदत डाली है।

इस सबका परिणाम यह हुआ है कि हमारी पार्टी के कार्यकर्ताओं के मामलों में निर्णयात्मक रूप में दृढ़ता आयी है, कार्यकर्ता पांतों के गुणात्मक गठन में सुधार हुआ है। उनका राजनीतिक तथा विचारधारात्मक स्तर ऊंचा हुआ है। पार्टी और राजकीय निकायों में मजदूर मूल के कार्यकर्ताओं का अनुपात, जो तीसरी पार्टी कांग्रेस के समय २४ प्रतिशत था, अब बढ़ कर ३१ प्रतिशत हो गया है और पुराने क्रान्तिकारी कार्यकर्ता तथा श्रमिक वर्ग मूल के कार्यकर्ता महत्वपूर्ण पार्टी और राज्यीय पदों पर केन्द्रक की भूमिका निभाते हैं। राजधानी से लेकर निचले स्थानीय क्षेत्रों तक तमाम मुख्य शाखाओं में कार्यकर्ताओं की पांतें पार्टी के केन्द्रक सदस्यों के आधार पर, जोकि पार्टी के प्रति असीम वफादारी रखते हैं, निर्मित की गयी हैं। राजनीति, अर्थतन्त्र और संस्कृति के तमाम मोर्चों पर ऐसे योग्य क्रान्तिकारी कमांडर नियुक्त किये गये हैं जोकि पूर्णतया पार्टी के संकल्प को पूरा कर सकते हैं और जो उसकी नीतियों के क्रियान्वयन के काम का संगठन करने में सक्षम हैं।

जिस दौर की हम समीक्षा कर रहे हैं, उसके दौरान हमने प्राथमिक पार्टी संगठनों के सुदृढ़ीकरण और उनकी जुझारू शक्ति की अभिवृद्धि पर काफी शक्ति लगायी है। पार्टी की गुणात्मक मजबूती और इसके साथ ही समाजवादी निर्माण के तमाम मोर्चों पर उसकी शक्तियों के विस्तार तथा सुदृढ़ीकरण के हमारे काम का यही मुख्य तत्व था।

पार्टी केन्द्रीय समिति से लेकर प्रान्तीय, नगर और काउंटी पार्टी समितियों तक तमाम पार्टी संगठनों ने अपनी मातहत इकाइयों के पथप्रदर्शन के काम में मुख्यतः प्राथमिक पार्टी संगठनों को मजबूत बनाने पर ध्यान दिया। खासतौर पर नगर और काउंटी पार्टी समितियों ने प्राथमिक पार्टी संगठनों में अपने प्रमुख सार्वजनिक अधिकारियों को नियमित रूप से भेजते हुए उनकी मदद तथा उनके काम के निर्देशन के लिए अपनी मुख्य शक्तियों को केन्द्रित किया।

अपने प्राथमिक संगठनों को मजबूत बनाने में पार्टी ने पहले पूरी सदस्यता की पार्टी भावना को सुदृढ़ किया।

पार्टी भावना का अर्थ है पार्टी के प्रति असीम वफादारी। यह मार्क्सवादी-लेनिनवादी विश्व दृष्टिकोण और पार्टी एवं क्रान्ति की रक्षा के लिए हर स्थिति में लड़ने और पार्टी नीतियों को कार्यरूप देने की अजेय क्रान्तिकारी भावना पर आधारित प्रबल वर्ग चेतना है। हमने एक ओर मार्क्सवाद-लेनिनवाद और पार्टी नीतियों में अपने तमाम पार्टी सदस्यों के शिक्षण को तेज कर तथा दूसरी ओर पार्टी के अन्दर प्रचंड विचारधारात्मक संघर्ष छेड़कर और उनके पार्टी जीवन और क्रान्तिकारी कर्तव्यों के निर्वाह के बीच गहरे नाते की गारंटी करके उनकी पार्टी भावना को निरन्तर फौलादी बनाया है।

अपने प्राथमिक संगठनों के दृढ़ीकरण में एक महत्वपूर्ण पग के रूप में पार्टी ने अपने धुरी सदस्यों को प्रशिक्षित करने और उनकी पांतों का लगातार विस्तार करने पर अधिक ध्यान दिया है। यह हमारी पार्टी में खासतौर पर महत्वपूर्ण था, क्योंकि उसकी पांतें तेजी से बढ़ी थीं और उसके सदस्यों की राजनीतिक तैयारी में बहुत विषमता थी।

प्रत्येक पार्टी संगठन ने अपने केन्द्रक सदस्यों को योजनाबद्ध ढंग से शिक्षित किया है और पार्टी के अन्दर विचारधारात्मक संघर्ष में और क्रान्तिकारी कर्तव्यों के परिपालन में उनकी हरावल भूमिका को प्रखर करने के लिए निरन्तर मार्गदर्शन देते हुए व्यावहारिक काम द्वारा उन्हें निरंतर प्रशिक्षित किया है। पार्टी संगठनों ने नये सदस्यों और उन सबको शिक्षा और मदद देने के लिए जिनका राजनीतिक स्तर नीचा है, अपने धुरी सदस्यों की सक्रियता से मदद ली है। इन धुरी सदस्यों की आदर्श भूमिका द्वारा भी तमाम सदस्यों के पार्टी जीवन में सुधार लाया गया है।

पार्टी भावना के दृढ़ीकरण और हमारे केन्द्रकों की संख्या में बढ़ोत्तरी से पार्टी सदस्यों की हरावल भूमिका मजबूत हुई है और तमाम पार्टी संगठनों ने अवाम में अपनी जड़ें काफी गहराई तक जमा ली हैं। इस तरह वे अपने क्रान्तिकारी कर्तव्यों को सक्रिय रूप से पूरा करने में सक्षम जुझारू और महत्वपूर्ण संगठन बन गये हैं।

अब हमारी पार्टी में लेनिनवादी मर्यादाओं पर आधारित पार्टी जीवन का एक

क्रान्तिकारी स्वर स्थापित हो गया है। तमाम पार्टी सदस्य क्रान्ति और वर्ग स्थिति के हितों की रक्षा के लिए हमेशा तैयार रहने की मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी भावना से ओतप्रोत क्रान्तिकारी लड़ाकू बनते जा रहे हैं।

समीक्षाधीन काल में पार्टी निर्माण के क्षेत्र में पार्टी केन्द्रीय समिति के मुख्य कार्यों में से एक था निचले पार्टी संगठनों को व्यापक निर्देश देना।

तमाम स्तरों पर पार्टी संगठनों के काम को सुधारने और उसे पार्टी केन्द्रीय समिति द्वारा निर्धारित स्तर तक लाने के उद्देश्य से हमने जिस विधि को अपनाया वह यह थी कि विशिष्ट नि कार्यों का पथप्रदर्शन करने के लिए नेतृत्व के कार्यकर्ताओं को काफी संख्या में तैनात करके एक-एक कर निचले पार्टी संगठनों को मजबूत करने के लिए सघन कार्य किया जाय।

पार्टी केन्द्रीय समिति के प्रत्यक्ष नेतृत्व में प्रान्तीय, नगर और काउंटी पार्टी संगठनों को सैकड़ों-हजारों योग्य कार्यकर्ताओं पर आधारित निर्देशन टुकड़ियां भेजी गयीं। इन टुकड़ियों ने सम्बद्ध पार्टी संगठनों के काम की वास्तविक स्थिति का अध्ययन किया और जब तक उनमें आमूल परिवर्तन नहीं आ गया, तब तक महीनों वे उनका व्यापक निर्देश करते रहे।

अपने व्यापक निर्देशन के दौरान हमने निचले स्तरों के अधिकारियों को पार्टी की नीतियों और काम करने की रीति-विधियों के बारे में विस्तारपूर्वक समझाया और उनके काम के स्तर को ऊंचा उठाने तथा उनके मार्ग में आने वाली बाधाओं और दिक्कतों को दूर करने के लिए यथासंभव हर प्रयास किया। पार्टी संगठनों की ताकत और कमजोरियों को पूरी तरह समझ-बूझकर उनके काम में आमूलचूल परिवर्तन लाने के लिए हमने पग उठाये। पार्टी संगठनों के ठोस पथ-प्रदर्शन और सहायता से न-केवल पार्टी सदस्यों और श्रमजीवी अवाम को पार्टी नीतियों की यथार्थता को गहराई से समझने और निचले पार्टी संगठनों के काम में निर्णयात्मक सुधार लाने में मदद मिली, बल्कि ऐसे कार्य से उच्चतर संगठनों द्वारा आयोजित निर्देशन और जांच-पड़ताल से डरने और कतराने का प्रयास करने की गलत मनोवृत्ति को दूर करने और निचले स्तरों के कार्यकर्ताओं के साथ एकता को और मजबूत बनाने में भी मदद मिली।

व्यापक पथप्रदर्शन द्वारा हमने पार्टी सदस्यों और मेहनतकशों के विशाल समुदायों को अपने काम में सुधार के लिए संघर्ष करने को उत्साहित किया। हमने पार्टी की नीतियों के संदर्भ में स्वतन्त्रतापूर्वक अपने काम में कमियों का पता चलाने तथा स्वतः जोरदार संघर्ष कर इन कमियों को दूर करने में भी उनकी ठोस मदद की। इस काम ने पार्टी संगठनों में पार्टी जीवन को सख्त और चुस्त बनाने, पार्टी के अन्दर लोकतन्त्र को पूर्ण स्थान देने और पार्टी सदस्यों की पार्टी भावना को

और सुदृढ़ करने में सहायता दी। व्यापक पथप्रदर्शन ने हमें केन्द्रके सदस्यों का सही-सही पता करने और पार्टी संगठनों के मुख्य निकायों में उन्हें शामिल कर उन निकायों को मजबूत बनाने में भी मदद दी।

योजनाबद्ध विधि से व्यापक पथप्रदर्शन कार्यक्रम को पूरा कर पार्टी ने अपने स्थानीय निकायों को संगठनात्मक और विचारधारात्मक तौर पर सुदृढ़ किया और आमतौर पर पार्टी संगठनों के काम में सुधार किया। इस प्रयोजन से कि निचले पार्टी संगठन अधिक सूझबूझ से पार्टी के मन्तव्यों और नीतियों को कार्यरूप दे सकें, पार्टी ने एक एकात्मक विचारधारात्मक प्रणाली और काम की एक एकीकृत प्रणाली कायम की। व्यापक पथप्रदर्शन ने पथप्रदर्शन टुकड़ियों के सदस्यों—अर्थात केन्द्रीय निकायों के कार्यकर्ताओं तथा स्थानीय पार्टी और सत्ता निकायों और आर्थिक एवं सांस्कृतिक संस्थानों के अनेक कार्यकर्ताओं को व्यावहारिक शिक्षा देने वाले एक शानदार स्कूल की भी भूमिका निभायी। तमाम पार्टी संगठनों के काम के इस पथप्रदर्शन में प्राप्त अनुभव से हमने सामान्य निष्कर्ष निकाले हैं और इस तरह न-केवल स्थानीय पार्टी निकायों के, बल्कि सत्ता निकायों, श्रमजीवी जन-संगठनों और आर्थिक एवं सांस्कृतिक संस्थानों के काम को सुधारा और विकसित किया है।

समीक्षाधीन काल में नेतृत्व की शैली और पार्टी में काम करने की विधि में सुधार लाने के संघर्ष में आमूल परिवर्तन आया है।

पार्टी के क्रान्तिकारी नेतृत्व का बुनियादी कर्तव्य यह है कि वह जनता की राजनीतिक चेतना के स्तर को दृढ़तापूर्वक ऊंचा करे और पार्टी की नीतियों की क्रियान्विति में जनता की विपुल शक्तियों और रचनात्मक क्षमताओं को ज्यादा से ज्यादा संगठित कर उनका उपयोग करे।

जनता पर निर्भर रहते हुए और उसकी रचनात्मक शक्तियों का सहयोग प्राप्त कर उनकी पूरे दिल से सेवा करने की क्रान्तिकारी कार्यविधि जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष के दिनों से विरसे में मिली हमारी पार्टी की एक परम्परा है।

लेकिन हमारे बहुत से कार्यकर्ताओं को, जो मुक्ति के बाद आगे आये, अवाम के साथ काम करने, उनका दिल जीतने और उन्हें मुश्किल हालात में काम के लिए उत्साहित करने का कोई अनुभव नहीं है। एक बार तो कुछ विकृत तत्वों ने कई अनेक कार्यकर्ताओं में काम की नौकरशाही शैली का प्रसार किया जोकि बुनियादी तौर पर पार्टी काम की शैली के प्रतिकूल है। इस प्रकार तमाम कार्यकर्ताओं को क्रान्तिकारी अवामी दृष्टिकोण से लैस करना तथा नेतृत्व की क्रान्तिकारी विधियों में पारंगत करना हमारी पार्टी का एक बहुत ही महत्वपूर्ण कर्तव्य हो जाता है।

पिछले दौर में कार्यकर्ताओं की कार्य-शैली को दुरुस्त करने तथा उनकी कार्य-विधि को सुधारने के लिए हमने अपनी पार्टी की परम्परागत क्रान्तिकारी कार्य-शैली को अपने हाथों में लेने और उसके तमाम पहलुओं के विकसित करने पर अपने समस्त प्रयास केन्द्रित किए।

सर्वप्रथम, हमने कुर्सी पर बैठे-बैठे काम करने की शैली को, जो अवाम से कोसों दूर होती है, कतई नामंजूर कर दिया है और उत्पादन स्थलों पर जा कर पथप्रदर्शन देने की पद्धति को मजबूत किया है। पथप्रदर्शन के तमाम कार्य में हमने अवाम की राजनीतिक चेतना का उन्नयन करने और उसकी सक्रियता तथा रचनात्मकता को पूर्णतया उजागर करने के उद्देश्य से राजनीतिक कार्य को प्राथमिकता देने का प्रयास किया है। अवाम की शक्ति पर निर्भर रहते हुए हमने तमाम समस्याओं को क्रान्तिकारी ढंग से सुलझाने की कोशिश की है।

श्रमजीवी लोगों को पार्टी की नीतियां समझाने और उनके बारे में कायल करने तथा क्रान्तिकारी कर्तव्यों को पूरा करने की प्रक्रिया में उत्पन्न होने वाली बाधाओं और दिक्कतों पर काबू पाने के उपाय खोजने में सीधे उनसे विचार-विमर्श करने के लिए पार्टी केन्द्रीय समिति ने अपनी रोजमर्रा की एक गतिविधि के रूप में मौके पर पथप्रदर्शन जारी रखने के लिए जिम्मेदार पार्टी और सरकारी कार्यकर्ताओं को योजनाबद्ध ढंग से फैक्टरियों और गांवों में भेजा।

ऐसे मौके पर पथप्रदर्शन में पार्टी ने हमेशा किसी एक स्थान विशेष की मुख्य समस्या को सुलझाया और उसे एक नमूना बनाया। फिर उसने उस एक क्षेत्र में प्राप्त तमाम अनुभवों और सबकों का योजनाबद्ध ढंग से सामान्यीकरण किया और इस प्रकार आम और विशिष्ट पथप्रदर्शन को संयुक्त किया तथा अपने नेतृत्व में आत्मनिष्ठता और औपचारिकतावाद पर काबू पाया।

अवाम के लिए सही क्रान्तिकारी नेतृत्व आश्वस्त करने के लिए हमें अपनी निरन्तर विकसित हो रही वास्तविकताओं और काम की परिस्थितियों के अनुरूप पार्टी कार्य की विधि और प्रणाली में लगातार सुधार कर उसे पूर्ण बनाना चाहिए।

पिछले कुछ सालों से हमारे देश में व्याप्त नयी स्थिति का तकाजा है कि पार्टी-कार्य की सम्पूर्ण प्रणाली और विधि में उसके अनुरूप सुधार हो। नई परिस्थिति के मुख्य पहलू ये हैं। उत्पादन सम्बन्धों के समाजवादी रूपांतरण के संपन्न हो जाने से राष्ट्रीय अर्थतन्त्र में समाजवादी आर्थिक क्षेत्र मुकम्मिल तौर पर हावी हो गया है, उत्पादक शक्तियों का बड़ी तीव्र गति से विकास हुआ है और उत्पादन की परिधि में तेजी से विस्तार हुआ है, अवाम का राजनीतिक उत्साह प्रबल हुआ है। बिखरे और स्वयंस्फूर्त निजी अर्थतन्त्र के अनुरूप ढली पुरानी कार्यप्रणाली और

विधि उन नयी परिस्थितियों से मेल नहीं खाती जिनमें एक सुनियोजित और सुसंगठित समाजवादी अर्थतन्त्र हावी है, और फलतः कार्यकर्ताओं के काम का स्तर हमारी तेजी से बदल रही और विकसित हो रही वास्तविकता के साथ कदम से कदम मिला कर नहीं चल पा रहा था।

यह स्थिति सबसे बढ़कर ग्रामीण अर्थतन्त्र में जोरदार ढंग से अभिव्यक्त हुई, जिसे अल्पकाल में ही समाजवादी सहकारी अर्थतन्त्र में बदल दिया गया है और जिसमें री के साथ एक इकाई के रूप में विलीन होने के बाद सहकारों का आकार तेजी से विशाल हुआ है।

पार्टी केन्द्रीय समिति ने कांगसो काउंटी, दक्षिण प्योंगान प्रान्त, के छोंगसान-री और अन्य गांवों में पार्टी संगठनों का मौके पर पथप्रदर्शन किया और पार्टी और राज्यीय निकायों में कार्यप्रणाली और कार्यविधि में निर्णायक सुधार के ठोस उपाय खोजे। पार्टी केन्द्रीय समिति ने हमारे कार्य के तमाम क्षेत्रों में इस अनुभव का सामान्यीकरण किया और इस प्रकार सारे पार्टी कार्य में एक महान परिवर्तन किया।

छोंगसान-री के पथप्रदर्शन में प्राप्त अनुभव के सामान्यीकरण के लिए संघर्ष द्वारा हमने सबसे पहले कार्य की एक ऐसी प्रणाली पूरी तरह कायम कर ली, जिस के अन्तर्गत पार्टी और राज्यीय निकायों के कार्यकर्ताओं को स्वयं ही निचली इकाइयों में जाना चाहिए और अपने मातहतों और अवाम को ठोस मदद देनी चाहिए। केन्द्र प्रान्तों की मदद करने में समर्थ हुआ है और प्रान्त काउंटी की मदद करने में। खासतौर पर पार्टी और राज्य की नेतृत्व की सबसे निचली इकाइयों—काउंटी निकायों—के कार्यकर्ता नियमित रूप से री में जाने को प्रोत्साहित किये गये हैं जोकि देहात में मूल उत्पादन इकाई बन गयी है। वहां वे जिम्मेदाराना ढंग से उसके काम में मदद करते हैं और हमारे पार्टी और आर्थिक कार्य को व्यक्तिगत रूप से संगठित करते हैं और री कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर उन्हें क्रियान्वित करते हैं।

यह कार्यप्रणाली न केवल तेजी से विकसित हो रही वास्तविकता और कार्यकर्ताओं द्वारा प्रदत्त नेतृत्व के पिछड़े स्तर के बीच विषमता को समाप्त करने का सर्वाधिक कारगर उपाय बन गयी है, बल्कि यह अवाम की उत्पादक गतिविधियों से अलग पड़ी पुरानी कार्यशैली और कार्यप्रणाली के उन्मूलन, उत्पादन की मूल इकाइयों में पार्टी और राज्यीय निकायों के काम के निर्णयात्मक सुदृढ़ीकरण, और समाजवादी अर्थतन्त्र के विकास में तीव्रता के लिए एक जबर्दस्त शक्ति भी बन गई है।

छोंगसान-री में प्राप्त अनुभव के सामान्यीकरण की प्रक्रिया में हमने पार्टी

काम को लोगों के लिए सजीब काम में पूर्णतया बदल दिया है और अवाम के साथ अपने काम में हमने एक नया परिवर्तन किया है। हम ने इस बात का ध्यान रखा है कि तमाम पार्टी संगठन अवाम की उत्पादक गतिविधियों के साथ गहरा तालमेल बैठाकर अपने काम को तत्परता से और जुझारू ढंग से पूरा करें। हमने यह आश्वस्त किया है कि वे और ज्यादा ठोस विधि से प्रत्येक पार्टी सदस्य के साथ और प्रत्येक श्रमजीवी पुरुष और महिला के साथ राजनीतिक काम करें। पार्टी संगठनों ने प्रत्येक पार्टी सदस्य को उपयुक्त काम सौंपे और अवाम में उसकी हरावल दस्ते की भूमिका को बढ़ाया। इसके साथ ही पार्टी कार्यकर्ता अवाम के बीच गये और साथी के तौर पर उनके काम में उनकी मदद की, पार्टी के विचारों और नीतियों में शिक्षित और दीक्षित किया और क्रान्तिकारी कर्तव्यों को सम्पन्न करने के लिए तमाम पार्टी सदस्यों और मेहनतकश लोगों को जोरदार ढंग से गोलबंद भी किया।

परिणामस्वरूप हमने निश्चित रूप से नौकरशाही के बोसीदा ढांचे को तहसनहस कर दिया और पार्टी के अन्दर सर्वत्र अपनी पार्टी की क्रान्तिकारी कार्य-पद्धति को स्थापित करना शुरू किया। हमारे पार्टी संगठनों ने सीख लिया है कि कैसे अवाम में गहराई तक जाकर उनके साथ बन्धुत्व के अति निकट के नाते कायम कर, उनके उत्साह और रचनात्मक शक्ति को कौशलपूर्वक संगठित और गोलबंद किया जा सकता है। अब हमारे देश के मेहनतकश लोग पार्टी पर विश्वास करने लगे हैं, वे तमाम मामलों के बारे में सलाहमशविरे के लिए पार्टी निकायों के पास आते हैं, पार्टी संगठनों पर निर्भर रहते हुए निर्वाह करते हैं और काम करते हैं, और पार्टी द्वारा निर्धारित कर्तव्यों को पूरा करने के लिए अपनी पूरी शक्ति और प्रतिभा के साथ कोशिश करते हैं।

यह हमारी पार्टी के सुसंगत जन दृष्टिकोण की शानदार विजय का सूचक है।

पार्टी की एकता के सुदृढ़ होने और उसकी कार्यविधि में निर्णायक सुधार होने के बाद अवाम को कम्युनिस्ट विचारधारा में शिक्षित और दीक्षित करने में और उन्हें एक व्यक्ति के रूप में एकजुट करने में एक भारी परिवर्तन लाया गया है।

अन्तिम विश्लेषण में क्रान्ति की विजय इस बात पर निर्भर करती है कि कौन-सा पक्ष ज्यादा-से-ज्यादा लोगों को साथ लाने में समर्थ होता है।

अतः तमाम पार्टी गतिविधियों को अवाम को एकजुट करने और उन्हें क्रान्ति में लाने पर केन्द्रित किया जाना चाहिए।

हमारे देश में, जिसका इलाका बंटा हुआ है और जिसकी क्रान्तिकारी शक्तियों को अमरीकी साम्राज्यवादी अपनी घृणित कुचालों द्वारा लगातार ध्वस्त कर रहे हैं, अवाम को जीतने और उन्हें शिक्षित व दीक्षित करने का सवाल और भी

अधिक महत्व धारण कर जाता है।

मुक्ति के तुरन्त पश्चात से लगातार हमारी पार्टी नेज नतन्त्र के उत्तरी आधे भाग को एक एकात्मक राजनीतिक शक्ति में परिणत करने का जोरदार संघर्ष किया है और मजदूर-किसान गठबन्धन के आधार पर तमाम मेहनतकश अवाम की एकता के सुदृढ़ीकरण के लिए सतत प्रयास किया है। पिछले कुछ सालों में जनतन्त्र के उत्तरी आधे भाग में एक एकात्मक समाजवादी आर्थिक व्यवस्था की स्थापना कर हमने एक नयी बुनियाद पर अपने लोगों की राजनीतिक एकता कायम की है। इस आधार पर हमने अवाम के तमाम तबकों को पार्टी के इर्दगिर्द एकजुट करने और उन्हें शिक्षित करने तथा नये सिरे से ढालने के लिए और भी ज्यादा जोरों से काम किया है।

क्रान्ति के विकास के प्रत्येक चरण में, हमारी पार्टी ने सर्वहारा के अधिनायकत्व के मुख्य उद्देश्यों की स्पष्ट रूप से व्याख्या की और समाज के तमाम स्तरों को, जिन्हें क्रान्ति के पक्ष में लाया जा सकता है, साहसपूर्वक अपने में मिलाने और उन्हें सक्रिय रूप से शिक्षित करने और नये सिरे से ढालते हुए मुठ्ठीभर शत्रु तत्वों को अलग-थलग करने की सकारात्मक नीति का अनुसरण किया। ऐसी पार्टी नीति ने जीवन के तमाम क्षेत्रों में अवाम के उत्साह और गतिविधि के लिए पूरी गुंजाइश की व्यवस्था की और हमारे तमाम लोगों की एकता को मजबूत बनाया।

मेहनतकश अवाम को शिक्षित करने और नये सिरे से ढालने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व है कम्युनिस्ट शिक्षा।

हमारी पार्टी ने वर्तमान ऐतिहासिक दौर में इस्तेमाल की जाने वाली कम्युनिस्ट शिक्षा के मुख्य मुद्दों की साफ-तौर पर व्याख्या की और उसकी विधियों में लगातार सुधार करते हुए उसने योजनाबद्ध ढंग से मेहनतकशों की विचारधारात्मक चेतना को नये सिरे से ढाला।

पार्टी ने कम्युनिस्ट शिक्षा को क्रान्तिकारी परम्पराओं के शिक्षण के साथ घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध किया। उसका मुख्य प्रयास यह था कि बुनियादी विधि के रूप में ठोस दृष्टान्त के असर का उपयोग कर मेहनतकश लोगों की उत्पादन गतिविधियों से प्रत्यक्षतः जुड़ी व्यापक शिक्षा का संचालन किया जाए। इसने कम्युनिस्ट शिक्षा में औपचारिकतावाद के उन्मूलन, पार्टी की अवामी शिक्षा की नयी बुलन्दियों तक विकास और मेहनतकशों की विचारधारात्मक चेतना को नये सिरे से ढालने के काम में परिवर्तन लाना संभव बनाया। इस तरह कम्युनिस्ट पद्धति से रहने और काम करने के प्रति अवाम में एक नयी प्रवृति प्रकट होनी शुरू हुई है और लोगों को शिक्षित और दीक्षित करने का काम ऐसा बन गया है कि स्वतः

अवाम ने उसे अपने हाथ में ले लिया है। "आओ, हम कम्युनिस्ट ढंग से रहें और काम करें," इस नारे के अन्तर्गत हमारे मजदूरों, किसानों और बुद्धिजीवियों ने भारी संख्या में छोलिमा कर्मीदल आन्दोलन में भाग लिया है। उन्होंने जनता से सम्बद्ध एक जन आन्दोलन के तौर पर लोगों को कम्युनिस्ट पद्धतियों पर शिक्षित और दीक्षित करने के काम को भी सम्पन्न किया है।

अब हमारी पार्टी ने मेहनतकश अवाम को बोसीदा विचारधारा से पूर्णतया मुक्त करने के कठिन कर्तव्य की सफलतापूर्वक पूर्ति के मार्ग पर विश्वासपूर्वक कदम बढ़ाया 'और विशाल समूहों ने मानव को शिक्षित और नये सिरे से ढालने का काम प्रारम्भ कर दिया है।

साथियो,

समीक्षाधीन काल में हमारी पार्टी को अपनी पांतों में वृद्धि करने में जबर्दस्त कामयाबी हासिल हुई है।

हमें अब तक प्राप्त सफलताओं को सुदृढ़ करते हुए नयी जीतों की दिशा में और आगे बढ़ना होगा। हमारे लिए आत्मतुष्ट होने का सर्वथा कोई कारण नहीं है।

देश के पुनरेकीकरण के ऐतिहासिक कर्तव्य को पूरा करने के लिए इस समय हमारी पार्टी के समक्ष महत्वपूर्ण कार्य यह है कि सातवर्षीय आर्थिक योजना को सफलतापूर्वक सम्पन्न किया जाए और उत्तरी आधे भाग में लोकतांत्रिक केन्द्र का एक अजेय दुर्ग के रूप में निर्माण किया जाए। इस क्रान्तिकारी कर्तव्य का तकाजा है कि हम कोरियाई अवाम की पथप्रदर्शक शक्ति और हमारी तमाम जीतों की संयोजक—अपनी पार्टी—को एक अटूट शक्ति के रूप में सुदृढ़ करें और अपनी पार्टी के नेतृत्व में तमाम अवामी समूहों की एकता को ठोस बनाएं।

आज तमाम कोरियाई लोगों का भाग्य और कोरियाई क्रान्ति की अंतिम विजय पूर्णतया हमारी पार्टी के नेतृत्व पर निर्भर करती है। पार्टी की किलाबंदी हमारी क्रान्ति की विजय की एक निर्णायक गारंटी है।

हमें पार्टी को संगठनात्मक और वैचारिक रूप से सुदृढ़ बनाने और उसके नेतृत्व की भूमिका को मजबूत करने के लिए लगातार हर संभव प्रयास करना होगा।

इस समय पार्टी के काम में सर्वाधिक आवश्यक कर्तव्य यह है कि कार्यकर्ताओं की पांतों में विस्तार जारी रखा जाए और उनके नेतृत्व के स्तर को तेजी से ऊंचा किया जाए।

तमाम क्षेत्रों में हमारी वास्तविकता को, जो छोलिमा की रफ्तार से तेजी से आगे बढ़ रही है, क्रान्तिकारी ओजस्विता से ओतप्रोत और ज्यादा योग्य कमांडरों की जरूरत है।

हमारे वर्तमान कार्य में एक कमजोरी यह है कि नेतृत्व के कार्यकर्ताओं का स्तर अवाम की क्रान्तिकारी भावना के साथ, जिन्होंने पार्टी की सही पद्धतियों और नीतियों का हार्दिक समर्थन किया है, अथवा तीव्र गति से परिवर्तित और विकसित हो रही वास्तविकता के साथ कदम-से-कदम मिलाकर मुश्किल से ही चल सकता है। हमें कार्यकर्ताओं के स्तर को ऊंचा करने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए और खासतौर पर, मन्त्रालयों, प्रवन्ध कार्यालयों और हमारी पार्टी तथा सत्ता निकायों में काम करने वाले अधिकारियों की और कारखानों, उद्यमों तथा देहात में काम करने वाले उन प्रमुख कर्मचारियों की योग्यताओं में तेजी से सुधार लाना चाहिए जोकि समाजवादी अर्थतन्त्र के निर्माण में पार्टी नीतियों को पूरा करने के लिए प्रत्यक्षत: जिम्मेदार हैं।

क्रान्ति एक पेचीदा और कठिन काम है; यह प्रकृति और समाज का नये सिरे से निर्माण करने का काम है। इसे सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए हमारे पास क्रान्तिकारी संकल्प और जीवन के पुनर्गठन तथा निर्माण के लिए उपाय और हथियार दोनों ही होने जरूरी हैं। मार्क्सवाद-लेनिनवाद और वैज्ञानिक ज्ञान शक्तिशाली क्रान्तिकारी हथियार हैं, जो विजय के मार्ग को अपनी ज्योति से देदीप्यमान करते हैं और जटिल और दुष्कर संघर्ष में हमारे बढ़ाव को आश्वस्त करते हैं।

इस तथ्य के बावजूद कि हमारे पदाधिकारी अच्छे कार्यकर्ता हैं, जो कठिन संघर्ष में विकसित हुए हैं और पार्टी के वफादार हैं, उनमें से कुछेक वास्तविकता से पिछड़ गये हैं, केवल समय गुजार रहे हैं, क्योंकि वे विज्ञान और प्रविधि के अध्ययन को अनदेखा करते हैं और अपने सीमित अनुभव से चिपके रहते हैं। उनमें से कुछेक इतने सावधान भी हैं कि उनकी अवाम की क्रान्तिकारी शक्ति में आस्था नहीं हो सकती और वे बेधड़क होकर क्रांतिकारी ढंग से काम नहीं करते।

कार्यकर्ताओं की नेतृत्व संबंधी योग्यता बढ़ाने में सर्वाधिक महत्व की बात यह है कि तमाम अधिकारी मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन करें, वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त करें, और स्वयं को श्रमजीवी वर्ग की क्रांतिकारी भावना से लैस करें। "पूरी पार्टी को अध्ययन करना चाहिए" हमेशा इस नारे का अनुसरण कर उनमें से प्रत्येक को शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

तमाम कार्यकर्ताओं को वास्तविकता का वैज्ञानिक दृष्टि से विश्लेषण करने में और किसी भी पेचीदा स्थिति में पार्टी की नीतियों को सहीतौर पर सम्पन्न करने में दक्ष होने के लिए मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धांत का गहराई से अध्ययन करना होगा और उनमें पारंगत होना होगा। खासतौर पर उन्हें वर्तमान चरण के हमारे मुख्य क्रान्तिकारी कर्तव्य समाजवादी आर्थिक-निर्माण के बारे में वैज्ञानिक

जानकारी के साथ अपने-आपको पूर्णरूपेण तैयार करना होगा। तमाम कार्यकर्ताओं को हमारी पार्टी की नीतियों के सम्बंध में योजनावद्ध ढंग से मार्क्सवादी-लेनिनवादी दर्शन और अर्थशास्त्र का अध्ययन करना होगा। उन्हें प्रविधि और उद्योग, कृषि, निर्माण, परिवहन, व्यापार आदि की ठोस आर्थिक समस्याओं की जानकारी प्राप्त करनी होगी। इसके अलावा तमाम कार्यकर्ताओं को अपनी पार्टी की क्रान्तिकारी परम्पराओं का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन कर उन्हें समझना होगा, और स्वयं को क्रान्तिकारी भावना से लैस करना होगा, ताकि वे पार्टी नीतियों की भरसक वकालत कर सकें और क्रांतिकारी ओजस्विता के साथ उन्हें पूरा कर सकें।

मजदूर वर्ग मूल के कार्यकर्ताओं को बुद्धिजीवियों से ज्ञान और तकनीकी जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। दूसरी ओर बुद्धिजीवी मूल के कार्यकर्ताओं को मजदूर वर्ग की क्रान्तिकारी भावना और संगठन की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए।

हम सबको एकदूसरे से और खासतौर पर अवाम से शिक्षा ग्रहण करनी होगी।

आम लोग और वास्तविकता ही हमारे सर्वोत्तम शिक्षक हैं। तमाम कार्यकर्ताओं को विनयपूर्वक अवाम से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए, व्यावहारिक कार्य द्वारा अपने स्तर को ऊंचा करना चाहिए, अपने काम के परिणामों का निरन्तर विश्लेषण करना चाहिए और अपने अनुभवों का सामान्यीकरण करना चाहिए।

तमाम स्तरों पर पार्टी संगठनों को कार्यकर्ता प्रशिक्षण संस्थाओं को और विस्तृत करना होगा, निर्देशन और शिक्षण में गुणात्मक सुधार लाना होगा, और काम कर रहे कार्यकर्ताओं को व्यापक पुनःशिक्षा देनी होगी। काउंटी और उच्चतर स्तरों के कार्यकर्ताओं को केन्द्रीय पार्टी स्कूल, राष्ट्रीय अर्थतन्त्र संस्थान और कम्युनिस्ट कालेजों या उच्चतर शिक्षा संस्थानों के पत्राचार पाठ्यक्रमों द्वारा यथासंभव अल्पतमकाल में कालेज पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। काम करते हुए पढ़ने की प्रणाली कायम की जानी चाहिए, ताकि मैंनेजर, चीफ इन्जीनियर, दूकान मैंनेजर, तमाम उत्पादन इकाइयों में पार्टी संगठनों के अध्यक्ष, और सहकारों के प्रबन्ध कर्मचारी अपने-अपने सम्बद्ध क्षेत्र के विशिष्ट ज्ञान और तकनीकी जानकारी में प्रवीण हो सकें।

इस विधि से तमाम कार्यकर्ताओं को ऐसा दक्ष कार्यकर्ता बनाना चाहिए, जो न केवल पार्टी के असीम वफादार, राजनीतिक और सैद्धान्तिक दृष्टि से भलीभांति सन्नद्ध, और अपने काम की जानकारी में पारंगत हों, बल्कि जिनका सांस्कृतिक स्तर भी ऊंचा हो।

आज जो सबसे महत्वपूर्ण काम हमारे सामने हैं, उनमें से एक है, पार्टी सैलों यानी प्राथमिक पार्टी संगठनों का और भी सुदृढ़ीकरण।

प्राथमिक पार्टी संगठन प्रत्येक सदस्य के पार्टी जीवन का आधार है। यह हमारी पार्टी का बुनियादी संगठन और जुझारू इकाई है, जो अवाम को पार्टी के इर्दगिर्द एकजुट करती है और सीधे उनके साथ मिलकर पार्टी नीतियों पर अमल करती है।

प्राथमिक पार्टी संगठनों का सुदृढ़ीकरण ही पूरी पार्टी को मजबूत करना और क्रान्तिकारी कर्तव्यों को पूरा करने के लिए उसके तमाम सदस्यों और संगठनों को एक व्यक्ति के रूप में लामबंद करना संभव बना सकता है।

खासतौर पर हमारे देश में इस समय बड़े पैमाने पर चल रहे समाजवादी निर्माण के कार्य की सफलता को आश्वस्त करने और इस काम के लिए अवाम के असाधारण उच्च क्रान्तिकारी उत्साह तथा पहल का यथासंभव अधिकतम सहयोग प्राप्त करने के लिए यह जरूरी है कि प्रत्येक प्राथमिक पार्टी संगठन जुझारू संगठन बने, जो सक्रिय रूप से काम करे, नयी चीजों को तुरन्त ग्रहण करे, अवाम में प्रतिष्ठित हो और अवाम को एकजुट करने तथा साहस के साथ उनका नेतृत्व करने में समर्थ हो।

प्रत्येक प्राथमिक पार्टी संगठन को चाहिए कि वह अपने तमाम सदस्यों को इस बात के लिए प्रेरित करने पर ध्यान केन्द्रित करे कि वे, जैसाकि पार्टी जीवन की लेनिनवादी मान्यताओं के सर्वथा अनुरूप पार्टी नियमों में व्यवस्था है, अपने कर्तव्यों को पूर्णतया निभाएं। अपने सदस्यों की पार्टी भावना को मजबूत बनाने तथा उनमें पार्टी की विचारधारात्मक प्रणाली को सुदृढ़तापूर्वक लागू करने के लिए उसे पार्टी जीवन में आलोचना और आत्मालोचना की परिपाटी को विकसित करने और उनकी मार्क्सवादी-लेनिनवादी शिक्षा तथा पार्टी के अन्दर विचारधारात्मक संघर्ष, दोनों के सक्रिय रूप से संचालन पर भी ध्यान केन्द्रित करना होगा। तमाम पार्टी सदस्यों को इस विधि से शिक्षित और प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, ताकि वे हर प्रकार की नकारात्मक बातों का साहसपूर्वक मुकाबला कर सकें, पार्टी पद्धतियों और नीतियों की जोरदार रक्षा कर सकें और जहां कहीं भी और जब कभी भी जरूरी हो, इन नीतियों को यथासंभव पूर्णतया व्यावहारिक रूप दे सके।

प्रत्येक सदस्य को क्रान्तिकारी कर्तव्यों की पूर्ति के लिए लामबंद करते हुए प्राथमिक पार्टी संगठनों को केन्द्रक पार्टी पांतों में लगातार विस्तार और वृद्धि करनी होगी। प्रत्येक पार्टी संगठन को अपने सदस्यों में से प्रत्येक को उसके आचरण, योग्यता और शारीरिक हालत के अनुसार सही ढंग से पार्टी काम सौंपने होंगे, इन कामों के क्रियान्वयन में उनकी प्रतिदिन मदद करनी होगी और परिणामों की

तत्काल समीक्षा कर उनका सार पेश करना होगा। इस तरह हमें सभी सदस्यों को ऐसा बना देना होगा कि वे हमेशा पार्टी के तकाजों के अनुसार काम करें और पार्टी नीतियों को पूरा करने के अवाम के संघर्ष में उनके आगे चल सकें।

पार्टी संगठनों को अवाम को नित्य पार्टी विचारधारा में शिक्षित करते हुए उनके साथ अपने नातों को मजबूत बनाना होगा। इसके साथ ही श्रमजीवी लोगों के बीच से सदस्यों को समुपयुक्त ढंग से भर्ती कर पार्टी पांतों में स्थिरतापूर्वक विकास पर गम्भीरतापूर्वक ध्यान देना होगा।

पार्टी सदस्य आत्म-चैतन्य क्रान्तिकारी योद्धा हैं, जो क्रान्ति के लिए संघर्ष और समाजवाद तथा कम्युनिज्म की अन्तिम विजय के प्रति पूर्णतया वचनबद्ध हैं। हमारे पार्टी सदस्यों ने तमाम अवाम का नेतृत्व करने और देश की खुशहाली और श्रमजीवी अवाम की सुख-समृद्धि के लिए कोरियाई क्रान्ति को पूर्णतः की ओर ले जाने का भारी दायित्व अपने कंधों पर लिया है।

प्रत्येक पार्टी सदस्य को क्रान्ति के प्रति असीम वफादार बनने, हर दृष्टि से अवाम के लिए आदर्श प्रस्तुत करने हेतु एक क्रान्तिकारी लड़ाकू की योग्यताओं को और अधिक विकसित करने और अपने राजनीतिक स्तर तथा व्यावहारिक क्षमताओं में सुधार लाने के लिए अथक प्रयास करना होगा। हमारे तमाम सदस्यों को मार्क्सवाद-लेनिनवाद और पार्टी नीतियों से दृढ़तापूर्वक लैस होना चाहिए। उन्हें योग्य राजनीतिक कार्यकर्ता बनना चाहिए ताकि वे न केवल इन नीतियों की रक्षा कर सकें और उनकी तामील कर सकें, बल्कि अवाम को उन्हें समझा सकें और प्रचारित-प्रसारित कर सकें और उन्हें पार्टी विचारों की शिक्षा-दीक्षा देकर आगे ले जा सकें।

इसके अतिरिक्त पार्टी सदस्यों को अपने काम में भलीभांति दक्ष और प्रवीण होना चाहिए। उन सबको विज्ञान और तकनीकी ज्ञान सीखने के लिए विशेष प्रयास करना चाहिए और अपने शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक स्तरों को ऊंचा करना चाहिए।

इस तरह पार्टी के प्रत्येक सदस्य को मार्क्सवाद-लेनिनवाद से लैस एक जागरूक क्रान्तिकारी योद्धा और साथ-ही-साथ नये जीवन का तकनीकी विशेषज्ञ और संस्कृति के उच्च स्तर से लैस दक्ष और योग्य निर्माता बनना चाहिए।

पार्टी की नेतृत्वकारी भूमिका को बढ़ाने के लिए यह जरूरी है कि तमाम स्तरों पर पार्टी समितियों की शक्ति में वृद्धि की जाए तथा उनके कार्यकाज और भूमिका को मजबूत बनाया जाए।

पार्टी समिति अपनी सम्बद्ध इकाई में सर्वोच्च नेतृत्वकारी निकाय है। यह काम के हर पहलू में जनरल स्टाफ है। तमाम क्षेत्रों में पार्टी नीतियों की सही

क्रियान्विति सर्वथा पार्टी समितियों के नेतृत्व पर निर्भर करती है।

आज हमारे देश में समाजवादी प्रणाली पूर्णतया कायम की जा चुकी है, और हमारी पार्टी ने राजनीति, अर्थतन्त्र, सैनिक मामलों और संस्कृति के क्षेत्र की तथा जनता के दैनिक जीवन के तमाम पहलुओं की पूरी जिम्मेदारी संभाल ली है। इस स्थिति का तकाजा है कि प्रत्येक स्तर पर पार्टी समितियां तमाम क्षेत्रों में अपने नेतृत्व और निगरानी के कार्य में सुधार करें।

पार्टी निगरानी के दृढ़ीकरण से हमारा आशय यह नहीं है कि पार्टी प्रशासनिक काम भी खुद संभाल ले। इसकी बजाय तमाम कामों में पार्टी समितियों के सामूहिक नेतृत्व और साधारण पार्टी सदस्यों की पांतों द्वारा निरीक्षण में सुधार किया जाना चाहिए।

यदि पार्टी समितियों को जनरल स्टाफ के रूप में अपनी भूमिका को कारगर ढंग से निभाना है, तो यह जरूरी है कि अन्य कुछ भी करने से पहले उन्हें केन्द्रक सदस्यों पर, जिनमें प्रवल पार्टी भावना और नेतृत्व की योग्यता हो, आधारित बनाया जाय। समितियां उन पुरुषों तथा महिलाओं पर आधारित होनी चाहिए जो सम्बद्ध क्षेत्र की समस्याओं से परिचित हों तथा अवाम की उमंगों को समुचित रूप से समाविष्ट करते हुए अपने काम को दक्षतापूर्वक सम्पन्न करने में समर्थ हों। खासतौर पर समितियों को अपने समस्य मुख्यतया मेहनतकश लोगों और उत्पादन में प्रत्यक्ष रूप से लिप्त विशेषज्ञों में से लेने चाहिए। इस तरह तमाम पार्टी समितियों को जनता से और भी घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध तथा उनके विवेक को पूरी तरह संगठित करने तथा उपयोग में लाने में समर्थ होना चाहिए।

पार्टी समितियों को अपने सदस्यों को उपयुक्त दायित्व सौंपने चाहिए, लगातार उनकी सक्रियता तथा राजनीतिक और व्यावहारिक स्तरों में वृद्धि करनी चाहिए, ताकि किसी भी पेचीदा समस्या को सुलझाने में तमाम सदस्य पार्टी सिद्धान्तों का कड़ाई से पालन कर सकें और पार्टी नीतियों के आधार पर उनके कार्य को सक्रिय रूप से संगठित कर सकें।

सामूहिक नेतृत्व पार्टी समितियों की गतिविधियों का आधार है। पार्टी नीतियों के अनुसार काम करते हुए पार्टी समितियों को सम्बद्ध क्षेत्र में उठने वाले महत्वपूर्ण मामलों पर सामूहिक रूप से बहस करनी चाहिए, यह तय करना चाहिए कि आगे कैसे बढ़ा जाए, काम की जिम्मेदारियां सौंपनी चाहिए और सही ढंग से अपनी शक्तियों को लामबंद करना चाहिए।

तमाम राज्यीय निकायों, श्रमजीवी जन-संगठनों और आर्थिक एवं सांस्कृतिक संस्थानों के ऊपर नेतृत्व और निगरानी को मजबूत बनाया जाना चाहिए तथा समय से उनके काम की पड़ताल और विवेचन होना चाहिए, ताकि वे सौंपे गये

कामों को जिम्मेदारी से, पार्टी समितियों के निर्णयों के अनुरूप पूरा करने में समर्थ हो सकें।

यहां पार्टी द्वारा मार्गदर्शन और आर्थिक निरीक्षण में और अधिक सुधार भारी महत्व का प्रश्न बन जाता है। राष्ट्रीय आर्थिक योजना को पूरा करने के लिए पार्टी समितियों को मन्त्रालयों, प्रबन्ध कार्यालयों और आर्थिक निकायों के काम की निगरानी करनी होगी, ताकि उन्हें मालूम हो कि पार्टी नीतियों को कैसे सही ढंग से क्रियान्वित किया जाना चाहिए। खासतौर पर प्रान्तीय, काउंटी और नगर पार्टी समितियों का कर्तव्य हो जाता है कि वे उद्योग और कृषि के पथप्रदर्शन और निगरानी को तेज करें।

हमें तमाम क्षेत्रों में पार्टी पथप्रदर्शन और निगरानी को सुदृढ़ करना होगा, ताकि पार्टी के एकीकृत नेतृत्व के अन्तर्गत पार्टी की नीतियों की क्रियान्विति के संघर्ष में प्रत्येक राज्यीय निकाय और श्रमजीवी जन-संगठन अपनी भूमिका पूरी तरह निभाएं।

जन-सत्ता हमारी पार्टी की तमाम पद्धतियों और नीतियों को कार्यरूप देने वाली शक्ति है। वह समाजवादी निर्माण के लिए एक शक्तिशाली हथियार और हमारी क्रान्ति की एक विश्वसनीय रक्षक है।

प्रत्येक स्तर पर पार्टी समितियों का कर्तव्य है कि जन-सत्ता निकायों के सुदृढ़ीकरण के लिए निरन्तर प्रयास करें और क्रान्तिकारी कर्तव्यों को पूरा करने में उनके कार्य और भूमिका में अभिबृद्धि करें।

इस समय जन-सत्ता निकायों के सामने महत्वपूर्ण काम यह है कि वे अर्थतन्त्र के संयोजकों और संस्कृति के शिक्षकों के रूप में अपने कार्य में सुधार लाएं।

तमाम स्तरों पर सत्ता निकायों को आर्थिक प्रबन्ध के नियोजन के गुणात्मक स्तर को वर्तमान स्थिति से भी ऊंचा उठाना चाहिए और नियोजित उत्पादन, नियोजित संचालन, नियोजित वितरण और नियोजित खपत के समाजवादी सिद्धान्त को पूर्णतया अमल में लाना चाहिए। उत्पादक शक्तियों के त्वरित विकास और श्रम उत्पादकता में योजनाबद्ध वृद्धि को आश्वस्त बनाने के लिए सत्ता निकायों को उत्पादन ओर नियोजन को संगठित करना चाहिए और नियोजित ढंग से उन्हें आगे बढ़ाना चाहिए। उन्हें हमेशा मेहनतकश लोगों की तकनीकी जानकारी के स्तरों और कौशल में उन्नति लाने और श्रम-प्रशासन में सुधार और मजबूती लाने का भी प्रयास करना चाहिए। तमाम स्तरों के राजकीय निकायों में जन-जीवन स्थितियों के बारे में जिम्मेदारी की अधिक प्रबल भावना होनी चाहिए। मेहनतकश लोगों के लिए संभरण सेवाओं की समुचित गारंटी देकर, शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य, नगर प्रशासन और ग्राम्य निर्माण पर गम्भीरतापूर्वक

ध्यान देकर उन्हें लोगों की भौतिक सुख-सुविधाओं में स्थिरतापूर्वक बढ़ोत्तरी लानी चाहिए और पार्टी द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक क्रान्ति के कर्तव्य को जोरदार ढंग से पूरा करना चाहिए।

ऊपर से नीचे तक राजकीय निकायों को अपनी प्रत्येक गतिविधि में नौकरशाही और कुर्सी पर बैठे-बैठे काम करने के तौर-तरीकों को तिलांजलि देनी होगी और राजनीतिक कार्य को प्राथमिकता देने, हमेशा राजनीतिक परिवेश में मामलों को देखने और विश्लेषण करने और वर्तमान समस्याओं को तत्परता से और सही ढंग से निपटाने की पार्टी आदत को निर्णायक रूप से अपनाना होगा।

इस प्रकार हमारी जनबादी सरकार के निकायों को राजनीतिक सत्ता की ऐसी सशक्त संस्थाओं का रूप लेना चाहिए जो जनहित का साथ दें, उनकी अधिक वफादारी से सेवा करें, और क्रान्ति के एक हथियार के रूप में जिम्मेदारी से पार्टी की नीतियों को क्रियान्वित करें।

हमें सर्वहारा वाले अधिनायकत्व के कार्य को, जिसका प्रतिनिधित्व जन-सत्ता करती है, हर संभव तरीके से मजबूत बनाना चाहिए और इस तरह शत्रु की घुसपैंठ से समाजवाद के लाभों और जनता के सुखी-जीवन की दृढ़तापूर्वक रक्षा करनी चाहिए।

अमरीकी साम्राज्यवादियों ने, जिन्होंने दक्षिण कोरिया पर कब्जा कर रखा है और उनके पिट्ठुओं ने गणतन्त्र के उत्तरी आधे भाग में समाजवादी निर्माण पर आघात करने के लिए अपनी घृणित कुचालें जारी रखी हैं।

जन-सत्ता के निकायों को चाहिए कि वे शत्रु की ऐसी योजनाओं को पूर्णतया चकनाचूर कर दें। यह आवश्यक है कि हम जन-सेवा और मजदूर-किसान लाल रक्षकों को राजनीतिक और विचारधारात्मक दृष्टि से सशक्त बनायें। हमें आन्तरिक सेवा निकायों, सार्वजनिक विधिवेत्ता कार्यालयों और न्यायिक निकायों को मजबूत करना होगा तथा उनकी भूमिका तथा कार्यों में अभिवृद्धि करनी होगी। शत्रु के खिलाफ हमेशा कड़ी चौकसी बरतनी होगी, प्रत्येक क्षेत्र में क्रान्तिकारी अनुशासन और व्यवस्था लागू करनी होगी और एक सर्वजन आन्दोलन द्वारा प्रतिक्रान्ति के विरुद्ध अनवरत जोरदार संघर्ष करना होगा। इस तरह हम दृढ़तापूर्वक अपने तटों और सीमाओं की रक्षा करेंगे, शत्रु घुसपैंठियों को यथासमय पकड़ लेंगे और प्रत्येक कदम पर शत्रु के तमाम विध्वंसक कार्यों और तोड़-फोड़ों का भंडाफोड़ कर उन्हें नाकाम बना देंगे। हमें अपने स्थान पर शत्रु को छिप-छिप कर घुस आने से रोकना होगा—हमें उसके लिए हमारी धरती पर कदम रखना असंभव बना देना होगा।

इसके अतिरिक्त पार्टी को अवाम के साथ जोड़ने वाले संपर्कों के रूप में

श्रमजीवी जन-संगठनों की भूमिका को बढ़ाना होगा।

पिछले दौर में हमारे श्रमजीवी जन-संगठनों ने अपनी पांतों में पार्टी की विचारधारात्मक स्थापना में, श्रमजीवी अवाम को पार्टी के इर्दगिर्द लामबंद करने में और अपनी नीतियों की पूर्ति हेतु उन्हें संगठित और लामबंद करने में महान सफलताएं प्राप्त की हैं।

आज श्रमजीवी जन संगठनों को पार्टी की नीतियों को कार्यरूप देने में सक्रियता और पहल के और ज्यादा प्रदर्शन द्वारा उसे अधिक ठोस समर्थन देने के महत्वपूर्ण काम को पूरा करना है।

मजदूर यूनियन संगठनों की भूमिका बढ़ाने के लिए, जिनकी पांतों में तमाम कारखाना और कार्यालय मजदूर शामिल हैं, हमारी क्रान्तिकारी शक्तियों का संगठित और लामबंद किया जाना एक अति महत्वपूर्ण काम है।

मजदूर यूनियन संगठनों को सबसे पहले काम की एक ऐसी प्रणाली पूरी तरह लागू करनी चाहिए जो उन्हें अपने उपयुक्त कर्तव्यों पर डटे रहने और उन्हें जिम्मेदारी और ठोस तरीके से पूरा करने योग्य बनाए।

उन्हें तमाम कारखाना और कार्यालय मजदूरों को पार्टी के इर्दगिर्द और भी घनिष्ठ रूप से एकजुट करने और मजदूर वर्ग के अंदर अपनी विचारधारात्मक प्रणाली दृढ़तापूर्वक स्थापित करने के लिए जोरदार प्रयास करना चाहिए और इस प्रकार अपने श्रमजीवी वर्ग को पार्टी के आह्वान पर एक एकात्मक संकल्प और प्रयोजन के साथ काम करने और पार्टी तथा क्रान्ति के कर्तव्यों की वफादारी से सेवा करने में मदद देनी चाहिए।

उत्पादन सम्मेलनों के काम में और भी सुधार तथा तेजी लाकर मजदूर यूनियन संगठनों द्वारा उद्यमों के प्रबन्ध में मजदूरों की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। उन्हें बड़े पैमाने पर समाजवादी स्पर्धा आयोजित और विकसित कर उत्पादन लक्ष्यों की पूर्ति और लक्ष्य से अधिक उपज आश्वस्त करना चाहिए। सबसे बढ़कर तो उन्हें छोलिमा कर्मीदल आंदोलन को विस्तारित और विकसित करने का भरसक प्रयास करना चाहिए ताकि समाजवादी निर्माण में मेहनतकशों के उत्साह और पहल को पूर्ण स्थान मिल सके, तथा उन्हें कम्युनिस्ट पद्धतियों के अनुसार शिक्षित तथा दीक्षित करना चाहिए।

मजदूर यूनियन संगठनों को सचेतन ढंग से तमाम मेहनतकश लोगों में राज्यीय अनुशासन और सामाजिक व्यवस्था का पालन करने और राज्यीय संपत्ति की रक्षा और कद्र करने की भावना पैदा करनी चाहिए और उनके तकनीकी तथा सांस्कृतिक स्तरों में निरंतर सुधार करना चाहिए।

मजदूर यूनियनों का एक महत्वपूर्ण कर्तव्य यह है कि वे मेहनतकश लोगों के

कामकाजी हालात सुधारने और उनके भौतिक तथा सांस्कृतिक स्तरों को ऊंचा करने का प्रयास करें। उन्हें मेहनतकश लोगों के लिए काम पर श्रम संरक्षण और सुरक्षा की गारंटी करने के मामले में अधिक जिम्मेदारी महसूस करनी चाहिए और काम के इस संगठन और सुधार के लिए सक्रिय प्रयास करना चाहिए। इसके साथ ही उन्हें आम उत्पादन संस्कृति को बढ़ावा देना जारी रखना चाहिए। उन्हें सांस्कृतिक गतिविधियों, मेहनतकश लोगों के मनोरंजन और अवकाश की ओर भी अधिक ध्यान देना चाहिए तथा उनकी भौतिक स्थितियों को सुधारने पर भी ज्यादा ध्यान देना चाहिए। इस तरह उन्हें लोगों के कल्याण को बढ़ावा देने की पार्टी की नीति को पूर्णतया कार्यरूप देना चाहिए।

युवा लोगों के व्यापक तबकों से बनी जनवादी युवा लीग संगठनों के सामने तमाम युवा पीढ़ी को एक ऐसी सुरक्षित निधि के रूप में शिक्षित करने के महत्वपूर्ण कर्तव्य को पूरा करने का काम है जिस पर पार्टी भरोसा कर सके।

जनवादी युवा लीग संगठनों को तमाम युवकों में बड़े जोरों से कम्युनिस्ट शिक्षा और क्रांतिकारी परम्पराओं की शिक्षा का कार्य चालू करना चाहिए ताकि वे अपनेआपको पार्टी और क्रान्ति की निष्ठापूर्ण सेवा की दृढ़ भावना से लैस कर सकें और सामने आने वाली किसी भी बाधा को बहादुरी से पार करते हुए पार्टी की नीतियों को सफलतापूर्वक संपन्न कर सकें तथा कठिन और थका देने वाले कामों से निपटने में अगुवाई कर सकें।

जनवादी युवा लीग संगठनों को युवकों में निरंतर अपने अध्ययनों के प्रति रुचि पैदा करनी होगी और उन सब में दृढ़तापूर्वक योजनाबद्ध अध्ययन की आदत डालनी होगी ताकि वे मार्क्सवाद-लेनिनवाद और हमारी पार्टी की नीतियों की गहरी सूझबूझ विकसित कर सकें और पर्याप्त वैज्ञानिक पृष्ठभूमि प्राप्त कर सकें। खासतौर पर उन्हें यह आश्वस्त करना होगा कि प्रत्येक युवा व्यक्ति एक से अधिक तकनीकी कौशल हासिल करे और छात्र युवक अपने अध्ययन अनुशासन को दृढ़ कर और सही ढंग से किताबी ज्ञान और उत्पादक श्रम को संयुक्त कर समाजवाद के दक्ष और योग्य निर्माता बन सकें। इस तरह वे वह आश्वस्त करेंगे कि तमाम युवा लोग समाजवादी निर्माण में, खासतौर पर तकनीकी क्रान्ति की क्रियान्विति में, सक्रिय रूप से भाग लें और अपनी शक्ति तथा प्रतिभा का पूर्णरूपेण प्रदर्शन करें।

जनवादी युवा लीग संगठनों को युवकों में एक कम्युनिस्ट के उपयुक्त नैतिक आचरण की दृढ़तापूर्वक स्थापना का सक्रिय रूप से प्रयास करना होगा। युवा लोगों को पुराने पूंजीवादी रिवाजों की घुसपैंठ के साथ-साथ अनैतिकता और काहिली के तमाम लक्षणों से दृढ़तापूर्वक टक्कर लेनी होगी। उन सबको जीवन में मितव्ययिता

और कार्य में परिश्रम की क्रान्तिकारी भावनाओं को अपनाना होगा।

जनवादी युवा लीग संगठनों को चाहिए कि वे युवा पीढ़ी को शारीरिक और मानसिक रूप से निरंतर प्रशिक्षित करें तथा युवकों और बच्चों में व्यापक आधार पर शारीरिक संस्कृति और खेल-कूद को जोरदार ढंग से चलाकर उन्हें उत्पादक श्रम और राष्ट्रीय रक्षा के लिए और ज्यादा दृढ़तापूर्वक तैयार करें।

इस तरह हमारे तमाम युवक एक नये किस्म का आदमी बनने के लिए शिक्षित किए जाएंगे—ऐसा आदमी बनने के लिए जो परिवर्तन चाहे और जो क्रांतिकारी आशावाद और रचनात्मकता से ओतप्रोत हो, जो हमेशा कर्मठ हो, मन और कर्म से साहसी हो, जो नूतनतावादी हो और एक उज्ज्वल भविष्य के निर्माण के लिए बड़े उत्साह से आगे कदम बढ़ाता हो।

जनवादी महिला यूनियन संगठनों को औरतों में कम्युनिस्ट शिक्षा को तेज करना चाहिए, उनकी राजनीतिक चेतना और सांस्कृतिक स्तरों को बढ़ाना चाहिए और मेहनतकश स्त्रियों को समाजवादी निर्माण में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

इस तथ्य को देखते हुए कि औरतों ने पूरी शक्ति से हमारे समाज के जीवन में प्रवेश किया है तथा आर्थिक और सांस्कृतिक निर्माण के तमाम क्षेत्रों में उनकी संख्या काफी बढ़ी है, जनवादी महिला यूनियन को कारखानों, उद्यमों और देहाती जिलों में अपने संगठन को दृढ़ करना चाहिए, उनके सक्रिय कार्यकर्ताओं को उत्पादन केन्द्रों के निकट लाना चाहिए और अग्रिम पंक्ति की औरतों को दृढ़तापूर्वक एकजुट कर सक्रिय रूप से शिक्षित और दीक्षित करना चाहिए।

तमाम स्तरों पर पार्टी समितियों को मजदूर यूनियनों के महासंघ, जनवादी युवा लीग और जनवादी महिला यूनियन सरीखे श्रमजीवी जन संगठनों का ठोस रूप से निर्माण करना चाहिए, सही समय पर काम करने की पद्धतियां और विधियां निर्धारित करनी चाहिए और पार्टी नेतृत्व का दृढ़ीकरण जारी रखना चाहिए, ताकि इन संगठनों की भूमिका बढ़े। खासतौर पर पार्टी संगठनों को श्रमजीवी जन-संगठनों की तमाम समितियों के काम को मजबूत बनाना चाहिए ताकि वे एक निश्चित क्षण पर पार्टी द्वारा सौंपे गये कर्तव्यों को तत्काल अपने हाथों में ले सकें और अपने संघर्ष में पार्टी के साथ कदम-से-कदम मिला कर चल सकें।

प्रत्येक स्तर पर पार्टी समितियों को चाहिए कि पार्टी की क्रांतिकारी आगामी पद्धति का पूर्ण रूप से अनुसरण करें और तमाम गतिविधियों में मजबूती के साथ काम की क्रांतिकारी पद्धति और शैली को विकसित करें।

इन समितियों को अवाम में गहराई तक जाना चाहिए, नेतृत्व को निचले स्तरों के निकटतर लाना चाहिए, अनुकरणीय कृत्यों का—जो अवाम के बीच

नयी खिलती कलियों की तरह हैं—प्रकट होते ही पता लगाकर उन्हें लोकप्रिय बनाना चाहिए और पार्टी नीतियों की पूर्ति में अवाम के उत्साह और पहल को बड़े कौशल से हासिल और संगठित किया जाना चाहिए।

अवाम को शिक्षित करना, नये सिरे से ढालना और एकजुट करना, वह केन्द्रीय समस्या है जिससे इस चरण में हमारी पार्टी को निबटना है। हमें लोगों को शिक्षित करने और नये सिरे से ढालने के लिए सारी पार्टी को सक्रिय करना होगा और इस काम को व्यापक आधार पर पूरा करना होगा।

ऊपर से नीचे तक पार्टी संगठनों को शुरू से ही हमेशा आबादी के उन हिस्सों को शिक्षित और दीक्षित करने के प्रश्न की गंभीरता से चिंता करनी चाहिए, जिनकी सामाजिक भूमिका पेचीदा हो और फिर उन्हें पार्टी के इर्दगिर्द एकजुट करना चाहिए।

दशाब्दियों के जापानी साम्राज्यवादी औपनिवेशिक शासन, देश के उत्तरी और दक्षिणी भागों में विभाजन और खासतौर पर मातृभूमि मुक्ति युद्ध के दौरान हमारी एकता को नष्ट करने की शत्रु की योजनाओं के कारणवश हमारी आबादी की सामाजिक और राजनीतिक बनावट जटिल हो गयी है।

तमाम लोगों की एकता को ठोस बनाने में महत्वपूर्ण बात यह है कि हम उन लोगों की सामाजिक स्तरों की समस्याओं को, जिनकी पृष्ठभूमियां जटिल हैं, सही ढंग से सुलझाएं और निश्चित रूप से उन्हें पार्टी और क्रांति के पक्ष में ले आएं।

आज इस काम को और भी अधिक सफलतापूर्वक संपन्न करने के लिए तमाम स्थितियां हमारे पक्ष में हैं। गणतंत्र के उत्तरी आधे भाग में तमाम लोगों ने बोसीदा उत्पादन सम्बन्धों को तोड़ दिया है और वे समाजवादी मेहनतकश बन गये हैं। वे समाजवादी प्रणाली के सुखद जीवन को अनुभव कर रहे हैं तथा समाजवाद और कम्युनिज्म में साफतौर पर अपना उज्ज्वल भविष्य देख रहे हैं। हमारी पार्टी इस समय संगठन और विचारधारा की दृष्टि से जितनी एकजुट और मजबूत है उतनी पहले कभी न थी। एक शक्तिशाली पार्टी के रूप में विकसित होने से अब वह जटिल पृष्ठभूमि वाले समाज के किसी भी स्तर को अपने में शामिल करने, शिक्षित करने और नये सिरे से ढालने में पूर्णतया सक्षम है।

तमाम स्तरों पर पार्टी संगठनों को पार्टी सदस्यों के क्रान्तिकारी अवामी दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने के लिए अथक प्रयास करना चाहिए और मजदूर वर्ग को धुरी बनाकर उसके साथ जन-सामान्य की एकजुटता को मजबूत करना चाहिए। जो भी कोई इस समय क्रान्ति का वफादार है और जो अपने मूल, भूमिका और पिछले रिकार्ड के बावजूद खुद को बदलने का दिल से प्रयास कर रहा है उसे पार्टी संगठनों को अपने अंदर लाना चाहिए और उस पर भरोसा

करना चाहिए। उन्हें ऐसे लोगों की सक्रिय रूप से मदद करनी चाहिए और धैर्यपूर्वक उन्हें शिक्षित करना चाहिए, जो इसके बाद अपनी तमाम प्रतिभा और उत्साह समाजवाद के निर्माण की दिशा में लगाने में समर्थ हो सकेंगे। पार्टी संगठनों को संघर्ष में परखे गये लोगों की पिछली गलतियां माफ कर देनी चाहिए और ऐसे लोगों के मूल पर फिर से विचार करना चाहिए ताकि उनकी सक्रियता को पूरी गुंजाइश मिल सके।

इस काम को सफलतापूर्वक करते हुए हम क्रांति के शत्रुओं को और भी मुश्किल स्थिति में पहुंचा देंगे, अपने तमाम लोगों की एकता को सुदृढ़ करेंगे और सारे समाज में आपसी विश्वास और शान्ति को आश्वस्त करेंगे।

जटिल सामाजिक पृष्ठभूमियों की समस्या को सहीतौर पर सुलझाते हुए हमें अपने देश के तमाम मेहनतकश लोगों को एक नये किस्म का इंसान बनने के लिए शिक्षित और दीक्षित करना चाहिए।

कम्युनिज्म का निर्माण अवाम के लिए किया गया है। यह हर किसी को प्रचुरता का जीवन बिताने में समर्थ बनाएगा। कम्युनिस्टों पर इस ऐतिहासिक मिशन की जिम्मेदारी है कि वे तमाम लोगों को मुक्त करें, उन्हें पूर्णतया आजाद करें और कम्युनिज्म की ओर ले जायें। कोई जन्म से ही पिछड़ा हुआ नहीं होता है। यद्यपि कुछ लोग दूसरों के मुकाबले में जल्दी नये सिरे से ढाले जा सकते हैं फिर भी ऐसा कोई नहीं है जो परिवर्तन के अयोग्य हो।

किसी को भी पीछे पड़े रहने नहीं देना चाहिए। हमें प्रत्येक पुरुष और महिला को धैर्यपूर्वक और दृढ़ता से शिक्षित करना होगा और उन्हें सुधारना होगा तथा एकदूसरे की मदद करते हुए कम्युनिज्म की प्रतिष्ठा की दिशा में एक साथ आगे चलना होगा।

तमाम अवाम की यह शिक्षा और दीक्षा एक गहरी विचारधारात्मक क्रांति है जो अन्ततः मनुष्यों की चेतना के क्षेत्र में भी पूंजीवाद को नष्ट कर देती है और उन्हें भूतकाल से विरसे में मिली हर उस चीज से जो बोसीदा है, पूर्णतया मुक्त कर देती है। यह राज्यसत्ता पर मजदूर वर्ग के कब्जे के बाद उसके सामने उत्पन्न सर्वाधिक कठिन और लम्बा काम है। हमने अभी इसे करना आरंभ ही किया है और हमारी सफलताएं अभी मात्र शुरूआत ही हैं।

अब तक प्राप्त सफलताओं और अनुभव पर दृढ़तापूर्वक अपने आपको आधारित करते हुए हमें मेहनतकश जन-समुदाय को और भी अधिक गतिशीलता के साथ कम्युनिस्ट विचारधारा में शिक्षित करना होगा।

चूंकि उत्तर और दक्षिण कोरिया में सर्वथा विरोधी व्यवस्थाएं एकदूसरे के आमने-सामने खड़ी हैं और हमारे शत्रु समाजवाद के विरुद्ध घृणित षड्यंत्र रच रहे

हैं, इसलिए हमें मेहनतकश लोगों को समाजवादी प्रणाली की श्रेष्ठता और उसकी अनिवार्य विजय के बारे में कायल करने के काम को लगातार प्राथमिकता देनी होगी और उनमें वर्ग चेतना भरनी होगी ताकि वे तमाम परिस्थितियों में क्रांतिकारी उपलब्धियों और समाजवादी प्रणाली की दृढ़तापूर्वक रक्षा कर सकें।

हम क्रांति के युग में जी रहे हैं। हमारा देश अभी तक पुनः एकीकृत नहीं हुआ है और हमें कई कठिन दायित्वों को पूरा करना है। हमें अभी पुनरेकीकरण संपन्न करना है और अपनी मातृभूमि की धरती पर कम्युनिज्म का निर्माण करना है। तभी हम कह सकेंगे कि हमने कोरियाई कम्युनिस्टों के रूप में अपने दायित्व को निभाया है। विश्व में कई पददलित देश अभी भी पूंजी द्वारा शोषण और साम्राज्यवाद के जुए से अपनेआपको स्वतंत्र कराने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। हमें क्रांति की अंतिम विजय के लिए प्रचंड संघर्ष जारी रखना होगा।

अतः हमें पूंजीवादी विचारधारा की घुसपैंठ के विरुद्ध दृढ़ता से लड़ना होगा, अनैतिकता और काहिलपन को ठुकराना होगा, एक ऐसा क्रान्तिकारी माहौल पैदा करना होगा, जो मेहनतकश लोगों में किफायती और कठोर जीवन की पद्धति को बढ़ावा दे और उन्हें निर्बाध रूप से नए-नए परिवर्तन लाने और सतत आगे बढ़ने की क्रान्तिकारी भावना में शिक्षित करे।

काम से प्यार की भावना, समाजवादी या कम्युनिस्ट समाज में नये आदमी की सर्वाधिक बुनियादी विशेषताओं में से एक है। हमें मेहनतकश लोगों में श्रम को सम्मानजनक मानने और उससे प्यार करने की भावना को बढ़ावा देने और काम के प्रति जागरूक रवैया उत्पन्न करने की कोशिश करते रहना चाहिए।

कम्युनिस्ट शिक्षा में एक अन्य महत्वपूर्ण सवाल यह है कि पुराने समाज से विरसे में मिली बुराइयों, व्यक्तिवाद और स्वार्थपरता को दूर किया जाए और मेहनतकश लोगों में सामूहिकतावाद की भावना का संचार किया जाए, जो राज्य और समाज के हितों को महत्व देती है और उन्हें एकजुट होने में मदद देती है। "एक सब के लिए और सब एक के लिए" इस नारे का और भी ऊंचा जयघोष करते हुए हमें गणतन्त्र के पूरे उत्तरी आधे भाग को लाल रंग में रंगने के लिए अपने समाज को एक ऐसे बड़े परिवार में बदलने के लिए संघर्ष करना चाहिए जिसमें सौहार्द और एकजुटता हो।

हमें हमेशा मेहनतकश लोगों को समाजवादी देशभक्ति और सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद में शिक्षित करने में गहरी दिलचस्पी लेनी चाहिए। तमाम मेहनतकश लोगों को अपने जन्मस्थलों और वतन से प्यार करना, अपने काम के स्थानों, नगरों और गांवों को अच्छी हालत में बनाये रखना और अपने देश की दृढ़संकल्प होकर रक्षा करना सीखना चाहिए। शान्ति और समाजवाद के समान

हित के लिए संघर्ष में हमें उन्हे समाजवादी देशों के लोगों, और समूचे संसार के साथ दृढ़ मैत्री और एकता की भावना में शिक्षित करना चाहिए। इसके साथ ही सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद में शिक्षा को हमेशा समाजवादी देशभक्ति में शिक्षा से मजबूती से संयुक्त किया जाना चाहिए तथा मेहनतकश लोगों को इस बारे में दृढ़तापूर्वक कायल करना चाहिए कि हमारी क्रान्ति विश्व-क्रांति का एक अभिन्न अंग है और हम सबसे पहले अपने देश में क्रान्ति को आगे बढ़ा कर ही उस अन्तर्राष्ट्रीय क्रान्ति में योगदान कर सकते हैं।

पार्टी संगठनों को चाहिए कि वे अपनी पार्टी की लाइनों और नीतियों को कार्यरूप देने के संघर्ष के साथ शिक्षा-कार्य को गहराई से जोड़कर उसे सम्पन्न करें। यह ऐसी शिक्षा होनी चाहिए जिसका उद्देश्य हो मेहनतकश लोगों की विचारधारा को नये सिरे से ढालना और कम्युनिस्ट आचरण तथा गुण उत्पन्न करना।

मेहनतकशों की कम्युनिस्ट शिक्षा को दृढ़तापूर्वक क्रान्तिकारी परम्पराओं की शिक्षा के साथ जोड़ा जाना चाहिए।

अनुभव पहले ही पुष्ट कर चुका है कि जब कम्युनिस्ट शिक्षा क्रान्तिकारी परम्पराओं की शिक्षा से जुड़ी होती है, तो वह न केवल कम्युनिज्म के आम सिद्धान्तों को सीखने का ही सवाल रह जाती है, बल्कि कम्युनिस्टों के सजीव दृष्टान्तों के अनुसरण करने का भी सवाल बन जाती है। वह अपने आप को एक ऐसी शिक्षा में बदल देती है, जो लोगों पर दृढ़ और महत्वपूर्ण असर डालती है।

उन जापान-विरोधी छापामारों के संघर्ष और जीवन की कथा, जिन्होंने बड़े ही मुश्किल हालात में कई सालों तक जापानी साम्राज्यवादियों से संघर्ष किया था, हमारे तमाम मेहनतकश लोगों की भावनाओं को उभारने और उन्हें वीरोचित संघर्ष के लिए प्रेरित करने में समर्थ ठोस दृष्टान्त पेश करती है। सबसे बढ़कर तो वह उस युवा पीढ़ी को, जो क्रान्ति की कड़ी आजमाइशों में से नहीं गुज़री है, कम्युनिज्म की क्रान्तिकारी भावना में शिक्षित करने के लिए सर्वोत्तम पाठ्य-पुस्तकों का काम करती है। जापान-विरोधी छापामारों के क्रान्तिकारी ध्येय को आगे बढ़ाने के अपार गौरव और जिम्मेदारी की भावना से ओतप्रोत हमारे मेहनतकश कठिनाई और मुसीबत के क्षणों में उनके वीरतापूर्ण जंगजू कारनामों से स्फूर्ति प्राप्त करते हैं, और समाजवादी निर्माण में जबर्दस्त देशभक्तिपूर्ण लगन और रचनात्मक पहल का परिचय देते हैं।

इस के अलावा मेहनतकश लोगों को अपनी पार्टी और अपनी क्रान्ति के ऐतिहासिक मूलों का स्पष्टतया दमन करा कर, क्रान्तिकारी परम्पराओं की शिक्षा, पार्टी और क्रान्ति की रक्षा तथा समाजवाद की उपलब्धियों की सुरक्षा के लिए

अन्त तक लड़ने के संकल्प को बढ़ावा देने में महान योगदान करती है। इस तरह क्रान्तिकारी परम्पराओं के साथ संयुक्त कम्युनिस्ट विचारधारा में शिक्षा पार्टी सदस्यों और मेहनतकश अवाम के विशाल समूहों में पार्टी की विचारधारात्मक प्रणाली को स्थापित करने और उन्हें पार्टी विचारों से लैस करने का एक सशक्त साधन प्रस्तुत करती है।

तमाम स्तरों पर पार्टी संगठनों का कर्तव्य है कि वे मेहनतकश लोगों को पूर्ववर्ती क्रान्तिकारियों की निर्भीकतापूर्ण क्रान्तिकारी भावना, देशभक्तिपूर्ण लगन और महान कम्युनिस्ट लक्षणों के ठोस आदर्श प्रस्तुत कर उन्हें और भी ज्यादा उत्साह के साथ कम्युनिस्ट विचारधारा में शिक्षित करें। पार्टी संगठनों को चाहिए कि वे मेहनतकश लोगों को हमारी क्रान्तिकारी परम्पराओं की शिक्षा देकर मुख्यत: एक कम्युनिस्ट विश्व दृष्टिकोण की दृढ़तापूर्वक स्थापना की दिशा में कार्य करें, ताकि वे अपने जीवन, कार्य और संघर्ष को क्रान्तिकारी ढंग से चला सकें। साथ ही पार्टी संगठनों को चाहिए कि वे मेहनतकशों को अपनी पूरी शक्ति के साथ पार्टी के इर्दगिर्द एकजुट करें।

समाजवादी व्यवस्था की विजय के बाद व्यापक शिक्षा की सर्वाधिक प्रभावशाली विधि यह है कि लोगों को ठोस दृष्टान्त द्वारा प्रभावित किया जाए।

समाजबादी व्यवस्था में, जहां शोषण और दमन का सफाया हो चुका हो, और जहां असीमित उन्नति के अवसर सब के लिए सुलभ हों, लोग उस चीज के लिए लालायित होते हैं जो खूबसूरत और अच्छी हो, तथा पूरे समाज में सकारात्मक प्रवृत्तियां व्याप्त होती हैं। समाजवाद में किसी भी सकारात्मक आचरण का अवाम के विशाल समूह सहानुभूतिपूर्वक स्वागत करते हैं। उसे तत्काल लोकप्रिय बनाया जा सकता है और वह सारे समाज के लिए एक अनुकरणीय नमूने का काम कर सकता है। इसके अतिरिक्त एक सकारात्मक दृष्टान्त नकारात्मक कार्य की आलोचना भी होती है। वह साफतौर पर बता सकता है कि कैसे मेहनतकश लोग नकारात्मकता पर काबू पा सकते हैं और इससे उन्हें इस संघर्ष में बहुत ज्यादा उत्साह प्राप्त होता है।

समाजवाद में सकारात्मक दृष्टान्त द्वारा अदा की जाने वाली जबर्दस्त भूमिका पर जोर देते हुए लेनिन ने हमें सिखाया है कि इस बात की पक्की व्यवस्था कर लेना हमेशा पार्टी का कर्तव्य होता है कि मेहनतकश जो उदाहरण पेश करें और बहुमूल्य अनुभव अर्जित करें, उन्हें जनता भी पूरी तरह आत्मसात कर ले।

हमारे देश में, जहां समाजवाद विजयी हो चुका है, अवाम की क्रान्तिकारी भावना इस समय असाधारण बुलंदी पर है और हम सर्वत्र लोगों को प्रभावित करने वाली शानदार और सकारात्मक मिसालें देख रहे हैं।

तमाम स्तरों के पार्टी संगठनों को अवाम के बीच के सकारात्मक दृष्टान्तों का समय पर पता लगा लेना चाहिए और उन्हें सक्रिय रूप से प्रोत्साहित करना और देश भर में लोकप्रिय बनाना चाहिए। व्यक्तियों की शिक्षा में यह बात भी महत्वपूर्ण है कि हम न-केवल उन्हें दूसरों के ठोस दृष्टान्तों का अनुसरण करने में मदद दें, बल्कि आत्मविश्वास और साहस की प्रेरणा देकर हमेशा उनके अपने गुणों को मान्यता दें तथा उनको सक्रिय रूप से समर्थन भी दें।

साथ ही हमें अवाम के बीच जाना चाहिए और अपने कामों द्वारा उसके सामने दृष्टान्त पेश करने चाहिए। हमें अवाम को तब तक हर बात पूरी तरह और धैर्यपूर्वक समझानी चाहिए जब तक कि वे उसे ग्रहण न कर लें। जिन लोगों में कमियां हैं हमें उनको भी नम्रतापूर्वक और साथी की भावना से समझाना-बुझाना चाहिए और उन्हें अपनी कठिनाइयां सुलझाने में यथासंभव हार्दिक मदद देनी चाहिए और उन्हें सही मार्ग पर लगाना चाहिए। बगैर ऐसे धैर्य के हम न तो लोगों को प्रभावित कर सकेंगे और न ही मानव को नये सिरे से ढालने और शिक्षा देने के पेचीदा तथा कठिन कार्य का सफलतापूर्वक संचालन कर सकेंगे।

हम कह सकते हैं कि समाजवाद में किसी व्यक्ति को नये सिरे से ढालने के लिए मूल सिद्धान्त यह है कि उसे पूर्णतया अपने सकारात्मक गुणों को विकसित करने और नकारात्मक बातों पर काबू पाने के लिए निरन्तर प्रोत्साहित किया जाए और धैर्यपूर्वक उसकी मदद की जाए।

सामूहिक आदमी को शिक्षित करने के लिए सर्वोत्तम स्कूल है। और जनचेतना को नये सिरे से ढालने के उद्देश्य वाला विचारधारात्मक कार्य केवल प्रकृति और समाज को बदलने के व्यावहारिक संघर्ष द्वारा ही सफल बनाया जा सकता है।

हमारी कम्युनिस्ट शिक्षा उत्पादन स्थल का, जहां लोग सामूहिक रूप से काम करते और रहते हैं, केन्द्र के रूप में उपयोग करके ही मानव की चेतना के पुन:संस्कार के काम को सीधे मेहनतकशों की उत्पादक गतिविधियों के साथ जोड़ सकती है—और उनमें कम्युनिस्ट नैतिकता के गुणों को सबसे कारगर ढंग से बढ़ावा दे सकती है।

उत्पादन स्थल को अपना केन्द्र बनाकर अब इस शिक्षा और जन-पुन:संस्कार का काम हमारे देश के शहरों और गांवों में सफलता से आगे बढ़ रहा है और खास-तौर पर छोलिमा कार्यदल आन्दोलन में शानदार परिणाम हासिल किये जारहे हैं।

अपनी पार्टी के नेतृत्व में हमारे मजदूर वर्ग द्वारा प्रारम्भ किया गया छोलिमा कार्यदल आन्दोलन श्रमजीवी अवाम के लिए कम्युनिज्म की एक शानदार पाठशाला है।

छोलिमा कार्यदल श्रमजीवी लोगों की कम्युनिस्ट शिक्षा को मूल महत्व देता है। यह लोगों को शिक्षित करने और नये सिरे से ढालने तथा उनके स्वेच्छापूर्ण उत्साह को उजागर करने को ही उत्पादन के सामूहिक नवीनीकरण की कुंजी मानती है।

छोलिमा अश्वारोही पार्टी की लोकप्रिय कार्य-शैली और पद्धति पर अपने-आपको आधारित करते हुए अपनी टोली के प्रत्येक सदस्य के लिए उपयुक्त शैक्षणिक पग उठाते हुए लोगों को योजनाबद्ध ढंग से शिक्षा देने और उन्हें सुधारने का काम करते हैं। वे पुराने क्रान्तिकारी के अनुकरणीय कार्यों और आज के सकारात्मक आचरणों की चर्चा कर, व्यावहारिक काम में आदर्श पेश कर और पिछड़ने वालों को तमाम मामलों में साथी-सी मदद देकर लोगों को हमेशा काम करने को प्रेरित करते रहते हैं। इस तरह छोलिमा अश्वारोही परम धैर्य से लोगों को प्रभावित करते हैं और सामूहिक प्रयास द्वारा उन्हें शिक्षित करते हैं। छोलिमा कार्यटोलियों में सामूहिकता के प्रभाव और साथी जैसे प्यार से कल का पिछड़ा व्यक्ति आज का सक्रिय व्यक्ति बन जाता है। हर कोई एकदूसरे की मदद कर और कठिन कामों को कर दिखाने में एक दूसरे से आगे रहने के लिए होड़ लगाकर संयुक्त सफलता में योगदान करने का यत्न करता है।

जीवन का अनुभव पहले ही इस तथ्य का साफ सबूत पेश कर चुका है कि छोलिमा कार्यटोली आन्दोलन न केवल उत्पादन में सामूहिक अभिनवता के लिए एक अभियान है, बल्कि वह लोगों की शिक्षा और दीक्षा के लिए सर्वाधिक लोकप्रिय किस्म का अभियान भी है।

तमाम स्तरों के पार्टी संगठनों को चाहिए कि वे छोलिमा कार्यटोली आन्दोलन के और आगे विकसित करने पर गम्भीरतापूर्वक ध्यान दें और खासतौर पर छोलिमा कार्यटोलियों की सक्रिय कम्युनिस्ट शिक्षा के काम पर ध्यान दें और इस तरह लोगों की शिक्षा एवं दीक्षा के लिए एक कम्युस्टि पाठशाला के रूप में अपनी भूमिका बढ़ायें।

तमाम पार्टी संगठनों को उपयुक्त अवसर पर छोलिमा अश्वारोहियों के सजीव दृष्टान्तों और कार्य संबंधी उनके अनुभव के सामान्य निष्कर्ष पेश करने के लिए जोरदार प्रयास करने चाहिए। जैसे-जैसे छोलिमा कार्यदल आन्दोलन जोर पकड़ता जा रहा है, वैसे-वैसे मेहनतकशों की उत्पादक गतिविधियों से प्रत्यक्ष रूप से सम्बद्ध विचारधारात्मक कार्य की नयी-नयी विधियां और स्वरूप प्रकट होते जा रहे हैं। मिसाल के तौर पर, खेतों में किसानों में प्रचार के काम की नयी विधियां और स्वरूप प्रकट हो रहे हैं। ऊपर से नीचे तक, पार्टी संगठनों को उत्पादन-स्थलों पर उत्पन्न होने वाली ऐसी विधियों और स्वरूपों को लोकप्रिय बनाना चाहिए और

उन्हें लगातार विकसित करना चाहिए और इस तरह पार्टी के विचारधारात्मक कार्य में कठमुल्लापन और औपचारिकतावाद का पूर्णतया उन्मूलन करना चाहिए तथा अवाम की शिक्षा में और सुधार तथा दृढ़ता लानी चाहिए।

हमारी पार्टी ने पहले ही अवाम को शिक्षित करने और नये सिरे से ढालने की समस्या से दो-चार होना शुरू कर रखा है और उन सबने सकारात्मक रूप से इसका स्वागत किया है। यह अब समस्त पार्टी संगठनों का कर्तव्य है कि वे अवाम के बीच गहराई तक जाएं और काम को ज्यादा साहस से पूरा करें।

तमाम स्तरों पर पार्टी संगठनों और तमाम पार्टी सदस्यों को हमेशा लोगों को शिक्षित करने और नये सिरे से ढालने पर गम्भीरतापूर्वक ध्यान देना चाहिए। उनका यह दायित्व है कि वे अवाम के साथ एकजुट हों और पार्टी के विचारों और नीतियों की व्याख्या और प्रचार द्वारा उन्हें निरन्तर शिक्षित करें। यदि हमारे दस लाख पार्टी सदस्यों में से प्रत्येक अपने ऊपर केवल एक व्यक्ति को नये सिरे से ढालने का दायित्व ले ले, तो वे दस लाख लोगों को बदल सकते हैं।

अवाम को पार्टी के विचारों में शिक्षित और दीक्षित करने के लिए हमें प्रेस, रेडियो, साहित्य और कला तथा शिक्षा के तमाम अन्य उपलब्ध साधनों को और भी ज्यादा उत्साह के साथ संगठित करना चाहिए।

मेहनतकशों में कम्युनिस्ट शिक्षण कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए विचारधारात्मक काम के क्षेत्र में कार्यकर्ताओं की पांतों को अधिक योग्य और सक्षम केंद्रक पार्टी सदस्यों से सुदृढ़ किया जाना चाहिए, और उनके राजनीतिक एवं सैद्धान्तिक स्तर को मजबूती से ऊंचा उठाया जाना चाहिए।

इस प्रकार आम अवाम को पार्टी के विचारों में शिक्षित और दीक्षित कर, हमारी अजेय शक्ति के स्रोत—अवाम—के साथ पार्टी की एकता को और भी अधिक दृढ़ किया जाना चाहिए।

साथियो,

पार्टी की विचारधारा और संकल्प की एकता हमारा हृदय और आत्मा है। यह हमारी तमाम विजयों की निर्णायक गारंटी है।

क्रान्ति के विषैले शत्रुओं के विरुद्ध एक लम्बे और कठिन संघर्ष के बाद आज हमारी पार्टी ने अपनी पांतों के अन्दर मजबूत एकता प्राप्त की है।

तरह-तरह के रुग्ण विचार, जो पार्टी के विचारों से मेल नहीं खाते, अन्तिम, विवेचन में पूंजीवादी विचारधारा के ही विविध रूप होते हैं। यदि वे निर्वाध गति से पार्टी के अन्दर पनपते जायें, तो पार्टी और क्रान्ति का भारी नुकसान हो सकता है। जब तक साम्राज्यवाद का अस्तित्व बना हुआ है और वर्ग संघर्ष चल रहा है, तब तक हमें पार्टी के अन्दर पूंजीवादी विचारधारा की घुसपैठ के विरुद्ध अपनी

चौकसी को लगातार तेज करना होगा और पार्टी की एकता को आघात पहुंचाने वाली किसी भी कोशिश के विरुद्ध, चाहे वह कितनी भी छोटी क्यों न हो, बगैर झुके संघर्ष करना होगा।

तमाम स्तरों पर पार्टी संगठनों को अपने सदस्यों को मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारों से और भी अधिक पूरी तरह लैस करना चाहिए तथा एकता और एकजुटता के लिए अपने संघर्ष में हमारी पार्टी द्वारा अर्जित ऐतिहासिक अनुभव से उन्हें पूरी तरह अवगत कराना चाहिए। इस तरह वे उन सबको संशोधनवाद, कठमुल्लापन, गुटबाजी, संकीर्णतावाद, कुनबापरस्ती और अवसरवादिता की तमाम अन्य किस्मों के खिलाफ जोरदार और लगातार संघर्ष करने को प्रोत्साहित करेंगे और इसके साथ ही हर कीमत पर मार्क्सवाद-लेनिनवाद की शुद्धता और पार्टी पांतों की एकता को सुरक्षित रखने के लिए संघर्ष करने को उत्साहित करेंगे।

अतः तमाम पार्टी सदस्यों और पार्टी संगठनों को उसी ढंग से सोचना और काम करना चाहिए जिस ढंग से पार्टी केन्द्रीय समिति सोचती और काम करती है। हालात कितने भी कठिन क्यों न हों, उन्हें पार्टी केन्द्रीय समिति के साथ अपना भाग्य जोड़ कर अन्त तक लड़ना चाहिए।

पार्टी की पांतों के एक और मात्र एक ही संकल्प से मजबूती के साथ संगठित और एकजुट हो जाने पर हम तमाम दुश्मनों को, भले ही वे कितने भी जघन्य क्यों न हों, परास्त कर सकते हैं, तमाम मुश्किलों और दिक्कतों को पार कर सकते हैं और विजयपूर्वक आगे बढ़ सकते हैं।

हमें हमेशा पूरी पार्टी की अपनी केन्द्रीय समिति के इर्दगिर्द एकजुटता को अपनी आंख की पुतली की तरह महत्व देना होगा, तमाम लोगों को पार्टी के इर्दगिर्द एक चट्टान की तरह एकजुट करना होगा, तथा पार्टी और अवाम को एक इकाई में एकताबद्ध करके उच्च क्रान्तिकारी भावना के साथ एक विजय से दूसरी विजय की ओर बढ़ना होगा।

५ : अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध

साथियो,

हम जिस काल की समीक्षा कर रहे हैं, उसके दौरान हमने विदेशी सम्बन्धों के क्षेत्र में भी जबर्दस्त सफलताएं प्राप्त की हैं। यह हमारे लोगों के वीरोचित संघर्ष और बदलती अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति के तर्कसंगत मूल्यांकन के आधार पर हमारी पार्टी और सरकार द्वारा सही विदेश नीति के अनुसरण का

ही करिश्मा है कि हमारे देश की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति आज जितनी ऊंची उठ चुकी है, उतनी पहले कभी नहीं थी।

हाल ही में हम जिस दौर से गुजरे हैं, उसमें आम अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति हमारे देश के शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण और समाजवाद के वास्ते हमारे देशवासियों के संघर्ष के लिए और भी ज्यादा अनुकूल दिशा में विकसित हुई है।

आज विश्वमंच पर समाजवाद की शक्तियां निर्णायक रूप से साम्राज्यवादी शक्तियों पर हावी हो रही हैं। अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी व्यवस्था दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ रही है और फल-फूल रही है। उसकी शक्ति दिनानुदिन लगातार मजबूत होती जा रही है।

सोवियत जनता एक कम्युनिस्ट समाज के समग्र निर्माण को सफलतापूर्वक आगे बढ़ा रही है।

सोवियत उद्योग और कृषि नवीनतम प्रविधि के आधार पर तीव्र गति से निरन्तर विकसित हो रहे हैं और सोवियत जनता की भौतिक तथा सांस्कृतिक सुख-समृद्धि में लगातार सुधार हो रहा है।

अमरीका और दूसरे पूंजीवादी देशों को बहुत ही पीछे छोड़ते हुए सोवियत संघ वैज्ञानिक और तकनीकी उन्नति के विश्व के उच्चतम शिखर पर पहुंच गया है। सोवियत जनता द्वारा अन्तरिक्ष उड़ानों में प्राप्त की गयी सफलताएं सोवियत विज्ञान और तकनीकी ज्ञान के जबर्दस्त विकास की साक्षी हैं और पूंजीवादी व्यवस्था की तुलना में समाजवादी शिविर की अजेय शक्ति को प्रकट करती हैं।

सोवियत संघ में कम्युनिज्म का सफल निर्माण पूरे समाजवादी शिविर की शक्ति में वृद्धि करता है और संसार भर के लोगों में समाजवाद और कम्युनिज्म की सफलता के बारे में विश्वास को दृढ़ करता है।

जनवादी चीन में समाजवादी क्रान्ति पहले ही विजयी हो चुकी है और समाजवादी निर्माण सफलतापूर्वक प्रगति पर है। चीन लोक जनतन्त्र की राजनीतिक और आर्थिक शक्ति बढ़ रही है। समाजवादी शिविर की शक्ति बढ़ाने और सुदूरपूर्व तथा संसार में शान्ति को दृढ़ बनाने में यह एक महत्वपूर्ण हेतु है।

यूरोप और एशिया में समाजवादी देश समाजवाद के निर्माण में महान सफलताएं प्राप्त कर रहे हैं। इन देशों में राष्ट्रीय अर्थतन्त्र जिस तीव्र गति से विकसित हो रहा है, उसकी पूंजीवादी देशों में कल्पना तक नहीं की जा सकती, और इन देशों में जन-जीवनस्तर दृढ़तापूर्वक ऊंचा हो रहा है।

आज अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी व्यवस्था विश्व क्रान्ति के बढ़ाव पर सतत अधिकाधिक प्रभाव डालते हुए मानव इतिहास के विकास का एक निर्णायक हेतु बन गयी है।

समाजवाद की शक्तियों का विकास, औपनिवेशिक देशों में राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन का अभूतपूर्व उभार, और इसके फलस्वरूप साम्राज्यवादी औपनिवेशिक प्रणाली के अन्तिम रूप से विघटन की प्रक्रिया, ये आज के हमारे युग की प्रमुख विशेषताएं हैं।

एशिया में तमाम उपनिवेश अंतर्ध्यान हो चुके हैं और एशियाई स्थिति बुनियादी तौर पर बदल गयी है। एशिया और विश्व के कुचले हुए लोगों पर जबर्दस्त क्रान्तिकारी असर डालते हुए, जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया, चीन लोक जनतन्त्र, वियतनाम जनवादी जनतन्त्र और मंगोलिया लोक जनतन्त्र के लोग विश्वास के साथ समाजवाद के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं। सदियों तक पददलित और अपमानित रहने के बाद एशिया में करोड़ों लोगों ने राष्ट्रीय स्वतन्त्रता जीती है और वे साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के खिलाफ लड़ रहे हैं।

एशिया पर अपने प्रभुत्व को बहाल करने और उसे बनाए रखने की दुष्टतापूर्ण इच्छा से प्रेरित हो अमरीकी साम्राज्यवादी एशियाई देशों के विरुद्ध हमले की नीति का अनुसरण कर रहे हैं और धृष्टतापूर्वक उनके घरेलू मामलों में दखल देते हैं। लेकिन अमरीकी साम्राज्यवादियों को, दक्षिण कोरिया, दक्षिण वियतनाम, जापान, लाओस, और हर जगह, जहां वे कदम रखते हैं, लोगों के सशक्त प्रतिरोध का सामना करना पड़ रहा है।

राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष की भीषण लपटें अब अफ्रीकी महाद्वीप को अपनी चपेट में ले रही हैं और लैटिन अमरीका में फैल रही हैं। आज अफ्रीका महाद्वीप के कुल क्षेत्र में से दो तिहाई और उसकी आबादी के तीन चौथाई भाग वाले २८ से अधिक देशों पर स्वतन्त्रता की पताका फहरा रही है। अफ्रीका के जो देश अभी तक उपनिवेशवाद के जुए को उतार कर फेंक नहीं सके हैं, वे औपनिवेशिक प्रणाली के अन्तिम गढ़ को नष्ट करने के लिए जोरदार संघर्ष चला रहे हैं।

क्यूबा की जनवादी क्रान्ति की विजय प्रकट करती है कि लैटिन अमरीका में राष्ट्रीय मुक्ति का एक नया युग आ गया है। इस समय प्रायः तमाम लैटिन अमरीकी देशों के लोग अमरीकी साम्राज्यवाद की औपनिवेशिक दासता की नीति और उसके पिट्ठुओं की तानाशाही के खिलाफ दृढ़तापूर्वक संघर्ष कर रहे हैं।

अमरीकी साम्राज्यवाद के नेतृत्व में साम्राज्यवादियों की तमाम कुचालें भी उनकी औपनिवेशिक प्रणाली के अन्तिम पतन को रोक नहीं सकतीं। समाजवादी देशों के सक्रिय समर्थन और प्रोत्साहन को दुनिया के तमाम औपनिवेशिक और गुलाम देशों के लोग विदेशी साम्राज्यवाद की आक्रामक शक्तियों को अनिवार्यतः खदेड़ बाहर करेंगे तथा मुक्ति के लिए अपने संघर्षों के जरिए पूर्ण स्वतन्त्र और स्वाधीन हो जायेंगे।

समाजवादी शिविर की बढ़ती शक्ति और औपनिवेशिक प्रणाली के विघटन से साम्राज्यवाद की शक्तियां निर्णायक रूप से जर्जर पड़ गयी हैं। साम्राज्यवाद अब तक विश्व के अधिकांश भाग पर अपना प्रभुत्व खो चुका है।

पूंजीवादी दुनिया में राजनीतिक और आर्थिक अंतर्विरोध दिन-प्रतिदिन उग्र होते जा रहे हैं और साम्राज्यवादी शक्तियों के बीच मंडियों और प्रभाव क्षेत्र को लेकर अंतर्विरोध तेजी से बढ़ते जा रहे हैं।

पूंजी द्वारा दमन और शोषण के विरुद्ध मजदूर वर्ग का क्रान्तिकारी संघर्ष बड़ी तीव्र गति से प्रगति करता जा रहा है। पूंजीवादी दुनिया में मजदूर वर्ग आंदोलन का और भी जोरदार उभार पूंजीवाद के आंतरिक अंतर्विरोधों को उग्र बना देने और उसे उसकी बुनियाद तक हिला देने में समर्थ एक सशक्त कारक है।

साम्राज्यवादी देशों में व्यापक जन समुदाय श्रमजीवी वर्ग के साथ मिलकर इजारेदारियों के अत्याचार के विरुद्ध और अपने महत्वपूर्ण अधिकारों, जनवाद और सामाजिक प्रगति के लिए और अधिक दृढ़ता से लड़ रहे हैं।

साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ने वाले लोगों की पांतें विश्व में विस्तृत हो रही हैं और उनकी शक्तियां सतत बढ़ रही हैं। साम्राज्यवाद पतन और गिरावट के पथ पर है।

जीवन का अनुभव ऐतिहासिक विकास के इस कानून को और भी अधिक दृढ़ता से पुष्ट करता है कि विश्व भर में समाजवाद की अन्तिम विजय होकर रहेगी और पूंजीवाद का विनाश अवश्यंभावी है।

अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में शक्तियों के सन्तुलन में आये बुनियादी परिवर्तन से विश्व युद्ध को रोकने और शान्ति को बनाये रखने तथा सुदृढ़ करने की वास्तविक संभावना उत्पन्न हो गयी है। आज शान्ति और समाजवाद की सशक्त ताकतें युद्ध की साम्राज्यवादी शक्तियों के मार्ग में बाधक बनी खड़ी हैं। वे दिन लद चुके जब साम्राज्यवाद अपनी मर्जी होते ही युद्ध छेड़ सकता था।

तथापि इसका यह अर्थ नहीं है कि अब युद्ध के खतरे का कोई वजूद नहीं रहा। जब तक साम्राज्यवाद कायम है, युद्ध के स्रोत लुप्त नहीं होंगे।

अमरीकी साम्राज्यवाद के नेतृत्व में साम्राज्यवादी लोग अन्तर्राष्ट्रीय तनातनी को भड़का कर, शस्त्रास्त्रों की होड़ तेज कर और एक अन्य युद्ध छेड़ कर अपनी विनाशकारी स्थिति से निकलने का मार्ग खोजने को प्रयत्नशील हैं।

विश्व के विभिन्न भागों में अब अमरीकी साम्राज्यवादी अन्य देशों के आन्तरिक मामलों में दखल दे रहे हैं, हमले कर रहे हैं और बदहवासी के साथ एक नये युद्ध की तैयारी कर रहे हैं।

समाजवादी देशों पर धावा बोलने के निमित्त अमरीकी आक्रामक क्षेत्रों और

उनके अनुयायियों ने इन देशों के आसपास अनेकों फौजी अड्डे निर्मित कर लिये हैं और आक्रामक "नाटो" की सैन्य शाखा को अधिकाधिक सुदृढ़ करते जा रहे हैं। पश्चिम जर्मन प्रतिशोधवादियों को फिर से सशस्त्र कर अमरीकी साम्राज्यवादी यूरोप के मध्य में युद्ध के एक भयावह केन्द्र का निर्माण कर रहे हैं और पश्चिम बर्लिन में वे समाजवादी देशों के विरुद्ध उत्तेजनात्मक और विध्वंसात्मक गतिविधियों में संलग्न हैं। अमरीकी साम्राज्यवाद इस समय अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में भारी बिगाड़ ला रहे हैं और पश्चिम जर्मनी के साथ शान्ति संधि के प्रश्न के सम्बन्ध में विश्वशान्ति को खुले रूप से खतरे में डाल रहे हैं। युद्ध की तैयारियों पर जोर देकर वे एक दु:साहसिक आणविक युद्ध छेड़ने की दिशा में अंधाधुंध कुचालें चल रहे हैं।

एशिया में अमरीकी साम्राज्यवादी अभी भी हमारे देश के दक्षिणी आधे भाग पर कब्जा जमाये हुए हैं और उन्होंने उसे अपने सैन्य अड्डे में बदल दिया है। उन्होंने दक्षिण कोरिया में अपनी आक्रामक सेनाओं को और कठपुतली सेना को और मजबूत बनाया है, वहां आणविक आयुध, नियन्त्रित प्रक्षेपास्त्र और विभिन्न प्रकार के अन्य आधुनिक हथियार लाये हैं और वे सैन्य सीमा रेखा के निकट निर्बाध गति से फौजी अभ्यास कर रहे हैं।

हाल ही में एक नये युद्ध के बारे में शोर मचाते हुए अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रान्ता कोरिया में तनाव और भी अधिक बढ़ा रहे हैं। वे अमरीकी मुख्यभूमि से नये, विशेष रूप से प्रशिक्षित दस्तों को दक्षिण कोरिया में ला रहे हैं और फौजी अड्डों और प्रतिष्ठानों में बड़े पैमाने पर विस्तार और ज्यादा-से-ज्यादा युवा तथा अधेड़ आयु के लोगों को कठपुतली सेना में जबरी भरती द्वारा हमले के लिए अपनी तैयारियों को तेज कर रहे हैं।

इस बीच अमरीकी साम्राज्यवादी चीन के क्षेत्र ताइवान पर कब्जा जमाये हुए हैं, वे चीन लोक जनतंत्र के विरुद्ध शत्रुतापूर्ण कार्रवाइयां जारी रखे हुए हैं और दक्षिण वियतनाम तथा लाओस में हमले और हस्तक्षेप पर उतारू हैं।

खासतौर पर अमरीकी साम्राज्यवाद एशिया में युद्ध के स्रोत जापानी सैन्यवाद को पुनर्जीवित करने और उसे सुदूरपूर्व में हमले में एक तूफानी दस्ते के रूप में प्रयुक्त करने का यत्न कर रहा है। अमरीकी साम्राज्यवादियों ने जापान के प्रतिक्रियावादी सत्ताधारी क्षेत्रों के साथ जापान-अमरीका सैन्य संधि की है और आक्रामक "नीएटो" की स्थापना की बदहवासी के साथ चेष्टा कर रहा है। जापानी सेना को अमरीकी साम्राज्यवादियों की सक्रिय सहायता से मजबूत बनाया जा रहा है और नयी-नयी किस्मों के आधुनिक आयुधों से लैस किया जा रहा है। अमरीकी साम्राज्यवाद के संरक्षकत्व में एशिया को पुनः जीतने के बहुत बढ़े-चढ़े सपने को

संजोए हुए जापानी साम्राज्यवादी "विदेशों में सेनाएं भेजने" की खुल्लमखुल्ला बातें कर अब नये सिरे से हमले के पथ का अनुसरण करने लगे हैं।

इस सबसे प्रकट होता है कि अमरीकी साम्राज्यवाद हमले और युद्ध का मुख्य स्रोत और मानवता का सर्वाधिक खतरनाक शत्रु है। पद संभालने के बाद पिछले ६ मास से अधिक समय में वर्तमान अमरीकी प्रशासन कम्युनिज्म-विरोध के नारे के अन्तर्गत शस्त्रास्त्रों की होड़ और युद्ध की तैयारियों को और तेज कर "शक्ति की स्थिति" की दिवालिया नीति को सतत आगे बढ़ाता आया है। वर्तमान अमरीकी शासकों ने 'शान्ति,' 'प्रगति' और 'सहायता' सरीखे कई जाली शब्द गढ़ लिये हैं परंतु ये स्वत: वही लोग हैं, जिन्होंने अमरीका के इतिहास में युद्ध व्यय के लिए अधिकतम राशि की मांग की है, कयूबा की जनता के विरुद्ध प्रत्यक्षत: सशस्त्र हमले का आयोजन किया है और अब मानवता को एक आणविक युद्ध के विनाश में ठेलने की कुचालें चल रहे हैं।

अमरीका के नेतृत्व में साम्राज्यवादियों द्वारा उत्पन्न किये जा रहे युद्ध के खतरे के संदर्भ में समूचे संसार के शान्तिप्रिय लोगों का कर्तव्य हो जाता है कि वे अपनी भरपूर चौकसी कायम रखें और शान्ति की रक्षा में अधिक सक्रियता से लड़ें। शान्ति स्वत: नहीं आती, इसे अवाम के अविचल संघर्ष द्वारा जीतना होगा। समाजवादी देशों और पूरी दुनिया की शान्तिप्रिय ताकतों के अदम्य संघर्ष के परिणामस्वरूप अब अमरीकी साम्राज्यवादियों की हमले और युद्ध की नीतियों को एक-के-बाद एक नया आघात सहना पड़ रहा है।

एक नये विश्व युद्ध को रोका जा सकता है और विश्वशान्ति को कायम रखा तथा दृढ़ किया जा सकता है, बशर्ते कि शान्ति की तमाम ताकतें—महान समाजवादी शिविर, अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग, दबे-कुचले लोगों का मुक्ति आन्दोलन, और संसार-भर के शान्तिप्रिय देश तथा अवाम—निरन्तर सुदृढ़ हों, और भी घनिष्ठ रूप से एकजुट हों तथा संघर्ष के तमाम संभव उपायों को जुटाकर युद्ध भड़काने के साम्राज्यवादी षड्यन्त्रों के विरुद्ध घनघोर लड़ाई छेड़ना जारी रखें।

अपनी सामाजिक प्रणाली के स्वरूप के संदर्भ में समाजवादी देश शान्ति के लिए प्रयास करते हैं और शान्तिपूर्ण विदेश नीति का अनुसरण करते हैं।

कोरिया की मजदूर पार्टी और जनवादी जनतन्त्र कोरिया की सरकार शान्तिपूर्ण उपायों से कोरियाई प्रश्न को सुलझाने का निरन्तर प्रयास करती रही है और सुदूरपूर्व तथा विश्व में शान्ति की रक्षा के लिए संघर्ष करती रही है।

दक्षिण कोरिया पर अमरीकी साम्राज्यवादियों के आधिपत्य और उनकी आक्रामक नीति न केवल कोरियाई प्रश्न के शान्तिपूर्ण हल में बाधा डालती है, बल्कि सुदूरपूर्व में शान्ति के लिए गम्भीर खतरा भी उत्पन्न करती है।

अमरीकी मुख्य भूमि से हजारों मील दूर दक्षिण कोरिया में अमरीकी साम्राज्यवादियों की सशक्त सेनाओं के रखे जाने के बारे में उनके पास कोई भी तर्क या बहाना नहीं हो सकता। अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामक सेना को अपने साथ अपने तमाम घातक हथियार लेकर दक्षिण कोरिया से निकल जाना होगा।

हम ताइवान पर, जोकि एक अविभाज्य चीनी क्षेत्र है, कब्जा बनाये रखकर "दो चीन" कायम करने की अमरीकी साम्राज्यवादियों की शरारतपूर्ण योजना का विरोध करते हैं और ताइवान की मुक्ति के लिए चीनी जनता के न्यायोचित संघर्ष में पूर्णतया उनका समर्थन करते हैं। हम दक्षिण वियतनाम, लाओस और अन्य क्षेत्रों में अमरीकी साम्राज्यवादियों के हमले और हस्तक्षेप के लिए उनकी गहरी निन्दा करते हैं।

कोरियाई जनता इस तथ्य की अनदेखी नहीं कर सकती कि जापानी साम्राज्यवाद फिर से सिर उठा रहा है और एशिया पर धावा बोलने के अपने कुत्सित मन्सूबों का खुले रूप से इजहार कर रहा है। अमरीकी साम्राज्यवाद द्वारा उकसाये जाने पर, विशेष रूप से जापानी सैन्यशाह आर्थिक तौर पर दक्षिण कोरिया के विरुद्ध हमला करना चाहते हैं और इसके साथ ही उसके सहयोग से एक आक्रामक सैन्य गठबन्धन कायम करना चाहते हैं। हमारे लोग दक्षिण कोरिया पर पुनः धावा बोलने की जापानी सैन्यशाहों की इस योजना की और उसका सक्रिय रूप से समर्थन करने वाले अमरीकी साम्राज्यवाद के अपराधपूर्ण कृत्यों की भर्त्सना करते हैं। जापानी सैन्यशाही की फिर से हथियारबंदी को निर्णायक रूप से खत्म करना होगा और अमरीकी साम्राज्यवादियों तथा जापानी सैन्यशाही के बीच जापान-अमरीका संधि को अविलम्ब रद्द करना होगा।

अमरीकी साम्राज्यवादियों को दक्षिण कोरिया, ताइवान, जापान, दक्षिण वियतनाम, लाओस और एशिया के तमाम अन्य भागों से हटना होगा और उनके आक्रामक गठबन्धनों तथा सैन्य अड्डों को समाप्त करना होगा। एशिया के तमाम लोगों के साथ दृढ़तापूर्वक एकजुट होकर हमारे लोग अमरीकी साम्राज्यवादी हमलावरों को सारे एशिया से निकाल बाहर करने के लिए लड़ेंगे और सुदूरपूर्व में शान्ति की रक्षा करेंगे।

कोरियाई जनता सोवियत संघ के प्रयासों और उचित प्रस्तावों का, जिनका उद्देश्य आक्रमण और युद्ध की साम्राज्यवादी नीतियों को नाकाम बनाना है, समर्थन करती है।

इस समय सोवियत सरकार जर्मनी के साथ शान्ति संधि सम्पन्न करना चाहती है, और इस आधार पर पश्चिम बर्लिन में स्थिति को सामान्य बनाना चाहती है। वह इस लक्ष्य की दशा में प्रयासशील है। अमरीकी साम्राज्यवादियों

के नेतृत्व में साम्राज्यवादियों की युद्ध छेड़ने की चालबाजियों को दृष्टिगत रखते हुए सोवियत संघ ने भी अपनी रक्षा-क्षमताओं को और मजबूत बनाने के लिए कई कदम उठाये हैं और फिर से आणविक विस्फोट प्रारम्भ करने का निश्चय किया है। ये पग साम्राज्यवादियों की युद्ध की दुस्साहसिक कार्रवाइयों को रोकने और विश्व शान्ति की रक्षा करने तथा सोवियत संघ और अन्य समाजवादी देशों की सुरक्षा करने के लिए तर्कसंगत ही हैं। जर्मनी के साथ शान्ति संधि सम्पन्न करने के बारे में सोवियत संघ की न्यायोचित स्थिति और फिर से आणविक परीक्षण प्रारम्भ करने के सोवियत सरकार के फैसले का हम समर्थन करते हैं।

हमारी पार्टी और जनता, पूरे संसार के शान्तिप्रिय लोगों के साथ मिल कर भविष्य में भी युद्ध छेड़ने की अमरीकी साम्राज्यवादी नीति के खिलाफ और सुदूर-पूर्व तथा विश्व में शान्ति की रक्षा के लिए जबर्दस्त संघर्ष जारी रखेगी। हम हमेशा सतर्क रहेंगे और हर दृष्टि से अपनी रक्षा-क्षमताओं को मजबूत करेंगे, ताकि दुश्मन के किसी भी अचानक हमले को परास्त कर सकें, अपनी समाजवादी उपलब्धियों की निश्चित रूप से रक्षा कर सकें और समाजवादी शिविर की पूर्वी चौकी की दृढ़तापूर्वक सुरक्षा कर सकें।

साथियो,

यह हमारे राष्ट्र की विदेश नीति की अडिग बुनियाद है कि समाजवादी शिविर की एकता को दृढ़ किया जाए और तमाम समाजवादी देशों के साथ आपसी सहयोग और मैत्री के सम्बन्धों को बढ़ावा दिया जाए।

आज मार्क्सवाद-लेनिनवाद और सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के झंडे तले समाजवादी देश एक विशाल परिवार में दृढ़तापूर्वक एकजुट हैं और एकदूसरे के साथ घनिष्ठतापूर्वक सहयोग कर रहे हैं। समाजवादी शिविर की एकता और इस शिविर के देशों के बीच मैत्री और सहयोग के सम्बन्धों का विकास इन देशों में से प्रत्येक की राष्ट्रीय स्वाधीनता को सुदृढ़ करने और उनमें समाजवादी निर्माण का मार्ग प्रशस्त करने का एक महत्वपूर्ण आधार पेश करता है।

हमारी पार्टी और जनता ने तमाम समाजवादी देशों के साथ मैत्री और एक-जुटता को मजबूत करने और सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के सिद्धान्त के आधार पर उनमें पारस्परिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक प्रयास किया है।

हमारे लिए सोवियत संघ और चीन के लोगों के साथ मैत्री खासतौर पर अमूल्य है।

सोवियत जनता हमारे देशवासियों की मुक्तिदाता और गहरी मित्र है। अपने देश की आजादी और स्वाधीनता की रक्षा करने और नये जीवन का निर्माण करने के संघर्ष में हमें जब भी कठिनाइयों और संकटों का सामना करना पड़ा तो

सोवियत जनता ने हमारी ओर सहायता का सौहार्दपूर्ण हाथ बढ़ाया और हमारे संघर्ष को प्रोत्साहित किया। मातृभूमि के शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण के लिए सोवियत संघ हमारी जनता के संघर्ष का सक्रिय रूप से समर्थन कर रहा है और हमारे समाजवादी निर्माण की लगातार मदद कर रहा है। मुक्ति के लिए संघर्ष की ज्वाला में दृढ़तापूर्वक स्थापित और महान लेनिन द्वारा निर्दिष्ट पथ पर सुदृढ़ीभूत और विकसित कोरिया और सोवियत संघ के जनगण की मैत्री और एकजुटता अटूट और चिरस्थायी है।

चीनी जनता हाथ-से-हाथ मिलाकर चलने वाली हमारी दोस्त है, जिसने लम्बे क्रान्तिकारी संघर्ष में हमारे साथ खुशियां और दुःख, जीवन और मृत्यु को बांटा है। चीनी जनता ने अमरीकी साम्राज्यवादियों के सशस्त्र हमले के खिलाफ हमारी जनता के मातृभूमि मुक्ति युद्ध के अवसर पर हमारी सहायता के लिए अपना खून बहाया। संयुक्त शत्रु के विरुद्ध संयुक्त संघर्ष द्वारा कोरियाई और चीनी लोगों के बीच जुझारू मैत्री और एकता को लगातार मजबूत किया जा रहा है।

कोरिया और सोवियत संघ के बीच, और कोरिया और चीन के बीच हाल ही में मैत्री, सहयोग और पारस्परिक सहायता की जो संधियां सम्पन्न हुई हैं, वे एक युग निर्मित करने वाली घटना हैं, जो कोरियाई-सोवियत मैत्री और कोरियाई-चीनी मैत्री को एक नये और उच्चतर स्तर पर बढ़ावा देती हैं। यह हमारी जनता के न्यायोचित ध्येय के लिए सोवियत संघ और चीन के जनगण के सर्वसम्मत समर्थन को अभिव्यक्त करती हैं।

कोरिया और सोवियत संघ के बीच मैत्री, सहयोग और पारस्परिक सहायता की संधि, कोरिया और चीन के बीच मैत्री, सहयोग और पारस्परिक सहायता की संधि विशुद्ध रूप से शान्तिपूर्ण और रक्षात्मक हैं और सबसे बढ़कर तो उनका उद्देश्य साम्राज्यवादी आक्रमण के खिलाफ कोरियाई जनता की सुरक्षा की हिफाजत करना है। ये संधियां हमारे देश के शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण के ध्येय के प्रतिकूल नहीं हैं। इसकी बजाय ये अमरीकी साम्राज्यवादियों के आक्रामक मन्सूबों को नियंत्रित रख कर इस पुनरेकीकरण को बढ़ावा देंगी।

ये संधियां कोरियाई जनता के हितों से पूर्णतया मेल खाती हैं और साथ ही ये समाजवादी शिविर की एकता को सुदृढ़ करने तथा सुदूरपूर्व और विश्व में शान्ति को मजबूत बनाने में भारी योगदान करेंगी।

कोरियाई जनता और अन्य तमाम समाजवादी देशों के लोगों के बीच मैत्री और एकता भी दिनानुदिन दृढ़ हो रही है। हमारे देश और इन देशों के बीच आर्थिक और सांस्कृतिक सहयोग के सम्बन्ध भी और ज्यादा विकसित हो रहे हैं। भाईचारे वाले तमाम देशों के अवाम ने समाजवाद के हमारे निर्माण में जबर्दस्त

आर्थिक और तकनीकी मदद दी है और वह आज भी जारी है।

सोवियत संघ, चीनी लोक जनतन्त्र, जर्मन जनवादी गणतन्त्र, रूमानिया, मंगोलिया, बुलगारिया, अल्बानिया, वियतनाम के जनवादी जनतन्त्र, हंगरी, चेकोस्लोवाकिया और पोलैंड के लोगों द्वारा दिये गये समर्थन और सहायता ने हमारे देश में समाजवादी निर्माण की गति को तेज करने में एक बड़ी भूमिका अदा की है और देश के शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण के संघर्ष में हमारे लोगों को स्फूर्ति प्रदान की है।

हमारे देश और बिरादराना देशों के बीच मैत्री, एकता और आपसी सहयोग सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के महान आदर्श का प्रतीक हैं और हमारी जनता की तमाम विजयों के लिए महत्वपूर्ण गारंटी हैं।

कोरियाई अवाम भी समाजवादी शिविर की शक्ति और अटूट एकजुटता को दृढ़ करने और तमाम समाजवादी देशों के लोगों के साथ मैत्री और सहयोग सम्बन्धों को विकसित करने के लिए भविष्य में भरसक प्रयास करेंगे।

हमारी पार्टी और गणतन्त्र की सरकार एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका के राष्ट्रीय स्वतन्त्र राज्यों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों के विकास को अपनी विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण अंग मानती हैं।

हम उन तमाम देशों के साथ, जो कोरियाई अवाम की आजादी और प्रभुसत्ता का सम्मान करते हैं और समानता के आधार पर हमारे देश के साथ सामान्य राज्यीय सम्बन्ध स्थापित करना चाहते हैं, राजनयिक सम्बन्ध कायम करने को तैयार हैं, और हमने इस लक्ष्य की दिशा में कार्य किया है।

पिछले वर्षों में हमारे देश ने क्यूबा के जनतन्त्र, गिनी जनतन्त्र और माली जनतन्त्र सहित अनेक देशों के साथ राजनयिक सम्बन्ध स्थापित किये हैं। हमारे देश और भारत, इंडोनेशिया, बर्मा, संयुक्त अरब गणराज्य और ईराक जैसे कई एशियाई और अफ्रीकी देशों के मध्य राज्य स्तर पर सम्बन्ध भी लगातार विकसित होकर उच्चतर स्तर पर पहुंच रहे हैं। जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया के एक सरकारी प्रतिनिधिमंडल द्वारा दक्षिणपूर्व एशिया और अफ्रीका के कई देशों की हाल की यात्रा ने इन देशों के साथ हमारे सम्बन्धों को विकसित करने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान किया।

भविष्य में भी हम एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका के देशों के साथ, जो अपनी राष्ट्रीय स्वतन्त्रता और सामाजिक प्रगति के लिए लड़ रहे हैं, राज्य स्तरीय सम्बन्धों को और विस्तृत तथा दृढ़ करने का प्रयास करेंगे। हम और भी ज्यादा-से-ज्यादा देशों के साथ राजनयिक सम्बन्ध स्थापित और विकसित करने का प्रयास करेंगे।

पिछले दौर ने आर्थिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के क्षेत्रों में विदेशों के साथ हमारे सम्बन्धों में विस्तार और विकास होते देखा है। कई देशों के साथ हमारे देश के व्यापार सम्बन्ध और सांस्कृतिक नाते कायम हैं। हमारे लोगों और विश्व के कई जनगण के बीच आदान-प्रदान भी हर रोज अधिक सक्रिय होते जा रहे हैं और हमारी पारस्परिक मैत्री बढ़ती जा रही है।

हमारे देश और एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका के बीच मैत्री और सहयोग के दिन-प्रतिदिन बढ़ते सम्बन्ध दोनों पक्षों के लिए लाभकारी हैं और शांति के ध्येय में सहायक हैं। भविष्य में भी हम समता और आपसी लाभ के सिद्धांत के आधार पर और भी ज्यादा देशों के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान और मैत्रीपूर्ण सहयोग विकसित करने और विदेशी व्यापार को विस्तृत करने का प्रयास करेंगे।

हम उन पूंजीवादी देशों से जो हमारे देश के साथ मधुर सम्बन्ध कायम करने के इच्छुक हैं, सामान्य सम्बन्ध स्थापित करना तथा आर्थिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान विकसित करना चाहते हैं।

भौगोलिक दृष्टि से जापान हमारे देश से बहुत कम दूरी पर है और यह बात कोरिया और जापान के लोगों के लिए पारस्परिक रूप से लाभदायक होगी कि वे अपने सम्बन्धों को सामान्य बनाएं। तथापि हमारे गणतंत्र की सरकार के हार्दिक प्रयासों के बावजूद हमारे देश और जापान के बीच अभी तक ऐसे सामान्य सम्बन्ध कायम नहीं हो सके हैं।

जापान सरकार ने हमारे देश के प्रति नितांत अमैत्रीपूर्ण नीति का अनुसरण जारी रखा है। जापानी सरकार की ऐसी नीति एशिया में शांति और सुरक्षा के लिए अहितकर है और यह जापानी जनता के हितों और आकांक्षाओं के सर्वथा प्रतिकूल है।

जापान सरकार को हमारे देश के प्रति अपनी शत्रुतापूर्ण मनोवृत्ति को त्यागना चाहिए। उसे कोरियाई और जापानी अवाम के हितों के अनुरूप एक यथार्थवादी रवैया अपनाना चाहिए।

अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में पददलित लोगों के राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों का अटूट समर्थन उन सिद्धांतों में से एक है जिनका हमारी पार्टी सतत समर्थन करती रही है। कोरियाई अवाम, जिन्होंने विदेशी साम्राज्यवाद के औपनिवेशिक दमन से भूतकाल में लंबे समय तक उत्पीड़न सहा है और जिनके देश का आधा भाग आज भी अमरीकी साम्राज्यवादियों के कब्जे में है, उपनिवेशवाद और हर प्रकार के राष्ट्रीय उत्पीड़न का दृढ़तापूर्वक विरोध करते हैं और तमाम कुचले हुए लोगों के मुक्ति संघर्षों को अपना उत्कट समर्थन और प्रोत्साहन प्रदान करते हैं।

हम अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके पिट्ठुओं की आक्रामक चाल-बाजियों के खिलाफ और लोकतंत्री आधार पर वियतनाम के पुनरेकीकरण की प्राप्ति के लिए उसके अवाम के संघर्ष का पूरे दिल से समर्थन करते हैं। हम राष्ट्रीय स्वतंत्रता और तटस्थता के लिए लाओस के अवाम के संघर्ष का समर्थन करते हैं। हम जापानी अवाम के अपने देश की पूर्ण स्वतंत्रता, जनवादी विकास और तटस्थता के लिए संघर्ष का भी सक्रिय रूप से समर्थन करते हैं और हम उनके साथ मैत्रीपूर्ण नातों को दृढ़ करने के लिए आगे भी प्रयास करेंगे।

अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके भाड़े के टट्टुओं के सशस्त्र हमले को बहादुरी से परास्त कर क्यूबा की जनता ने अपनी क्रांतिकारी उपलब्धियों की जो विजयपूर्वक रक्षा की है उसके लिए हम उन्हें स्नेहपूर्वक बधाई देते हैं।

हम अल्जीरियाई लोगों को, जो मुक्ति के लिए अपने न्यायोचित युद्ध में उठ खड़े हुए हैं और साहसपूर्वक लड़ रहे हैं, हार्दिक प्रोत्साहन पेश करते हैं। हम राष्ट्रीय स्वतंत्रता की रक्षा करने के लिए ट्यूनीशियाई लोगों के संघर्ष तथा कांगो, अंगोला और दूसरे तमाम अफ्रीकी जनगण के राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों का सक्रिय समर्थन करते हैं।

कोरिया की मजदूर पार्टी और कोरियाई अवाम हमेशा एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका के तमाम देशों के जनगण का, जो आजादी और राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए लड़ रहे हैं, दृढ़तापूर्वक साथ देंगे, उनके मुक्ति संघर्षों को सक्रिय समर्थन देना जारी रखेंगे और उनके साथ अपनी एकजुटता को निरंतर मजबूत बनाने की कोशिश करेंगे।

हम पूंजीवादी देशों के मजदूर वर्ग और श्रमजीवी अवाम के साथ भी, जो अपने जीवन, जनतंत्र और समाजवाद के अधिकार के लिए लड़ रहे हैं, दृढ़ एक-जुटता प्रकट करते हैं, और हम उनके संघर्ष में उन्हें पुरजोश प्रोत्साहन पेश करते हैं।

साथियो, अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन हमारे युग की सर्वाधिक प्रभावशाली राजनीतिक शक्ति और सामाजिक प्रगति का सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण हेतु बन गया है।

पिछले सालों में समाजवादी निर्माण और क्रांतिकारी संघर्षों से तमाम देशों की कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियां दृढ़ हुई हैं तथा विचारधारात्मक और संगठनात्मक तौर पर बहुत मजबूत हुई हैं, और उनकी पांतों में और भी ज्यादा वृद्धि हुई है। इस समय विश्व के ८७ देशों में कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियां सक्रिय हैं और उनकी पांतों में ३.६ करोड़ से अधिक सदस्य हैं।

कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियों के प्रतिनिधियों का १९६० में मास्को में हुआ

सम्मेलन अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन के विकास में ऐतिहासिक महत्व की एक घटना थी। मास्को सम्मेलन ने समाजवादी शिविर की एकता और अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन की एकजुटता को प्रदर्शित किया। यह मार्क्सवाद-लेनिनवाद और सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की महान विजयों का साक्षी था।

मास्को सम्मेलन का वक्तव्य, जो तमाम बिरादराना पार्टियों के प्रतिनिधियों के सामूहिक प्रयासों द्वारा तैयार किया गया था, कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियों के संयुक्त संघर्ष का एक कार्यक्रम और उनका कार्यगत पथप्रदर्शक है।

हमारी पार्टी मास्को सम्मेलन के प्रतिनिधियों की भागीदारी से तैयार किये गये वक्तव्य में प्रतिप्रादित सिद्धांतों का पूर्व समर्थन करती है और भविष्य में भी उनका दृढ़ समर्थन करती रहेगी।

अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन साम्राज्यवाद की प्रतिक्रियावादी शक्तियों के विरुद्ध घनघोर संघर्ष में तप कर निखरा है और आंदोलन के अन्दर की सभी प्रकार की अवसरवादी प्रवृत्तियों के खिलाफ लड़ाई में सुदृढ़ हुआ है।

संशोधनवाद, जोकि पूंजीवादी विचारधारा का प्रतिफलन है, अव भी अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन के लिए मुख्य खतरा है। आधुनिक संशोधनवादी मार्क्सवाद-लेनिनवाद के क्रांतिकारी सारतत्व को निःसत्व कर देने, मजदूर वर्ग की क्रांतिकारी जुझारू भावना को पंगु कर देने तथा समाजवादी शिविर और अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन को भीतर से जर्जर करने की योजनाएं बना रहे हैं। वे साम्राज्यवाद और उसकी प्रतिक्रियावादी नीतियों की सफाई पेश करने वालों के रूप में सामने आ रहे हैं।

संशोधनवाद की ही तरह कठमुल्लापन भी क्रांतिकारी काम के लिए हानिकारक है तथा यह अलग-अलग पार्टियों के विकास के विशिष्ट चरणों में मुख्य खतरा बन सकता है। कठमुल्लापन और गुटबाजी मार्क्सवाद-लेनिनवाद को विशिष्ट स्थितियों में रचनात्मक ढंग से लागू करने में बाधक बनते हैं और पार्टी को अवाम से अलग-थलग कर देते हैं।

संशोधनवाद और कठमुल्लापन के खिलाफ निर्मम संघर्ष के बिना न तो अलग-अलग कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियां और न समग्र अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन विकसित हो सकते हैं, और न ही इसकी पांतों की एकता और एकजुटता को आश्वस्त किया जा सकता है। इस तरह शांति, राष्ट्रीय स्वतंत्रता और समाजवाद के लिए संघर्ष को सफलतापूर्वक चलाया नहीं जा सकता।

भविष्य में हमारी पार्टी संशोधनवाद और कठमुल्लापन के विरुद्ध दो मोर्चों पर सशक्त संघर्ष जारी रखेगी।

अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन की अजेय शक्ति का स्रोत सर्वप्रथम तो

उनकी पांतों की एकता में ही निहित है। समाजवादी शिविर की एकता और विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन की एकजुटता शान्ति, राष्ट्रीय स्वाधीनता, जनवाद और समाजवाद के लिए जन-संघर्ष में विजय के लिए सर्वाधिक तात्विक गारंटी हैं।

साम्राज्यवादी और उनके तेजतर्रार गुर्गे—संशोधनवादी—समाजवादी शिविर की एकता को नुकसान पहुंचाने और अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन में फूट डालने के लिए कुत्सापूर्वक षड्यन्त्र रच रहे हैं। लेकिन उनका यह षड्यन्त्र बेकार है। भविष्य में भी यह उसी तरह विफल रहेगा, जिस तरह पहले रहा है। शत्रु की फूट डालने की चालों को नाकाम बनाने के लिए समाजवादी देश और तमाम बिरादराना पार्टियां समाजवादी शिविर की एकता और अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन की एकजुटता की दृढ़ता से रक्षा कर रही हैं और इस एकता और एक-जुटता को ज्यादा मजबूत बना रही हैं।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद और सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद समाजवादी देशों के बीच तथा कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियों के बीच पारस्परिक सम्बन्धों का आधार पेश करता है।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद के समान विचारों और अपने संघर्ष के समान लक्ष्य द्वारा ठोस रूप से एकजुट बन्धुत्व वाली तमाम पार्टियां एक दूसरे के साथ गहरा सहयोग कर रही हैं और एकदूसरे को समर्थन तथा प्रोत्साहन दे रही हैं। साथ ही बिरादराना पार्टियों के आपसी सम्बन्ध पूर्ण समानता और पारस्परिक सम्मान के सिद्धान्त पर आधारित हैं।

मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्तों और अपने देशों की विशिष्ट परिस्थितियों के आधार पर आगे बढ़ती हुई कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियां अपनी नीतियां स्वतन्त्रतापूर्वक तैयार करती हैं, पारस्परिक हित की समस्याओं पर सामूहिक रूप से विचार-विमर्श करती हैं, सलाह-मशविरे द्वारा समान दृष्टिकोण निर्धारित करती हैं और फिर जो सहमति होती है, उसका सर्वसम्मति से पालन करती हैं।

अनुभव से बिरादराना पार्टियों के बीच निर्मित ऐसे पारस्परिक सम्बन्धों की जीवंतता साफतौर पर सिद्ध हो जाती है।

तमाम बिरादराना पार्टियों के साथ अपने सम्बन्धों में हमारी पार्टी ने मार्क्स-वाद-लेनिनवाद और सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के सिद्धान्त का कड़ाई से पालन किया है। अपने लम्बे और कठिन संघर्ष के अनुभव से कोरियाई कम्युनिस्ट भली-भांति जान गये हैं कि हमारे समान हित के लिए अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन की एकता और एकजुटता कितनी मूल्यवान् है।

हम समाजवादी शिविर की एकता और अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन

की एकजुटता को निरन्तर दृढ़ बनाना कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियों का एक पवित्र कर्तव्य मानते हैं। हमारा विश्वास है कि इस महान एकता और एकजुटता के हितों के समक्ष अन्य सारी चीजों को गौण माना जाना चाहिए।

अत: हमारी पार्टी ने हमेशा और हर हालत में सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के झंडे को बुलन्द रखते हुए, समाजवादी शिविर की एकता की रक्षा करने और अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन की एकजुटता को सुदृढ़ बनाने के लिए भरसक प्रयास किया है और आज भी कर रही है।

कोरिया की मजदूर पार्टी और कोरियाई अवाम भविष्य में भी हमेशा तमाम समाजवादी देशों और तमाम बिरादराना पार्टियों के साथ एकता और सहयोग को दृढ़ करने का प्रयत्न जारी रखेंगे, अपने देश में सफलतापूर्वक समाजवाद का निर्माण करने और देश का शान्तिपूर्वक पुनरेकीकरण संपन्न करने के लिए प्रयास में कोई कोर कसर न उठा रखेंगे। इस प्रकार वे समाजवादी शिविर की शक्ति को बढ़ाने और अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग के हितों को प्राप्त करने में योगदान करेंगे।

× × ×

साथियो,

कोरिया की मजदूर पार्टी के नेतृत्व में हमारी जनता ने शानदार जीतों के पथ का अनुसरण किया है।

हमारा देश आमूल बदल गया है, और हमारे देशवासियों के जीवन के तमाम पहलुओं में युगांतरकारी उपलब्धियां प्राप्त की गयी हैं। इस धरती पर, जहां अकल्पनीय शोषण और दमन का बोलबाला हुआ करता था, आज अति समुन्नत समाजवादी व्यवस्था मजबूती से कायम कर दी गई है, जिसमें हर व्यक्ति काम करता है, एकदूसरे की मदद करता है और सुख-समृद्धि का जीवन बिताता है। हमारा देश स्वतन्त्र राष्ट्रीय अर्थतन्त्र और शानदार राष्ट्रीय संस्कृति से संपन्न एक समाजवादी राज्य बन गया है।

यह हमारी पार्टी की नीतियों—मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्त के कोरियाई वास्तविकता में रचनात्मक ढंग से लागू किये जाने की एक महान विजय है और यह पार्टी के इर्दगिर्द एकजुट हमारी जनता के वीरोचित संघर्ष और रचनात्मक मेहनत का महान फल है।

हमारे मार्ग में अनेक कठिनाइयां आईं और हमारे लोगों को कड़ी आजमाइशों से गुजरना पड़ा है। लेकिन न तो कठिनाइयां और न ही दिक्कतें हमारी पार्टी की प्रगति को रोक सकीं और न हमारी मुक्त जनता के धनधान्य से भरपूर और शक्तिशाली देश के निर्माण के संकल्प को तोड़ सकीं।

शत्रु का, जिसे युद्ध में बुरी तरह धूल चाटनी पड़ी थी, अनुमान था कि खंडहरों पर हम पुनः कभी खड़े न हो सकेंगे, और वह बकता फिरता था कि समाजवादी निर्माण की हमारी योजना एक दिवा स्वप्न है, जो कभी साकार न होगा। लेकिन जो कुछ हुआ है, उसने शत्रु के दावों को चकनाचूर कर दिया है। एक ही विचार और ध्येय के पीछे एकजुट हमारी पार्टी और जनता तमाम बाधाओं को तोड़ कर छोलिमा की रफ्तार से छलांगें मारती आगे बढ़ रही है और इस तरह उसने असंभव समझे जाने वाले काम को संभव तथा स्वप्न को साकार बना देने का चमत्कार कर दिखाया है।

हम पहले ही समाजवादी निर्माण में एक नयी और लम्बी छलांग के लिए, देश की स्थायी खुशहाली और विकास के लिए और राष्ट्र के फलने-फूलने के लिए एक ठोस बुनियाद कायम कर चुके हैं।

गणतन्त्र के उत्तरी आधे भाग में क्रांतिकारी आधार की और भी किलेबंदी कर लेने तथा देश के शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण को प्राप्त करने के लिए समाजवादी निर्माण को निर्णायक रूप से आगे बढ़ाने का काम अब हमारे सामने है। इस कर्तव्य को पूरा करने के लिए हमें असाधारण शौर्य और लगन का परिचय देते रहना होगा तथा तमाम दिक्कतों को दूर कर और भी तेजी से आगे बढ़ना होगा।

हमारी पार्टी द्वारा निर्धारित समाजवादी निर्माण का भव्य कार्यक्रम मेहनतकश लोगों को अपने कार्य में नये कमाल कर दिखाने को प्रेरित कर रहा है। इस कार्यक्रम की तामील से हमारा देश एक विकसित औद्योगिक देश में बदल जायेगा और हमारे देशवासियों के लिए दूसरों जैसा सुखी और प्रचुर जीवन आश्वस्त हो जायेगा। यह दक्षिण कोरिया के लोगों को अमरीकी साम्राज्यवाद के विरुद्ध उनके राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन में प्रबल प्रोत्साहन प्रदान करेगा और देश के पुनरेकीकरण की प्राप्ति में एक निर्णायक चरण की शुरूआत करेगा।

हमारा ध्येय न्यायपूर्ण है और हम विजयी होंगे।

हमारे पास कोरिया की मजदूर पार्टी का कठिन क्रान्तिकारी संघर्ष में तपकर कुन्दन बन चुका सही नेतृत्व तथा पार्टी के गिर्द एकजुट जनता की अक्षय शक्ति, दोनों ही विद्यमान हैं। आज सारी कोरियाई जनता ने अपना भाग्य पूर्णतया अपनी पार्टी को सौंप दिया है, जो विश्वास के साथ उन्हें विजय की ओर ले जा रही है।

समाजवादी शिविर के एक अरब लोग हमारे पीछे हैं। और विश्व भर के तमाम प्रगतिशील लोग हमारे पक्ष में हैं।

हमारी पार्टी कोरियाई जनता की तमाम क्रान्तिकारी शक्तियों को लामबंद करके तथा समाजवादी शिविर के देशों के अवाम तथा पूरी दुनिया के मजदूर वर्ग

के साथ उसकी अन्तर्राष्ट्रीयतावादी दृढ़ बनाकर देश को पुनरेकीकृत और स्वतन्त्र करेगी, समाजवाद के ध्येय को फलीभूत करेगी और पूर्व में समाजवाद की विजय में योगदान करेगी।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद ऐसा सदाजयी सिद्धान्त है जो जनता के उज्ज्वल भविष्य के पथ को देदीप्यमान कर रहा है। यह हमारी विजय की पताका है।

हमारी पार्टी और कौम इस पताका को ऊंचा उठाये आगे बढ़ रही है, अतः विजय और कीर्ति अवश्यंभावी है।

आइए, हम सब कोरिया की मजदूर पार्टी के नेतृत्व में मार्क्सवाद-लेनिनवाद द्वारा निर्दिष्ट पथ पर बहादुरी से नयी जीतों की दिशा में आगे बढ़ें !

बच्चों की शिक्षा में माताओं का कर्तव्य

माताओं की राष्ट्रीय बैठक में भाषण

१६ नवम्बर, १९६१

साथियो,

माताओं की इस बैठक में मैंने बड़ी दिलचस्पी के साथ रिपोर्ट और भाषण सुने और मैं हृदय से भाव-विभोर हो उठा। सबसे पहले कोरिया की मजदूर पार्टी की केन्द्रीय समिति और गणतंत्र की सरकार की ओर से मैं यहां उपस्थित महिला संघ की कार्यकर्ताओं और समस्त माताओं को, जो बच्चों की शिक्षा और समाजवाद के निर्माण में लगी हैं, अपनी कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हूं। मैं मां ली योंग सुक और कुमगांग-सान पर्वत-युग्म की वीरांगना कामरेड कांग ग्योंग रिम को विशेष रूप से हार्दिक धन्यवाद देता हूं, जिन्होंने वास्तविक जीवन में हमारी पार्टी की नीति को आत्मसात करने में असाधारण देशभक्तिपूर्ण उत्साह दिखाया और बच्चों की शिक्षा का श्रेष्ठ उदाहरण पेश किया।

हमारी पार्टी की चौथी कांग्रेस ने नयी पीढ़ी को कम्युनिस्ट लाइनों पर शिक्षण तथा लालन-पालन करने के काम को एक महत्वपूर्ण कर्तव्य बताया था।

पार्टी कांग्रेस द्वारा निर्धारित काम को सफलतापूर्वक पूरा करने के उद्देश्य से महिला संघ ने माताओं की यह बैठक आयोजित की है, जिन पर बच्चों की शिक्षा का प्राथमिक दायित्व है, तथा शिक्षिका के रूप में उनकी भूमिका और अधिक बढ़ाने की समस्या पर विचार-विनिमय आयोजित किया है। मैं समझता हूं कि बैठक बड़ी सामयिक है।

इस विश्वास के साथ कि यह बैठक अत्यन्त सफल होगी, मैं कुछ बातों पर प्रकाश डालना चाहूंगा।

सब से पहले हमें यह जानना चाहिए कि इस समय हम जिन परिस्थितियों में हैं वे पहले से बिल्कुल भिन्न हैं और इसलिए हमारी माताओं के कर्तव्य तथा

भूमिका भी पहले कभी की अपेक्षा भिन्न है। प्रत्येक मां अपने पुत्र-पुत्रियों को प्यार करती है और संसार में उनके सफल होने की कामना करती है। प्राचीन और आधुनिक, सभी युगों में शायद ही ऐसी कोई मां रही हो जो अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति बिल्कुल उदासीन रही हो। मगर पिछले समय में अपने बच्चों को श्रेष्ठ व्यक्ति के रूप में विकसित करने के लिए मां की आशाएं पूरी नहीं हो पाती थीं।

शोषक समाज में हमारी जनता का जमींदारों और पूंजीपतियों द्वारा शोषण और उत्पीड़न होता था और साम्राज्यवादियों द्वारा दमन तथा अपमान किया जाता था। चूंकि उपनिवेशी दासता में उन्हें भूख और गरीबी, उत्पीड़न और दुर्व्यवहार भोगना पड़ता था, इसलिए वे अपने पुत्र-पुत्रियों के लिए उचित शिक्षा और प्रशिक्षण की व्यवस्था कर पाने की कोई कल्पना भी नहीं कर पाती थीं। वास्तव में काफी धन-दौलत और जमीन-जायदाद वाले समृद्ध परिवार भी राष्ट्रीय उत्पीड़न से मुक्त नहीं थे; उन्हें अपने बच्चों की विद्यालयी शिक्षा में जापानी साम्राज्यवादी शासकों के भेदभाव का शिकार होना पड़ता था। इसमें गरीबों के बच्चों का उल्लेख क्या किया जाय।

मिडिल स्कूल में प्रवेश पाने के लिए अनेक शर्तें थीं। प्रार्थी को अपने परिवार की आर्थिक हैसियत का प्रमाणपत्र पेश करना पड़ता था जिससे पता चले कि प्रार्थी के स्कूली खर्चे के लिए परिवार के पास काफी धन है या नहीं? विद्यार्थियों को चन्दे देने पड़ते थे और स्कूल में बढ़िया पोशाक, ओवरकोट तथा चमड़े के जूते पहन कर आना होता था। ऐसे स्कूल में बच्चे भेज पाना एक गरीब के लिए, जो पेट भी मुश्किल से भर पाता था, बस के बाहर की बात थी।

लेकिन अब जमाना बदल गया है। जापानी साम्राज्यवादी शासकों के जुए से मुक्त हुए सोलह वर्ष बीत गये हैं। इस बीच हमारी जनता ने न सिर्फ जनवादी सुधार लागू कर लिये हैं और उपनिवेशी तथा सामंती शोषण तथा उत्पीड़न का अन्त कर दिया है, बल्कि शहर तथा ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पादन सम्बन्धों का समाजवादी रूपान्तरण पूरा कर लिया है और सुदृढ़ता से एक समाजवादी व्यवस्था स्थापित कर ली है, जिसमें शोषण-उत्पीड़न का कोई अस्तित्व नहीं रह गया है। हमारे देश में मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण-उत्पीड़न के स्रोत को सदा के लिए मिटा दिया गया है और प्रत्येक व्यक्ति उन्मुक्त तथा सामंजस्यपूर्ण जीवन का उपभोग करने लगा है।

युद्ध के बाद कठिन संघर्ष चला कर हमारी जनता ने राख के बीच से नये, शानदार शहरों तथा सुन्दर गांवों का निर्माण किया और एक स्वतंत्र अर्थव्यवस्था की ठोस नींव डाली। जनता की अर्थ-वस्त्र और आवास की समस्याएं आमतौर पर

हल हो गयी हैं और हर व्यक्ति अब चिन्ताएं त्याग कर रहता है। हमारे देश में आज किसी को खाने-कपड़े की चिन्ता नहीं है और न ही किसी व्यक्ति को अपने बच्चों को स्कूल भेजने या चिकित्सा प्राप्त करने में कोई कठिनाई है।

हमें अफसोस सिर्फ यही है कि अभी हम दक्षिणी आधे भाग को मुक्त नहीं करा सके हैं। हमें अपने दक्षिण कोरियाई देशवासियों के लिए गहरा दुःख होता है, जो अमरीकी साम्राज्यवाद के जुए के तले दीनहीन जीवन भोग रहे हैं। हमें यही बड़ी चिन्ता है। हमारे दिमाग में और कोई परेशानी नहीं है; अब हम भविष्य में और अधिक अच्छे जीवन तथा समृद्धतर और सबलतर देश के निर्माण के कर्तव्य पर ध्यान दे रहे हैं। अब हर व्यक्ति पहले से बेहतर ढंग से रहने तथा सुखदतर और दीर्घतर जीवन का सुखोपयोग करने की कामना करता है और अपने बच्चों को बेहतर ढंग से शिक्षित तथा और अधिक प्रशिक्षित देखना चाहता है।

अब अपने देश को और अधिक समृद्ध तथा सशक्त बनाने और जनता के जीवन को भरा-पूरा बनाने के लिए हमारे पास सारे मूलाधार मौजूद हैं। हमारे रहन-सहन का स्तर दिन-प्रतिदिन ऊंचा उठ रहा है और हम कदम-ब-कदम समाजवाद के नजदीक पहुंच रहे हैं।

हमारा आदर्श है एक ऐसे समाज का निर्माण करना जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को भलीभांति खाना-कपड़ा मिले और वह दीर्घ जीवन जिये, एक ऐसा समाज जिसमें कोई बेकार या निकम्मा न हो, सभी प्रगतिशील हों और लगन से काम करते हों, एक ऐसा समाज जिसमें सभी व्यक्ति एक बड़े परिवार की तरह सामंजस्यपूर्वक रहें। हम कह सकते हैं कि ऐसा समाज ही कम्युनिस्ट समाज होता है।

कम्युनिस्ट समाज में चीजों की इतनी बहुतायत होती है कि जनता अपनी योग्यता के अनुसार काम करती है और अपनी आवश्यकताओं के अनुसार सुविधाएं पाती है। दूसरे शब्दों में लोग जितना चाहें उतना पा सकते हैं और उनकी जीवन सम्बन्धी मांगें पूर्णतया तुष्ट हो जाती हैं। साथ ही, कम्युनिस्ट समाज में लोग एकदूसरे के साथ और अधिक घनिष्ठ सम्बन्ध बनायेंगे और "एक सबके लिए और सभी एक के लिए" सिद्धांत पूरी तरह लागू हो जायेगा।

क्या हम ऐसे समाज का निर्माण कर सकते हैं? निश्चय ही कर सकते हैं। हमारी जनता ने अब तक जो उपलब्धियां प्राप्त की हैं, उनके बल पर वह यह कह सकते है।

युद्ध-विराम के बाद हमारी जनता ने खण्डहरों पर पुनर्निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया था। तब हमारे लिए स्थिति बड़ी कठिन थी। प्योंगयांग और अन्य बड़े नगरों से लेकर छोटे स्थानीय शहरों और कस्बों तक सभी शहर और कस्बे पूरी तरह जमींदोज थे। फैक्टरियां, उद्योग-धंधे, रेलें, यातायात के केन्द्र, सड़कें,

पुल और सांस्कृतिक संस्थान, जिनके जिए हमारी जनता ने एक लम्बे अर्से तक खून-पसीना एक किया था, पूरी तरह नष्ट हो चुके थे। जल-भण्डार और सिंचाई व्यवस्था भी ध्वस्त पड़ी थी और गांव नष्ट हो चुके थे। न लद्दू जानवर रह गये थे और न खेती की मशीनें; काम करने वालों की भारी कमी थी; और हमारे धन-खेत तथा अन्य खेत बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गये थे। मकान बनाने के लिए न ईंटें थीं और न एक औंस सीमेंट; निर्माण के लिए इस्पात की एक चद्दर पाना भी मुश्किल था।

इन परिस्थितियों में किसी को यह भरोसा नहीं था कि कैसे हम अपने पैरों पर खड़े हो सकेंगे। अमरीकी लोगों का विश्वास था कि इसमें कोरियाइयों को कम से कम सौ वर्ष लगेंगे। वे हिसाब लगा रहे थे कि उत्तरी कोरिया में सारी भौतिक सम्पदा के नष्ट हो जाने तथा काफी बड़ी संख्या में आबादी के मारे जाने की स्थिति में हम चाहे जो भी साधन इस्तेमाल करें, तेजी से अपने पैरों पर खड़े नहीं हो सकेंगे।

किन्तु सौ वर्षों के बजाय युद्ध के छः से सात वर्षों के बाद हमारी जनता ने अपने ध्वस्त राष्ट्रीय अर्थतन्त्र का पुनर्वास कर लिया और इससे भी बड़ी बात यह कि युद्ध से पहले बने नगरों और गांवों से भी अधिक शानदार और सुन्दर नगर और गांव खड़े कर दिये और युद्ध से पहले की तुलना में कहीं अधिक सशक्त आधुनिक उद्योग और कृषि से सम्पन्न एक समाजवादी राज्य का निर्माण कर लिया। युद्ध से पहले जितनी फैक्टरियां, उद्योग-धंधे, मकान और स्कूल थे, उनसे कई गुने अधिक का हमने निर्माण कर लिया है। हमारे शहरों और गांवों का रूप-रंग इतना बदल गया है कि वे पहचाने नहीं जाते और हमारी जनता के रहन-सहन के स्तर में भारी सुधार हुआ है। यह एक चमत्कार है। यह ऐसा ठोस यथार्थ है कि इससे कोई इनकार नहीं कर सकता। हमारे मित्रों का तो कहना ही क्या, शत्रु भी इसको स्वीकार करते हैं।

इन उपलब्धियों से एक शानदार उदाहरण मिलता है जिससे यह स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि हमारी पार्टी के सही नेतृत्व में और उसके इर्दगिर्द घनिष्ठ रूप से एकजुट हो कर हमारी जनता ने जिस प्रकार विदेशी आक्रमणकारियों के विरुद्ध संघर्ष में अपनी अगाध शक्ति प्रदर्शित की थी, उसी प्रकार राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के पुनर्वास और निर्माण में भी प्रदर्शित की है।

युद्ध के बाद छह से सात वर्षों के अन्दर ही हमारी जनता ने खाली हाथ जो ऐसा चमत्कार कर दिया, इस तथ्य के आधार पर हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि हम आज कुछ भी कर सकते हैं क्योंकि आज हमारे पास सभी भौतिक और आत्मिक शक्तियों की बहुतायत है।

हमारी पार्टी की चौथी कांग्रेस ने समाजवाद की ऊंचाई पर पहुंचने के उद्देश्य से सातवर्षीय योजना से महान कर्तव्यों के संदर्श प्रस्तुत किये हैं। सातवर्षीय योजना का बुनियादी कर्तव्य है हमारे देश में तकनीकी और सांस्कृतिक क्रान्तियां पूरी करना। हमें राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की प्रत्येक शाखा का यंत्रीकरण कर देना चाहिए ताकि श्रम उत्पादकता बढ़े और मेहनतकश जनता दुसाध्य श्रम से मुक्त हो। हमें आधुनिक वैज्ञानिक और प्रविधि सम्बन्धी तैयारियों से लैस राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं की पांतों में भी और अधिक वृद्धि करनी चाहिए और मेहनतकश जनता के तकनीकी तथा सांस्कृतिक स्तर को और ऊंचा उठाना चाहिए। इस प्रकार हमें अपनी जनता के लिए इस समय से अधिक समृद्ध तथा आधुनिक जीवन की व्यवस्था करनी चाहिए। तब हम समाजवाद की परिधि में पहुंच जायेंगे।

समाजवाद की इस परिधि का अर्थ है एक ऐसा समाजवादी समाज जिसमें हमारे रहन-सहन का स्तर आज से काफी अधिक ऊंचा होगा। जब हम सातवर्षीय योजना पूरी कर लेंगे, तब हमारी जनता आज से कहीं अधिक बेहतर ढंग से रहेगी और हमारा देश एक उन्नत समाजवादी, औद्योगिक राज्य का सर्वांग स्वरूप ग्रहण कर लेगा।

सातवर्षीय योजना पूरी करना उस संघर्ष से कम कठिन काम है जो हम गत सात वर्षों से लड़ रहे थे।

जब हम सातवर्षीय योजना पूरी कर लेंगे तो हम कम्युनिज्म के निकटतर आ जायेंगे, देश का पुनरेकीकरण कर सकेंगे और नये शिखर जीत सकेंगे।

इसलिए कम्युनिस्ट समाज को कोई ऐसी रहस्यात्मक चीज मानना, जिसको सुदूर भविष्य में ही साकार बनाया जा सकता है, गलत है। इसके लिए सख्त परिश्रम कर हम कम्युनिस्ट निर्माण के अपने आदर्श को निकट भविष्य में ही ठोस रूप दे सकते हैं।

तब फिर कम्युनिस्ट समाज के निर्माण में, जो हमारा आदर्श है, सबसे कठिन कर्तव्य क्या है? क्या यह सिर्फ फैक्टरियां बनाने का काम है? यह ठीक है कि हमें अनेक फैक्टरियां बनानी हैं, मगर यह इतना कठिन काम नहीं है। हमने पिछली मुसीबतों के विरुद्ध जमकर लड़ी गयी लड़ाइयों में जो भावना प्रदर्शित की थी, उसी भावना से अगर हम प्रयत्न करेंगे तो हम फैक्टरियों, सड़कों, सिंचाई सुविधाओं और मकानों समेत सारे निर्माण कार्यों को छोटी-सी अवधि में सफलतापूर्वक पूरा कर सकते हैं।

भौतिक सम्पदा पैदा करना सापेक्षतः आसान है और उससे ठोस परिणाम शीघ्र उपलब्ध होते हैं। उदाहरण के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में प्रविधि सम्बन्धी पुनर्निर्माण के लिए हमें सिर्फ मशीनीकरण, सिंचाई, बिजली, और रासायनिक खाद

के उपयोग की आवश्यकता है, जो फौरी परिणाम उपलब्ध करने के लिए काफी होंगे। यहां हम स्पष्ट देख सकते हैं कि क्या काम हुआ है, क्या नहीं हुआ और भविष्य में क्या करना चाहिए। हम समाजवादी अर्थतंत्र के विकास के नियमों के अनुसार योजना बनाकर राष्ट्रीय अर्थतंत्र का लगातार विकास कर सकते हैं। हर सूरत में समाजवाद और कम्युनिज्म की भौतिक और तकनीकी नींव डालने का काम पूरा किया जा सकता है, अगर हम एक समय-सीमा, मान लीजिए १० या १५ वर्ष, निश्चित कर उसको आगे बढ़ायें।

मुश्किल है तो जनता को कम्युनिस्ट रीति से शिक्षित करना तथा उसका पुन:संस्कार करना। भौतिक सम्पदा कितनी ही अधिक हो, हम तब तक यह नहीं कह सकते कि अभी कम्युनिस्ट समाज बन गया है, जब तक कि उसका उपयोग करने वाले लोग कम्युनिस्ट विचारधारा से लैस न हो गये हों।

मनुष्य की चेतना आमतौर पर समाज के भौतिक रूपान्तर से पीछे रहती है। समाज व्यवस्था में परिवर्तन के बाद भी काफी लम्बे अर्से तक जनता के मस्तिष्क में पुराने विचार बने रहते हैं। सोवियत संघ में क्रान्ति हुए ४४ वर्ष बीत गये। मगर आज भी ऐसे लोफर लोग हैं जो निठल्ली जिंदगी जीना चाहते हैं। इसलिए वहां उन लोगों की सख्त आलोचना की जाती है, जो लोग उस समय जबकि अन्य लोग काम करते हैं, अपना समय निठल्ले रह कर बरबाद करते हैं और सुख-सुविधाओं में से हिस्सा बंटाने में आगे रहते हैं। हाल में जब हम सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की बीसवीं कांग्रेस में भाग लेने गये तब हमें यह बात बतायी गयी। यहां अपनी हालत का उल्लेख करना बेकार है क्योंकि हमें मुक्त हुए तो १५-१६ वर्ष ही हुए हैं। जो लोग यहां उपस्थित हैं, क्या उनमें से कोई भी व्यक्ति यह कहने का साहस कर सकता है कि उसमें कोई भी पुराना विचार नहीं है ? आप सब किसी न किसी सीमा तक पुराने विचारों से प्रभावित होंगे।

लेकिन आप यह देख या नाप नहीं सकते कि कौन कुत्सित विचारों से अभी तक प्रभावित है और किस हद तक। अस्पतालों में ऐसे साधन हैं जो हृदय की गति माप सकते हैं, लेकिन ऐसा कोई यंत्र नहीं जिससे लोगों के दिमागों में बसे बुरे विचारों की संख्या गिनी जा सके।

जब सामन्ती या पूंजीवादी समाज में इस्तेमाल किये जाने वाले जर्जर औजार की जगह कम्युनिस्ट समाज की नयी मशीनों का उपयोग होता है तो इसको हम आसानी से पहचान लेते हैं, मगर हम शक्लें देख कर यह नहीं पहचान सकते कि अमुक व्यक्ति के दिमाग में सामन्ती और पूंजीवादी विचारधाराएं शेष हैं या नहीं। उसके दिमाग में पुराने विचार हैं या नहीं, इस बात को हम उसके कामों से पहचान सकते हैं, और पुराने विचारों को नये रूप में फिर से ढाला जा सकता है सिर्फ

लगातार विचारधारात्मक संघर्ष द्वारा।

प्रकृति को मशीनों की मदद से तेजी से और आसानी से नये रूप में ढाला जा सकता है, मगर मनुष्य की चेतना का .मशीनों या बाहरी लोगों द्वारा पुन:संस्कार नहीं किया जा सकता। यह प्रश्न हमारे लम्बे और अथक प्रयत्नों द्वारा ही सफलतापूर्वक हल किया जा सकता है। अगर हम काफी परिमाण में भौतिक सम्पदा पैदा हो जाने के बाद मनुष्य की विचारधारा का पुनर्निर्माण शुरू करेंगे तो उसके लिए बहुत देर हो चुकेगी। अगर समाजवादी क्रान्ति के पहले दिन से हम वैचारिक पुन:संस्कार का काम शुरू करें तब भी दीर्घकालिक रूप में वह भौतिक जीवन के रूपान्तर से पीछे-पीछे बनी रह सकती है। हमारी पार्टी ने यह काम बहुत पहले शुरू किया था और उसको हाल के दिनों में एक जन-आन्दोलन के रूप में और भी अधिक विस्तार से आगे बढ़ाया है। मगर हमारे यहां भी चेतना का पुन:संस्कार यथार्थ से पीछे छूट जाता है।

कम्युनिस्ट समाज में प्रवेश करने के लिए हमें ध्यान रखना होगा कि ऐसा कोई व्यक्ति न रहे जिसमें पिछड़े विचार हों। कम्युनिज्म का उद्देश्य है कि चन्द लोगों के लिए नहीं, सब के लिए समृद्ध जीवन की व्यवस्था हो। कोई आदमी कामचोर है, इसलिए हम उसको पीछे नहीं छोड़ सकते। अगर ऐसे कुछ लोग हों भी जो कम्युनिस्ट समाज में प्रवेश करने से इन्कार करें, तब हमें उनका पुन:संस्कार करना होगा और साथ ले चलना होगा। सारे लोगों को कम्युनिस्ट रीति से नये सिरे से ढालना, उनको यथेष्ट भोजन-कपड़ा देने की व्यवस्था करने से कहीं अधिक कठिन है। मगर यह ऐसा कर्तव्य है जिसको हमें पूरा करना ही होगा और हम कर भी सकते हैं।

पुराने विचारों के अवशेष अपने को विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त करते हैं। यहां हम पुराने विचारों की अभिव्यक्ति के चंद ऐसे उदाहरणों का उल्लेख करते हैं जिनके विरुद्ध संघर्ष करना हमारा फौरी उद्देश्य है।

हमें श्रम से बचने और निठल्ले घूमते फिरने की बुरी आदत के विरुद्ध लड़ना चाहिए। यह सोचना भारी भूल है कि कम्युनिस्ट समाज ऐसा समाज है जिसमें लोग अकर्मण्य जीवन जीते हैं। इसमें शक नहीं कि कम्युनिस्ट समाज में काम आसान हो जायेगा, वह हमारे जीवन का अंग बन जायेगा और कमरतोड़ मशक्कत नहीं रहेगी। तब भी श्रम समस्त जनता का पुनीत कर्तव्य बना रहेगा। इसके अतिरिक्त जब तक कम्युनिज्म का निर्माण नहीं हो जाता, हर व्यक्ति को उत्साह से काम करना चाहिए। समाजवाद और कम्युनिज्म का सुखी जीवन कभी अपने आप नहीं आता। समस्त भौतिक और आत्मिक सम्पदा, जो जनता को सन्तुष्ट और सुखी बनाती है, उसके अथक परिश्रम से ही प्राप्त की जा सकती है।

कम्युनिस्ट उन अकर्मण्य लोगों का उन्मूलन करने का प्रयास करते हैं जो दूसरों का शोषण करते हैं, और समस्त लोगों को काम करने तथा सुखी जीवन भोगने का अवसर देते हैं। जो व्यक्ति श्रम से बचता है, वह कम्युनिस्ट नहीं हो सकता।

काम से जी चुराने और लोफर बने घूमने की प्रवृति शोषक वर्गों की विचार-धारा से पैदा होती है। जो लोग दरिद्रता में रहे हैं या खेतिहर मजदूरों की तरह मेहनत-मशक्कत करते आये हैं या अनेक वर्षों से मजदूर रहते आये हैं, उनके लिए लोफरी अजनबी चीज है। काम से ऐसे जमींदार, पूंजीपति और व्यापारी जान छुड़ाते हैं जो दूसरों का शोषण कर ऐश किया करते थे। चूंकि वे लोग पहले अपना समय फिजूल बरबाद किया करते थे, इसलिए वे आज भी ऐसा करना चाहेंगे। कठिन परिश्रम से काम करने वाले लोग भी तब निठल्लों से ईर्ष्या किया करते थे और श्रम को अपमानजनक मानते थे। जब लोग सुन्दर बालक को देखते थे तो कहा करते थे, "लड़का भाग्यवान् है। वह अवश्य आराम की जिन्दगी भोगेगा।" सुन्दर लड़की के बारे में कहा जाता था, "लड़की बड़ी सुन्दर है। वह किसी अमीर परिवार में सबसे बड़े बेटे की पत्नी बनेगी।" अमीर परिवार में सबसे बड़े लड़के की पत्नी से उनका मतलब हुआ करता था कि उसे आराम की जिन्दगी बिताने को मिलेगी। कोई आश्चर्य नहीं कि पुराने समाज में जहां काम-धाम न करने वाले लोग जनता पर हुकूमत करते थे, लोग ऐसा सोचा करते थे। आज भी वर्ग-चेतना की कमी के कारण वे लोग निठल्ले लोगों को घृणा और नीची नजर से देखने के वजाय उनसे ईर्ष्या करते हैं, यह आशा रखते हुए कि किसी प्रकार उनका भाग्य खुल जायेगा और वे भी निठल्ली जिन्दगी भोग सकेंगे। यही कारण था कि उन्हें अपने मेहनतकश होने पर गर्व नहीं होता था और वे यथासम्भव सबसे आसान काम करने का प्रयत्न करते थे और अगर हो सके तो निठल्ली जिन्दगी जीना चाहते थे।

स्वतंत्रता के ठीक बाद मैंने पाया कि हमारे विद्यार्थी प्रविधि के बजाय कानून पढ़ना अधिक पसन्द करते थे। जाहिर है कि वे फैक्टरियों में इंजीनियर बनने की बनिस्वत कानून पढ़ना और अदालतों में न्यायाधीश बनना और सार्वजनिक अभियोजकों के दफ्तरों में अभियोजक बनना, जो बड़ी-बड़ी कुर्सियों में बैठकर मुकदमे सुनते हैं, अधिक पसन्द करते थे। यह सब जापानी साम्राज्यवादी विचारों का अवशेष है। जापानी साम्राज्यवादी शासन के दिनों में अदालतों के न्यायाधीश और पुलिस स्टेशन के प्रधान लोग निठल्ली जिन्दगी जीते थे और दूसरों के अधिकार की चीजें हड़प लेने के लिए अपनी सत्ता का उपयोग करते थे। चूंकि मुक्ति से पहले हमारे विद्यार्थियों की निगाह कानून के पाठ्यक्रमों पर ही टिकी रहती थी, इसलिए हमने कानून के पाठ्यक्रमों में उनकी भरती ही सीमित कर दी और

विश्वविद्यालय के ७५ प्रतिशत से अधिक छात्रों के लिए तकनीकी विषयों का अध्ययन आवश्यक बना दिया।

हमारे बीच अभी भी ऐसे लोग हैं जो मेज पर बैठ कर क्लर्की और आफिस का काम करना पसन्द करते हैं और फैक्टरी या ग्राम क्षेत्र में पसीना बहाना नापसन्द करते हैं। मशक्कत के काम से जी चुराने और निठल्लेपन में जीने की प्रवृत्ति किसी हद तक प्रत्येक व्यक्ति में पायी जा सकती है।

हमारे समाज में श्रम सबसे पवित्र और सम्मानजनक काम है। यह समाजवाद का सिद्धान्त है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यतानुसार काम करता है और नयी किस्म के लोगों की यह महत्वपूर्ण विशेषता है कि वे यथासम्भव अधिक काम करते तथा कठिन और दुस्साध्य कामों के लिए स्वयं अपने को पेश करते हैं। छोलिमा अश्वारोही कठिन काम करने में और समाजवादी निर्माण में असाधारण लगन तथा रचनात्मकता प्रदर्शित करने में सदा एकदूसरे से होड़ करते हैं और इसी कारण उन्हें सारी जनता हमारे समय के वीरों के रूप में प्यार और सम्मान करती है। हम सब को श्रम को एक आनन्ददायक चीज समझते हुए उसको प्यार करने का अभ्यस्त होना चाहिए।

दूसरे, हमें स्वार्थपरता से लड़ना चाहिए। स्वार्थपरता का अर्थ है दूसरों के कल्याण की बजाय सिर्फ अपने कल्याण की कामना करना। किसी हद तक हर व्यक्ति इस कुत्सित धारणा से प्रभावित हो सकता है। मनुष्य प्रकृत रूप में स्वार्थी नहीं है। स्वार्थपरता व्यक्तिगत स्वामित्व में जन्मती है, मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण के प्रारम्भ होने के बाद से यह भावना शोषक वर्गों की रही है। स्वार्थसिद्धि एक बहुत ही कुत्सित विचार है। स्वार्थी व्यक्ति दूसरों की जिन्दगी तथा सम्पति तक को नुकसान पहुंचाने से नहीं हिचकता तथा अपने स्वार्थों और आनन्दों के लिए अपने देश और जनता को गिरवी रख देने में भी उसे कोई कष्ट नहीं होता।

जब तक आप स्वार्थपरायणता को दूर नहीं करते तब तक आप एक कम्युनिस्ट या क्रान्तिकारी नहीं बन सकते। आज विशेषकर हमारे समाजवादी समाज में स्वार्थपरता हमारे जीवन के साथ बिल्कुल बेमेल बैठती है। अब हम किसी शोषण के लिए नहीं, बल्कि स्वयं अपने तथा अपने देश तथा समाज के लिए काम कर रहे हैं। इस समाज में ऐसी स्वार्थपरता के लिए जगह नहीं है जो राज्य या समुदाय के स्वामित्व की चीजों को पहुंचायी जाने वाली क्षति की परवाह न कर सिर्फ अपनी चीज की रक्षा करती है। राज्य की सम्पत्ति अन्ततः हमारी ही है, किसी और की नहीं। राज्य और जनता की सम्पत्ति व्यक्तिगत सम्पत्ति से अधिक मूल्यवान् है, क्योंकि वह सारी जनता की समान सम्पत्ति है। कम्युनिस्ट राज्य के और सार्वजनिक हितों को अपने व्यक्तिगत हितों से ऊपर मानते हैं

और अपनी जिन्दगी को भी खतरे में डाल कर पार्टी तथा क्रान्ति के हितों के लिए अन्त तक लड़ते हैं।

स्वार्थी विचारधारा पारिवारिक जीवन में भी प्रकट होती है। कुछ लोग ऐसी पत्नियों को तलाक देना चाहते हैं जो लड़कों को जन्म नहीं देतीं। एक भी बेटा न होने पर खेद हो सकता है, मगर कम्युनिस्टों के लिए यह गम्भीर प्रश्न नहीं हो सकता, या क्या भला हो सकता है ? ऐसे कारणवश अपनी पत्नियों को त्याग देना उनके लिए अनैतिक काम है।

कुछ पिछड़ी हुई महिलाएं सिर्फ अपने बच्चों को प्यार करती हैं, दूसरों के बच्चों को नहीं। और फिर भी वे कहेंगी, "पशु भी अपने बच्चों को प्यार करते हैं।" अगर लोग सिर्फ अपने बच्चों को प्यार करते हैं, दूसरों के बच्चों को नहीं तो वे पशुओं से बेहतर नहीं हैं। उनको दूसरों के बच्चों से उतना ही प्यार करना चाहिए जितना कि वे अपनों को करती हैं। जो व्यक्ति इन्सानों को गहराई से प्यार करता है और दूसरों की मुसीबत को अपनी मुसीबत समझता है, वही सच्चा कम्युनिस्ट बन सकता है।

मैं कामरेड ली योंग सुक का बड़ा सम्मान करता हुं। घर में दूसरों के नौ बच्चों का पालन-पोषण करना कोई आसान काम नहीं है। उनके लिए स्वार्थ-परता अनजानी चीज है। कामरेड योंग सुक को सभी बच्चों की सहायता करने और सभी लोगों को सुखी जीवन बिताते देखने तथा हमारे देश को और अधिक समृद्ध बनाने में सहायता देने की ही चिन्ता है। उन्होंने अपने तथा दूसरों के बच्चों में भेदभाव नहीं किया, बल्कि सबको समान रूप से प्यार किया। वे पूर्णतया सच्ची कम्युनिस्ट विचारधारा तथा नैतिकता से सम्पन्न हैं—इस मामले में वे हमारी महिलाओं के लिए एक आदर्श हैं।

मेरा मतलब यह नहीं है कि कम्युनिस्ट समाज में कोई परिवार नहीं होगा या अपने तथा दूसरों के बच्चों में कोई भेद नहीं होगा। कम्युनिस्ट समाज में भी आदमी का अपना परिवार और अपने बेटे-बेटियां होंगे। मगर कम्युनिस्ट समाज में लोग मात्र णपने पुत्र-पुत्रियों को ही प्यार नहीं करेंगे। जब कम्युनिस्ट समाज स्थापित हो जायेगा, तव सारा समाज एक परिवार बन जायेगा और लोग बच्चों को, चाहे वे अपने हों या दूसरों के, समान रूप से प्यार और उनकी देखभाल करेंगे।

स्वार्थपरायणता यानी सिर्फ व्यक्तिगत भलाई की टोह में रहना मिलजुल कर समृद्धि का जीवन बिताने के कम्युनिस्ट विचार की मूल भावना के विरुद्ध है। हमें यह मानकर चलना चाहिए कि हममें से प्रत्येक में स्वार्थपरता है, और हमें इसका नामोनिशान मिटाने के लिए लगातार प्रयत्न करना चाहिए।

एक और प्रश्न यह है कि हमें सामूहिकतावादी विचार अपनाने चाहिए।

कम्युनिस्ट समाज एक सामंजस्यपूर्ण और एकताबद्ध समाज का प्रतिनिधित्व करता है। प्रत्येक व्यक्ति को समुदाय, देश तथा अपने साथियों से प्यार करने का अभ्यस्त बन जाना चाहिए। समुदाय से अलग रह कर अकेला जीवन पसन्द करना, सामूहिक जीवन के नियम का उल्लंघन करना, और अपने साथियों से बुरी तरह बर्ताव करना, तथा इस प्रकार सामूहिक के लिए परेशानियां पैदा करना और उसमें मनहूस वातावरण पैदा करना गलत है। अगर कोई व्यक्ति दूसरे की सलाह अनसुनी करने का आदी है, आत्म-महत्व की अतिरंजित धारणा से दूसरों से घृणा करता है या उनका अपमान करता है तो वह सामूहिक जीवन के प्रति वफादार नहीं हो सकता। हम कोरियाइयों में प्राचीन काल से शांत जीवन व्यतीत करने का एक बढ़िया रिवाज है। हमें ऐसी सुन्दर, परम्परागत नैतिक विशेषता का विकास करना चाहिए और हर जगह सद्भावनापूर्ण और उज्ज्वल वातावरण पैदा करना चाहिए।

अगली चीज जो हमें बंद करनी चाहिए वह है बरबादी और क्षुद्रता की आदत। यह भी पुराने समाज का अवशेष है। सारी नशाखोरी और जुएबाजी को और स्त्री-पुरुषों की नैतिकता को भ्रष्ट करने तथा वक्त बरबाद करने वाली जिन्दगी बिताने की परिपाटी को खत्म कर दिया जाना चाहिये। आनन्द करने का यह अर्थ कतई नहीं है कि आदमी उच्छृंखल और पतित हो जाय। हमें सीखना चाहिए कि एक उच्चतर और अधिक सुसंस्कृत स्तर पर अपना मनोरंजन कैसे किया जाता है, और हमें हर समय स्वस्थ जीवन बिताना चाहिये।

हमें पुराने विचारों के सभी अवशेषों का उन्मूलन करने के लिए काफी लम्बे समय तक जोरदार प्रयत्न करने चाहिए।

पुराने विचारों से लड़ने में माताएं सचमुच भारी भूमिका अदा करती हैं।

सामान्यत: मनुष्य घर और स्कूल में तथा सार्वजनिक जीवन में शिक्षित-दीक्षित होते हैं। घरेलू शिक्षा स्कूली तथा सामाजिक शिक्षा का आधार होती है और उनका मनुष्य की शिक्षा में एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान बन जाता है।

परिवार हमारे समाज की एक कोशा है जिसमें व्यक्ति के निकटतम रिश्तेदार—माता-पिता, पत्नी और बच्चे, भाई और बहन—एक साथ रहते हैं। यहां अपने बचपन से ही व्यक्ति को अपने घनिष्ठ रिश्तेदारों से लगातार शिक्षा प्राप्त होती है। हम घर में जिस प्रकार की शिक्षा उचित रूप से दे सकते हैं, वैसा स्कूल या समाज में मुश्किल से ही हो सकता है।

घरेलू शिक्षा का प्रधान दायित्व मां को उठाना है। उसकी जिम्मेदारी पिता से अधिक है। क्यों? क्योंकि वही बच्चों को जन्म देती है और उनका लालन-पालन करती है। बच्चों की पहली शिक्षिका मां होती है। कैसे चलना चाहिये, कैसे बोलना चाहिये, कैसे कपड़े पहनना चाहिए और कैसे खाना चाहिये—इन

बातों से लेकर हर आवश्यक चीज तक उनको मां सिखाती है। मां उन्हें प्रारम्भिक शिक्षा उचित रीति से देती है या नहीं, यह बात उनके विकास के लिए भारी महत्व की है। अगर मां उनको घर पर उचित शिक्षा देती है तो उन्हें स्कूल और सार्वजनिक संगठनों में शिक्षित करना बहुत आसान हो जाता है। बच्चों की उचित मातृ-शिक्षा से उन्हें स्कूल में भलीभांति अध्ययन करने में और समाज में अच्छी तरह काम करने में सहायता मिलती है।

बचपन में मां से जो कुछ सीखा जाता है, वह जिन्दगी भर याद रहता है। जो बातें हमारी स्मृति में सबसे अधिक लम्बे समय तक रहती हैं वे हैं मां के शब्द और सीखें। मां जो धारणाएं बनाती है, उनका मनुष्य के चरित्र और आदतों के निर्माण पर भारी प्रभाव पड़ता है। सभी युगों में महापुरुषों की माताओं ने अपने पुत्रों को बचपन से ही अच्छी शिक्षा दी।

कामरेड मा दोंग हुइ की मां यहां हमारे बीच उपस्थित हैं। उन्होंने अपने पुत्र और पुत्री को अथक रूप से देशभक्ति की भावना की शिक्षा-दीक्षा दी, जिससे वे दोनों तथा उनकी बहू भी क्रान्तिकारी बने। कामरेड मा दोंग हुइ स्वयं को सौंपे गये क्रान्तिकारी कर्तव्यों को पूरा करने में सदा वफादार रहे हैं। उन्होंने जब ह्येसान जिले में एक भूमिगत संगठन को फिर से स्थापित करने के लिए प्रवेश किया, तब उन्हें जापानी साम्राज्यवादी पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था। शत्रु ने छापामार हेडक्वार्टर का पता मालूम करने के लिए उन्हें हर तरह की यातनाएं दीं। कामरेड मा दोंग हुइ बखूबी समझते थे कि अगर शत्रु को हमारे हेडक्वार्टर का पता चल गया तो वह क्रांति के लिए एक भारी क्षति होगी। जब वे यातनाओं से बेहोशी के शिकार होने लगे तो उन्होंने इस डर से कि कहीं बेहोशी की बड़बड़ाहट में वह पता न बता बैठें, अपनी जबान काट ली। इस तरह का आदमी सच्चा वीर नायक होता है। जापानी साम्राज्यवादियों ने यह कह कर कि ऐसे कट्टर कम्यु-निस्ट पर मुकदमा चलाने की कोई आवश्यकता नहीं है, पुलिस स्टेशन में उनकी हत्या कर दी। किन्तु कामरेड मा दोंग हुइ की मां ने हिम्मत नहीं हारी, उन्होंने अपने पुत्र को दफनाया और मातृभूमि के लिए अपने सिद्धान्तों पर अडिग रहीं। केवल इसी तरह की कोरियाई मां ही ऐसे वीर पुत्र को जन्म दे सकती है।

कम्युनिस्ट को समाज और जनता की भलाई के लिए अपने जीवन का बलिदान करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। कामरेड मा दोंग हुइ की मां अपने पुत्र को प्यार करती थीं, मगर स्वार्थी तरीके से नहीं। उनका मत था कि उनके पुत्र ने शत्रु के सामने झुके बिना अपने जीवन का बलिदान करके सही काम किया और उसकी मृत्यु गौरवशाली है, क्योंकि उससे क्रान्ति तथा जनता को योगदान मिला है। उन्होंने अपनी मातृभूमि, जनता और क्रान्ति को अपने पुत्र के जीवन से अधिक

मूल्यवान् समझा। अगर सभी माताएं अपने बच्चों का उसी क्रान्तिकारी रीति से पालन-पोषण करें जैसे कि कामरेड मा दोंग हुइ की मां ने किया तो सभी बच्चे श्रेष्ठ कम्युनिस्टों के रूप में विकसित होंगे।

आज उदात्त बनने के लिए हमारे सभी बच्चों के सामने अनुकूल परिस्थितियां मौजूद हैं।. बुरे घराने के लोग जैसी कोई चीज कहीं नहीं होती। अतीत में शासक वर्गों ने अच्छे और बुरे घराने का झूठ गढ़ लिया था। हर व्यक्ति कुछ गुण लेकर जन्मता है जिनसे वह अच्छा आदमी बन सकता है। आदमी अच्छे हैं या बुरे, यह उनको जो शिक्षा और प्रभाव प्राप्त होते हैं, उन पर निर्भर करता है। इस समस्या का सार यही है और विशेष रूप से माता-पिता का ही प्रभाव होता है जो प्रधान भूमिका अदा करता है।

हम लोगों के मूल पर विचार करते हैं तो उनके वंश का पता लगाने के लिए नहीं, जैसा कि अतीत में होता था, बल्कि पूरी तरह यह समझने के लिए कि इन पर कौन से प्रभाव पड़े हैं? हम कहते हैं, जमींदार का बेटा बुरा होता है क्योंकि वह अपने पिता के चरण-चिह्नों पर चल सकता है, जो दूसरों का शोषण करते थे, अपने किसानों को पीटते और अपमानित करते थे और घमण्ड के साथ व्यवहार करते थे।

अब हमारे यहां न जमींदार हैं, न पुंजीपति। और न शोषण-उत्पीड़न है। हर व्यक्ति को स्कूल में अध्ययन करने का अधिकार है और कोई व्यक्ति कहीं भी काम करता हो, वह अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सकता है। इसलिए किसी भी परिवार के बच्चे अच्छे व्यक्तियों के रूप में विकसित हो सकते हैं।

इस समय अपने बच्चों को कम्युनिज्म के श्रेष्ठ निर्माता के रूप में विकसित करने का गुरुतर कर्तव्य माताओं को प्राप्त है। सभी माताओं को अपनी भारी जिम्मेदारी का और कम्युनिस्ट समाज के भावी स्वामियों के लालन-पालन के सम्मान का गहरा अहसास होना चाहिए।

अब परिस्थितियां सामान्यत: अनुकूल हैं और माताओं को अपने पुत्र-पुत्रियों के अभ्युत्थान के लिए प्रयत्न भर करने की आवश्यकता है।

बच्चों के अभ्युत्थान के लिए कोई विशेष रीति-विधान की आवश्यकता नहीं होती। अगर आप उन्हें अनेक सकारात्मक उदाहरणों का उपयोग कर, जो इस समय हमारे देश में पेश किये जा रहे हैं, शिक्षित करें तो इसको आश्वस्त किया जा सकता है।

अब एक नये प्रकार का इन्सान हर जगह उभर रहा है और हम सबने उसकी मर्मस्पर्शी कहानियां सुनी हैं। मेरा विश्वास है कि आप सबने ओरांग की पत्नी, पांग हा सू नामक बच्चे को बचाने वाले लाल चिकित्सा कार्यकर्ताओं और कामरेड

किल ह्वाक सिल तथा कामरेड ली सिन जा जैसे साथियों की गाथाएं सुनी होंगी।

अगर इन अच्छी मिसालों से उन्हें शिक्षित किया जाय तो हमारे बच्चे निश्चय ही श्रेष्ठ इन्सानों के रूप में विकसित होंगे।

अपने पुत्र-पुत्रियों को उचित रीति से शिक्षित करने के लिये आप माताओं को स्वयं श्रेष्ठ कम्युनिस्ट बनना चाहिए। अगर आप स्वयं काम और अध्ययन से बचेंगी और स्वार्थपूर्ण आचरण करेंगी तो आप अपने बच्चों को अच्छा आदमी बनने के लिए नहीं कह सकतीं। लोगों को शिक्षित करने के लिए सिद्धान्तों की बजाय व्यावहारिक उदाहरण बेहतर होते हैं। अपने बच्चों को कम्युनिज्म के निर्माता के रूप में विकसित करने के लिए स्वयं माता-पिता को कम्युनिस्ट बनना चाहिए।

छाएगयोंग-री में बाबा ओम दूर-दूर तक एक कम्युनिस्ट बुजुर्ग के रूप में प्रसिद्ध हैं। यह एक कम्युनिस्ट मां की कहानी नहीं है, फिर भी आपके लिए शिक्षाप्रद हो सकती है। बाबा ओम राजिन के निवासी हैं। मुझे बताया गया है कि वे मुक्ति के पहले खेतिहर मजदूर के रूप में काम करते थे और घोर दरिद्रता में रहते थे, मगर मुक्ति के बाद उन्हें जमीन दी गयी और वे खुशहाल हो गये। जब युद्ध छिड़ गया तो उन्होंने पुत्रों को यह हिदायत देकर मोर्चे पर भेजा, कि वे अपनी मातृभूमि की रक्षा में अन्त तक शत्रु से लड़ें। युद्ध के बाद उनके बेटे स्कूल में पढ़ने के लिए लौट आये। उनमें से एक ने विश्वविद्यालय की परीक्षा पास कर ली है और वह किम छाएक पोली-टेकनिकल संस्थान में अध्यापन कर रहा है। उनके एक बेटे ने शायद संस्थान में पढ़ाने वाले पुत्र ने, अपने पिता को लिखा कि चूंकि अब वे काम-काज करने के लिए काफी बूढ़े हो गये हैं, इसलिए प्योंगयांग आकर उनके साथ रहें। इस प्रकार, बाबा ओम अपने पुत्र के फ्लैट में रहने के लिए प्योंगयांग आये। उन्होंने अपने फ्लैट की एक खिड़की खोली और बाहर सड़कों पर देखा जहां इधर-उधर क्रेनें काम कर रही थीं, नयी इमारतें खड़ी हो रही थीं और न सिर्फ युवक लोग बल्कि अन्य सभी बड़े जोश-खरोश से काम कर रहे थे। इस सबको देख कर उन्हें अपने ऊपर, मजदूर पार्टी के एक सदस्य के ऊपर, सचमुच शर्म महसूस हुई कि एक ओर जब हर आदमी समाजवादी निर्माण के काम में जुटा हुआ है, वह स्वयं इतनी जल्दी अपने बेटे पर निर्भर बन गये हैं और अपनी बहू के हाथ का बना भोजन खाने के अलावा और कुछ नहीं कर रहे हैं। इसलिए उन्होंने फिर काम करने का इरादा किया और छाएगयोंग-री की सहकारी समिति को वापस लौट गये। सहकारी समिति में उन्होंने दूसरों से अधिक स्फूर्ति से काम किया और अनेक रचनात्मक सुझाव भी दिये। कुछ समय पहले मैं छाएगयोंग-री गया और वहां एक मीटिंग में शामिल हुआ। जब मैंने उसमें भाग लेने वालों से पूछा कि

क्या वे इस वर्ष दस लाख टन अधिक अनाज पैदा करने का कर्तव्य पूरा कर सकेंगे तो पीछे की सीट से एक वयोवृद्ध व्यक्ति उठा और विश्वासपूर्वक उत्तर दिया कि वे निश्चय ही ऐसा कर सकेंगे और बिना हिचक उन्हें यह कर ही दिखाना चाहिए। मुझे बताया गया कि वह व्यक्ति और कोई नहीं बाबा ओम ही थे।

छोंगसान-री के कामरेड मुन जोंग सुक को एक और आदर्श के रूप में पेश किया जा सकता है। उनके पति मातृभूमि मुक्ति युद्ध में खेत रहे। उनके बच्चे थे और उनके लिए अकेले जीवन-यापन करना कठिन था। इसलिए उनके दो भाइयों ने—जिनमें से एक गृहमंत्रालय में कर्मचारी था और दूसरा एक फैक्टरी में चीफ इन्जीनियर—क्रमशः उन्हें अपने यहां आने और अपने साथ रहने का निमंत्रण दिया। मगर कामरेड मुन जोंग सुक नहीं गयीं। उन्होंने सोचा कि मजदूर पार्टी की एक सदस्या होने के नाते उन्हें बिना काम किये अपना पेट नहीं भरना चाहिए। उन्होंने स्वयं अपने लिए जीविका अर्जित करने, अपने बच्चों को स्कूल भेजने और देश के लिए कठिनतर परिश्रम करने का फैसला किया। जब मैंने छोंग-सान-री के पार्टी संगठन की मीटिंग में भाग लिया तो उन्होंने बड़ा अच्छा भाषण दिया। उन्होंने कहा कि उनके गांव में अभी भी कई परजीवी पत्नियां हैं जो निठल्ली जिन्दगी पसन्द करती हैं और उन्होंने स्कूल के अध्यापक की पत्नी का उदाहरण पेश किया। अध्यापक की पत्नी भी जिसकी आलोचना की गयी थी, कोई बुरी महिला न थी। वह इस आलोचना से परेशान नहीं हुई, बल्कि उसने परजीवी जिन्दगी से नाता तोड़ा और अगले दिन से काम करने लगी। आलोचना प्रभावशील सिद्ध हुई। दूसरों की सहायता के बिना समस्त समस्याएं स्वयं हल करने की सबल संकल्प शक्ति के लिए और हर प्रश्न अडिग भाव से हल करने के गुण के लिए मैं कामरेड मुन जोंग सुक की अत्यधिक सराहना करता हूं।

हम अनेक आदर्श माताओं को जानते हैं। कम्युनिस्ट माताएं कोई असाधारण महिलाएं नहीं हैं। कोई भी व्यक्ति कम्युनिस्ट माता या कम्युनिस्ट पिता बन सकता है, बशर्ते कि वह स्वार्थपरता से विदा ले और पार्टी की हिदायतों के अनुसार काम करे। हमारी सभी माताओं को कम्युनिस्ट माताएं बन जाना चाहिए और अपने पुत्र-पुत्रियों को कम्युनिज्म के निर्माता बनाना चाहिए।

अब मुझे बच्चों की देखभाल करने की समस्या पर कुछ कहने दीजिए। अतीत में चूंकि हमारे लिए उचित परिस्थितियां नहीं थीं, इसलिए हम अपने बच्चों की उचित देखभाल करने में असफल रहे होंगे। लेकिन आज इसके लिए कोई बहाना नहीं हो सकता।

इस समय बच्चों को साफ-सुथरा रखने के लिए उपयुक्त परिस्थितियां मौजूद हैं। अगर दो-तीन वर्ष पहले का समय होता तो आप कह सकती थीं कि

पसे के अभाव के कारण आप अपने बच्चों की अच्छी देखभाल करने में असफल रहीं। मगर आज आप यह नहीं कह सकतीं। मेरा ख्याल है कि आज मुख्य कारण यह है कि माताएं अभी तक पुरानी आदतों में जकड़ी हैं और अपने बच्चों की उचित देखभाल करने के अपने कर्तव्य के प्रति पूरी तरह सचेत नहीं हैं।

मैं छांगसोंग हो आया हूं। सुपुंग जलविद्युत केन्द्र के निर्माण के बाद छांगसोंग काउंटी की सारी उपजाऊ जमीनें, सिर्फ पर्वत के नीचे के प्लाटों को छोड़कर, पानी में डूबी हुई थीं। इसलिए स्थानीय निवासी थोड़ी बहुत जीविका ही कमा पाते थे। राज्य ने उनके रहन-सहन की परिस्थितियां सुधारने के लिए काफी रकम दी और अन्य कदम उठाये। अब छांगसोंग काउंटी के निवासियों की रहन-सहन की स्थिति काफी ऊंची उठ गयी है। वहां एक पशुपालन फार्म है जहां हम अक्सर जाते रहते हैं। पहले वह सहकारी समिति के रूप में स्थापित किया गया था, मगर बाद में राज्य ने उसको तक राजकीय फार्म के रूप में पुनर्गठित किया ताकि उसकी सहायता की जा सके, क्योंकि उसका आर्थिक आधार अत्यन्त कमजोर था। इस फार्म में प्रत्येक कर्मचारी प्रति मास ४० से ५० वोन तक कमा लेता है। इसलिए दो या तीन काम करने वाले सदस्यों के परिवार की मासिक आय लगभग १०० से १५० वोन तक है। यह कोई कम आय नहीं है। इतनी बड़ी आय के बावजूद कुछ परिवारों में बच्चों की भलीभांति देखभाल नहीं की जाती है।

मैं वहां एक घर में गया। वह साफ-सुथरा था। मैंने कमरे में झांका और फर्श तथा दीवारों को सावधानी से कागज से सजा पाया और अलमारियों में बच्चों के कई सूट लटकते देखे। परिवार में चार बच्चे थे और वे सभी साफ-सुथरे कपड़े पहने थे। मकान के सामने फूलों के पौधे लगाये गये थे और इर्दगिर्द दूसरी चीजें भी बड़ी सुन्दर थीं। चूंकि लंच का समय था, गृहिणी बढ़िया रसोई-घर में कद्दू की स्वादिष्ट चीजें तैयार कर रही थी। मैंने बच्चों की नोटबुकों के पन्ने पलटे और लिखाई बिल्कुल साफ पायी तथा समाचारपत्रों से विभिन्न कतरनें हवाले के लिए बड़ी सावधानी से चिपकायी गयी थीं। मुझे बताया गया कि गृहिणी के पास कोई नौकरी नहीं है और पति ही एकमात्र कमाऊ व्यक्ति है जिसकी मासिक आय लगभग ४६ वोन है। सापेक्षतः कम आय और अनेक बच्चों के बावजूद उनकी गृहस्थी बढ़िया ढंग से चल रही थी।

मैंने एक और घर देखा जहां स्थिति बिल्कुल विपरीत थी। वह बड़ा गंदा था और जिस तरह उनके बच्चे दिखायी देते थे, वह वीभत्स था। कमरे में हर जगह गर्द थी और फर्श तथा दीवारों पर कागज नहीं लगाया गया था। रसोई-घर में हालत अस्त-व्यस्त थी और बच्चे नंग-धड़ंग थे। इस परिवार में भी गृहिणी

घर संभालती थी और सिर्फ पति काम करता था; उनकी आमदनी पिछले परिवार की तुलना में दोगुनी था। मैंने घर इतना गंदा रखने और बच्चों की अच्छी तरह देखभाल न करने के लिए पति को झिड़का। मगर उसने मुझे सफाई दी कि उसका मौजूदा रहन-सहन पहले से अतुलनीय रूप में बेहतर है। जब मैंने उससे पूछा कि क्या वह पार्टी का सदस्य है तो उसने बताया कि वह पार्टी सेल का अध्यक्ष है। वह अपने वर्तमान जीवन को काफी अच्छा समझता होगा क्योंकि पहले वह घोर दरिद्रता में रहता था। मगर यह बड़ा खेदजनक है कि एक व्यक्ति जो पार्टी सेल के अध्यक्ष पद पर है, अपने परिवार की व्यवस्था के मामले में इतना ढीला है। दूसरों की तुलना में वह अधिक कमाता है और उसके बच्चे भी कम हैं, मगर वह अपने घर और बच्चों की देखभाल करने में बिल्कुल उपेक्षा बरतता है क्योंकि वह दीन-हीन जीवन की पुरानी बुराई से आज भी प्रभावित है।

मैं यह देखने के लिए कि वहां कपड़ा है या नहीं, एक दूकान में गया। वहां बहुत कपड़ा था और कीमतें भी इतनी ऊंची नहीं थीं। हमारे देश में माल की कीमत सब जगह समान है, चाहे वह प्योंगयांग हो या पाएकदू-सान पर्वत की तलहटी का गांव। बताया जाता है कि बच्चों के एक सूट के लिए दो मीटर कपड़ा काफी होता है। अगर दो मीटर की कीमत छह वोन हो तब भी कीमत मंहगी नहीं है। गांव में उन्हें न तो ईंधन के लिए लकड़ी खरीदनी पड़ती है और न पानी के लिए कीमत अदा करनी पड़ती है, इसलिए मैं समझ नहीं पाता कि वे सारे ९० वोन कहां खर्च कर देते हैं और क्यों अपने बच्चों के लिए उचित वस्त्रों की व्यवस्था नहीं कर पाते! दरअसल वह आमदनी की बात नहीं है, जीवन के प्रति आदमी के दृष्टिकोण की बात है। इसलिए मैंने पार्टी की केन्द्रीय समिति में इस बात की रिपोर्ट की और बेहतर संस्कृति-संपन्न परिवार तथा घरेलू जीवन विकसित करने तथा सावधानी से बच्चों की देखभाल करने की आवश्यकता पर बल दिया।

मौजूदा परिस्थितियों में अगर हम चाहें तो हमारे पास अपने बच्चों की उचित देखभाल करने की क्षमता है। जसा कि थोड़ी देर पहले सिनमी-री के महिला संघ के संगठन की अध्यक्षा ने अपने भाषण में कहा, असली समस्या यह है कि हमारी महिलाएं जागृत नहीं हैं। अगर महिलाएं साफ-सुथरी और व्यवस्थित जिन्दगी के विषय में थोड़ी-सी भी फिक्र करें तो सब कुछ हल हो सकता है। लेकिन कुछ महिलाएं उतना भी नहीं करतीं जितना कि उनके लिए सम्भव है और न वे इसे बिल्कुल गलत ही समझती हैं। कुछ परिवारों में वे अपने बच्चों को बिना बाल संवारे बाहर जाने देती हैं और बच्चों के लिए टोपियां तथा स्कूल का बैग खरीदने की भी आवश्यकता नहीं समझती हैं। बच्चों के लिए टोपियों और स्कूल के बैग की व्यवस्था करने में कोई बहुत खर्च नहीं होता। समस्या यह है कि उनमें

हार्दिकता की कमी है। जब बच्चों को घर में साफ-सुथरा रहना सिखाया जाता है तो वे स्कूल में हर चीज करीने से रखते हैं और एक नये प्रकार के मनुष्य के रूप में बड़े होते हैं जो भविष्य में सुसंस्कृत तरीके से रहेगा। माताओं को यह बात बेहतर ढंग से समझ लेनी चाहिए कि घर और बच्चों को साफ-सुथरा रखना उनके बच्चों की शिक्षा के लिए कितना महत्वपूर्ण है।

निश्चय ही, राजकीय संगठनों का भी दोष है। मैंने संबंधित अफसरों से बात की है; मैं यह स्वीकार किये बिना नहीं रह सकता कि बच्चों की सावधानी से देखभाल नहीं की जाती। बच्चों के लिए काफी वस्त्र, जूते, मोजे, टूथब्रश, स्कूल की सामग्री, खिलौने और साहित्यिक कृतियां उपलब्ध नहीं हैं।

इस समय बच्चों के लिए काफी उपन्यास और कथा-पुस्तकें नहीं हैं; बच्चों की फिल्में भी संख्या में कम हैं और बाल नाटक संस्था भी उल्लेख योग्य नहीं है। राजकीय संस्थाओं के कार्यकर्ताओं की कमजोरियों के लिए उनकी काफी आलोचना हो चुकी है, जिनको सुधारा जा रहा है।

मगर फिर भी महत्वपूर्ण बात है अपने बच्चों को साफ-सुथरा रखने में माताओं के हार्दिक प्रयत्न। अपने बचपन में टूथब्रश खरीदना हमारे लिए शायद ही सम्भव था। मगर हम अपने दांत रोज नमक से साफ करते थे। भौतिक चीजों की कमी को बच्चों को गंदे रहने देने का कारण नहीं बनाया जा सकता। अगर माताओं में अपने बच्चों के उचित लालन-पालन के लिए गहरी जिम्मेदारी की भावना हो तो वे हर समस्या का हल खोज लेंगी।

आखिर आज हम एक नया समाज बनाने के लिए जो कठिन परिश्रम कर रहे हैं, वह इस संसार में किसके लिए? कहने की आवश्यकता नहीं, यह अपने ही लिए है और मुख्यतः हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए है। हमने अभी जो सेब के पेड़ लगाये हैं, उनके फल हम तोड़ और खा सकते हैं. मगर यह कहना सही होगा कि वे हमारे बजाय हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए हैं। ताएदोंग-गांग नदी के तट पर शानदार उपवनों का निर्माण करने में हमारी काफी शक्ति व्यय हो रही है। यह इसलिए कि हमारे पास बहुत कम चीजें बची थीं। मुसीबतों के बावजूद हम वर्तमान पीढ़ी के लोगों को सख्त मेहनत करनी चाहिए ताकि हम भावी पीढ़ियों को कुछ अच्छी चीजें दे सकें।

इन वर्षों में बच्चों की मृत्युदर काफी घट गयी है। मेरा ख्याल है कि इसका कारण है कुल मिला कर लोगों के रहन-सहन की परिस्थितियों में सुधार, सार्वजनिक स्वास्थ्य तथा चिकित्सा संस्थाओं की संख्या में तेजी से वृद्धि, माताओं की बढ़ती हुई जागृति और महिला संघ के संगठनों के प्रयत्न।

बच्चों का स्वास्थ्य ठीक रखने में माताओं का प्रयत्न एक निर्णयकारी तत्व

है। माताओं को अपने बच्चे साफ-सुथरे रखने चाहिए और सफाई के सिद्धान्तों के तरीकों से उनका पालन-पोषण करना चाहिए, उन्हें स्वास्थ्य सम्बन्धी ज्ञान होना चाहिए और बीमारियों की रोकथाम तथा इलाज कैसे हों इसको जानना चाहिए। इस प्रकार उन्हें अपने बच्चों को उचित भोजन देना चाहिए, हर मौसम में उचित पोशाकें पहनानी चाहिए। और सदा बीमारी की रोकथाम के उपाय करने चाहिए। आज हम स्वास्थ्य सम्बन्धी ज्ञान समाचारपत्रों, पत्रिकाओं, रेडियो आदि के माध्यम से प्रचारित करते हैं और माताओं के विद्यालयों में आवश्यक जानकारी दी जाती है। अगर वे फालतू समय में लगन के साथ अध्ययन करें तो वे ऐसी श्रेष्ठ माताएं बन जायेंगी, जिन्हें आधुनिक और स्वास्थ्यवर्द्धक रीति से अपने घर की व्यवस्था करने तथा बच्चों का पालन करने का ज्ञान होगा। आज के बाद से हमें बच्चों की भलीभाँति देखभाल करने, घरों को साफ-सुथरा रखने और बच्चों को बीमारी से बचाने के लिए विस्तृत अभियान चलाना चाहिए।

अन्त में मैं संक्षेप में महिला संघ के काम के बारे में कुछ कहना चाहूंगा।

समाजवादी निर्माण में, विशेषकर बच्चों की कम्युनिस्ट शिक्षा में, महिलाओं द्वारा ग्रहण की गयी बहुत बड़ी भूमिका को ध्यान में रख कर हम महिला संघ के काम को और अधिक सुदृढ़ करना आवश्यक समझते हैं।

महिला संघ ने अपने काम में काफी प्रगति की है। अब, पिछले समय के विपरीत, काफी संख्या में श्रेष्ठ कार्यकर्ताओं को महिला संघ में काम करने के लिए नियुक्त किया गया है। अतीत में काफी महिलाएं थीं जो सुन्दर हैंडबैग लिये बन-ठन कर इधर-उधर जाया करती थीं। वे आम जनता से अलग-थलग बनी रहती थीं और महिला संघ के काम की प्रगति में काफी बाधा डालती थीं। इन महिलाओं को उनके पदों से हटा दिया गया है और महिला संघ की कार्यकर्ताओं की पांतों को पार्टी के ऐसे सदस्यों का केन्द्र बना कर निर्मित किया गया है, जो अपनी वर्ग-स्थिति में सुदृढ़ हैं। मेरा ख्याल है, यह बहुत सही कदम था।

कुछ लोगों का ख्याल था कि अतीत में जिन बुद्धिजीवियों ने विश्वविद्यालयों तथा कालेजों में शिक्षा प्राप्त की थी, वे ही महिला संघ की कार्यकर्ता बनने के योग्य थीं। यह उनकी भारी भूल थी। महिला संघ के संगठनों को फैक्टरियों और गांवों की श्रमजीवी महिलाओं के बीच काम करना चाहिए। अगर तथाकथित जागृत महिलाएं फैक्टरियों और ग्रामीण जीवन से अनभिज्ञ हैं और सिर्फ मेकअप करना तथा बाल घुंघराले करने वाले कलर लगाना ही जानती हैं, तो वे महिला संघ का काम कैसे चला सकेंगी? सच कहूं कि बाल घुंघराले रखना और सुन्दर पोशाकें पहनना उतना आवश्यक नहीं है और न इन्हें सीखना कोई कठिन काम है। एक बार सिखाने पर गांव की औरतें तक इन बातों को सीख

सकती हैं। लेकिन जो महिलाएं महिला संघ में खूबसूरत हैंडबैग लिए अपना समय बरबाद करने आती हैं, जबकि उन्हें अन्य मेहनतकश महिलाओं के साथ काम में भाग लेना चाहिए और महिलाओं द्वारा पार्टी की नीति पर अमल किये जाने के लिए दृढ़तापूर्वक लड़ना चाहिए। उन्हें प्रशिक्षित करना कठिन काम है—इसलिए उपयुक्त यह है कि ऐसी लगनशील साथियों को जो फैक्टरियों और गांवों में व्यावहारिक श्रम द्वारा इस्पात बन चुकी हैं, कार्यकर्ता बनाया जाय। जहां तक उन साथियों का सम्बन्ध है जिन्होंने कल यहां भाषण दिये, वे ऐसी महिलाएं हैं जिन्होंने अतीत में दूसरों के लिए मजदूरी पर काम करके कठोर जीवन भोगा है। स्वाभाविक है कि ऐसी महिलाएं केंन्द्रक का तत्व बनें। हमारी पार्टी सशक्त है और हमारा देश भी इसी कारण सशक्त है क्योंकि ऐसे ही लोग हर क्षेत्र में केन्द्रक हैं। भविष्य में भी हमें कार्यकर्ताओं के चयन और नियुक्ति में पार्टी के सिद्धान्त का दृढ़ता से पालन करते हुए महिला संघ की कार्यकर्ताओं की पांतें लगातार मजबूत करनी चाहिए।

मैं निश्चय ही बुद्धिजीवियों को कार्यकर्ता नियुक्त किये जाने के विरुद्ध नहीं हूं। हमें लगनशील बुद्धिजीवियों को कार्यकर्ता चुनना चाहिए और भविष्य में हर व्यक्ति को बुद्धिजीवी बन जाना चाहिए। बुद्धिजीवी सदा कालेज से डिप्लोमा प्राप्त लोग ही नहीं होते। कल और आज जिन साथियों ने भाषण दिये, वे सभी बुद्धिजीवी कहला सकती हैं। सच्चे बुद्धिजीवी वे लोग नहीं है जिनके पास डिप्लोमा है, बल्कि वे हैं जिन्हें जीवन के लिए परमावश्यक ज्ञान प्राप्त है। जिन बुद्धिजीवियों ने चौकोर टोपियां पहनकर कालेज में शिक्षा पायी है, वे शायद उन किताबों को पहचान लेंगे जिनको उन दिनों उन्होंने पढ़ा था, मगर आज हमें जिस चीज की आवश्यकता है, उससे वे बिल्कुल अनभिज्ञ हैं। दूसरी ओर, जिन बुद्धिजीवियों ने व्यावहारिक काम के जरिए सीखा है, उनको सभी विषयों का सही और समृद्ध ज्ञान प्राप्त है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि जिन्होंने बजाब्ता शिक्षा नहीं पायी है, उन्हें और अधिक अध्ययन करना चाहिए। वे कालेज के पत्र-व्यवहार पाठ्यक्रम द्वारा या स्वयं अध्ययन कर सकते हैं। इस प्रकार महिला संघ की सभी कार्यकर्ताओं को नया बुद्धिजीवी बन जाना चाहिए। भविष्य में भी हमें ऐसी महिलाओं को लेकर, जो मजदूरों और किसानों में पली हैं और उनके बीच कुशलता से काम करने के लिए गहरे जा सकती हैं तथा पार्टी की नीतियों पर अमल करने के लिए दृढ़तापूर्वक काम करती हैं, महिला संघ के कार्यकर्ताओं की ठोस पांतों का निर्माण करना चाहिए। इन साथियों को अपनी योग्यता बढ़ाने के लिए अथक परिश्रम करने को उत्साहित किया जाना चाहिए।

महिला संघ के सामने एक और महत्वपूर्ण कर्तव्य है सभी महिलाओं को कम्युनिस्ट माताएं तथा नयी पीढ़ी की श्रेष्ठ कम्युनिस्ट शिक्षिका बनाने तथा उन्हें समाजवादी निर्माण में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करने का। कम्युनिस्ट मां बनना और समाजवादी निर्माता बनना अविभाज्य कर्तव्य हैं। काम से जी चुराने वाली महिलाएं कम्युनिस्ट मां नहीं बन सकतीं। कम्युनिस्ट मां बनने के लिए उनको सबसे पहले समाजवादी निर्माण में उत्साह से भाग लेना चाहिए। समाजवादी निर्माण में सक्रिय रूप से भाग लेकर ही वे निरन्तर विकासमान् यथार्थ का बोध ग्रहण करती रह सकती हैं और शीघ्रता से कम्युनिस्ट विचारधारा अपना सकती हैं। आज हमारे देश में एक लाख से अधिक ग्रेजुएट महिलाएं हैं जो कोई काम नहीं करतीं, बल्कि घर पर सिर्फ अपना समय उड़ाया करती हैं। कालेज ग्रेजुएट पांच वर्ष तक काम करने के लिए एक प्रकार से कानूनी रूप में बाध्य हैं। राज्य ने उन्हें घर पर बच्चों की देखभाल करने और खाना पकाने के लिए कालेजी शिक्षा नहीं दी है। चूंकि ग्रेजुएट महिलाएं नौकरी नहीं लेती हैं, इसलिए कार्यकर्ता प्रशिक्षित करने वाली संस्थाएं छात्राओं को भरती करने में हिचक तक दिखाने लगी हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि महिलाओं को शिक्षा दी जानी चाहिए। विज्ञान की डिग्रियों ओर डाक्टरेट की उपाधि वाली अनेक महिलाएं होनी चाहिए। मगर किसी महिला ने डाक्टर की उपाधि नहीं प्राप्त की। यह खेदजनक बात है। सभी राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में भारी संख्या में श्रेष्ठ कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

ऐसी महिलाओं की संख्या कम नहीं है जो समझती हैं कि बच्चों को जन्म देने और घर संभालने का काम बाहर दुनिया में जाकर महत्वपूर्ण काम करने से अधिक उपयोगी है। वे सदा उन लड़कियों को चिढ़ाती हैं जो देर से शादी करती हैं और ऐसी लड़कियों के बारे में गप्पे हांकती हैं जिनकी शादी में पढ़ाई के कारण देर हो जाती है। महिला संघ को इस नकारात्मक रवैये के विरुद्ध सशक्त विचार-धारात्मक संघर्ष चलाना चाहिए।

हमारा अर्थ यह नहीं कि हम महिलाओं के शादी करने और बच्चे होने के विरोधी हैं। यह एक स्वाभाविक और अच्छी बात है। बुरी बात है महिलाओं में इस धारणा का होना कि उनकी पढ़ाई-लिखाई और अन्य हर काम का उद्देश्य है शादी करना और बच्चों को जन्म देना। महिलाएं अपनी शादी होने और बच्चे हो जाने के बाद भी अपनी पढ़ाई जारी रख कर विज्ञान की डिग्रियां और डाक्टरेट हासिल कर सकती हैं और उन्हें हासिल करना चाहिए।

शादी के बाद अपने सामाजिक जीवन में दृढ़ता से प्रगति करने में महिलाओं को सहायता देने के लिए परिस्थितियां पैदा की जानी चाहिए। महिलाओं को

सामाजिक गतिविधियों में सहायता देने के लिए अनेक नर्सरियां, किण्डरगार्टन, कपड़ा धुलाई की दुकानें आदि बनायी जानी चाहिए। ऐसे संस्थाओं के निर्माण की ओर राज्य विशेष रूप से ध्यान दे रहा है। किन्तु जो संस्थाएं राज्य के खर्चे से अभी निर्मित हो रहीं हैं, वे महिलाओं की आवश्यकताओं को शायद पूर्णतया पूरा न कर सकें, क्योंकि इस समय सभी क्षेत्रों में विशाल निर्माण-कार्य हो रहे हैं। निश्चय ही भविष्य में राज्य महिलाओं को सार्वजनिक गतिविधियों में भाग लेने का अवसर देने के लिए आवश्यक सभी सुविधाओं के निर्माण की पूरी जिम्मेदारी ले लेगा, मगर फिलहाल इस सबका भार उठाना उसके लिए सम्भव नहीं होगा। किन्तु महिला संघ अगर उचित व्यवस्था करे तो महिलाएं अपने प्रयत्न जुटाकर स्वयं अपनी अनेक समस्याएं हल कर सकती हैं।

मेरा ख्याल है कि प्योंगयांग में सोसोंग-दोंग क्षेत्र में प्राप्त अनुभव से एक श्रेष्ठ उदाहरण प्राप्त होता है। महिला संघ को नर्सरियां, कपड़ा-धुलाई संस्थाएं, सार्वजनिक भोजनालय आदि, स्थापित करने के लिए महिलाओं का नियोजित अभियान संगठित करना चाहिए। इस प्रकार सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने की सुविधा देने के उद्देश्य से महिलाओं के लिए उचित परिस्थितियां पैदा की जानी चाहिए और समाजवादी निर्माण में महिलाओं की भूमिका और अधिक सुदृढ़ की जानी चाहिए।

पिछले काल में महिला संघ की गतिविधियों में एक महत्वपूर्ण प्रश्न था निरक्षरता का तथा उस सामन्ती विचारों के उन्मूलन का जो महिलाओं को उत्पीड़ित रखते थे। मगर यह काम हमारे समाज में अब प्रमुख महत्व का नहीं रह गया है। आज महिला संघ को समाजवादी निर्माण में महिलाओं के भाग लेने के लिए सक्रियतापूर्वक अभियान छेड़ना चाहिए और ऐसी परिस्थितियां पैदा करने के लिए सारा जोर लगा देना चाहिए जिनमें वे भलीभांति काम कर सकें।

जैसा कि चौथी पार्टी कांग्रेस की रिपोर्ट में बताया गया है, महिला संघ का काम हमारे पार्टी-कार्य का महत्वपूर्ण भाग है। नगर, काउंटी और री पार्टी समितियां समेत सभी स्तरों पर पार्टी संगठनों को महिला संघ के संगठनों का काम सुदृढ़ करने में सक्रिय पथ-प्रदर्शन और सहायता देनी चाहिए।

माताओं की यह बैठक महिला संघ के काम को और अधिक सुदृढ़ तथा विकसित करने के लिए अच्छा अवसर देगी। मुझे आशा है कि यह बैठक माताओं द्वारा बच्चों को शिक्षा दिये जाने तथा महिला संघ के काम में एक मोड़ साबित होगी।

कोयला उद्योग के त्वरित विकास के लिए

आनजु कोयला खान के केन्द्रक पार्टी सदस्यों की बैठक में समापन भाषण

२३ दिसम्बर, १९६१

जैसा कि हम अक्सर कहते हैं, कोयला ही हमारे उद्योग को जिंदा रखता है। बगैर कोयले के लोहे के कारखाने और इस्पात संयंत्र, और अन्य तमाम फैक्टरियां, रेलगाड़ियां, जहाज आदि नहीं चल सकते, और हमारे रसायन उद्योग का ज्यादा विकास नहीं हो सकता। कोयला तमाम उद्योगों के लिए ऊर्जा और एक महत्वपूर्ण कच्चे माल के रूप में कार्य करता है।

उन देशों में, जोकि आमतौर पर ताप बिजली उत्पादन पर निर्भर करते हैं, कोयला विद्युत उत्पादन में एक निर्णायक भूमिका अदा करता है, यद्यपि हमारे देश की, जहां जल-विद्युत का अनुपात ऊंचा है, स्थिति किञ्चित भिन्न है। भविष्य में हमारे देश में भी कई ताप बिजलीघर बनाये जाएंगे। तब जैसे-जैसे हमारा उद्योग विकसित होगा, कोयले की मांग और बढ़ती जाएगी।

कोयला न केवल उद्योग के लिए विद्युत का एक बड़ा स्रोत ही है, बल्कि आधुनिक रसायन उद्योग के लिए एक बहुमूल्य कच्ची सामग्री भी है। समुचित ढंग से प्रयोग करने पर ऐन्थ्रेसाइट हमें कपड़े, जूते और दैनिक आवश्यकता की दूसरी महत्वपूर्ण चीजें उपलब्ध करता है। वास्तव में कोयले को काला सोना कहा जा सकता है।

विद्युत शक्ति उत्पादन की तरह ही कोयला उद्योग का भी विकास दूसरे तमाम उद्योगों से पहले किया जाना चाहिए। अन्यथा बड़ी संख्या में निर्मित किये जाने पर भी इन दूसरे उद्योगों की फैक्टरियां और उद्यम बेकार ही होंगे। यह मात्र इस वर्ष के अनुभव से साफ हो जाता है। चूंकि कोयला समय पर उपलब्ध नहीं किया गया, इसलिए कई फैक्टरियों को साल की पहली तिमाही में उत्पादन की

गम्भीर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और वे ऐसे निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने में असमर्थ रहीं जो वैसे उनकी पहुंच के अन्दर ही थे। वास्तव में यह कहा जा सकता है कि उद्योग की तमाम शाखाओं में सौंपे गये कामों की सफलतापूर्वक क्रियान्विति पर्याप्त कोयला उत्पादन पर निर्भर करती है। देश के उद्योग के विकास और जन-जीवन स्तर में सुधार, दोनों के लिए कोयला उत्पादन वस्तुतः भारी महत्व रखता है।

कोयला उद्योग में पार्टी सदस्यों, मजदूरों, तकनीकी कर्मचारियों और दफ्तरी कर्मचारियों को सबसे ज्यादा साफतौर पर यह अनुभूति होनी चाहिए कि उन्होंने अपने राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के विकास में कितना महत्वपूर्ण दायित्व अपने कंधों पर लिया है।

कोयले की भूमिगत खुदाई एक कड़ी मेहनत का काम है। फिर भी मुक्ति-पूर्व के दिनों में इस कठिन काम में लिप्त कोयला खनिकों के साथ दूसरे मजदूरों से कहीं बदतर, तुच्छतम काम करने वाले दासों जैसा व्यवहार किया जाता था। लेकिन आज, जब मेहनतकश लोग देश के स्वामी बन गये हैं, अधिक कड़ा काम करने वाले मजदूरों को ज्यादा सम्मान मिलता है।

अतीत में, जब जापानी साम्राज्यवादियों का हमारे देश पर कब्जा था, हाथों में हथियार लेकर सीधे जापानी लुटेरों का सामना करना, या भूमिगत गतिविधियों का आयोजन करना सबसे मुश्किल क्रान्तिकारी काम था। वर्तमान परिस्थितियों में, जबकि समाजवाद का निर्माण किया जा रहा है, आर्थिक निर्माण में जितना ज्यादा मुश्किल काम होता है, वह किसी भी क्रान्तिकारी के लिए उतना ही ज्यादा उपयुक्त और सम्माननीय होता है।

कोयला उद्योग के मजदूरों के जिम्मे समाजवादी निर्माण का एक महत्वपूर्ण और कठिन क्रान्तिकारी काम है। यह एक महान सम्मान है। यह आवश्यक है कि आपको कोयला उद्योग में अपने काम के पार्टी और क्रान्ति के लिए महत्व को गम्भीरतापूर्वक समझें और अपने भीतर ऊंचे स्तर का आत्मसम्मान और साथ ही जिम्मेदारी की भावना रखें। यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात है।

हम कुछ पैसों के लिए काम करने वाले भाड़े के मजदूर नहीं है। हम तो कम्युनिज्म के महान आदर्श की प्राप्ति के लिए लड़ने वाले क्रान्तिकारी हैं। हमें अपने काम में हमेशा सम्मान की भावना के साथ पूरे दिल से प्रयासशील रहना होगा।

आप अपने काम में तभी सृजनात्मक और ओजस्वी हो सकते हैं और तभी समाजवादी निर्माण में शानदार कारनामे कर सकेंगे' जब आपको पूरी तरह इस बात का अहसास होगा कि आपका क्रान्तिकारी काम हमारे देश की समृद्धि और

प्रगति तथा उसकी जनता की खुशहाली के लिए जरूरी है।

सातवर्षीय योजना की सफल क्रियान्विति के लिए संघर्ष में कोयला उद्योग के कार्यकर्ताओं पर भारी जिम्मेदारी आती है।

हमें सातवर्षीय योजना के अन्त तक कोयले के वार्षिक उत्पादन को ढाई करोड़ टन कर देना चाहिए और आने वाले वर्ष में डेढ़ करोड़ टन का लक्ष्य प्राप्त करना चाहिए।

अगले वर्ष हमारे लिए डेढ़ करोड़ टन की ऊंचाई पर पहुंचना क्यों जरूरी है? अब प्रत्येक बड़े उद्योग के पास बायलर हैं और राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की प्रत्येक शाखा कोयला इस्तेमाल करती है। कुछ पर्वतीय क्षेत्रों को छोड़, लोग न केवल शहरों में बल्कि देहतों में भी कोयले का ईंधन के तौर पर उपयोग करते हैं। उद्योग के विस्तार और खासतौर पर रसायन उद्योग के तेजी से विकास के साथ-साथ कोयले की मांग बढ़ती जा रही है। लेकिन अब हम बौद्योगिक और घरेलू इस्तेमाल, दोनों के लिए काफी कोयला उपलब्ध करने की स्थिति में नहीं हैं।

हमारे राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के विकास में उत्पन्न विभिन्न कठिन समस्याओं के समाधान की कुन्जी कोयला उद्योग के त्वरित विकास द्वारा अगले साल डेढ़ करोड़ टन की ऊंचाई की प्राप्ति में छिपी हुई है।

हम विश्व के उन देशों की पंक्ति में आते हैं, जिनके पास विशाल कोयला भण्डार हैं। कहा जा सकता है कि हम कोयले पर बैठे हुए कोयले के लिए चिन्तित हैं। यदि कोयला उद्योग के कार्यकर्ता अपने काम की समुचित ढंग से व्यवस्था करें तो हम खानों से जितना कोयला चाहें, निकल सकते हैं।

आनजु कोयला खान को अगले साल दस लाख टन के शिखर को जीतने के बहुत ही बड़े लक्ष्य को प्राप्त करना है। इस कर्तव्य को हर हालत में पूरा करना होगा।

१ : कोयला खानों के प्रबन्ध के बारे में

कोयला खानों को सौंपे गये कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए यह बात महत्वपूर्ण है कि उनमें कार्य की प्रणाली और विधि में आमूल सुधार किया जाए।

हमने लम्बे समय तक पार्टी और राज्य निकायों की कार्य-प्रणाली और विधि में सुधार की ओर विशेष रूप से ध्यान दिया है। पार्टी और राज्य के साथ आर्थिक निकायों के प्रमुख काम काफी बढ़ गये हैं और छोंगसान-री भावना और छोंगसान-

री विधि को अमल में लाने के संघर्ष के दौरान खासतौर पर अधिकारियों के काम की विधि और शैली में भारी परिवर्तन हुआ है। फिर भी, हमारा कार्य अभी भी अर्थव्यवस्था की तीव्र प्रगति के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलने में असमर्थ है।

मुझे इस समय आनजु कोयला खान में भी यही कुछ दिखायी देता है। यह सत्य है कि आप तमाम लोग पार्टी नीतियों का अनुसरण करते हुए भलीभांति काम करने के लिए भरसक प्रयत्न कर रहे हैं और आपको कार्य की प्रणाली और विधि को सुधारने में काफी कामयाबी हासिल हुई है। लेकिन अब भी'आपके काम में खामियां हैं। वे मुख्य रूप से पथप्रदर्शन और संगठनात्मक कार्य की खामियां हैं, अर्थात प्रबन्ध की खामियां हैं। ये खामियां न केवल यहां, बल्कि ताएआन विद्युत यन्त्र संयंत्र और अन्य फैक्टरियों में भी पायी जाती हैं। दोषपूर्ण प्रबन्ध इस समय हमारे देश के उद्योग की एक आम बात कहा जा सकता है।

पथप्रदर्शन में खामियां इसलिए सामने नहीं आ रही हैं कि हमारे कार्यकर्ताओं में पार्टी नीति को पूरा करने के बारे में उत्साह की कोई कमी है। उनमें उसे कार्य-रूप देने के लिए भारी उत्साह है। हमारे कार्यकर्ता पार्टी नीति को तोड़ने-मरोड़ने का कोई इरादा नहीं रखते। वे सब अपना काम अच्छी तरह करने के लिए हृदय से प्रयत्न करते हैं। पथप्रदर्शन में खामियां होने का मुख्य कारण इस तथ्य में छिपा हुआ है कि काम को समुचित ढंग से करने की इच्छा के बावजूद उनमें क्रान्तिकारी प्रशिक्षण का अभाव है और वे अपने काम में न तो प्रवीण हैं, न योग्य।

१. : कार्य-प्रणाली के पुनर्गठन और कार्यकर्ताओं के पथप्रदर्शन के स्तर के उन्नयन के बारे में

आपके पथप्रदर्शन में खामियां सर्वप्रथम तो इस तथ्य से प्रकट होती हैं कि कार्य की प्रणाली को नये हालात के अनुरूप पुनर्गठित नहीं किया जा सका है और पथप्रदर्शन का स्तर विकसित हो रही वास्तविकता से मेल नहीं खाता।

औद्योगिक उत्पादन की परिधि अब बहुत विस्तृत हो गयी है और इसके परिणामस्वरूप उपकरणों में बहुत वृद्धि हुई है और कर्मचारियों की संख्या बहुत बढ़ी है। ऐसे बदले हुए हालात में कार्य की प्रणाली और पथप्रदर्शन की विधि को भी स्वभावतः बदलना चाहिए। लेकिन कुछ साथी कार्य-प्रणाली को पुनर्गठित करने का यत्न नहीं करते, बल्कि समझते हैं कि पुराने ढांचे के अन्तर्गत कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि मात्र से सब काम ठीक ढंग से किया जा सकता है। यह

गलत है। सवाल प्रबन्ध कर्मचारियों की कमी का नहीं, बल्कि स्वतः कार्य की प्रणाली में त्रुटियों का है। इसे तभी सुलझाया जा सकता है, जब पुरानी कार्य-प्रणाली के ढांचे को तोड़ दिया जाए और एक नयी प्रणाली कायम की जाए।

कार्य की प्रणाली को नया रूप देने के लिए प्रबन्ध के ढांचे को ही पुनर्गठित करना होगा। चूंकि मैं इससे पूर्व ताएआन विद्युत यन्त्र संयंत्र में इस मामले का जिक्र कर चुका हूं, इसलिए यहां केवल कोयला खान की विशिष्टताओं से सम्बद्ध कुछ समस्याओं के बारे में बोलना चाहूंगा।

कोयला खान के प्रबन्ध ढांचे को इस ढंग से पुनर्गठित किया जाना चाहिए कि उसका आम स्टाफ मजबूत हो। मगर कोयला खान के एक गड्ढे में एक पूरी फैक्टरी की विशिष्टताएं होती हैं, अतः उसके ढांचे को ताएआन विद्युत यन्त्र संयंत्र की कार्यशाला की अपेक्षा अधिक विशाल होना चाहिए।

संभरण की प्रणाली को भी पुनर्गठित करना होगा, ताकि ऊंची इकाई सीधे निचली इकाई को सामग्री उपलब्ध करे। लेकिन चूंकि कोयला खान को कई गड्ढों का निर्देशन करना होता है, अतएव गड्ढे के खुले भाग तक सीधे सामग्री उपलब्ध करना जरा कठिन होगा। इसलिए मेरे विचार में एक ऐसी प्रणाली स्थापित करना बेहतर होगा, जिसके अन्तर्गत गड्ढों तक कोयला खान सामग्री को पहुंचाएं और फिर गड्ढों से वह माल सीधे कार्यटोलियों को उपलब्ध किया जाए।

केवल कार्यप्रणाली का पुनर्गठन तमाम समस्याओं को सुलझाने के लिए पर्याप्त नहीं है। भले ही किसी भी ढंग से कार्य की प्रणाली पुनर्गठित की जाए, यदि कार्यकर्ताओं के पथप्रदर्शन का स्तर उसके समकक्ष न रह सका तो वह निरर्थक होगी। संगठनात्मक प्रणाली को नया रूप देना बहुत ही आसान काम है। असल सवाल तो कार्यकर्ताओं के पथप्रदर्शन स्तर को ऊंचा करने का है।

माना कि प्रबन्ध ढांचे का विवेकहीन संगठन हमारे पिछले कार्य में दोषपूर्ण था, लेकिन इससे भी बड़ी खामी यह थी कि कार्यकर्ताओं के पथप्रदर्शन स्तर को नयी परिस्थितियों के अनुरूप ऊंचा करने के लिए उचित पग उठाने में हम असमर्थ रहे। आज की आधुनिक कोयला खान का पथप्रदर्शन जहां हजारों मजदूर सैकड़ों मशीनों और उपकरणों की सहायता से कोयला पैदा करते हैं, भूतकाल की अति लघु और पिछड़ी कोयला खानों के पथप्रदर्शन से बहुत ज्यादा भिन्न है जहां केवल कुछ दर्जन मजदूर छेनियों और कुदालियों से कोयला काटते थे और कुछ हथगाड़ियों में भरकर उसे बाहर लाते थे। मजदूरों की संख्या, आधुनिकीकृत उपकरणों और बढ़े उत्पादन के अनुरूप ही नेतृत्व के स्तर और तौर-तरीके में भी परिवर्तन होना चाहिए।

लेकिन आज भी हमारे कार्यकर्ताओं के पथप्रदर्शन का स्तर प्रायः वही है, जो

भूतकाल में था, जब कि कुछेक हथगाड़ियों और कुदालों से पिछड़ी कोयला खानें कोयला बाहर लाती थीं। शायद कुछेक लोग ही जानते हैं कि कैसे चेन कन्वेयर का उचित ढंग से संचालन किया जाना चाहिए और जहां तक कोयला-कटाई तकनीक का प्रश्न है, आपकी जानकारी दस साल पुरानी विधि से कुछ ही बेहतर है।

नयी तकनीक से नावाकिफ होने के कारण कार्यकर्ता मशीनों और उपकरणों को हाथ तक लगाने से डरते हैं। जब हालत यह हों, तो वे कैसे उत्पादन का सक्षम पथप्रदर्शन कर सकते हैं।

पथप्रदर्शन करने के लिए आपको नेतृत्व की निश्चित योग्यता प्राप्त करनी होगी। जब तक कार्यकर्ता अपने पथप्रदर्शन और तकनीकी स्तरों को उंचा नहीं करते तब तक वे न तो भारी संख्या में मजदूरों और तकनीकी कर्मचारियों का निर्देशन कर सकते हैं और न ही नयी मशीनों और उपकरणों का उचित उपयोग कर सकते हैं। तथापि, मंत्रालय, प्रबन्ध कार्यालय और फैक्टरियां कार्यकर्ताओं के पथप्रदर्शन स्तर को ऊंचा उठाने के लिए अभी तक कोई भी पग नहीं उठा रही हैं, वे केवल उन्हें सख्ती से हुक्म देती हैं : उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। कार्यकर्ताओं पर भारी संख्या में उपकरणों और मजदूरों की जिम्मेदारी होती है, अतः उनके पथप्रदर्शन स्तर को उसी के अनुरूप ऊंचा उठाना होगा।

सेना में कम्पनी कमांडर को प्लाटून कमांडर की अपेक्षा, बटालियन कमांडर को कम्पनी कमांडर की अपेक्षा, और रेजीमेंटल या डिवीजन कमांडर को बटालियन कमांडर की अपेक्षा, कहीं अधिक कठिन और पेचीदा कर्तव्य निभाने होते हैं। यह साफ ही है कि कमांडर का काम जितना अधिक जटिल और कठिन होगा, उसके नेतृत्व को उतना ही अधिक प्रखर करना होगा।

पुरानी छापामार युद्ध प्रणाली और आधुनिक युद्ध प्रणाली के तौरतरीके और तकनीक में भिन्नता है और आधुनिक युद्ध प्रणाली में भी आणविक युद्ध प्रणाली और रासायनिक युद्ध-प्रणाली एक दूसरे से भिन्न हैं। अतः यह परिकल्पना करते हुए कि हो सकता है, शत्रु आणविक और रासायनिक आयुधों का प्रयोग करें; सेना द्वारा कमांडरों को इन आयुधों की तमाम जरूरी जानकारी दी जानी चाहिए। ऐसा करने पर ही वे आधुनिक युद्ध प्रणाली में अपने मिशन को उचित रूप से पूरा कर सकते हैं। यही कुछ उद्योग के बारे में भी कहा जा सकता है। उसके प्रमुख कार्यकर्ताओं के तकनीक और पथप्रदर्शन के स्तरों को निर्माण की तकनीकों के विकास के समान ही निरन्तर ऊंचा करना होगा।

चंद मजदूरों और दस्तकारी प्रविधि का प्रबन्ध करना अपेक्षाकृत सरल काम है, ठीक वैसे ही जैसे सेना में एक दस्ते का नेता अपने कर्तव्य को निभाता है।

और आधुनिक मशीनों और भारी संख्या में मजदूरों को ऐसे आदमी के नेतृत्व

में दे देना, जो किसी दस्तकारी उद्यम का निर्देशन करता रहा हो, ठीक वैसे ही है जैसे एक दस्ते के नेता को आधुनिक युद्ध में बटालियन के कमांडर की भूमिका सौंप दी जाए। यदि ऐसे आदमी को सैंकड़ों लोग और नयी मशीनें और उपकरण सौंपे जाने हों तो उसे बहुत से लोगों तथा नयी तकनीक के संचालन की योग्यता में पूरी तरह शिक्षित किया जाना चाहिए। दूसरे शब्दों में, उसे सिखाना होगा कि उत्पादक लोगों का पथप्रदर्शन कैसे किया जाना चाहिए और आधुनिक मशीनों और उपकरणों का कैसे ख्याल रखा जाना चाहिए।

जरा सोचिए कि यदि हम प्रमुख कार्यकर्ताओं का विकास नहीं करते और उन्हें वैसे ही छोड़ देते हैं जैसे कि वे अब हैं, तो क्या होगा? हम न तो तेजी से विकसित हो रहे अपने उद्योग का समुचित ढंग से प्रबन्ध कर पाएंगे और न ही समाजवादी निर्माण को कामयाबी से पूरा कर सकेंगे। इस समय चेन कन्वेयर्स महत्वपूर्ण उपकरण हैं, लेकिन भविष्य में भारी संख्या में और अधिक आधुनिक यन्त्र प्रयोग में आएंगे। अत: कार्यकर्ताओं के पथप्रदर्शन और तकनीकी स्तरों को ऊंचा करना हमारे लिए बड़े महत्व का काम हो जाता है।

अपने नेतृत्व और तकनीकी स्तरों को ऊंचा करने के लिए वे स्कूलों में अध्ययन कर सकते हैं या काम करते हुए तथा अन्य कई तरीकों से शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

आने वाले साल में सबसे पहले कार्यकर्ताओं को शिक्षित करने की एक प्रणाली स्थापित की जानी चाहिए, और कार्यकर्ताओं की नियमित शिक्षा की प्रणाली स्थापित करने के लिए प्रबन्ध ब्यूरो अध्यक्षों, मैनेजरों और खदान नेताओं के अलग-अलग अध्ययनमंडल गठित किये जाने चाहिए। मैनेजरों और चीफ इंजीनियरों को कार्यालय अध्यक्षों की अध्ययनमंडली में, खदान नेताओं को मैनेजरों की अध्ययनमंडली में तथा बटालियन और कम्पनी कमांडरों को खदान नेताओं की अध्ययनमंडली में शामिल करना उचित रहेगा। खदान नेताओं की अध्ययनमंडली को निश्चित रूप से महीने में कम से कम दो बार, मैनेजरों की अध्ययनमंडली को महीने में एक से अधिक बार, और प्रबन्ध ब्यूरो अध्यक्षों की अध्ययनमंडली को हर दो महीनों में एक से अधिक बार शिक्षा दी जानी चाहिए।

कक्षा पाठ्यपद्धति बिलकुल ठीक होगी लेकिन मौके पर पाठ देना बेहतर रहेगा। पाठ अग्रिम रूप से और पूरी तरह तैयार किये जाने चाहिए। मौके पर पाठ देने के लिए बेहतर होगा कि प्रबन्ध ब्यूरो अध्यक्ष या कोयला खदान मैनेजर एक बटालियन या कम्पनी को चुने, उसे पहले से खूब अच्छी तरह तैयार करे और फिर मौके पर बताए कि उसके सदस्य कैसे काम करें। उसे शुरू से आखिर तक तमाम मामलों को क्रमबद्ध और ठोस तरीके से स्पष्ट करना चाहिए—कि किस तरह काम

पर जाना चाहिए, किस क्रम से पालियों को छुट्टी दी जानी चाहिए, किस पाली के शुरू होने पर किस काम से और कैसे शुरूआत की जानी चाहिए, मशीनों के खराब होने पर उनकी मरम्मत कैसे की जानी चाहिए, उपकरणों की कैसे देखभाल की जानी चाहिए, इत्यादि।

इस ढंग से कार्य स्थल पर जो काम किया जाना है, उसे सिखाने के बाद ये पाठ दिये जाने चाहिए कि विभागों और गड्ढों का कैसे निर्देशन किया जाना चाहिए और तदनंतर कोयला खान के तमाम मामलों के निर्देशन की विधि के बारे में पाठ दिये जाने चाहिए।

कोयला खान के पथप्रदर्शन की परिधि में न केवल उत्पादन का पथप्रदर्शन ही आता है, बल्कि आम मामले और तकनीकी व्यवस्था जैसी अन्य विभिन्न गति-विधियां भी शामिल हैं। तकनीकी पथप्रदर्शन कैसे किया जाए, उपकरणों की व्यवस्था को कैसे संगठित किया जाए, आम मामलों में उप-मैनेजरों की भूमिका और दायित्व क्या है, मालों के संभरण की कैसे व्यवस्था की जाए और उसे आश्वस्त बनाया जाए, तथा कैसे उन्हें पहुंचाने की व्यवस्था की जाए, इन जैसे तमाम मामलों के बारे में विस्तारपूर्वक पाठ दिये जाने चाहिए।

यदि इस ढंग से योजनाबद्ध भाषण दिये जाएं तो हर कोई उन्हें समझ जाएगा, भले ही उसका स्तर कितना भी निम्न क्यों न हो। इस तरह जब तमाम कार्यकर्ता कोयला खान की पूरी स्थिति और अपने काम से पूर्णतः भिज्ञ हो जाएंगे, तो वे प्रमुख कार्यकर्ताओं के रूप में अपने दायित्वों को सफलतापूर्वक निभा सकेंगे।

व्यावहारिक भाषणों के साथ-साथ समय-समय पर सैद्धांतिक भाषणों का भी प्रबन्ध करना अच्छा रहेगा। इससे प्रमुख कार्यकर्ताओं को कोयला खान के तमाम मामलों की सैद्धांतिक और व्यावहारिक, दोनों प्रकार की पूरी जानकारी प्राप्त हो सकेगी। यदि केवल कुछ वर्षों तक ही इस ढंग से पाठों का आयोजन किया जाए, तो कार्यकर्ताओं के सैद्धांतिक और व्यावहारिक स्तरों का उल्लेखनीय उत्थान हो जायेगा और वे लोग भी, जिन्होंने कभी कोई कालेज शिक्षा न प्राप्त की हो, आधुनिक उपकरणों और उद्यमों की शानदार ढंग से व्यवस्था करने में समर्थ हो जाएंगे।

ऐसे पाठों को तत्काल शुरू करना तनिक मुश्किल हो सकता है। इसलिए अभी से पूरी तैयारियां करनी होंगी, ताकि अगले साल कोयला खानों के पुनर्गठन और कर्मचारियों के कार्य-निर्धारण के पूरा होते ही तत्काल कार्यक्रम को शुरू किया जा सके। सबसे अच्छा यह है कि प्रबन्ध ब्यूरो अध्यक्ष ही सबसे पहले एक पाठ-योजना तैयार करे और नमूने के रूप में पढ़ाए। तब उसके मातहत लोग उससे शिक्षा ग्रहण करने और प्रभावशाली ढंग से पढ़ाने में समर्थ हो सकेंगे।

जैसा कि सेना में होता है, जब शिक्षा का कार्यक्रम तैयार किया जाए तो उसमें ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए कि पहले सिखाये जाने वाले सबसे आरंभिक विषयों को सबसे पहले पढ़ाया जाए। सेना में कमांडरों की शिक्षा अलग-अलग सैनिकों की गतिविधियों से संबंधित पाठों से शुरू होती है। फिर वे जत्था कवायद शुरू करते हैं; और जब जत्था कवायद पूरी हो जाती है तो वे क्रमशः प्लाटून, कम्पनी, बटालियन और रेजीमेंटल कवायदों की ओर कदम बढ़ाते हैं।

कोयला खान में भी प्रमुख कार्यकर्ताओं का पाठ एक कोयला खनिक की गतिविबियों में प्रशिक्षण के साथ प्रारम्भ होना चाहिए। कोयला खान के सब प्रमुख कार्यकर्ताओं को इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि बरमे को कैसे पकड़ा और उपभोग में लाया जाता है। तथा कैसे उसे टिकाने के लिए टेक लगाये जाते हैं। जब तक आपको इन बातों की पूरी जानकारी न हो, आप किसी कोयला खान का प्रमुख कार्यकर्ता होने का दावा नहीं कर सकते। फिर भी काफी ऐसे लोग हैं, जिन्होंने दस वर्षों से अधिक समय से कोयला खान में प्रमुख कार्यकर्ताओं के रूप में काम करके भी स्वयं कभी भी बरमे का प्रयोग कर कोयला काटा नहीं है। वह व्यक्ति कैसे किसी कोयला खान का प्रमुख कार्यकर्ता कहला सकता है, जिसे यह जानकारी नहीं है कि बरमे का काम क्या है और जिसने कभी भी स्वतः कोयला न काटा हो? कोयला खान में कार्यकर्ता बनने के लिए आपको सरलतम से लेकर जटिलतम कामों तक सब कुछ सीखना चाहिए। ऐसा करके ही आप हर काम में ठोस पथप्रदर्शन कर सकते हैं। आनुज कोयला खान को कार्यकर्ता के शिक्षण की प्रणाली की स्थापना में नेतृत्व करना होगा।

२ : युवा कार्यकर्ता की पदोन्नति और पुराने कार्यकर्ता की शिक्षा के बारे में

अगला महत्वपूर्ण सवाल युवा कार्यकर्ताओं को साहसपूर्वक पदोन्नति देने का है।

कार्यकर्ता प्रशिक्षण में एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त यह है कि कार्यकर्ताओं को काम पर शिक्षित करते हुए और उनकी योग्यता में निरन्तर सुधार करते हुए नये युवा कार्यकर्ताओं को साहसपूर्वक पदोन्नति दी जाए। लेकिन इस समय आप केवल अनुभव को तरक्की देने के सिद्धान्त से जकड़े होने के कारण युवा कार्यकर्ताओं को आगे नहीं बढ़ाते और न ही पुरानों को योजनाबद्ध ढंग से शिक्षित करते हैं।

इस समय हमारे देश को तमाम क्षेत्रों में भारी संख्या में कार्यकर्ता दरकार

है। राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के विकास के साथ कार्यकर्ताओं की मांग और भी बढ़ेगी। अतः यह अति महत्वपूर्ण बात है कि हमारे कार्यकर्ताओं की पाँतों में लगातार युवा लोगों को लगाया जाता रहे।

मुझे बताया गया है कि आनजु कोयला खान में इस समय १५० से अधिक युवा तकनीशियन हैं। यदि आप उचित ढंग से उन्हें काम सौंपें और उन्हें भली-भांति संगठित तथा गोलबंद करें तो आप अपने कर्तव्यों को दक्षता के साथ पूरा करने में पूर्णतया समर्थ होंगे। लेकिन यह बहाना बना कर कि वे युवा हैं, उन्हें तकनीकी कामों पर या उपकरणों की व्यवस्था पर नहीं लगाया जाता। यह बिलकुल गलत बात है।

यदि स्कूल से स्नातक बनने के बाद युवा लोग किसी कोयला खान में एक या दो वर्ष तक काम कर चुके हैं तो वे अच्छे कार्यकर्ता बनने की योग्यता पहले ही प्राप्त कर चुके हैं। आगे से आपको उन युवा कार्यकर्ताओं को, जो उत्पादन स्थलों पर प्रशिक्षित किये जा चुके हैं, बेधड़क होकर पदोन्नति देनी होगी।

जब मैं यह कहता हूं कि आपको युवा कार्यकर्ता का दर्जा ऊंचा करना चाहिए तो मेरा यह कतई मतलब नहीं होता कि तमाम पुराने कार्यकर्ताओं को हटा दिया जाना चाहिए। युवा कार्यकर्ताओं को ऊंचा दर्जा देते हुए पुराने कार्यकर्ताओं का पूरा ख्याल रखना होगा ताकि वे चाहें तो उच्चतर स्तर पर अध्ययन और काम कर सकें।

अतीत में जापानी साम्राज्यवादी शासन के दिनों में मजदूर चाहते हुए भी अध्ययन नहीं कर सकते थे। लेकिन अब उनके लिए ऐसे हालात विद्यमान हैं कि जितना भी चाहें पढ़ सकते हैं। जो कार्यकर्ता पहले नहीं पढ़ सके थे, उनके लिए बेहतर यह है कि वे युवा कार्यकर्ताओं के लिए काम छोड़कर अब अध्ययन करें। पुराने कार्यकर्ताओं को पढ़ाई के लिए किसी पार्टी स्कूल या आर्थिक कार्यकर्ता स्कूल में भेजा जाना चाहिए।

जिन लोगों ने लम्बे समय तक खान नेताओं या विभाग नेताओं के रूप में काम किया है, वे सब अच्छे कामरेड हैं। वे अच्छे सामाजिक मूल के हैं और उन्होंने कोयला खानों में बहुत काम किया है। उन्होंने अपनी जान को जोखिम में डाल कर महान मातृभूमि मुक्ति युद्ध के दौरान शत्रु के हमलों से अपने देश की रक्षा की है और फिर युद्धोत्तर काल में पार्टी के आह्वान का सक्रिय स्वागत करते हुए समाजवादी निर्माण के लिए संघर्ष में अपनी तमाम शक्तियां लगा दी हैं। ये वे कामरेड हैं, जो पार्टी की स्थापना के प्रारम्भिक दिनों से ही उसको दृढ़ बनाने के लिए लड़ाई लड़ते आये हैं, जो हमेशा उसके वफादार रहे हैं, और जो अपने प्राणों की बाजी लगा कर भी हमारी पार्टी की रक्षा करते रहने को सदा कृतसंकल्प

हैं। उनके पास विपुल श्रम अनुभव और प्रबल पार्टी भावना है, और उनमें केवल तकनीकी ज्ञान की कमी है। यदि उन्हें शिक्षा के लिए अवसर प्रदान किया जाएं, तो वे सब शानदार कार्यकर्ता बन सकते हैं। लेकिन ये सीधी कोई तरक्की नहीं कर रहे हैं, क्योंकि उन्हें बिना शिक्षा के उनके मौजूदा पदों पर छोड़ रखा गया है।

कहा जाता है कि आपमें से कुछेक ने खान नेताओं के रूप में दस वर्षों से भी ज्यादा सेवा की है। विदेशों में एक कार्यकर्ता को बीसियों साल तक मैनेजर के पद पर बनाये रखने की एक मिसाल है। मगर हमारे देश के आज के हालात कार्यकर्ताओं को बहुत लम्बे समय उन्हीं पदों पर बनाये रखने की इजाजत नहीं देते। हमारा एक तेजी से विकसित हो रहा देश है और कार्यकर्ताओं की मांग तब तक पूरी नहीं की जा सकती, जब तक कि हम उन्हें निरन्तर शिक्षित और दृढ़तापूर्वक पदोन्नत नहीं करते।

अब कुछ साथी ऐसे हैं जो इसलिए अध्ययन नहीं करते कि वे बहुत बूढ़े हैं, लेकिन वे गलत हैं। मुझे बताया गया है कि खान गड्ढा नं० ८ का नेता इस समय ४९ वर्ष का है। यदि हम ९० वर्ष पर दीर्घायु समारोह मनाना चाहते हों तो अभी उसके पास क्रान्ति के लिए काम करने को ४० साल और पड़े हैं। और यदि कोई भी व्यक्ति अनभिज्ञ है, तो वह अच्छी तरह क्रान्तिकारी काम नहीं कर सकता। क्रान्तिकारी काम जारी रखने के लिए उसे और ज्यादा सीखना होगा। कार्यकर्ता यदि कुछ बूढ़े हों, तो भी उनके लिए अच्छा रहेगा कि वे स्कूल जाएं और एक या दो साल तक अध्ययन करें। स्कूली पढ़ाई पूरी करने पर वे चाहें तो कोयला खानों पर काम जारी रख सकते हैं, या अन्य क्षेत्रों में पार्टी काम या आर्थिक काम कर सकते हैं।

कार्यकर्ताओं की योग्यता में सुधार लाने के लिए काम करते हुए अध्ययन के लिए पाठ्यक्रम को समुचित ढंग से संयोजित करना अति महत्वपूर्ण है। काम करते हुए अध्ययन करने का एक फायदा यह है कि बगैर उत्पादन से हटे सिद्धान्त को व्यावहारिक ज्ञान के साथ गहराई से संयुक्त किया जा सकता है और उनके तकनीकी स्तर को ऊंचा किया जा सकता है। काम करने और पढ़ने की एक सम्पूर्ण प्रणाली की स्थापना पर भी विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

कार्यकर्ता कोई आकाश से नहीं गिरते, हमें उनको विकसित करना होगा। यदि हम उन्हें शिक्षित करने के लिए गम्भीर प्रयास करें तो हम जितने चाहें उतने ही अच्छे कार्यकर्ता विकसित कर सकते हैं।

मुक्ति के तुरन्त बाद हमारे पास कार्यकर्ताओं की बहुत कमी थी। लेकिन हमने भारी संख्या में युवा कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करते हुए उन क्रान्तिकारी

कार्यकर्ताओं को भी शिक्षित किया जिन्होंने जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष में भाग लिया था। परिणामस्वरूप थोड़े से समय में ही हमारे कार्यकर्ताओं की पांतें दृढ़तापूर्वक विकसित कर ली गयीं। इस तरह हम अमरीकी साम्राज्यवादी सशस्त्र हमले के खिलाफ मातृभूमि मुक्ति युद्ध को जीतने में समर्थ रहे और अब समाजवादी निर्माण में महान सफलताएं प्राप्त करने में भी समर्थ रहे हैं।

भविष्य में कोयला खानों में पार्टी समितियों को कार्यकर्ताओं के शिक्षण और प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देना चाहिए, ताकि युवा लोग कार्यकर्ता की योग्यता प्राप्त कर सकें और पुराने कार्यकर्ता अध्ययन कर सकें।

३ : उपकरणों के समुचित प्रबंध के बारे में

आपके काम में एक और महत्वपूर्ण बात है उपकरणों या साजसामान की उचित देखभाल।

उपकरण उत्पादन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन है। इसकी तुलना सेना के हथियारों से की जा सकती है। जिस प्रकार सेना बिना हथियारों के शत्रु से लड़ नहीं सकती, उसी प्रकार कोई भी फैक्टरी बिना उपकरणों के उत्पादन नहीं कर सकती।

अतः उपकरणों का हमेशा उचित रखरखाव और देखभाल की जानी चाहिए। उपकरणों की उचित देखभाल न होने पर न तो उसकी उपयोगिता की दर बढ़ायी जा सकती और न ही उत्पादन को सामान्य बनाया जा सकता है।

जब हम जन सेना की किसी टुकड़ी का दौरा करते हैं, तो हम उसके कार्यकर्ताओं से मिलते हैं और फिर सबसे पहले यह देखते हैं कि हथियारों को उचित रूप से रखा जाता है या नहीं और उनकी उचित देखभाल की जाती है या नहीं। आपको यह देख कर कि हथियारों की कैसी देखभाल की जाती है, यह मालूम हो जाएगा कि उस टुकड़ी की युद्ध-सन्नद्धता कैसी है। इसी तरह आपको यह देखकर कि किसी फैक्टरी में उपकरणों की देखभाल कैसे की जाती है, यह मालूम हो जाएगा कि वह ठीक ढंग से काम करती है या नहीं। और आज हमारे देश में उद्योग के उपकरणों का घटिया प्रबंध एक आम परिपाटी-सी बन गया है।

उपकरणों के उचित प्रबंध के लिए यह जरूरी है कि उनके नियन्त्रण के लिए एक स्पष्ट नियमावली तैयार की जाए और एक नियमित निरीक्षण और देखभाल की सख्त प्रणाली स्थापित की जाए। अपने काम में प्रणाली और व्यवस्था के बिना उपकरणों की उचित देखभाल और दुर्घटनाओं की रोकथाम असंभव है। परन्तु

इस समय आपके पास न तो उपकरणों के प्रबन्ध का कोई निश्चित विनिमय है, न उपकरणों की पड़ताल और देखभाल की कोई सख्त प्रणाली है और न ही पर्याप्त संख्या में प्रबन्धकर्मी हैं।

चूंकि लोगों को उपकरणों के प्रबन्ध के बारे में योजनाबद्ध ढंग से जानकारी उपलब्ध नहीं की गयी, इसलिए उन्हें अपनी ही खान के उपकरणों के बारे में भी पूरा ज्ञान नहीं है और वे उन्हें उचित ढंग से व्यवस्थित नहीं रख पा रहे हैं।

उपकरणों के प्रबन्ध का संचालन एक अवामी आन्दोलन के रूप में किया जाना चाहिए। इस उद्देश्य से खानों में काम करने वाले तमाम लोगों को वहां के उपकरणों की पूरी जानकारी होनी चाहिए। उन्हें मालूम होना चाहिए कि कैसे उनसे काम लिया जाता है और कैसे उनके पुर्जों को अलग-अलग कर उनकी मरम्मत की जाती है। यदि तमाम साथियों को अपने उपकरणों की पूरी जानकारी हो और वे उसकी देखभाल में सक्रिय योगदान करें, तो काम का सुचारु रूप से आगे बढ़ना अनिवार्य है। मामला यह है कि दुर्घटनाएं अक्सर होती हैं और उपकरणों का संचालन उचित ढंग से नहीं होता, क्योंकि उपकरणों की देखभाल की न कोई प्रणाली है न व्यवस्था, और इस काम को एक जन-आंदोलन के आधार पर नहीं किया जा रहा है।

उपकरणों की समय पर मरम्मत और रखरखाव जरूरी है। उपकरणों के उचित प्रबंध के लिए रखरखाव कर्मचारियों का होना जरूरी है।

जब देहात में ट्रैक्टर टोलियां गठित की गयीं तो हमने उनके साथ रखरखाव कर्मचारियों की भी नियुक्ति की। वास्तव में तमाम आपरेटरों को मालूम होना चाहिए कि उनकी मशीनों की कैसे रखरखाव की जानी चाहिए। लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में चूंकि तमाम आपरेटर अभी इस स्तर पर नहीं पहुँच पाये हैं, इसलिए रखरखाव कर्मचारियों का होना बिल्कुल जरूरी है। इससे व्यवस्था आपरेटरों को आराम करने का समय मिल जाता है और उपकरणों का समय से रखरखाव हो जाता है।

एक ऐसी प्रणाली स्थापित करना आवश्यक है जिसके अन्तर्गत रखरखाव कर्मचारी मशीनों की पड़ताल उस समय करें, जबकि अपने काम के बाद आपरेटर विश्राम कर रहे हों। इससे समय पर दोष का पता चलाना और दुर्घटनाएं रोकना संभव हो सकेगा। यही बात रेलवे के बारे में भी कही जा सकती है। जब कोई गाड़ी स्टेशन में दाखिल होती है तो रखरखाव कर्मचारी हथौड़ों से थपथपा कर पड़ताल करते हैं कि उसमें कोई खराबी तो नहीं है। पुरानी बन्दूक सही निशाना नहीं लगा सकती, क्योंकि उसके खांचे तथा सामने और पीछे की देखने की मोरियों में खराबी आ चुकी है। इसलिए सेना में भी तकनीकी कर्मचारी हथियारों की

नियमित रूप से पड़ताल और मरम्मत करते हैं।

स्पष्ट विनियमों के अनुसार अपेक्षाकृत तकनीकी योग्यता प्राप्त लोगों द्वारा ही पड़ताल की जानी चाहिए।

यदि निरीक्षण और रखरखाव प्रणालियों की दृढ़ता से स्थापना की जाए, तीन मास से अधिक समय तक फालतू पुर्जों की सूची बनायी रखी जाए, और उपकरणों का उचित रखरखाव किया जाए तो उपकरणों से ज्यादा समय तक काम लिया जा सकेगा और उत्पादन को सामान्य बनाया जा सकेगा। अतः आपको अपने तकनीकी ज्ञान का स्तर मजबूती से ऊंचा करना चाहिए और उपकरणों के प्रबंध में और सुधार करना चाहिए।

४ : नियोजन में सुधार के बारे में

महत्व की दृष्टि से इसके बाद नियोजन में सुधार लाने और तकनीकी तैयारी को प्राथमिकता देने का स्थान है। कोयला उद्योग में सुरंगें बनाने के काम को अन्य कामों के आगे-आगे करने एक नियम बन गया है।

प्रकृति और समाज के विकास के अपने-अपने नियम हैं। कोयला उद्योग के भी अपने नियम हैं। हम कह सकते हैं कि खनन उद्योग के विकास का यह एक आम नियम है कि अन्य कामों से पहले सुरंगें खोदी जाती हैं। सुरंग की खुदाई को प्राथमिकता दिये बगैर कोयला और अन्य खानों में उत्पादन तेजी से बढ़ाना असंभव है।

कोयला खान में सुरंग की खुदाई की गति को कटाई से आगे रखने का अर्थ है कटाई के लिए दीवारों को तैयार रखना। यदि वे उचित रूप से तैयार न हों तो भारी परिमाण में कोयले का उत्पादन करना असंभव है। यह कहा जा सकता है कि कोयला उत्पादन मुख्यतः इस बात पर निर्भर करता है कि कटाई के लिए दीवारें भलीभांति तैयार की गयी हैं या नहीं।

सुरंगों की खुदाई के काम को आगे-आगे बनाये रखने के लिए कोयला खान में नियोजन और डिजाइन-निर्माण के कामों को कुशलता के साथ किया जाना चाहिए। लेकिन हालत ऐसी नहीं है और कोयला खान में प्रणाली तथा अनुशासन का अभाव है, अतः उसमें बारबार सुरंग खोदी जाती है और लम्बी दीवारें गलत ढंग से तैयार की जाती हैं, या उन लम्बी दीवारों को तोड़ दिया जाता है, जिन्हें तोड़ा नहीं जाना चाहिए और इस तरह उत्पादन के मार्ग में गम्भीर रुकावटें खड़ी हो जाती हैं।

कोयला खानों में सुरंग की खुदाई और कटाई की योजनाओं को वही महत्व प्राप्त है, जोकि सेना में युद्ध की योजनाओं को प्राप्त होता है। अतः बगैर सुरंग खुदाई और कटाई की सही योजनाओं के कोयला खान अच्छी सफलता प्राप्त नहीं कर सकती।

योजना वास्तविक स्थितियों के अनुरूप सही ढंग से तैयार की जानी चाहिए। कोयला खान में कोई डिजाइन या योजना व्यवहार के आधार पर एक या दो व्यक्तियों द्वारा तैयार नहीं कर ली जानी चाहिए। उन्हें वास्तविक कार्य-स्थलों का निरीक्षण करने और तकनीकी दृष्टिकोण से तमाम पहलुओं की छानबीन करने के बाद कोयला काटने वाले इंजीनियरों, सर्वेक्षण इंजीनियरों, मैकैनिकल इंजीनियरों और अन्य तमाम तकनीकी कर्मचारियों के सुसमन्वित प्रयासों द्वारा विस्तारपूर्वक तैयार किया जाना चाहिए। इस योजना पर एक ऊंचे निकाय से मंजूरी ली जानी जरूरी है, जिसे गम्भीरतापूर्वक पड़ताल करनी चाहिए कि उसे उचित ढंग से तैयार किया गया है या नहीं। इस प्रकार योजना को यथार्थवादी, वैज्ञानिक और गतिशील होना चाहिए। नियोजन में सुधार के लिए तकनीकी विभागों को आवश्यक साजसामान और कर्मचारी उपलब्ध किए जाने चाहिए और तकनीकी शक्तियों का बिखराव न कर उन्हें इन विभागों में केन्द्रित किया जाना चाहिए।

५ : खदान में काम को पुख्ता करने के बारे में

आपकी गतिविधियों में संगठनात्मक कार्य और पथप्रदर्शन दोनों ही दृष्टि से अनेक खामियां हैं।

एक तो खदानों के गड्ढों को पुख्ता करने की दिशा में प्रयास नहीं किये गये हैं। यह एक गम्भीर गलती है। कोयला खान में गड्ढा मूल उत्पादन इकाई होता है जोकि बहुत बड़ा होता है। मुझे बताया गया है कि अगले वर्ष आनजु कोयला खान के गड्ढा नं० ८ में चार लाख टन कोयला उत्पादित होगा। पैमाने में यह उतना ही बड़ा है, जितनी कोई कोयला खान होती है। उदाहरणतः उत्पादन पैमाने में सिनछांग संयुक्त कोयला खान का दस लाख टन क्षमता वाला गड्ढा उतना ही बड़ा है, जितनी कि आनजु कोयला खान है। अतः कोयला खान में गड्ढों को मजबूत बनाना बड़े महत्व का काम है।

यह सही है कि कोयला खान के प्रबन्ध ढांचे में कोई त्रुटि है। फिर भी यदि कोयला खान ने गड्ढों को मजबूत बनाने का प्रयास किया होता, तो उनके काम में कुछ-न-कुछ सुधार हो सकता था। लेकिन आपने बगैर पर्याप्त सामग्री उपलब्ध

किये गड्ढों में कम तादाद में लोगों को नियुक्त किया है और उन पर काम थोप दिये हैं। अतः गड्ढा नेता कैसे उचित ढंग से अपना काम कर सकते हैं ?

एक गड्ढा नेता के जिम्मे यह दायित्व होता है कि वह अपने गड्ढे में उपकरणों की मुनासिव तौर पर देखभाल करे और विभाग नेताओं तथा कार्यटोली नेताओं के साथ मिल कर कुशलतापूर्वक अपना काम करे। दूसरे शब्दों में उसका मुख्य दायित्व यह है कि वह विभाग नेताओं और कार्यटोली नेताओं के तकनीकी और पथप्रदर्शन स्तरों को ऊंचा करने के लिए उन्हें सक्रिय मदद दे और इसके साथ ही उपकरणों के प्रवन्ध को आश्वस्त कर, जिसमें समय पर पड़ताल और मरम्मत भी शामिल हैं, उनकी उपयोगिता को वढ़ाए।

परन्तु इस समय अपने मूल दायित्व पर ध्यान देने की बजाय गड्ढा नेता केवल सामग्री या उपभोक्ता मालों के संभरण का ही ख्याल रखते हैं। इस तरह वे विभाग नेताओं और कार्यटोली नेताओं का तकनीकी पथप्रदर्शन करने या उनके साथ मिलकर कार्य का संचालन करने में असमर्थ रहते हैं। वे न केवल इन विभाग नेताओं और कार्यटोली नेताओं को उनके अध्ययन में मदद नहीं देते, बल्कि उन्हें भलीभांति जान भी नहीं पाते। कुछ गड्ढा नेताओं को तो यह भी पता नहीं है कि कार्यटोली नेताओं की योग्यता क्या है और उनके गड्ढों में वस्तुतः कौन-कौन-से कार्यटोली नेता हैं। इस ढंग से वे अपने गड्ढों का उचित रूप से संचालन नहीं कर सकते।

कहा जाता हैं कि कार्यकर्ताओं की कमी की वजह से गड्ढों में काम सुचारु रूप से नहीं बढ़ रहा है। लेकिन वास्तव में इसका यही एक कारण नहीं है। एक गड्ढा नेता के पास सहायक गड्ढा नेताओं जैसे कई लोग काम में हाथ बटाने को होते हैं। लेकिन उनकी जिम्मेदारियों का साफतौर पर निर्धारण नहीं किया गया है और उनकी शक्तियां बिखरी हुई हैं। चूंकि गड्ढे में आम कर्मचारी नहीं होते इसलिए कार्य का एकीकृत ढंग से निर्देशन नहीं होता और गड्ढे में तकनीकी शक्तियां गड्ढा नेता की कारगर मदद करने में असमर्थ रहती हैं।

गड्ढे में भी एक मुख्य इंजीनियर और उसके अधीन आम कर्मीदल होना चाहिए। कर्मीदल के विद्यमान होने पर गड्ढे का समन्वित पथप्रदर्शन किया जा सकता है और गड्ढा नेता को उसके काम में ठोस मदद दी जा सकती है। तभी गड्ढा नेता उत्पादन का सीधे पथप्रदर्शन कर सकेगा, कार्यटोली नेताओं और विभाग नेताओं के साथ मिलकर कार्य को सुदृढ़ कर सकेगा, उपकरणों की उचित देखभाल कर सकेगा और कोयला कटाई की संभावनाओं का अध्ययन कर उपयुक्त पग उठा सकेगा।

गड्ढे को मजबूत बनाते हुए विभाग और कार्य-टोलियों के कमान कर्मियों

की भूमिका को बढ़ाना महत्वपूर्ण है। कार्य टोली नेता को तकनीकी पथप्रदर्शन प्रदान करना चाहिए। किन्तु इस समय कर्मटोली को तकनीकी पथप्रदर्शन देने के लिए निर्देश ऊपर से आते हैं और कार्यटोली नेता तकनीकी पथप्रदर्शन की कोई भी जिम्मेदारी अपने कंधों पर लिये बिना केवल कोयला काटता है।

कार्यटोली नेताओं को, भले ही वे कभी-कभी शारीरिक श्रम से अलग रहें, कुल मिलाकर उत्पादन और प्रविधि का प्रत्यक्ष नेतृत्व और निरीक्षण करना चाहिए। लेकिन उन्हें शारीरिक श्रम से पूर्णतया अलग-थलग नहीं होना चाहिए, उन्हें कर्तव्य के नाते हर महीने कम से कम कुछ दिनों के लिए शारीरिक श्रम में भाग लेना चाहिए। इस तरह वे तकनीकी ज्ञान को नहीं भूलेंगे और काम के दौरान उठने वाली जटिल समस्याओं को समझ कर उन्हें समय पर सुलझा सकेंगे। कृषि सहकारों की तरह कोयला खानों में कार्यटोली नेताओं के लिए काम के अनिवार्य दिन निश्चित कर देना बेहतर होगा।

विभाग नेता को अपने विभाग में परिवहन के साधनों का व्यक्तिगत रूप से नियन्त्रण और निर्देशन करना चाहिए। कोयला काटने में परिवहन साधनों की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जैसा कि आप जानते हैं, कोयला नहीं काटा जा सकता, यदि वाहक (कनवेयर्स) काम करना बंद कर दें। कोयला ढोने के ऐसे महत्वपूर्ण साधन को नियन्त्रित किये बिना विभाग नेता कोयला खदान का कैसे निर्देशन कर सकता है? परन्तु इस समय विभागों में वाहन यंत्र सहायक गड्ढा नेता के अधीन हैं। विभागों में वाहक साधनों, उनके चालक और रखरखाव कर्मियों सभी को विभाग नेता के सीधे नियन्त्रण में लाया जाना चाहिए।

६ : कड़े अनुशासन और व्यवस्था की पूर्ण स्थापना के बारे में

इसके बाद कोयला खान में अनुशासन को और कड़ा किया जाना चाहिए। जहां कहीं कोई व्यवस्था, पद्धति और अनुशासन नहीं होंगे, वहां हमेशा दुर्घटना होती रहेगी और इसके साथ ही उत्पादन कम होगा। न केवल दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए ही, बल्कि सौंपे गये उत्पादन-दायित्वों को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए भी कोयला खान में कड़ा अनुशासन लागू करना अनिवार्य है।

गड्ढों के भीतर मिट्टी को खोदना और चट्टान में सुरंग बनाना प्रकृति के साथ एक बड़े ही कठिन संघर्ष का काम है। जितना भी कठिन संघर्ष हो, उतना ही कड़ा अनुशासन होगा। अतः, कोयला खान में प्रमुख कर्मचारियों से लेकर मजदूरों तक तमाम लोगों को कड़े संगठनात्मक अनुशासन के अन्तर्गत एक व्यवथिस्त ढंग

से काम करना चाहिए और निर्देशन तथा आज्ञा पालन की कठोर प्रणाली लागू होना चाहिए।

मैं समझता हूं कि कोयला खान में कड़े अनुशासन की स्थापना के लिए सेना की तरह आन्तरिक नियमावली तैयार करना बेहतर होगा। सेना की आन्तरिक नियमावली की परिधि में सैनिकों के जीवन से लेकर उनका प्रत्येक कार्य आता है। गड्ढों में तमाम गतिविधियों का संचालन आन्तरिक नियमों के अन्तर्गत सेना की पद्धति से किया जाना चाहिए।

सेना में पार्टी बैठकों को छोड़ कर शेष तमाम विधियों का आदेशानुसार संचालन होता है। सेना में जब कोई कमांडर आज्ञा दे 'आगे बढ़ो!' तो उसके जवानों को बिना झिझक आगे बढ़ना होगा, और जब वह आज्ञा दे—'बैठ जाओ!' तो कुछ भी हो, उन्हें बैठ जाना होगा। कमांडर की आज्ञाओं को अनिवार्य रूप से पालन करना ही सैन्य कार्य विधि है।

गड्ढे में सेना के ढंग से ही बटालियनों, कम्पनियों और प्लाटूनों को संगठित किया जाना चाहिए। जब आप गड्ढे में हैं तो आपको बिना शर्त अपने कमाण्डरों की आज्ञाओं का पालन करना होगा। ढिलाई तो लेश मात्र भी नहीं दिखाई जानी चाहिए। पिट में तमाम लोगों को कमांडरों के आदेशों पर नियमानुसार काम करना हागा।

परन्तु गड्ढे के बाहर लोकतन्त्र को पूर्णतया पनपने दिया जाना चाहिए यद्यपि उसके अन्दर कमांडरों के आदेशों का बिना किसी आपत्ति के पालन किया जाना चाहिये। बैठकों में भाग लेने वालों को अपने विचार सक्रिय रूप से प्रकट करने और कमांडरों की त्रुटियों के लिए उनकी आलोचना करने की अनुमति होनी चाहिए।

इस आधार पर कि तमाम गतिविधियां सैनिक ढंग से संचालित की जानी हैं, कार्यकर्ताओं को नौकरशाही तौर-तरीके कदापि नहीं अपनाने चाहिये। जब मैं कहता हूं कि आप को कड़ा अनुशासन लागू करना चाहिए तो मेरा यह आशय नहीं होता कि आप अपने अधिकारों का दुरुपयोग करने या नौकरशाही लागू करने को स्वतन्त्र हैं। नौकरशाह नेतृत्व वाले कर्मचारी बनने के पात्र नहीं हैं।

गड्ढे में जब इस तरह सैनिक ढंग से गतिविधियों का संचालन होगा, तो यन्त्रों और उपकरणों के निरीक्षण तथा मरम्मत, कटाई और वाहन सुविधा सहित तमाम कामों में एक प्रणाली और व्यवस्था स्थापित होगी और तभी दुर्घटनाओं की रोकथाम होगी और इसके साथ ही उत्पादन बढ़ेगा।

२ : पार्टी समिति के कार्य के बारे में

चूंकि कोयला खान में पार्टी का संगठनात्मक ढांचा समुचित ढंग से स्थापित नहीं किया गया है और न ही वहां पार्टी कार्य अच्छी तरह चल रहा है, इसलिए पहले पार्टी के संगठनात्मक ढांचे को पुनर्गठित किया जाना चाहिए। इस समस्या के बारे में आपके लिए बेहतर होगा कि मैंने ताएआन विद्युत मशीनरी संयंत्र में जो कुछ कहा था, उस पर ध्यान दें। यहां मैं पार्टी कार्य की कुछ समस्याओं के बारे में संक्षेप में कहना चाहूंगा।

१ : मजदूरों और तकनीकी कर्मचारियों के साथ काम के सुदृढ़ीकरण के बारे में

प्रथमत: पार्टी संगठनों को युवा मजदूरों और तकनीकी कर्मचारियों के साथ काम संचालित करना चाहिए। इस समय कोयला खान में युवा मजदूर और तकनीकी कर्मचारी भारी तादाद में है। उनमें अधिकांश ने, जो विशिष्ट स्कूलों से स्नातक शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं, तीन वर्षों से भी अधिक समय तक कोयला खान में अनुकरणीय काम किया है और वे गम्भीरतापूर्वक हमारी पार्टी में शामिल होना चाहते हैं। पार्टी संगठनों को उनमें से अच्छे साथियों को पार्टी में दाखिल करना चाहिए।

ऐसा लगता है कि पार्टी संगठन उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि और मूल के कारणवश उनको पार्टी में दाखिल करने में संकोचनशील हैं, लेकिन ऐसा संकोच बिल्कुल नहीं होना चाहिए। हमें पहले उनके वास्तविक जीवन और विचार-धारात्मक तैयारी को दृष्टिगत रखना चाहिए। जो साथी दो या तीन साल तक कोयला खान में कठोर परिश्रम से काम कर चुके हैं, उन्हें इस बात का ख्याल किये बिना कि भूतकाल में उनके माता-पिता क्या थे, मजदूर वर्ग से सम्बद्ध माना जाना चाहिए।

हमने छापामार संघर्ष के दिनों में इस बारे में खूब अध्ययन किया था कि पार्टी का निर्माण कैसे किया जाना चाहिये। उस समय हमने ऐसे हर व्यक्ति को मजदूर स्तर वाले व्यक्ति की भांति ही समझा, जिसे तीन वर्ष से अधिक काम का अनुभव था। भले ही वह छात्र मूल का रहा हो, या उसके माता-पिता अमीर रहे हों।

इस समय भी उन साथियों को, जो तीन वर्षों से अधिक समय से अपने

श्रमजीवी जीवन में वफादार बने रहे हों और पार्टी नीतियों को सफल बनाने में अथक प्रयास करते हों, निर्भीक होकर पार्टी पांतों में शामिल करना ठीक होगा, भले ही उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि थोड़ी-बहुत संदिग्ध ही क्यों न हो।

इसके बाद यूनिट को सक्रिय करते समय पार्टी समितियों को कोयला कटाई करने वाली प्लाटूनों और कम्पनियों के लिए बराबर-बराबर पार्टी शक्तियों का आवंटन करना चाहिए। ऐसा करके ही हमारी पार्टी अवाम में और ज्यादा गहराई से घुस सकती है, उन्हें पार्टी विचारधारा से लैस कर सकती है, अपने इर्द-गिर्द अधिक मजबूती से एकजुट कर सकती है और अपनी नीति के क्रियान्वयन में उन्हें सक्रिय रूप से गोलबंद कर सकती है।

पार्टी काम में सर्वाधिक महत्व कार्यकर्ताओं के साथ काम को दिया जाता है। मैंने ताएआन विद्युत यन्त्र कारखाने में जो सिद्धांत पेश किया था, उसी के अनुसार पार्टी समिति के ढांचे को पुनर्गठित किया जाना चाहिए, उसे पार्टी कार्यकर्ताओं में वृद्धि करके दृढ़तापूर्वक निर्मित किया जाना चाहिए और कार्यकर्ताओं के साथ किये जाने वाले काम को सही रास्ते पर लाया जाना चाहिए। इस तरह जब तमाम कार्यकर्ता अन्य पार्टी सदस्यों को काम के लिए प्रेरित करने हेतु गतिशीलता से काम करें और ये अन्य पार्टी सदस्य अवाम का नेतृत्व करने में हाथ बंटाने लगें, तो सब कुछ ठीक ढंग से चलेगा। यदि आनजु कोयला खान के तमाम कार्यकर्ता, पार्टी सदस्य और मजदूर पार्टी केन्द्रीय समिति के गिर्द दृढ़ता से एकजुट हो जायें, पार्टी नीति को कार्यरूप देने के लिए हर स्थिति में संघर्ष करें, तो ऐसा कोई काम नहीं होगा, जिसे वे पूरा न कर सकें।

इस समय कोयला खनिकों के बीच से हमारे पास बहुत थोड़े कार्यकर्ता हैं। प्रान्तीय पार्टी समितियों और अन्य पार्टी निकायों के पास ऐसे बहुत ही थोड़े कार्यकर्ता हैं, जिन्होंने कोयला खानों में काम किया हो। यह कोयला खानों में बहुत कम पार्टी कार्य किये जाने का परिणाम है, और इससे स्पष्ट होता है कि पार्टी अधिकारी केवल खेतिहर गांवों के बारे में व्यग्रता दिखाते रहे हैं परन्तु मजदूर वर्ग की एक बड़ी किलेबंदी—कोयला खानों—की ओर ज्यादा ध्यान नहीं देते रहे हैं।

वास्तव में कोयला खानों में ऐसे बहुत से अच्छे लोग हैं, जो कार्यकर्ता बनने की योग्यता रखते हैं। कोयला खानों को हमारी पार्टी के कार्यकर्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत कहा जा सकता है। लेकिन हमारे पार्टी अधिकारी कोयला खानों में कार्यकर्ताओं के साथ अपना काम उचित ढंग से नहीं करते और वे ऐसे अच्छे लोगों का चयन नहीं करते जो तरक्की देकर कार्यकर्ता बनाये जा सकते हैं, और जब कभी करते भी हैं तो उनमें योजनाबद्ध ढंग से शिक्षण का कार्य नहीं करते। यह पार्टी कार्य में एक गम्भीर त्रुटि है।

मजदूर वर्ग सर्वाधिक प्रगतिशील वर्ग है और वह समाज के अन्य किसी भी वर्ग से अधिक क्रान्तिकारी है। यह क्रान्ति में किसी भी दूसरे वर्ग की तुलना में अधिक निःस्वार्थी और दिलेर होता है।

मजदूर वर्ग के मुकाबले में किसान अधिक स्वार्थी और लकीर के फकीर होते हैं, क्योंकि मूलतः उनके पास भूमि, मकान और ढोर-डंगर जैसी निजी सम्पत्ति होती है। यह सही है कि सहकारीकरण के बाद किसान भी समाजवादी श्रमजीवी बन गये हैं। लेकिन अब भी उनमें कई पुराने विचार घर किये हुये हैं क्योंकि वे हजारों सालों से पीढ़ी-दर-पीढ़ी छोटे भूस्वामियों के रूप में रहते आये हैं। यही कारण है कि किसान मजदूर वर्ग के साथ गठबंधन करके और उसके नेतृत्व में ही समाजवाद और कम्युनिज्म की ओर बढ़ सकते हैं।

पार्टी संगठनों को मजदूर वर्ग से आये कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण तेज करना चाहिये और खासतौर पर कोयला खनिकों पर ध्यान देना चाहिये।

कोयला खनिकों के साथ काम करते समय कोयला खानों के पार्टी संगठनों को उनकी बची-खुची बुरी आदतों को दूर करने पर अधिक ध्यान देना चाहिये। इससे पूर्व जापानी साम्राज्यवाद के दिनों में तमाम क्षेत्रों में कामकाज की परिस्थितियां बहुत खराब थीं और कोयला खानों, अन्य खानों और इमारती लकड़ी उद्योग में तो वे और भी बदतर थीं। इन क्षेत्रों में खतरनाक और कठिन हालात में श्रम करना पड़ता था जिससे कुछ मजदूर अपने कार्य से घृणा करते थे। जब उनके पास रुपया होता, तो वे शराब पीते, लड़ते-झगड़ते और जुआ खेलते। यही कारण है कि पहले लोग पुराने स्वर्ण खनिकों को आवारा-गर्द या गुंडा समझते थे।

आज स्थिति निश्चित रूप से बुनियादी तौर पर बदल गयी है। अब कोयला खनिक समाजवादी निर्माण में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं और अपने मजदूर वर्ग संबंधी दायित्व को सम्मान के साथ निभाते हैं। परन्तु अभी उनमें से कुछेक पुराने जमानों की आदतों से पूरी तरह छुटकारा प्राप्त नहीं कर सके हैं। पार्टी संगठनों को शिक्षा कार्य हर तरह से तेज करना चाहिए, ताकि कोयला खनिक यथाशीघ्र उन तमाम पुरानी बुरी आदतों को तिलांजलि दे सकें और तमाम लोग मजदूर वर्ग के उदात्त नैतिक गुण प्राप्त कर सकें।

२: तकनीकी नूतनता आन्दोलन को पूरे वेग से आगे बढ़ाने के बारे में

पार्टी समिति को तकनीकी नूतनता पर गहराई से ध्यान देना चाहिए।

पिछलों सालों में कोयला उद्योग में तकनीकी क्रान्ति में कई सफलताएं प्राप्त हुई हैं। परन्तु इस क्षेत्र में यन्त्रीकरण दूसरे उद्योगों से अभी तक बहुत पिछड़ा हुआ है। अतः कोयला उद्योग के सामने यह आवश्यक काम आन पड़ा है कि तकनीकी नूतनता आन्दोलन को उत्साहपूर्वक आगे बढ़ा कर और यन्त्रीकरण के स्तर को ऊंचा उठा कर खदान के कड़े और मुश्किल श्रम को सुकर और सुसभ्य कार्य में परिणत किया जाए। खासतौर पर कोयला खानों के गड्ढों में काम के यन्त्रीकरण के लिए पूरा प्रयास किया जाना चाहिए।

व्यापक तकनीकी नूतनता आन्दोलन का तकाजा है कि हर कोई अपने सम्बद्ध क्षेत्र में मशीनों और उपकरणों से भलीभांति वाकिफ हो और उसे समुन्नत तकनीकी ज्ञान हो। इस समय कोयला उद्योग में कार्यकर्ताओं को अन्य क्षेत्रों के कार्यकर्ताओं की तुलना में कम तकनीकी ज्ञान है। यही वजह है कि वे मशीनों से डरते हैं, और तकनीकी काम सामने आने पर वे भयभीत हो जाते हैं और उससे बचने का यत्न करते हैं। इस मनोवृत्ति से वे न तो तकनीकी ज्ञान सीख सकते हैं और न ही तकनीकी क्रान्ति के ध्येय को पूरा कर सकते हैं। जाहिर है, अधिक जटिल और कठिन श्रम में संलग्न लोगों को तकनीकी ज्ञान में ज्यादा दिलचस्पी होनी चाहिए और उन्हें तकनीकी नूतनता में आगे बढ़ना चाहिए।

पार्टी समिति को चाहिए कि वह मेहनतकशों के काम करने की तकनीक और कौशल के स्तर को ऊंचा करे तथा प्रविधि से सम्बद्ध अन्ध-विश्वासों को पूर्णतया दूर कर और कोयला खान मजदूरों में तकनीकी अध्ययन को दृढ़ बनाकर
:और तकनीकी नूतनता आन्दोलन को सक्रिय रूप से आगे बढ़ाये।

३ : मेहनतकश लोगों के लिए सुखी और आनन्दपूर्ण जीवन के बारे में

पार्टी समिति को मेहनतकशों के जीवन को सुसभ्य और आरोग्यपूर्ण ढंग से विकसित करने तथा उसे अधिक आशावादी बनाने के लिए सक्रिय रूप से प्रयास करना चाहिए।

पर्याप्त संख्या में और आरामदेह मकान बनाये जाने चाहिए और नगरों तथा गांवों को सुन्दरता प्रदान करने के लिए अनेक बढ़िया पेड़ और फूलों के पौधे लगाये जाने चाहिए। हर मकानों को फूलों के गमले से सजाया जाना चाहिए और कमरों को साफ और स्वच्छ रखा जाना चाहिए। इस तरह मजदूरों के लिए तमाम ऐसे हालात उपलब्ध किये जाने चाहिए जिनमें वे दिन के काम के बाद

सुसभ्य ढंग से घर पर विश्राम कर सकें।

हर घर में एक न एक वाद्ययन्त्र का होना वांछनीय है। घरों में मजदूरों को पहले की तरह शराब पीने की बजाय अध्ययन करना चाहिए या वाद्ययन्त्र बजाने चाहिए। बेहतर हो कि वे सब एक से अधिक वाद्ययन्त्रों को बजाना सीखें। किसी पश्चिमी वाद्ययन्त्र को बजाना सीखना अच्छा है। लेकिन उससे भी बेहतर हो कि राष्ट्रीय वाद्ययन्त्र को बजाना सीखा जाए। प्यानो या वायलिन की अपेक्षा जो हमारे देश में बहुतायत से प्राप्त नहीं हैं, कायागुम और यांगगुम नामक बाजे, जो आसानी से मिल जाते हैं और जो हमारे मिजाज के अधिक अनुकूल तथा सीखने में आसान हैं, बेहतर होंगे।

वास्तव में बहुत बढ़िया रहे कि मिसाल के बतौर मजदूर परिवार सामूहिक पारिवारिक संगीत कार्यक्रम तैयार करें ताकि एक परिवार के तमाम सदस्य एक साथ मिलकर गा सकें। तब हमारा जीवन अधिक उज्ज्वल और अधिक आनन्दमय होगा और तमाम लोग सुसभ्य और आशावादी हो जाएंगे।

आज हमारे पास अपने जीवन को सुसंस्कृत ढंग से विकसित करने के लिए हर स्थिति और संभावना मौजूद है। हमारे समाज में न शोषक हैं, न उत्पीड़क। यदि हम कोशिश करें तो जीवन को उतना ही सुखी बना सकते हैं जितना कि हम चाहते हैं। सवाल तो यह है कि हम अपने जीवन को कैसे संगठित करते हैं। हमारे पास चाहे कितनी भी अनुकूलात्मक परिस्थितियां मौजूद हों, यदि हम उनसे लाभ उठाने का यत्न नहीं करते तो हमारा जीवन प्रसन्न और सुखी नहीं हो सकता। तमाम पार्टी संगठनों और कार्यकर्ताओं के सर्वाधिक महत्व के कर्तव्यों में से एक है मेहनतकशों के श्रम और जीवन को आनन्दमय और सुसभ्य बनाने के लिए उनका नेतृत्व करना।

कुछ साथी पार्टी सदस्यता के लिए प्रार्थना-पत्रों को प्राप्त करना और संगठनात्मक समस्याओं को सुलझाना ही पार्टी कार्य का बुनियादी मुद्दा समझ लेते हैं। लेकिन वे सर्वथा गलती पर हैं। पार्टी संगठनों को हमेशा मेहनतकशों के जीवन में गहरी दिलचस्पी लेनी चाहिए। यदि वे मेहनतकशों के जीवन में दिलचस्पी नहीं लेते और न ही एक आशापूर्ण जीवन का विकास करने में उनका नेतृत्व करते हैं, तो उनका उत्साह नहीं बढ़ेगा और न ही उत्पादन में अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे, उसी काम को करने में मेहनतकश लोग अधिक थकावट और क्रान्ति महसूस करेंगे और जरा-सी भी बीमारी से बड़ी आसानी से घबरा जाएंगे।

पहले के दिनों में जापान-विरोधी छापामार कभी हतोत्साह नहीं होते थे, भले ही बर्फीले तूफानों की भीषण सर्दी में उनके तन पर मामूली वस्त्र ही हों या कई-कई दिनों तक उन्हें भूखा ही रहना पड़े, भले ही उन्हें दुश्मन ने घेर लिया हो और

वे बहुत ही कठिन परिस्थितियों से गुजर रहे हों। किसी गांव में पहुंचने पर हमारे छापामार तुरन्त अपने जूते सुखाने और बाहर खुले में आकर नाचने-गाने लगते थे। हमारे छापामारों की यह महत्वपूर्ण विशेषता थी कि हालात कैसे भी हों, वे आशावादी रहते थे।

आदमी जीवन का महत्व तभी महसूस कर सकता है, जब वह आशावादी हो, भले ही उसका जीवन केवल एक दिन शेष रह गया हो। कोई मायूस और निराशावादी सेना न एकजुट हो सकती है, न अच्छी तरह लड़ सकती है।

जापानी साम्राज्यवाद के दिनों में मंचूरिया में अनेक जापान-विरोधी इकाइयां थीं। लेकिन जापानी दस्यु हम—कोरियाई जन क्रान्तिकारी सेना—से ही सबसे ज्यादा डरते थे, क्योंकि हमारे छापामारों का मनोबल बहुत ऊंचा था और शत्रु के खिलाफ "करो या मरो" की लड़ाइयों में हम हमेशा बहादुरी और दिलेरी से लड़ते थे। छापामार शत्रु के खिलाफ वीरतापूर्वक लड़ते थे, क्योंकि उनका दैनिक जीवन क्रान्तिकारी आशावाद से ओतप्रोत होता था।

यदि हमारे पार्टी कार्यकर्ता मेहनतकश लोगों के जीवन को उसी ढंग से संगठित करें, जिस ढंग से अतीत में जापान-विरोधी छापामार करते थे, तो वे सभी बहादुर और कर्मठ बन जाएंगे और उत्पादन भी बिना किसी बाधा के बढ़ेगा। पार्टी संगठनों को जनवादी युवा लीग और ट्रेड यूनियन संस्थाओं को मेहनतकश लोगों के बीच व्यापक सांस्कृतिक गतिविधियों को अधिक वेग से विकसित करने के लिए ठोस रूप में प्रोत्साहित करना चाहिए। इस प्रकार उन्हें कार्यस्थलों को जाते हुए और फिर वहां से वापस आते हुए हर्षोल्लास के साथ गाने और अवकाश के मौकों पर सहगान गानों को प्रेरित करना चाहिए। इससे उन्हें थकावट से उत्पन्न तनाव से राहत पाने में सहायता मिलेगी और उनके जीवन में अधिक स्फूर्ति के संचार में मदद मिलेगी। कार्यकलाप का यह चरण सन्तोषजनक ढंग से आगे नहीं बढ़ रहा है, क्योंकि पार्टी समितियां सांस्कृतिक गतिविधियां अच्छी तरह आयोजित नहीं करतीं।

पार्टी संगठनों को मजदूरों के भौतिक जीवन में ही नहीं, बल्कि उनके सांस्कृतिक जीवन और मनोरंजन में भी पूरी दिलचस्पी लेनी चाहिए। इस कार्य में भी कार्यकर्ताओं को आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। उन्हें नये-नये गीत सीखने चाहिए और सहगान गाने की शैली की खोज करनी चाहिए।

इसके बाद पार्टी समितियों की सेवा और आपूर्ति कार्य पर समुचित ध्यान देना चाहिए। इस समय कोयला खानों में यह कार्य सन्तोषजनक ढंग से नहीं हो रहा है। मजदूरों की कम्युनिस्ट चेतना चाहे कितनी ही प्रखर क्यों न हो, यदि उनकी आवासीय स्थितियां बुरी हों और उनका जीवन स्थिर न हो, तो वे

भलीभांति कार्य नहीं कर सकते। प्रथमतः मजदूरों को सोया और बीन की चिकनाई, खाद्य तेल, सब्जियां, बीन का दही आदि नियमित रूप से उपलब्ध किये जाने चाहिए। साथ ही उन्हें मछलियां अधिक मात्रा में मुहैया की जानी चाहिए। इसके अलावा आवासीय समस्या को सुलझाया जाना चाहिए और हर समय पर्याप्त मात्रा में पेयजल उपलब्ध किया जाना चाहिए। अन्तिम विश्लेषण में यह राजनीतिक कार्य ही है।

अन्त में मैं अगले वर्ष के उत्पादन के लिए तैयारियों के बारे में कुछ कहना चाहूंगा।

अगले वर्ष के लिए उत्पादन की तैयारियों में महत्वपूर्ण कर्तव्य है अन्य सब बातों के साथ-साथ अब तक मालूम हो चुकी खामियों को दुरुस्त करना। एक बार जब आपको मालूम हो जाए कि खामियां क्या हैं, तो आपको उन्हें यथाशीघ्र दुरुस्त करने का सक्रिय प्रयास करना चाहिए। अगर आप खामियों का पता चलने पर भी उन्हें तुरन्त दुरुस्त करने में असमर्थ रहते हैं और उन्हें बने रहने देते हैं तो आपके काम में कोई भी प्रगति नहीं हो सकती तथा अन्य और भी बड़ी भूलें हो सकती हैं।

सबसे पहले तो गलत सांगठनिक ढांचों को नया रूप दिया जाना चाहिए, और मजदूरों के रिक्त स्थानों को भरा जाना चाहिए और कार्य की एक प्रणाली स्थापित करनी चाहिए।

इसके बाद आवश्यकता इस बात की है कि उपकरणों का उचित रखरखाव और उसके प्रबन्ध में सुधार हो। उपकरणों में सुधार किया जाना चाहिए। उत्पादक उपकरणों, मरम्मत की मशीनों और रखरखाव केन्द्र तथा परिवहन की मशीनों और उपकरणों को नया रूप देकर उन्हें मजबूत बनाया जाना चाहिए। आवश्यक चीजें खुद बनाकर और खुद न बनायी जा सकने वाली अन्य चीजें उच्चतर इकाइयों से प्राप्त कर इस काम को अवश्य ही अगले फरवरी तक खत्म कर लेना होगा।

उत्पादन में उपकरणों के रखरखाव की वजह से बाधा नहीं पड़नी चाहिए। इस समय कोयला की आपूर्ति पर दबाव है। अतः यदि आप अपनी योजना को पूरा करने में असफल रहे तो इसका अन्य क्षेत्रों पर भी असर होगा। इसलिए योजना की व्यवस्था के अनुसार अगले जनवरी और फरवरी के लिए निर्धारित उत्पादन लक्ष्यों को अवश्य ही पूरा कर लिया जाना चाहिए, तथा मरम्मत और रखरखाव केन्द्र की शक्तियों का उपयोग करके अगले फरवरी तक तमाम उपकरणों के रखरखाव का काम पूरा कर लिया जाना चाहिए और अपने प्रयासों से कम से कम तीन मास के लिए फालतू पुर्जों की आपूर्ति करनी चाहिए। फालतू पुर्जों के

अतिरिक्त कुछ चेन कन्वेयरों और चट्टान तोड़ने वाले वरमों (राक ड्रिलों) को भी जमा कर लिया जाना चाहिए।

प्रबन्ध-प्रणाली के पुनर्गठन उपकरणों के रखरखाव और उसकी नियमित आपूर्ति के व्यापक कार्य को अल्पकाल में पूरा करने के लिए प्रान्तीय पार्टी समिति, मन्त्रालय और प्रबन्ध कार्यालय को सक्रिय सहायता करनी होगी। प्रान्तीय पार्टी समिति अध्यक्ष को कर्मचारियों के रिक्त स्थानों को भरना चाहिए और भारी उद्योग आयोग के अध्यक्ष तथा प्रबन्ध कार्यालय के प्रमुख को कार्यकर्ताओं का चयन और नियुक्ति करनी चाहिए।

इस तरह अगले वर्ष के उत्पादन लक्ष्यों को हर हालत में पूरा कर लिया जाना चाहिए।

यदि आप कोयला उत्पादन योजना को पूरा करने में असमर्थ रहे तो हमें कोयले की कमी पड़ जाएगी। प्योंगयांग कपड़ा मिल और मादोंग सीमेंट फैक्टरी इस समय कठिनाई में हैं क्योंकि उन्हें समय पर कोयला उपलब्ध नहीं किया गया। तमाम कार्यकर्ताओं को इस स्थिति की जानकारी दे दी जानी चाहिए। दिक्कतों का सामना होने पर पार्टी संगठनों को उनसे कार्यकर्ताओं को अवगत करना चाहिए, उनके बाहर निकलने के उपाय पर उनके साथ विचार-विमर्श करना चाहिए और संघर्ष के लिए उन सभी को संगठित और गोलबंद करना चाहिए। यदि पार्टी और अवाम मिलकर प्रयत्न करें तो सभी दिक्कतें दूर हो जाएंगी। आनजु कोयला खान के लिए अगले वर्ष के उत्पादन दायित्व की सफल क्रियान्विति आश्वस्त करने के लिए पार्टी समिति को अवाम में गहराई तक जाना चाहिए और उनको संगठित करने का बेहतर काम करना चाहिए।

आज मैंने मुख्यत: आपके काम की खामियों के बारे में चर्चा की है। ये खामियां वे हैं, जो आपके त्वरित विकास के दौरान प्रकट हुई हैं और आपकी उपलब्धियों की तुलना में बहुत कम हैं।

यदि आप अब तक प्राप्त सफलताओं को मजबूत करें और उद्घाटित खामियों को तुरन्त दुरुस्त कर लें तो आप अपने भावी कार्य में और भी ज्यादा उपलब्धियां हासिल करेंगे।

कृषि के क्षेत्र में कार्यकर्ताओं को क्रान्तिकारी के गुण प्राप्त करने चाहिए और ग्रामीण अर्थतन्त्र में अपने मार्गदर्शन में सुधार लाना चाहिए

दक्षिण ह्वांगहाए प्रान्त के हाएजु क्षेत्र में कृषि सहकारों के प्रबन्ध कर्मचारियों की बैठक में दिया गया भाषण

१ फरवरी, १९६२

पहले मुझे इजाजत दीजिए कि मैं पार्टी की केन्द्रीय समिति और गणतन्त्र की सरकार की ओर से दक्षिण ह्वांगहाए प्रान्त के कृषि सहकारों के तमाम प्रबन्ध कर्मियों और सदस्यों, युवा तूफानी दस्तों के सदस्यों और ट्रैक्टर चालकों के प्रति, जो देहात में प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं, कृषि-तकनीशियनों के प्रति, जो ग्रामीण अर्थतन्त्र की मदद करने को आगे आये हैं, और तमाम प्रमुख कृषि अहलकारों के प्रति इस बात के लिए हार्दिक आभार प्रकट करूं कि उन्होंने हमारी अन्न उपज में दस लाख टन की वृद्धि करने के लिए संघर्ष में, देशभक्तिपूर्ण लगन प्रदर्शित की और शानदार सफलताएं प्राप्त कीं।

दक्षिण ह्वांगहाए प्रान्त ने कुछ वर्ष पहले अपनी कृषि के समाजवादी कायाकल्प को सफलतापूर्वक पूरा किया और अब उसने ग्रामीण अर्थतन्त्र के तकनीकी पुनर्निर्माण में, जिसमें सिंचाई व्यवस्था, विद्युतीकरण और यन्त्रीकरण शामिल हैं, महान प्रगति की है। परिणामत: एक आधुनिक समाजवादी कृषि की बुनियाद को सुदृढ़ किया जा रहा है।

चूंकि मैं सिनछोन क्षेत्र में कृषि सहकारों के प्रबन्ध कर्मचारियों की बैठक में आपकी उपलब्धियों के बारे में पहले ही बोल चुका हूं, इसलिए आज यहां उन्हें नहीं दोहराऊंगा।

हमने उस क्षेत्र के कृषि सहकारों के प्रबन्ध कर्मचारियों के साथ कई दिनों

तक बैठक की और यहां हाएजु में १२ नगर और काउंटी कृषि सहकारों के प्रबन्ध कर्मचारियों के साथ लगातार तीन दिन तक फिर मिल रहे हैं।

बैठक से हमें पता चला है कि हमारे ग्रामीण अर्थतन्त्र के पथप्रदर्शन में अभी तक कई खामियाँ मौजूद हैं। हमारे प्रमुख कृषि कार्यकर्ताओं की खामियों को मोटे तौर पर दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है, एक है कार्य की गलत शैली और दूसरी कृषि कार्य में गलत नेतृत्व।

१. क्रान्तिकारी के कम्युनिस्ट लक्षणों की प्राप्ति के बारे में

मैं पहले अपने प्रमुख कर्मचारियों की कार्यशैली की चर्चा करना चाहूंगा। एक क्रान्तिकारी में जो कम्युनिस्ट कार्य भावना होनी चाहिए, वह ग्रामीण अर्थतन्त्र के अग्रणी कार्यकर्ताओं में अच्छी तरह प्रतिष्ठित नहीं हुई है। आपमें बड़ी हद तक अब भी नौकरशाही और औपचारिक कार्यशैली, दायित्वहीनता, शेखीबाजी, यश-लिप्सा, लकीर-का-फकीरपन और नीमहकीमी मौजूद हैं। ये तमाम पूंजीवादी समाज की अवशिष्ट पुरानी विचारधाराओं के ही लक्षण हैं। आप को कार्य की इन पुरानी शैलियों को निश्चित रूप से तिलांजलि देनी चाहिए।

आज हमारे देश में समाजवाद की भौतिक और तकनीकी बुनियादें और दृढ़ कर दी गयी हैं और आम लोगों की क्रान्तिकारी भावना निरन्तर बढ़ती पर है। अतः इस बारे में कोई भी सन्देह नहीं है कि यदि हमारे प्रमुख अहलकार तत्परता से अपनी कार्यशैलियों को दुरुस्त करें तो और भी महान सफलताएं हमारे हाथ लगेंगी। इसलिए आपको क्रान्तिकारी के कम्युनिस्ट गुणों को प्राप्त करने की दिशा में सबसे पहले प्रयास करना चाहिए।

हमारी पार्टी ने आपको देहाती क्षेत्र में समाजवाद के निर्माण का महत्वपूर्ण क्रान्तिकारी कार्य सौंपा है। हमारे देशवासी सैकड़ों साल सामंतवादी शोषण और दमन से उत्पीड़ित होते रहे। बाद में उन्हें करीब आधी शताब्दी तक जापानी साम्राज्यवाद की दस्युतापूर्ण लूट का शिकार होना पड़ा। परिणामस्वरूप हमारी कृषि बहुत पिछड़ी रही और किसान गरीबी में पिसते रहे। हमारे पिछड़े और जरूरतमंद खेतिहर गांवों का आधुनिक सुसभ्य समाजवादी गांवों में बदलना एक अति महत्वपूर्ण क्रान्तिकारी कर्तव्य है।

अतीत में लोग कहते थे : "कृषि देश की महान बुनियाद है," और आज वे कहते हैं : "चावल समाजवाद है।" इस सबसे स्पष्ट होता है कि कृषि का महत्व क्या है। भले ही हम शायद अन्य बातों से समझौता कर लें, परन्तु हम भूख से

कोई समझौता नहीं कर सकते। अतः लोगों के लिए खाद्यान्न की समस्या को हल करना सर्वाधिक महत्वपूर्ण काम है। हमारे देश का पूरा आर्थिक जीवन तभी सुधर सकता है, जबकि हमारी फसलें अच्छी हों और अनाज प्रचुरता से हो।

इस समय हमारे लोग एक समृद्ध समाजवादी समाज की रचना कर रहे हैं, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति टाइल की छत वाले मकान में रहेगा, रेशमी कपड़े पहनेगा, चावल खाएगा, मांस का शोरबा पीएगा, और समाज तथा जनता की भलाई के लिए पर्याप्त ज्ञान और तकनीक के साथ मिलकर काम करेगा। यह हमारी पार्टी द्वारा निर्धारित किया गया लक्ष्य और हमारी जनता की चिर आकांक्षा है। हमारी पार्टी द्वारा निर्धारित यह कर्तव्य कोई सपना नहीं है, बल्कि एक ऐसा यथार्थमूलक कार्य है, जो हमारी जनता के संघर्ष से सर्वथा चरितार्थ हो सकता है।

हमारी जनता ने अब तक जो सफलताएं प्राप्त की हैं, वे इस बात का स्पष्ट प्रमाण हैं कि यह क्रान्तिकारी कर्तव्य बिलकुल हमारी सामर्थ्य के अन्दर है। हमने बहुत पहले ही गांवों में शोषण के सामंती सम्बन्धों का पूर्ण उन्मूलन कर दिया था और व्यक्तिगत किसानी अर्थतन्त्र को अर्थतन्त्र के समाजवादी सहकारी क्षेत्र में पुनर्गठित करने के कठिन कार्य को भी पूरा कर लिया है और अब हम अपने ग्रामीण क्षेत्रों में सिंचाई, विद्युतीकरण तथा यन्त्रीकरण के कर्तव्यों को सफलतापूर्वक सम्पन्न कर रहे हैं। इस तरह हमारे देहाती क्षेत्र की सूरत इतनी बदल गयी है कि पहचानी नहीं जा सकती।

किसानों के जीवन में भी एक बड़ा परिवर्तन आया है। यह कहा जा सकता है कि जापानी दुष्टों के शासन के दिनों में हमारे किसानों की स्थिति ऐसे किराये के खेतिहर मजदूरों जैसी थी जो दूसरों के लिए काम करते थे। लेकिन मुक्ति के बाद वे ऐसे गरीब किसान बन गये जिनके पास अपनी जमीन थी। फिर जब देहात में समाजवादी निर्माण आगे बढ़ा तो वे मध्यम किसान बने। इस समय वे सब अच्छे खाते-पीते मध्यम किसान के स्तर पर ऊंचे उठ रहे हैं।

यदि हम अब एक कदम और आगे बढ़ाएं, तो हर कोई अमीरों की तरह प्रचुरता का जीवन बिताने में समर्थ हो जाएगा। जब ऐसा होगा तो हमारी जनता के सपने साकार हो जाएंगे। हमारी जनता इसी आदर्श की प्राप्ति के लिए संघर्ष के एक नये चरण में दाखिल हो गयी है। इस सातवर्षीय योजनाकाल में हमारा इरादा तमाम लोगों को अमीरों सरीखे बहुलता का जीवन बिताने के योग्य बनाने का है।

लेकिन अमीरों से हमारा आशय उन लोगों से नहीं हैं, जो पहले के दिनों की तरह निकम्मेपन का जीवन बिताते हैं। हमारा आशय उन लोगों से है, जो काम करते हैं तथा आरामदेह और प्रचुरता की ज़िन्दगी गुजारते हैं।

अपने देशवासियों को बहुलता का और आरामदेह जीवन प्रदान करने के लिए हमें उत्पादन को बढ़ाना होगा। उत्पादन बढ़ाने के लिए वास्तव में यह जरूरी है कि काम ज्यादा किया जाए, लेकिन तकनीकी क्रान्ति द्वारा अपनी उत्पादक शक्तियों को और विकसित करने के लिए भी ज्यादा काम करना अति महत्वपूर्ण हैं। अतः हमें सातवर्षीय योजना के दौरान अपनी कृषि का सिंचाईकरण विद्युतीकरण, यन्त्रीकरण और रसायनीकरण करना चाहिए। इस तरह उत्पादक शक्तियों के स्तर को ऊंचा उठाकर ही यह संभव है कि हमारी तमाम जनता को कड़े श्रम से मुक्त किया जा सके तथा सुगमतापूर्वक और आनन्दपूर्वक काम करते हुए अधिक उत्पादन के द्वारा उनके जीवनस्तर का उन्नयन किया जा सके।

जैसा कि आप सब जानते हैं, जापानी दानवों के पुराने शासन में लोगों का जीवन इतना कठोर था कि वे अपने अस्तित्व को ही दुर्भाग्य की संज्ञा देते थे। परन्तु आज जब हमारे देश में समाजवाद निर्मित किया जा रहा है, हर कोई अपने जीवन का आनन्द लेता है और दीर्घायु होना चाहता है। कल मैंने किसी को रेडियो पर यह गीत गाते सुना कि वह सौ वर्ष तथा और भी अधिक जीना चाहता है। यह भावना केवल उसी तक सीमित नहीं है। यह तमाम लोगों की आकांक्षा है।

असल में, पहले मुट्ठी-भर जमींदार और पूंजीपति दूसरों का शोषण कर और उन्हें लूट कर ऐश का जीवन बिताते थे। वे सुअरों की तरह भकोसते थे। लेकिन हम एक ऐसा समाज बनाने जा रहे हैं, जिसमें तमाम लोग टाइल की छत वाले मकानों में सुखपूर्वक रहेंगे, रेशम पहनेंगे, और चावल और मांस के शोरबे से उदरपूर्ति करेंगे। जिन लोगों में अब भी बोसीदा विचारों के अवशेष विराजमान हैं, वे केवल अपने लिए बहुलता का जीवन चाहते हैं। परन्तु आज हमारे देश में किसी को भी अपने लिए बहुलता का जीवन बिताने की इजाजत नहीं है। जो कहता है, 'सब एक के लिए" और यह नहीं कहता, "एक सब के लिए" वह हर चीज को पुरानी विचारधारा के दृष्टिकोण से देखता है। यदि हम इस ढंग से सोचें तो हम सभी को समान बहुलता देने की समस्या को सुलझा नहीं सकते।

साथियो, जरा सोचिए! अपने उन किसानों को, जो युगों तक मिट्टी के झोंपड़ों में मुसीबत का जीवन गुजारते रहे, आरामदेह, आधुनिक मकान देना, अपने उन किसानों को, जो अपने कंधों से बंधे 'होरी' हलों को खींच कर धान और सूखे खेतों की जुताई किया करते थे और जो अपनी पीठों पर तब तक बोझ ढोते रहते थे, जब तक कि वे झुक न जाते, कड़े श्रम से मुक्त करना और उन सबको अच्छा खाना देना तथा बहुलतापूर्ण और लम्बी जिन्दगी देना कितना उचित होगा। जब हम यह सब कर देंगे तो किसान भी, जो राजनीतिक दृष्टि से पिछड़े हुए हैं, पूरी तरह महसूस करेंगे कि समाजवाद कितना अच्छा है।

ग्रामीण अर्थतन्त्र में काम कर रहे आप तमाम लोगों—कृषि की इंचार्ज प्रान्तीय जन समिति के प्रमुख पदाधिकारियों, काउंटी कृषि सहकारी प्रबन्ध समिति के कार्यकर्ताओं, कृषि सहकारों के अध्यक्षों, ट्रैक्टर ड्राइवरों, सिंचाई प्रशासनिक कार्यालयों, कृषि सहकारों के प्रबन्ध कर्मचारियों और तमाम सहकारी सदस्यों—को हमारी पार्टी ने कितना सम्मानजनक क्रान्तिकारी दायित्व सौंपा है !

समाज और लोगों के कल्याण के लिए काम करने से बढ़कर उचित और सम्मानजनक कुछ भी नहीं होता। इसलिए एक क्रान्तिकारी से अपेक्षित कम्युनिस्ट लक्षणों को अपने अन्दर उत्पन्न करने के वास्ते आपको सबसे पहले साफतौर पर यह समझ लेना होगा कि आप का क्रान्तिकारी कर्तव्य कितना महत्वपूर्ण और सम्मानजनक है। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति में अपने काम के प्रति गर्व और जिम्मेदारी की उच्च भावना होनी चाहिए और उसे हमेशा क्रान्तिकारी उत्साह से ओत-प्रोत रहना चाहिए।

अब सवाल यह है कि किसी क्रान्तिकारी के कम्युनिस्ट लक्षणों से हमारा अभिप्राय क्या है ?

प्रथमत: उन्हें पार्टी नीतियों की रक्षा करने और उन्हें सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के दृढ़ संघर्ष के रूप में प्रकट होना चाहिए।

अपनी तमाम जनता को अच्छा जीवन देने और अपने देश को धन-धान्य से परिपूर्ण और शक्तिशाली बनाने के लिए हमें अपनी पार्टी की लाइनों और नीतियों द्वारा निर्धारित पथ का अनुसरण करना होगा। पार्टी की लाइनों और नीतियों की तामील करने का संघर्ष वास्तव में क्रान्तिकारी संघर्ष है। अत: क्रान्तिकारी को पार्टी नीतियों को कार्यरूप देने के लिए लगातार और निष्ठापूर्वक लड़ाई करनी चाहिए। यह पहला और सब से पहला गुण है, जो किसी क्रान्तिकारी में होना जरूरी है।

लेकिन इस बैठक में आपके भाषणों का विवेचन करने से ऐसा आभास होता है कि आपमें पार्टी नीतियों को अन्त तक सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के संकल्प का अभी तक अभाव है। पार्टी के मंतव्यों को साकार रूप देने में दृढ़संकल्प वाले लोगों ने महान सफलताएं प्राप्त की हैं लेकिन जिनमें इस भावना की कमी थी, वे अपना काम ठीक ढंग से करने में असमर्थ रहे हैं। कल हमने पाएछोन काउंटी में कुमसोंग कृषि सहकार की साथी छोन पिल न्यो के बारे में सुना कि पिछड़ी हुई पशु संवर्धन टोली का उत्साह बढ़ाने के लिए संघर्ष में उन्होंने कितनी दृढ़ता का परिचय दिया। उसने केवल एक-एक सूअर और पैदा करने के लिए प्रचंड प्रयास किया और अत्यावश्यक आहार की प्राप्ति के लिए अथक परिश्रम किया। इस तरह उसने महान सफलता हासिल की। पार्टी नीतियों को पूरा करने के लिए हर

किसी को उन्हीं जैसी कर्मठता का परिचय देना होगा।

पार्टी नीतियों की क्रियान्विति के लिए दृढ़संकल्प और अथक जुझारू भावना के बिना पिछड़े लोगों को कम्युनिस्ट लाइनों के अनुरूप ढालने, जिन चीजों की कमी है, उनका उत्पादन करने तथा नयी-नयी चीजों को खोजने, विज्ञान में नये-आविष्कार करने आदि के किसी भी कार्य में कोई सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती। लापरवाही से काम करना या काम को बिना पूरा किये बीच में छोड़ देना कमजोर क्रान्तिकारी जुझारू भावना का द्योतक है। यह मनोवृत्ति किसी भी कार्य में सफलता नहीं ला सकती। पार्टी नीतियों को तो अन्त तक पूरा करना होगा।

जापान-विरोधी छापामार तमाम दिक्कतों और मुसीबतों पर काबू पाते हुए पूरे १५ सालों तक वीरोचित संघर्ष चलाते रहे। लेकिन उनमें से कुछेक ने, जो यद्यपि शुरू में क्रान्तिकारी संघर्ष में शामिल हुए थे, अन्त तक क्रान्ति के प्रति वफादार रहने की बजाय अपनी दुर्बल क्रान्तिकारी संकल्प शक्ति के कारण अपना रुख बदल दिया। कुछेक ने लम्बे समय तक संघर्ष करने के बाद परन्तु जापानी दुष्टों द्वारा हथियार डाले जाने से पूर्व, शत्रु के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। इस तरह उन्होंने ठीक उस रोगी की तरह काम किया, जिसे डाक्टर ने दवा की १०० खुराक लेने को कहा था, मगर उसने ९९ खुराकें लीं और परिणाम यह हुआ कि दवा ने कोई असर न किया।

एक क्रान्तिकारी गीत भी है जो निम्नलिखित पंक्तियों में क्रान्तिकारियों की दृढ़ जुझारू भावना को प्रकट करता है। "कायरों को विमुख होने दो और गद्दारों को ठिठोली करने दो। हम यहां लाल झण्डे को फहराते रहेंगे।" क्रान्तिकारी केवल वही लोग बन सकते हैं, जो तमाम दिक्कतों के बावजूद अन्त तक क्रान्ति की लाइन और पार्टी की नीतियों का पालन करते हैं और उन्हें पूरा करने के लिए संघर्ष करते हैं। एक पुरानी कहावत है कि दृढ़संकल्प व्यक्ति के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। यह आज और भी ज्यादा सही है, जबकि हमारे क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट समाज की रचना का सार्थक संघर्ष कर रहे हैं।

हमारी पार्टी की नीतियां सर्वथा व्यावहारिक हैं, क्योंकि वे मार्क्सवाद-लेनिनवाद के अनुसार वास्तविक स्थितियों के वैज्ञानिक विश्लेषण पर आधारित हैं। तमाम कार्यों में सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि हम पार्टी नीतियों को सही तौर पर समझकर उन्हें दृढ़ता से पूरा करते हैं या नहीं।

पार्टी की नीतियों को सराहनीय ढंग से पूरा करने के लिए सबसे पहले उन्हें भली-भांति समझना जरूरी है। पार्टी की नीतियों का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करने के बाद ही आपकी उनके सही होने के बारे में स्पष्ट धारणा बन सकेगी।

और पार्टी के इरादों को पूर्णतया समझने के बाद ही आप में क्रान्तिकारी संघर्ष की विजय के बारे में दृढ़-आस्था उत्पन्न हो सकेगी और आप संघर्ष की सही पद्धति तैयार कर सकेंगे।

पार्टी की नीतियां कोरिया में क्रान्ति को सम्पन्न करने के लिए मार्क्सवादी-लेनिनवादी उपायों और साधनों को स्पष्ट करती हैं। हमारी पार्टी ने स्वयं को मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्तों पर दृढ़ता से आधारित कर अपने देश के ग्रामीण क्षेत्रों में समाजवाद के निर्माण हेतु अनेक कर्तव्य निर्धारित किए हैं। हमारी पार्टी ने विद्युतीकरण, सिंचाई और यन्त्रीकरण के कर्तव्य पेश किये हैं और इसके विषय में सही नीतियां निश्चित की हैं कि भूमि को कैसे सुधारा जाए, बीज उत्पादन को कैसे विकसित किया जाए, समाजवादी कृषि आदि की कैसे व्यवस्था की जाए। हमारी पार्टी की इन तमाम कृषि नीतियों का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन कर और उन्हें सही तौर पर समझ कर ही ग्रामीण अर्थतन्त्र के सामने पेश क्रान्तिकारी कर्तव्यों को सफलतापूर्वक पूरा करना संभव हो सकता है।

पार्टी की नीतियों के अध्ययन के मामले में मात्र इस बात से काम नहीं चलेगा कि बस उनके शीर्षकों पर दृष्टिपात कर लिया जाए। यह तो तरबूज के छिलके को ही चाटने जैसा हुआ। न ही किसी पुस्तक के मात्र प्रथम अध्याय को बार-बार पढ़ने से काम चलेगा, जैसा कि हमारे हास्य नाट्य संवादों में व्यंग्य के रूप में पेश किया जाता है। यदि आप वास्तविकता से कटे रहकर केवल शब्दों या वाक्यों को रटने के लिए ही इस ढंग से पार्टी की नीतियों का अध्ययन करते हैं तो आपको उससे कुछ हासिल न होगा। इस दृष्टिकोण से आप को न तो पार्टी के मंतव्यों की गहरी सूझबूझ प्राप्त हो सकेगी और न ही अपनाये जाने के लिए सच्चा मार्ग मिल सकेगा। पार्टी नीतियों के गूढ़ ज्ञान से कोरे लोग न-केवल अपने काम को रचनात्मक ढंग से पूरा करने में असमर्थ रहेंगे, बल्कि जब मुश्किलें सामने आयेंगी तो वे लड़खड़ा भी जाएंगे।

इससे पूर्व जब हम जापान-विरोधी छापामार संघर्ष चला रहे थे तो वे लोग जिन्हें क्रान्ति की गहरी सूझ नहीं थी, मुश्किलों का सामना होते ही लड़खड़ा गये। अन्त में वे इस हद तक चले गये कि क्रान्तिकारी पांतों को ही छोड़ गये। लेकिन जिनके पास क्रान्ति की स्पष्ट धारणा थी, उन्हें दृढ़ विश्वास था कि जापानी साम्राज्यवाद का पतन अवश्यंभावी है। वे समझते थे कि देर-सबेर जापानी साम्राज्यवाद का नाश हो कर रहेगा और इस पतन को लाने में उनका अपना संघर्ष निर्णायक रहेगा क्योंकि हमारी दृढ़ धारणा थी कि हमारा ध्येय न केवल न्यायोचित है,'बल्कि वह अन्ततोगत्वा विजयी भी होगा। अतः हमने तमाम कठिनाइयों को झेलते हुए बहादुरी से उसके लिए लड़ाई लड़ी। इस तरह हमने मार्क्सवाद-लेनिनवाद द्वारा

निर्दिष्ट पथ का अनुसरण कर जो अथक संघर्ष किया, उसमें अन्ततः हमने विजय पायी।

ग्रामीण अर्थतन्त्र में हमारे प्रमुख कार्यकर्ताओं को भी अपनी पार्टी की कृषि नीतियों का, जो हमारे देश की विशिष्ट परिस्थितियों में मार्क्सवाद-लेनिनवाद के रचनात्मक प्रयोग का प्रतीक है, गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करना चाहिए और यदि वे देहात में समाजवाद का सफल निर्माण करना चाहते हैं तो उन्हें पूरा करने के लिए सक्रिय प्रयास करना चाहिए। इस प्रकार कम्युनिस्टों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण गुण यह है कि वे पार्टी नीतियों को गहराई से जानते हैं और उन्हें पूरा करने के लिए दृढ़ता से प्रयत्न करते हैं।

क्रान्तिकारियों के रूप में हमारे प्रमुख कार्यकर्ताओं में दूसरा कम्युनिस्ट लक्षण यह होना चाहिए कि वे हमेशा वास्तविकता की खोजबीन के लिए अवाम के बीच जाएं।

लोगों को जानने के लिए आपको उनके बीच जाना चाहिए, मशीनों को जानने के लिए आपको उन स्थानों पर जाना चाहिए जहां मशीनें हैं, धरती को जानने के लिए आपको जमीन को खोदना चाहिए, और पर्वतों के बारे में सब कुछ जानने के लिए आपको उनके पास जाना चाहिए।

अवाम और वास्तविकता से अलग-अलग रहते हुए और केवल अपनी डेस्कों पर बैठे-बैठे हम न अवाम की शक्ति को देख सकते हैं और न यह समझ सकते हैं कि वास्तव में क्या हो रहा है और क्यों हो रहा है। अवाम की शक्ति और वास्तविकता को जाने बगैर हम न तो कोई आकलन कर सकते हैं, न छिपे भण्डारों का पता चला सकते हैं और न ही क्रान्तिकारी कर्तव्यों को पूरा करने के लिए अवाम को संगठित तथा लामबंद कर सकते हैं। आखिरकार कोई भी कार्य जो अवाम के साथ सम्पर्क और वास्तविकता के ज्ञान पर आधारित न हो, आत्मपरक ही होगा। अतः वह व्यक्ति क्रान्तिकारी नहीं हो सकता, जिसका अपने काम के प्रति आत्मपरक रवैया हो।

हमें हमेशा अवाम के बीच जाकर उनसे विचार-विमर्श करना चाहिए। हमें वास्तविकता का गहरा अध्ययन करना चाहिए और मौके पर विस्तारपूर्वक अपने तमाम आकलन तैयार करने चाहिए। विस्तृत आकलन तैयार करने का अर्थ है कार्यवाही की एक ठोस योजना का निर्धारण। अतीत में हमारे पुरखे नियोजन के लिए "आकलन" शब्द का प्रयोग करते थे। आप अपने काम में तभी सफल हो सकते हैं, जब आप अवाम के बीच जाएं, वास्तविकताओं से सम्पर्क साधें और वास्तविक स्थितियों के अनुरूप कार्रवाई की एक विस्तृत योजना की रूपरेखा तैयार करें।

समाजवाद के अन्तर्गत साहित्य और कला का भी यथार्थवादी होना जरूरी है। अवाम के जीवन में भाग लेने से प्राप्त यथार्थ जीवन के तथ्यों पर आधारित और उनके मनोविज्ञान तथा वास्तविक जिन्दगी का शानदार कलात्मक चित्रण करने वाले उपन्यास, नाटक और गति स्थायी प्रभाव डालते हैं और वे अवाम की भावनाओं से मेल खाते हैं। केवल ऐसी रचनाओं का शैक्षणिक महत्व भी होता है। परन्तु बगैर यथार्थ को देखे और अपनी डेस्क पर बैठे-बैठे जो गीतकार गीत-रचना करता है, वह अवाम की सच्ची भावनाओं को लेशमात्र व्यक्त नहीं कर सकता। अतः अवाम यह न समझ पाएंगे कि वह संगीत क्या सन्देश देना चाहता है। हां, उस पर यदि कोई हर्षित हो सकता है तो वह मेरे विचार में केवल गीतकार ही होगा।

अतीत में जापान-विरोधी छापामार टुकड़ियों में कोई पेशेवर गीतकार न था और युवा लड़ाकू लोग मिल बैठते तथा सामूहिक रूप से गीत की रचना करते। किन्तु उनके गीत छापामारों की उमंगों को व्यक्त करते और लोगों में उत्साह भरते थे, क्योंकि ये गीत स्वतः अवाम द्वारा लिखे होते थे और उनकी भावनाओं को सचाई से प्रकट करते थे।

और आज अवाम के बीच की वास्तविकता के गूढ़ अध्ययन पर आधारित रचनाएं सचाई से यथार्थ जीवन को अभिव्यक्त करती हैं और उन्होंने लोगों का दिल जीत लिया है। "लाल आन्दोलनकारी" नाटक इसकी एक मिसाल है। जिन साथियों ने इसमें अभिनय किया, वे तमाम देहाती क्षेत्रों में गये और ६ महीने तक कृषि कार्य में तथा किसानों के जीवन में हाथ बंटाते रहे। इस तरह किसानों के वास्तविक जीवन के तमाम पहलुओं का अध्ययन कर उन्होंने अपने नाटक में देहाती जीवन की सच्ची झलक दिखाने का पुरजोर प्रयास किया। परिणामतः उनका नाटक सफल रहा। नाटक में ली सिन जा और कार्यटोली नेता का अभिनय करने वाले साथी यथार्थ जीवन के नाटक और नायिका के साथ रहे और उनके बोलने तथा कार्य करने की शैली को सीखा। यही वजह है कि वे लेशमात्र बनावट के बिना सजीव ढंग से अभिनय कर सके।

इसके विपरीत कामरेड किल ह्वाक सिल का चित्रण करने वाले नाटक "हम खुश हैं" में कुछ खामियां हैं, क्योंकि वह वास्तविकता से मेल नहीं खाता। इस नाटक में भी अधिकतर अभिनेताओं और अभिनेत्रियों ने अपनी-अपनी भूमिका अच्छी तरह निभायी, क्योंकि उन्होंने मजदूरों के साथ काम करते हुए उनकी वास्तविक स्थितियों का गहरा और विस्तारपूर्वक अध्ययन किया था। फिर भी कुछ पात्रों ने वास्तविकता से नहीं सीखा और केवल थोथे शब्द बोले, जो वास्तविक तथ्यों के विपरीत थे। इसका नतीजा यह हुआ कि नाटक यथार्थवादी न रहा,

यद्यपि उसका सारतत्व मूलतः अच्छा था।

कार्य की स्थितियों में भी वह आदमी अपने क्रान्तिकारी काम को पूरा नहीं कर सकता जो अवाम और वास्तविकता से कट कर केवल थोथी बातें करता है।

पुराने जमाने का सम्राट या राजा या जापानी साम्राज्यवादी शासनकाल का कोई प्रान्तीय गवर्नर, काउंटी मुखिया या अन्य उच्चाधिकारी अवाम के बीच नहीं जाते थे और उन्हें ऐसा करने की जरूरत भी न थी। वे हमेशा अवाम पर अपने आत्मपरक दृष्टिकोण थोपते और इस बात की परवाह किये बगैर कि परिणाम क्या होगा, अपनी मर्जी के अनुसार उन्हें काम करने को बाध्य करते। इसी कारण हम कहते हैं कि वे जनता के वफादार सेवक न थे। वे तो नौकरशाह थे जो आज्ञा जारी किया करते थे।

नौकरशाही और क्रान्ति में कोई मेल नहीं। हम जिस क्रान्ति की सृष्टि कर रहे हैं, वह अवाम की भलाई के लिए है और अतीत के नौकरशाहों के तौर-तरीकों से पूर्णतया भिन्न है—उन नौकरशाहों के तौर-तरीकों से, जो अपने स्वार्थ में अंधे होकर नृशंस कार्रवाइयां करते थे। जब कोई अवाम के लिए क्रान्तिकारी काम करता है, तभी वह अपनी आशाओं को भी साकार करता है। निजी हितों को पूर्णतम और ठोस संरक्षण अवाम के लिए की जाने वाली क्रान्ति में ही प्राप्त होता है। इसलिए अवाम के वास्ते काम करना अपने वास्ते भी काम करना है।

अवाम की वास्तव में सेवा करने के हमारे क्रान्तिकारी कार्य के लिए हमारे प्रमुख अधिकारियों को हमेशा अवाम के बीच जाना चाहिए, तमाम मामलों को सुलझाने के लिए उनके साथ सलाह-मशविरा करना चाहिए, उन्हें हर बात साफ-साफ समझनी चाहिए और उनसे शक्ति तथा विवेक प्राप्त करना चाहिए। इसके साथ ही उन्हें अवाम कीं जरूरतों और समस्याओं का पता चला कर उन्हें तत्परता से हल करना चाहिए।

हमें जीवन और संघर्ष में हमेशा अपनेआपको अवाम के साथ एकात्म करना चाहिए और वास्तविकता पर स्वयं को आधारित कर उनके साथ उसी हवा में सांस लेनी चाहिए। हम केवल इसी तरह अवाम की शक्ति का पता कर सकेंगे, वास्तविकताओं को गहराई से समझ सकेंगे और अपने क्रान्तिकारी कर्तव्यों की सही परिपालन के लिए विश्वास भी प्राप्त कर सकेंगे। अवाम के बीच जाने और वास्तविकता को अपना आधार बनाने से ही समय पर तमाम समस्याओं की जानकारी प्राप्त करना और उन्हें सही ढंग से सुलझाना संभव हो सकता है।

पार्टी नीति की रूपरेखा की तैयारी का काम भी हमें आत्मनिष्ठ रीति से न कर वास्तविकताओं के सही विवेचन और अवाम की सोच के सही अध्ययन के आधार पर करना चाहिए। केवल उसी हालत में पार्टी की नीति अवाम की अपनी

नीति बनेगी और महान जीवंतता प्रदर्शित करेगी। हमारे देश में कृषि सुधार स्पष्टत: अवाम की आकांक्षाओं और वास्तविकताओं को प्रतिबिम्बित करता है और यह तथ्य हमारी पार्टी की नीति की महान जीवंतता का एक अच्छा दृष्टान्त है। जब हमने कृषि सुधार लागू किया, तो बहुत से लोगों ने उसका विरोध किया और प्रतिक्रियावादियों ने तूफान खड़ा कर दिया। इसके अलावा भूमि पट्टा सम्बन्ध बड़े जटिल थे। कुछ लोग दूसरे लोगों की भूमि पट्टे पर लेते और अपनी भूमि किराये पर दे देते थे; कुछेक अपनी भूमि के एक अंश पर जुताई करते और शेष अंश दूसरों को किराये पर दे देते। इसलिए हमारे लिए यह बात महत्वपूर्ण थी कि एक ऐसे कृषि सुधार कानून का प्रारूप तैयार करें, जो इन तमाम स्थितियों को पूरी तरह दृष्टिगत रखे। इस पेचीदा समस्या को सहीतौर पर सुलझाने के लिए हम व्यक्तिगत रूप से खेतिहर गांवों में गये। हमने एकमास तक किसानों के जीवन में बराबर का हिस्सा लेते हुए उनसे बातें कीं तथा विचार-विमर्श किया। चूंकि हम अवाम के बीच गये और उनसे सलाह ली, इसलिए हम तमाम समस्याओं के सही हल तैयार करने में समर्थ रहे। उदाहरणार्थ, हम यह निर्णय लेने में समर्थ रहे कि किस किस्म की भूमि का निपटान विधि से किया जाना चाहिए और किस परिमाण में भूमि जब्त की जानी चाहिए। परिणामस्वरूप हम कृषि-सुधार को लागू करने तथा अनभिज्ञ पेचीदा और कठिन जनवादी सुधारों की सफल क्रियान्विति के लिए किसान समुदाय का क्रान्तिकारी उत्साह प्राप्त करने में कामयाब रहे।

पार्टी ने जब कृषि सहकारों को संगठित किया, तो उसने अपने देहात की विशिष्ट वास्तविकताओं को भी अपना आधार बनाया और अवाम की शक्ति पर दृढ़तापूर्वक भरोसा किया। जब हमने अस्थायी रूप से और क्रमिक गति से कृषि सहकारों के गठन का कार्य शुरू किया तो हमने इस बारे में अवाम के साथ गम्भीरतापूर्वक विचार-विमर्श किया और उनकी ताकत को गोलबंद किया। ऐसा करके ही हम थोड़े समय में ही कृषि सहकारिता आन्दोलन के कठिन कर्तव्य को कामयाबी से पूरा कर पाये।

योजनाओं की तैयारी के बारे में भी यही कहा जा सकता है। केवल अवाम में जाने, उनसे सलाह लेने और वास्तविकताओं का विस्तारपूर्वक अध्ययन करन से ही यथार्थवादी और गतिशील योजनाओं को तैयार करना और उन्हें कामयाबी से सम्पन्न करना संभव हो सकता है।

हमारे सारे काम में एक दृढ़ नियम यह होना चाहिए कि अवाम में जाकर वास्तविकता का पता चलाया जाए। यह क्रान्तिकारी ढंग से काम करने वालों के लिए अपेक्षित सर्वाधिक महत्वपूर्ण गुणों में से एक है।

लेकिन, आप न अवाम के बीच गये हैं, न आपने वास्तविकताओं का पता किया है। यह आपकी शैली में एक बड़ी खामी है। आप बगैर अवाम में गये और वास्तविकता को जाने सारा काम आत्मपरक ढंग से निचली इकाइयों को दे देते हैं।

नौकरशाही और आत्मनिष्ठता हमेशा हाथ-से-हाथ मिलाकर चलते हैं। जो कोई आत्मपरक और नौकरशाही ढंग से काम करता है, उससे भूलें होना और काम में असफलता का हाथ लगना अनिवार्य है, क्योंकि वह अवाम की आकांक्षाओं और वास्तविकताओं से अनभिज्ञ होता है।

मैं जानता हूं कि अब आप सभी लोग कार्यक्षेत्र के दौरे लगाते हैं, क्योंकि हमारी पार्टी तकाजा करती है कि हमारे तमाम प्रमुख कार्यकर्ता छोंगसान-री विधि के अनुरूप वास्तविकता का पता चलाएं। आप विभिन्न कार्यस्थलों को जाते अवश्य हैं, लेकिन आप न अवाम से बात करते हैं न उनकी वास्तविकताओं का अध्ययन करते हैं। आप बिना किसी प्रयोजन के काम लेने वाले अधिकारी की तरह केवल इधर-उधर घूमते फिरते हैं। यह अवाम में जाने और वास्तविकताओं की खोजबीन करने का दृष्टिकोण नहीं है। यदि आप ऐसा करते हैं तो आप न तो भूमि, यन्त्रों और जनता से वाकिफ हो सकते हैं, न अवाम को गोलबंद कर सकते हैं और न ही मौके पर उत्पन्न होने वाली समस्याओं को सुलझा सकते हैं। अतः कार्यक्षेत्र के दौरों को आवश्यक रूप से मौके पर पथप्रदर्शन नहीं कहा जा सकता।

अवाम के बीच जाने का सही आशय यह है कि तमाम कामों के बारे में उनसे सलाह-मशविरा किया जाए, उन्हें सिखाया जाए, उनसे सीखा जाए, पिछड़े हुए लोगों को आगे बढ़े हुए लोगों के स्तर पर लाया जाए, और क्रान्तिकारी कर्तव्यों को पूरा करने के लिए उनकी तमाम शक्तियों को संगठित तथा गोलबंद किया जाए। वास्तविकता का पता चलाने का सही आशय यह है कि भूमि, कृषि यन्त्र, कृषि पशु, उर्वरक और बीज सरीखे उत्पादन के तमाम साधनों को आप स्वयं अपनी आंखों से देखें, ठोस अनुमान लगाएं, वास्तविक स्थितियों के अनुरूप सही नीति निर्धारित करें तथा मौके पर ही जटिल समस्याओं की गुत्थियों को सुलझायें।

लेकिन आप अपनी डेस्कों पर ही बैठे रहते हैं या जब बाहर काम के ठिकानों पर जाते हैं तो केवल इधर-उधर घूमते हैं और न अवाम से बातचीत करते हैं न वास्तविकता का अध्ययन करते हैं। यदि आप ऐसा करते हैं तो आप काम को आगे बढ़ाने की बजाय न कोई उपाय खोज सकते हैं और न ही किसी सही योजना की रूपरेखा तैयार कर सकते हैं। जो कोई बाहर कार्य-स्थलों पर जाने की बजाय, जहां वास्तविक संघर्ष चल रहा है, अपने कार्यालय में ही जमा रहता है या जो

कोई संघर्षरत अवाम के साथ बातचीत किये बिना दौरे लगाता है, उसमें क्रान्ति संपन्न करने के उत्साह का अभाव होगा और ऐसे व्यक्ति के नेता बनने का कोई भी मतलब नहीं है। चाहे कोई फैक्टरी बिल्कुल नयी ही क्यों न हो, हम तत्काल उसे देखने बाहर जाते हैं, तो इसका कारण यह नहीं कि हमें सम्बद्ध कर्मचारियों पर विश्वास नहीं है, बल्कि इसलिए कि हम सीधे अपनी आंखों से देखकर और अवाम से बातचीत करके ही हर चीज की गहरी समझ हासिल कर सकते हैं। इसी आधार पर हम कोई सही नीति तैयार कर सकते हैं।

प्रमुख कार्यकर्ताओं को अवाम की शक्ति और बुद्धि का पता करने, वास्तविकताओं का ठोस अध्ययन करने, हर चीज का सावधानी से आकलन करने और तमाम सुरक्षित भण्डारों तथा संभावनाओं को काम में लाना सीखने के लिए उनके बीच जाना चाहिए। तभी हम कह सकते हैं कि उन्होंने क्रान्तिकारी कार्य को बढ़ावा देने में सक्षम क्रान्तिकारी लक्षण प्राप्त कर लिये हैं।

तीसरे, क्रान्तिकारियों के रूप में अग्रणी अधिकारियों के कम्युनिस्ट लक्षण इस तथ्य में प्रकट होते हैं कि वे तमाम उद्यमों में हमेशा अवाम के अगुवा होते हैं और उनके लिए आदर्श प्रस्तुत करते हैं।

हम काम करते और अध्ययन करते हुए जीते हैं। जो लोग नेतृत्व में हैं, उन्हें काम, अध्ययन और जीवन के तमाम पहलुओं में हमेशा आदर्श होना चाहिए।

यदि कार्यकर्ता स्वतः दूसरे तमाम लोगों के लिए मिसाल पेश नहीं करते तो वे अवाम से भी कोई बड़ा तकाजा नहीं कर सकते। कुछ काउंटी पार्टी समिति अध्यक्ष स्वयं अपने कार्य में छोंगसान-री विधि का पालन न कर अक्सर अपने मातहतों की कार्यशैली में खामियां निकालते रहते हैं। यह अपने मातहतों को शिक्षित करने का कोई उपाय नहीं है।

कार्यकर्ताओं का व्यवहार वैसा ही होना चाहिए जैसा घरों में माता-पिता का व्यवहार होता है। यदि माता और पिता घर में आदर्श ढंग से व्यवहार करें तो बच्चे भी उनकी मिसाल का अनुसरण कर सद्व्यवहार करेंगे। यदि माता-पिता का व्यवहार खराब है तो बच्चे भी अवश्य ही उनका अनुसरण करेंगे। इसी प्रकार हमारे नेतृत्वकारी अधिकारियों द्वारा स्थापित मिसालें उनके मातहतों के काम पर भारी प्रभाव डालेंगी।

अतः जो लोग नेतृत्व में हैं, उनके लिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण बात है कि वे हर काम में व्यक्तिगत मिसाल पेश करें। व्यक्तिगत मिसाल पेश करने का अर्थ है आदर्श ढंग से काम करना।

जापान-विरोधी छापामार सेना में कार्यकर्ता हर काम में व्यक्तिगत मिसालें पेश किया करते थे। शत्रु से लड़ते हुए कमांडर हमेशा हमला करने में आगे रहते

और पीछे हटने के समय सबसे पिछली टुकड़ी के पीछे चलते। जब कोई कम्पनी पीछे हटती तो कम्पनी कमांडर एक प्लाटून नेता को टुकड़ी का किसी दिशा में नेतृत्व करने की आज्ञा देता और फिर वह खुद तथा कम्पनी का राजनीतिक मामलों का उपकमांडर पीछे का मोर्चा संभालते और पीछा करते शत्रु को खदेड़ते। यह जापान-विरोधी छापामार सेना में एक लौह-नियम था।

हमारी जापान-विरोधी छापामार सेना के कमांडर हमेशा खतरे का सबसे पहले सामना करते थे और कठिन दायित्वों को संभालते थे। क्रान्तिकारी कार्य स्वत: एक जटिल और मुश्किल कार्य है। क्रान्तिकारियों का उच्च चरित्र संकट का सामना होने पर इस आत्मबलिदानी और साहसिक संघर्ष में ही अभिव्यक्त होता है। जो लोग कठिन और जोखिम के कार्य में आदर्श स्थापित करते हैं, वही अवाम के विश्वस्त शानदार कमांडर बन सकते हैं।

सैनिक प्रशिक्षण में भी जापान-विरोधी छापामार सेना के कमाण्डर पहले खुद गोली चलाने और फिर दूसरों को गोली चलाने देने की मिसाल पेश करते थे। साधारण छापामारों से अधिक कड़ी मेहनत से प्राप्त अच्छी निशानेबाजी के आधार पर कमांडर ऐसा कर एक मिसाल पेश कर सकते थे।

कृषि सहकारों में भी, हमारे प्रबन्धक कार्यकर्ताओं को तमाम कार्यों में अगुवाई करनी चाहिए। धान की पौध की रोपाई के समय सबसे पहले प्रबन्ध-मण्डल के अध्यक्ष को धान के खेत में जाकर यह देखना चाहिए कि पौधों को उखाड़ कर उन्हें रोपित करना ठीक है या नहीं और उसे स्वयं से पौधों की रोपाई करनी चाहिये। तभी अवाम उसके इस आह्वान का सहर्ष स्वागत करेंगे कि "आओ हम सब काम पर बाहर चलें। धान की रोपाई का समय आ गया है।" जब कोई अधिकारी इस ढंग से काम करता है तो हम उसे नौकरशाह नहीं, बल्कि अवाम का वफादार क्रान्तिकारी कहते हैं।

कुछ प्रमुख कार्यकर्ता खुद कोई मिसाल पेश किये बिना केवल कथनी से क्रान्ति लाने का यत्न करते हैं। आपको कथनी से नहीं, वास्तविक करनी से, क्रान्ति को आगे बढ़ाना चाहिए। हम बूढ़े होकर भी व्यक्तिगत मिसाल पेश करने की कोशिश करते हैं। लेकिन यदि युवा लोग पीछे घिसटते रह जाएं तो वे कैसे क्रान्ति कर सकते हैं? युवकों में तो औरों से भी पहले मिसाल कायम करने की प्रबल भावना होनी चाहिए।

नेतृत्वकारी अधिकारियों को अध्ययन करने और तकनीक सीखने, दोनों कामों में ही मिसाल पेश करनी चाहिए। कुछ साथी अपने मातहतों को अध्ययन करने के लिए कहते हैं परन्तु खुद ऐसा नहीं करते। यह ठीक नहीं है।

प्रमुख कार्यकर्ताओं को अपने दैनिक जीवन में भी आदर्श होना चाहिए। जो

लोग अवाम का नेतृत्व करते हैं, उन्हें दूसरों से आगे होना चाहिए तथा सामग्रियों की मितव्ययिता, सफाई और सांस्कृतिक कार्य में तथा स्वस्थ जीवन पद्धति की स्थापना के लिए संघर्ष में मिसालें पेश करनी चाहिए।

कुछ साथी मद्यपान के लिए दूसरों की आलोचना करते हैं, जबकि खुद वे मद्यपान करते हैं। यदि वे ऐसा करते हैं तो उनके मातहत लोग उनकी बात पर कान न देंगे। अनैतिकता और निकम्मेपन के लिए दूसरों की आलोचना करने के लिए स्वयं संयत जीवन बिताना जरूरी है।

जब हम कहते हैं कि हमारे अग्रणी अधिकारी श्रम में अवाम से आगे हों तो हमारा यह मुद्दा नहीं होता कि वे उसी ढंग से काम करें, जिस ढंग से अवाम करते हैं। कृषि सहकारों के प्रबन्ध कर्मचारियों को प्रबन्ध और पथप्रदर्शन का कार्य भलीभांति करना होगा। उन्हें मात्र सहकारों का सदस्य ही नहीं होना चाहिए। कृषि सहकारों के प्रबन्ध कर्मचारियों के लिए कितने कार्य-दिवस काम करना अनिवार्य है, यह इस समय उचित रूप से निर्धारित किया गया है।

परन्तु कृषि सहकारों के कुछ प्रबन्ध कर्मचारी निर्धारित अनिवार्य श्रम में भाग नहीं लेते। प्रबन्ध कर्मचारियों को अनिवार्य श्रम से बचते हुए केवल पथ-प्रदर्शन देने के लिए दौरे नहीं करने चाहिए। प्रबन्ध कर्मचारियों को तो सहकारी सदस्यों के लिए मिसाल कायम करने, और दूसरे किसानों के भारी काम का व्यक्तिगत रूप से अनुभव करने तथा उनकी दिक्कतों से वाकिफ होने के वास्ते काम में भाग लेना चाहिए। इस कार्य में शामिल हो कर ही प्रबन्ध कर्मचारी किसानों को यथाशीघ्र भारी श्रम से मुक्त करने की आवश्यकता को उत्कट रूप से महसूस करेंगे और फिर तकनीकी क्रान्ति के लिए अधिक ठोस प्रयास करेंगे।

इस तरह जब हमारे अग्रणी कार्यकर्ता श्रम, अध्ययन और जीवन के तमाम पहलुओं में आदर्श स्थापित करेंगे तो वे अवाम का महान विश्वास अर्जित कर लेंगे और क्रान्तिकारी कर्तव्यों को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए उन्हें गोलबंद करने में समर्थ होंगे।

चौथे, क्रान्तिकारी के कम्युनिस्ट लक्षण सुनिश्चित विजय के प्राप्त होने तक किसी भी कठिनाई के आगे झुके बिना साहसपूर्वक संघर्ष करने की अदम्य जुझारू भावना के रूप में अभिव्यक्त होने चाहिए।

अपनी क्रान्तिकारी गतिविधियों के रास्ते में हमें कठिनाइयों से जूझना होगा। यदि सब कुछ सुचारु रूप से चलता रहे, तो कोई भी यह शिकायत नहीं करेगा कि क्रान्ति कठिन है, और फलतः तमाम लोगों के आदर्श—कम्युनिस्ट समाज—की रचना करना कोई मुश्किल न रह जायेगा। लेकिन जो लोग क्रान्ति में संलग्न हैं, उन्हें भी यह नहीं सोचना चाहिए कि उनका उद्देश्य इतनी सुगमता से प्राप्त हो

सकता है।

अग्रणी अधिकारियों को अपने काम में पैदा हो सकने वाली कठिनाइयों का हमेशा पहले ही अनुमान हो जाना चाहिए। उन्हें इन कठिनाइयों को काबू करने के लिए स्वयं को विचारधारात्मक दृष्टि से तैयार करना चाहिए और मार्ग में जो भी बाधाएं खड़ी हों, उन्हें तोड़ कर वीरतापूर्वक आगे बढ़ना सीखना चाहिए। अगर और भी बड़ी बाधाएं आ जाएं तो नेतृत्व वाले कार्यकर्ताओं को और भी ज्यादा साहस से काम लेना चाहिए और आकाश सरीखे ऊंचे मनोबल के साथ अवाम का नेतृत्व करना चाहिए।

जब लड़ाई में कोई जटिल स्थिति उत्पन्न होती है तो प्रत्येक सैनिक की नजरें अपने कमांडर के चेहरे पर केन्द्रित हो जाती हैं। यदि इस अवसर पर वह उलझन के लक्षण प्रकट करे और कठिनाई से उन्हें उबारने में असमर्थ रहे तो वे हतोत्साह हो कर लड़खड़ाने लग जायेंगे। लेकिन यदि वह लेशमात्र लड़खड़ाये बिना शत्रु को कुचलने में दृढ़-संकल्प और विश्वास का प्रदर्शन करे तो सैनिक दृढ़ता से एक-जुट हो जाएंगे और ज्यादा बहादुरी से लड़ेंगे।

मातृभूमि मुक्ति युद्ध में अस्थायी तौर पर पीछे हटने का समय हमारी जनता के लिए कड़ी आजमाइश का समय था। लेकिन हमारी पार्टी ने विजय में विश्वास न छोड़ा। इस कठिन स्थिति में भी हमारी सेना और जनता ने विजय में विश्वास के साथ वीरतापूर्वक संघर्ष जारी रखा, क्योंकि पार्टी निःसंकोच भाव से उनका नेतृत्व कर रही थी। इससे चीनी जन स्वयंसेवकों के साथ तालमेल से हमारी जन-सेना तत्काल शत्रु के खिलाफ जवाबी हमला कर सकी और एक अन्य विजयी अभियान शुरू कर सकी।

फिर भी कुछ क्षेत्रों में शत्रु के हमले से घबराकर नेतृत्वकर्ता कार्यकर्ता कठिनाइयों पर पार पाने के लिए पग उठाने में असमर्थ रहे जिससे कई लोग शत्रु के शिकार हो गये।

उस समय हमारी पार्टी ने रेडियो द्वारा तमाम लोगों को पहले ही सूचित कर दिया था कि यद्यपि हम अस्थायी रूप से पीछे हट रहे हैं, फिर भी हम शीघ्र ही पुनः आक्रमण प्रारम्भ कर देंगे। पार्टी ने पीछे हटने के सम्बन्ध में स्थानीय कार्य-कर्ताओं को व्यापक और ठोस निर्देश दिया। लेकिन कुछ अधिकारियों ने पार्टी के निर्देशों का पालन नहीं किया और वे भाग निकले। बाद में वे पकड़े गये और शत्रु के हाथों मार डाले गये।

कठिनाइयों के सामने आने पर नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं को भाग नहीं खड़े होना चाहिए था। उन्हें शत्रु से लोहा लेने में सक्षम प्रांतों में पार्टी सेल अध्यक्षों, अन्य धुरी पार्टी सदस्यों और आम लोगों को और संगठित करना चाहिए था।

यदि उन्होंने पीछे हटने के दौरान प्रत्येक जिले में दस या अधिक व्यक्तियों के जत्थे बनाये होते और अपने साथ एक या दो 'माल' चावल और एक-एक कुल्हाड़ी लेकर वे पर्वतों में चले गये होते और पीछे हटती जन-सेना के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर लड़े होते तो उनकी हालत ठीक रहती। यदि उन्हें लड़ना नहीं आता था तो लड़ना छोड़ कर पहाड़ों में चले जाना चाहिये था और जन-सेना के पुनः बढ़ाव का इंतजाम करना चाहिए था।

क्रान्तिकारियों ने पहाड़ों में सक्रिय रहकर १५ से २० सालों तक छापामार युद्ध लड़ा, लेकिन वे ४० दिन भी इस प्रकार के जीवन को सहन न कर सके और घरों को लौट गये। नतीजा यह हुआ कि "शान्ति रक्षा दल" के नीच शिकारी कुत्तों द्वारा पकड़े और मारे गये। ये दुखदायी घटनाएं थीं। बेशक मरते समय कई साथी चिल्लाए, "जनतन्त्र की सरकार और पार्टी जिन्दावाद", और उन्होंने अपने क्रान्तिकारी सिद्धान्त को न छोड़ा परन्तु मौत का कोई औचित्य न था क्योंकि वे बच सकते थे। उनकी मौत के लिए हमारे नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं में क्रान्तिकारी गुणों का अभाव ही पूर्णतया जिम्मेदार है।

हमारी क्रान्ति के मार्ग में कई उतार-चढ़ाव आएंगे। अन्ततोगत्वा सिर्फ वही लोग विजयी होंगे, जो साहसपूर्वक संघर्ष जारी रखेंगे तथा पेचीदा और कठिन क्रान्ति के मार्ग में किसी भी हालत में न रुकेंगे। लम्बे जापान-विरोधी छापामार संघर्ष के दौरान कठिनाइयों के सामने हमने कभी भी आंसू नहीं बहाये और न ही मायूसी का दामन थामा, लेकिन जब कभी हमारा कोई साथी वीरगति को प्राप्त हुआ तो हम रो पड़े। कठिनाइयों के सामने घबराने और मायूस होने वाले लोग क्रान्तिकारी नहीं बन सकते। जितनी ही ज्यादा कठिन स्थिति हो, उतना ही ज्यादा साहस आप में होना चाहिए और उतने ही ठंडे दिमाग से आपको संघर्ष की रण नीति तैयार करनी चाहिए।

कृषि सहकारों का प्रबन्ध कर्मीदल ऐसे कार्यकर्ता होते हैं, जिन पर हमारे देहात का महान दायित्व है। यह बड़े महत्व की बात है कि कृषि उत्पादन में दृढ़ता-पूर्वक वृद्धि लाने और गांवों में क्रातिकारी स्थितियों की किलेवंदी के लिए आप सब कठिनाइयों को परास्त करने की क्रान्तिकारी भावना प्राप्त करें।

जो भी दिक्कतें पैदा हों, हमारे कृषि सहकारों के प्रबन्ध कर्मचारियों को घबराना नहीं चाहिए, बल्कि उन्हें सहकारी सदस्यों के साथ गम्भीरतापूर्वक विचार-विमर्श करके उन पर काबू पाने के लिए कार्यवाहियां करनी चाहिए। यदि संघर्ष की सही रणनीति की रूपरेखा तैयार की जाए और प्रबन्ध कर्मचारी साहस से काम लें तथा सहकारी सदस्यों को अपना आदर्श पेश कर उनका नेतृत्व करें तो कोई भी बाधा ऐसी न होगी जिसे पार करना संभव न हो।

क्रान्तिकारियों के रूप में नेतृत्व कार्य अधिकारियों के कम्युनिस्ट लक्षणों में पांचवां और महत्वपूर्ण गुण यह है कि वे हमेशा अपने काम की पड़ताल करते और तत्परता से उस पर पुर्नविचार करते हैं। केवल वही कार्यकर्ता, जो नियमित रूप से अपने काम की समीक्षा करते हैं, अनुशासित और सुव्यवस्थित व्यक्ति बन सकते हैं और हमेशा नयी स्फूर्ति से काम करते हैं।

जो लोग क्रान्ति में संलग्न है, उन्हें प्रतिदिन अपने काम का जायजा लेकर उसका सार निकालना चाहिए। वे यह काम सोने से पूर्व या भोजन के दौरान कर सकते हैं। क्या मैंने वह सारा काम कर लिया है जो मुझे आज करना चाहिये था ? मैंने क्या नहीं किया है जो किया जाना चाहिए था ? क्या मैंने भाषण में कोई अनुचित बात की ? क्या मैंने किसी काम में अतिरेक कर दिया है ? यही है वह विधि, जिससे प्रति दिन, प्रति सप्ताह और प्रति मास के अपने काम का जायजा लिया जाना चाहिए। इस प्रकार प्रकट होने वाली तमाम त्रुटियों को दिलेरी से सुधारने और अपनी खूबियों को निरंतर विकसित करने की भावना उत्पन्न की जानी चाहिए।

इस प्रकार का जायजा व्यक्तिगत रूप से या किसी बैठक में सामूहिक रूप से लिया जा सकता है।

इस समय हम जो बैठक कर रहे हैं, अन्तिम विश्लेषण में उसका उद्देश्य भी अपने काम में मजबूत और कमजोर मुद्दों का सहीतौर पर पता करना और भविष्य में इस काम को सुधारना है। अतः कृषि सहकारों के प्रबन्ध कर्मचारियों को अपने काम में गुण-दोष का सही विवेचन करना चाहिए था और उन पर इस बैठक में विचार किया जाना चाहिए था।

लेकिन बहुत-से साथी अपने कार्य के मजबूत और कमजोर पहलुओं से वाकिफ नहीं हैं, क्योंकि वे अभी तक अपने काम का दिनानुदिन जायजा लेने की क्रन्तिकारी आदत नहीं डाल सके हैं। इसका अर्थ यह है कि अभी तक कई साथियों में अपने काम के प्रति जिम्मेदारी की भावना प्रखर नहीं है और उनमें उसमें सुधार लाने के क्रान्तिकारी उत्साह का अभाव है। क्रान्ति के प्रति सच्चा बना रहने के लिए हमें अपने कार्य का नियमित विश्लेषण करने की आदत डालनी होगी।

यही सामान्यतः काम का क्रान्तिकारी लक्षण है। आप सभी में अपने काम के बारे में सम्मान और जिम्मेदारी की भावना होनी चाहिए और आप सभी को एक क्रान्तिकारी से अपेक्षित कम्युनिस्ट लक्षण प्राप्त करने का हार्दिक प्रयास करना चाहिए।

२ : कृषि के पथप्रदर्शन में सुधार के बारे में

अब मैं अपनी कृषि के पथप्रदर्शन कार्य के बारे में बोलना चाहता हूं।

चूंकि मैं एक अन्य बैठक में कृषि के पथप्रदर्शन के सिलसिले में उठायी गयी महत्वपूर्ण समस्याओं की पहले ही चर्चा कर चुका हूं, अतः आज इस बैठक में मैं इन समस्याओं में से कुछेक का ही सांगोपांग निरूपण करूंगा।

सबसे पहले प्रान्तीय जन-समितियों, नगर और काउंटी कृषि सहकार प्रबन्ध समितियों और कृषि सहकारों में नियोजन के स्तर को ऊंचा किया जाना चाहिए।

हमारे ग्रामीण अर्थतन्त्र के प्रबन्ध में नियोजन अभी भी घटिया है। इस समय भूमि और यन्त्रों के उपयोग की दर कम है और श्रम को युक्तियुक्त ढंग से संगठित नहीं किया गया है। ये खामियां मुख्यतः घटिया नियोजन का परिणाम हैं। यही कारण है कि पार्टी की केन्द्रीय समिति के हाल के पूर्णाधिवेशन में नियोजन के स्तर को ऊंचा उठाने पर बहुत जोर दिया गया था।

योजना वास्तविकता के अनुरूप होनी चाहिए। यदि हम वास्तविकताओं की अनदेखी कर अपनी आत्मपरक लालसाओं के अनुसार योजनाएं तैयार करते हैं तो उनसे कुछ न होगा। हमें पहले वास्तविकताओं को देखना चाहिए और भूमि, यन्त्रों, कृषि पशुओं, जनशक्ति आदि की ठोस जानकारी प्राप्त करनी चाहिए और तमाम संभावनाओं का विस्तृत आकलन करना चाहिए और इस आधार पर योजना तैयार करनी चाहिए।

इस प्रकार की योजना ही ऐसी यथार्थ योजना होगी जिसे पूरा करना होगा। पिछले वर्ष के परिणामों को ही अपनी वास्तविक संभावनाएं करार देकर उन्हीं के आकलन करना निष्क्रिय मनोवृत्ति का परिचायक है। हमारी वास्तविकताएं निरन्तर बदलती रहती हैं और हमारी उत्पादक शक्तियां वर्ष प्रति वर्ष बढ़ती जाती हैं। इसलिए तमाम सुरक्षित भंडारों और संभावनाओं का विकासशील वास्तविकताओं और उत्पादन शक्तियों के अनुरूप आकलन करके सकारात्मक योजनाएं तैयार करना जरूरी है। तभी हमारी योजना न केवल यथार्थवादी होगी बल्कि एक सक्रिय भूमिका निभाने के योग्य भी होगी।

एक अन्य महत्वपूर्ण बात है भूमि का ठीक ढंग से प्रयोग करना।

कृषि में उत्पादन का मूल साधन भूमि है। यन्त्रीकरण और सिंचाई के लिए भूमि पूर्व शर्त है। बगैर इसके यन्त्र और पानी निष्प्रयोजन होंगे, भले ही वे कितनी भी प्रचुरता से उपलब्ध हों।

हमारे देशवासियों की आजीविका के लिए हमारी भूमि एक बहुमूल्य निधि है। यह हमारे पुरखों से विरसे में मिली हमारी निधि है। हमारे पास अपनी ३,०००

री भूमि के अलावा और कोई भूमि नहीं है। इसका उचित ढंग से प्रशासन कर तथा इसमें सुधार कर हमें इस भूमि से बेहतर लाभ उठाना होगा। यदि हम अपनी भूमि का सर्वोत्तम उपयोग करें तो तमाम कोरियाई जनता यथेष्ठ बहुलता का जीवन बिता सकती है।

लेकिन अभी भी ऐसी कई परिपाटियां कायम हैं, जिनकी वजह से भूमि का बे-असर उपयोग किया जाता है या उसे बेकार पड़े रहने दिया जाता है। कुछ क्षेत्रों में मैदानों में विश्रृंखल तरीके से मकान और फैक्टरियां निर्मित कर ली जाती हैं। सम्बद्ध विभागों द्वारा जमा किये गये आंकड़ों के अनुसार योनान काउंटी ने १२२ मामलों में ५७ छोंगबो भूमि बर्बाद की है और पाएछोन काउंटी ने ३४३ मामलों में ७३ छोंगबो भूमि। ओंगजिन काउंटी में ६,८०० प्योंग उपजाऊ भूमि अलग कर दी गयी है और कहा जाता है कि उस पर चावल और आटा मिल का निर्माण होगा, लेकिन वह अभी तक बेकार पड़ी है और उस पर कोई भी निर्माण कार्य नहीं हो रहा है।

इस समय खेतों के किनारों को बेकार पड़े रहने देने की एक आम परिपाटी विद्यमान है।

हालांकि पार्टी ने लम्बे समय से यह नारा दिया है कि "आओ हम एक इंच धरती भी बिना जुताई-बुवाई के न रहने दें", फिर भी इस परिपाटी का कायम रहना एक बहुत ही गम्भीर मामला है। हमें इस त्रुटि को अविलम्ब दूर कर देना चाहिए।

भूमि की बर्बादी को खत्म कर उसमें ठोस से सुधार किये जाने चाहिए। काउंटी कृषि सहकारी प्रबन्ध समितियों को भूमि की उर्वरता और हर परत की बनावट का एक विश्लेषण करना चाहिए। कृषि सहकारों को प्रत्येक भूखण्ड की आड़ी और खड़ी लकीरें तैयार करनी चाहिए और प्रत्येक भूखण्ड की परतों के नमूने तैयार करने चाहिए, ताकि उसे सीधे उसकी अपनी प्राकृतिक अवस्था में देखा जा सके। और उनके पास प्रत्येक भूखण्ड के जमीन-विश्लेषण की एक तालिका होनी चाहिए। इन वैज्ञानिक आंकड़ों के आधार पर प्रस्तावित भू-सुधार लागू किये जाने चाहिए।

कुशल भूमि सुधार से ऊसर भूमि खत्म हो जायेगी। हमारे यहां की एक पुरानी कहावत है कि अच्छे किसान के लिए कोई भी भूमि खराब नहीं होती और आज हमारे किसानों के लिए यह एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त होना चाहिए। खाइयां खोद कर गीली भूमि से नमी दूर करना और सिंचाई द्वारा खुश्क भूमि की आर्द्रता बढ़ाना जरूरी है। बहुत ज्यादा अम्लयुक्त भूमि को सुधारने के लिए बुझा हुआ चूना इस्तेमाल करना चाहिए तथा ऊसर भूमि को खाद का बहुतायत से प्रयोग

करके और नयी मिट्टी बिछा कर उपजाऊ बनाया जाना चाहिए।

इसके अलावा खेतों की पुनर्व्यवस्था के काम को उचित ढंग से किया जाना चाहिए। खेतों की अच्छी पुनर्व्यवस्था यन्त्रीकरण के लिए अनुकूल स्थितियां उपलब्ध करेगी और भूमि का अधिक कारगर उपयोग संभव बनाएगी। इस समय हम छोटे भूखण्डों पर खेती नहीं करते, जैसा कि निजी किसानी अर्थतन्त्र के दिनों में किया करते थे। चूंकि तमाम देहाती अर्थतन्त्र सहकारी कृत हो चुका है, इसलिए हम धनखेतों के बीच तथा बागनी (सूखे) खेतों के बीच अनावश्यक मेड़ों को हटा कर खेतों के विभाजन को अपने इच्छानुसार पुनर्व्यवस्थित कर सकते हैं और इस प्रकार भूमि की उपयोग दर में उल्लेखनीय वृद्धि कर सकते हैं।

जिन क्षेत्रों में फालतू जनशक्ति, मशीनें आदि हैं, वहां भूमि-सुधार और भूमि-पुनर्व्यवस्था के साथ-साथ भूमि-विकास कार्य को भी हाथ में लिया जाना चाहिए। परन्तु रयोंगयोन फार्म और कुछ अन्य क्षेत्रों में भूमि का उद्धार नहीं किया गया, यद्यपि किया जा सकता था। यह गलत है। अपने प्रान्त, काउंटी और कृषि सहकारों की विशिष्ट स्थितियों का ठोस आकलन करने के बाद जहां कहीं भी संभव हो, आपको भूमि का विकास करना चाहिए।

इसके बाद महत्व का विषय है भूमि का अच्छी तरह संरक्षण करना। भू-संरक्षण के लिए यह जरूरी है कि अपनी नदियों में उचित रूप से सुधार लाया जाए। चूंकि आपने ऐसा नहीं किया है, इसीलिए बहुत-सी कीमती भूमि हर बरसात में कट कर बह जाती है।

एक इंच भूमि का भी नुकसान रोकने के लिए जहां जरूरी हो, पत्थरों की दीवारें और तटबंध निर्मित किये जाने चाहिए और खाइयों की उपयुक्त व्यवस्था की जानी चाहिए।

ग्रामीण अर्थतन्त्र में सिंचाई में तेजी लायी जानी चाहिए। हम अब तक कृषि के लिए सिंचाई का काफी काम कर चुके हैं। परन्तु इसको मिला कर भी सिंचाई की व्यवस्था पूरी खेती का एक खास बड़ा अंश मात्र है। हमें और भी अधिक सक्रियता से आगे बढ़ते हुए अपने सिंचाई कार्य को पूर्ण करना होगा।

पिछले दौर में दक्षिण ह्वांगहाए प्रान्त के सिंचाई कार्य में मुख्य खामी यह थी कि बहुत अधिक परियोजनाएं प्रारम्भ कर दी गयी थीं। वह व्यक्ति योग्य अधिकारी नहीं कहला सकता जो परियोजनाएं शुरू तो कर देता है मगर यह नहीं जानता कि उन्हें समाप्त कैसे करना है। कोई भी क्रान्तिकारी स्वभाव से ही अपनी शक्तियों को बिखरा कर बे-असर नहीं कर देता, बल्कि वह तो अपनी क्षमताओं के अनुसार काम को संगठित करता है और एक समय पर एक कार्य को पूरा करता है।

आप कुछ भी करें, लेकिन आपको परियोजनाओं को एक-एक करके ही पूरा करना चाहिए। कम्युनिस्टों को शत्रु के साथ लड़ाई और प्रकृति के साथ संघर्ष में ऐसा ही करना चाहिए।

पिछले वर्ष ही आपने अपनी समर्थता का सही-सही अनुमान लगाये बिना १८६ परियोजनाएं शुरू कर दीं। परिणामस्वरूप १२८ परियोजनाएं अभी तक अधूरी पड़ी हैं। कहा जाता है कि इस समय दक्षिण ह्वांगहाए प्रान्त में कुल मिला कर १,८३,००० छोंगबो धनखेत और शुष्क खेत सिंचाई प्रणाली की परिधि में आते हैं। लेकिन वास्तविक आंकड़े १,२२,००० छोंगबो से अधिक नहीं हैं क्योंकि आपने अधूरी परियोजनाओं को भी गिन लिया है। आपको एक ही समय १२८ अधूरी परियोजनाओं को पूरा करने के प्रयास में अपने साधनों का बिखराव न कर कुछेक परियोजनाओं पर उन्हें केन्द्रित करना चाहिए था और उनके पूरा हो जाने पर शेष को एक-एक करके पूरा करना चाहिए था।

अपनी मौजूदा सिंचाई सुविधाओं की सुचारु व्यवस्था और कारगर इस्तेमाल अति महत्वपूर्ण है और नयी सुविधाओं का निर्माण भी महत्वपूर्ण है। परन्तु इस समय बड़ी खामी यह है कि हमारी वर्तमान सिंचाई सुविधाओं की उचित रूप से मरम्मत या सुधार नहीं किया जाता और नदी तट बांधों की अच्छी तरह रक्षा नहीं की जाती। कुछ क्षेत्रों में न केवल सिंचाई सुविधाओं की मरम्मत नहीं हुई है, बल्कि नदी तट बंधों को ढंकने वाली तृणयुक्त मिट्टी को खोद कर ले जाया गया है। बताया गया है कि उसे खेतों में नयी मिट्टी बिछाने के प्रयोजन से ले जाया गया है। यह गम्भीर भूल न होती, यदि हमारे प्रमुख कार्यकर्ताओं ने सिंचाई सुविधाओं के प्रशासन की ओर कुछ ध्यान दिया होता। उन्हें हमारी सिंचाई सुविधाओं के सुधार और मरम्मत पर और उनके बेहतर उपयोग पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

फिर जल-नियन्त्रण के कार्य का सुचारु रूप से संचालन होना चाहिए। ग्रामीण अर्थतन्त्र में उत्पादन के संगठन में जल-नियन्त्रण को अति महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। तथापि आप जल-नियन्त्रण का उचित संचालन करने में असमर्थ रहे हैं। जहां एक जगह जल के अभाव में फसलें अच्छी तरह नहीं उगतीं, वहां दूसरी जगह जल बर्बाद किया जाता है। पानी की बर्बादी को रोकने, जल-साधनों का निरन्तर पता करने और एक ही जल का एक से अधिक बार उपयोग के सिद्धान्त की स्थापना के लिए व्यापक उपायों का किया जाना जरूरी है।

इसके बाद कृषि के यन्त्रीकरण को और जोरों से तेज किया जाना चाहिए। कृषि यन्त्रीकरण के स्तर को ऊंचा उठाने के लिए सबसे पहले ट्रैक्टरों और ट्रकों की संख्या बढ़ाना जरूरी है। इस वर्ष जुताई का मौसम प्रारम्भ होने से पूर्व दक्षिण

ह्वांगहाए प्रान्त को २०० से अधिक ट्रैक्टर और ट्रक उपलब्ध करना असंभव है। परन्तु अगले साल अच्छी खेती आश्वस्त करने के लिए वर्ष के उत्तरार्द्ध में और भी ट्रैक्टर तथा ट्रक उपलब्ध कर दिये जाएंगे।

भारी संख्या में कृषि यन्त्रों के विद्यमान होने मात्र से कोई लाभ नहीं है। महत्वपूर्ण बात तो यह है कि उनके काम की दर को बढ़ाया जाए और अधिक प्रभावशाली ढंग से उनका उपयोग किया जाए। दक्षिण ह्वांगहाए प्रान्त में ट्रैक्टरों की संचालन दर गत वर्ष ७३ प्रतिशत से अधिक नहीं थी। इसका अर्थ यह है कि प्रान्त में प्रतिदिन औसतन २७० ट्रैक्टर बेकार खड़े रहे। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि तीन काउंटियों के कृषि यन्त्र केन्द्रों ने एक वर्ष तक कोई काम नहीं किया।

ट्रैक्टरों की संचालन दर में आमूल वृद्धि की जानी चाहिए। इसके लिए पार्टी केन्द्रीय समिति की राजनीतिक समिति के निर्णय के अनुसार तीन महीने के भीतर इस्तेमाल के लिए पर्याप्त फालतू पुर्जे प्राप्त किये जाने चाहिए और समय से ट्रैक्टरों के निरीक्षण और मरम्मत की एक कड़ी प्रणाली स्थापित की जानी चाहिए। जहां तक दक्षिण ह्वांगहाए प्रान्त में ट्रैक्टरों के लिए फालतू पुर्जों के भंडारों का सवाल है, मैं देखता हूं कि उच्च किस्मों के पुर्जों की जरूरत है जिनमें से केवल २१३ प्राप्त किये गये हैं और भंडार में उनकी कुल संख्या ५,८२,००० होनी चाहिए जबकि वहां अधिक से अधिक २२,००० पुर्जे या ३.८ प्रतिशत मौजूद हैं। कृषि मन्त्रालय को इस समस्या के समाधान के लिए तेजी से कदम उठाने चाहिए। प्रान्तीय समिति को भी इस मामले में रुचि लेनी चाहिए।

कृषि यन्त्र मरम्मत केन्द्रों को ट्रैक्टरों की मरम्मत और रखरखाव में सुधार करना चाहिए ताकि समय से जुताई आश्वस्त की जा सके। हमारे ट्रैक्टरों की उपयोग दर बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकार की ट्रेलर मशीनों के उत्पादन में वृद्धि की जानी चाहिए।

रोपाई और निराई के काम में यन्त्रों का उपयोग किया जाना चाहिए। कुछ धनखेतों में यन्त्रों की मदद से फसल की कटाई की जानी चाहिए और गहाई के काम को भी यन्त्रीकृत किया जाना चाहिए। यद्यपि इस वर्ष तमाम बागनी खेतों में रोपाई के काम को यन्त्रीकृत करना असंभव है, फिर भी आपको अगले वर्ष ऐसा करने के लिए निश्चित तैयारियां करनी चाहिए। कृषि के यन्त्रीकरण में वृद्धि करके ही किसानों को कठोर श्रम से त्राण दिलाना और यन्त्रीकरण द्वारा मुक्त होने वाली श्रम-शक्ति को उन शाखाओं में स्थानांतरित करके जहां अभी तक यन्त्रीकरण लागू नहीं किया गया है, कृषि उत्पादन के सामूहिक विकास को आश्वस्त करना संभव होगा।

आधुनिक कृषि यन्त्रों के साथ-साथ मवेशियों द्वारा चलाये जाने वाले यन्त्रों और मध्यम तथा लघु कृषि उपकरणों का भी कारगर ढंग से उपयोग किया जाना चाहिए। हमारे देश में केवल विशाल आकार की मशीनों से कृषि कार्य नहीं किया जा सकता, क्योंकि यहां कृषि में श्रम प्रधान तौर-तरीकों से काम लिया जाता है और खासतौर पर यहां ढलवां क्षेत्र तथा धनखेत बहुत हैं। जब तक भविष्य में पर्वतीय ढलानों के लिए उपयुक्त कृषि यन्त्र निर्मित नहीं होते, तव तक पर्वतीय क्षेत्रों में मध्यम और लघु आकार के कृषि उपकरणों के उपयोग के सिवाय कोई चारा नहीं है। चूंकि धान की रोपाई अभी तक यन्त्रीकृत नहीं हो पायी है और एक फसल में दूसरी फसल तथा मिलवां फसलें बोना व्यापक रूप से जारी है, इसलिए हमें मवेशियों द्वारा चलाये जाने वाले निराई यंत्रों तथा अन्य मध्यम और लघु कृषि उपकरणों का उपयोग करना होगा। ईंधन की समस्या को पूरी तरह सुलझाये जाने तक माल ढोने के लिए बैलगाड़ियों का भी व्यापक उपयोग किया जाना चाहिए।

अतः इस वहाने कि ट्रैक्टरों और ट्रकों की तादाद बढ़ रही है, बैलगाड़ियों को तज देना और पर्याप्त संख्या में मध्यम और छोटे कृषि उपकरण उपलब्ध न करना गलत है। कहा जाता है कि कतिपय स्थानों में बैलगाड़ियां नहीं खरीदी जातीं, क्योंकि अधिक ट्रक और ट्रैक्टर उपलब्ध किये जा रहे हैं। यह भारी गलती है। छाएरयोंग काउंटी में प्रत्येक कृषि सहकार के पास केवल सात बैलगाड़ियां हैं जबकि बैलों की संख्या औसतन ७० है। इसका अर्थ यह हुआ कि हर दस बैलों पर एक गाड़ी है। ओंग-जिन काउंटी की सोहाए-री में ८८ बैल और केवल ३३ बैलगाड़ियां और २३ हैंगी हैं। कांगरयोंग काउंटी की ओबोंग-री की कार्यटोली नं० ६ द्वारा प्राप्त किये गये कृषि उपकरणों से उनकी बैलगाड़ियों की जरूरत का २४ प्रतिशत, खाद बिछाने वाले कांटों का २९ प्रतिशत, और पांचा यंत्रों का ४१ प्रतिशत भाग ही पूरा होता है।

प्योकसोंग काउंटी की सोवोन-री की कार्य टोली नं० १५ के पास कृषि उपकरणों की छानबीन का परिणाम अगले पृष्ठ की तालिका में दिया गया है :

कुछ एक कृषि सहकारों के इन दृष्टांतों से प्रकट होता है कि मध्यम और छोटे कृषि उपकरणों की बहुत ज्यादा अनदेखी की जा रही है। यह एक बड़ी गंभीर गलती है। छोटे और मध्यम कृषि उपकरणों को पर्याप्त संख्या में प्राप्त करने की जरूरत पर पहले ही १९६० में छोंगसान-री के हमारे पथप्रदर्शन की प्रक्रिया में जोरदार शव्दों में बल दिया जा चुका है। लेकिन लगता है कि दो साल वाद अर्थात आज छोंगसान-री भावना को कतई भुला दिया गया है।

मध्यम और छोटे कृषि उपकरणों के बगैर हम खेती नहीं कर सकते। आपको

हमारे देश की वास्तविक स्थितियों को और ज्यादा ध्यान में रखना चहिए। यदि आप अब भी कृषि मवेशियों और मध्यम तथा छोटे कृषि उपकरणों के इस्तेमाल को जरूरी समझते हैं तो आपको केवल बड़े कृषि यन्त्रों पर ही निर्भर नहीं रहना चाहिए, बल्कि आपको स्वभावतः इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि मध्यम और छोटे उपकरण उपलब्ध हों।

कृषि उपकरण	अपेक्षित संख्या	प्राप्त संख्या	टूटे हुए	प्रयोग के योग्य	टिप्पणियां
होरी हल	८	६	४	२	
हैरो	९	९	६	३	
हाथ के तिहाई यंत्र	२१	२१	३	१८	
छोटी कुदाल की सुधरी किस्म	२५	१९	१८	१	
पांचे रेक्स	४८	३९	२३	१६	
कुदालें	२८	१६	१२	४	
हैंगियां	२	—	—	—	

ग्रामीण अर्थतंत्र के प्रबंध के महत्वपूर्ण कर्तव्यों में एक यह है कि खाद का स्रोत पैदा किया जाए। इस समय हमारे कृषि सहकारों में यह काम बहुत ही नाकाफी है। अधिक उत्पादन के लिए अच्छी भूमि और अच्छी मशीनें ही काफी नहीं हैं। बेशक वे अच्छी खेती के लिए जरूरी हैं परन्तु प्रचुर मात्रा में उर्वरक प्राप्त करना भी महत्वपूर्ण है, जोकि घटिया भूमि को भी अधिक फसल देने के योग्य बना सकता है। अतः खाद के स्रोतों की प्राप्ति के लिए और अधिक सक्रिय संघर्ष छेड़ा जाना चाहिए।

सबसे बढ़कर यह जरूरी है कि इस बारे में जोरदार प्रयास किया जाए कि कोई भी किसान परिवार ढोर-डंगर के बिना न हो। इसलिए हमें आंदोलन चलाना चाहिए कि हर किसान कुटुंब दो सूअर पाले। सूअर-पालन न-केवल मांस उत्पादन के लिए ही बलिक खाद के स्रोत के रूप में भी बड़ा महत्वपूर्ण है।

यह किसानों की आमदनी बढ़ाने में भी बहुत महत्व रखता है। यदि एक सूअर का औसत मूल्य १०० वोन हो तो दो सूअर २०० वोन के होंगे। यह एक बड़ी आमदनी है। यदि कपड़े का मूल्य ३ वोन प्रति मीटर है तो २०० वोन ६० मीटर

से अधिक कपड़ा खरीदने के लिए काफी होंगे।

लेकिन इस समय ह्वांगहाए प्रांत में कोई किसान परिवार ढोर-डंगर के बिना न हो, इस अभियान की गति असंतोषजनक है। हाएजु नगर में बिना ढोर-डंगर किसान परिवारों का अनुपात २४ प्रतिशत, प्योकसोंग काउंटी में ३१ प्रतिशत, कांगरयोंग काउंटी में ४१ प्रतिशत, ओंगजिन काउंटी में ३६ प्रतिशत, ताएतान काउंटी में २२ प्रतिशत, छांगयोन काउंटी में १८ प्रतिशत, उनरयुल काउंटी में ४२ प्रतिशत, उनछोन काउंटी में ४६ प्रतिशत, अनाक काउंटी में ४९ प्रतिशत, पाएछोन काउंटी में ४० प्रतिशत, योनान काउंटी में ३० प्रतिशत और छोंगदान काउंटी में ४१ प्रतिशत है। निःसंदेह ये आंकड़े सारी कहानी नहीं कहते। इन से यह पता करना संभव नहीं है कि किसान परिवारों के पास एक या दो-दो सूअर हैं या नहीं।

कुछ भी हो बिना घरेलू पशुओं के भारी संख्या में कृषि परिवारों के विद्यमान होने का अर्थ यह है कि आपने अभी तक खाद-उत्पादन के लिए ईमानदारी से प्रयास नहीं किये हैं। हमारा अनुभव बताता है कि एक सूअर की लीद में बुझा हुआ चूना या मिट्टी मिलाने से एक साल में २० टन खाद तैयार हो सकती है। इस तरह यदि प्रत्येक खेतिहर परिवार पूरे वर्ष दो सूअर पाले तो वह ४० टन तक कार्बनिक खनिज उर्वरक पैदा कर सकता है। हमें अपने किसानों में इस तथ्य का व्यापक रूप से प्रचार करना चाहिए और इन सराहनीय अनुभवों को लोकप्रिय बनाना चाहिए। हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि निकट भविष्य में कोई भी किसान कुटुंब ऐसा न रह जाय जिसके पास चौपाए न हों।

इसके अलावा मैदानों में खाद का स्रोत प्राप्त करने के लिए मीट या मांस को सड़ा कर खाद के रूप में उसका प्रयोग किया जाना चाहिए, यद्यपि ईंधन के रूप में प्रयोग की दृष्टि से भी यह बड़ा महत्व रखती है। घास-फूस को अन्य कामों के लिए प्रयोग में नहीं लाया जाना चाहिए बल्कि उसे सड़ने दिया जाना चाहिए और फिर धान के खेतों के ऊपर बिछा दिया जाना चाहिए। घास-फूस का खाद के रूप में अधिक प्रयोग करने के लिए हमें तिनकों की टोकरियां यथासंभव कम से कम संख्या में बनानी चाहिए और मकानों पर टाइलों की छतें डालनी चाहिए ताकि इस काम के लिए फूस का प्रयोग न हो। हमें ईंधन की समस्या को हल करना चाहिए ताकि फूस का ईंधन के रूप में इस्तेमाल न हो। इसके लिए स्थानीय क्षेत्रों में जलाने की लकड़ी और कोयला के केन्द्रों, पिट और कोयला की खुदाई के केन्द्रों की स्थापना करने का सुझाव अच्छा है। पिट की खुदाई और अधिक विकसित की जानी चाहिए और पर्वतों से दूर के क्षेत्रों को जलाने की लकड़ी और कोयला राज्य की ओर से उपलब्ध किये जाने चाहिए।

बहुतायत से खाद पैदा करने के लिए घास की भारी परिमाण में कटाई की जानी चाहिए। खासतौर पर पर्वतीय क्षेत्रों में गर्मियों में घास कटाई का जोरदार अभियान चलाया जाना चाहिए। हम पिछले साल दक्षिण प्योंगान प्रांत में इस लिए भारी मात्रा में खाद का उपयोग कर सके कि गर्मियों में, वहां बहुत-सी घास काटी गयी थी। फिर भी गर्मियों में, जबकि घास लम्बी होती है, आप उसका कुछ भी नहीं करते, परंतु सर्दियों के शुरू हो जाने पर आप घास काटने दौड़ पड़ते हैं। अतः यह स्वाभाविक ही है कि सिलसिला ठीक नहीं चल पाता।

मैं समझता हूं कि हमें चिकनी मिट्टी और रेत मिली मिट्टी इकट्ठी करना बंद कर देना चाहिए। इनके स्रोतों का क्षय हो चुका है क्योंकि नदियों की तलहटियों को तीन साल से खुरचा जाता रहा है। अच्छा रहे कि उनको कुछ समय तक क्षरित होने के लिए छोड़ दिया जाए और उसके बाद उन्हें फिर से इकट्ठा करना शुरू किया जाए।

प्रांत और काउंटियों को हमेशा खाद उत्पादन की स्थिति का सही अनुमान होना चाहिए और उन्हें इस क्षेत्र का नियंत्रण करना चाहिए। प्रबंधमंडलों के जो अध्यक्ष घास कटाई की उपेक्षा करें, उनकी आलोचना की जानी चाहिए और खाद उत्पादन में सक्रिय रहने वाले सहकारी सदस्यों की मिसालों का प्रचार करने के लिए ठोस कोशिश की जानी चाहिए।

पिछले साल घास कटाई के घटिया काम के लिए हमने दक्षिण प्योंगान प्रांत के अधिकारियों की आलोचना की थी। आलोचना के बाद उनके काम में सुधार हुआ। जैसा कि मैं हमेशा कहता हूं आलोचना वैसे ही है जैसे कोई व्यक्ति अपना मुंह धो ले। जब कोई बच्चा अपना मुंह नहीं धोता तो उसके माता-पिता को उसका मुंह धुला देना चाहिए, भले ही वह अनिच्छुक हो।

जब पिछले साल हमने दक्षिण प्योंगान के अधिकारियों को अपना मुंह धोने के लिए मजबूर किया तो हमारा ख्याल था कि उससे दक्षिण ह्वांगहाए प्रांत क अधिकारी भी अपना मुंह धोने को उत्साहित होंगे। लेकिन वे उत्साहित नहीं हुए। परिणामतः उस प्रांत में कोई सुधार नहीं हुआ जबकि दक्षिण प्योंगान प्रांत में हालत ठीक रही। इस साल हमने अग्रिम रूप से सलाह दे दी है, इसलिए आपको सहर्ष और पुरजोर ढंग से घास कटाई के काम के लिए आगे बढ़ना चाहिए।

यदि आप कामरेड छोन पिल न्यो और ली सिन जा की तरह दृढ़तापूर्वक काम करें तो खाद उत्पादन भी सफल रहेगा। प्रत्येक सहकार में इन जैसे सक्रिय सदस्य होने चाहिए। इस बात का कोई कारण नहीं है कि सैकड़ों और हजारों सहकारी सदस्यों के बीच ऐसे लोग न हों। यदि प्रबंध कर्मचारी लोगों के साथ अच्छा काम करें तो वे इन साथियों से भी आगे निकल जाने में समर्थ होंगे। इन सक्रिय

कार्यकर्ताओं के दृष्टांत को लोकप्रिय किये जाने पर खाद उत्पादन में भी निश्चित रूप से भारी वृद्धि हो सकेगी।

खाद भारी परिमाण में उत्पादित करने के साथ-साथ रासायनिक खाद का अधिक प्रभावशाली ढंग से उपयोग किया जाना चाहिए। इस समय रासायनिक खाद के उपयोग के परिमाण में हमारे देश का समाजवादी देशों में अपेक्षाकृत ऊंचा स्थान है। लेकिन यद्यपि हम भारी मात्रा में रासायनिक खाद का उपयोग करते हैं, फिर भी हमारे परिणाम उतने ऊंचे नहीं हैं जितने कि अन्य देशों के। अब काउंटी कृषि सहकारी प्रबंध समितियों का गठन हो लेने के बीच रासायनिक खाद का कारगर उपयोग करने के लिए भूमि-विश्लेषण और तकनीकी पथप्रदर्शन का कार्य समुचित तरीके से चलाया जाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त यह आवश्यक है कि देहात में विद्युत शक्ति की खपत पर अपना नियंत्रण मजबूत किया जाये।

अभी तक कृषि के क्षेत्र में विद्युत शक्ति की किफायतशारी की समस्या पर काफी जोर नहीं दिया गया है, यद्यपि उद्योग के क्षेत्र में इस समस्या पर गंभीर विचार-विमर्श हो रहा है। कई कृषि सहकार अभी भी २० अश्वशक्ति की पम्पिंग मशीनों का प्रयोग कर रहे हैं जबकि १० अश्वशक्ति के पम्पों से काम चल सकता है। यद्यपि यहां १० अश्वशक्ति के समतुल्य विद्युत शक्ति नष्ट की जा रही है, फिर भी किसी को इससे खेद का अनुभव नहीं हो रहा है। संभवतः इसका कारण यह है कि कोई भी व्यक्ति देहात में विद्युतशक्ति के उपभोग के प्रशासन और नियन्त्रण के लिए उत्तरदायी नहीं है।

आप आज इतनी ज्यादा विद्युत शक्ति बर्बाद करते हुए भी और ऊंचे वोल्टेज के तारों की मांग करते जा रहे हैं। भविष्य में विद्युतीकरण में व्यापक पैमाने पर तेजी लाने के लिए जरूर ऊंचे वोल्टेज के तार बिछाये जाने चाहिए। लेकिन वर्तमान स्थिति में उन्हें बिछाना जरूरी नहीं है। हमें वर्तमान ट्रांसफार्मरों और विद्युत मोटरों के प्रभावशाली उपयोग और विद्युत शक्ति की बचत का जोरदार अभियान चलाना चाहिए। काउंटी कृषि सहकार प्रबन्ध समितियों को हमारी सिंचाई सुविधाओं और कृषि यन्त्रों में, जिनमें थ्रैशर भी शामिल हैं, विद्युत के प्रयोग का आमतौर पर जायजा लेना चाहिए और बिजली के खर्च पर नियन्त्रण को मजबूत बनाना चाहिए।

पार्टी की केन्द्रीय समिति के गत वर्ष दिसम्बर में हुए पूर्णाधिवेशन के निर्णय अनुसार जहां कहीं बहता पानी मौजूद हो, वहां छोटा-सा डायनेमो लगाकर स्थानीय रूप में विद्युत पैदा करने का एक व्यापक अभियान छेड़ दिया जाना चाहिए।

इसके अलावा हमारे बीच सुधार-कार्य को भी तेज किया जाना चाहिए।

बीज सुधार अन्न की प्रति छोंगवो पैदावार बढ़ाने में बहुत महत्व रखता है। दक्षिण ह्वांगहाए प्रान्त की हाल की अपनी यात्रा के दौरान मैंने यह भी सुना है कि सुधरे बीज प्रति छोंगबो उपज में उल्लेखनीय वृद्धि लाते हैं। बीज में सुधार और शीत-सांचा धनपौधों का ठीक ढंग से प्रचलन करके अन्न की उपज को बड़ी आसानी से कई प्रतिशत बढ़ाया जा सकता है। बीज सुधार कार्य को दृढ़ बनाने के लिए यह जरूरी है कि उपयुक्त स्थानों को चुना जाए और बीज उत्पादन के कार्य को सही ढंग से चलाया जाए।

ग्रामीण अर्थतन्त्र के संचालन में कारगर श्रम-प्रबन्ध का बड़ा महत्व है। श्रम-प्रबन्ध काउंटी कृषि सहकारी प्रबन्ध समिति के महत्वपूर्ण कर्तव्यों में से एक है। सर्वप्रथम, कृषि सहकारों को युक्तियुक्त ढंग से प्रत्येक कार्यटोली की जनशक्ति का संगठन और उसका उपयोग करना चाहिए। प्रत्येक कार्यटोली को, काम के उद्देश्यों को सहीतौर पर समझना चाहिए और उसके अनुरूप अपनी श्रमशक्ति लगानी चाहिए। जनशक्ति के आवंटन में लोगों की शारीरिक ताकत को उनके स्त्री या पुरुष होने, उनके कौशल आदि को दृष्टिगत रखा जाना चाहिए। पुरुषों के काम स्त्रियों को और स्त्रियों के काम पुरुषों को नहीं सौंपे जाने चाहिए। अक्सर किसी-न-किसी तरह का "नेता" होने के बहाने से पुरुष अपने बगल में नोटबुकें लिये इधर-उधर घूमते-फिरते हैं और कठोर श्रम के काम स्त्रियों को सौंप दिये जाते हैं। इस परिपाटी के खिलाफ दृढ़ सघर्ष चलाया जाना चाहिए।

साथ ही हमें उस परिपाटी के खिलाफ भी लड़ाई जारी रखनी चाहिए, जिसके अन्तर्गत कुछ कृषि सहकार श्रम-शक्ति को कृषि पर केन्द्रित करने की बजाय उसे बिखरा देते हैं। रिपोर्टों के अनुसार एक खास कृषि सहकार में अभी भी ७० से ८० श्रमिक पशु संवर्धन टोली में नियुक्त हैं। इस गति से तो कृषि में कोई अच्छे परिणाम नहीं निकल सकते। यह पहले भी हो चुका है। छोंगसान काउंटी से होकर गुजरते हुए, जबकि धान की रोपाई जोरों पर थी, मैंने पाया कि वहां एक ओर तो मजदूरों की इतनी कमी थी कि लोगों पर काम का जरूरत से ज्यादा बोझ आ पड़ा था और दूसरी ओर, २७ व्यक्ति टाइलें बनाने के काम में संलग्न थे। केन्द्र से हमेशा श्रमिकों की कमी की शिकायत करते हुए भी आप आज इस ढंग से श्रमिकों का दुरुपयोग कर रहे हैं। चूंकि कृषि एक मौसमी कार्य है, जिसे स्थगित नहीं किया जा सकता, इसलिए हमारी श्रमिक शक्ति के बिखराव की परिपाटी के विरुद्ध एक दृढ़ संघर्ष छेड़ा जाना चाहिए।

प्रबन्ध कर्मचारियों को अपनी मर्जी से ग्रामीण श्रमबल को स्थानान्तरित करने की मनाही कर दी जानी चाहिए। राज्यीय श्रमशक्ति की ही भांति कृषि सहकारों की जनशक्ति को भी नियुक्ति के बाद स्वतन्त्रतापूर्वक स्थानान्तरित करने की किसी

को अनुमति नहीं है। सहकार के अध्यक्ष को अपनी इच्छा पर कार्यटोलियों की जनशक्ति को स्थानान्तरित करने का कोई अधिकार नहीं है। यदि किसी कार्यटोली की जनशक्ति को विभक्त कर उन्हें भिन्न-भिन्न कामों पर लगाया जाता है तो वह कार्यटोली उसे सौंपे गये कार्य को पूरा नहीं कर सकती। अतः सहकारों को खूब सोच-विचारकर कार्यटोलियों को जनशक्ति का आवंटन करना चाहिए और एक बार जब उनका आवंटन कर दिया जाए तो उन्हें अन्य कामों पर नहीं लगाया जाना चाहिए।

कृषि सहकारों की श्रम-शक्ति को निर्माण या अन्य किसी कार्य के लिए लामबंद नहीं किया जाना चाहिए। भविष्य में ग्रामीण निर्माण दल की श्रम-शक्ति से देहात में भवन-निर्माण के काम को चलाना संभव होगा। कार्यटोली की जनशक्ति का कृषि के अलावा अन्य कार्यों के लिए प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। काउंटी कृषि सहकारी प्रबन्ध समिति के जनशक्ति विभाग को इस मामले की जिम्मेदारी संभालनी चाहिए और उस पर अपने नियन्त्रण को दृढ़ करना चाहिए।

कृषि सहकारों में कड़ा श्रमिक प्रशासनिक अनुशासन श्रमिक प्रबन्ध का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू है। सबसे पहले यह जरूरी है कि कार्य के नियमों के निर्धारण का काम उचित रूप से पूरा किया जाए। तभी वितरण के समाजवादी सिद्धान्त का कड़ाई से पालन हो सकता है। प्रत्येक कृषि सहकार को सही ढंग से काम के नियम निर्धारित करने चाहिए और उन्हें अमल में लाने में कड़ा अनुशासन लागू करना चाहिए।

इसके अतिरिक्त प्रबन्ध के लोकतान्त्रिक सिद्धान्त का कृषि सहकारों में पूरी तरह पालन होना चाहिए। कृषि सहकारों के प्रबन्धमंडलों को सहकारी सदस्यों को तमाम मामलों की सूचना देनी चाहिए और उनके साथ विचारविमर्श करना चाहिए। तमाम सहकारी सदस्यों को कोष और बीजों के मासिक व्यय के बारे में सूचित किया जाना चाहिए और सहकारों के संचालन में उत्पन्न होने वाली समस्याओं को प्रबन्ध के लोकतान्त्रिक सिद्धान्त के अनुसार निपटाया जाना चाहिए। काउंटी कृषि सहकार प्रबन्ध समिति को प्रत्येक कृषि सहकार पर अपना नियन्त्रण लागू करना चाहिए, ताकि वह इन सिद्धान्तों का कड़ाई से पालन करे।

कृषि सहकार प्रबन्धमंडल को सिवाय बीज और चारे के अनाज के अलावा अन्य कोई अनाज अपने कब्जे में नहीं रखना चाहिए। उसे अपनी इच्छा से एक ग्राम चावल का भी निपटारा नहीं करना चाहिए। सहकार के अध्यक्ष को कृषि का निर्देशन करने का अधिकार है, लेकिन उसे अपनी मर्जी से चावल को निपटाने का कोई अधिकार नहीं है।

इस समय किसान अनाज पैदा करते हैं और अपनी खपत के लिए जरूरी

अनाज अलग रख कर शेष वे राज्य को बेचना चाहते हैं। पहले प्रबन्ध कर्मचारियों के कई ऐसे मामले सामने आए हैं कि उन्होंने दखलंदाजी करके और अनाज राज्य को न देकर या सहकारी सदस्यों को वितरित न कर अपनी मर्जी से बेच दिया है। हमें इस परिपाटी के खिलाफ दृढ़ संघर्ष चलाना चाहिए। सहकारी सदस्यों को खाने के लिए अनाज अलग रख कर शेष राज्य को बेचना चाहिए।

कृषि सहकारों में अनाज को बीज के अनाज के मद में डाल देने, राज्य को न बेचने और अवैध ढंग से बेचने की परिपाटी खत्म कर दी जानी चाहिए। भविष्य में एक ऐसी प्रणाली की स्थापना वांछनीय होगी, जिसके अन्तर्गत राज्य अच्छे बीजों का चयन करेगा, कीटाणुओं का नाश कर उनका भंडारण करेगा और फिर उन्हें वितरित करेगा। पार्टी संगठनों और कृषि के अग्रणी कार्यकर्ताओं को कृषि सहकारों के प्रबन्धमंडलों को बेरोकटोक अनाज बेचने से रोकने के लिए उन पर कड़ा नियन्त्रण लागू करना चाहिए।

प्रान्तीय जन-समितियों और काउंटी कृषि सहकार प्रबन्ध समितियों को अपने तमाम प्रयास कृषि पर केन्द्रित करने चाहिए। चूंकि काउंटी कृषि सहकार प्रबन्ध समितियां अपना काम लगभग नये सिरे से शुरू कर रही हैं, इसलिए जरूरी है कि वे प्रारम्भ से ही बाहर जाकर मौके पर पथप्रदर्शन करने की कार्य शैली कायम करें। कृषि भी एक तकनीकी प्रक्रिया है, अतः काउंटी कृषि सहकार समितियों को सहकार के कृषि-कार्य का तकनीकी पथप्रदर्शन करना चाहिए और उत्पादन का तमाम प्रक्रियाओं में दायित्वपूर्ण पथप्रदर्शन मुहैया करना चाहिए।

कृषि के क्षेत्र में कार्यकर्ताओं के सामने इस समय जो तात्कालिक कर्तव्य पेश हैं, वे हैं खेतों में नयी मिट्टी बिछाने, खाद पहुंचाने, बीज चुनने, धान के पौधों की क्यारियां तैयार करने तथा ट्रैक्टरों और कृषि यन्त्रों की मरम्मत करने सरीखे कृषि की तैयारी के कार्यों पर सहकारों की तमाम शक्ति को केन्द्रित करना। इसके साथ ही प्रान्त में तमाम उपलब्ध शक्तियों को कृषि-कार्य में सहायता के लिए गोलबंद किया जाना चाहिए। गर्मियों में प्रान्त में सरकारी कर्मचारियों और स्थानीय औद्योगिक मजदूरों को भी कृषि कार्य के लिए गोलबंद किया जाना चाहिए।

दक्षिण ह्वांगहाए प्रान्त के पार्टी संगठनों और कृषि के प्रमुख कार्यकर्ताओं को अब तक प्राप्त कामयाबियों को पुख्ता करके पिछड़े हुए कृषि सहकारों की मदद की जानी चाहिए और इस तरह तमाम सहकारों को यथाशीघ्र समुन्नत सहकारों के स्तर पर पहुंचाया जाना चाहिए। इस प्रकार अन्न की पैदावार "१,००,००० टन की काउंटियों" "७०,००० टन की काउंटियों," "५०,००० टन की काउंटियों और "३०,००० टन की काउंटियों" के निर्माण के लिए चलाये जा रहे आन्दोलन में विजय हासिल की जानी चाहिए।

योनान काउंटी पिछले तीन साल से "१,००,००० टन की काउंटी" बनने का प्रयत्न कर रही है। उसे इस वर्ष हर हालत में यह लक्ष्य प्राप्त कर लेना चाहिए। पाएछोन काउंटी को भी इस वर्ष "१,००,००० टन की काउंटी" का सम्मान जीतने का दृढ़ता से प्रयास करना चाहिए।

साथियो, आज दक्षिण ह्वांगहाए प्रान्त में प्राय: तमाम किसान चावल खाते हैं। परन्तु फैक्टरी और दफ्तर कर्मचारी अभी भी अपने आहार में चावल और मक्का, आधा-आधा लेते हैं। हम इस बात की पक्की व्यवस्था करने जा रहे हैं कि अगले कुछ वर्षों में हर व्यक्ति चावल पर निर्वाह कर सके। अतः हमें मौजूदा धन-खेतों में प्रति छोंगबो उपज बढ़ानी होगी और इस वर्ष पर्याप्त मात्रा में बीज प्राप्त कर अगले वर्ष शुष्क भूमि के धान की और अधिक रोपाई करनी होगी। जब हम इतना अधिक चावल उत्पन्न करेंगे कि तमाम लोग उस पर निर्वाह कर सकें तभी हम यह कह सकेंगे कि हमारा जीवनस्तर ऊंचा उठा है।

अन्त में मैं यह विश्वास व्यक्त करना चाहता हूं कि दक्षिण ह्वांगहाए प्रान्त में इस वर्ष ग्रामीण अर्थतन्त्र के सामने पेश कर्तव्यों को तमाम पार्टी सदस्य, सहकारी सदस्य, जनवादी तरुण लीग के सदस्य ट्रैक्टर चालक, देहात के तकनीकी कर्मचारी और प्रान्त के कृषि सहकारों के तमाम प्रबन्ध कर्मचारी, सफलतापूर्वक पूरा करेंगे और हमारी पार्टी की कृषि नीति की तामील के लिए निष्ठापूर्ण संघर्ष छेड़ते हुए वे हमारे देश की कृषि के विकास और जन-जीवन स्तर के उन्नयन में भारी योगदान करेंगे।

पार्टी के सांगठनिक और वैचारिक कार्य में सुधार और उसके सुदृढ़ीकरण के संबंध में

कोरिया की मजदूर पार्टी की चौथी केन्द्रीय समिति के तीसरे विस्तारित पूर्णाधिवेशन में समापन भाषण

८ मार्च, १९६२

१ : पार्टी कार्य को और सुदृढ़ बनाने के बारे में

इस पूर्णाधिवेशन में हमने पार्टी कार्य को और दृढ़ करने के बारे में गम्भीर विचार-विमर्श किया है। हमने इस प्रश्न पर कई बैठकें कीं और कई अल्पकालिक पाठ्यक्रम आयोजित किये।

पार्टी कार्य उन महत्वपूर्ण प्रश्नों में एक था जिन पर पार्टी कांग्रेस में भी विचार हुआ था। पार्टी कांग्रेस के चौथे दस्तावेज में हमने अपने पार्टी कार्य की उपलब्धियों और अनुभव का आमतौर पर जायजा लिया और इस कार्य की मूल दिशा और कर्तव्यों को स्पष्ट रूप में पेश किया। हमारे पार्टी कार्य ने विकास का एक उच्च स्तर हासिल कर लिया है और हमने इस क्षेत्र में अमूल्य अनुभव-संपदा संचित कर ली है।

लेकिन हम अपनी सफलताओं को लेकर हाथ-पर-हाथ रख कर नहीं बैठ सकते। अब हमारे सामने विशाल और कठिन क्रान्तिकारी कर्तव्य पेश हैं। इस स्थिति के अनुरूप पार्टी कार्य को और सुधारना तथा सुदृढ़ करना हमारे लिए एक तात्कालिक समस्या है। पार्टी की केन्द्रीय समिति द्वारा दक्षिण ह्वांगहाए प्रान्तीय पार्टी समिति को हाल ही में दिये गये व्यापक पथप्रदर्शन के दौरान हमें पार्टी कार्य की अनेक खामियों का पता चला जिन्हें अभी दुरुस्त किया जाना बाकी है। चूंकि आपने इस पूर्णाधिवेशन की रिपोर्ट और भाषणों में पार्टी कार्य से सम्बन्धित

महत्वपूर्ण प्रश्नों का विस्तृत विश्लेपण किया है, अतः मैं केवल कुछ ज्वलन्त प्रश्नों पर ही फिर से जोर देना चाहूंगा।

जैसा कि मैंने बार-बार ध्यान दिलाया है, जब हम पार्टी कार्य की चर्चा करते हैं, तो हमारा मुद्दा यह होता है कि पार्टी का दृढ़तापूर्वक निर्माण कर उसे मजबूत बनाया जाए, उसकी सतत प्रगति और विकास को बढ़ावा दिया जाए, तथा उसके संगठनों को सहीतौर पर लामबंद किया जाए, ताकि वह एक मार्क्सवादी-लेनिन-वादी पार्टी के रूप में अपने जुझारू कर्तव्यों को पूर्णतया निभा सके। दूसरे शब्दों में, पार्टी कार्य का अर्थ है मजबूत पार्टी पांतों का निर्माण करना और पार्टी के जुझारू कार्यों के पूर्ण निर्वाह की गारंटी करना।

जैसा कि लेनिन और स्तालिन ने मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी की सही-सही व्याख्या की है, वह मजदूर वर्ग का समुन्नत और संगठित दस्ता है। मजदूर के लिए यह परमावश्यक है कि उसका हरावल दस्ता शोषक वर्गों के विरुद्ध घनघोर वर्ग संघर्ष में तमाम श्रमजीवी वर्गों का नेतृत्व और पथप्रदर्शन करे। इसीलिए दृढ़ क्रान्तिकारी भावना, भरपूर जुझारू अनुभव और उच्च सैद्धान्तिक स्तर के साथ मजदूर वर्ग के सर्वोत्तम तत्व वर्ग संघर्ष का नेतृत्व करने तथा उसे और भी काम-याबी से चलाने के लिए एक लड़ाकू दस्ते का गठन करते हैं। यही दस्ता पार्टी है। यदि मजदूर वर्ग के इस हरावल दस्ते को विचार संकल्प और कार्य की अपनी एकता कायम रखनी है और शत्रु के खिलाफ़ संघर्ष में विजय पाना है तो उसके तमाम सदस्यों को पूरी तरह एक ही सिद्धान्त के आधार पर संगठित करना होगा। यही कारण है कि लेनिन ने पार्टी के सांगठनिक सिद्धान्तों की व्याख्या करते हुए जोर देकर कहा था कि पार्टी में हर व्यक्ति को, चाहे वह जो भी हो, किसी न किसी पार्टी संगठन का सदस्य होना चाहिए और उसे पार्टी सदस्य के रूप में अपना दायित्व निभाना चाहिए।

पार्टी मजदूर वर्ग की अग्रिम पंक्तियों से आये लोगों का एक संगठन है। अतः यदि पार्टी को ठोस होना है तो उसमें शामिल हर सदस्य को ठोस होना चाहिए और तमाम पार्टी सदस्यों के लिए जरूरी है कि वे पार्टी के सांगठनिक सिद्धान्तों के अनुसार आचरण करें। जब पार्टी के तमाम सदस्य उसके सांगठनिक सिद्धान्तों के अनुसार पूर्णतया सक्रिय होंगे तभी पार्टी सशक्त और अजेय होगी और अपने सामने पेश क्रान्तिकारी कर्तव्यों को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने में समर्थ होगी। इसलिए हम कह सकते हैं कि सबसे पहले पार्टी का मुख्य कार्य पार्टी सदस्यों का नेतृत्व करना है, ताकि वे पार्टी के सांगठनिक जीवन के प्रति वफादार रहें।

जैसा कि आप भली भांति जानते हैं, पार्टी संगठन में शामिल होते समय पार्टी सदस्य को पार्टी कार्यक्रम और नियमों को स्वीकार करना होता है। हमारी पार्टी

में शामिल होने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति को यह शपथ लेने के बाद ही प्रवेश दिया जा सकता है कि वह हर हालत में पार्टी कार्यक्रम और नियमों के अनुसार पार्टी संगठन द्वारा सौंपे गये जुझारू कर्तव्यों को पूरा करेगा। पार्टी सदस्य प्रवेश के दिन से ही पार्टी संगठन से सम्बद्ध हो जाता है और उससे दिये गये कामों की पूर्ति की अपेक्षा की जाती है।

पार्टी संगठन में शामिल होने के क्षण से ही पार्टी सदस्य का सांगठनिक जीवन प्रारम्भ हो जाता है। पार्टी में सांगठनिक जीवन का आशय है पार्टी द्वारा दिये गये काम को पूरा करने में पार्टी सदस्यों की सक्रियता। इसका आशय है पार्टी सदस्यों का राजनीतिक जीवन और क्रान्तिकारी गतिविधियां। हम हमेशा कहते हैं कि हमें एक क्रान्तिकारी से अपेक्षित लक्षण प्राप्त करने चाहिए; और क्रान्तिकारी कोई विशिष्ट किस्म का इन्सान नहीं होता। यदि कोई पार्टी सदस्य पार्टी नियमों का पालन करते हुए पार्टी द्वारा सौंपे गये क्रान्तिकारी कर्तव्यों को दक्षतापूर्वक पूरा करता है, तो हम कह सकते हैं कि उसने एक क्रान्तिकारी के दायित्वों को पूरा किया है।

हमारे पार्टी नियमों में पार्टी सदस्यों के अनिवार्य क्रान्तिकारी कर्तव्यों का खासतौर पर वर्णन किया गया है। यह अच्छा विचार रहेगा कि आप एक बार फिर हमारे पार्टी नियमों का पारायण करें और देखें कि वे पार्टी सदस्यों के कर्तव्यों के बारे में क्या कहते हैं। हमारे पार्टी नियम उनकी निम्नलिखित व्याख्या करते हैं :

"(क) पार्टी सदस्य हमारे देश के पुनरेकीकरण और समाजवाद तथा कम्युनिज्म के निर्माण के लिए सक्रियतापूर्वक लड़ेगा और हमारे समाजवादी वतन की दृढ़तापूर्वक रक्षा करेगा;

"(ख) पार्टी सदस्य पार्टी की क्रान्तिकारी परम्पराओं का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करेगा और उन्हें समझेगा, उन्हें आगे बढ़ाएगा और विकसित करेगा, हमारी पार्टी की विचारधारा से स्वयं को लैस करेगा, पार्टी की केन्द्रीय समिति के गिर्द पूरी तरह गोलबंद होगा और उसकी दृढ़तापूर्वक रक्षा करेगा, गुटबाजी, संकीर्णता और कुनबापरस्ती के खिलाफ दृढ़संकल्प से लड़ेगा और पार्टी की एकता तथा एकजुटता की रक्षा करेगा;

"(ग) पार्टी सदस्य पार्टी के प्रति अपार निष्ठावान् होगा, पार्टी दृष्टिकोण और उसकी नीतियों को बिना शर्त स्वीकार करेगा तथा उनकी पूरी तरह रक्षा और सही तौर पर परिपालन करेगा …।"

इसके अतिरिक्त पार्टी नियम उन तमाम मानदंडों को पेश करते हैं, जिनका पार्टी सदस्य को हर हालत में पालन करना चाहिए, जैसे अपने राजनीतिक स्तर को ऊंचा करना, अपनी व्यावहारिक योग्यता को सुधारना और स्वयं मार्क्सवादी-

लेनिनवादी सिद्धान्त से लैस करना, अवाम के साथ अपने संबंधों को दृढ़ करना, उनके लिए एक मिसाल बनना, अपनी पार्टी भावना को निरन्तर दृढ़ करना, पार्टी के हितों को निजी हितों से ऊपर रखना, आदि।

इस तरह पार्टी नियम स्पष्टतः बताते हैं कि किसी पार्टी सदस्य को कैसे और किन क्रान्तिकारी कर्तव्यों के लिए लड़ना चाहिए। अतः यदि कोई पार्टी सदस्य यह मालूम करना चाहता है कि संघर्ष कैसे चलाए जाने चाहिए, तो उसे पार्टी नियमों को पढ़ना चाहिए। यदि वह केवल पार्टी नियमों में प्रतिपादित तमाम कर्तव्यों को सविवेक पूरा करता है तो वह एक शानदार क्रान्तिकारी होगा।

यदि तमाम पार्टी सदस्य नियमों में स्पष्ट किये गये अपने कर्तव्यों को पूरा करें तो पार्टी एक सर्वाधिक शक्तिशाली और क्रान्तिकारी पार्टी बन सकती है और क्रान्तिकारी कर्तव्यों को पूरा करने में महान सफलताएं प्राप्त कर सकती है।

अतः पार्टी कार्य में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है पार्टी सदस्यों का पार्टी नियमों के अनुसार पार्टी जीवन बिताने में उनका नेतृत्व करना। इस बारे में कुछ भी रहस्यपूर्ण नहीं है। यदि पार्टी सदस्य पार्टी नियमों के अनुसार काम करने को प्रेरित किये जा सकें तो सब कुछ सुचारु रूप से चलेगा।

पार्टी सदस्य पार्टी संगठन के अन्दर अपना पार्टी जीवन विकसित करता है। बिना अपवाद तमाम पार्टी सदस्य पार्टी के बुनियादी संगठन सेलों से सम्बद्ध होते हैं, जहां उनका अपना सांगठनिक जीवन होता है, उनमें कुछेक साथ-ही-साथ पार्टी समितियों से भी सम्बद्ध होते हैं और वे अपने पार्टी सांगठनिक जीवन का एक अंश वहीं विकसित करते हैं। मिसाल के तौर पर, एक री पार्टी समिति के सदस्य का सांगठनिक जीवन उस सेल या उपसेल में होता है, जिससे कि वह सम्बन्धित होता है, और इसके साथ ही री पार्टी समिति से उसे कोई निश्चित कार्य भी सौंपा जाता है और वहां भी उसका सांगठनिक जीवन होता है। अतः यह महत्वपूर्ण बात है कि पार्टी सदस्यों के उचित पार्टी सांगठनिक जीवन की गारंटी करने के लिए सेलों की गतिविधियों का, जिनसे तमाम पार्टी सदस्य सम्बद्ध होते हैं, और पार्टी समितियों की गतिविधियों को, जिनसे उनमें से कुछ सदस्य सेलों से अपने संबंधों के अलावा सम्बद्ध होते हैं, उचित प्रोत्साहन दिया जाए।

हम कह सकते हैं कि अन्ततोगत्वा अन्तर्पार्टी कार्य का आशय है पार्टी सदस्यों, कार्यकर्ताओं और पार्टी सेलों तथा समितियों के साथ कार्य। यदि तमाम पार्टी सेल और पार्टी समितियां समुचित रूप में गठित हों, वे अपने तमाम पार्टी कर्तव्यों का पूर्णतया परिपालन करें और तमाम पार्टी सदस्य पूरी तरह सक्रिय हो जाएं तो समूची पार्टी मजबूत होगी और पार्टी क्रान्तिकारी कर्तव्यों को पूरा करने में अपनी हरावल दस्ते की भूमिका को कामयाबी से निभा सकेगी।

जैसा कि आप सब जानते हैं, सत्तारूढ़ पार्टी के रूप में हमारी पार्टी ने अपने देश में क्रान्तिकारी कार्य की तमाम जिम्मेदारियां अपने कंधों पर ले ली हैं और उसने अपनी शक्तियों को देश भर में तैनात कर दिया है। हमारे पार्टी सेल हर जगह—फैक्टरियों, खानों, खेतिहर और मत्स्य पालक गांवों, सैनिक टुकड़ियों, स्कूलों, सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रतिष्ठानों, सांस्कृतिक संस्थानों, इत्यादि में—संगठित हैं। मंत्रिमंडल, मन्त्रालयों, वन समितियों, आर्थिक आयोगों और अन्य राज्यीय निकायों के अपने-अपने सम्बद्ध पार्टी संगठन—पार्टी समितियां या सेल—हैं। जहां अवाम हैं, वहां पार्टी सदस्य हैं, और जहां पार्टी सदस्य हैं, वहां हमेशा पार्टी संगठन विद्यमान होते हैं।

इसलिए यह स्पष्ट है कि जब हर जगह पार्टी सेल और पार्टी समितियां सन्तोषजनक ढंग से काम करेंगी तो क्रान्तिकारी मोर्चे की प्रत्येक चौकी पर पार्टी सदस्य और अवाम पूरी तरह सक्रिय होंगे और पार्टी द्वारा सौंपे गये क्रान्तिकारी दायित्वों को वे सफलतापूर्वक पूरा करेंगे।

यदि सैनिक टुकड़ियों में पार्टी सेल तत्परता से काम करते हैं तो सेना की लड़ाकू शक्ति बढ़ती है और लड़ाई में सेना प्रवीण होती जाती है। यदि पार्टी सेल खेतिहर गांवों में उचित ढंग से काम करते हैं तो किसानों में ज्यादा चेतना आती है और कृषि कार्य सफलतापूर्वक आगे बढ़ता है। यदि पार्टी सेल फैक्टरियों में अच्छी तरह काम करेंगे तो मजदूरों का उत्पादन-उत्साह बढ़ेगा और सौंपे गये उत्पादन-कार्य कामयाबी से पूरे होंगे। यदि लेखकों और कलाकारों में पार्टी सेल मजबूत बनाये जाएंगे तो वे शानदार रचनाएं पेश करेंगे और साहित्य तथा कला का तेजी से विकास होगा। इसे संक्षेप में इस प्रकार कहा जा सकता है कि यदि पार्टी संगठन अच्छी तरह काम करेंगे और पार्टी सदस्य काम करने को पूरी तरह प्रेरित किये जाएंगे तो काम सुचारु रूप से चलेगा, और यदि पार्टी कार्य सफल सिद्ध होगा तो सब कुछ सुचारु रूप से चलेगा।

पार्टी क्रान्ति की जनरल स्टाफ है। पार्टी कार्य को अच्छी तरह करने का अर्थ है क्रान्ति के जनरल स्टाफ का काम अच्छी तरह करना।

लेनिन ने कहा था कि पार्टी मजदूर वर्ग के संगठन की सर्वोच्च रूप है। क्रान्ति को सम्पन्न करने के लिए मजदूर वर्ग के पास तमाम स्तरों पर जन-समितियां और अन्य राज्यीय निकाय और ट्रेड यूनियनें, जनवादी तरुण लीग तथा महिलाओं की यूनियन सरीखे श्रमजीवी जन संगठन विद्यमान हैं। और पार्टी मजदूर वर्ग के इन तमाम संगठनों में सर्वोच्च है तथा वह जनरल स्टाफ है जो इन तमाम संगठनों को नेतृत्व और कार्य करने के लिए प्रेरणा प्रदान करती है।

आप कहते हैं: "पार्टी हमारी जनता की अग्रणी शक्ति और जनरल स्टाफ

है"। यहां जनरल स्टाफ शब्द का अर्थ कदापि पार्टी की केन्द्रीय समिति मात्र नहीं है। तमाम पार्टी संगठन अपने-अपने सम्बद्ध क्षेत्रों में जनरल स्टाफ की भूमिका निभाते हैं। और पार्टी संगठन एवं पार्टी सदस्य हर जगह हैं। अतः यदि पार्टी कार्य का कुशल संचालन हो तो तमाम क्षेत्रों में जनरल स्टाफ का कार्य सुचारु रूप से चलेगा और तमाम पार्टी संगठन एवं सदस्य शानदार ढंग से अपनी भूमिका निभाने में समर्थ होंगे और तमाम मजदूर वर्ग संगठन और मेहनतकश अवाम सक्रिय हो जाएंगे। इस तरह सारा काम ठीक ढंग से चलेगा और सर्वत्र शानदार सफलताएं प्राप्त होंगी।

अब सवाल यह है कि पार्टी काम को अच्छी तरह से करने के लिए हमें किस चीज की जरूरत है ?

पार्टी सदस्य पार्टी के प्रति अपने कर्तव्यों को सन्तोषजनक ढंग से पूरा करें—इस उद्देश्य से उनको संगठित करने और उनका नेतृत्व करने का काम सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। यदि एक पार्टी सेल के तमाम सदस्य सौंपे गये अपने पार्टी दायित्वों को अच्छी तरह पूरा करें तो सेल शानदार ढंग से अपनी भूमिका निभा सकेगा। यदि किसी पार्टी समिति के सदस्य अपने कर्तव्यों को अच्छी तरह पूरा करें तो समिति का काम सफल रहेगा।

लेकिन पार्टी सदस्यों को अपने दायित्व सन्तोषजनक ढंग से निभाने के लिए प्रेरित करना कोई आसान काम कतई नहीं है।

यद्यपि पार्टी समुन्नत तत्वों का एक संगठन है, फिर भी उसमें विभिन्न किस्मों के लोग शामिल हैं। कुछेक में उच्च क्रान्तिकारी जागरूकता है जबकि दूसरों में अपेक्षाकृत कम है, और कुछेक अधिक कुशल हैं जबकि दूसरे कम निपुण हैं। और कुछेक गर्म मिजाज और काम करने में तेज हैं जबकि दूसरे मन्द गति के हैं। इन भिन्न-भिन्न तत्वों को मिलकर चलने और समान लक्ष्य के लिए सफलतापूर्वक संघर्ष चलाने को प्रेरित करने के लिए पार्टी सदस्यों के साथ लगातार काम करना जरूरी है।

पार्टी सदस्यों को अक्सर मिल-बैठकर बैठकें करनी चाहिए और एक-दूसरे की आलोचना करनी चाहिए। उन्हें उन लोगों को आगे बढ़ने में मदद करनी चाहिये जो पिछड़ गये हैं, कम ज्ञान वाले लोगों को सारी बातें साफ-साफ समझानी चाहिए और सुस्त लोगों को परिश्रमी बनाना चाहिए। यह करते हुए तमाम पार्टी सदस्यों को विचार, संकल्प और कर्म की एकता आश्वस्त करनी चाहिए। पार्टी सदस्य सौंपे गये कार्य को पूरा कर लें तो उसके बारे में उन्हें पार्टी संगठन को रिपोर्ट देनी चाहिए, नये काम लेने चाहिए; दूसरों के साथ अनुभवों का विनिमय करना चाहिए और अपने काम में सुधार हेतु कदम उठाने चाहिए।

ऐसे काम की जिम्मेदारी कौन उठाएगा ? सेल और पार्टी समितियां। उन्हें यह आश्वस्त करने के लिए अपना सांगठनिक कार्य करना चाहिए कि पार्टी सदस्य पार्टी से काम लें मौर उसे पूरा करें और साथ ही सेलों और समितियों को उन्हें नये काम देने चाहिए, और दिये गये कामों को पूरा करने में मदद और नेतृत्व प्रदान करना चाहिए।

इस प्रकार पार्टी सदस्य पार्टी संगठन से पार्टी कार्य लेता है, उनके परिचालन के परिणामों की रिपोर्ट देता है, नये काम लेता है और उन्हें पूरा करता है। ठीक यही उसका सांगठनिक जीवन है।

अभी तक जो लोग इस सबसे भलीभांति वाकिफ नहीं हैं, वे सोचते हैं कि पार्टी सदस्य का सांगठनिक जीवन बैठकों के लिए मिल बैठने के सिवाय और कुछ भी नहीं है तथा इसके अतिरिक्त कोई सांगठनिक जीवन नहीं है। यह गलत है। कार्य के बारे में बहस के लिए बैठकें मात्र पार्टी कार्य से सम्बन्धित तमाम समस्याओं को हल नहीं करतीं। किसी पार्टी सदस्य के बारे में यह तभी कहा जा सकता है कि उसने अपने क्रान्तिकारी कर्तव्यों को पूरा कर लिया है और अपने सांगठनिक जीवन को वफादारी से निभाया है, जब उसने बैठकों में मामलों पर बहस में भाग लिया हो, नयी दिशाएं ग्रहण की हों और काम लिए हों और उन्हें पूरा किया हो। अतः सांगठनिक जीवन में बैठकों का आयोजन उतना महत्वपूर्ण नहीं है, जितना कि सौंपे गये पार्टी कार्यों का प्रत्येक पार्टी सदस्य द्वारा सहीतौर पर पूरा किया जाना है।

जब पार्टी सदस्य सम्मेलन में भाग ले रहे होते हैं या जब वे सम्मेलनों के बाद अलग-अलग अपने कार्य कर रहे होते हैं तब भी उनका पार्टी सांगठनिक जीवन चलता रहता है और वे पार्टी संगठन के नेतृत्व और नियन्त्रण के अन्तर्गत होते हैं। यह आश्वस्त करने के लिए कि पार्टी सदस्य अपने सौंपे गये कामों को पार्टी की दृष्टि से उचित ढंग से पूरा करें, पार्टी सेल को प्रत्येक पार्टी सदस्य के निरीक्षण, पथप्रदर्शन और नियन्त्रण का काम करना चाहिए। उच्चतर स्तर की पार्टी समिति को मातहत समितियों के काम का निरीक्षण करना चाहिए।

पार्टी सेल प्रत्येक सदस्य की गतिविधियों का निरीक्षण करता है, काउंटी या फ़ैक्टरी पार्टी समिति पार्टी सेलों की, प्रान्तीय पार्टी समिति काउंटी और फैक्टरी पार्टी समिति की, और पार्टी की केन्द्रीय समिति प्रान्तीय पार्टी समितियों की गतिविधियों का निरीक्षण करती हैं। पार्टी की केन्द्रीय समिति के अध्यक्ष और राजनीतिक समिति पर सारी पार्टी का नेतृत्व करने और उसे सक्रिय रखने का कार्यभार है।

इस प्रकार पार्टी केन्द्रीय समिति से लेकर नीचे प्रत्येक सेल के पार्टी सदस्यों

तक, पूरी पार्टी निरन्तर क्रियाशील है और वह पार्टी कार्य का निर्बाध संचालन करती रहती है।

पार्टी कार्य का सुचारु संचालन हो रहा है या नहीं, यह अन्तिम विवेचन में इन सिद्धान्तों के आधार पर ही पता चल सकता है कि पार्टी संगठन कैसे गठित किये गये हैं और पार्टी संगठन तथा सदस्य उचित ढंग से काम करते हैं या नहीं और अपने पार्टी दायित्वों को सही ढंग से पूरा करते हैं या नहीं।

इन सिद्धान्तों के आधार पर हम पाते हैं कि दक्षिण ह्वांगहाए प्रान्त में पार्टी कार्य सही स्तर का नहीं है। वहां पार्टी समितियां भलीभांति गठित नहीं की गयी हैं और न ही उनका संचालन सन्तोषजनक ढंग से हो रहा है। कुछ पार्टी समितियों की बैठकें तक नियमित रूप से नहीं हुई हैं और इससे भी बुरी बात यह है कि उन्होंने पार्टी बैठकें तक नहीं बुलायी हैं और आधे या पूरे साल के अपने कार्य के परिणामों का जायजा भी नहीं लिया है। दूसरे शब्दों में, पार्टी संगठनों ने उचित रूप से काम नहीं किया है और वे अपनी जुझारू भूमिका निभाने में असमर्थ रहे हैं।

पार्टी के निर्माण और उसे सक्रिय रखने के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार कौन से विभाग हैं? वे हैं संगठन तथा प्रचार और आन्दोलन विभाग, और सांगठनिक विभाग इसके लिए खासतौर पर जिम्मेदार है। पार्टी कार्य में सफलता मुख्य रूप से पार्टी समिति और उसके अध्यक्ष और विशेषत: उस समिति के सांगठनिक विभाग की गतिविधियों पर निर्भर करती है। दक्षिण ह्वांगहाए प्रान्त में पार्टी कार्य के घटिया परिणामों के लिए इस तथ्य को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है कि पार्टी समितियों और उनके अध्यक्षों ने खराब ढंग से काम किया और खासतौर पर संगठन तथा प्रचार और आन्दोलन विभाग उचित रूप से काम करने में असफल रहे। पार्टी के संगठन तथा प्रचार और आन्दोलन विभागों के कार्य में सुधार पार्टी कार्य के दृढ़ीकरण में बहुत महत्व रखता है।

संगठन विभाग को चाहिए कि वह पार्टी सदस्यों को उनके पार्टी जीवन में निरन्तर नेतृत्व प्रदान करे। अन्यथा उनका सांगठनिक जीवन शिथिल हो जाएगा और उनमें बुरी प्रवृत्तियों का उभरना संभव हो जाएगा। मार्क्सवादी द्वंद्वात्मकता हमें बताती है कि हर चीज परिवर्तनशील है। हमारा काम भी निरन्तर परिवर्तित होता रहता है और इसी प्रकार जन चेतना भी बदलती रहती है। जो व्यक्ति कल अच्छा था, हो सकता है वह आज बुरा हो जाए और जो कल साहसी था, वह आज कायर हो जाय। यह विचार कि जो व्यक्ति पहले अच्छा था, आज कदापि बदल नहीं सकता, गैर-मार्क्सवादी विचार है। आपको ऐसा भ्रमपूर्ण दृष्टिकोण नहीं अपनाना चाहिए, कार्यकर्ताओं के बारे में भी नहीं।

तमाम पार्टी सदस्य जागरूक लोग हैं लेकिन मानव होने के नाते उनमें से कोई भी यह दावा नहीं कर सकता कि वह तो कभी गलती कर ही नहीं सकता तथा परिपूर्ण है। जो भी व्यक्ति अथक आत्मसुधार की उपेक्षा करता है, उससे गलतियां हो सकती हैं और वह भटक सकता है।

इस समय हम अमरीकी साम्राज्यवाद के साथ आमने-सामने के संघर्ष में लगे हैं। बाहर से पूंजीवाद के प्रभाव घुसपैठ कर सकते हैं। अमरीकी साम्राज्यवादी कम्युनिज्म को बदनाम करने पर उतारू हैं। वे यह चिल्लाते हुए कि हम कम्युनिस्टों का सफाया कर देंगे, लगातार धमका रहे हैं और दबाव डाल रहे हैं।

हमारे अन्दर भी पूंजीवाद के कई बुरे अवशेष मौजूद हैं। अपदस्थ किये गये जमींदारों और पूंजीपतियों सरीखे गंदे तत्व अभी तक विद्यमान हैं और वे जो विषाक्त विचारधारात्मक प्रभाव फैलाते हैं, वे अभी तक कायम हैं। बाहर के जोर-दबाव और भीतर के बचे-खुचे शत्रु तत्व मिल कर ढुलमुलपन पैदा करने तथा रूढ़िवादिता, निष्क्रियता, निकम्मापन और अधःपतन पैदा कर सकते हैं।

जिस हवा में हम सांस लेते हैं, वह आमतौर पर हमें स्वस्थ जीवन बिताने में मदद देती है। लेकिन हवा में धूल और अनेक हानिकारक कीटाणु होते हैं। यदि कोई व्यक्ति सफाई की अनदेखी करता है और हमेशा अपने आपको साफ-सुथरा नहीं रखता है तो उसके अन्दर दूषण पहुंच सकता है और वह हानिकारक कीटाणुओं से आक्रांत हो सकता है। अपने स्वास्थ्य की ठीक देखभाल कर और कसरत से शरीर को सक्रियता के साथ बलिष्ठ बनाकर वह बगैर दवा लिये अपनी सेहत को कायम रख सकता है।

कोई भी पार्टी सदस्य या कार्यकर्ता "बीमार नहीं होगा", यदि सांगठनिक विभाग उन्हें निरन्तर शिक्षित करे और शिथिल होने से रोकने के लिए उनकी निरन्तर आलोचना करे और उन्हें पार्टी नियमों के अनुरूप सही पद्धति के अनुसार पार्टी जीवन बिताने में मार्गदर्शन प्रदान करे। किसी भटक रहे साथी की सामयिक आलोचना वैसी ही है जैसे उसे अपना गंदा चेहरा धोने को कह देना। यदि कोई व्यक्ति बहुत गंदा हो जाता है तो हो सकता है कोई बीमारी उसे घेर ले।

सांगठनिक विभाग को चाहिए कि वह पार्टी सदस्यों के पार्टी जीवन को सुदृढ़ करे और क्रान्तिकारी कर्तव्यों की पूर्ति के लिए व्यावहारिक संघर्ष द्वारा उन्हें तथा कार्यकर्ताओं को अथक प्रशिक्षण प्रदान करे और इस प्रकार उन्हें ऐसा सच्चा क्रान्तिकारी योद्धा बनने के लिए तैयार करे जो बिना ढुलमुलपन के पार्टी और क्रान्ति के लिए अदम्य संघर्ष चलाते रहें, चाहे हवा का रुख जो भी हो।

काउंटी और फैक्टरी पार्टी समितियों के सांगठनिक विभागों को चाहिए कि वे इस बात का अध्ययन करें कि उनके मातहत सेलों का निर्माण कैसे हुआ है और

वे कैसे काम कर रहे हैं।

कुछ सेल मजबूत हैं, जबकि अन्य कमजोर हैं। हमें कमजोर सेलों को मजबूत बनाना चाहिए और इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि तमाम सेल अपना काम सन्तोषजनक ढंग से पूरा करें। मिसाल के तौर पर, यदि मनुष्य के शरीर में कोई सेल (कोशा) अशक्त हो जाए तो वहां फोड़ा या सूजन हो जाती है। इसी प्रकार पार्टी तभी ठोस हो सकती है, जब उसके सेल सशक्त हों। अतः काउंटी और फैक्टरी पार्टी समितियों के सांगठनिक विभागों को कार्य की शुरूआत सेलों के निर्माण से करनी चाहिए।

सेल उन लोगों को लेकर बने हैं या नहीं जो पार्टी सदस्यता के योग्य हैं। वे उन पार्टी सदस्यों द्वारा गठित किये गये हैं या नहीं जो अपने पार्टी कर्तव्यों को निष्ठापूर्वक पूरा करते हैं। पार्टी सदस्यों में से कितनों में उच्च स्तर की कम्युनिस्ट चेतना और दृढ़ क्रान्तिकारी भावना है और उनमें केंद्रक कार्यकर्ता हैं या नहीं जो सेलों का प्रबन्ध चला सकते हों, इन सब बातों को स्पष्ट समझ के आधार पर पार्टी सेलों को दृढ़ बनाने के लिए कदम उठाये जाने चाहिए।

खासतौर पर, इस वजह से कि हमारी पार्टी बड़ी तेजी से एक अवामी राजनीतिक पार्टी के रूप में विकसित हुई है, उसके कुछ सदस्य अभी तक कम्युनिस्ट चेतना से पूरी तरह लैस नहीं हैं और उसके सदस्य विभिन्न विचारधारात्मक स्तरों के हैं। अतः यह महत्वपूर्ण है कि उन केंद्रक तत्वों को, जो सेलों के संचालन की व्यवस्था करने के योग्य हैं, बढ़ावा दिया जाए। सांगठनिक विभागों को पार्टी शक्तियों की इस ढंग से नियुक्ति करनी चाहिए कि प्रत्येक सेल के अपने केन्द्रक हों जो उसे आगे ले जा सकें।

सेलों की बनावट को सुधारते हुए सांगठनिक विभागों को सेलों के जीवन को ठोस आधार पर लाने का यत्न करना चाहिए।

किसी सेल के स्वस्थ जीवन का तात्पर्य यह है कि वह अपने क्रांतिकारी कर्तव्यों को सहीतौर पर पूरा करता है और अपनी दृढ़ता के लिए अपने आंतरिक कार्य का संतोषजनक ढंग से संचालन करता है। जैसी कि पार्टी नियमों में भी परिकल्पना की गयी है, पार्टी देश के पुनरेकीकरण और समाजवादी निर्माण के लिए लड़ाई करती है। इसका अर्थ यह है कि पार्टी क्रांतिकारी कर्तव्यों को पूरा कर रही है। इसलिए यदि सेल के जीवन को ठोस बनाया जाना है तो सबसे पहले यह जरूरी है कि सेल अपने क्रांतिकारी कामों को समुचित ढंग से पूरा करें। अपने आर्थिक कर्तव्यों को पूरा करने के लिए उसे बार-बार बहसें करनी चाहिए, पार्टी सदस्यों को कर्तव्य सौंपने चाहिए और उचित समय पर काम के परिणामों का निष्कर्ष निकालना चाहिए। सेलों को न केवल आर्थिक और सांस्कृतिक निर्माण

से सम्बन्धित कर्तव्यों को, बल्कि राजनीतिक संघर्ष के कर्तव्यों को भी पूरा करना है। इस तरह उसे प्रतिक्रियावादी वर्गों के विरुद्ध वर्ग संघर्ष छेड़ना होगा, अवाम को शिक्षित और दीक्षित करना होगा और अवाम को पार्टी के साथ एकजुट करना होगा। इसका मतलब यह है कि सांगठनिक विभागों की सेलों के आर्थिक कर्तव्यों की पूर्ति के लिए और उनके राजनीतिक जीवन को संगठित करने के लिए उनके प्रयासों का निरीक्षण करना चाहिए।

सेलों को पार्टी सदस्यों की पार्टी भावना को प्रखर करने और उनकी राजनीतिक चेतना और व्यावहारिक क्षमता के स्तर को सुधारने का निरन्तर प्रयास करना होगा। सेलों द्वारा आलोचना, वैचारिक संघर्ष और राजनीतिक शिक्षा के संचालन की सांगठनिक विभागों को निरन्तर पड़ताल करनी चाहिए और उन्हें नेतृत्व प्रदान करना चाहिए।

अगर कोई सेल अपने संघर्ष को केवल कृषि कार्य अच्छी तरह करने तक सीमित रखे, और शत्रु वर्गों के खिलाफ संघर्ष के प्रति पार्टी पांतों के विस्तार और दृढ़ीकरण के प्रति, प्रतिक्रियावादी विचारधारा की घुसपैंठ के विरोध के प्रति और अपने सदस्यों की पार्टी भावना को मजबूत बनाने के प्रति वह उदासीन रहे तो उसके जीवन को ठोस नहीं कहा जा सकता। दूसरी ओर, यदि कोई सेल समाजवादी निर्माण के कर्तव्यों को पूरा किये बिना अपना सारा समय प्रतिक्रियावादी वर्गों के खिलाफ लड़ाई की समस्या पर वादविवाद में खर्च करे तो उसे भी ठोस सेल जीवन नहीं कहा जा सकता है। और यदि कोई सेल राजनीतिक अध्ययन और कम्युनिस्ट शिक्षा की अनदेखी करता है और पार्टी पांतों को दृढ़ बनाने के लिए कुछ नहीं करता है, यद्यपि वह शीत-सांचा धनपौधों की रोपाई समय पर करने और अनावश्यक घास-पांत की अच्छी तरह निराई करने की समस्या या जमींदार वर्ग को अलग-थलग करने और अवाम को एकजुट करने की समस्या पर कई बैठकें करता है, तो उसके जीवन को भी शिथिल ही कहा जाएगा।

सेलों को ठोस आधार पर लाने के लिए सांगठनिक विभागों को ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि सेल अपनी गतिविधियों में प्रकट हुई खामियों और भटकावों को तत्परता से दुरुस्त करें और किसी के प्रति भी पक्षपात बरते बिना तमाम सेलों को नया रूप दें ताकि वे अपने क्रांतिकारी कर्तव्यों, अपने अन्तर्पार्टी कार्य और जनकार्य को समानतः अच्छी तरह पूरा कर सकें।

सांगठनिक विभागों को हमेशा तमाम स्तरों पर पार्टी समितियों की बनावट और कार्यकलाप का भी अध्ययन करना चाहिए। प्रांतीय पार्टी समिति के सांगठनिक विभाग को काउंटी और फैक्टरी पार्टी समितियों का निरीक्षण करना चाहिए तथा काउंटी पार्टी समिति के सांगठनिक विभाग को री पार्टी समितियों

और सेल समितियों का निरीक्षण करना चाहिए।

मिसाल के तौर पर, जब एक प्रांतीय पार्टी समिति का सांगठनिक विभाग एक फैक्टरी पार्टी समिति के ढांचे का अध्ययन करे तो उसे इस बात का पता लगाना चाहिए कि समिति फैक्टरी के क्रांतिकारी कामों को पूरा करने में पूर्णतया दक्ष लोगों पर आधारित है या नहीं। उसे जांच करनी चाहिए कि समिति के पास वैचारिक और तकनीकी मामलों के लिए कार्यकर्ता हैं या नहीं, और उसके कितने लोगों में पुरजोर क्रांतिकारी भावना है। यदि समिति में पर्याप्त पार्टी भावना तथा पार्टी की नीतियों की सही तामील कर संगठन और निर्देशन करने की व्यावहारिक योग्यता से युक्त लोगों की कमी है तो कहना पड़ेगा कि समिति का गलत चयन हुआ है।

साथ ही सांगठनिक विभाग को यह पता करना चाहिए कि समितियां सुचारु रूप से काम कर रही हैं या नहीं। उसे यह मालूम करने के लिए व्यापक निरीक्षण करना चाहिए कि समितियों ने अपने आर्थिक कार्य पर और पार्टी के संगठनात्मक और विचारधारात्मक कार्य पर कैसे विचार-विमर्श किया, किस प्रकार वे मजदूर-किसान लाल रक्षकों के काम की देखभाल करती हैं और प्रतिक्रियावादियों के खिलाफ वे किस प्रकार संघर्ष करती हैं।

दक्षिण ह्वांगहाए प्रांतीय पार्टी समिति ने शीत-सांचा धनपौधों के ५० प्रतिशत धनखेतों में रोपाई और प्रति छोंगबो ५० टन खाद के प्रयोग के प्रयास जैसे कृषि कार्य को छोड़ अन्य तमाम मामलों की अनदेखी कर दी। इससे साफ हो जाता है कि प्रान्तीय पार्टी समिति अपने कार्यों के समुचित संपादन में असफल रही।

किसी पार्टी समिति के कार्य-संपादन को चंद बैठकों के आयोजन तक सीमित नहीं किया जा सकता। पार्टी समिति को पार्टी नीतियों की क्रियान्विति के लिए अपनी परिधि के अन्तर्गत आने वाली तमाम क्रान्तिकारी शक्तियों—पार्टी संगठनों, पार्टी सदस्यों, राज्य निकायों और श्रमजीवी जन-संगठनों को संगठित और लामबंद कर क्रान्ति के जनरल स्टाफ के रूप में काम करना चाहिए और अपने तमाम क्रान्तिकारी कर्तव्यों को हाथ में लेना चाहिए।

प्रान्तीय और काउंटी पार्टी समितियों के सांगठनिक विभागों को नियमित रूप से इस बात की पड़ताल करनी चाहिए कि उनके अन्तर्गत पार्टी समितियां उचित रूप से निर्मित हुई हैं या नहीं और वे अपनी-अपनी सम्बद्ध इकाइयों में क्रान्ति के जनरल स्टाफ की भूमिका पूर्णतया निभा रही हैं या नहीं, और इस आधार पर समितियों के गठन में सुधार और कार्यालय की बेहतरी की दिशा में उनका मार्गदर्शन करना चाहिए।

पार्टी केन्द्रीय समिति के सांगठनिक नेतृत्व विभाग और उनके उपाध्यक्ष को

इस बात की पड़ताल करनी चाहिए कि प्रान्तीय और काउंटी पार्टी समितियां उचित रूप से निर्मित हुई हैं या नहीं और वे उचित रूप से काम कर रही हैं या नहीं तथा पूरी पार्टी की पांतों के दृढ़ीकरण में और उन्हें हमेशा सक्रिय बनाये रखने में नेतृत्व प्रदान करना चाहिए।

जैसा कि आप देखते हैं, सांगठनिक विभाग पार्टी समितियों एवं पार्टी सेलों जैसे पार्टी संगठनों की गतिविधियों का निर्देशन करता है। सांगठनिक विभाग को ऐसा कर्मीदल विभाग जो पार्टी पांतों में निरंतर वृद्धि तथा मजबूती लाता है, और पार्टी के दृढ़ीकरण के उद्देश्य से उसके जीवन का पथप्रदर्शन करने वाला विभाग कहा जा सकता है। दक्षिण ह्वांगहाए प्रांत में इस विभाग के काम त्रुटिपूर्ण हो जाने मात्र से पार्टी के आम कार्य में कई खामियां प्रकट हो गयीं।

वहां पर संगठन विभाग ने अपना काम करने की बजाय जनशक्ति की लामबन्दी, सामग्री-आपूर्ति, बैठकों के प्रबन्ध, आंकड़ों के संकलन आदि के कार्यों पर ध्यान केन्द्रित कर सामान्य विषय विभाग या अभिलेख विभाग के काम अपने हाथों में ले लिए।

जन समितियों के अपने आंकड़ा, नियोजन और आपूर्ति विभाग हैं। तो फिर क्यों पार्टी समिति का सांगठनिक विभाग ऐसे कामों को हाथ में लेता है? क्यों सांगठनिक विभाग का मुखिया हमेशा स्वयं ही रिपोर्ट पेश करता है?

अपने नियमित काम को करने की बजाय केवल अनावश्यक कामों में व्यस्त रहने की वजह से संगठन विभाग पार्टी पांतों के निर्माण के कार्य को सुचारु रूप से संपन्न करने और उन साथियों का समय पर पता लगाने में, जो वैचारिक व्याधियों के शिकार थे, विफल रहा। परिणाम यह हुआ कि कुछ साथी इतने ज्यादा रोगी हो गये कि अब केवल दवा से उनका इलाज न हो सकता था और उनके लिए नश्तर की जरूरत पड़ी। बीमार कार्यकर्ता और पार्टी सदस्य प्रारम्भ से बुरे लोग नहीं थे। वे अच्छे लोग थे लेकिन सामयिक शिक्षा और निरन्तर मार्गदर्शन के अभाव में वे भटक कर गलतियां करने लगे और अध:पतन के शिकार हो गये।

हो सकता है कि संगठन विभाग पार्टी सदस्यों और कार्यकर्ताओं के साथ समुचित काम के लिए पूरा जोर लगा दे और फिर भी कुछ लोग बीमार पड़ जाएं। इसलिए हमें रोकथाम के उपाय करने चाहिए ताकि लोग दूसरों से बीमारियों की छूत न पा लें, लेकिन जल्द ही बीमार लोगों का पता लगाना कोई कम महत्वपूर्ण नहीं है।

संगठन विभाग को यह पता चलाने के लिए अक्सर लोगों का निरीक्षण करना चाहिए कि कहीं उन्हें कोई गम्भीर रोग तो नहीं लग गया है। उसे बड़ी बारीकी से पड़ताल कर मालूम करना चाहिए कि वह चर्मरोग है या कोई श्वास सम्बन्धी

समस्या है। निदान के अनुसार दवाई सुझायी और दी जानी चाहिए।

यदि पार्टी समिति के अध्यक्ष या उसके संगठन विभाग के अध्यक्ष की उपमा डाक्टर से दी जाती है, जोकि पार्टी सदस्यों के बीच बीमार व्यक्तियों का पता चलाता है और उसकी बीमारी का निदान पेश करता है, तो प्रचार विभाग की उपमा औषधि-निर्माता से दी जा सकती है जो बीमार के लिए दवाएं तैयार करता है।

यदि कोई व्यक्ति ऐसा मिले जो पूंजीवाद से भयभीत हो, तो उसके मस्तिष्क में यह बात बैठानी होगी कि पूंजीवाद का पतन अवश्यंभावी है। रुढ़िवादिता, निष्क्रियता, रहस्यवाद, और नीमहकीमी जैसे गम्भीर रोगों से ग्रस्त लोगों में हमें मजदूर वर्ग की क्रान्तिकारी भावना भरनी होगी। एक चीज की कमी के लिए लोगों को विटामिन ए दिया जाना चाहिए और दूसरी चीज की कमी के लिए विटामिन सी। जिनके लिए मार्क्सवादी-लेनिनवादी साहित्य का अध्ययन आवश्यक हो उन्हें इसका नुस्खा दिया जाना चाहिए, जिन्हें हमारी पार्टी की नीतियों, निर्णयों और निर्देशों का ज्ञान न हो उन्हें हमारे पार्टी दस्तावेजों का नुस्खा सुझाया जाना चाहिए तथा साहित्यिक रचनाओं के नुस्खे की उनके लिए सिफारिश की जानी चाहिए जिन्हें उनकी जरूरत हो।

संगठन विभाग की तरह प्रचार विभाग आन्तरिक पार्टी कार्य से सम्बद्ध है।

प्रचार विभाग का पहला और सर्वप्रथम कर्तव्य है पार्टी सदस्यों को शिक्षित करना।

प्रचार विभाग को न-केवल उन लोगों के लिए दवा सुझानी चाहिए जो पहले ही रोगग्रस्त हो चुके हैं, बल्कि रोगों की रोकथाम की और पौष्टिक दवाएं भी उपलब्ध करनी चाहिए, ताकि पार्टी सदस्य बुरे विचारों से ग्रस्त न हों और हमेशा अपने क्रान्तिकारी कर्तव्यों को सक्रिय रूप से पूरा करें।

राजनीतिक शिक्षा में पार्टी की नीतियां भी एक टॉनिक होती हैं। यदि पार्टी सदस्य पार्टी की नीतियों से दृढ़ता से लैस होंगे तो उन पर बुरे विचार असर न कर सकेंगे और वे पार्टी जीवन में स्वस्थ बने रहेंगे।

पार्टी नीतियों की शिक्षा बिना अपवाद तमाम पार्टी सदस्यों के लिए जरूरी है। कुछ लोग ऐसा सोच सकते हैं कि कार्यकर्ताओं के लिए यह जरूरी नहीं है, क्योंकि वे सब पहले ही उच्च योग्यता प्राप्त कर चुके हैं। यह एक गम्भीर गलती है। जैसा कि कल आपने अपने भाषणों में कहा, कार्यकर्ताओं में कई ऐसे भी हैं, जिनका राजनीतिक और वैचारिक स्तर नीचा है। कार्यकर्ताओं को अधिक शिक्षा की जरूरत है। कार्यकर्ताओं को मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त और पार्टी नीतियों की गहरी समझ होनी चाहिए और उन्हें अपनेआपको कम्युनिस्ट विचारों

से और भी दृढ़तापूर्वक सज्जित करना चाहिए।

कुछ लोग ऐसा सोचते प्रतीत होते हैं कि जब वह कोई आन्दोलनात्मक भाषण दे देते हैं और एक फिल्म दिखा देते हैं तो प्रचार कार्य पूरा हो जाता है। वह प्रचार नहीं, बल्कि आन्दोलनात्मक कार्य है। पार्टी के प्रचारात्मक कार्य से हमारा तात्पर्य यह है कि पार्टी सदस्यों को मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारधारा और सिद्धान्त में शिक्षित करना और उन्हें पार्टी नीतियों से दृढ़तापूर्वक लैस करना। प्रचार विभाग को इसी कार्य को अपना मुख्य कार्य बनाना होगा।

पार्टी सदस्यों की शिक्षा का कार्य विशिष्ट स्थितियों के अनुरूप संचालित किया जाना चाहिए। शिक्षा कार्य हमेशा पार्टी सदस्यों की समझ के स्तर के अनुसार होना चाहिए और उसे उनके तात्कालिक क्रान्तिकारी कर्तव्यों के साथ जोड़ा जाना चाहिए और उसे स्थानीय क्षेत्रों के बास्तविक हालात के मुताबिक ढाला जाना चाहिए। जिन लोगों ने अभी-अभी पढ़ा है कि क्रान्ति क्या है उनके लिए पेचीदा सिद्धान्तों को रटना बेकार है। पहले उन्हें वे साधारण सत्य सिखाने चाहिए जो दैनिक जीवन में उनके जाने-पहचाने हैं, और फिर कदम-कदम कठिन विषयों में जाना चाहिए।

उदाहरणतः निम्न स्तर के पार्टी सदस्यों को शिक्षित करने के लिए आपको शुरूआत इस शिक्षा के साथ करनी चाहिए कि सामाजिक वर्ग क्या होते हैं, वर्गों की विद्यमानता क्यों वर्ग संघर्ष और क्रान्ति को जन्म देती है। यह समझाने में उनकी मदद करते हुए उनको समझाना चाहिए कि इस समय हम जो कुछ कर रहे हैं, वह वस्तुतः क्रान्तिकारी कार्य और वर्ग संघर्ष है। इस विधि से हमें प्रत्येक के दिमाग में यह बात साफ-साफ "बैठा देनी चाहिए कि हम इस समय किस प्रयोजन से लड़ रहे हैं और उसका परिणाम क्या होगा।

आन्दोलनात्मक कार्य प्रचार विभाग का एक और महत्वपूर्ण कार्य है।

आन्दोलनात्मक कार्य अवाम के उत्साह को उभारने और क्रान्तिकारी कर्तव्यों की पूर्ति हेतु सीधे उन्हें लामबंद करने के लिए किया जाता है। आन्दोलनात्मक कार्य नीरस ढंग से नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि उसे समय, विशिष्ट स्थितियों और निर्धारित क्रान्तिकारी कर्तव्यों के अनुरूप बनाया जाना चाहिए।

उदाहरणस्वरूप एक आन्दोलनकारी हमले की तैयारियां कर रहे सैनिकों को यह बता सकता है कि वीर ली सु बोक कैसे अपने देश और अपने देशवासियों के लिए लड़ा था। कैसे उसने शत्रु को पछाड़ा और अपनी टुकड़ी की विजय को आश्वस्त किया था। यह जवानों को वीरोचित संघर्ष के लिए उद्‌बोधित करने में अत्यन्त उपयोगी होगा।

लेकिन यदि हमले की तैयारी करने वालों को आन्दोलनकारी सर्वथा

असम्बद्ध मामलों के बारे में, जैसे मोर्चे के पीछे की खाद्य स्थिति क्या है, बताने लगेगा तो वह बेवक्त की रागिनी ही कही जाएगी और सर्वथा निष्प्रभाव सिद्ध होगी। धान की रोपाई के मौसम में धान की रोपाई के बारे में या फसल कटाई के मौसम में कटाई के बारे में, आन्दोलनात्मक काम किया जाना चाहिए और उसे फैक्टरियों के मजदूरों और ग्रामीण क्षेत्रों के किसानों के माफिक होना चाहिए।

हमारा प्रचारात्मक और आन्दोलनात्मक कार्य वास्तविकता से दूर होने के कारण ही पार्टी सदस्यों पर अनावश्यक बोझ लाद देता है। ढेर-के-ढेर दस्तावेज नीचे भेजे जाते हैं, जिन्हें पार्टी सदस्यों को पढ़ना होता है और बार-बार बैठकें आयोजित की जाती हैं। लेकिन पार्टी सदस्यों की चेतना को प्रखर बनाने और उन्हें सीधे क्रान्तिकारी कर्तव्यों की पूर्ति के लिए प्रेरित करने में ये दस्तावेज और ये बैठकें कोई मदद नहीं कर सकी हैं।

मैंने दक्षिण ह्वांगहाए प्रान्त में पाया है कि वहां का प्रचार-आन्दोलन विभाग यह समझता है कि उसने अवाम में थोड़ा-बहुत आन्दोलनात्मक कार्य चलाकर अपने तमाम दायित्वों को पूरा कर लिया है जबकि उसने पार्टी सदस्यों और कार्यकर्ताओं के बीच शिक्षा-कार्य की अनदेखी की है। उसका आन्दोलनात्मक कार्य भी कोई उचित ढंग से नहीं हुआ है।

प्रचार-आन्दोलन विभाग को चाहिए कि वह कार्यकर्ताओं और पार्टी सदस्यों को शिक्षित करे ताकि वे मार्क्सवादी-लेनिनवादी विधि से मामलों का विश्लेषण कर सकें और समस्याओं को सुलझा सकें। उसे उनको कट्टर क्रान्तिकारी बनने का प्रशिक्षण देना चाहिए जो हर आंधी-तूफान में पार्टी द्वारा सौंपे गये कर्तव्यों को बिना चूके निभा सकें। यह प्रचार विभाग का सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य है।

तब फिर भारी उद्योग, हलके उद्योग, मत्स्य उद्योग और कृषि विभागों सरीखे पार्टी के आर्थिक विभागों के दायित्व क्या हैं?

आर्थिक विभागों को पार्टी कार्य अर्थात् जनता के बीच कार्य भी करना चाहिए। उन्हें अपने सम्बन्धित क्षेत्रों में लोगों के साथ प्रभावशाली ढंग से काम करना चाहिए और इस तरह कार्यकर्ताओं और अवाम को पार्टी नीतियों की क्रियान्विति के लिए काम करने को प्रेरित करना चाहिए। आर्थिक निकायों के कार्यकर्ताओं के साथ कार्य पार्टी के आर्थिक विभागों का प्राथमिक काम है।

शिक्षा विभाग को स्कूलों के प्रिंसिपलों और शिक्षकों के साथ, औद्योगिक विभाग को मैनेजरों, मुख्य इन्जीनियरों और दूकान मैनेजरों के साथ और कृषि विभाग को कृषि सहकारों और काउंटी प्रबन्ध समितियों के अध्यक्षों के साथ काम करना चाहिए।

आर्थिक विभागों को चाहिए कि वे कार्यकर्ताओं को पार्टी नीतियों से परिचित

करायें, उनकी क्रियान्विति में उनका निरीक्षण, नेतृत्व और मदद करें और सामयिक रूप से उनके कार्य के परिणामों को संकलित करें। आर्थिक विभागों को चाहिए कि वे कार्यकर्ताओं को निरन्तर मार्क्सवाद-लेनिनवाद की शिक्षा दें और उनकी कार्यशैली और कार्यविधि में सुधार लाने का प्रयास करें।

बहरहाल इस समय पार्टी के आर्थिक विभागों के कार्यकर्ता पार्टी कार्य अर्थात जनता के साथ कार्य करने की बजाय आर्थिक मन्त्रालयों और प्रबन्ध कार्यालयों के कार्यकर्ताओं के साथ इधर-उधर आ-जा रहे हैं और काम लेने वाले मालिकों जैसा आचरण कर रहे हैं। वे फैक्टरियों में जाते हैं, परन्तु मैनेजरों और मुख्य इंजीनियरों के साथ बातचीत करने और उन्हें शिक्षित करने के लिए नहीं, बल्कि प्रशासनिक निकायों के कार्यकर्ताओं के साथ मिल कर केवल लोगों को आगे बढ़ने के लिए उत्साहित करने।

पार्टी केन्द्रीय समिति के आर्थिक विभाग कार्यकर्ताओं के साथ काम पर अपने मुख्य प्रयासों को केन्द्रित करने की बजाय प्रशासनिक कार्य अपने ऊपर ले रहे हैं। ऐसा लगता है कि निचले निकाय भी इसी परिपाटी का अनुसरण कर रहे हैं।

पार्टी विभागों को पार्टी कार्य करना चाहिए। संगठन और प्रचार विभागों को पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ और आर्थिक विभागों को आर्थिक निकायों के कार्यकर्ताओं के साथ काम का संचालन करना चाहिए। इस तरीके से तमाम निकायों में पार्टी के और आर्थिक कार्यकर्ता काम करने के लिए प्रोत्साहित किए जाएंगे।

पार्टी के संगठन, प्रचार और आर्थिक विभागों को मुख्यत: पार्टी कार्य करना चाहिए, कार्यकर्ताओं के साथ कार्य को अपना प्राथमिक कर्तव्य समझना चाहिए और अपने तमाम प्रयास पार्टी संगठनों और सदस्यों को सक्रिय बनाये रखने पर केन्द्रित करने चाहिए। असल में समस्या ही यही है, जिसे हम इस पूर्णाधिवेशन में सुलझाना चाहते हैं।

अब सवाल यह है कि आर्थिक कार्य कैसे किया जाए। अर्थात यदि पार्टी के तमाम विभाग केवल पार्टी कार्य पर ही अपने प्रयास केन्द्रित कर दें तो आर्थिक कार्य की कैसे गारंटी की जाए।

मेरे कहने का अर्थ यह नहीं है कि पार्टी को आर्थिक कार्य करना ही नहीं चाहिए। प्रान्तीय काउंटी और अन्य तमाम पार्टी समितियों को आर्थिक कार्य का पूरा दायित्व वहन करना चाहिए। फैक्टरी पार्टी समितियों को फैक्टरियों में उत्पादन की, और मन्त्रालयों में पार्टी समितियों को मन्त्रालयों के कार्य की जिम्मेदारी संभालनी चाहिए।

हम इस समय दो क्रान्तिकारी कार्यों —देश के पुनरेकीकरण और समाजवाद के

निर्माण—को हाथ में लिये हुए हैं। जैसा कि पार्टी नियमों में प्रतिपादित किया गया है, पार्टी इन्हीं दायित्वों को पूरा करने के लिए गठित की गयी थी। पार्टी इन दायित्वों को पूरा करने के लिए लड़ रही है। वह इन दायित्वों की पूर्ति को आश्वस्त करने के लिए अपनी जुझारू भूमिका को प्रखर कर रही है। सारांश यह कि पार्टी क्रान्ति को सम्पन्न करने का एक संगठन है—क्रान्तिकारी कर्तव्यों की पूर्ति के लिए लड़ रहा एक दस्ता है।

तो फिर कैसे पार्टी आर्थिक निर्माण के कार्य से अलग-थलग रह सकती है? मेरे कहने का मुद्दा यह नहीं है कि पार्टी समिति का अध्यक्ष केवल सांगठनिक विभाग के साथ ही व्यस्त रहे।

तो फिर कैसे पार्टी आर्थिक कार्य का निर्वाह करे?

पार्टी को आर्थिक कार्य का मार्गदर्शन करना चाहिए, लेकिन इसकी सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर नहीं लेनी चाहिए। पार्टी को आर्थिक क्षेत्रों में पार्टी संगठनों और पार्टी सदस्यों को लामबंद करना चाहिए और उन्हें नेतृत्व प्रदान करना चाहिए और इस तरह आर्थिक कार्य को पार्टी द्वारा अपेक्षित विधि के अनुरूप करना चाहिए। जैसी कि मैंने अक्सर चर्चा की है, पार्टी कार्यकर्ताओं को आर्थिक कर्तव्यों को पूरा करने में कर्णधार की भूमिका निभानी चाहिए। उन्हें जहाज की पतवार को अपने नियन्त्रण में लेना चाहिए ताकि आर्थिक कार्यकर्ता पार्टी लाइनों द्वारा निर्दिष्ट सही मार्ग पर बढ़ सकें।

पोत की पतवार संभालने का अर्थ प्रशासन के पीछे-पीछे चलना नहीं है। आवश्यकता पड़ने पर पार्टी समिति अध्यक्ष को हरावल दस्ते में होना चाहिए। छापामार टुकड़ियों में हमले के समय राजनीतिक कार्य के अध्यक्ष राजनीतिक कमिसार हरावल दस्ते में होते थे और पीछे हटते समय वह अन्तिम होते थे। इसी प्रकार पार्टी कार्यकर्ताओं को हमेशा किसी भी स्थिति में प्रहार सहने के समय सबसे आगे होना चाहिए।

पार्टी कार्यकर्ताओं के लिए मुख्य काम पतवार संभालने का है, भले ही वे अग्रिम पंक्ति में हों या पिछली पंक्ति में। पार्टी अधिकारियों को हमेशा पार्टी नीतियों की अच्छी समझ होनी चाहिए, उन्हें पार्टी सदस्यों और पार्टी संगठनों को सक्रिय होने के लिए प्रेरित करना चाहिए और लोगों का सही दिशा में मार्गदर्शन करना चाहिए।

अब सब से आगे रहते हुए नेतृत्व करने में पार्टी कार्यकर्ताओं को अन्य कोई भी कार्य करने से पूर्व क्या बात दृष्टिगत रखनी चाहिए?

पार्टी कार्यकर्ताओं द्वारा नेतृत्व प्रशासनिक तरीके से अथवा आदेश या आज्ञा के रूप में प्रदान नहीं किया जाना चाहिए। उसे सुसंगठित, विशिष्ट और सक्रिय

ढंग से प्रदान किया जाना चाहिए। यही पार्टी में सन्निहित विधि है। काम करने की पार्टी की विधि का अर्थ है पार्टी सदस्यों, कार्यकर्ताओं, समितियों और सेलों को काम करने के लिए प्रेरित कर कार्य की गारंटी देना।

सेना में बखूबी कमांडिग अफसर केवल ऐसा हुक्म दे सकता है, "आगे बढ़ो"। वहां किसी स्पष्टीकरण की जरूरत नहीं होती।

परन्तु पार्टी कार्यकर्ता को चिल्लाकर आदेश देने की बजाय धैर्यपूर्वक और विस्तारपूर्वक उद्देश्य प्रकट करने चाहिए और उनकी पूर्ति के लिए जरूरी काम संगठित करना चाहिए। इस वजह से सैन्य कमांडर की अपेक्षा राजनीतिक कमांडर होना ज्यादा कठिन है।

मिसाल के तौर पर, यदि कल के लिए एक लड़ाई की योजना बनायी जाए तो राजनीतिक कार्यकर्ताओं और चीफ आफ स्टाफ को लड़ाई की तैयारियों में सारी रात लगा देनी होगी। चीफ आफ स्टाफ को लड़ाई की एक विस्तृत योजना तैयार करनी होगी और तमाम सैनिकों को ठोस दायित्व सौंपने होंगे। और राजनीतिक कार्यकर्ताओं को आवश्यक राजनीतिक काम करना होगा ताकि प्रत्येक व्यक्ति लड़ाई के अपने मिशन को सराहनीय ढंग से पूरा करे।

दक्षिण ह्वांगहाए प्रांत में हर कोई एक फौजी कमांडर की तरह काम कर रहा है और कोई भी काम के पूरा हो जाने की गारंटी नहीं दे रहा है। कोई भी राजनीतिक काम या स्टाफ अफसर का काम नहीं कर रहा। वहां केवल ऐसे लोग हैं जो चिल्ला कर हुक्म देते हैं, "आगे बढ़ो!" यदि आप संगठन और लामबंदी का ठोस काम नहीं करते तो मात्र हुक्मों से आप कहीं भी न पहुंच पाएंगे।

यदि खाद खेतों में ले जाई जानी है, तो पार्टी संगठन को पहले लोगों को इस काम के बारे में साफतौर पर समझाना होगा, और फिर पार्टी सदस्यों को लामबंद करना होगा तथा कर्तव्य को पूरा करने के लिए काम को विस्तार से संगठित करना होगा।

पार्टी को इस काम की राजनीतिक और सांगठनिक रूप से गारंटी देनी चाहिए। राजनीतिक कार्यकर्ता को यह काम करने में समर्थ होना चाहिए। उसे लोगों को आदेशों द्वारा नहीं, बल्कि समझा-बुझाकर वैचारिक दृष्टि से लामबंद करना चाहिए, और उनके संघर्ष को संगठित करना चाहिए।

दक्षिण ह्वांगहाए प्रांतीय पार्टी ने कृषि का नेतृत्व करने में प्रांतीय जन-समिति के काम की राजनीतिक दृष्टि से गारंटी देने की बजाय केवल इतना किया कि जनता से आगे बढ़ने का अनुरोध करने में वह प्रशासन के साथ-साथ बनी रही। प्रांतीय पार्टी और जन-समिति, दोनों के अध्यक्ष बजाए इसके कि एक आगे-आगे रहता और दूसरा पीछे-पीछे, आगे ही खड़े हो लिये और एक ने लोगों को बायें

चलने का आदेश दिया और दूसरे ने दांये चलने का। इस तरह स्थिति बद से बदतर होती गयी।

प्रशासनिक ढंग से लोगों को आगे बढ़ने को कहना एक जीर्ण-शीर्ण कार्य-विधि है। जन-समिति को चिल्ला कर हुक्म देने के तरीके का भी प्रयोग नहीं करना चाहिए। जन-समिति को भौतिक और तकनीकी दृष्टि से आर्थिक काम की गारंटी देनी चाहिए, जबकि पार्टी राजनीतिक, सांगठनिक और पार्टी लाइनों पर इसकी गारंटी देती है।

सेना में भी केवल आज्ञाएं जारी करके काम करना आवश्यक रूप में वांछनीय नहीं है। वहां भी कार्य की सांगठनिक और तकनीकी रूप से गारंटी दी जानी चाहिए। जो फौजी कमांडर कुछ नहीं करता लेकिन चिल्लाकर आज्ञाएं जारी करता है, वह आज हमारी सेना की कमान नहीं संभाल सकता। यह सब अतीत का अवशेष है। सफलता के लिए उपयुक्त स्थितियां आश्वस्त करने के काम को छोड़ कर नेतृत्व के और किसी कार्य की कल्पना नहीं की जा सकती। तमाम क्षेत्रों में प्रभाव-शाली नेतृत्व से इसी कार्य की अपेक्षा की जाती है।

इसके बाद पार्टी कार्यकर्ताओं को नेतृत्व के काम में आत्मनिष्ठता से सतर्कता बरतनी चाहिए। पार्टी कार्यकर्ताओं को यथार्थवादिता के आधार पर काम करना चाहिए, जिसका अर्थ है वास्तविकता का सामना करना। इसका आशय यह है कि निचली इकाइयों में जाया जाए और वास्तविक स्थिति को ठोस रूप में समझा जाए।

प्रशासनिक कार्य-शैली का प्रयोग आपको वास्तविकता से दूर रखेगा, जनता से आप कट जाएंगे और यह आपको आत्मनिष्ठता की दिशा में ले जाएगा।

हमारे कुछ कार्यकर्ता स्थितियों को प्रत्येक पहलू की बजाए एक ही पहलू से देखने के आदी हैं। हमें अपने नेतृत्व के कार्य में इससे भी सतर्कता बरतनी चाहिए। यदि आप अपने कार्यकलाप से बाहर कदम रखेंगें और प्रशासन का स्थान ले लेंगे तो आप मामलों को व्यापक रूप से समझ नहीं पाएंगे।

प्रशासनिक कार्यकर्ताओं के लिए एकांगी तरीके से देखने की संभावना रहती हैं। अतः पार्टी को हमेशा उनका मार्गदर्शन करना चाहिए ताकि वे भटक न जाएं।

ऐसी गलत प्रवृत्तियां भी मौजूद हैं, जैसे दक्षिणपंथी भटकाव की आलोचना की जाने पर वामपंथ की ओर बहुत दूर तक चले जाना तथा काम में हुई गलतियों की आलोचना की जाने पर आतंकित हो जाना और जो कुछ करना उचित हो उसे भी न करना। आपको लकीर-के-फकीरपन का विरोध करने के बहाने विज्ञान को ठुकरा देने की हद तक नहीं चले जाना चाहिए।

आर्थिक मामलों के मार्गदर्शन में भी भटकाव प्रकट हो सकते हैं। लोग इस लिए आर्थिक काम से दूर रहने की प्रवृत्तियां प्रकट कर सकते हैं कि उनको इस बात के लिए चेतावनी दी गयी है कि उनमें आर्थिक काम अपने ऊपर लेने की आदत है।

चूंकि इस समय उत्तरी आधे भाग में लोगों का सबसे महत्वपूर्ण क्रांतिकारी कर्तव्य समाजवादी निर्माण है, अतः हमारे लिए आर्थिक काम को छोड़कर अन्य कौन-सा काम रह जाता है? असल मुद्दा यह है कि इन मामलों को उन पर छोड़ दिया जाना चाहिए जो प्रत्येक क्षेत्र में प्रशासनिक रूप से जिम्मेदार हों और पार्टी को उनका नेतृत्व करना चाहिए और उनके काम की गारंटी देनी चाहिए ताकि वे भटक न जाएं।

पार्टी को पार्टी सदस्यों, पार्टी संगठनों और अवामी संगठनों द्वारा प्रशासनिक कार्य कर्ताओं की गतिविधियों की पर्याप्त गारंटी देनी चाहिए। आर्थिक कार्य पर कारगर पार्टी नेतृत्व लागू करने का यही एकमात्र उपाय है।

यदि पार्टी कार्यकर्ता केवल वाहन में प्रशासनिक कार्यकताओं के साथ घूमते-फिरते हैं तो वे सभी सही मार्ग से भटक सकते हैं और आत्मनिष्ठता की गर्त्त में गिर सकते हैं। उस हालत में ऐसा कोई नहीं होगा जो हालात को ठीक कर सके। इस गलती के खिलाफ हमेशा सावधानी बरती जानी चाहिए।

यदि पार्टी अवाम के बीच जाती है, वास्तविकता से वाकिफ होती है, हालात की व्यापक समझदारी प्राप्त करती है और अच्छा नेतृत्व प्रदान करती है तो वह आत्मनिष्ठता या भटकाव की गलतियां न करेगी, गलत प्रवृत्तियों के साथ समझौता करने की परिपाटी का अंत हो जायेगा और सब कुछ पार्टी लाइन के अनुसार सुचारु रूप में चलेगा।

पार्टी समितियों को सामूहिक ढंग से काम का नेतृत्व और नियंत्रण करना चाहिए। प्रांत, नगर, काउंटी और फैक्टरी पार्टी कार्यकारिणियों को हमेशा अपने आप सम्बन्धित क्षेत्रों में उठने वाले तमाम सवालों पर बहस करनी चाहिए, इन मामलों में पार्टी नेतृत्व प्रदान करना चाहिए और पार्टी लाइनों पर उनका समाधान आश्वस्त करना चाहिए। अतः हमें नेतृत्व के प्रशासनिक तौर-तरीकों का अंत करना होगा और भटकावों और आत्मनिष्ठता की रोकथाम करनी होगी।

२. देहातों में वर्ग संघर्ष के बारे में

अब देहाती क्षेत्रों में वर्ग संघर्ष के संचालन के बारे में चंद शब्द कहना चाहूंगा।

जैसाकि सभी जानते हैं, हमारे देहात में शोषक वर्ग पहले ही अपदस्थ किये जा चुके हैं और किसान हर प्रकार के दमन और शोषण से मुक्त हो भूमि के स्वामी और समाजवादी ग्रामांचल के मालिक बन गये हैं। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि देहाती क्षेत्रों में वर्ग संघर्ष समाप्त हो गया है और ग्रामीण क्षेत्रों में प्रतिक्रियावादियों की कपटपूर्ण चालबाजियों के विरुद्ध सतर्कता को ढीला किया जा सकता है। यद्यपि इस समय कोई शोषक नहीं हैं, फिर भी जो लोग भूतकाल में शोषक थे, वे अभी भी कायम हैं और उनमें से कुछेक हमारी व्यवस्था को नष्ट करने के लिए मौके की तलाश में हैं। इन शत्रु तत्वों के खिलाफ निरन्तर दृढ़ संघर्ष चलाना होगा।

पहले हमारे देश के ग्रामीण क्षेत्रों में जमींदार वर्ग सर्वाधिक प्रतिक्रियावादी और कपटी वर्ग का प्रतिनिधित्व करता था। जरा उपन्यास "भूमि" को पढ़िए और आपको साफ पता चल जाएगा कि कितनी निर्दयता से जमींदार हमारे किसानों का दमन और शोषण करते थे। इस मामले में बड़े और छोटे जमींदारों में कोई अन्तर न था। तथ्य तो यह है कि छोटे जमींदार किसानों का पसीना बहाने में बड़े जमींदारों से कोई कम निर्दयी नहीं थे। अतः कृषि सुधार लागू करते समय हमने उन तमाम लोगों को, जिनके पास पांच छोंगबो से अधिक भूमि थी और जो अपनी भूमि किराये पर देते थे, जमींदार घोषित कर दिया और उनकी जागीरों को जब्त कर लिया।

हमारे ग्रामीण क्षेत्रों में जमींदारों का सफाया हुए लम्बा समय बीत चुका है। तो भी जो लोग जमींदार रह चुके हैं, वे अभी भी मौजूद हैं और उनमें से अधिकतर आज भी हमारी पार्टी और हमारी जनता के शत्रु हैं। वे अपनी पुरानी स्थितियां फिर से हासिल करने के लिए व्यग्रतापूर्वक बाट जोह रहे हैं। जिन लोगों की भूमि जब्त की गयी है, उनसे हम यह उम्मीद नहीं कर सकते कि वे अपने विचारों को पूर्णतया बदल लेंगे और पुरानी प्रणाली की बहाली के बारे में अपने भ्रम को तिलांजलि दे देंगे। इस बात की कम ही संभावना है कि वे अपने जीवन-काल में उसे तज सकेंगे।

कृषि सुधार के दौरान हमने कोई ४४,००० जमींदारों की जमीन जब्त की जो काफी बड़ी संख्या है। हमने जमींदारों को न फांसी दी, न गोली से उड़ाया, बल्कि सिर्फ उन्हें उनकी ज़मीन से वंचित कर दिया और उन्हें अन्य स्थानों पर भेज दिया।

हम इतने नर्म-दिल इसलिए हो सके, कि जनता के हाथों में सत्ता के होने की

वजह से वगैर किसी जमींदार को फांसी पर लटकाये कृषि सुधार को लागू करना सर्वथा संभव था।

जमींदारों को उनके मूल निवास-स्थानों से दूसरी जगहों पर भेजकर हमने ठीक ही किया। ऐसा करके हमने इस बात की संभावना सर्वथा समाप्त कर दी कि कुछ अज्ञानग्रस्त किसान जमींदारों के प्रति सहानुभूति और आदर-भाव रख सकें या उनके प्रभाव में आ सकें। यह मात्र देशान्तर गमन न था; हमने उनपर कड़ी नजर रखी ताकि वे कोई शरारत न कर सकें।

परन्तु युद्ध ने मामले को उलझा दिया। यह सबको मालूम है कि हमारे अस्थायी तौर पर पीछे हटने के दौरान जमींदारों ने प्रतिक्रियावादी हरकतें कीं और कई जगह अमरीकी शैतानों के चाटुकारों के रूप में काम किया। उस समय व्यस्त गड़बड़ी का लाभ उठाकर काफी संख्या में जमींदार छद्म नामों का प्रयोग कर और सज्जन होने का दावा कर चोरी-छिपे किसानों में घुस गये। यह कहने की जरूरत नहीं है कि उनमें से कुछेक का सफाया किया जा चुका है, कुछ दक्षिण कोरिया भाग गये हैं और कुछ बुढ़ापे से मर गये हैं। फिर भी उनमें से कई एक उत्तरी आधे भाग के विभिन्न क्षेत्रों में, विशेषत: ग्रामीण क्षेत्रों में, अभी तक छिपे हुए हैं। उदाहरणार्थ उनमें से कई ऐसे हैं, जिन्होंने छांग अमुक आदि से लेकर ली अमुक आदि तक छद्म नाम रख लिये हैं, कई ऐसे हैं जो वास्तव में उत्तर हामग्योंग प्रांत की होएरयोंग काउंटी के भूतपूर्व जमींदार थे, लेकिन अब सार्वजनिक रूप से कह रहे हैं कि वे रयांगगांग प्रान्त की कापसन काउंटी के गरीब किसान हैं और कई ऐसे हैं जो सचमुच चौकस होते हुए भी अपनेआप को जन्म से ही मूढ़ जता रहे हैं।

अत: हमें इस गड़बड़ स्थिति को उचित ढंग से साफ करना होगा और यह ठीक-ठीक मालूम करना होगा कि जमींदार कहां और कैसे रह रहे हैं और वे क्या करना चाहते हैं। हमारे देहाती क्षेत्रों में अब भी भूतपूर्व जमींदार ही संघर्ष का मुख्य निशाना हैं। आपको क्षण भर के लिए भी यह नहीं भूलना चाहिए कि जमींदारों में अब भी हमारी पार्टी और हमारी प्रणाली से कटुतापूर्ण द्वेष है और वे निरन्तर दिमाग लड़ाकर ऐसे उपाय खोज रहे हैं, जिनसे हमें नुकसान पहुंचा सकें और अपनी जब्त की गयी भूमि वापस ले सकें।

दक्षिण ह्वांगहाए प्रान्त के अपने हाल के दौरे में हमने अनाक काउंटी के रोआम-री गांव के एक भूतपूर्व जमींदार के बारे में सुना, जो मूर्ख बना हुआ खामोश पड़ा रहता था और जो हमारे पीछे हटने के समय एकाएक फिर सजीव हो उठा और बढ़िया कपड़े और नर्म टोपी पहने तथा सैर की छड़ी लेकर बाहर आया और फिर छंगयोन काउंटी गया जहां उसकी जब्त जागीर थी। वहां उसने अकड़ दिखा

कर और चिल्लाकर लोगों से कहा कि उसकी जमीन लौटा दें। इस प्रकार के अनेकों उदाहरण अन्य स्थानों के भी हैं।

ये जमींदार, जो गांवों में मूर्ख बने पड़े रहते हैं, काम में सुस्ती दिखाते हैं, बीमारी के बहाने बैठकों में जाने से बचने का यत्न करते हैं, और इसी प्रकार की अन्य हरकतें करते हैं, अब उस दिन का स्वप्न देख रहे हैं, जब वे अपनी सैर की छड़ियां लेकर फिर बाहर आएंगे।

कुछ जमींदार दिन के समय अन्य लोगों के साथ काम करने का नाटक करते हैं और जब रात आती है तो गुप्त रूप से किसी पिछले कमरे में दक्षिण कोरियाई रेडियो सुनते हैं और फिर किसानों में प्रतिक्रियावादी अफवाहें फैलाते हैं। ये छिपे हुए शत्रु लोग पुन: सिर उठा सकते हैं, खासतौर पर इस समय, जबकि शत्रु ने अपने कम्युनिस्ट-विरोधी अभियान को तेज कर दिया है और समाजवादी शिविर में भी संशोधनवाद की आंधी चल रही है।

साथियो, जो कोई यह समझता है कि जमींदार हमारे खिलाफ उठ खड़े न होंगे, वह दरअसल अनाड़ी है। बताया गया है कि अब भी दक्षिण ह्वांगहाए प्रान्त में जमींदार अपने बेटों या युवा पोतों को साथ लेकर घूम रहे हैं और एक-एक कर जब्त की गयी जमीनें दिखाकर उनसे कह रहे हैं: "मेरी मौत के बाद भी तुम यहीं रहना और किसी भी उपाय से इस जमीन को वापस लेना।" जो कोई भी वर्ग संघर्ष की सच्चाई को जानता है, वह इसे संयोग की बात कदापि न मानेगा। यह स्पष्ट है कि जब तक, जिन जमींदारों की जमीन जब्त की जा चुकी है, वे जिन्दा रहेंगे, तब तक उनकी आकांक्षा भी न मरेगी; वह भी जिन्दा रहेगी, यद्यपि वे एक वर्ग के रूप में उखाड़ फेंके जा चुके हैं।

खासतौर पर इस स्थिति में, जबकि हमारा देश अभी तक विभाजित है और दक्षिणी आधे भाग में अमरीकी लुटेरे मजबूती से जमे हुए हैं, यह बिल्कुल भी कल्पना नहीं की जा सकती कि भूतपूर्व जमींदारों के दिमाग इतनी आसानी से बदल जाएंगे। बेशक जब देश पुन: एक हो जाएगा, और अमरीकी दस्यु खदेड़ बाहर किये जाएंगे तो हो सकता है, जमींदार न्यूनाधिक अपनी उम्मीदें छोड़ दें। लेकिन तब भी जमींदारों का यह भ्रम बना रह सकता है कि किसी संयोग से "भगवान" अवतार लेगा और उनकी जमीन उन्हें लौटा देगा। वे "उसे" चढ़ावा भी पेश कर सकते हैं, जो एक लोटा जल से अधिक न होगा और अनर्गल स्वप्न में अपने शानो-शौकत के दिनों में लौटने के लिए प्रार्थना भी करेंगे।

इस सबसे हमें यह साफ समझ में आ जाना चाहिए कि जिन जमींदारों की जमीन जब्त की गयी है, उनके दिल में कितनी कटुता है और हमारे प्रति वे कितनी गहरी घृणा रखते हैं। उन्हें विश्वास है कि जमींदारों के गौरव के दिन कभी न

कभी लौट सकते हैं, क्योंकि दक्षिण कोरिया में जमींदार और पूंजीपति कायम हैं और वहां अमरीकी सेनाएं तैनात हैं। अतः वे हमारे खिलाफ विद्रोह के अवसर की दिन रात बाट जोह रहे हैं। आपको इस तथ्य के प्रति पूर्णतया चैतन्य रहना होगा और पार्टी सदस्यों तथा तमाम किसानों को इसकी जानकारी देनी होगी और ऐसा करके जमींदारों की किसी भी शत्रुतापूर्ण कार्यवाही के विरुद्ध तमाम लोगों की चौकसी को तेज करने में उनका नेतृत्व करना होगा। यह महत्वपूर्ण है।

कुछ साथी ऐसे हैं जो अक्सर भूतपूर्व जमींदारों की अपेक्षा "शान्ति रक्षा दल" से कभी सम्बन्धित रहे लोगों के प्रति अधिक चौकसी दिखाते हैं। ऐसा करके वे गलती कर रहे हैं। बेशक वे धनी किसान, जो "शान्ति रक्षा दल" में शामिल हुए और जिन्होंने जान-बूझकर प्रतिक्रियावादी कार्रवाइयां कीं तथा घृणित अत्याचार ढाये, जमींदारों की तरह ही हमारे अधिनायकत्व और हमारे संघर्ष का लक्ष्य हैं। लेकिन काफी संख्या में मध्यम और गरीब किसान और भाड़े पर काम करने वाले भूतपूर्व खेत मजदूर भी हैं, जो बहका कर या धोखाधड़ी से "शान्ति रक्षा दल" में शामिल किये गये थे। उनके वर्गगत मूल पर विचार करके कहा जा सकता है कि उन्हें अपने पक्ष में किया जा सकता है। हमारी पार्टी इन तबकों के लोगों को अपने संघर्ष का लक्ष्य नहीं समझती, इसकी बजाय वह उन्हें ऐसे लोगों में मानती है, जिन्हें शिक्षा देने, समझाने-बुझाने के प्रत्येक उपाय से पुनः अपनी ओर लाना होगा।

यदि हम उन लोगों को स्वीकार नहीं कर सकते जो यह जाने बिना कि कौन क्या है, अमरीकी दुष्टों के एकाएक प्रकट हो जाने पर आतंकित होकर "शान्ति रक्षा दल" में शामिल हो गये थे, तो भला इतनी तंग-नजरी से हम कैसे आशा कर सकते हैं कि दक्षिण के आधे भाग में हम जनसमुदायों को अपने पक्ष में कर सकेंगे और राष्ट्रीय पुनरेकीकरण के ध्येय को पूरा कर सकेंगे? दक्षिण कोरिया में इस समय अकेले कठपुतली सेना में लगभग सात लाख लोग सक्रिय सेवा में हैं और यदि अपने सेवा-काल की समाप्ति पर सेवा-निवृत्त हुए लोगों को भी शामिल कर लिया जाए तो उनकी संख्या दसियों लाख जा पहुंचेगी। हो सकता है, उनमें से बहुत से युद्ध क्षेत्रों में हमारी जन-सेना के विरुद्ध लड़े हों। फिर भी हम कठपुतली सेना के तमाम सैनिकों को, जो अधिकांशतः मजदूर और किसान मूल के हैं, शत्रु नहीं मान सकते। इसके विपरीत हमें उन सबको अवाम की पंक्ति में, अर्थात् अपने पक्ष में लाने के लिए सक्रिय रूप से काम करना होगा।

हमें यह तथ्य दृष्टिगत रखना होगा कि कोरियाई क्रान्ति में पूर्ण विजय अभी हासिल की जानी है और दक्षिण कोरियाई क्रान्ति को सम्पन्न करने में दक्षिण कोरियाई जनता की मदद करने और देश का पुनरेकीकरण करने का कर्तव्य अभी

भी पूरा नहीं हुआ है। इस कर्तव्य को सम्पन्न करने में निर्णयात्मक उपादान यह है कि पार्टी व्यापक जन-समुदाय को अपने पक्ष में लाये और क्रान्तिकारी शक्तियों को इकट्ठा करे। जब हम मुट्ठी भर शत्रुओं को अकेला कर देंगे और उत्तर तथा दक्षिण कोरिया में तमाम लोगों को अपनी पार्टी के साथ दृढ़तापूर्वक गोलवंद कर लेंगे तभी हम किसी भी समय राष्ट्रीय पुनरेकीकरण और क्रान्ति में अन्तिम विजय प्राप्त करने की महान घटना के लिए कटिवद्ध हो सकेंगे।

यही वह दृष्टिकोण है, जिसे अपना कर हमें अवाम के तमाम तबकों में जाना चाहिए, उनके साथ एकता कायम करनी चाहिए और उनमें से प्रत्येक को क्रान्ति के पक्ष में लाने का यत्न करना चाहिए।

और यह जरूरी है कि हम अनन्यत: वर्ग दृष्टिकोण से लोगों को परखें और पार्टी के इस वर्ग दृष्टिकोण पर दृढ़तापूर्वक निर्भर रहते हुए मित्र और शत्रु के बीच स्पष्ट भेद करें। शत्रुओं को तभी अलग-थलग किया जा सकता है और यथासंभव अधिकतम लोगों को अपने पक्ष में तभी लाया जा सकता है, जब हम वर्ग के आधार पर यह सही-सही तय करें कि वे कौन लोग हैं जिनके खिलाफ हमें संघर्ष करना है और वे कौन लोग हैं जिनके साथ हम एकता चाहते हैं।

गरीब या मध्यम किसान मूल के जो लोग "शान्ति रक्षा दल" में शामिल कर लिये गये थे और जो चंद दफा पहरे पर खड़े हुए थे, उन्हें हम ऐसे लोगों में क्यों मानते हैं, जिनकी वापसी का स्वागत किया जाना चाहिए और जिन्हें अवश्य ही अपनी ओर किया जाना चाहिए? इसलिए कि भले ही राजनीतिक चेतना के अभाव में उन्होंने गम्भीर भूलें की हों, जहां तक उनके वर्ग के मूल का प्रश्न है, वे मेहनतकश हैं और वे क्रान्ति से बहुत अधिक लाभान्वित हुए हैं। चूंकि ये वे लोग हैं, जो मूलत: हमारी पार्टी के मुख्य जन समुदाय के अंग रहे हैं और केवल शत्रु के प्रभाव में कुछ समय तक प्रति-क्रान्ति में फंसा लिये गये थे, अत: वे उसी तरह निंदनीय नहीं हैं जैसे हमारे शत्रु, बल्कि उन्हें शत्रु के असर से मुक्त किया जाना चाहिए, क्रान्ति के पथ पर लाया जाना चाहिए और इस तरह उन्हें पुन: उस जन-समुदाय का अंग बनाया जाना चाहिए जिस पर हमारी पार्टी टिकी है। यही करना सही होगा।

तो फिर हम उन भूतपूर्व जमींदारों और उन धनी किसानों के विरुद्ध संघर्ष करना क्यों जरूरी समझते हैं जो "शान्ति रक्षा दल" से संबद्ध थे और जिन्होंने जघन्य अपराध किये थे, इसलिए कि वे शत्रु वर्ग मूल के हैं और उनकी जागीरें जब्त कर ली गयी हैं या उन्हें क्रान्ति से गहरा आघात लगा है। चूंकि अमरीकी शैतानों के समर्थन से उन्होंने जानबूझ कर प्रतिक्रान्तिकारी कार्रवाइयां की हैं और अब भी कर रहे हैं, और भविष्य में भी, जब कभी मौका हाथ आएगा, वे फिर हमारी

पार्टी और हमारी व्यवस्था के विरुद्ध सिर उभारेंगे, अतः यह स्वाभाविक और सही है कि उनके विरुद्ध एक निर्मम संघर्ष चलाया जाए।

जैसाकि इस बार दक्षिण ह्वांगहाए प्रान्त में सर्वथा स्पष्ट रूप से सामने आया है, पार्टी संगठनों में मुझे देहाती क्षेत्रों के वर्ग संघर्ष के प्रति गम्भीरता से ध्यान न देने की एक आम प्रवृत्ति दिखायी दी है। जिन तबकों की वापसी का स्वागत किया जाना चाहिए, उनके साथ गहराई से काम नहीं किया गया है और यही नहीं, शत्रुतापूर्ण तत्वों के खिलाफ संघर्ष असन्तोषजनक रहा है। उन भूतपूर्व जमींदारों को भी, जो खुलेतौर पर हमारे विरुद्ध विषाक्त अफवाहें फैलाते रहे हैं, छुआ तक नहीं गया है और अपनी जब्त की गयी जमींनों को वापस ले लेने की आशा में उनकी खंभे गाड़कर निशानदेही करने की हरकतों तक को सहन कर लिया जाता रहा है। हमने ऐसी गैर-वर्गीय घटनाएं भी देखी हैं कि किसान जमींदारों से घृणा करने की बजाय उन्हें गांव का "प्रभावशाली व्यक्ति" मानते हैं और एक पार्टी अधिकारी एक जमींदार के मकान की मरम्मत करता है, आदि। एक गांव में तो ऐसी घटनाएं भी हुईं कि छद्मवेश में आये एक शत्रु तत्व को अनजाने में पार्टी पांतों में शामिल कर लिया गया या ऐसे ही एक को एक सहकार में प्रमुख पद पर नियुक्त कर दिया गया। इससे साफ पता चलता है कि स्थानीय पार्टी अधिकारी वर्ग संघर्ष के बारे में बड़ी ही कुंद राजनीतिक दृष्टि रखते हैं और पार्टी सदस्यों तथा किसानों की वर्ग चेतना का स्तर बहुत ही नीचा है।

इस समय देहात की प्रत्येक री में वास्तविक स्थिति यह है कि शत्रु तत्वों के विरुद्ध जिनमें भूतपूर्व जमींदार भी शामिल हैं, कोई भी व्यावहारिक संघर्ष संगठित नहीं किया गया है। यदि वे हमारे खिलाफ प्रचार करते हैं या शत्रुतापूर्ण कार्यवाहियां करते हैं तो आपको उन्हें बेनकाब करना चाहिए और उनकी चालबाजियों को नाकाम करने के लिए संघर्ष में किसानों के समुदाय को प्रेरित करना होगा।

जब हम इस प्रकार के संघर्ष का आह्वान करते हैं तो एक अन्य किस्म का भटकाव प्रकट हो सकता है। भूतपूर्व जमींदारों के विरुद्ध नाकाफी लड़ाई के सवाल पर आलोचना किये जाने पर दक्षिण ह्वांगहाए प्रांत के कुछ भागों में कुछ साथी तमाम पुराने रिकार्ड, जो वर्षों से दबे पड़े थे, बाहर ले आये हैं और इस बात पर जोर देकर कि जमींदार दुष्ट हैं उनके विरुद्ध लड़ने के लिए एकाएक आग्रह कर रहे हैं। हम कैसे इन साथियों से पार्टी काम करने और वर्ग संघर्ष का नेतृत्व करने की दक्षता की आशा कर सकते हैं जबकि हम देखते हैं कि वे यह मानकर कि जमींदार भी अच्छे लोग हो सकते हैं, अभी तक हमेशा जमींदारों के कुकृत्यों का साथ देते आये हैं और अब एकाएक ऐसा शोरशराबा मचा रहे हैं? इस सबका यही कारण माना जा सकता है कि हमारे पार्टी अधिकारियों में क्रांतिकारी

प्रशिक्षण की कमी है और वे मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धांत और पार्टी के दृष्टिकोण से द लैस नहीं हैं।

अब उन तमाम जमींदारों का सफाया करना जरूरी नहीं है जिन्हें हमने उनकी जागीरें जब्त करने के समय भी फांसी नहीं दी। असल मुद्दा यह है कि उनके खिलाफ संघर्ष सहीतौर पर संगठित किया जाए, किसानों को इस बात के लिए कायल किया जाए कि उनके प्रति कोई सहानुभूति या आदरभाव नहीं रखना चाहिए, और जब वे प्रतिक्रियावादी अपराध करें तो अवाम उनका पर्दाफाश करें और रंगे हाथों पकड़े जाने वाले अन्य लोगों की तरह उनसे निपटने के लिए भी उन्हें न्यायिक निकाय के हवाले करें। कोई जमींदार मन में चाहे जो कुछ सोचता हो या कभी भविष्य में चाहे जो रुख ले, हमें तब तक उसे नहीं छूना चाहिए जब तक कि वह निष्ठापूर्वक हमारे कानूनों का पालन करता है और आज्ञाकारी बना रहता है।

जो जमींदार हमारी कार्रवाइयों का समर्थन करते हैं, और अपनी पिछली जमींदारी प्रणाली को अपराधपूर्ण मानते हुए सही व्यवहार करते हैं उन्हें सुधारना बेहतर होगा। ऐसे लोगों को, जो अपने बच्चों के भविष्य की खातिर गलत कदम उठाने से परहेज कर रहे हैं, अनावश्यक रूप से परेशान करने की कोई जरूरत नहीं हैं। ऐसे भी मामले हैं कि भूतपूर्व जमींदारों के लड़के और लड़कियां बड़े होकर अध्ययन में अच्छे निकलते हैं और निष्ठापूर्वक काम करते हैं और उनके माता-पिता हमारी राज शक्ति का समर्थन करने को विवश होते हैं। ऐसे अनुभव के संदर्भ में हमें फिलहाल ऐसे लोगों के बारे में इंतजार करना और देखना चाहिए। और जहां तक उन लोगों का सवाल है जो अपनी भूलों के लिए पश्चात्ताप करते हैं और हमारे पक्ष में आते हैं, उनके बारे में यह वांछनीय होगा कि उनकी कड़ाई से जांच की जाए, उन्हें सावधानी से शिक्षित किया जाए, नये सिरे से ढाला जाए और अपने साथ शामिल किया जाए।

जैसा कि आप देखते हैं, वर्ग संघर्ष का संगठन और नेतृत्व करना एक बड़ा ही पेचीदा काम है, जिसके लिए दूरदर्शिता से काम लेना जरूरी है। यदि इस काम को प्रशासनिक, घिसे-पिटे तरीके से संचालित किया जाए या, जैसा कि अनेक स्थानीय पार्टी संगठनों में हुआ है, इसका कुछ लोगों के आत्मनिष्ठ निष्कर्षों के अनुसार लापरवाही से निर्देशन किया जाए तो यह सफलतापूर्वक नहीं चल सकता। साथ ही यह ऐसा काम नहीं है जिसे दो-एक दिन के बाद छोड़ दिया जा सके। इसे लगातार दृढ़तापूर्वक और निरंतर चलाते रहना होगा।

वर्ग शत्रुओं के खिलाफ संघर्ष हमारा अविरत राजनीतिक संघर्ष, हमारे पार्टी संगठनों द्वारा निर्देशित एक अविरत जन संघर्ष बनना चाहिए। यद्यपि हम सत्ता

में हैं, फिर भी अपने दिल में यह फैसला कर लेना कि अमुक व्यक्ति को जेल में डाला जाना चाहिए और अवाम को उद्‌बोधित-संगठित और गोलबंद करने के राजनीतिक कार्य का संचालन किये बगैर मात्र एक सरकारी नोटिस जारी कर मामले को रफा-दफा कर देने का यत्न करना गलत होगा। इस तरीके से हम अपने संघर्ष में कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकेंगे, बल्कि इसकी बजाए यह हो सकता है कि अपने काम को विगाड़ दें।

साथियो, आप को आसान तरीके से क्रांतिकारी काम करने का यत्न करने और प्रशासनिक तरीके से वर्ग संघर्ष का मार्गदर्शन करने की इस आदत को तोड़ना होगा। चूंकि आप बिना क्रांतिकारी आजमाइशों से गुजरे काउंटी पार्टी समितियों के अध्यक्ष बने हैं, अतः आप अक्सर मामलों से सरल प्रशासनिक तरीके से निपटने का प्रयास करते हैं। यह कार्यविधि क्रांतिकारियों के लिए नहीं हो सकती। कम्युनिस्टों के लिए राजनीति का अर्थ है अवाम को समझा-बुझा कर अपने पक्ष में लाना, तथा संगठित और गोलबंद करना। अपने संघर्ष में विजय प्राप्त करने के लिए इसी विधि का ठीक प्रयोग करना होगा। यदि आप बीस या तीस सालों के कठिन क्रांतिकारी गतिविधियों के दौर में कभी किसी ऐसी काउंटी पार्टी समिति के अध्यक्ष रहे होते जिसने एक-एक कर पार्टी सदस्यों को भर्ती और अवाम को एकजुट किया होता और इस आधार पर यदि आपने आज के काउंटी पार्टी संगठन जैसे विशाल लड़ाकू इकाई का व्यक्तिगत रूप से निर्माण किया होता, तो आप कभी भी सरल प्रशासनिक विधि से वर्ग संघर्ष का मार्गदर्शन करना न चाहते, बल्कि निश्चित रूप से क्रांतिकारी विधि से, जिसकी ऊपर चर्चा की गयी है, उसका नेतृत्व किया होता।

जब पिछले साल पार्टी की केन्द्रीय समिति ने ये निर्देश दिये कि जिन लोगों ने पहले कुकृत्य किये थे, उन्हें अपराधों से मुक्त कर दिया जाए और बेधड़क होकर वापस ले लिया जाये तो दक्षिण ह्वांगहाए प्रांत के पार्टी संगठनों ने एक ही दिन में हजारों लोगों को दोषमुक्त कर दिया और यहीं बस न कर उन्होंने उन शत्रु तत्वों को भी दोषमुक्त करना शुरू कर दिया जिन्हें किसी भी हालत में माफ नहीं किया जाना चाहिए था। इसके लिए उन्होंने यह तर्क पेश किया कि यदि पहले बड़े अपराधियों को माफ किया जाए तो वे लोग राहत महसूस करेंगे जिन्होंने मामूली अपराध किये थे। यह भी एक राजनीतिक भूल है और इसकी जिम्मेदारी भी इसी तथ्य पर है कि पार्टी संगठन केवल प्रशासनिक ढंग से राजनीतिक कार्य से निपटने का यत्न करते हैं।

जब हमने दोषमुक्ति के लिए हिदायतें जारी कीं तो हमारे मस्तिष्क में कौन-से लोग थे। शोषक वर्ग मूल के वे शत्रु तत्व नहीं थे जिन्होंने जघन्य बर्बरताएं ढायी थीं, बल्कि वे लोग थे जो मेहनतकश मूल के थे और जिन्होंने कभी गलतियां कीं

लेकिन बाद में गम्भीरतापूर्वक पश्चात्ताप किया था और हमारा अनुसरण करने का यत्न किया था। यही वे लोग हैं जिन्हें माफी दी जानी चाहिए ताकि वे शिथिलता छोड़ें, अपनी निराशा की भावना को त्यागें और दृढ़ आस्था तथा जोरदार उत्साह के साथ हमारा अनुसरण करें और तमाम लोग और भी अधिक आनन्दमय वायुमंडल में तथा और भी अधिक सौहार्द्र के बंधन में एक साथ बंध जाएं। और जब वे लोग माफ कर दिए जाएंगे, तो वे निश्चय ही अपनेआप को शत्रु तत्वों के प्रभाव से मुक्त करेंगे और दुर्जन लोग और भी ज्यादा अलग पड़ जाएंगे।

यदि अच्छे लोगों को दोषमुक्त नहीं किया जाता है और उनके साथ अपराधियों जैसा ही सलूक जारी रखा जाता है तो दुर्जन मुखबिरी करते फिरेंगे और शरारतें करते रहेंगे। **"विराम रेखा के निकट एक गांव में"** फिल्म की कहानी में यह साफ-साफ दिखाया गया है : इसमें कार्यटोली नेता के छद्मवेश में एक जासूस को दक्षिण गये हुए व्यक्ति के एक ईमानदार रिश्तेदार को यह कह कर कि "कड़ा परिश्रम करने का क्या लाभ है" ?—उलझन में डालने का यत्न करते हुए बेनकाब किया जाता है। हमारी स्थिति यह है कि जिन लोगों को अमरीकी दुष्ट युद्ध के दौरान जबर्दस्ती उठाकर ले गये थे या धोखाधड़ी से दक्षिण जाने को बाध्य कर दिया था, उनके रिश्तेदारों को सक्रिय रूप से स्वीकार किया जाए और अपने पक्ष में लाया जाए। ऐसा करने के लिए हमें साहसपूर्वक इन लोगों में विश्वास प्रकट करना होगा और इसके साथ ही बुरे तत्वों को उन पर किसी भी प्रकार का असर डालने से रोकना होगा।

अतीत में थोड़े समय के लिए प्रतिक्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने वाले लोगों को माफी देने का प्रस्ताव करने में हमारा उद्देश्य यह है कि शरारती शत्रु तत्वों को पूर्णतया अलग-थलग कर दिया जाए, उन्हें हमारे लोगों के बीच ढुलमुलपन को बढ़ावा देने से रोका जाए, अवाम को अपनी पार्टी के साथ और भी मजबूती से एकजुट किया जाए, और अंत में, वर्ग संघर्ष को तेज किया जाए। तथापि दक्षिण ह्वांगहाए प्रांत में सब से पहले तमाम शरारती तत्वों को एक ही दिन में माफ कर दिया गया। यह वर्ग संघर्ष त्याग देने से बहुत घट कर नहीं है। इस पर केवल दुर्जनों ने ही गुप्त रूप से खुशी मनायी, मानो उनके गौरव का दिन आ गया हो, जबकि इन लोगों के साथ ही माफी पाने वाले अच्छे लोगों को कोई प्रोत्साहन नहीं मिला। इसके अलावा इससे शत्रु तत्वों के खिलाफ मुख्य जनसमुदाय की जुझारू भावना पंगु हो गयी और कुछ परिवारों में, जिनके रिश्तेदार शत्रु द्वारा मार डाले गये थे, रोष भी भड़का। निःसंदेह यह सब दक्षिण ह्वांगहाए प्रांत के कुछ क्षेत्रों में ही हुआ, लेकिन मैं समझता हूं कि तमाम पार्टी संगठनों को इससे गंभीर शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए।

वर्तमान पूर्णाधिवेशन की मूल भावना यह है कि प्रशासनिक विधि से पार्टी कार्य करने का स्थान पार्टी सदस्यों और अवाम को संगठित तथा गोलबंद करने की क्रांतिकारी कार्यविधियों को दिया जाए। देहात में वर्ग संघर्ष का नेतृत्व करने में भी इन्हीं विधियों को निश्चित रूप से लागू करना होगा। पार्टी सदस्यों और तमाम अवाम को सक्रिय करके वर्ग शत्रुओं के खिलाफ संघर्ष का विवेकशील ढंग से संगठन करना और उसे प्रबल प्रोत्साहन देना जटिल वर्ग संघर्ष के सफलतापूर्वक संचालन की कुंजी है।

पार्टी सदस्यों और खेतिहर अवाम को जमींदारों के वास्तविक वर्ग स्वरूप से वाकिफ करना होगा; जमींदारों के पिछले अपराधों को उनकी आंखों के सामने बेनकाब करना होगा; और तमाम अवाम को शत्रु से घृणा करने और शत्रु तत्वों की हर हरकत पर अत्यंत सतर्क दृष्टि रखने के लिए कायल करना होगा। यदि आप केवल इस बात का ध्यान रखें तो देहाती क्षेत्रों में बुरे तत्व अपनेआप को जकड़े हुए पाएंगे और हमारे शत्रुओं के हाथ-पैर बंध जाएंगे।

बगैर पार्टी कार्य किये मात्र प्रशासनिक आदेश जारी करने पर उतारू दक्षिण ह्वांगहाए प्रांतीय पार्टी समिति गांवों में वर्ग संघर्ष को कारगर नेतृत्व देने में भी असफल रही। सबसे पहले दक्षिण ह्वांगहाए प्रांत में भी इस प्रकार की खामी को दुरुस्त किया जाना चाहिए और तमाम दूसरे प्रांतीय पार्टी संगठनों को भी इससे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए और भविष्य में क्रांतिकारी अवामी दृष्टिकोण के अनुरूप गावों में वर्ग संघर्ष का कुशलतापूर्वक संचालन करना चाहिए।

हमारे देश के वर्तमान वर्ग सम्बन्धों और वर्ग संघर्ष की दिशा का पहले ही जारी किये जा चुके पार्टी दस्तावेजों में साफ-साफ वर्णन किया गया है। खासतौर पर एक अप्रैल १९६० को पार्टी की केन्द्रीय समिति के अध्यक्षमंडल द्वारा लिए गए निर्णय ने मुट्ठी भर शत्रुओं को विलग करने और विभिन्न स्तरों के अवाम को हमारी पार्टी के साथ और भी गहराई से एकजुट करने की ठोस नीतियां पेश की हैं। मैं समझता हूं कि जब तमाम पार्टी संगठन इन सही नीतियों का, जो हमारी वास्तविकता के अनुरूप हैं, पूरी तरह निर्वाह करेंगे तो वर्ग संघर्ष में जो भी पेचीदा समस्याएं होंगी, वे बड़ी सुगमता से हल कर ली जाएंगी।

३ : संशोधनवाद के विरुद्ध संघर्ष के सुदृढ़ीकरण के बारे में

हर कोई जानता है कि १९५७ में कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियों के प्रतिनिधियों के सम्मेलन में स्वीकृत मास्को घोषणा में इस ओर ध्यान दिलाया गया

है कि आधुनिक संशोधनवाद के लिए मुख्य खतरा है।

हाल ही में संशोधनवाद ने विभिन्न क्षेत्रों में और भी नंगे रूप से सिर उठाया है और अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन की पांतों पर गम्भीर विघटनकारी प्रभाव डाल रहा है।

संशोधनवाद दिन-दो दिनों से ही अस्तित्व में नहीं है। इसका काफी लम्बा इतिहास है। मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारों के उद्भव और विकास का सारा इतिहास हर प्रकार की दक्षिणपंथी और "वामपंथी" अवसरवादी प्रवृत्तियों के खिलाफ, संशोधनवाद और कठमुल्लापन के खिलाफ संघर्ष का इतिहास है।

मार्क्स और एंगेल्स की मृत्यु के बाद, अर्थात १९वीं शताब्दी के अन्त और २०वीं शताब्दी के प्रारम्भ में मार्क्सवाद के मुखौटे में मार्क्सवाद के क्रान्तिकारी सारतत्व को बदलने के लिए एक अवसरवादी प्रवृत्ति के रूप में संशोधनवाद अस्तित्व में आया।

पूंजीवाद के साम्राज्यवादी चरण के शुरू होने पर मजदूर वर्ग और पूंजीपति वर्ग के मध्य संघर्ष जब तीव्रतर हुआ, तो इजारेदार पूंजीपतियों ने क्रान्तिकारी मजदूर आन्दोलन के दमन में तेजी लाते हुए मजदूर आन्दोलन में फूट डालने और उसे अन्दर से ध्वस्त करने के उद्देश्य से मजदूरों के ऊपरी तबकों को घूस देने और उन्हें अपने एजेंटों के रूप में प्रयुक्त करने की नीति को आगे बढ़ाया। इस प्रकार साम्राज्यवादी-पूंजीपति वर्ग के हाथ बिके, क्रान्तिकारी आन्दोलन के पथभ्रष्टों और भगोड़ों ने पूंजीपतियों को खुश करने के लिए मार्क्सवाद में संशोधन किया। इसीलिए उनके अवसरवाद को संशोधनवाद पुकारा गया।

जर्मनी का बर्नस्टाइन स्कूल, फ्रांस का मिलेरां स्कूल, ब्रिटेन की फैबियन सोसाइटी और रूस के वैध मार्क्सवादी, अर्थवादी और मेंशेविक यूरोप की अवसरवादी, संशोधनवादी प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करते थे। बाद में रूस को छोड़कर प्राय: तमाम देशों की पार्टियां दूसरे इंटरनेशनल के अन्तर्गत संशोधनवाद के दलदल में जा फंसी।

केवल लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविक पार्टी ने तमाम किस्मों की संशोधनवादी प्रवृत्तियों के खिलाफ दृढ़तापूर्वक संघर्ष किया और अन्त तक मार्क्सवाद की क्रान्तिकारी पताका को बुलंद रखा। इसके साथ ही संशोधनवादियों ने लेनिन को कठमुल्ला बताकर, क्योंकि उन्होंने मार्क्सवाद में संशोधन करने से इनकार कर दिया था, उन पर प्रहार किया।

क्रान्तिकारी मार्क्सवादी पार्टी के निर्माण के लिए लेनिन के संघर्ष में उनका मुख्य शत्रु था अर्थवाद—अन्तर्राष्ट्रीय संशोधनवाद की एक रूसी किस्म। रूस

में अर्थवाद के सिर उठाने के पहले दिन से ही लेनिन ने इस संशोधनवादी प्रवृत्ति के खिलाफ निर्मम संघर्ष चलाया। 'रूसी सामाजिक जनवादियों द्वारा विरोध प्रकाशन' नामक एक पुस्तिका में उन्होंने अर्थवाद के मार्क्सवाद-विरोधी सारतत्व का पूर्णतः पर्दाफाश किया।

इसी तरह जिस समय १९०३ में रूसी सोशल डेमोक्रेटिक लेबर पार्टी के दूसरे सम्मेलन में पार्टी कार्यक्रम और नियम पारित किये जा रहे थे, लेनिन को अवसरवादियों के विरुद्ध जबर्दस्त संघर्ष करना पड़ा। अवसरवादियों ने पार्टी कार्यक्रम में सर्वहारा के अधिनायकत्व, किसानों के प्रश्न और राष्ट्रीय प्रश्न से सम्बद्ध अनुच्छेदों को शामिल करने का विरोध किया। लेकिन लेनिन के दृढ़तापूर्ण संघर्ष के फलस्वरूप पार्टी कांग्रेस अवसरवादी तत्वों के विरोध को कुचलने और क्रान्तिकारी मजदूर पार्टी का प्रथम मार्क्सवादी कार्यक्रम स्वीकृत करने में सफल रही।

मेंशेविकों ने १९०३ के बाद रूसी सोशल डेमोक्रेटिक लेबर पार्टी के अन्दर एक अवसरवादी गुट गठित कर लिया और उन्होंने पतित होकर समाप्तिवादियों के एक ऐसे गुट का रूप ले लिया जो प्रथम रूसी क्रान्ति के असफल होने के बाद प्रतिक्रियावाद के दौर में अवैध पार्टी के समाप्त कर दिये जाने पर जोर देते रहे।

जब प्रथम विश्व युद्ध छिड़ा तो दूसरे इंटरनेशनल के कई देशों की पार्टियों ने युद्ध के साम्राज्यवादी स्वरूप से इनकार कर दिया और अपने-अपने देशों के मजदूरों का "अपने वतन की रक्षा के लिए" लड़ने का आह्वान किया। इस प्रकार द्वितीय इंटरनेशनल के अवसरवादियों ने साम्राज्यवादी पूंजीपति वर्ग के समक्ष पूर्ण आत्मसमर्पण कर दिया और वे खुलकर सामाजिक अन्धराष्ट्रवादी बन गये।

लेनिन के नेतृत्व में केवल बोल्शेविक पार्टी ने युद्ध के साम्राज्यवादी स्वरूप को पूरी तरह बेनकाब किया, इस बात का विरोध किया कि तमाम देशों के मजदूर साम्राज्यवादियों के हित में एकदूसरे की हत्या करें, और साम्राज्यवादी युद्ध को गृह-युद्धों में परिणत करने का क्रान्तिकारी नारा दिया। इस प्रकार महान लेनिन के नेतृत्व में, जिन्होंने क्रान्तिकारी मार्क्सवाद की पताका को बुलंद रखा और आगे बढ़ाया, रूस में अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति की विजय हुई।

आज विश्व भर में क्रान्तिकारी शक्तियां अतुलनीय रूप में मजबूत हो गई हैं। संसार की एक-तिहाई से ज्यादा आबादी समाजवाद के एक नए जीवन का निर्माण कर रही है। एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका में एक शक्तिशाली साम्राज्यवाद-विरोधी, राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन चल रहा है; साम्राज्यवादी देशों के अन्दर मजदूर एकाधिकारी पूंजी के प्रभुत्व के खिलाफ अपने संघर्ष को तेज कर रहा है।

इन हालात में साम्राज्यवादी ज्यादा-से-ज्यादा बदहवास होते जा रहे हैं। वे

अपने देशवासियों तथा कमजोर और छोटे देशों के लोगों की लूट और दमन को तेज करते हुए मजदूर आन्दोलन की पांतों में छिपे कायरों को, जो क्रान्ति से विमुख हो रहे हैं, घूस देने तथा उन्हें अपनी साम्राज्यवादी नीतियों को अमल में लाने के लिए अपने एजेंटों के रूप में प्रयुक्त करने का बदहवासी से भरा प्रयास कर रहे हैं। आधुनिक संशोधनवादी और हमारे देश के चोए चांग इक और पाक चांग ओक जैसे लोग इसी श्रेणी में आते हैं।

आधुनिक संशोधनवादी मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी के नेतृत्व और सर्वहारा अधिनायकत्व से, जोकि समाजवादी क्रान्ति के आम सिद्धान्त हैं, इनकार करते हैं। उनका कहना है कि साम्राज्यवाद का आक्रामक स्वरूप बदल गया है और इस कारण समाजवाद का साम्राज्यवाद से अच्छी तरह निभाव हो सकता है; वे चिल्ला-चिल्ला कर कह रहे हैं कि संसदीय संघर्ष द्वारा शान्तिपूर्वक पूंजीवाद के स्थान पर समाजवाद की स्थापना हो सकती है।

संशोधनवादी निरस्त्रीकरण के बारे में शोर मचा रहे हैं और साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष को त्यागने का आह्वान कर रहे हैं। वे कहते हैं : यदि ताप-आणविक आयुधों के इस युग में युद्ध छिड़ता है तो वह निश्चित रूप से ताप-आणविक युद्ध होगा। अत: विश्व के विध्वंस और संपूर्ण मानवता के विनाश के बाद कम्युनिज्म के निर्माण का क्या अर्थ है ?

वे इस भ्रम का प्रचार करते हैं कि संभव है, साम्राज्यवादी हमारे संघर्ष के वगैर स्वेच्छा से अपना निरस्त्रीकरण कर लें। लेकिन क्या हम यह कल्पना कर सकते हैं कि साम्राज्यवादी स्वेच्छा से अपने हथियार डाल देंगे ? स्वेच्छा से अपने शस्त्रास्त्र डाल देना साम्राज्यवाद की प्रकृति के सर्वथा प्रतिकूल है।

जिस प्रकार पुराने संशोधनवादी जोर देकर कहा करते थे कि मार्क्स का सिद्धान्त पुराना पड़ चुका है, उसी प्रकार आधुनिक संशोधनवादियों की धारणा है कि लेनिन के सिद्धान्त बदले हुए नये युग में ठीक नहीं बैठते।

चूंकि संशोधनवादी क्रान्ति से डरते हैं और उसे नहीं चाहते हैं, अत: वे पूंजी-पतियों को खुश करने के उद्देश्य से मार्क्सवाद-लेनिनवाद में संशोधन कर रहे हैं और वर्ग संघर्ष के सिद्धान्त का, जोकि इस विचारधारा की आधारशिला है, कायापलट कर रहे हैं।

घरेलू पूंजीवादी प्रभाव की स्वीकृति और बाहरी साम्राज्यवादी दबाव के समक्ष आत्मसमर्पण ही संशोधनवाद के स्रोत हैं। सारतत्व और उद्देश्यों की दृष्टि से पुराना संशोधनवाद और आधुनिक संशोधनवाद, दोनों एक ही हैं। दोनों मार्क्स-वाद के बुनियादी सिद्धान्तों को ठुकराते हैं और यह बहाना लेकर कि समय बदल गया है, क्रान्तिकारी संघर्ष के त्याग दिये जाने पर जोर देते हैं।

इस समय संशोधनवादियों की सबसे वाहियात कार्रवाई यह है कि वे साम्राज्यवाद का तो अनुग्रह प्राप्त करने और उससे गहरे संबंध विकसित करने का भरसक यत्न कर रहे हैं लेकिन समाजवादी शिविर में फूट के बीज बो रहे हैं।

यदि संशोधनवादी क्रान्ति का निर्माण नहीं करना चाहते तो वे बखुशी अपने अपने रास्ते पर जाएं। परन्तु खतरा इस बात में छिपा है कि वे दूसरों द्वारा क्रान्ति के संपन्न किये जाने के भी विरुद्ध हैं और वे दूसरों पर भी सशोधनवाद थोपने की हद तक चले जाते हैं।

ऐसा करते हुए वे क्रान्तिकारी मार्क्सवादियों-लेनिनवादियों को, जो उनके संशोधनवादी दृष्टिकोण का अनुसरण करने से इन्कार करते हैं, "कट्टरपंथी", "राष्ट्रवादी" या "स्तालिनवादी" पुकारते हैं और उन्हें अस्वीकार करते हुए समाजवादी शिविर से अलग-थलग करने का यत्न करते हैं। यह आधुनिक संशोधनवादियों की सबसे वाहियात हरकत है और हमारे लिए एक गम्भीर खतरा उपस्थित करती है।

हमें कौन-से पथ पर चलना चाहिए, क्रान्तिकारी मार्क्सवाद-लेनिनवाद के पथ पर, या किसी व्यक्ति विशेष के नियन्त्रण में संशोधनवाद के पथ पर?

साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष का कोरियाई जनता का इतिहास अब अनेक दशाब्दियों का इतिहास है। यदि हम जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष को अपने इतिहास की शुरूआत मानें तो यह ३० वर्ष का होगा। यद्यपि हम ३० वर्ष से भी अधिक समय से साम्राज्यवाद के विरुद्ध लड़ते आ रहे हैं, फिर भी हम अभी तक अपनी क्रांति को पूर्णतया सम्पन्न नहीं कर सके हैं।

हमने देश के केवल आधे भाग और उसकी एक-तिहाई आबादी को मुक्त किया है। इसलिए कोरियाई कम्युनिस्टों को अभी क्रांति को जारी रखना है और अमरीकी साम्राज्यवाद को खदेड़ भगाने और राष्ट्रीय मुक्ति के लिए क्रांति संपन्न करने के कर्तव्यों को पूरा करना है।

हम साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष से कैसे पीछे हट सकते हैं जबकि आधा देश और उसकी दो-तिहाई आबादी अभी तक साम्राज्यवाद के अधीन है? हम कैसे अमरीकी साम्राज्यवादियों की प्रशंसा करने में शामिल हो सकते हैं जबकि अमरीकी दानव नित्य हमारे स्वदेशवासियों का खून बहा रहे हैं और हमारे भाइयों और बहनों का अपमान कर रहे हैं? हमारे लिए क्रांति को तजने और साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष से निकलने का अर्थ है दक्षिण कोरिया को हमेशा-हमेशा के लिए अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रमण के हवाले कर देना और राष्ट्र के गद्दारों को दक्षिण कोरियाई मजदूरों और किसानों का शोषण और दमन करने की छूट दे देना।

भले ही कुछ लोग मार्क्सवाद-लेनिनवाद को त्याग दें और संशोधनवादी पथ को अपना लें, लेकिन हम कभी भी अपनेआपको शिथिलता अपनाने और साम्राज्यवाद से समझौता करने की इजाजत नहीं दे सकते। एक क्रान्तिकारी गीत है जिसमें कहा गया है : "चाहे कायर विमुख हो जाएं और गद्दार नाक-भौं सिकोड़े, हम यहां लाल झंडे को लहराते रहेंगे"। यह हमारे दृढ़संकल्प की अभिव्यक्ति है। हमें क्रांति को जारी रखना होगा और साम्राज्यवाद के विरुद्ध अंत तक दृढ़ता से लड़ना होगा।

हमारा ध्येय उत्तरी आधे भाग में अब तक हासिल की जा चुकी क्रांतिकारी उपलब्धियों की रक्षा करने तक सीमित नहीं रह सकता। हमारा यह अनिवार्य कर्तव्य है कि हम दक्षिण कोरिया के अपने स्वदेशवासियों को दक्षिण कोरियाई क्रांति संपन्न करने में मदद दें और उस दिन तक लड़ाई जारी रखें जब तक पूरे कोरिया में समाजवाद और कम्युनिज्म का निर्माण नहीं हो जाता। हम किसी भी हालत में उत्तरी आधे भाग में प्राप्त की गयी विजय पर संतुष्ट होकर नहीं बैठ सकते और न ही जरा भी शिथिल हो सकते हैं। हम पतित होकर कायर नहीं बन सकते जोकि क्रांति के समय खून बहाने से डरते हैं तथा कैद और फांसी के फंदे से भयभीत होते हैं।

हमें क्षण भर के लिए भी यह नहीं भूलना चाहिए कि उत्तरी आधा भाग कोरियाई क्रान्ति का अड्डा है। हमें इस क्रान्तिकारी अड्डे में दृढ़तापूर्वक एक शक्तिशाली राजनीतिक, आर्थिक और सैनिक शक्ति का निर्माण करना होगा और इस अड्डे पर निर्भर रहते हुए कोरियाई क्रांति को पूर्ण समापन तक पहुंचाना होगा। कोरियाई कम्युनिस्टों का यह कर्तव्य है।

हमें उस दवाव का मुकाबला करने के लिए तैयार होना चाहिए जो संशोधनवादी हम पर कई तरीकों से थोप सकते हैं। चाहे वे कैसे भी हमारी निन्दा करें या लांछन लगाएं, हम उन्हें परे हटा देंगे और मार्क्सवाद-लेनिनवाद पर अंत तक डटे रहेंगे।

हम विश्व भर में उत्पीड़ित जनगण के साम्राज्यवाद-विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष का समर्थन करने के लिए अपनी सामर्थ्य भर सब कुछ करेंगे और इजारेदार पूंजी के प्रभुत्व के खिलाफ तमाम देशों में मजदूर वर्ग के क्रांतिकारी संघर्ष को सक्रिय समर्थन देंगे।

हमारा यह दृष्टिकोण संशोधनवाद के मूलतः विरुद्ध है। चूंकि हम क्रांति के समर्थक और साम्राज्यवाद के विरोधी हैं अतः हमारे पास सिवाय इसके और कोई विकल्प नहीं कि संशोधनवाद से लोहा लें जोकि साम्राज्यवाद का एक एजेंट है। इन दो रास्तों में से एक को हमें चुनना है : आया हम संशोधनवाद के

विरुद्ध क्रांतिकारी मार्क्सवाद-लेनिनवाद की पताका की दृढ़तापूर्वक रक्षा करेंगे या पतित होकर संशोधनवादी बन जायेंगे और साम्राज्यवाद के आगे घुटने टेक देंगे। हमारे पास और कोई उपाय नहीं है।

हमें संशोधनवाद को दृढ़तापूर्वक ठुकराना होगा और क्रांतिकारी ध्येय की विजय के लिए अडिग लड़ाई जारी रखनी होगी।

हमारी पार्टी ही नहीं, ऐसे अन्य कई एशियाई देशों की कम्युनिस्ट पार्टियां भी, जो साम्राज्यवादी अतिक्रमण की शिकार रही हैं, जोर देकर कह रही हैं कि क्रांति को जारी ही रखा जाना चाहिए और संशोधनवाद के विरुद्ध दृढ़ संघर्ष चलाया जाना चाहिए।

जब तक साम्राज्यवाद कायम है, साम्राज्यवादी दमन चलता रहेगा; और जब तक साम्राज्यवादी दमन कायम है लोग उसके खिलाफ संघर्ष करते रहेंगे और क्रांति फूटती ही रहेगी। लोग अपने संघर्ष और क्रांति द्वारा ही स्वयं को अपने-आप साम्राज्यवादी दमन और शोषण के जुए से मुक्त कर सकते हैं। क्रांति मार्क्स-वाद-लेनिनवाद के दृढ़ बचाव और संशोधनवाद के विरुद्ध संघर्ष का आह्वान करती है।

संसार में कई देशों के लोग अब भी साम्राज्यवादी दमन और शोषण का शिकार हो रहे हैं। अतः भविष्य में ज्यादा-से-ज्यादा लोग क्रांति करेंगे। अवाम की क्रांतिकारी चेतना को पंगु करने और मार्क्सवाद-लेनिनवाद की क्रांतिकारी भावना को पुंसत्वहीन करने के प्रयास में संशोधनवादी कुछ भी करें, किंतु क्रांति-कारी आंदोलन जारी ही रहेगा और मार्क्सवाद-लेनिनवाद जिंदा ही रहेगा और हर हालत में विजयी होगा। जिस तरह पूंजीवाद का पतन और समाजवाद की विजय अनिवार्य है, उसी तरह संशोधनवाद का विनाश और मार्क्सवाद-लेनिनवाद की जीत अनिवार्य है।

संशोधनवाद का विरोध करने के लिए सारी पार्टी में भरपूर वैचारिक कार्य किया जाना चाहिए। पार्टी सदस्यों के मार्क्सवादी-लेनिनवादी शिक्षण को दृढ़ बनाते हुए उन्हें संशोधनवादी दृष्टिकोणों और धारणाओं के बारे में साफ-साफ बताना चाहिए ताकि वे गलत और सही में भेद करने में गलती न करें। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि पार्टी सदस्यों को जानकारी दी जाए कि संशोधनवाद के प्रति लेनिन का रवैया क्या था और कैसे वे उसकी आलोचना करते थे। संशोधनवाद का विरोध करने में अब तक वैचारिक शिक्षा ढीलीढाली रही है। अब आगे इस काम में सुधार किया जाना चाहिए।

संशोधनवाद के विरुद्ध संघर्ष करते हुए हमें पश्चिमी जीवन पद्धति से लड़ना होगा। पश्चिमी जीवन पद्धति के खिलाफ हमारे संघर्ष का उद्देश्य अमरीकी जीवन

पद्धति को ठुकराना है, हर पश्चिमी चीज को ठुकराना नहीं। यह कहा जा सकता है कि संशोधनवाद पश्चिमी जीवन पद्धति का चचेरा भाई है। जब संशोधनवाद आता है तो पश्चिमी जीवन पद्धति भी उसके साथ आती है या जब पश्चिमी जीवन पद्धति आती है तो संशोधनवाद भी आता है।

अब सवाल यह है कि ठोस रूप में पश्चिमी जीवन पद्धति क्या है? मिसाल के तौर पर, संगीत में जाज इसका प्रतिनिधित्व करता है। और नृत्य में माम्बो (नग्न नृत्य)। जब हम किसी पश्चिमी पागल या ओछे और दंभी व्यक्ति का जिक्र करते हैं तो हमारा आशय ऐसे लोगों से होता है जो इस पश्चिमी जीवन पद्धति से ग्रस्त हों। राष्ट्रीय निषेधवादी, चाटुकार लोग जो क्रांति से घृणा करते हैं और दुराचारी लोग, सहर्ष पश्चिमी जीवन पद्धति को स्वीकार कर लेते हैं।

हमें मार्क्सवादी-लेनिनवादी शिक्षा को मजबूत बना कर, पार्टी की विचारधारात्मक प्रणाली की स्थापना करके, क्रांतिकारी परम्पराओं की शिक्षा में तेजी बरत कर और पार्टी सदस्यों तथा मेहनतकशों में क्रांतिकारी व्यवस्था और अनुशासन को दृढ़ बनाकर पश्चिमी जीवन पद्धति की घुसपैंठ को रोकना चाहिए। संशोधनवाद और पश्चिमी जीवन पद्धति को ठुकराने के लिए खासतौर पर लेखकों, कलाकारों और वैज्ञानिक कार्यकर्ताओं में पार्टी का विचारधारात्मक कार्य जोरदार ढंग से किया जाना चाहिए। जो लोग अपनी हर चीज से नफरत करते हैं और हर विदेशी चीज की पूजा करते हैं और जिन लोगों में आत्मनिर्भरता या स्वावलंबन की भावना का अभाव है, सबसे ज्यादा वे ही पश्चिमी जीवन पद्धति और संशोधनवाद से प्रभावित हो सकते हैं।

कुछ लोग स्वावलंबन को राष्ट्रवाद की संज्ञा देकर उसकी निंदा कर रहे हैं। लेकिन यह राष्ट्रवाद कैसे हो सकता है? स्वावलंबन कम्युनिस्टों की महान क्रांतिकारी भावना है। अपने ही प्रयासों द्वारा क्रांति को सम्पन्न करना और अपने लिए समाजवाद का निर्माण करना कैसे गलत है?

दूसरे देशों पर निर्भर रहते हुए क्रांति करना असंभव है। पर निर्भरता अपनी शक्ति पर अविश्वास की दिशा में ले जाएगी और अपने देश के आंतरिक साधनों के सर्वोत्तम उपयोग के प्रयासों में भी बाधक होगी। आत्मनिर्भरता या स्वावलंबन का अर्थ है अपने बूते पर हर साधन का उपयोग करके समाजवाद का निर्माण करना और क्रांति को सम्पन्न करना। यही अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के प्रति वफादार होने और समाजवाद के समान ध्येय में योगदान करने का एकमात्र उपाय है।

हम वे लोग नहीं हैं जो विदेशी सहायता को ठुकराते हैं। हम बिरादराना देशों की सहायता का स्वागत करते हैं। सहायता की पेशकश को स्वीकार करने

से कोई भी इनकार नहीं करेगा। लेकिन जब कोई भी हमें सहायता की पेशकश नहीं करता तो हम क्या करें ? चाहे हमें कोई भी मदद न दे, हमें क्रांति को अवश्य पूरा करना चाहिए और समाजवाद का निर्माण करना चाहिए।

साथियो, पहले हमें हर साल विदेशों से अनाज खरीदना पड़ता था। लेकिन इस साल से हमें ऐसा करने की जरूरत नहीं है, क्योंकि पिछले साल अच्छी फसल हुई थी। यह कितनी अच्छी बात है कि हमारे यहां अच्छी फसल हो और हम अपने बिरादराना देशों के बोझ को हलका करें! मेरे ख्याल में यह वास्तविक अन्तर्राष्ट्रीयतावाद है। हमें उन लोगों के मानसिक रवैये का क्या अर्थ लगाना चाहिए जो मदद तो देते नहीं और साथ ही आत्मनिर्भरता को राष्ट्रवाद की संज्ञा देकर इस पर लांछन लगाते हैं ?

हमारे लोगों के बीच में भी कुछ ऐसे लोग हैं जो आत्मनिर्भरता पर आपत्ति करते हैं। समय-समय पर वैज्ञानिक कार्यकर्ताओं के बीच ऐसे लोग पाये जाते हैं। हमारी अपनी शक्तियों में आस्था न होने के कारण ये लोग सोचते हैं कि हमारा काम दूसरों की मदद के बिना नहीं चल सकता। यह बात सही नहीं है कि हम बिना मदद के जिंदा नहीं रह सकते। हम बिना मदद के भी न केवल जैसे हम चाहें वैसे रह सकते हैं, बल्कि समाजवाद का भी शानदार ढंग से निर्माण कर सकते हैं और हमें निश्चित रूप से ऐसा करना चाहिए।

पार्टी सदस्यों और मेहनतकश लोगों में आत्मनिर्भरता की भावना भरने के उद्देश्य से हमें जी-हुजूरी और कठमुल्लापन को ठुकराने के लिए जोरदार संघर्ष जारी रखना चाहिए और जुछे की स्थापना करनी चाहिए ताकि वे पतित न हों बल्कि किफायत की जिंदगी बितायें।

जहां तक अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन में एकता की समस्या के प्रति हमारी पार्टी के रवैये का सवाल है, हमें निःसंदेह हमेशा सोवियत संघ, चीन और अन्य समाजवादी देशों के साथ एकता के लिए और समाजवादी शिविर की एकता के दृढ़ीकरण के लिए काम करना होगा।

लेकिन हालांकि कि हम बिरादराना देशों के साथ एकता को दृढ़ करने के लिए काम करते हैं, फिर भी हम किसी भी हालत में इस मांग को स्वीकार नहीं कर सकते कि क्रांति का त्याग कर दें और संशोधनवाद को अपना लें। हम बिरादराना देशों का हर सही काम में समर्थन करेंगे लेकिन किसी भी गलत काम में उनका अनुसरण नहीं करेंगे। यही अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन की एकता की समस्या के प्रति, जोकि आधुनिक संशोधनवाद के विरुद्ध संघर्ष के सम्बन्ध में उत्पन्न हुई है, हमारी पार्टी का रवैया है।

जहां तक संशोधनवाद का सवाल है, मैं समझता हूं कि आपको भविष्य में

इसका और गहरा अध्ययन करने का अवसर मिलेगा। अतः मैं आज इसके बारे में और कुछ नहीं कहूंगा।

अंत में, मैं एक बार फिर जोर देकर कहना चाहता हूं कि इस पूर्णाधिवेशन की भावना के अनुरूप पार्टी के सांगठनिक और वैचारिक कार्य को दृढ़ कर सारी पार्टी को एक ऐसी पार्टी बनने का यत्न करना चाहिए जो जुझारू और हमेशा गतिशील हो और उसे हमारे पार्टी सदस्यों को ऐसे अजेय क्रांतिकारी योद्धा बनने का प्रशिक्षण देना चाहिए, जो किसी भी कठिन परिस्थिति में पार्टी दायित्वों को वफादारी से पूरा करने में दक्ष हों।

आइये हम काउंटी की भूमिका को सुदृढ़ बनाकर तथा स्थानीय उद्योग और कृषि को और अधिक विकसित करके जनता के जीवनस्तर में आमूल सुधार करें

स्थानीय पार्टी और आर्थिक कार्यकर्ताओं के छांगसोंग संयुक्त सम्मेलन में समापन भाषण

८ अगस्त १९६२

करीब एक सप्ताह से आप लोग छांगसोंग और साक्जू काउंटियों के स्थानीय उद्योग के कारखानों, पशुपालन फार्मों, कृषि सहकारों तथा शैक्षणिक और सांस्कृतिक संस्थानों के दौरे कर रहे हैं और आप लोगों ने काउंटी सदर मुकामों, गांवों और मजदूरों की बस्तियों में जनता के जीवन को अपनी आंखों से देखा है। कल की बैठक में आप लोगों ने छांगसोंग काउंटी पार्टी समिति के अध्यक्ष की रिपोर्ट और साक्जू काउंटी पार्टी समिति के अध्यक्ष, छांगसोंग सूती मिल के प्रबन्धक और छांगसोंग काउंटी की कुम्या कृषि सहकार के अध्यक्ष के भाषण सुने। मुझे यकीन है कि आपने मौके पर निरीक्षण, अपने दौरे और इस संयुक्त सम्मेलन से काफी कुछ जाना है।

नि:संदेह, मेरे कहने का अभिप्राय यह नहीं है कि छांगसोंग, साक्जू और प्योक्दोंग में सब कार्य बिल्कुल ठीक-ठीक हुए हैं और उनमें कोई त्रुटि नहीं रही है। फिर भी अपने निरीक्षण के दौरान आपने इस जीवन्त वास्तविकता को अवश्य देखा होगा कि छांगसोंग, साक्जू और प्योक्दोंग जैसे सुदूर पहाड़ी क्षेत्रों में भी हमारे किसान बहुत अच्छा जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

इस क्षेत्र में खेती के अन्तर्गत भूमि बहुत सीमित है और अत्यन्त अनुर्वर भी है। कृषिगत क्षेत्रफल और जमीन की उर्वरता की दृष्टि से हमारे देश के दूसरे पहाड़ी क्षेत्रों की काउंटियां, उदाहरणार्थ उत्तर हामग्योंग, छागांग और र्यांगगांग

प्रान्तों की काउंटियां तथा उत्तर ह्वांगहाए प्रांत की सिंगये और कोकसान काउंटियां छांगसोंग काउंटी से अधिक खुशहाल स्थिति में हैं। निःसन्देह, हम यह नहीं कह सकते कि वे अपेक्षाकृत खराब स्थिति में हैं।

फलतः छांगसोंग और प्योकदोंग में हुए महान परिवर्तनों से हम इस अटल निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि अगर वे पार्टी की हिदायतों का अनुसरण करें तो गैर-उपजाऊ इलाकों के निवासी भी दक्षिण प्योंगयान प्रदेश के मुंदोक, दक्षिण हामग्योंग प्रदेश के हामजू और दक्षिण ह्वांगहाए प्रदेश के छाएरयोंग और सिंछोन के मैदानी इलाकों के निवासियों की भांति सुख से रह सकते हैं।

जैसा कि आप सभी जानते हैं, अपनी पार्टी की सही नीतियों के फलस्वरूप अपने देश की अन्य पर्वतीय काउंटियों में भी बड़े परिवर्तन हो गये हैं और कुल मिला कर वहां किसानों का जीवन-स्तर मंझोले दरजे के किसानों को उनकी गरीबी से मुक्ति दिलाने का नहीं, बल्कि यह है कि किस प्रकार उनके जीवन-स्तर को उठाकर अच्छी तरह खाते-पीते मंझोले तबके के किसानों के जीवन-स्तर तक पहुंचाया जाये।

हम यह कब कह सकते हैं कि वे मंझोले तबके के सम्पन्न किसानों के स्तर तक पहुंच गये हैं?

जैसा कि हम सदैव कहते आये हैं, जब वे अपने दैनिक भोजन में चावल और गोश्त का शोरबा खाएं तथा अच्छे कपड़े पहनें और टाइल की छत वाले मकानों में रहने लगें तब हम यह कह सकते हैं कि वे मंझोले किस्म के सम्पन्न किसानों के स्तर तक पहुंच गये हैं। इस साल आशा है कि छांगसोंग काउंटी प्रत्येक कृषक परिवार को तीन टन गल्ला और नकद १५०० वोन बांटेगी, जिसका अर्थ यह होगा कि वे मंझोले किस्म के सम्पन्न किसानों के स्तर तक पहुंच गये हैं।

यदि छांगसोंग और प्योकदोंग के निवासी, जो अनुर्वर पहाड़ी जमीन को जोतते हैं, मंझोले किस्म के सम्पन्न किसानों के स्तर तक पहुंच सकते हैं, तो यह स्वतः स्पष्ट है कि अन्य इलाकों के रहने वालों की दशा इससे बेहतर बन सकती है।

इस संयुक्त सम्मेलन का मुख्य लक्ष्य सभी क्षेत्रों में, अनुर्वर, सम्पूर्ण पहाड़ी क्षेत्रों के किसानों के जीवनस्तर को, कुल मिलाकर मंझोले किस्म के सम्पन्न किसानों के जीवनस्तर तक ऊंचा उठाने और अब तक प्राप्त सफलताओं और अनुभवों के आधार पर काउंटियों और मजदूर बस्तियों के निवासियों के जीवन-स्तर को बुनियादी रूप से ऊंचा उठाने के निमित्त पार्टी की नीति के पूर्ण क्रियान्वयन को निश्चित बनाना है।

इस कार्य का सफल हल इस बात पर निर्भर करता है कि काउंटी पार्टी समितियों,

काउंटी जन समितियों और काउंटी कृषि सहकारी प्रबन्ध समितियों के अहलकार अपना कार्य अच्छी तरह और प्रभावकारी ढंग से करते हैं अथवा नहीं तथा अपनी काउंटियों में सहकारों और स्थानीय उद्योग के कारखानों का प्रभावशाली ढंग से निर्माण करते हैं या नहीं।

छांगसोंग, साक्जू और प्योक्दोंग के उदाहरण का अनुसरण करते हुए काउंटी पार्टी समितियों के अध्यक्षों को इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि पहाड़ी इलाकों के किसानों, निचले क्षेत्रों में रहने वाले की कोई बात नहीं, का जीवनस्तर अगले दो-तीन साल के भीतर मंझोले किस्म के सम्पन्न किसानों के जीवनस्तर तक पहुंच जाए।

यदि आप अपने काम को ठीक ढंग से संगठित और क्रियान्वित करें तो यह बिल्कुल सम्भव होगा। रांग्रिम काउंटी पार्टी समिति के अध्यक्ष ने कल अपने भाषण में इस बात को स्पष्ट कर दिया, जिन्होंने कहा था कि उनकी काउंटी में, जो सबसे पिछड़ा हुआ क्षेत्र है, किसानों का जीवनस्तर इस वर्ष काफी सुधर जाएगा।

फलतः इस सम्मेलन के बाद हमें किसानों के जीवनस्तर को मंझोले किस्म के सम्पन्न किसानों के जीवनस्तर तक पहुंचाने और काउंटियों में कारखानों और दफ्तरों के कर्मचारियों के सब आश्रितों को नौकरियां दिलाने और प्रति परिवार उनकी औसत आय बढ़ा कर ७५-८० वोन करने की कोशिश करनी चाहिए, इस प्रकार दफ्तरों के कर्मचारियों के आश्रितों के लिए काम की व्यवस्था करनी है, काउंटियों में सब लोगों का जीवनस्तर सुधारना है और उत्पादन में अधिक नव्यता लानी है।

१ : काउंटी की भूमिका

इस सम्मेलन द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने तथा सामान्य रूप से स्थानीय इलाकों की अर्थव्यवस्था और संस्कृति को विकसित करने की दृष्टि से काउंटी की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। इसी कारण हमने अनेक काउंटी कार्यकर्ताओं से इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए कहा है।

हमारे देश की प्रशासकीय संगठन की प्रणाली में केन्द्रीय प्रशासन, प्रांत, काउंटी और री शामिल हैं। काउंटी को प्रशासकीय नेतृत्व की सबसे निचली इकाई समझा जा सकता है, जो खेतिहर गांवों और मजदूर बस्तियों का प्रारम्भिक पथ-प्रदर्शन करती है तथा किसानों और श्रमिक बस्तियों के निवासियों के जीवन से सीधे संबंधित है। इसलिए खेतिहर गांवों और मजदूर बस्तियों का विकास मुख्यतः इस

बात पर अवलम्बित होता है कि काउंटी ऐजेंसियां अपना कार्य किस प्रकार करती हैं। इसके साथ ही मजदूरों और किसानों के जीवनस्तर में सुधार की बात भी मुख्यतः इस बात से निश्चित होती है कि काउंटी अपना काम ठीक ढंग से करती है अथवा नहीं।

काउंटी केवल सबसे छोटी प्रशासकीय इकाई ही नहीं है, जो री तथा मजदूर बस्तियों को निर्देशित करती है, बल्कि ऐसा आधार है जो राजनीति, अर्थतंत्र और संस्कृति के सभी क्षेत्रों में कस्बों का सम्बन्ध ग्रामीण क्षेत्रों से जोड़ती है। शायद सभी किसानों के लिए बड़े नगरों की यात्रा करना असंभव हो, लेकिन कम-से-कम वे अपने काउंटी के सदर मुकाम को तो देख ही सकते हैं। किसान काउंटी के जरिये पार्टी की नीतियों की जानकारी प्राप्त करते हैं। काउंटी के जरिये ही वे शहरों से आर्थिक सम्पर्क कायम रखते हैं तथा शहरी संस्कृति एवं परम्पराओं को आत्मसात करते हैं।

केन्द्रीय शासन की नीतियां तथा प्रदेशों की नीतियां, जोकि केन्द्रीय नीतियों पर आधारित होती हैं, काउंटियों के माध्यम से तुरन्त खेतिहर गांवों तथा मजदूर बस्तियों तक पहुंचती हैं, निस्सन्देह काउंटी ही वह सबसे निचली इकाई है, जो प्रत्यक्ष रूप से पार्टी की नीतियों को संगठित करती है और उन्हें अमल में लाने की व्यवस्था करती है। यही वह राजनीतिक आधार है, जिसके जरिये खेतिहर गांवों को पार्टी की नीतियों की जानकारी प्राप्त होती है।

काउंटी ही स्थानीय अर्थव्यवस्था के विकास के लिए आधार का काम तथा ग्रामीण क्षेत्रों के लिए सप्लाई केन्द्र का काम करती है।

स्थानीय उद्योग काउंटी को बनाकर विकसित होता है, काउंटी द्वारा ही कृषि कार्य संगठित और निर्देशित होता है। ग्रामीण क्षेत्रों के उत्पादन काउंटी के जरिये ही शहरों में पहुंचते हैं और काउंटी के माध्यम से ही शहरों में उत्पादित समस्त औद्योगिक माल ग्रामीण क्षेत्रों को सुलभ होते हैं। इसके अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी तकनीकी सभ्यता भी काउंटी के जरिए ही फैलती है और इस प्रकार ग्रामीण अंचलों में तकनीकी क्रान्ति की प्रक्रिया की गति तीव्र हो जाती है।

समाजवादी निर्माण के अधिक प्रगति करने और इसके फलस्वरूप शहरी आबादी में वृद्धि होने के बावजूद काउंटी के अधिकार क्षेत्र में आने वाले ग्रामीण इलाकों और श्रमिक बस्तियों की आबादी हमारे देश की कुल जनसंख्या की कम से कम आधी है। चूंकि खेतिहर गांव दूर-दूर तक बिखरे हुए हैं, इसलिए भविष्य में कम्युनिस्ट समाज के निर्माण का लक्ष्य पूरा कर लेने के बाद भी प्रत्येक ग्रामीण री में संभरण केन्द्र गठित करना मुश्किल होगा। इसलिए कम्युनिस्ट व्यवस्था के अन्तर्गत भी हमारे देश में काउंटियां शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच सम्पर्क

कायम करने वाला आर्थिक आधार व संभरण केन्द्र बनी रहेंगी।

ग्रामीण क्षेत्रों में सांस्कृतिक क्रान्ति का आधार भी काउंटी ही है। ग्रामीण इलाकों में सामन्तवाद के अवशेषों तथा जीर्णशीर्ण तौरतरीकों और प्रथाओं के उन्मूलन के लिए किसानों की वैचारिक चेतना तथा तरीकों और प्रथाओं का पुनर्निर्माण करने और ग्रामीण इलाकों में विकसित समाजवादी संस्कृति को लागू करने का आधार भी यही है।

सभी गांवों, विशेष रूप से एशियाई देशों के गांवों की समस्याओं को हल करना बहुत महत्वपूर्ण है। यह कहा जा सकता है कि एशिया के अविकसित खेतिहर देशों में, जहां किसान जनसंख्या का बहुमत है, किसानों की समस्या का हल ही क्रान्ति की विजय की कुंजी है।

अपने देश की वस्तुगत परिस्थितियों को दृष्टि में रखकर रचनात्मक ढंग से मार्क्सवाद-लेनिनवाद को लागू करते हुए तथा इसे आगे और विकसित करते हुए, हमारी पार्टी ने अभी तक ग्रामीण समस्या को ठीक ढंग से हल किया है।

हमारे देश में कृषि सहकारिता की योजना कई वर्ष पहले ही सफलता के साथ अमल में लायी जा चुकी है और ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी क्रांति का कार्य भी सिंचाई, विद्युतीकरण और मशीनीकरण को मुख्य लक्ष्य मानते हुए बहुत तेजी से पूरा किया जा रहा है।

भविष्य में हमें ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी और सांस्कृतिक क्रांति को ले जाना है और इस प्रकार शहर और गांव के बीच के अन्तर को मिटाना है, मजदूर और किसानों के जीवनस्तर को एक समान बनाना है और इसके साथ ही ऐसी स्थिति पैदा करनी है, जिसमें मैदानी एवं पहाड़ी इलाकों के किसान एक जैसा, अच्छा जीवनस्तर बिता सकें।

यदि काउंटी अपना कार्यकलाप समुचित रूप से पूरा करने में असफल रहे तो इनमें से किसी भी प्रश्न को सफलतापूर्वक हल करना सम्भव न होगा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि समाजवादी निर्माण के सभी क्षेत्रों में काउंटी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

काउंटी के कार्य को और सुपुष्ट करना, आदर्श काउंटी सदर मुकाम स्थापित करना न-केवल समाजवादी निर्माण के कार्य को तेजी से पूरा करने के लिए, बल्कि शहर और गांव के अन्तर को क्रमशः पाटने और कम्युनिस्ट समाज के निर्माण के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए काउंटी का समुचित रूप से निर्माण कोई अस्थायी और साधारण कार्य नहीं है, बल्कि महत्वपूर्ण दायित्व है, इसे हमें तब तक अनवरत रूप से करना चाहिए जब तक कि भावी कम्युनिस्ट समाज का निर्माण नहीं हो जाता।

जब काउंटी का कार्यकलाप ठीक ढंग से चलने लगेगा, तभी इसकी राजनीतिक अर्थव्यवस्था एवं संस्कृति का निर्माण तीव्र गति से होगा और जब काउंटी का सदर मुकाम एक आदर्श के रूप में निर्मित हो जायगा तभी गांव इस उदाहरण का अनुसरण करेंगे। काउंटी को स्थानीय उद्योग विकसित करने चाहिए, ठीक ढंग से कृपि-व्यवस्था का निर्देशन करना चाहिए और अच्छे भंडारगृहों, स्कूलों, अस्पतालों आदि का निर्माण करना चाहिए। इस प्रकार के कार्यों से काउंटी को प्रशासकीय नेतृत्व की सबसे निचली इकाई के रूप में तथा ग्रामीण क्षेत्रों का शहरों से सम्पर्क स्थापित करने वाले आधार के रूप में हर तरह अपनी भूमिका सुदृढ़ बनानी चाहिए।

स्थानीय उद्योग और कृपि का तीव्र गति से विकास हुआ है और छांगसोंग काउंटी के मेहनतकश लोगों के जीवनस्तर में सुधार हुआ है, क्योंकि इस काउंटी ने अपना काम अच्छी तरह किया है। छांगसोंग में उन्होंने जंगली फलों और जंगली रेशे के कच्चे माल से बड़ी मात्रा में खाने-पीने की चीजें और दैनिक इस्तेमाल का सामान तैयार किया और इस प्रकार उन्होंने कारखाने के मजदूरों और दफ्तरों के कर्मचारियों की आय में वृद्धि की। इसके साथ ही उन्होंने तेजी से पशु-पालन के विकास में पहाड़ों का इस्तेमाल करके तथा स्थानीय क्षेत्र की प्राकृतिक और भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप कृपि तथा अन्य उत्पादनों में वृद्धि करके, किसानों के जीवनस्तर को तेजी से ऊंचा उठाया।

क्योंकि उनकी काउंटी ने अपना काम ठीक ढंग से किया इसलिए छांगसोंग की जनता के पास पर्याप्त भोजन और वस्त्र हैं। वे इच्छानुसार अध्ययन कर सकते हैं, रेडियो सुन सकते हैं और फिल्में देख सकते हैं। वे कला केन्द्र सम्बन्धी कार्यकलाप में दिलचस्पी के साथ भाग लेते हैं, अपने घरों को साफ-सुथरा रखते हैं, अपने बच्चों के पालन-पोपण पर समुचित ध्यान देते हैं और वे बहुत शिष्ट-शालीन भी हैं।

यद्यपि छांगसोंग एक सुदूरवर्ती पहाड़ी इलाका है, किन्तु आज प्योंगयांग और सिनुइजू जैसे शहरों के निवासियों और छांगसोंग के रहने वालों के जीवन में कोई विशेष अन्तर नहीं है।

पूंजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत ग्रामीण निवासियों को पहले बड़ी घृणा के साथ "गंवार" कहा जाता था। किन्तु हमारे समाज की वह स्थिति अब बिल्कुल बदल गयी है। इस सम्बन्ध में छांगसोंग काउंटी कानाम-री के याक्सू मिडिल स्कूल का उदाहरण देना पर्याप्त होगा।

प्राचीन काल से ही इस जगह को कानाम-री—चट्टानों के बीच स्थित एक गांव—कहा जाता है, क्योंकि यह चट्टानी पहाड़ियों के बीच में स्थित है, कानाम-री सचमुच जंगली रास्ते से दूर एक ऐसी जगह थी जहां पहाड़ियों, पत्थरों और पानी के

सिवा और कुछ न था। और यहां के निवासी भूतकाल में सचमुच "गंवार" थे।

किन्तु अब कानाम-री में एक भी "गंवार" नहीं मिलेगा। याक्सू मिडिल स्कूल के विद्यार्थी सर्वोच्च सम्मान प्राप्त या सम्मान-प्राप्त विद्यार्थी हैं; इस स्कूल का प्रत्येक विद्यार्थी एक से अधिक वाद्ययंत्र बजा सकता है और वे व्यायाम में भी कुशल हैं। वे विनाइल के बस्ते लेकर स्कूल जाते हैं। बारिश होने पर बरसाती पहनते हैं और जाड़े के मौसम में ओवरकोट।

निस्सन्देह आज छांगसोंग क्षेत्र की धरती का रूप और वहां के निवासियों का जीवनस्तर, बुनियादी रूप से बदल गया है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि यदि काउंटी पार्टी समितियों, काउंटी जन समितियों, काउंटी कृषि सहकारी प्रबन्ध समितियों और काउंटी शैक्षिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं के कार्यकर्ता इसी प्रकार ठीक से कार्य करें, तो काउंटियों के स्थानीय उद्योग विकसित होंगे, कृषि उपज में वृद्धि होगी जिससे काउंटी के निवासी सुखी और सम्पन्न जीवन व्यतीत करने लगेंगे; तथा तकनीकी और सांस्कृतिक क्रान्तियां सफलतापूर्वक पूरी होंगी और इससे समाजवाद एवं कम्युनिज्म के निर्माण में सहायता मिलेगी।

पिछले कुछ वर्षों में सामान्यतया हमारी काउंटियों के कार्य में बड़ी प्रगति हुई है, किन्तु फिर भी स्थानीय उद्योगों को संगठित करने, व्यापार व्यवस्था को सचालित करने, शहरी माल ग्रामीण क्षेत्रों में बेचने तथा किसानों से कृषि उत्पादन खरीदने और शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य केन्द्रों की व्यवस्था करने में कुछ काउंटियों के कार्यकलाप में आज भी काफी त्रुटियां हैं।

उदाहरणार्थ, माल के संचरण के प्रश्न को ही लीजिए। कुछ काउंटियों में किसानों से कृषि-उपज की वसूली द्रुत और प्रभावकारी तरीके से संगठित नहीं की गयी है और शहरी माल गांवों में उतनी तेजी से नहीं पहुंच पाते जितनी तेजी से पहुंचने चाहिए। फलतः कुछ स्थानों में तो माल का अम्बार लग जाता है और कुछ जगहों में आवश्यक माल की कमी महसूस की जाती है।

जहां कुछ काउंटियां अपने निवासियों को पर्याप्त मात्रा में खाद्य तेल उपलब्ध कराती हैं और स्वादिष्ट सोयाबीन की चटनी, सोयाबीन का हलुआ और दूध-दही मक्खन तथा शर्बत आदि तैयार करती और उपलब्ध कराती हैं, वहीं अन्य काउंटियां काफी मात्रा में पैदा होने वाले जंगली फलों को जमा करने और उनसे चीजें तैयार करने की सोचती भी नहीं। वे इन्हें भेड़ों और भालुओं की दया पर छोड़ देती हैं। और वे अपने निवासियों को शरबत तक सुलभ नहीं करा पातीं। इसके अतिरिक्त किसान बड़ी संख्या में खरगोश पालते हैं और गोश्त तैयार करते हैं, जिसे कारखाने न होने के कारण प्रोसेस नहीं किया जा सकता।

काउंटियों द्वारा स्थानीय उद्योग को संगठित न किये जाने और प्रभावकारी

ढंग से वसूली का काम न किये जाने के कारण ही यह स्थिति पैदा हुई।

ऐसी काउंटियों को छांगसोंग और साक्जू काउंटियों के अनुभव से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। छांगसोंग और साक्जू काउंटियों ने अपने प्रयास से कई मक्का मिलें कायम की हैं और वे किसानों के लिए मक्के की चीजें तैयार करते हैं तथा मक्का प्रोसेस करने के बाद मक्का के बाकी बचे हिस्से से तेल निकालते हैं और इसे मजदूरों एवं किसानों को सप्लाई करते हैं। किसानों को अब मक्का के दानों की बजाए मक्का से बने आहार मिलते हैं और वे इससे खुश हैं और उन्हें मक्के के कच्चे दानों के दाम भी दे दिये जाते हैं। यह बहुत अच्छा है!

पार्टी की नीति बिल्कुल स्पष्ट है। यह पहाड़ी क्षेत्रों में पहाड़ियों का सदुपयोग करने, समुद्रतटीय इलाकों में समुद्र का सदुपयोग करने और भिन्न-भिन्न काउंटियों की वास्तविक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए फसली क्षेत्रों के विभाजन, मशीनीकरण, सिंचाई और विद्युतीकरण की योजनाओं द्वारा स्थानीय इलाकों की अनुकूल स्थितियों और आरक्षित साधनों को पूर्णतया काम में लाने की नीति है।

इस समय भी प्रदेशों में विशाल आरक्षित भंडार मौजूद हैं। यदि काउंटी अपना काम अच्छी तरह करे तो मजदूरों एवं किसानों को पर्याप्त मात्रा में वनस्पति तेल, सोयाबीन की स्वादिष्ट चटनी, बीन का हलुआ, गोश्त और शरबत सप्लाई किया जा सकता है।

कुछ गांवों में सफाई और सुन्दर बनाने का काम सन्तोषजनक नहीं है। इसके लिए सम्बंधित काउंटियां दोषी हैं।

काउंटी की पार्टी समिति के अध्यक्ष पर विशेष रूप से बड़ा उत्तरदायित्व आता है। यदि वह अपना काम ठीक ढंग से करे तो किसान और श्रमिक बस्तियों के निवासी अच्छा जीवन व्यतीत कर सकते हैं; अन्यथा परिस्थितियां चाहे जितनी भी अच्छी हों, काउंटी की जनता सुखी जीवन व्यतीत नहीं कर सकती।

सारी बात काउंटी पार्टी समिति के अध्यक्ष के उत्साह की है। कुछ लोग शांत स्वभाव के होते हैं और कुछ जल्दी तैश में आ जाते हैं, किन्तु एक कम्युनिस्ट के लिए इस तरह की बात का कोई अर्थ नहीं होता। महत्वपूर्ण चीज है सिद्धांत। मजदूरों और किसानों के लिए सुखी और सम्पन्न जीवन की व्यवस्था करने की इच्छा-शक्ति का हमारे अधिकारियों में अभी भी अभाव है। यदि हम निश्चय कर लें और काम करना शुरू कर दें तो हमारे लिए कोई भी चीज असंभव नहीं है।

छांगसोंग काउंटी की पार्टी समिति के अध्यक्ष जनसमुदाय का नेतृत्व करते हैं, इसलिए वहां सभी चीजें ठीक ढंग से चल रही हैं। जनता पार्टी की नीतियों को अमल में लाने में दिलचस्पी लेने लगी है और उसमें आत्मविश्वास की भावना आयी है। उन्हें चाहे जो भी काम दिया जाय, सभी इसे पूरा करने में जुट जाते हैं

और अचूक और सराहनीय ढंग से पूरा करते हैं।

एक हजार टन जंगली स्ट्राबेरियां जमा करना आसान काम नहीं है। साथियो, आप लोग अन्य काउंटियों में जाइए और वहां के निवासियों से यह करने को कहिए। संभवत: वे आश्चर्यचकित रह जायेंगे और इसे करने का प्रयास भी नहीं करेंगे। छांगसोंग के लोग एक शक्तिशाली दस्ता बन गये हैं, जो ऐसे कार्य करने में पूरी तरह सक्षम हैं। इसे पहले कौन करे? काउंटी पार्टी समिति के अध्यक्ष और री पार्टी समितियों के अध्यक्षों को इस दिशा में पहलकदमी करनी चाहिए।

मैंने किसी भी अन्य काउंटी में जमीन को बहने से बचाने के लिए समुचित रूप से निर्मित तटबंध नहीं देखे। किन्तु छांगसोंग काउंटी की पार्टी समिति के अध्यक्ष ने सबसे पहले इस सम्बन्ध में पार्टी के निर्देशों का पालन किया। काउंटी पार्टी समिति के अध्यक्ष भोर में ही उठकर औरों से पहले अपनी पीठ पर गठरी बांध काम के लिए निकल पड़ते थे और इसी कारण कोई गड़बड़ी नहीं होने पायी। सब लोगों ने तटबंध के निर्माण के लिए एकजुट होकर काम किया।

इसी प्रकार उन्होंने रिहायशी मकानों और घरेलू जानवरों के लिए बाड़ों का निर्माण किया, स्ट्राबेरियां जमा कीं और स्थानीय उद्योग के कारखानों का निर्माण किया।

जब एक खाद्य कारखाने की आधारशिला रखी गयी तो मैं वहां गया और वहां के निवासियों से कहा कि बेहतर होता कि पहले वे एक तटबंध का निर्माण करते, क्योंकि बरसात के मौसम में शायद यहां पानी भर जाए। दूसरे ही दिन काउंटी पार्टी समिति के अध्यक्ष ने लोगों को जमा किया और तटबंध तैयार कर दिया। कई दिन बाद वहां बाढ़ आयी किन्तु निर्माण-स्थल पर इसका कोई असर नहीं पड़ा।

एक काउंटी के निर्माण में कोई विशेष रहस्य नहीं है। यदि काउंटी पार्टी समिति के अध्यक्ष पार्टी की नीतियों को शीघ्रता से स्वीकार कर लें और कार्य क्षेत्र में लोगों के सामने आदर्श प्रस्तुत कर, उनका नेतृत्व करें तो सभी प्रश्नों के उत्तर खोज लिए जाएंगे।

यदि काउंटी पार्टी समिति के अध्यक्ष "मुझे कोई परवाह नहीं है" का रुख अपना लें, देर तक सोते रहें, सुबह आठ बजे के बाद दिखायी दें, तो वह जनसमुदाय को काम के लिए एकजुट नहीं कर सकेंगे और न वह काउंटी का कभी समुचित ढंग से निर्माण कर सकेंगे।

इस संयुक्त सम्मेलन के जरिये नया दृष्टिकोण अपनाकर हमें अपने काउंटी कार्य में त्रुटियों को दूर करना चाहिए, काउंटी की भूमिका बढ़ानी चाहिए और स्थानीय उद्योग के सभी क्षेत्रों, कृषि, माल के संचरण, शिक्षा, संस्कृति, सार्वजनिक

स्वास्थ्य आदि क्षेत्रों में काउंटी के कार्य को उच्च स्तर पर विकसित करना चाहिए।

चूंकि देश की आर्थिक आधार शिला सुदृढ़ हो गयी है, माल का अधिक उत्पादन होने लगा है और लोगों के रहन-सहन के स्तर में तेजी से सुधार हुआ है, इसलिए हमें और अधिक काम करना है।

भूतकाल के मुकाबले में जब लोग भात के मांड़ पर जीवन बसर करते थे, आज उनके जीवनस्तर में अतुलनीय रूप से सुधार हो गया है। जैसा कि कल की बैठक में कई साथियों ने अपने भाषणों में संकेत किया था, वे लोग जो कभी इतने गरीब थे कि पिता और पुत्र एक ही सूट मिल-बांटकर पहनते थे, अब वे इतने सम्पन्न हो गये हैं कि अपने बच्चों के लिए बरसाती और ओवरकोट खरीद सकें। जो लोग कभी सर्दी में मकान और खाने के अभाव में भूख से तड़पते थे, वे न-केवल टाइल की छतों वाले पक्के मकानों में रहते हैं तथा भरपेट भोजन करते हैं, बल्कि अपेक्षाकृत बेहतर भोजन और दैनिक आवश्यकता की चीजों तथा अधिकाधिक सांस्कृतिक सामग्रियों की इच्छा रखते हैं।

लोगों की इस प्रकार की इन बड़ी मांगों की पूर्ति कौन कर सकता है? और कोई नहीं, बल्कि काउंटी समिति, लोक समिति और काउंटी कृषि सहकारी प्रबन्ध समिति ही इसकी पूर्ति कर सकती हैं, क्योंकि वह काउंटी ही होती है, जो जन-समुदाय को पार्टी की नीतियों और कार्यक्रम से अवगत कराती है, और उनके क्रियान्वयन की व्यवस्था करती है।

यदि काउंटी की पार्टी समिति के अध्यक्ष सही ढंग से न सोचें और काउंटी का काम रुक जाये तो स्थानीय इलाकों का राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास असम्भव हो जाएगा अथवा मेहनतकश लोगों के जीवनस्तर को ऊंचा उठाना सम्भव नहीं होगा।

मेरे कहने का अभिप्राय यह नहीं है कि आज हमारी काउंटियों के कार्यकलाप में कोई गम्भीर भूल है। दोष यह है कि जहां कुछ काउंटियों का विकास तीव्र गति से हो रहा है वहां कुछ काउंटियों की प्रगति धीमी गति से हो रही है। सब काउंटियों को विकास की गति में बिना किसी विषमता के, छांगसोंग साक्जू की भांति, तीव्र गति से प्रगति करनी चाहिए।

२. स्थानीय उद्योग के और अधिक विकास के बारे में

जून १९५८ में पार्टी की केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन में स्थानीय उद्योग के विकास की आवश्यकता पर बड़े विस्तार से विचार किया गया था, इसलिए मैं यहां केवल संक्षेप में कुछ बातों पर जोर दूंगा।

ग्रामीण क्षेत्र के लिए संभरण-आधार के रूप में अपनी भूमिका निभाने के लिए काउंटी में स्थानीय उद्योग अवश्य होने चाहिए।

स्थानीय उद्योग होने पर काउंटी न-केवल किसानों द्वारा उत्पादित सामग्री को ठीक ढंग से जमा करके तथा उनसे और चीजें बनाकर, किसानों और मजदूर बस्तियों के निवासियों को पर्याप्त मात्रा में खाद्य सामग्री और दैनिक इस्तेमाल की चीजें सप्लाई कर सकती है, बल्कि किसानों को उत्पादन के लिए अधिकाधिक प्रोत्साहन भी दे सकती है।

यदि किसानों द्वारा उत्पादित चीजें—विशेष रूप से साग-सब्जी, गोश्त, फल, दूध और इसी तरह की अन्य चीजें—शीघ्रता से जमा नहीं कर ली गयीं तो किसान उनके उत्पादन के प्रति उदासीन हो जाएंगे, उनमें प्रेरणा शेष नहीं रहेगी। यदि इन वस्तुओं को खरीद भी लिया गया तब भी अगर शीघ्रता से उसे चीजों के उत्पादन के काम नहीं लाया गया तो भी बहुमूल्य कृषि उपज नष्ट हो जाएगी। इसलिए काउंटी को स्थानीय उद्योगों को विकसित करना चाहिए। शीघ्रता से कृषि-उपज और किसानों द्वारा पैदा की गयी अतिरिक्त चीजों को खरीद कर उनसे अन्य चीजें तैयार करनी चाहिए, ताकि इस प्रकार उपभोक्ता वस्तुओं सम्बन्धी लोगों की मांगें पूरी होने के साथ-साथ किसानों को भी अधिकाधिक पैदा करने की प्रेरणा मिले।

यदि हम स्थानीय उद्योग का विकास नहीं करते और केन्द्रीय शासन के अन्तर्गत केवल बड़े कारखानों का ही निर्माण करते हैं तो कच्चे माल को ले जाने और उत्पादित माल की सप्लाई में हमें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।

यदि हम खाने की चीजों की फैक्टरियों, सूती कपड़ा, कागज और दूसरी फैक्टरियों को केवल शहरों में ही खड़ा करें तो हमें काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। हमें देश के सभी भागों से कच्चा माल शहरों में लाना पड़ेगा; तेल और कपड़ा तैयार करके उन्हें पुनः उपभोक्ता क्षेत्रों में भेजना पड़ेगा। मान लीजिए कि हम प्योंगयांग में सोयाबीन की चटनी और सोयाबीन का हलवा तैयार करते हैं और उन्हें सुदूर पहाड़ी क्षेत्रों में भेजते हैं। पहले हमें सोयाबीन लाना होगा और उससे चटनी तथा हलवा तैयार करके उसे पुनः वहीं भेजना होगा। कहने का अर्थ यह कि एक बार सोयाबीन लाना पड़ेगा, फिर उससे तैयार माल पुनः भेजना

होगा, किन्तु यदि प्रदेशों में उपलब्ध कच्चे मालों से वहीं, विविध चीजें तैयार करके लोगों को सप्लाई करें तो इस प्रकार के दोहरे यातायात की कोई आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

ऐसे क्षेत्र में, जहां कच्चा माल पैदा होता है, जो पास ही उपभोक्ता क्षेत्र से सीधा जुड़ा हो, स्थानीय उद्योग विकसित करना बहुत ही तर्कसंगत और सही नीति है।

इसके अतिरिक्त, स्थानीय उद्योग को विकसित किये बिना प्रदेशों में मौजूद प्रचुर कच्चा और अन्य माल तथा अन्य सामग्रियों अथवा क्षमताओं का पूर्ण सदुपयोग करना असम्भव हो जाएगा। स्थानीय इलाकों में खूब उपलब्ध कच्चे माल के इस्तेमाल से, जोकि जंगली पौधों के रेशों, पाट के रेशों, पुराने कपड़ों से पुनर्प्राप्त रेशों और जंगली फलों के रूप में मौजूद हैं, स्थानीय उद्योग राज्य के लिए खूब मुनाफे जुटाते हैं।

इसके अतिरिक्त कम लागत से और बहुत कम समय में मंझोले और छोटे किस्म के स्थानीय कारखाने बड़ी संख्या में खड़े किये जा सकते हैं और उनमें शीघ्रता से उत्पादन शुरू हो सकता है। बड़े कारखानों के निर्माण के लिए बड़ी मात्रा में सरकारी पूंजी और लम्बी अवधि की आवश्यकता पड़ती है। यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं है कि लोहा और रासायनिक उद्योग के बड़े कारखानों का निर्माण और प्रबन्ध केन्द्रीय शासन के अन्तर्गत होना चाहिए, क्योंकि इनके लिए बड़े उपकरण, विकसित तकनीकों और अधिक धनराशि की आवश्यकता पड़ती है। किन्तु जिन उद्योगों के लिए सामान्य उपकरणों की आवश्यकता होती है, उन्हें स्थानीय आधार पर ही विकसित करना चाहिए।

यह सर्वथा युक्तिसंगत है कि बड़े पैमाने के केन्द्रीय उद्योग तथा मंझोले और छोटे पैमाने के स्थानीय उद्योगों को हलके उद्योगों के विकास के लिए साथ-साथ विकसित किया जाए।

देश के सभी क्षेत्रों के सामान्य विकास के लिए भी स्थानीय उद्योग बहुत महत्वपूर्ण हैं।

हमारा देश दीर्घकाल तक एक खेतिहर देश बना रहा। इस कारण आबादी का बड़ा भाग गांवों में रहता था। आज उद्योगों के विकास के साथ ग्रामीण आबादी का अनुपात कम होता जा रहा है, किन्तु हमने शहरों में बड़ी संख्या में आबादी के संकेंद्रण को रोकने की नीति अपनायी है।

पूंजीवादी देशों में आबादी नगरों में अत्यधिक संकेन्द्रित है, यह किसी भी दृष्टि से अच्छी बात नहीं है। हमारे देश में, जहां पूंजीवाद के पूर्ण रूप से विकसित हुए बिना ही समाजवाद का निर्माण हो रहा है, पूंजीवादी समाज की भांति नगरों

में आबादी के अवांछनीय संकेन्द्रण की अनुमति देने की कोई आवश्यकता नहीं है। केवल शहरों में कारखानों को संकेन्द्रित नहीं होने दिया जाना चाहिए, बल्कि प्रांतों की विशिष्ट बातों को दृष्टि में रखते हुए विभिन्न स्थानों में कारखानों का निर्माण करना चाहिए। हमारे देश में मनोरम पहाड़ और नदियां हैं। ऐसे देश के सभी भागों में कारखाने खड़े करना और उद्योग विकसित करना कितना अच्छा काम है।

जहां तक श्रम-समस्या का सम्बन्ध है, हमारे गांवों और श्रमिक बस्तियों में आज भी काफी अतिरिक्त जनशक्ति सुलभ है: यदि हम इस अतिरिक्त श्रम-शक्ति का प्रभावकारी इस्तेमाल करें तो हम इच्छानुसार काफी बड़ी संख्या में स्थानीय उद्योगों के कारखाने चला सकेंगे। इससे मजदूरों के लिए अतिरिक्त घरों और होस्टलों के निर्माण की कोई आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

तब भला नगरों में कारखानों का संकेन्द्रण करने और ग्रामीण क्षेत्रों में श्रम-शक्ति को अन्यत्र हटाने की क्या आवश्यकता है? खाद्य सामग्री, कपड़ा, कागज आदि तैयार करने के लिए प्रत्येक शहर और काउंटी में अनेक कारखानों का निर्माण करके हम काफी माल तैयार कर सकेंगे। और अधिक धनराशि लगाये बिना स्थानीय आधार पर सुलभ कच्चे माल और श्रम शक्ति का उपयोग करके हम लघु उद्योग को विकसित कर सकेंगे। और इस प्रकार अधिक तीव्र गति से भारी उद्योगों का विकास करने और अपेक्षाकृत अधिक जोश के साथ समाजवादी निर्माण का काम करने के लिए बिजलीघरों, लोहे के कारखानों, रेलवे और बंदरगाहों के निर्माण पर अधिकाधिक राजकीय धन लगा सकेंगे।

राष्ट्र की प्रतिरक्षा शक्ति को सुदृढ़ बनाने के लिए भी स्थानीय उद्योगों का विकास बहुत आवश्यक है।

हम इस समय विश्व प्रतिक्रियावाद के सरगना, साम्राज्यवादी अमरीकी आक्रमणकारियों के आमने-सामने हैं। हमें एक क्षण के लिए भी इस बात को विस्मृत नहीं करना चाहिए कि यह भेड़िये के समान शत्रु हम पर सदैव हमला करने के लिए मौके की तलाश में हैं।

राष्ट्र की प्रतिरक्षा शक्ति को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से केवल फौजों की शक्ति बढ़ाना ही पर्याप्त नहीं है। देश की प्रतिरक्षा क्षमता बढ़ाने के लिए युद्ध-कालीन परिस्थितियों में जनता के आर्थिक जीवन को दृष्टि में रखते हुए उत्पादक शक्तियों के समुचित वितरण का बहुत महत्व होता है।

यदि कारखाने केवल शहरों में संकेन्द्रित रहें तो संकटकाल में उन्हें हटाना कठिन होगा और शत्रु के हवाई आक्रमण में वे एक साथ ही नष्ट हो जाएंगे। अगर देश के सभी भागों में स्थानीय उद्योगों से सम्बन्धित कारखानों का निर्माण किया

जाये तो युद्ध में संकेन्द्रित शहरी उद्योगों के नष्ट हो जाने के बाद भी भोजन और वस्त्र की समस्या पूर्णतया हल की जा सकती है। यदि प्रत्येक काउंटी में सोयाबीन की चटनी और सोयाबीन का हलवा तैयार करने वाला कारखाना हो तो सोयाबीन की चटनी और हलवा हमेशा सुरक्षित भंडार में रहेंगे। यदि स्थानीय मिलों में १५ करोड़ से २० करोड़ मीटर तक कपड़ा तैयार होने लगे तो इससे वस्त्र की समस्या हल हो जायेगी। यह राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान होगा।

इसलिए जून १९५८ में पार्टी की केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन में स्थानीय उद्योग के व्यापक विकास के लिए जो नीति निर्धारित की गई थी, वह वस्तुतः हर दृष्टि से विवेकपूर्ण थी।

इस नीति के तहत ही हमने स्वल्पकाल में प्रत्येक काउंटी क्षेत्र में स्थानीय आधार पर संचालित औसतन दस कारखाने निर्मित किये हैं। इस समय हमारे देश में जितना उपभोक्ता माल तैयार होता है उसका आधे से अधिक स्थानीय उद्योग द्वारा उत्पादित है। इसका अर्थ यह हुआ कि हमारे स्थानीय उद्योग का आधार अब सुदृढ़ हो गया है।

इसका अर्थ यह भी है कि हमारा लघु उद्योग और भी विकसित हो गया है और इसे कच्चे माल के स्रोतों तथा उपभोक्ता क्षेत्रों के अधिक निकट स्थापित किया गया है। यह कृषि उपज और अन्य कच्चे मालों से अधिक शीघ्रता से माल तैयार करने और निवासियों की विभिन्न आवश्यकताओं के अनुसार वस्तुएं उपलब्ध करने में सक्षम है।

हमने प्रत्येक काउंटी में एक खाद्य सामग्री तैयार करने वाले कारखाने और सूती मिल तैयार कर ली है। प्रायः प्रत्येक काउंटी में खेती की मशीनें तैयार करने वाली फैक्टरी और पेपर मिल हैं। कुछ काउटियों में फर्नीचर, मिट्टी के बर्तन और दैनिक आवश्यकता की चीजें तैयार करने वाली फैक्टरियां भी खड़ी हो गयी हैं। कारखानों की इमारतें भी सुसंगठित हैं।

अतः पहले की तुलना में स्थानीय उद्योग की हमारी मांग मूल रूप में भिन्न है।

१९५८ में पार्टी की केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन के समय स्थानीय उद्योग के सामने हर काउंटी में कारखानों का निर्माण करने, उत्पादन का काम शुरू करने के लिए अतिरिक्त स्थानीय श्रम-शक्ति का उपयोग करने और इस प्रकार स्थानीय उद्योगों की आधारशिला की समस्या थी; किन्तु अब हमारे सामने पूर्वनिर्मित आधारशिला पर स्थापित स्थानीय उद्योगों को उच्चतर स्थिति में विकसित करने का प्रश्न है।

तो उच्च स्तर पर स्थानीय उद्योग को विकसित करने के लिए हमें क्या करना चाहिए और कैसे ?

सर्वप्रथम, उत्पादन की सम्पूर्ण क्रिया को यन्त्रीकृत करने और क्रमिक रूप से स्वचालन को लागू करने के लिए तकनीकी क्रान्ति में तेजी लानी चाहिए।

स्थानीय उद्योग के विकास के साथ कच्चे माल के अधिक स्रोतों को सुलभ बनाना चाहिए और इस कार्य को व्यापक रूप से फैलाना चाहिए, किन्तु कुछ काउंटियां जनशक्ति की कमी के कारण अपने कार्य को पूरा करने में विफल रही हैं।

पहले जब स्थानीय उद्योग की उत्पादन-क्षमता बहुत कम थी तब हमें पैरों से चलाये जाने वाले करघे से कपड़ा बुनना पड़ता था किन्तु अब स्थिति बदल गयी है।

तकनीकी क्रान्ति के जरिये उन सभी प्रक्रियाओं को यन्त्रीकृत कर देना चाहिए जिनमें आज भी हाथ से काम होता है। चाहे फिलहाल स्वचालित मशीनों का उपयोग न हो सके, किन्तु शीघ्रता से स्थानीय उद्योग की सभी प्रक्रियाओं का मशीनीकरण कर देना चाहिए।

ऐसा होने पर ही काम आसान हो जायेगा, उत्पादकता बढ़ेगी और काफी श्रम-शक्ति बचेगी।

इस प्रकार जो श्रम शक्ति बचेगी उसके आधार पर हमें स्थानीय उद्योग को और अधिक विकसित करना होगा।

उत्पादनों के गुण में सुधार के लिए भी यन्त्रीकरण अपरिहार्य है।

इस समय लोगों की जरूरतें अभूतपूर्व रूप से बढ़ गयी हैं। युद्धबन्दी के तत्काल बाद जब चीजों की कमी थी, लोग बिना किसी शिकायत के निम्न कोटि की चीजें भी खरीद लिया करते थे। किन्तु अब जब लोग एक कागज भी खरीदने जाते हैं तो वे अच्छे किस्म का कागज चाहते हैं। इसी प्रकार वे उच्च कोटि का सुन्दर कपड़ा चाहते हैं। लोग अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में और विविध प्रकार की चीजें चाहते हैं। पहले वे एक ही प्रकार के सोयाबीन के हलवे से संतुष्ट हो जाया करते थे। किन्तु अब वे भांति-भांति के सोयाबीन के हलवे—जैसे लाल मिर्च का हलवा, तिल और लाल मिर्च का हलवा चाहते हैं। पहले जब हम मुश्किल में थे, हमने वनस्पति तेलों की कमी बर्दाश्त कर ली, लेकिन अब हम अधिक तेल और मक्खन और दूध खाना-पीना चाहते हैं।

जैसा कि आप देखते हैं, जनता का जीवनस्तर ऊंचा हो गया है और उसकी आवश्यकताएं इतनी अधिक बढ़ गयी हैं कि हमें स्थानीय उद्योग को आगे और विकसित करना चाहिए। हमें पहले की अपेक्षा बेहतर और अधिक माल तैयार

करने के लिए कठिन परिश्रम करना चाहिए। इसके लिए यन्त्रीकरण को लागू करने के अतिरिक्त और कोई अन्य विकल्प नहीं है।

यह एक वस्तुगत नियम है कि लोगों का जीवनस्तर जितना ऊंचा होता है उतनी ही अच्छे माल के लिए उनकी मांग बढ़ती जाती है। नियम-नियंत्रित परिवर्तनों के प्रति हम भौतिकवादी अपनी आंखें नहीं मूंद सकते। हमारी पार्टी की कार्य-प्रणाली की मुख्य विशेषता है वस्तुगत परिस्थिति का वैज्ञानिक विश्लेषण करना और सही कदम उठाना।

जनता की सतत बढ़ती हुई आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हमें वर्तमान कारखानों में सुधार करना चाहिए और उनकी उत्पादन-क्षमता बढ़ानी चाहिए, जिन चीजों का अभाव हो, उनका निर्माण करना चाहिए और उत्पादन बढ़ाने तथा माल की क्वालिटी को ऊंचा उठाने के निमित्त पूरे उत्साह के साथ तकनीकी क्रांति में तेजी लानी चाहिए।

नये कारखानों के निर्माण के लिए जनशक्ति को ग्रामीण क्षेत्रों से बाहर नहीं ले जाना चाहिए। चूंकि अभी कृषि का यन्त्रीकरण पूरा नहीं हुआ है, इसलिए ग्रामीण जन-शक्ति को दूसरे कार्यों में नहीं लगाया जा सकता।

इसलिए काउंटी में सुलभ अतिरिक्त श्रम-शक्ति और वर्तमान कारखानों के यन्त्रीकरण के जरिये जो श्रम-शक्ति सुलभ होगी, उसे ही दृष्टि में रखते हुए निर्माणाधीन कारखानों का आकार अथवा उनके विस्तार की बात तय करनी चाहिए।

कुछ काउंटियों में आज भी बड़ी संख्या में लोगों के पास कोई काम नहीं है, जैसा कि सुदोंग काउंटी पार्टी समिति के अध्यक्ष ने कल अपने भाषण में कहा था, कोयला खनिकों की बस्तियों और खनिज खानों के पास तथा अन्य बड़े कारखानों में काम करने वालों और सभी आश्रितों को अभी तक कारखानों में काम नहीं मिल पाया है। इसके अतिरिक्त कारखानों के यन्त्रीकरण से भी काफी जनशक्ति सुलभ हो जाएगी।

स्थानीय उद्योगों के विकास के लिए अभी भी हमारे पास प्रचुर जनशक्ति उपलब्ध है। काउंटी को अपनी श्रम-शक्ति के साधनों का सक्रिय रूप से पता लगाना चाहिए और अपनी श्रमशक्ति के पूर्ण आकलन के आधार पर अपने उद्योगों के आकार को निर्धारित करना चाहिए।

दूसरे, स्थानीय उद्योग के प्रबन्ध स्तर में सुधार होना चाहिए।

स्थानीय उद्योगों के कारखानों के प्रबन्धकर्मियों ने अब तक कारखानों के प्रबन्ध के सम्बन्ध में निश्चित अनुभव प्राप्त कर लिए हैं।

पहले काउंटी पार्टी समितियों और काउंटी लोक समितियों के पदाधिकारियों को लागत लेखा प्रणाली के बारे में कोई स्पष्ट जानकारी नहीं थी और वे उत्पादन

व्यय की गणना ठीक से नहीं कर पाते थे। किन्तु अब वे जानते हैं कि किस प्रकार खर्च में संतुलन कायम किया जाता है। वे अब हिसाब-किताब की जांच ठीक ढंग से कर लेते हैं और तकनीकी प्रक्रियाओं की भी उन्हें पूरी जानकारी हो गयी है। प्रबन्ध कर्मचारियों की तकनीकी योग्यता में विशेष रूप से सुधार हुआ है, किन्तु पार्टी द्वारा अपेक्षित स्तर से वे अभी भी काफी नीचे हैं।

इसलिए प्रबन्ध विभाग के कर्मियों को कारखानों के प्रबन्ध के विषय में अपनी योग्यता बढ़ानी चाहिए और कर्मचारियों को अपने तकनीकी ज्ञान का स्तर ऊंचा उठाना चाहिए। स्थानीय उद्योग के कारखानों के सभी अधिकारियों को छांगसोंग काउंटी की तरह कालेजों और उच्चतर तकनीकी स्कूलों द्वारा दिये जाने वाले पत्राचार प्रशिक्षण के लिए अपने नाम लिखाने चाहिए और दो या तीन साल में इसे पूरा कर लेना चाहिए।

प्रबन्धकों, पार्टी समितियों के अध्यक्षों और स्थानीय उद्योग के कारखानों के चीफ इंजीनियरों को अवश्य अध्ययन करना चाहिए। हमारे देश में एक पुरानी कहावत है कि यदि कोई व्यक्ति मरते दम तक भी लगातार अध्ययन करता रहे, तब भी वह सभी विषयों का ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। कुछ साथियों का कहना है कि अब उन्हें पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वे अब वृद्ध हो गये हैं और उनके बाल सफेद हो गये हैं; आपको इस प्रकार के विचार को त्याग देना चाहिए और सब को सतत रूप से अपनी योग्यता में वृद्धि करते हुए, सदैव अध्ययन करते रहना चाहिए।

स्थानीय उद्योग का विकास करते समय हमें आधुनिक उत्पादन पद्धतियों को लागू करने पर बहुत ध्यान देना चाहिए।

यदि कपड़े को ठीक से बुना जाये, धूप में सुखाया जाए, उस पर कलफ लगा कर ठीक से इस्त्री कर दी जाए तो वह बहुत अच्छा हो जाएगा, किन्तु कुछ कारखाने ऐसा नहीं करते। और अभी हम यह नहीं कह सकते कि सभी कारखाने साफ-सुथरे और व्यवस्थित हैं।

कुछ लोग पुराने समय के अपने दुर्दशाग्रस्त जीवन को सोचते हुए आज अपने वर्तमान जीवन-स्तर से संतुष्ट हैं, क्योंकि यह अतीत की अपेक्षा काफी ऊंचा है। यह एक गम्भीर भूल है।

हम केवल इसी बात से अपने वर्तमान जीवनस्तर से संतुष्ट नहीं हो सकते कि यह भूतकाल की तुलना में बहुत अधिक ऊंचा है। इस सम्मेलन में उपस्थित काउंटी पार्टी समितियों के अध्यक्षों में ऐसे साथी भी हो सकते हैं जो अपनी-अपनी काउंटियों के कारखानों से संतुष्ट हों, क्योंकि पहले उनकी काउंटियों में ये कारखाने कभी थे ही नहीं। परन्तु आप इस प्रकार प्रगति नहीं कर सकते।

स्थानीय उद्योग के कुछ कारखानों में आधुनिक उत्पादन पद्धति का स्तर अभी भी काफी नीचा है। इस त्रुटि को शीघ्र दूर करना चाहिए और स्थानीय उद्योग के सभी कारखानों में सामान्य उत्पादन पद्धति के स्तर को ऊंचा उठाना चाहिए।

सर्वप्रथम, खाद्य सामग्री के कारखानों को साफ-सुथरा और व्यवस्थित होना चाहिए।

पूरे कारखाने साफ-सुथरे होने चाहिए और मजदूरों को सख्ती से स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों का पालन करना चाहिए। काम को आसान बनाने की सुविधाएं प्रदान करनी चाहिए और मजदूरों के लिए स्वास्थ्यपूर्ण वातावरण को भी सुनिश्चित बनाना चाहिए।

दूसरी आवश्यकता यह है कि स्थानीय उद्योग के लिए कच्चे माल का सुदृढ़ आधार निर्मित किया जाये। स्थानीय उद्योगों के कारखानों ने अभी तक कच्चे माल के अपने दृढ़ आधार विकसित नहीं किये हैं। इसके बिना न तो उत्पादन को सामान्य रूप दिया जा सकता है और न ही बढ़ाया जा सकता है।

इस प्रकार अपने स्थानीय उद्योग के भावी विकास के लिए तीव्र गति से यन्त्रीकरण करना, अधिकारियों, मजदूरों और दफ्तरी कर्मचारियों की तकनीकी योग्यता और दक्षता सम्बन्धी स्तर को ऊंचा उठाना, सामान्य उत्पादन पद्धति की सम्यक स्थापना और कच्चे माल के सुदृढ़ आधार का निर्माण आवश्यक है।

अब मैं स्थानीय उद्योगों की विभिन्न शाखाओं के सम्मुख इस समय उपस्थित लक्ष्यों के बारे में चन्द शब्द कहूंगा।

सर्वप्रथम हम खाद्य उद्योग को लें।

विवेकसंगत बात यही है कि हम काउंटी के खाद्य सामग्री कारखाने को बहुत बड़ा न बनायें। अन्य कारखानों के सम्बन्ध में भी यही बात लागू होती है, किन्तु विशेष रूप से खाद्य पदार्थ के कारखाने का आकार काउंटी में सुलभ कच्चे माल, जनशक्ति और आवश्यकताओं की विस्तृत गणना पर आधारित होना चाहिए।

चूंकि प्रत्येक काउंटी में सोयाबीन की चटनी और नमकीन हलवे की अपनी-अपनी फैक्टरियां हैं, इसलिए उनका उत्पादन काउंटी की आवश्यकता से अधिक नहीं होना चाहिए। मैं सोचता हूं कि अच्छा यह होगा कि मंझोले आकार के ऐसे हौज होने चाहिए जिनमें प्रायः सत्तर दिन के उत्पादन को जमा किया जा सके।

चूंकि सोयाबीन की चटनी और नमकीन हलवा हमारी जनता के भोजन के आवश्यक अंग हैं, इसलिए उन्हें स्वादिष्ट होना चाहिए। जिस प्रकार यूरोप के रहने वालों के लिए कॉफी और मक्खन आवश्यक हैं उसी प्रकार कोरियाइयों के लिए सोयाबीन की चटनी और नमकीन हलवा नितांत आवश्यक है। हजारों वर्षों

से सोयाबीन की चटनी और नमकीन हलवा कोरियाइयों के भोजन के अनिवार्य अंग रहे हैं।

यदि सोयाबीन की चटनी स्वादिष्ट बनी हो तो इससे अन्य व्यंजनों का स्वाद बढ़ जाता है, अगर ऐसा न हो तो भोजन का स्वाद ही नष्ट हो जाता है। हमें सोयाबीन की स्वादिष्ट चटनी और स्वादिष्ट नमकीन हलवा तैयार करना चाहिए और हमें पर्याप्त मात्रा में लाल मिर्च तथा तिल और लाल मिर्च का सोयाबीन का हलवा तैयार करना चाहिए।

इसके अतिरिक्त कारखानों के मजदूरों और दफ्तर के कर्मचारियों तथा काउंटी के सदर मुकाम क्षेत्र के इर्दगिर्द की पूरी ग्रामीण आबादी को सोयाबीन का दही सप्लाई करने के लिए इसे पर्याप्त मात्रा में तैयार करना चाहिए। सोयाबीन का दही कोरियाइयों के भोजन का एक काफी प्रिय अंग है।

सोयाबीन का दही तैयार करने के लिए आपको प्योंगयांग की भांति बड़े उपकरणों की आवश्यकता नहीं है बल्कि मोटर चालित साधारण चक्की का इस्तेमाल करना बेहतर होगा। साक्जू खाद्य पदार्थ कारखाना सामान्य उपकरणों का इस्तेमाल करके ही काफी मात्रा में यह दही तैयार करता है। मजदूरों की बस्तियों और सुदूरवर्ती क्षेत्रों में इसकी सप्लाई को सुनिश्चित बनाने के लिए इस की छोटी शाखा फैक्टरियां खोलना एक अच्छा विचार है।

खाद्य पदार्थ की फैक्टरी में दूध के साथ-साथ खरगोश, हंस आदि और दूसरी तरह का गोश्त तैयार करने की कर्मशाला का होना युक्तिसंगत है।

पशुपालन के भावी विकास और गोश्त का उत्पादन बढ़ाने के लिए गोश्त की प्रोसेसिंग को सुनिश्चित बनाने के लिए कदम उठाने चाहिए। गोश्त प्रोसेसिंग कारखानों की बात करते समय आप लोगों को केवल रयोंगसोंग गोश्त कारखाने जैसे बड़े कारखाने निर्मित करने की बात नहीं सोचनी चाहिए। इसकी जगह आप लोगों को साधारण उपकरण लगाकर गोश्त की चीजें तैयार रखनी चाहिए। सोयाबीन की चटनी में गोश्त को उबालकर उसे सुरक्षित रखना बेहतर है। यह भी एक लोकप्रिय कोरियाई व्यंजन है।

गाय के दूध से भी आसानी से चीजें तैयार की जा सकती हैं, किन्तु कुछ इलाकों में किसानों द्वारा उत्पादित दूध खरीदा नहीं जाता और समय रहते उससे चीजें तैयार नहीं की जातीं। फलतः दूध के उत्पादन में किसानों की कुछ दिलचस्पी नहीं है। यदि समय रहते दूध को जमा कर उसे विधायित कर लिया जाये तो किसान अधिक दूध पैदा करने लगेंगे और मेहनतकश लोगों को अधिक मात्रा में दूध में बने पदार्थ सुलभ होंगे।

साग-सब्जी को भी प्रोसेस किया जाना चाहिए। मूली, खीरा, लहसुन, लाल

मिर्च की पत्तियों, स्टोनलीक (प्याज की तरह की सब्जी) और दूसरी सब्जियों को सोयाबीन की चटनी में सुरक्षित रखना और मेहनतकश लोगों को इन्हें सप्लाई करते रहना आवश्यक है।

अपेक्षाकृत कुछ बड़े पैमाने पर प्रत्येक काउंटी में वनस्पति तेल फैक्टरी स्थापित होनी चाहिए। इस फैक्टरी में सोयाबीन, तिल, पटुआ के बीज और मक्के के छोटे दानों से तेल निकालना चाहिए। धान की भूसी से भी यथासम्भव तेल निकाला जाना चाहिए और इसे कपड़ा साफ करने का साबुन तैयार करने के काम में लाना चाहिए। सोयाबीन का तेल खाने के काम में लाना चाहिए।

हमें अगले साल मक्के के छोटे दानों से कम-से-कम दस हजार टन तेल निकालने का संघर्ष करना चाहिए।

यदि छांगसोंग जैसी छोटी काउंटी प्रति वर्ष तीन टन वनस्पति तेल तैयार कर सकती है तो हम अच्छी तरह काम करके निश्चित रूप से १० हजार टन वनस्पति तेल पैदा करने का लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।

प्रत्येक काउंटी को अपने मक्का उत्पादन को दृष्टि में रखते हुए तेल के उत्पादन का अपना कोटा—३०, ४०, ५० अथवा ६० टन—निर्धारित करना चाहिए और अपनी योजना को सफलतापूर्वक लागू करना चाहिए। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को १० ग्राम और प्रत्येक मजदूर को २० ग्राम वनस्पति तेल अवश्य उपलब्ध करना चाहिए।

इस समय कुछ लोगों का कहना है कि वनस्पति तेल का काफी स्टाक जमा हो गया है और वह बिक नहीं रहा। इस दशा में अधिक वनस्पति तेल पैदा करने में उनकी दिलचस्पी नहीं है। ये लोग तथ्यों से अवगत नहीं हैं। अतिरिक्त वनस्पति तेल के बारे में परेशान होने की स्थिति से पहले अभी हमें बहुत कुछ करना है।

शरबत की फैक्टरियां भी निर्मित होनी चाहिए ताकि मेहनतकश लोगों को हर जगह शरबत सुलभ हो सके।

आप लोगों को कुछ अन्य काउंटियों की भांति फलों से केवल तेज शराब ही नहीं बनानी चाहिए, बल्कि काफी मात्रा में शरबत, फलों का रस और विविध प्रकार के अन्य शरबत तैयार करने चाहिए। अन्न की जगह फल से ही शराब तैयार करनी चाहिए।

यह बहुत आवश्यक है कि खाद्य पदार्थ की फैक्टरियों में काम करने वालों को अच्छा प्रशिक्षण प्रदान कर बेहतर और स्वास्थ्यप्रद चीजें तैयार की जायें। खाद्य पदार्थ तैयार करने में यथासम्भव हाथ से कम से कम काम करना चाहिए। इस प्रकार के उपकरणों में इस तरह सुधार करना चाहिए कि शराब या फलों के रस हाथ के बजाय स्वचालित प्रणाली से बोतलों में भरे जायें, यह काम हाथ से नहीं

होना चाहिए। इस प्रकार उच्च कोटि की स्वच्छता और स्वास्थ्य की स्थिति सुनिश्चित हो जाए।

कुछ स्थानों में खाद्य पदार्थ से चीजें तैयार करने की बात कहने पर कुछ लोग सब्जी और गोश्त आदि को भून कर बेचते हैं। यह फूड प्रोसेसिंग नहीं है और सफाई की दृष्टि से भी बहुत खतरनाक है। जलपान-गृहों में चीजें पका कर बेचना जैसे भुनी हुई सब्जी और गोश्त, ठीक है। खाद्य पदार्थ फैक्टरियों को इस तरह की चीजें तैयार करनी चाहिए जो बहुत दिनों तक रखने पर भी खराब न हों। इस तरह खाद्य फैक्टरियों की उत्पादित चीजें इस प्रकार की होनी चाहिए कि लोग हमेशा बेफिक्र होकर उन्हें खा सकें।

इस लक्ष्य को दृष्टि में रख कर खाद्य फैक्टरियों में विशेष रूप से उत्तरदायी कर्मचारियों को ही काम पर लगाना चाहिए और उन्हें स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों की अच्छी शिक्षा देनी चाहिए।

पुक्छोंग बैठक के निर्णयानुसार शरबत आदि का उत्पादन बढ़ाने के लिए खाद्य फैक्टरी को कच्चे माल का अपना आधार निर्मित करना चाहिए जिसका क्षेत्रफल ५० से १०० छोंगबो तक हो। इस प्रकार फैक्टरी को बड़े परिमाण में खूबानी, स्ट्राबेरी, अलूचा तथा अन्य फलों को पैदा करना चाहिए ताकि उसे कच्चे माल का अभाव न हो।

हमारे देश में फलों के वृक्ष हर जगह उपज सकते हैं। खूबानी, आड़ू, सेव, नाशपाती, स्ट्राबेरी आदि फल खूब पैदा होते हैं। छांगसोंग जैसे स्थानों में अब से जंगली फलों का ही इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, बल्कि बड़ी संख्या में ऐसे फलदार वृक्षों को रोपना चाहिए। उत्पादित फलों को बड़े पैमाने पर प्रोसेस करना चाहिए।

हमारे देश में फलों के वृक्षों की भरमार है और उनसे काफी फल प्राप्त होते हैं। किन्तु अभी भी मेहनतकश लोगों की मांगें पूर्णतया पूरी नहीं हो पातीं, क्योंकि फलों के नये वृक्षों को रोपने में और मौजूद वृक्षों की देखरेख करने में हमारी दिलचस्पी नहीं है। उदाहरणार्थ सुनान और छुंगसान में सेब के काफी वृक्ष लगाये गये, किन्तु उनकी ठीक से कटाई-छंटाई नहीं की गयी और उनकी उपेक्षा की गयी। हमारे देश में सर्वत्र आड़ू के पेड़ पाये जाते हैं। किन्तु केवल कुछ ही स्थानों में उनकी ठीक से देखभाल की जाती है। यह देश के विशाल साधनों को नष्ट करने जैसा ही है।

हमें केवल फलों के वृक्ष रोपकर ही नहीं रह जाना चाहिए, बल्कि उनकी अच्छी तरह देखरेख भी करनी चाहिए। वर्तमान फलों के वृक्षों की सावधानी से देखरेख की जानी चाहिए ताकि मौसम के अनुरूप सभी स्थानीय क्षेत्रों में काफी

परिमाण में विविध प्रकार के फल सुलभ हो सकें।

अब मैं सूती वस्त्रोद्योग के सम्बन्ध में चन्द शब्द कहूंगा।

प्रत्येक काउंटी में एक सूती मिल है, इसलिए यह आवश्यक है कि उसे उपकरणों से सज्जित और सुदृढ़ किया जाए।

विशेष रूप से मिलों के यन्त्रीकरण के स्तर को ऊंचा उठाना चाहिए। प्रत्येक मिल को महीन बुनाई और सूत बंटने की मशीनों की संख्या बढ़ाकर महीन सूत बंटना चाहिए और अच्छा कपड़ा तैयार करना चाहिए। चूंकि प्रत्येक सूती मिल के लिए कताई मशीनों की व्यवस्था करना कठिन है, इसलिए मेरा विचार है कि स्थानीय उद्योग प्रबन्धमंडल को इकाई मानकर वहां कताई मिल निर्मित करनी चाहिए और इसे तैयार करके सूती मिलों को विकसित करना चाहिये।

कताई मिल को सूती मिल से अलग नहीं होना चाहिए, बल्कि इसे उसी प्रबन्धक के नियंत्रण में रखना चाहिए। निःसन्देह, इसका अनिवार्य मतलब यह नहीं है कि उस इलाके में, जहां प्रबन्धमण्डल हैं, वहां सूती मिल के साथ कताई मिल का निर्माण होना ही चाहिए। बेहतर यह होगा कि मजदूरों की बस्ती में स्थित सूती मिल में ही कताई मिल भी निर्मित की जाये और स्थानीय अतिरिक्त शक्ति के द्वारा उसे चलाया जाये। बड़ी सूती मिल का अपना कताई विभाग भी हो सकता है। छागसोंग, साक्जू और प्योक्दोंग जैसी छोटी-छोटी काउंटियों के लिए बेहतर यही होगा कि कई काउंटियों के लिए एक ही कताई मिल कायम की जाये।

स्थानीय आधार पर संचालित सूती मिलों की वार्षिक उत्पादन क्षमता प्रत्येक काउंटी के हिसाब से ४ लाख से ५ लाख मीटर और बड़ी काउंटियों के लिए १० लाख से २० लाख मीटर होनी चाहिए। इस प्रकार सातवर्षीय योजना के अन्त तक स्थानीय आधार पर संचालित सूती मिलों का वार्षिक उत्पादन कम से कम १५ करोड़ से २० करोड़ मीटर तक होना चाहिए।

हमारी योजना यह है कि अगले साल २५ करोड़ मीटर सूती वस्त्र तैयार हो और १९६४ में ३० करोड़ मीटर कपड़ा तैयार हो। तब स्थानीय उद्योग फैक्टरियों को १० करोड़ मीटर कपड़ा तैयार करना होगा।

इसलिए कच्चा माल प्राप्त करने का प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण है।

स्थानीय उद्योगों की फैक्टरियों को कच्चे माल का ५० से ६० प्रतिशत अपने ही इलाकों से प्राप्त करना चाहिए। इसलिए कच्चे माल के सुदृढ़ आधार को निर्मित करने पर विशेष ध्यान देना चाहिए। अगले साल प्रत्येक काउंटी में कम-से-कम ३०० से ४०० छोंगबो जमीन में पाट बोना चाहिए। इस प्रकार राष्ट्रीय आधार पर ५० हजार से ६० हजार छोंगबो जमीन पर पाट की बुआई होनी चाहिये।

किन्तु अन्न पैदा करने वाली जमीन पर पाट की बुआई नहीं होनी चाहिए। पाट और रेंड़ी जैसी रेशे वाली फसलों को व्यापक रूप में सड़कों के किनारे-किनारे, खेतों के चारों ओर, घरों के इर्दगिर्द और दफ्तरों तथा कारखानों के प्रांगणों में बोना चाहिए। जैसा कि मैंने अपने दौरे के समय देखा, छांगसोंग खाद्य फैक्टरी का अहाता बहुत बड़ा है। वहां गाड़ियों के आने-जाने के लिए मार्ग छोड़कर शेष जगह में रेशे वाली फसलों को बोना उपयुक्त होगा।

सूती मिलों के सम्मुख महत्वपूर्ण कार्य कपड़े की क्वालिटी में सुधार करना है। सूत को काफी महीन कातना और बंटना चाहिए और उससे अच्छे किस्म का कपड़ा बनाना चाहिए। इस दशा में कच्चा माल नष्ट नहीं होगा और कपड़ा आकर्षक होगा। जंगली वृक्षों के रेशे और चिथड़ों, फटे-पुराने कपड़ों तथा इसी प्रकार की अन्य चीजों से प्राप्त रेशों से तैयार सूत को इस प्रकार अच्छी तरह से बंटना चाहिये, ताकि उससे ओवरकोट और ऊनी कपड़ों के लिए कपड़ा बुना जा सके। ग्रीष्मकालीन अच्छा कपड़ा तैयार करने के लिए फ्लैक्स और पटसन का उपयोग होना चाहिए। सरकार द्वारा सप्लाई किये गये रेशे से उच्च कोटि का कपड़ा तैयार करना चाहिए और रेयन धागे से ही रेशमी कपड़ा तथा इन्द्रधनुषी कपड़ा तैयार करने का विचार भी अच्छा है। कपड़े की क्वालिटी में गुणात्मक सुधार के लिए उचित प्रोसेसिंग की आवश्यकता है, जिनमें कताई मिलों में ब्लीचिंग और रंगाई सम्मिलित है। हर काउंटी के लिए रंगाई की सुविधाओं की व्यवस्था करना कठिन होगा। इसलिए बेहतर यही होगा कि इस तरह की सुविधाएं प्रबन्धमंडल के नियंत्रण में रहें और वही रंगीन धागा वितरित करे।

प्रत्येक स्थानीय सूती मिल के पास ही परिधान फैक्टरी खड़ी करना अच्छा होगा। बड़ी काउंटियां अलग से भी परिधान फैक्टरियां निर्मित कर सकती हैं। हर सूरत में प्रत्येक काउंटी में एक से अधिक सुसंचालित परिधान फैक्टरी होनी चाहिए। प्रत्येक काउंटी को अपने मजदूरों और किसानों को काम के समय पहनने वाले कपड़े, स्कूली बच्चों के लिए वर्दी तथा छात्रों के लिए ओवरकोट तैयार करने चाहिए।

अब चन्द शब्द कागज मिलों के बारे में।

सातवर्षीय योजना के अन्त तक कागज का हमारा वार्षिक उत्पादन २ लाख ५० हजार टन तक निश्चय ही पहुंच जाना चाहिए। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए स्थानीय उद्योग को कम से कम एक लाख टन कागज बनाना होगा। प्योंगयांग और राज्यों की राजधानियों में जो कागज मिलें हैं, उन्हें छोड़कर काउंटियों की कागज मिलों को ७० से ८० हजार टन कागज अवश्य तैयार करना चाहिए।

इस साल स्थानीय कागज मिलों के उत्पादन का कोटा ३५ हजार टन है। आपको कागज मिलों के उपकरणों पर अब काफी ध्यान देना चाहिए और इस बात की बहुत कोशिश करनी चाहिए कि अगले कुछ वर्षों के दौरान उनका उत्पादन बढ़ कर करीब ५० हजार टन से ६० हजार टन तक हो जाये।

विभिन्न काउंटियों में कच्चे माल और जनशक्ति की स्थितियों के समुचित आकलन के आधार पर ही पेपर मिल का आकार निर्धारित करना चाहिए।

जहां तक कच्चे माल का सम्बन्ध है, जहां पर्याप्त मात्रा में तिनके सुलभ हों वहां कागज बनाने में इनका इस्तेमाल करना चाहिए और पहाड़ी इलाकों में पिसी लुगदी का इस्तेमाल करना चाहिए।

हमारे देश में प्रत्येक काउंटी में वृक्ष अथवा घास उपलब्ध है। चूंकि ३०० टन घास से १०० टन कागज तैयार किया जा सकता है, इसलिए हम १००० टन घास से ३०० टन से अधिक कागज तैयार कर सकते हैं।

लेकिन यदि हम बहुत अधिक घास का इस्तेमाल करेंगे तो इससे कास्टिक सोडे की कमी हो जायेगी, इसलिए कागज बनाने के कच्चे माल में ७० से ८० प्रतिशत तक लुगदी होनी चाहिए। अतः जिन क्षेत्रों में काफी घास होती है, उन्हें घास की लुगदी तैयार करके छांगसोंग काउंटी जैसे स्थानों में, जहां वृक्ष अधिक हैं, इसे सप्लाई करना युक्तिसंगत होगा और बदले में उन्हें वृक्षों वाले क्षेत्रों से पिसी लुगदी प्राप्त करनी चाहिए।

पिसाई मशीन बनाना कोई मुश्किल काम नहीं है। इस समय छांगसोंग और साक्जू में जिस प्रकार की पिसाई मशीनें काम में आ रही हैं, वैसी आसानी से बनायी जा सकती हैं। इस प्रकार की पिसाई मशीनें तैयार करके विभिन्न स्थानों में उन्हें काम में लाना चाहिए।

यदि प्रत्येक काउंटी इस प्रकार अपना कागज उद्योग विकसित करे तो सभी प्रदेश कापियों, दीवार कागज, फर्श पर लगाने वाले कागज, पैकिंग में काम आने वाले कागज आदि की अपनी जरूरतें खुद पूरी कर लेंगे।

इसके अलावा प्योंगयांग, हामहुंग और सिनुइजू जैसे कुछ शहरों में फिल्टर, कार्बन, सिगरेट के काम आने वाले तथा अन्य विशेष प्रकार के कागज तैयार करने चाहिए। उपभोक्ता उद्योग आयोग को प्रत्यक्ष रूप से इससे सम्बन्धित होना चाहिए।

प्रत्येक काउंटी में फर्नीचर की भी फैक्टरी होनी चाहिए।

इस समय काउंटी फर्नीचर कारखाने कृषि उपकरण कारखानों से सम्बद्ध हैं और वे केवल खेती के औजार और धान के पौधों की हिफाजत के लिए बनाये जाने वाले लकड़ी के फ्रेम तैयार करते हैं। वे खाने की मेजें तथा वस्त्र रखने की

आलमारियां जैसे फर्नीचर को बनाने में उपेक्षा का भाव अपनाते हैं। इसलिए फर्नीचर कारखानों को कृषि उपकरण कारखानों से अलग कर देना चाहिए और काउंटी में अलग फर्नीचर कारखाना होना चाहिए।

फर्नीचर कारखानों को कपड़े रखने की आलमारियां, रजाई रखने की पेटी, बूढ़ों के लिए खाने की कोरियाई शैली की मेजें और गृहणियों को पसन्द आने वाली पेटियां तैयार करनी चाहिए। इसके अलावा इन कारखानों को कुर्सियां, डेस्क, लिखने की मेजें, चारपाइयां तथा अन्य प्रकार के फर्नीचर तैयार करने चाहिए।

आपको इस प्रकार का फर्नीचर काउंटियों में तैयार करके गांवों में सप्लाई करना चाहिए और सुदूर स्थानों से बना-बनाया फर्नीचर लाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। उत्पादन की मात्रा को इस रूप में निर्धारित कर देना अच्छा रहेगा, ताकि उससे सम्बन्धित काउंटी की आवश्यकता की पूर्ति हो सके। लकड़ी का उत्पादन करने वाले कस्बों को पर्याप्त अर्ध-तैयार सामान बनाना चाहिए और उसे दूसरी बस्तियों में भेज देना चाहिए, जहां उन्हें जोड़ा जा सके।

इसके अतिरिक्त काउंटी को मिट्टी के बर्तन की फैक्टरी बनानी चाहिए और उसमें लोगों के इस्तेमाल के लिए आवश्यक विभिन्न आकार प्रकार के मर्तबान, बर्त्तन और प्याले आदि तैयार करने चाहिए। उदाहरणार्थ, बर्तन सभी आकार-प्रकार के होने चाहिए, जिनमें लाल मिर्च से युक्त सोयाबीन का हलवा और सामान्य हलवा रखने के पात्र भी शामिल हैं। प्रत्येक काउंटी अपने लोगों की जरूरतें पूरी करे। जिन काउंटियों में उपयुक्त मिट्टी के अभाव के कारण मिट्टी के बर्तन की फैक्टरियां निर्मित नहीं की जा सकतीं, वहां की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रबन्धमंडल को इस बात की समुचित व्यवस्था करनी चाहिए कि दूसरी काउंटियों की मिट्टी के बर्तन की फैक्टरियां अतिरिक्त बर्तन तैयार करें और उन्हें इन काउंटियों को भेजें।

प्रत्येक काउंटी को मक्का प्रोसेसिंग फैक्टरी, चावल सफाई मिल तथा अपनी दैनिक आवश्यकता की सामान्य चीजों की मांगों को पूरा करने के लिए फैक्टरी कायम करनी चाहिए। इसके अलावा गृहिणी कर्मीटोलियों तथा अतिरिक्त समय में किसानों द्वारा अन्य चीजें उत्पादित करने की इस प्रकार व्यवस्था होनी चाहिए ताकि वे पुआल के टोप, नरकट की चटाई तथा अन्य स्थानीय विशेष चीजें और विभिन्न प्रकार की घास की चीजें तैयार कर सकें।

प्रत्येक काउंटी को १९६४ में मई दिवस तक स्थानीय उद्योग की फैक्टरियों को पूर्णतया अच्छे उपकरणों से लैस करने, उनकी क्षमता बढ़ाने और उनका आकार बढ़ाने की तैयारियां शुरू कर देनी चाहिए ताकि वे उत्पादन के क्षेत्र में

उल्लेखनीय प्रगति कर सकें। इस प्रकार कारखानों के मजदूरों और दफ्तरों के कर्मचारियों के परिवारों में से प्रत्येक परिवार की मासिक आय ७० से ८० वोन अथवा १०० वोन तक बढ़ाने के लिए कस्बों और मजदूर बस्तियों में सभी गृहिणियों को काम देना चाहिए।

स्थानीय उद्योग से सम्बन्धित कारखानों को नये उपकरणों से लैस करने, उन्हें विस्तृत करने अथवा नये कारखाने निर्मित करते समय आपको जो बात ध्यान में रखनी है वह यह है कि काम को सुनियोजित और सुसंगठित ढंग से, विशिष्ट परिस्थितियों और संभावनाओं के सही आकलन के आधार पर आगे बढ़ाया जाए। "एक बार कोशिश कर लें" की धारणा से हमें अवैध रूप से धन-राशि दूसरी ओर लगाकर आर्थिक नियमों का उल्लंघन नहीं करना चाहिए या बिना ठीक गणना किये परियोजनाओं का निर्माण कार्य शुरू नहीं करना चाहिए। काउंटी को आवश्यक धन और सामग्री के बारे में पूर्ण विचार करके क्षेत्रीय, स्थानीय उद्योग प्रबन्धमंडल को अपना तखमीना प्रस्तुत करना चाहिए। उस सूरत में राज्य कुछ इस्पात, इमारती लकड़ी, सीमेंट और इसी प्रकार की अन्य चीजें सप्लाई करेगा और केन्द्रीय नियंत्रण वाली फैक्टरियां भी स्थानीय उद्योग की फैक्टरियों को सुनिश्चित सहायता प्रदान करेंगी।

इस समय प्रदेश को करीब ५ हजार टन सीमेंट इस्तेमाल करने का अधिकार प्राप्त है। युक्तिसंगत बात यह होगी कि प्रदेश दो हजार टन अपने लिए रख ले और शेष तीन हजार टन काउंटियों को बांट दे। प्रत्येक काउंटी को कुछ इस्पात और इमारती लकड़ी भी मिलनी चाहिए। बेहतर यह होगा कि केन्द्रीय नियंत्रण में फैक्टरियों में मशीनें तैयार हों। स्थानीय उद्योग की फैक्टरियों को यथासम्भव सहायता प्रदान करनी चाहिए।

जब हमने पहली बार छापामार फौज खड़ी की तो हमें सब प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, क्योंकि हथियारों की बात तो छोड़ दीजिए, हमें बारूद भी सुलभ नहीं थी। हमने बारूद बनाने के लिए गोमूत्र से नाइट्रिक एसिड निकाला और इस समय हमारे देश में बड़े-बड़े कारखाने हैं और इसलिए यह कहना गलत है कि हम स्थानीय फैक्टरियों का निर्माण नहीं कर सकते।

प्रान्तीय पार्टी समितियों के अध्यक्षों को विशेष रूप से अपने कार्य पर अच्छी तरह ध्यान देना चाहिए। यदि वे ठीक ढंग से अपने काम की व्यवस्था करें और समुचित रूप से कार्यकर्ताओं के साथ जुट कर कार्य करें तो सब कुछ अच्छी तरह होता रहेगा।

कार्यकर्ताओं के साथ समुचित कार्य करने का अर्थ यह नहीं है कि वर्तमान काउंटी पार्टी समितियों के अध्यक्षों की जगह दूसरे लोग जाएं। उन्हें अच्छी शिक्षा

देनी चाहिए और कार्य के लिए उनमें पूर्ण उत्साह पैदा करना चाहिए। यदि काउंटी पार्टी समितियों के अध्यक्ष अनभिज्ञ हों तो वे कुछ नहीं कर सकेंगे।

प्रान्तीय पार्टी समितियों के अध्यक्षों को चाहिए कि वे काउंटी पार्टी समितियों के अध्यक्षों को निरीक्षण सम्बन्धी दौरों के समय अपने साथ रखें और उन्हें शिक्षा दें। मान लीजिए कि प्रान्तीय पार्टी समितियों के अध्यक्ष शनिवार को ट्रेन द्वारा काउंटी पार्टी समितिथों के अध्यक्षों के साथ दौरों पर जायें और रविवार को वापस आ जायं तो अगले दिन इससे उनके काम में कोई बाधा नहीं पैदा होगी। उदाहरणार्थ उन्हें एक कागज मिल, एक मशीन निर्माण करने वाला संयंत्र, गोश्त प्रोसेसिंग फैक्टरी, ह्वांगहाए आयरन वर्क्स आदि दिखाये जाने चाहिए।

कुछ काउंटी पार्टी समितियों के अध्यक्षों ने पहले फैक्टरियों में काम किया था, किंतु वह पुराने समय की बात है। आज जब वे बड़े आधुनिक कारखानों को देखेंगे तभी उनमें नया विवेक और नयी चेतना पैदा हो सकती है। पुस्तकों से ज्ञान प्राप्त करना अच्छी बात है, किंतु वस्तु-स्थिति से जानकारी प्राप्त करना उससे भी बेहतर है। जिस प्रकार यहां छांगसोंग में एक सप्ताह तक ठहरने के दौरान आपने बहुत कुछ जानकारियां लीं, उसी प्रकार विभिन्न स्थानों का भ्रमण करके आप बहुत कुछ देख और सीख सकते हैं। अगर प्रान्तीय पार्टी समितियों के अध्यक्ष काउंटी पार्टी समितियों के अध्यक्षों को सक्रिय बना दें और यदि काउंटी पार्टी समितियों के अध्यक्ष जन समुदाय में समझदारी से क्रियाशील होने की प्रेरणा भर दें तो स्थानीय क्षेत्रों की सभी समस्याएं सफलता के साथ हल हो जायेंगी।

३ : ग्रामीण अर्थव्यवस्था के बारे में

इस समय हम जिन प्रश्नों पर विचार कर रहे हैं, उनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण सवाल है पहाड़ी इलाकों के किसानों के जीवन-स्तर का तीव्र गति से सुधार करना। इसे करने के लिए एकमात्र विकल्प यही है कि इस समय जितनी भूमि पर खेती की जा रही है उसका समुचित उपयोग करके अधिक गल्ला पैदा किया जाये और पहाड़ों का उपयोग करते हुए पशुपालन को विकसित किया जाय।

पशुपालन का विकास करके ही हम किसानों की नकद आय बढ़ा सकते हैं और गल्ले की उपज बढ़ाकर ही घरेलू पशुओं के लिए चारे के अपने साधनों को बढ़ा सकते हैं और इस प्रकार पशुपालन का और अधिक विकास कर सकते हैं। इसलिए पहाड़ी क्षेत्रों में यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है कि भेड़ें, बकरे, बकरियां,

बछड़े, बत्तखें और खरगोश जैसे घास खाने वाले घरेलू जानवरों की संख्या बढ़ाने के निमित्त पहाड़ों से लाभ उठाया जाए।

पहाड़ी क्षेत्रों में प्रत्येक सहकारी को कम-से-कम २०० भेड़ें पालने के लिए प्रयास करना चाहिए। दक्षिण ह्वांगहाए प्रांत के सिछोंग जैसे समतल मैदानी इलाकों में भी काफी संख्या में ऐसे सहकार हैं जिनके पास पहाड़ी क्षेत्र हैं। इन सहकारों को भेड़ें पालनी चाहिए। प्रत्येक सहकार को कृषक परिवारों की संख्या के अनुपात में भेड़ें पालनी चाहिए अर्थात ३०० परिवारों के लिए ३०० भेड़ें और ५०० परिवारों के लिए ५०० भेड़ें पालनी चाहिए।

भेड़ एक ऐसा बहुत ही लाभप्रद घरेलू जानवर है जिसे केवल घास के सहारे पाला जा सकता है। भेड़ें तिपतिया घास, पिंगल की पत्तियां और शाहबलूत की पत्तियां खाना अधिक पसन्द करती हैं। घास को काटकर सुखा लें और रख लें। जाड़े में इसे काट कर आप भेड़ों को खिला सकते हैं। प्रत्येक भेड़ से प्रति वर्ष १५० वोन की आय होती है। यह वास्तव में कितनी अच्छी बात है।

रयांगगांग प्रांत में भेड़ें अच्छी तरह पाली जा सकती हैं, किन्तु वहां के लोग काफी संख्या में भेड़ें नहीं पालते। इस प्रांत में निश्चित रूप से घास की कमी नहीं है। वास्तव में यहां लोगों में उत्साह की कमी है। प्रांत और काउंटियों ने अपने कार्य को सुसंगठित नहीं किया है और यहां के कार्यकर्ता किसानों की आय को बढ़ाने के लिए दृढ़ प्रयास करने में विफल रहे हैं।

भेड़ों के साथ बड़ी संख्या में बछड़े भी पाले जाने चाहिए। यदि एक ग्रीष्म ॠतु में बछड़ों को घाटी में चराया जाये तो उनका वजन ७० किलोग्राम तक बढ़ जाता है और इससे आपको १०० वोन की आय होती है।

हमारे प्रयोगों से यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि केवल घास के सहारे बत्तखों को पालना बिल्कुल सम्भव है। बत्तखों के अंडों और उनके बच्चों को बाजार में बेच कर हम एक मादा बत्तख से ७० से ८० वोन तक पैदा कर सकते हैं। भेड़ की अपेक्षा बत्तखों की संख्या बहुत तीव्र गति से बढ़ती है। प्रत्येक कृषि सहकार को बत्तखों का पर्याप्त संख्या में पालन करना चाहिए, ताकि दो-तीन साल के भीतर प्रत्येक कृषक परिवार के पास कम-से-कम एक बत्तख हो जाये।

प्रति कृषक परिवार के लिए कई खरगोशों और दो सुअरों को पालना वांछनीय है।

आप लोगों को श्रम के समुचित संगठन द्वारा खाद तैयार करने तथा निर्धारित समय से पहले ही निराई करने जैसे कृषि-कार्य को पूरा करना चाहिए तथा यन्त्रीकरण के क्षेत्र को विस्तृत बना कर यथासंभव अधिकाधिक श्रमशक्ति बचानी चाहिए। इस प्रकार जो जनशक्ति बचे उसका उपयोग नकद आय बढ़ाने के उद्देश्य

से जंगली फलों को जमा करने, जड़ी-बूटियों को रोपने ओर रेशम के कीड़ों को पालने में करना चाहिए।

आपको इस बात पर ध्यान देना है कि पहाड़ी इलाकों में किसानों के प्रति परिवार की औसत आय तीन टन गल्ला और १००० वोन से अधिक होनी चाहिये। इस प्रकार यदि सम्भव हो तो सभी किसानों का अथवा कम से कम ८० प्रतिशत किसानों का जीवनस्तर १९६४ तक मंझोले किस्म के सम्पन्न किसानों के जीवनस्तर तक पहुंचा देना है।

अब मैं आपको अपने फौरी कृषि सम्बन्धी लक्ष्य तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सम्मुख अगले साल उभरने वाले प्रश्नों के बारे में कुछ कहना चाहूंगा।

इस साल मौसम बहुत खराब था। हिमपात, फसल के रोग और कीड़ों के प्रकोप से फसल का नुकसान हुआ। पहले तो काफी भीषण सूखा पड़ा, उसके बाद लम्बे समय तक जलवृष्टि होती रही। और फिर बार-बार बाढ़ें आयीं। हाल के भयानक तूफान और बाढ़ से भी हमें काफी क्षति उठानी पड़ी।

यदि हमने दूरदर्शिता से काम लेकर सिंचाई साधनों, वनरोपण और जल-रक्षण सम्बन्धी योजनाओं पर अमल न किया होता, तो इस कठिन वर्ष में बहुत ही खराब फसल हुई होती। अपने देश में अच्छी सिंचाई-प्रणाली स्थापित करके तथा सभी किसानों और मेहनतकश लोगों के संयुक्त संघर्ष से सब प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं पर बिजय पाकर इस वर्ष हम फिर भरपूर फसल काट सकते हैं।

किन्तु हमें इसी से सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहिए। अभी हम ५० लाख टन के उत्पादन स्तर तक नहीं पहुंचे हैं। इस सम्मेलन के बाद अपनी-अपनी जगह वापस लौटने पर आपको तूफान और बाढ़ से होने वाली क्षति को रोकने के लिए पर्याप्त कदम उठाने होंगे। आपको तेज हवा से फसल को गिरने से रोकने के लिए पौधों के बीच रस्सियां तान देना चाहिए और पानी की निकासी के लिए गहरी खाइयां खोदनी चाहिए। जहां बाढ़ से फसल नष्ट हो गयी हो, वहां फसल के बाद की मक्का और साग-सब्जी और कूटू के पौधे लगाने चाहिए और सावधानी से इन्हें उगाने का प्रयास करना चाहिए।

ज्यों ही फसल तैयार हो जाये, त्यों ही आजकल की ही भांति कटाई की समुचित व्यवस्था करनी चाहिए। इस समय हमारे देश के लोग बुआई और फसल के परिरक्षण पर तो ध्यान देते हैं किन्तु उसके तैयार हो जाने के बाद उस पर ठीक से ध्यान नहीं देते। हमें यथासंभव शीघ्र इस त्रुटि को दूर करना चाहिए और पकी फसल को न-केवल समय से काटने पर बल्कि गहाई पर भी काफी ध्यान देना चाहिए और फिर उसे जमा करके सावधानी के साथ उसकी हिफाजत करनी चाहिए, ताकि अन्न का एक दाना भी नष्ट न होने पाये।

अगले साल के संघर्ष का लक्ष्य है—इस वर्ष गल्ला उत्पादन में हासिल सफलता को सुदृढ़ करना और इसी आधार पर भविष्य में और अधिक गल्ला पैदा करने की तैयारियां करना। हमें भविष्य में ३० लाख टन चावल पैदा करना चाहिए, ताकि देश के आधे उत्तरी भाग के सभी लोग प्रतिदिन चावल खा सकें। इस नये लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि अगले साल के लिए अभी से पूरी तैयारियां की जाएं।

सर्वप्रथम धान की खेती का क्षेत्रफल बढ़ाना चाहिए। हमें अगले साल प्रायः ३० हजार छोंगबो जमीन को धान की खेती के अन्तर्गत ले आना चाहिए। उसके बाद १९६४ के बसंत तक ३० हजार छोंगबो अतिरिक्त जमीन पर भी धान की खेती होनी चाहिए। इस प्रकार १९६४ तक धान के खेतों का क्षेत्र बढ़ कर ६ लाख छोंगबो हो जाना चाहिए।

हमें धान का सिंचित क्षेत्रफल बढ़ाना चाहिए। इसी प्रकार सूखे खेतों के लिए सिंचाई की सुविधाएं बढ़ानी चाहिए। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमें ग्रामीण क्षेत्रों में ६ हजार से ७ हजार तक पानी के पम्प भेजने चाहिए ताकि प्रत्येक ट्रैक्टर के साथ पानी ऊपर उठाने का एक पम्प भी हो। ट्रैक्टर-चालित पम्पों से दो अथवा तीन दौरों में पानी उठाना चाहिए और इस प्रकार हम ढलुआ खेतों की भी सिंचाई कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त यन्त्रीकरण के स्तर में वृद्धि के लिए अगले साल ३ हजार से अधिक ट्रैक्टर और एक हजार से अधिक ट्रक ग्रामीण क्षेत्रों में भेजने चाहिए। अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में रासायनिक उर्वरक, कृषीय रासायनिक पदार्थों और खर-पतवार नाशक रसायनों की सप्लाई करनी चाहिए।

कृषि सहकारों को बड़ी मात्रा में खाद पैदा करनी चाहिए। सिंछोन और छाएचोंग जैसे सपाट क्षेत्रों में, जहां घास के साधन सीमित हैं, ईंधन के रूप में कोयले को इस्तेमाल करना चाहिए और बड़ी मात्रा में कम्पोस्ट खाद तैयार करने के लिए पुआल को काट कर इस्तेमाल करना चाहिए। पिट की भी खुदाई करनी चाहिए।

इस प्रकार हमें एक अथवा दो साल तक ५० लाख टन गल्ला पैदा करने के लक्ष्य पर दृढ़ता के साथ जमे रहना चाहिए और इसके साथ ही अच्छे गल्ले की पैदावार का प्रतिशत बढ़ाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त सोयाबीन तथा दूसरी तिलहन फसलों को बड़े क्षेत्रों में उगाना चाहिए ताकि हम अपेक्षाकृत अधिक वनस्पति तेल पैदा कर सकें।

अधिक गोश्त पैदा करने के लिए हमें पशु-पालन को विकसित करना चाहिए।

हमें बाग-बगीचों की ठीक ढंग से देखरेख करनी चाहिए, ताकि हम अधिक

फल पैदा कर सकें। इन बातों के अलावा हमें हर साल ग्रामीण क्षेत्रों में इस साल से एक लाख नये मकानों का निर्माण करना है, ताकि गांवों को नया रूप दिया जा सके। यदि हम ३ से ८ लाख तक नये मकानों का निर्माण कर लें तो मेरा ख्याल है कि हमारे सभी किसान साथी पक्के मकानों में रहने लगेंगे।

तब सुख-सुविधा से पक्के मकानों में रहने, चावल और गोश्त का शोरबा खाने तथा रेशमी परिधान धारण करने की कोरियाइयों की चिरपोषित आकांक्षा वास्तविकता का रूप ग्रहण कर लेगी।

कोरियाई जनता की सदियों पुरानी इस आकांक्षा को पूरा करने का संघर्ष वस्तुतः सम्मानपूर्ण और आवश्यक संघर्ष है। पुरजोर संघर्ष चला कर हमें सम्मानपूर्ण कार्य को पूरा करने में अवश्य सफल होना चाहिए।

४ : शैक्षणिक और सांस्कृतिक कार्य के बारे में

जीर्णशीर्ण प्रथाओं के विरुद्ध संघर्ष को तेज करने तथा ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी और सांस्कृतिक क्रान्ति को तीव्र गति प्रदान करने के लिए स्कूली शिक्षा के कार्य को समुचित ढंग से संचालित करना नितान्त आवश्यक है।

इस समय हमारे देश में अनिवार्य माध्यमिक शिक्षा लागू है। हम अनिवार्य तकनीकी शिक्षा की योजना लागू करने की तैयारियां कर रहे हैं, जिसे कई काउंटियों में लागू कर भी दिया गया है।

किन्तु अभी भी काउंटियां स्कूलों के समुचित प्रबन्ध तथा अनिवार्य तकनीकी शिक्षा प्रणाली को लागू करने के लिए प्रारम्भिक कार्य पर पर्याप्त ध्यान नहीं दे पा रही हैं। भविष्य में स्कूलों के स्नातक फैक्टरियों और सहकारी कृषि के क्षेत्र में कार्य करेंगे। इसलिए ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी और सांस्कृतिक क्रांति की सफलता मुख्यतः इस बात पर अवलम्बित है कि स्कूल में छात्रों को समुचित शिक्षा मिली है अथवा नहीं।

छात्रों को बड़े परिश्रम से अध्ययन करने और अपने स्कूलों को साफ-सुथरा रखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। उन्हें शिष्ट आचरण अपनाने और साफ कपड़े पहनने तथा सफाई से रहने की भी शिक्षा देनी चाहिए।

केवल इसी तरह स्कूल से शिक्षा समाप्त करके जब वे समाज में प्रविष्ट होंगे तो एक नये प्रकार के शिक्षित और सुसंस्कृत व्यक्ति के रूप में सम्यक ढंग से अपनी भूमिका अदा कर सकेंगे। जिन्हें स्कूल में अच्छी शिक्षा मिली है वे सार्वजनिक प्रतिष्ठानों, घरों, कस्बों आदि को साफ-सुथरा रख सकेंगे और आधुनिक

ढंग से अपना दैनिक जीवन व्यतीत करने का प्रयास करेंगे।

कुछ स्कूलों के विद्यार्थी इस समय अपने कपड़े, टोपियां और किशोर पायनियरों के स्कार्फ बड़ी लापरवाही से पहनते हैं।

हम कह सकते हैं कि इन सब बातों का कारण यह है कि काउंटी पार्टी समितियां और काउंटी जन समितियां, स्कूली कार्य के प्रति समुचित ध्यान नहीं देतीं।

स्कूलों में शिक्षा को समुचित रूप से उत्पादक श्रम के साथ सम्बद्ध होना चाहिए। विद्यार्थियों पर कार्य का अधिक भार नहीं होना चाहिए। इससे उनके अध्ययन और शारीरिक विकास पर बुरा असर पड़ेगा। किन्तु साधारण शारीरिक श्रम अपरिहार्य है। आपको चाहिए कि उन्हें समुचित उत्पादक श्रम में लगायें, जोकि उनकी शिक्षा के लिए उपयोगी होगा।

पौधे रोपते और उनकी देखभाल करते समय विद्यार्थियों को भी यह जानना चाहिए कि किस-किस प्रकार के पेड़ तेजी से बढ़ते हैं और कितने प्रकार के वृक्ष कहां लगाये जाते हैं। खरगोशों अथवा भेड़ों के पालन की शिक्षा प्राप्त करते समय उन्हें घरेलू जानवरों की आदतों तथा वे किन चीजों को सबसे अधिक खाना पसन्द करते हैं, इसकी जानकारी हासिल करनी चाहिए।

स्कूलों के लिए धान के छोटे-छोटे खेत तथा सूखे खेत निर्धारित कर देने चाहिए ताकि छात्र उन्हें जोतें और बोयें और इस प्रकार वे धान के पौध की रोपाई कैसे होती है तथा मक्का के पौधों को कैसे बोया जाता है, किस प्रकार की जमीन में किस प्रकार की खाद डाली जाती है, इस प्रकार कृषि सम्बन्धी प्रारम्भिक ज्ञान हासिल करें।

विद्यार्थियों की शारीरिक शक्ति के विकास और उनकी भावात्मक शिक्षा के विकास पर गहरा ध्यान दिया जाना चाहिए। हमें उन्हें तकनीकी शिक्षा भी प्रदान करनी चाहिए ताकि वे सब सामान्य मशीनों को काम में लाना सीख सकें।

इस प्रकार सभी छात्रों को एक नये प्रकार के विविध विषयों के ज्ञाता तथा समाज के सुयोग्य निर्माता के रूप में विकसित करना चाहिए।

काउंटियों को अधिकाधिक स्कूलों का निर्माण करना चाहिए और छात्र जीवन पर अधिक ध्यान देना चाहिए। जब आप ग्रामीण क्षेत्रों में प्रति वर्ष एक लाख आधुनिक रिहायशी मकानों का निर्माण कर सकते हैं, तो अधिक स्कूलों का निर्माण आप क्यों नहीं कर सकते? कुछ आधुनिक ग्रामीण मकानों का निर्माण भले ही न हो, किंतु स्कूलों का निर्माण अवश्य होना चाहिए। सभी २५ लाख छात्र हमारी बहुमुल्य उदीयमान पीढ़ी के सदस्य हैं। हम जितना ही अधिक उनकी भलाई के लिए काम करेंगे, उतना ही देश का भला होगा।

अगले साल हमें अधिक बिनाइल क्लोराइड का उत्पादन करना है ताकि विनाइल से तैयार किये गये जूते, स्कूली बैग और बरसातियां हमारे सभी विद्यार्थियों को सुलभ हो सकें।

इस वर्ष सभी काउंटियों के विद्यार्थियों को ओवरकोट उपलब्ध कराने चाहिए। और अगले साल बसन्त और पतझड़ के मौसम की वर्दियां भी उन्हें सप्लाई की जानी चाहिए।

इसके अतिरिक्त काउंटियों को आधुनिक रूप में स्वास्थ्यपूर्ण ढंग से अस्पतालों एवं क्लबों का भी निर्माण करना चाहिए। उन्हें काउंटी अस्पतालों में बाल रोग वार्ड तथा प्रसूतिगृह कायम करने चाहिए। और विशेष रूप से काउंटी के सदर मुकामों को खूबसूरत बनाना चाहिए। इस प्रकार हर काउंटी का आधुनिक और स्वास्थ्यप्रद रूप से निर्माण होना चाहिए, ताकि अगले साल १५ अगस्त तक वह एक आदर्श एवं स्वच्छ काउंटी बन जाये।

५ : पार्टी काम को सुदृढ़ बनाने के बारे में

सर्वप्रथम मैं आपको प्रान्तीय पार्टी समिति द्वारा उद्योग को दिये जाने वाले निर्देशन को सुदृढ़ करने के सम्बन्ध में तथा कारखाना पार्टी समितियों की भूमिका के बारे में बताना चाहूंगा।

इस वर्ष छः लक्ष्यों को प्राप्त करने के संघर्ष के दौरान जो त्रुटियां प्रकट हुईं, उनका मुख्य कारण पार्टी के कार्यकलाप में निहित है।

जैसा कि मैंने बार-बार जोर देकर कहा है, भूतकाल की तुलना में आकार और तकनीकी विकास के स्तर, दोनों दृष्टियों से हमारे उद्योगों में अवगुणात्मक परिवर्तन आ गया है। आज एक मंत्री अथवा प्रबन्धकमंडल के निदेशक के लिए हमारे उद्योग की व्यवस्था के सम्बन्ध में केवल अपने निजी ज्ञान पर आश्रित रहना पूर्णतया असम्भव है, क्योंकि अब हमारा उद्योग बहुमुखी रूप में विकसित हो गया है और इसके आकार में भी वृद्धि हो गयी है। हमारे उद्योग के कुशल प्रबन्ध के लिए सामूहिक पार्टी नेतृत्व अपेक्षित है। प्रान्तीय पार्टी समिति को उद्योग का प्रत्यक्ष दायित्व ग्रहण करना चाहिए और इसे नेतृत्व प्रदान करना चाहिए और इसे फैक्टरी पार्टी समितियों को सक्रिय होने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और पार्टी के सभी सदस्यों को सक्रिय बनाना चाहिए।

एक मंत्रालय का पुनर्गठन करके या मंत्री अथवा प्रबन्धकमंडल के पद पर जानकार व्यक्तियों की नियुक्ति करके ही इस प्रश्न को हल नहीं किया जा सकता।

क्रांतिकारी ढंग से काम करने के लिए सर्वोपरि रूप में यह आवश्यक है कि पार्टी के संगठनों को सक्रिय बनाया जाये और पार्टी के सदस्यों तथा क्रान्तिकारी मजदूर वर्ग पर भरोसा किया जाए।

ह्वांगहाए लोहा कारखाना प्योंगयांग के निकट स्थित है और केन्द्रीय निकायों के अनेक अधिकारी और कर्मचारी इसे देखने आते हैं। कहा जाता है कि हाल ही में धातु प्रबन्धमंडल के निदेशक ने काफी समय तक ह्वांगहाए लोहा कारखानों का निरीक्षण किया। किन्तु इसके बावजूद ह्वांगहाए लोहा कारखाने में १९५९ में जो गलतियां की गई थीं, वे फिर दोहरायी जा रही हैं, और कोई भी इन्हें सुधार नहीं सका।

कोई भी व्यक्तिगत रूप से चाहे जितनी बार भी फैक्टरी को निर्देश देने जाए, जब तक इसकी पार्टी समिति को सक्रिय नहीं बनाया जाएगा, कोई भी व्यक्ति कभी इसकी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकता। ह्वागहाए लोहा कारखाने में खराब काम का मुख्य कारण फैक्टरी पार्टी समिति का त्रुटिपूर्ण कार्यकलाप है। यदि फैक्टरी की पार्टी समिति को पार्टी की नीतियों की पूर्ण जानकारी होती तो मंत्रालय से भेजे जाने वाले गलत निर्देशों का वह आंख मूंद कर पालन न करती और उस दशा में समय रहते स्थिति को खराब होने से बचा लेती।

लेनिन ने मजदूर वर्ग की पार्टी को एक प्रकार के क्लब में परिवर्तित करने के लिए मेंशेविकों के कुचक्र के परखचे उड़ा दिये थे। उन्होंने सख्त अनुशासन के साथ पार्टी को एक जुझारू और संगठित दस्ता बना दिया था। पार्टी के नेतृत्व को क्रांति में जनरल स्टाफ की भूमिका अदा करने के लिए विकसित किया था। यदि नेतृत्व पर्याप्त रूप से सशक्त न हो तो भीषण युद्ध में शत्रु के विरुद्ध विजय प्राप्त करना असम्भव हो जाता है।

उत्पादन भी एक प्रकार की लड़ाई है। सर्वप्रथम सफल उत्पादन के लिए फैक्टरी के जनरल स्टाफ यानी फैक्टरी की पार्टी समिति को प्रभावकारी रूप से गठित करना और इसकी भूमिका को सुदृढ़ करना नितान्त आवश्यक है।

पार्टी समिति के सामूहिक नेतृत्व की सर्वोत्तम उपयोगिता इस तथ्य में निहित है कि यह फैक्टरी की सम्यक स्थितियों को व्यापक जानकारी के आधार पर पार्टी की नीतियों के अनुरूप संघर्ष की सही नीति निर्धारित करके नेता की भूमिका ठीक-ठीक अदा कर सकती है और यह कि पार्टी की नीतियों के कार्यान्वयन के लिए समुचित रूप से पार्टी के सदस्यों, मेहनतकश लोगों के संगठनों और फैक्टरी के सभी मजदूरों को गतिशील बना सकती है।

पार्टी समिति के सामूहिक नेतृत्व को संतोषप्रद रूप में सुनिश्चित बनाने के लिए यह परमावश्यक है कि खुद पार्टी समिति का गठन समुचित रूप से किया

गया हो। पार्टी समिति के आधारभूत तत्व ऐसे सुयोग्य और निष्ठावान सदस्यों को ही लेना चाहिए जो दृढ़ता के साथ पार्टी की नीतियों का समर्थन करते हों, जिन्हें फैक्टरी के बड़े विभागों की वास्तविक स्थिति की पूर्ण जानकारी रहती हो, और जो पार्टी के सदस्यों तथा काम करने वाले लोगों के व्यापक तबकों के विचारों को सम्यक रूप में अभिव्यक्त करने की क्षमता रखते हों। इसलिए पार्टी समिति में पार्टी के कार्यकर्ताओं, प्रशासकीय तथा प्रबन्धकर्मियों, तकनीशियनों और सुदक्ष मजदूरों को शामिल करना चाहिए। ह्वांगहाए लोहा कारखाने की पार्टी समिति का गठन ठीक ढंग से नहीं हुआ। इसमें पार्टी के सर्वश्रेष्ठ सक्रिय कार्यकर्ताओं को नहीं, बल्कि विभिन्न कर्मशालाओं से समान आधार पर चुने गये कर्मशालाओं के प्रतिनिधियों को ही शामिल किया गया है। इस प्रकार फैक्टरी की पार्टी समिति में एक टेलीफोन आपरेटर और चिकित्सालय के प्रधान शामिल हैं। निःसन्देह ये सभी साथी अच्छे और परिश्रमी व्यक्ति हैं, किन्तु वे उत्पादन में मुख्य भूमिका अदा नहीं करते। जिस प्रान्तीय पार्टी समिति ने इस फैक्टरी पार्टी समिति के गठन को अपनी स्वीकृति प्रदान की, वह भी दोषी है।

मशीनों को चलाने वाले मजदूर औरों की अपेक्षा उत्पादन सम्बन्धी कार्यों को बेहतर समझते हैं। जब ह्वांगहाए लोहा कारखाने में काम ठीक ढंग से नहीं चल रहा था तो मजदूरों ने अपनी राय प्रकट की। किन्तु उनके नेताओं ने तत्काल उनके उचित विचारों को स्वीकार नहीं किया।

यदि फैक्टरी पार्टी समिति सुसंगठित होती और इसने अपना काम समुचित ढंग से किया होता, तो वह तत्काल मजदूरों के तर्कसंगत विचारों को स्वीकार कर लेती, आवश्यक कदम उठाती तथा तकनीशियनों के वैज्ञानिक ज्ञान के साथ मजदूरों की क्रान्तिकारी भावना को घनिष्ट रूप में जोड़ लेती। इसके अतिरिक्त मंत्रालय के निर्देशों का आंख मूंद कर पालन करने की जगह इसने केन्द्रीय समिति को समय रहते अपने सही विचारों की सूचना दी होती।

परन्तु ह्वांगहाए लोहा कारखाने की पार्टी समिति न तो सेना के रूप में काम करने में सफल हो सकी और न ही पार्टी के सदस्यों और श्रमजीवी समुदाय की सृजनशीलता को सफलता के साथ काम में ला सकी।

जब १९५९ में मैं ह्वांगहाए के लोहा कारखाने को देखने गया तो सर्वप्रथम मैंने यही पाया कि काम काफी फैला हुआ है। लेकिन खास-खास खराबियों को नहीं देख पाया। तथापि पार्टी के संगठनों को सक्रिय बनाने और पार्टी के सदस्यों तथा मजदूरों से बातचीत के दौरान अनेक त्रुटियां प्रकाश में आयीं। मजदूरों ने इस बात पर जोर दिया कि कारखानों के असंतोषप्रद काम के कारणों को फैक्टरी के बाहर नहीं, बल्कि अन्दर देखने की कोशिश करनी चाहिए, और उन्होंने

अनेक गम्भीर त्रुटियों की ओर संकेत किया—खुली भट्टियों की मरम्मत करने वाला कोई नहीं था, क्योंकि मरम्मत और रखरखाव कर्मशाला के सब मजदूरों को निर्माण कार्य में लगा दिया गया था। इस्पात का उत्पादन ठीक ढंग से नहीं बढ़ा क्योंकि अनेक भट्टियों को गलत तरीके से काम में लाया गया, जबकि उनमें पर्याप्त गैस नहीं थी। और भी ऐसी बातें सानने आई। हमने इन साथियों के विचारों पर ध्यान दिया और ह्वांगहाए लोहा कारखाने की त्रुटियों को साफ-साफ समझ लेने के वाद गलतियों को सुधारने के लिए कदम उठाये।

पार्टी समिति में ऐसे मजदूर होने चाहिए जो उत्पादन की समस्याओं के बारे में साहस के साथ स्पष्ट बातें कर सकें और ऐसा वातावरण पैदा करना चाहिए जिसमें वे सदैव स्वतंत्रतापूर्वक अपने विचार प्रकट कर सकें।

ह्वांगहाए लोहा कारखाने में खुली भट्टी कर्मशाला के कुशल मजदूरों के केवल दो प्रतिनिधि हैं। यह संख्या वहुत छोटी है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यदि पार्टी समिति में खुली भट्टी कर्मशाला के पांच-छः साथी होते तो उन्होंने अनेक प्रकार के विचार प्रस्तुत किये होते, जिससे समिति को नेता की अपनी भूमिका अदा करने में बड़ी सहायता प्राप्त होती।

आपको बुद्धिजीवियों के साथ अपने कार्य की यह सोचकर उपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि हमें मजदूर वर्ग की क्रान्तिकारी भावना पर ही आश्रित रहना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि फैक्टरी की पार्टी समिति को चाहिए कि वह बुद्धिजीवियों और मजदूरों का समुचित रूप से नेतृत्व करे, ताकि वे एकदूसरे की सहायता कर सकें। बुद्धिजीवियों के पास योग्यता और तकनीकी ज्ञान है किन्तु वे न्यूनाधिक रूढ़िवादिता की ओर प्रवृत्त रहते हैं। मजदूरों में प्रबल क्रांतिकारी भावना होती है, किंतु उनमें जानकारी का अभाव होता है। फैक्टरी की पार्टी की समिति को बुद्धिजीवियों और मजदूरों के बीच गहराई से पैठना चाहिए और इस प्रकार उनका पथप्रदर्शन करना चाहिए, ताकि बुद्धिजीवियों की वैज्ञानिक जानकारी और मजदूर वर्ग की क्रान्तिकारी भावना के बीच समन्वय कायम हो सके। पार्टी समिति का यह भी कर्तव्य है कि वह इस प्रकार तालमेल कायम करे। ह्वांगहाए लोहा कारखाने की पार्टी समिति सन्तोषप्रद ढंग से यह कार्य सम्पन्न करने में विफल रही है।

औद्योगिक उत्पादन में प्रांतीय पार्टी समिति के नेतृत्व को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से हमने इसके आर्थिक विभागों को ठीक से गठित किया। और हाल में ताएआन विद्युत मशीन संयंत्र का निर्देशन करते समय हमने फैक्टरी पार्टी समिति की मशीनरी को काफी व्यापक बनाने और उसके नेतृत्व को सुदृढ़ बनाने के लिए बुनियादी कदम उठाये। इसलिए यदि प्रान्तीय पार्टी समिति ने फैक्टरी

पार्टी समिति को सक्रिय बनाने के लिए उसे प्रोत्साहित किया होता और यदि फैक्टरी पार्टी समिति ने मजदूर वर्ग और पार्टी तत्वों पर निर्भर रहते हुए इन नीतियों के कार्यान्वयन का ठीक ढंग से प्रबन्ध किया होता तो निर्विघ्न रूप से सभी प्रश्न हल हो गये होते। किन्तु इसने पार्टी संगठनों और पार्टी सदस्यों के साथ सहयोग करने की अपेक्षा कुछ प्रशासकीय अधिकारियों के साथ काम किया, फलतः स्थिति खराब हो गयी। जन-समुदाय की सृजनशीलता को जमाने का एकमात्र तरीका यह है कि पार्टी संघर्ष की सही नीति निर्धारित करे और क्रान्तिकारी कार्यों को पूरा करने के लिए पार्टी के सदस्यों की नेतृत्वकारी भूमिका को सुदृढ़ बनाते हुए सभी पार्टी संगठनों को गतिशील बनाए।

फैक्टरी के मालिक, फैक्टरी की पार्टी समिति, पार्टी के सभी सदस्य और मजदूर हैं। कार्य के सम्बन्ध में फैक्टरी के मालिकों पर आश्रित न रहना बुनियादी रूप से गलत है।

केवल प्रबन्धक और चीफ इंजीनियर के साथ काम करते रहने से कुछ नहीं होगा। यह बहुत बड़ी गलती थी कि भारी उद्योग आयोग ने संयुक्त सम्मेलन के लिए केवल प्रबन्धकों और चीफ इंजीनियरों को निमन्त्रित किया और उसने फैक्टरी की पार्टी समितियों के अध्यक्षों और सक्रिय कार्यकर्ताओं को नहीं बुलाया। फैक्टरी को निर्देशित करते समय आपको फैक्टरी पार्टी समिति और फैक्टरी के पार्टी सदस्यों को अवश्य क्रियाशील बनाना चाहिए।

मैंने कहा है कि पार्टी समिति को प्रशासकीय कार्य संभालने की जगह पीछे से कार्य संचालन की भूमिका अदा करनी चाहिए। तब यह जाने बिना कि उत्पादन का काम किस प्रकार चल रहा है, पीछे से केवल निरर्थक वक्तव्य देने की अनिष्ट-कारी प्रथा अस्तित्व में आयी है। इस प्रवृत्ति के विरुद्ध दृढ़ संघर्ष चलाना चाहिए। उत्पादन के अलावा फैक्टरी पार्टी समिति पार्टी का और क्या काम कर सकती है? फैक्टरी समिति फैक्टरी में उत्पादन सम्बन्धी नेतृत्व के सर्वोच्च स्तर का प्रतिनिधित्व करती है। पार्टी समिति को उत्पादन से सम्बन्धित संगठनात्मक और गत्यात्मक कार्यकलाप को प्रत्यक्ष रूप से, स्वयं अपनी देख-रेख में संचालित करना चाहिए।

फैक्टरी पार्टी समिति को उत्पादन से सम्बन्धित सभी महत्वपूर्ण समस्याओं पर सामूहिक विचार-विनिमय करना चाहिए, सही नीतियां और कदम निर्धारित करने चाहिए, उत्पादन सम्बन्धी मामलों की विस्तृत जानकारी प्राप्त करनी चाहिए सदैव उत्पादन सम्बन्धी पथप्रदर्शन और निरीक्षण करना चाहिए ताकि उत्पादन के क्षेत्र में पार्टी की नीति पूर्ण रूप से अमल में लायी जा सके। पार्टी की नीति को अमल में लाने के लिए इसे पार्टी के सदस्यों और श्रमजीवी समुदाय को गतिशील बनाने के लिए संगठनात्मक कार्य करना चाहिए। यदि आप

ऐसा नहीं करते और केवल पीछे से डांट-डपट लगाते रहते हैं, तो इसे पथप्रदर्शन नहीं कह सकते।

पार्टी समिति को केवल प्रबन्धक और चीफ इंजीनियर के साथ ही नहीं, बल्कि पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ताओं और श्रमजीवी समुदाय के साथ भी मिलकर काम करना चाहिए, ताकि वे पार्टी की नीति को पूर्ण रूप से अमल में लाएं।

प्रबन्धक और चीफ इंजीनियर को पार्टी समिति के निर्णयों को अमल में लाने का दायित्व ग्रहण करना चाहिए।

पार्टी समिति ही उत्पादन कार्य का निर्देशन करती है और उत्पादन का दायित्व ग्रहण करती है। पार्टी समिति को फैक्टरी के सभी मामलों के लिए जिम्मेदार होना चाहिए। पार्टी समिति द्वारा प्रशासकीय कार्य का दायित्व न लिये जाने का केवल यही अर्थ है कि वह उत्पादन के तकनीकी पथप्रदर्शन में प्रबन्धक और चीफ इंजीनियर का स्थान नहीं ले सकती। किन्तु उसका अभिप्राय यह नहीं है कि वह उत्पादन का निर्देशन करना बन्द कर दे। फैक्टरी पार्टी समिति का मुख्य कार्य उत्पादन के लिए निर्देशन देना है।

प्रान्तीय पार्टी समिति के भारी उद्योग विभाग को भी अपनी कार्य-प्रणाली में सुधार करना चाहिए। इस विभाग के प्रशिक्षक के लिए किसी विशेष फैक्टरी के सभी कार्यों का पथप्रदर्शन करना कठिन कार्य है। एक कारखाने की पार्टी समिति द्वारा ही सम्बन्धित फैक्टरी का पथप्रदर्शन किया जा सकता है। अपने प्रशिक्षक द्वारा प्रान्तीय पार्टी समिति को फैक्टरी की उत्पादन सम्बन्धी स्थिति से अपने को सतत अवगत रखना चाहिए। यह सुनिश्चित करना चाहिए कि फैक्टरी की पार्टी समिति को पार्टी की नीति की ठीक जानकारी हो और वह सक्रिय बने। सर्वोपरि रूप में प्रान्तीय पार्टी समिति को चाहिए कि वह फैक्टरी की पार्टी समिति पर अपना प्रभाव कायम रखे। इसे फैक्टरी में पार्टी संगठनों तथा मजदूरों के सगठनों जैसे ट्रेड यूनियनों, जनवादी युवा लीग को सक्रिय बनाने के कार्य का समुचित निर्देशन करना चाहिए, तथा पार्टी के सदस्यों और मेहनतकश लोगों को संगठित और गतिशील बनाना चाहिए। प्रान्तीय पार्टी समिति को उद्योगों पर नियंत्रण रखना चाहिए। इसका अर्थ यही है कि अन्तिम विश्लेषण में उत्पादन को सुनिश्चित बनाये रखने के लिए इसे फैक्टरी की पार्टी समिति को सदैव समुचित रूप से गतिशील बनाये रखना चाहिए।

यदि प्रान्तीय पार्टी समिति ऐसे कार्य करने की जगह निम्न इकाइयों के दोषों को ढूंढ़ती है, उनकी सूचना मंत्रालय को देती है और इस बात की प्रतीक्षा करती रहती है कि मंत्रालय सभी समस्याओं का समाधान कर देगा तो कोई भी प्रश्न हल नहीं होगा।

मंत्रालय का मुख्य दायित्व केवल तकनीकी पथप्रदर्शन करना और सामग्री की आपूर्ति करना होना चाहिए। निर्देशन देना और मजदूरों को सक्रिय बनाने का काम प्रांतीय पार्टी समिति को फैक्टरी पार्टी समिति के माध्यम से करना चाहिए।

परन्तु उद्योग के पथप्रदर्शन के संदर्भ में पार्टी की कार्य-प्रणाली अभी तक पूर्ण रूप से स्थापित नहीं हुई है। प्रान्तीय पार्टी समिति फैक्टरी की पार्टी समिति को समुचित रूप से सक्रिय बनाने में असफल रहती है और फैक्टरी पार्टी समिति उत्पादन के दिशा-निर्देशन के काम में जनरल स्टाफ के रूप में अपनी भूमिका ठीक ढंग से नहीं निभाती। इसलिए छः लक्ष्यों को प्राप्त करने के संघर्ष में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात उद्योग में पार्टी पथप्रदर्शन को और अधिक तेज बनाना है।

एक बार यदि पार्टी के संगठनों को पूर्ण रूप से सक्रिय बना दिया जाये तो कोई बात भी असम्भव नहीं होगी। छांगसोंग में अच्छी तरह काम होने का कारण यही है कि यहां पार्टी संगठनों का कार्यकलाप पूरे जोरों पर है।

जब पिछले साल हम लोग यहां थे, तो हमने याक्सू के मिडिल स्कूल को देखा था और हमने उस स्कूल के जिम्मे यह कार्यभार सौंपा था कि सभी छात्रों को एक वाद्य-यंत्र बजाने की शिक्षा दी जाये। यह एक बहुत कठिन कार्य था और मुझे बताया गया कि इसे पूरा करने के लिए स्कूल के पार्टी केंद्र की कई बैठकें हुईं। इन बैठकों में उन्होंने इस प्रश्न पर गम्भीरता से विचार किया और वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि विद्यार्थियों को वाद्य-यंत्रों को बजाने का प्रशिक्षण देने के लिए यह आवश्यक है कि सर्वप्रथम खुद अध्यापक वाद्य-यंत्रों को बजाना सीखें। फलतः पार्टी द्वारा निर्धारित कार्य के रूप में सभी शिक्षकों ने वाद्य-यंत्रों को बजाने का काम सीखना शुरू किया। स्कूली मामलों के प्रधान ने रात में मेहनत से पियानो बजाना सीखा। सभी शिक्षकों ने वाद्य-यंत्रों को बजाने की जानकारी प्राप्त करने की दिशा में बड़े प्रयास किये। उसके बाद शिक्षकों ने विद्यार्थियों को वाद्य-यंत्रों को बजाने की शिक्षा दी। जब एक पार्टी का संगठन इस प्रकार सक्रिय होकर कार्य करता है तो हमारी प्रगति के मार्ग में कोई बाधा नहीं आ सकती।

इस सम्मेलन के बाद, जब आप अपने कार्यस्थल पर वापस लौटें, तो सर्वप्रथम प्रान्तीय पार्टी समितियों के अध्यक्षों को फैक्टरी की पार्टी समितियों के गठन पर फिर से विचार करना चाहिए और उनकी संघर्ष करने की क्षमता बढ़ाने पर मुख्य रूप से ध्यान देना चाहिए।

ताएआन विद्युत मशीन संयंत्र के निर्देशन दौरे के समय हमने फैक्टरी पार्टी समिति को सुदृढ़ बनाने पर विशेष बल दिया था। अनेक फैक्टरियों ने अभी तक नूतन ताएआन प्रणाली को लागू नहीं किया है। यदि आप इस प्रणाली के अनुरूप कार्य

करें तो सब कुछ ठीक ढंग से चलता रहेगा। प्रान्तीय पार्टी समितियों के अध्यक्षों को उत्पादन के छः निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सफलतापूर्वक संघर्ष चलाने के निमित्त सभी क्षेत्रों से ताएआन कार्य प्रणाली को लागू करने के लिए पूरी शक्ति से प्रयास करना चाहिए।

अन्त में, मैं काउंटी पार्टी समिति के कार्य के बारे में कुछ कहना चाहूंगा। छांगसोंग काउंटी के अनुभव से यह प्रकट होता है कि काउंटी की पार्टी समिति के समुचित कार्य से काउंटी के सभी कार्यों में सफलता प्राप्त हो सकती है। जब प्रमुख कार्यकर्ता हृदय से पार्टी की नीतियां अंगीकार करते हैं और फिर यथासंभव दृढ़ इच्छाशक्ति से उन्हें अमली जामा पहनाने के लिए सतत प्रयास करते हैं तो कोई भी ऐसी चीज नहीं है जो उनकी क्षमता के बाहर हो। पार्टी के संगठन को चाहिए कि वह जन समुदाय को पार्टी की नीतियां अच्छी तरह समझाए और उनके कार्यान्वियन के लिए लोगों को संगठित तथा गतिशील बनाए।

इसके अतिरिक्त प्रमुख कार्यकर्ताओं को जन समुदाय के साथ चलना चाहिए और उसका नेतृत्व करते हुए उसे आगे ले जाना चाहिए तथा सभी कार्यों में उनके सम्मुख व्यावहारिक आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए।

छांगसोंग काउंटी पार्टी समिति ने लोगों को ठीक ढंग से पार्टी की नीतियों को समझाया और उनके बीच इनका प्रचार किया तथा सक्रिय रूप से उन्हें गतिशील बनाया। जैसाकि छांगसोंग और साक्जू काउंटी पार्टी समिति के अनुभवों से प्रमाणित होता है, पार्टी के संगठनात्मक और राजनीतिक कार्य का ढंग से संचालन करने पर और जनता के अगुवा के रूप में प्रमुख कार्यकर्ताओं के खड़े होने से सम्पूर्ण जन समुदाय को सक्रिय बनाया जा सकता है।

काउंटी का काम ठीक ढंग से चल रहा है अथवा नहीं, यह पूर्णतया उसकी पार्टी समिति पर निर्भर है।

यदि काउंटी पार्टी समिति, सामूहिक नेतृत्व के साधन के रूप में, काउंटी के जनरल स्टाफ के रूप में, पार्टी की नीतियों का समुचित रूप से प्रचार करती है, और काउंटी कार्य के सभी क्षेत्रों और सभी मोर्चों पर अपना नियंत्रण कायम करके अपने कार्यकर्ताओं की अगुवाई में प्रभावकारी ढंग से संगठनात्मक कार्य करती है तो सभी समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

काउंटी पार्टी समिति वह सबसे निचला निकाय है, जो काउंटी के ग्राम्य अर्थ-व्यवस्था सहित सारे कार्यों की जिम्मेदारी लेती है, इसे संगठित, संचालित और क्रियान्वित करती है। काउंटी पार्टी समिति पर ही मजदूरों, किसानों तथा गांव के अन्य सभी निवासियों के जीवनस्तर का प्रत्यक्ष दायित्व है।

इसलिए काउंटी पार्टी समिति को काउंटी जन समिति तथा काउंटी कृषि

सहकारी प्रबन्ध समिति का ठीक ढंग से नेतृत्व करना चाहिए, सभी शाखाओं के कार्य का संचालन सुचारु रूप से करना चाहिए, पार्टी के इर्दगिर्द जन समुदाय को एकजुट करना चाहिए और सभी को सक्रिय बनाना चाहिए।

इसके अलावा क्रांतिकारी ढंग से काम को संगठित तथा संपन्न करना चाहिए। एक बार काम शुरू कर देने के बाद, चाहे जितनी भी कठिनाइयों का सामना करना पड़े, प्रबल संघर्ष के जरिये उसे अवश्य पूर्ण करना चाहिए। अधूरे मन से काम नहीं करना चाहिए।

अंतिम विश्लेषण में, अपने कार्य में सफलता इस बात पर अवलम्बित होती है कि जन समुदाय पूर्णतया जाग्रत है अथवा नहीं। काउंटी पार्टी समिति को छांगसोंग कार्य-प्रणाली को सतत अपनाते हुए लोगों से सदैव सम्पर्क कायम रखना चाहिए, उनकी मांगें जान कर उनकी पूर्ति करनी चाहिए, उनके साथ विचार-विनिमय करना चाहिए और उनका सहयोग तथा समर्थन प्राप्त करना चाहिए और उन्हें अपने साथ ले कर चलना चाहिए।

अतीत में हमने विजय प्राप्त की है और आगे भी हम अधिकाधिक विजय प्राप्त करते जाएंगे। किन्तु अब तक प्राप्त विजय और सफलताओं से हम में अहंकार की भावना नहीं आनी चाहिए, बल्कि हमें प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते जाना चाहिए। हमें अकर्मण्यता और शिथिलता को दूर करना चाहिए। हमें मितव्ययी जीवन व्यतीत करना चाहिए और क्रान्ति के लिए प्रबल संघर्ष के निमित्त अपना सब कुछ न्योछावर कर देना चाहिए।

मुझे दृढ़ विश्वास है कि आप सभी साथी इस सम्मेलन द्वारा निश्चित कार्यों को पूर्णतया पूरा करेंगे और इस प्रकार हमारी काउंटियों की राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रगति में और भी बुनियादी परिवर्तन लाएंगे।

जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया की सरकार के तात्कालिक कर्तव्य

तीसरी सर्वोच्च जन संसद के प्रथम अधिवेशन में दिया गया भाषण

२३ अक्तूबर १९६२

साथी विधायको,

जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया की तीसरी सर्वोच्च जन संसद के सदस्यों के चुनाव एक महान राजनीतिक उभार के मध्य इस वर्ष के छः मुख्य लक्ष्यों की प्राप्ति के श्रम अभियान के प्रेरणाप्रद वातावरण में बड़ी सफलता से आयोजित हुए।

सर्वोच्च जन संसद के चुनावों में हमारे तमाम मेहनतकश अवाम ने महान राजनीतिक उत्साह के साथ एकजुट होकर भाग लिया और प्रकट कर दिया कि वे हमारी जन-सत्ता और समाजवादी उपलब्धियों की मजबूती से रक्षा करने, उसे और अधिक सुदृढ़ तथा विकसित करने और हमारे देश में समाजवाद तथा कम्युनिज्म के क्रान्तिकारी ध्येय को विजयी बनाने को अदम्य रूप से दृढ़संकल्प हैं। चुनाव परिणामों ने मजदूर पार्टी और जन-सत्ता में हमारी जनता के सम्पूर्ण समर्थन और विश्वास को प्रकट किया है। जनता ने मजदूर-किसान गठबन्धन पर आधारित तमाम लोगों की अटूट राजनीतिक और नैतिक एकता को प्रदर्शित किया है।

हमारी जनता ने पार्टी और अपनी राजसत्ता को जो समर्थन और विश्वास दिया है वे और हमारे समाज की राजनीतिक तथा नैतिक एकजुटता, हमारे देश की स्वतन्त्रता और संप्रभुता के लिए और नए जीवन के लिए लम्बे और कठिन संघर्ष के फल हैं। वे भौतिक बुनियादों—गणतन्त्र के उत्तरी आधे भाग में स्थापित

समाजवादी प्रणाली और उस प्रणाली के अन्तर्गत हमारे लोगों के विमुक्त खुशहाल जीवन—पर भी आधारित हैं।

कोरियाई जनता ने राष्ट्रीय स्वतन्त्रता और मुक्ति के लिए और अपनी संप्रभुता के लिए लंबी और वीरतापूर्वक लड़ाई लड़ी। जापानी साम्राज्यवादी शासन के विकरालतम काल में कम्युनिस्टों और कोरिया की देशभक्त जनता ने हर प्रकार की अनिवार्य कठिनाइयों और कष्टों का सामना करते हुए मातृभूमि के पुनरुद्धार और जनता की स्वतन्त्रता के लिए १५ साल तक वीरतापूर्वक जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष चलाया। मुक्ति के बाद कोरिया की मजदूर पार्टी के नेतृत्व में हमारी जनता ने विदेशी आक्रामक शक्तियों और स्थानीय प्रतिक्रियावादियों की तमाम चालबाजियों को ध्वस्त करते हुए दृढ़तापूर्वक सत्ता अपने हाथों में ली।

हमारी जन-सत्ता एक संप्रभु सत्ता है जिसे कोरिया के कम्युनिस्टों और देशभक्त लोगों की गौरवपूर्ण क्रान्तिकारी परम्पराएं विरासत में मिली हैं। यह एक महान उपलब्धि है, जिसे हमारी जनता ने हमारी पार्टी के नेतृत्व में कड़े संघर्ष द्वारा हासिल किया है। हमारी जन-सत्ता वास्तविक है जो जनता की निष्ठापूर्वक सेवा करती है और उसके साथ गहरे नाते बनाये रखती है। यह सर्वाधिक लोकतांत्रिक और शेष लोगों की संयुक्त शक्ति पर निर्भर करती है और जो सक्रिय रूप से आम लोगों को राज्य के मामलों में शामिल करती है।

मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी के नेतृत्व में सत्ता को दृढ़तापूर्वक अपने हाथों में लेकर हमारे लोग अजेय हो गये हैं।

मुक्ति के बाद एक नया जीवन निर्मित करने के संघर्ष में हमारे लोगों को कई आजमाइशों और मुश्किलों से गुजरना पड़ा है। हमारे देश को पिछले समाज से विरासत में एक पिछड़ा अर्थतन्त्र और संस्कृति मिली थी और इसके साथ ही वह तीनवर्षीय घनघोर युद्ध के दौरान मटियामेट हो गया। हमारा देश उत्तरी और दक्षिणी अर्ध-भागों में बंटा हुआ है और हम समाजवाद का निर्माण कर रहे हैं और विश्व प्रतिक्रियावाद के सरगना अमरीकी साम्राज्यवादियों के साथ आमने-सामने खड़े होकर पुनरेकीकरण के लिए लड़ रहे हैं। देश के अन्दर और बाहर के तमाम किस्मों के हमारे शत्रुओं ने हमारी पांतों में फूट पैदा करने और हमारी प्रगति को रोकने के लिए षड्यन्त्र रचना कभी भी बन्द नहीं किया है।

तथापि हमारी पार्टी के अनुभवी मार्क्सवादी-लेनिनवादी नेतृत्व में और जन-शक्ति की अविनाशी क्षमता पर निर्भर रहते हुए हमारी जनता ने महान क्रांतिकारी कर्तव्यों को पूरा किया है, और निर्माण के जबर्दस्त काम किये हैं, और तमाम आजमाइशों और कठिनाइयों को वीरतापूर्वक लांघते हुए इतिहास के संक्षिप्त

काल में ही एक चकाचौंध करने वाली नयी सामाजिक प्रणाली और एक नये जीवन की रचना कर ली है।

हमारी जनता के जीवन-मरण के संघर्षों के अनुभवों ने उन्हें हमारी पार्टी की नीतियों के औचित्य और अपनी राजसत्ता की क्षमता के बारे में दृढ़तापूर्वक कायल कर दिया है। वे पार्टी के दृष्टिकोणों और नीतियों में अपनी भावी विजयों का मार्ग देखते हैं और पार्टी के नेतृत्व में हासिल की गयी जनसत्ता और समाजवादी प्रणाली में वे अपनी स्वतन्त्रता और सुख-समृद्धि का स्रोत देखते हैं।

हमारे देश में समाजवादी निर्माण की महान संचालक शक्ति, छोलिमा आंदोलन, हमारी जनता की, जो पार्टी और सरकार के इर्दगिर्द चट्टान जैसी एकता के साथ एकजुट है, जो पार्टी पर पूरा भरोसा करते हैं, अपनी राज्य शक्ति और सामाजिक प्रणाली की असीम कद्र करते हैं और एक उज्ज्वल भविष्य की दिशा में गतिशीलता के साथ आगे बढ़ रहे हैं, उभरती क्रांतिकारी भावना, लड़ने के लिए अदम्य संकल्प और असीमित रचनात्मक शक्तियों की सर्वाधिक केन्द्रीभूत अभिव्यक्ति है।

हमारी पार्टी को अवाम में जो अविचल प्रतिष्ठा और गौरव प्राप्त है उसे कोई भी शक्ति कभी भी खतरे में नहीं डाल सकती, कोई भी शक्ति हमारी जनता से उनकी राजसत्ता और समाजवादी उपलब्धियां छीन नहीं सकती या समाजवाद और कम्युनिज्म की विजय की दिशा में उनके आगे के महान बढ़ाव को रोक नहीं सकती।

१

साथियो,

यह सारा श्रेय कोरिया की मजदूर पार्टी और गणतन्त्र की सरकार की सही नीतियों और हमारी जनता के वीरोचित संघर्ष को प्राप्त है, जिसने हमारे समाज से सदियों के पिछड़ेपन और गरीबी का सफाया कर दिया है और पिछले चार या पाँच वर्षों में प्रगति तथा सभ्यता की दिशा में एक लम्बी छलांग लगायी है। हमने अपने देश के पर्वतों और नदियों को बदल दिया है और अपनी सामाजिक-आर्थिक प्रणाली में आमूल बदलाव तथा अपने लोगों के भौतिक और आत्मिक जीवन के तमाम पहलुओं में जबर्दस्त परिवर्तन किया है।

गणतन्त्र के उत्तरी आधे भाग में शोषण और दमन से मुक्त एक समुन्नत समाजवादी प्रणाली दृढ़तापूर्वक स्थापित कर दी गयी है। व्यावहारिक अनुभव ने

साफतौर पर दिखा दिया है कि हमारी राज्यीय और आर्थिक प्रणालियां हमारे देश के विकास के वर्तमान चरण के लिए सर्वाधिक युक्तिसंगत और सर्वोत्कृष्ट हैं। समाजवादी निर्माण की त्वरित प्रगति के साथ और भी महान उपलब्धियां प्राप्त करते हुए हमारी समाजवादी प्रणाली दिनानुदिन ज्यादा सुदृढ़ और विकसित होती जा रही है।

हमने न केवल एक शानदार सामाजिक प्रणाली स्थापित की है, बल्कि अपने देश के अर्थतन्त्र के निर्माण के लिए भी मजबूत बुनियादें डाल दी हैं।

हमारे देश में, जो अतीत में एक पिछड़ा कृषि प्रधान उपनिवेश था, एक स्वतन्त्र राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की बुनियादों का निर्माण विशेष रूप से महत्वपूर्ण और कठिन काम था। हमने बिरादराना देशों से मिलने वाली सहायता के सर्वाधिक तर्कसंगत इस्तेमाल के साथ-साथ आत्मनिर्भरता के सिद्धान्त के आधार पर अपनी जनता की शक्ति और अपने तमाम आन्तरिक साधनों की अधिकतम गोलबन्दी द्वारा इस कर्तव्य को कामयाबी से पूरा किया है।

देश की आर्थिक स्वतन्त्रता को दृढ़ बनाने के लिए हमें पहले उद्योग, खासतौर पर भारी उद्योग, को तेजी से विकसित करना होगा।

हमारे देश में औद्योगिक उत्पादन अपूर्व तेजी के साथ बढ़ा है और हमने उद्योग की औपनिवेशिक एकांगिता और पिछड़ेपन का पूर्णतया उन्मूलन कर दिया है।

अकेले १९६१ में हमारे उद्योग ने मुक्ति के बाद के दस वर्षों अर्थात १९४६ से १९५५ तक के पूरे काल की अपेक्षा कहीं ज्यादा माल निर्मित किया। यह औद्योगिक उत्पादन की तेजी से प्रगति का ही करिश्मा है कि १९६० में औद्योगिक और कृषि उपज के कुल मूल्य में उद्योग का अंश ७१ प्रतिशत हो चुका था।

धातु और रसायन उद्योग बड़ी तेजी से विकसित हुए हैं। हमने देश के ईंधन और विद्युत शक्ति आधारों को दृढ़ किया है और एक अपना मशीन निर्माण उद्योग तैयार किया है।

हमारा भारी उद्योग एक नयी तकनीक से लैस किया गया है और वह और विस्तृत हुआ है। अपने विकास के लिए मुख्यतः घरेलू कच्चे मालों तथा अन्य प्राकृतिक साधनों पर निर्भर रहते हुए वह मशीनों और अन्य उपकरणों सहित उत्पादन के विभिन्न साधनों के लिए हमारी अधिकांश मांगें पूरी करने की स्थिति में है।

इस प्रकार हमारे देश में समाजवादी उद्योगीकरण की बुनियादें डालने का कार्य कामयाबी के साथ पूरा किया गया है। हमने आधुनिक भारी उद्योग के लिए एक ठोस ढांचा कायम कर लिया है, जोकि देश की राजनीतिक और आर्थिक

स्वतन्त्रता का आधार पेश करता है और जो राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की तमाम शाखाओं को आधुनिक तकनीक से लैस करने में समर्थ है।

हलके उद्योग के क्षेत्र में हमारी पार्टी केन्द्रीय सत्ता में बड़े-बड़े उद्योगों के साथ-साथ छोटे और मध्यम आकार के स्थानीय तौर पर संचालित उद्योगों को विकसित करने की अपनी नीति के आधार पर जनता के लिए उपभोक्ता चीजों के उत्पादन में महान नूतनता लायी है।

बड़े पैमाने की उद्योग की फैक्टरियों में भारी विस्तार किया गया है, उनके तकनीकी उपकरणों में सुधार किया गया है और देश भर में प्रत्येक नगर और काउंटी में औसतन इससे अधिक स्थानीय उद्योग फैक्टरियां बनायी गयी हैं। इसके अतिरिक्त अब हमारे पास हलके उद्योग के लिए कच्चे माल के अपने स्थिर स्रोत भी हैं।

हमने हलके (उपभोक्ता) उद्योग के मजबूत उत्पादन-आधार निर्मित कर लिये हैं, जिनकी मदद से अब हम उपभोक्ता माल संबंधी अपनी जनता की आवश्यकताओं को स्वतः तुष्ट कर लेते हैं और जो भविष्य में लोगों को विभिन्न प्रकार के ऊंची क्वालिटी के माल और भी प्रचुरता के साथ सप्लाई कर सकेगा।

हमारे देश में समाजवादी अर्थतन्त्र के निर्माण में पेश आने वाली कठिनतम समस्याओं में एक कृषि, विशेषतः अन्न उत्पादन की समस्या थी।

हमारे देश में जोतने-बोने योग्य भूमि की कमी है और उसका बड़ा भाग पहाड़ी और ऊसर है। हमारे देश को प्रायः हर साल सूखे का प्रहार सहन करना पड़ता है और साथ ही तूफानों और बाढ़ों से अक्सर नुकसान उठाना पड़ता है। इसके अतिरिक्त हमारी कृषि, जो तकनीकी और आर्थिक दृष्टि से मूलतः अति पिछड़ी रही है, युद्ध के दौरान ध्वस्त हो गयी थी।

तथापि व्यापक सिंचाई, वन-रोपण और जलरक्षण परियोजनाओं से प्रकृति का कायाकल्प करके हमने इन कमियों पर काबू पाया, खाद्य समस्या को कामयाबी से सुलझाया और कृषि की तमाम शाखाओं के तीव्र विकास के लिए बुनियादें तैयार कीं।

अन्न की पैदावार में एक उच्च वार्षिक दर पर वृद्धि हुई है। १९६१ में वह ४८,३०,००० टन हो गयी अर्थात पूर्व वर्ष की अपेक्षा १०,००,००० टन अधिक। दो या तीन वर्ष पूर्व तक हमें विदेशों से प्रतिवर्ष लाखों टन अनाज मंगाना पड़ता था, परन्तु अब हमने खाद्यान्न में आत्मनिर्भरता हासिल कर ली है।

आज सिंचाई की नहरें हमारे देश के खेतों में फैली हैं और कृषि को और भी ज्यादा परिमाण में नयी प्रविधि से लैस किया जा रहा है। हमारे किसान न-केवल शोषण और दमन से मुक्त हो गये हैं, बल्कि दैवी प्रकोपों से भी सुरक्षित किये जा

रहे हैं और उन्हें धीरे-धीरे कड़ी मेहनत से भी छुटकारा दिलाया जा रहा है।

हमारे राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के विकास में ये तमाम सफलताएं भारी उद्योग की बढ़ोत्तरी को प्राथमिकता देने और उसके साथ ही हलके उद्योग तथा कृषि को विकसित करने की हमारी पार्टी की आर्थिक नीति की यथार्थवादिता व्यक्त करती हैं। वे स्वतन्त्र राष्ट्रीय अर्थतन्त्र का निर्माण करने की हमारी पार्टी की दृढ़ नीति की एक शानदार विजय की द्योतक हैं।

मशीन निर्माण उद्योग को धुरी बनाकर भारी उद्योग की बढ़ोत्तरी को आश्वस्त करके ही हम हलके उद्योग और कृषि का तेजी से विकास करने, जन-जीवन स्तर को निरंतर ऊंचा उठाने और कुल मिलाकर राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के तकनीकी पुनर्निर्माण के लिए भौतिक तथा तकनीकी नींवें रखने में समर्थ हुए हैं। राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के निर्माण के दृष्टिकोण पर दृढ़तापूर्वक डटे रह कर ही हम पुराने समाज से विरासत में पिछड़ेपन का उन्मूलन कर इतने अल्पकाल में अपने देश को एक शक्तिशाली समाजवादी औद्योगिक-कृषि देश में परिणत करने में कामयाब हुए हैं। इसके साथ ही हम देश की सम्पदा और शक्ति में वृद्धि करने तथा लोगों के जीवन को धनधान्य से परिपूर्ण करने के लिए अपनी ठोस आर्थिक बुनियादें रखने में समर्थ हुए हैं।

सांस्कृतिक क्रान्ति समाजवाद के निर्माण के महत्वपूर्ण कर्तव्यों में से एक होती है। खासतौर पर जब किसी पिछड़े देश में समाजवाद का निर्माण किया जा रहा हो तो सांस्कृतिक-क्रान्ति को और भी ज्यादा दृढ़ता से तेज करना जरूरी हो जाता है।

हमारी पार्टी और सरकार द्वारा निरन्तर अभिरुचि लिये जाने का ही यह सुफल है कि हमारी जनता ने एक नयी समाजवादी संस्कृति का निर्माण करने में जबर्दस्त उपलब्धियां हासिल की हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में, हमने पुराने समाज के अवशेषों का पूरी तरह सफाया कर दिया है और समाजवादी निर्माण की जरूरतों के अनुरूप सर्वाधिक समुन्नत शिक्षा प्रणाली स्थापित की है।

सार्वभौम अनिवार्य माध्यमिक स्कूल शिक्षा लागू की गयी है और भारी संख्या में माध्यमिक और उच्चतर विशिष्ट तकनीकी स्कूल तथा उच्चतर शिक्षा के संस्थान स्थापित किये गये हैं। सांध्य और पत्राचार पाठ्यक्रमों के जाल को खासतौर पर विस्तार दिया गया है और भारी तादाद में फैक्टरी, कालेज तथा कम्युनिस्ट कालेज खोले गये हैं, ताकि बहुत से श्रमजीवी लोग अपनी उत्पादक गतिविधियों को रोके बगैर उच्चतर शिक्षा ग्रहण कर सकें।

हमारे देश में इस समय २६ लाख छात्र तमाम स्तरों के ८,९०० से अधिक

स्कूलों में, जिनमें उच्चतर शिक्षा के ९३ संस्थान भी शामिल हैं, पढ़ रहे हैं। इन छात्रों में २,०९,००० कालेज और विश्वविद्यालय के विद्यार्थी हैं।

इसके अलावा दस लाख से अधिक मजदूर और किसान श्रमजीवी जन स्कूलों और श्रमजीवी जन माध्यमिक स्कूलों में सामान्य ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं और तमाम श्रमजीवी लोग तकनीक सीख रहे हैं।

हमारे देश में वस्तुतः तमाम लोग पढ़ रहे हैं और तरक्की कर रहे हैं। तमाम लोग विज्ञान और तकनीक में प्रवीण होकर एक नये समाज के शिक्षित और सभ्य निर्माता बन रहे हैं।

माध्यमिक और उच्चतर तकनीकी शिक्षा के त्वरित विकास के फलस्वरूप हम पहले ही अपने राष्ट्र के १,६०,००० तकनीकी कार्यकर्ताओं के एक विशाल दस्ते को प्रशिक्षित कर चुके हैं और उनकी पांतें वर्ष प्रतिवर्ष निरन्तर बढ़ती जा रही हैं।

यदि हमारी पार्टी और सरकार ने सार्वजनिक शिक्षा को तेजी से विकसित करने, श्रमजीवी जनता के आम सांस्कृतिक तथा तकनीकी स्तरों को ऊंचा उठाने और मुक्ति के तुरन्त पश्चात के काल से ही अनेक राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं को तैयार करने के लिए महान प्रयास न किये होते और दूरदर्शितापूर्ण पग न उठाये होते तो हम न तो एक स्वतन्त्र राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की बुनियाद रखने में समर्थ होते और न ही समाजवादी निर्माण की उच्च गति को आश्वस्त कर सकते। तमाम दिक्कतों के बावजूद शिक्षा और कार्यकर्ता प्रशिक्षण को प्राथमिकता देकर हमने अपने बूते पर राज्य का प्रशासन चलाने और अर्थतन्त्र का दक्षतापूर्वक प्रबन्ध करने तथा अपने समाज को असाधारण रूप में उच्च गति से विकसित करने के लिए स्थितियां उत्पन्न की हैं।

विज्ञान के क्षेत्र में भी शानदार अनुसन्धान सफलताएं प्राप्त की जा रही हैं। हमारे देश के वैज्ञानिक और तकनीशियन विनालोन अनुसन्धान की पूर्णता, एंथ्रेसाइट से गैसीकरण की समस्या के समाधान, अर्धचालकों संबंधी गवेषणा, और विभिन्न रोगों के उपचार की नयी विधियों की खोज में अनेकानेक सफलताएं प्राप्त कर राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के विकास और जन कल्याण की बढ़ोत्तरी में महान योगदान कर रहे हैं।

छोलिमा चरण के साथ-साथ कदम-से-कदम मिलाते हुए हमारा साहित्य और कला भी पूर्णतया फलने-फूलने के दौर में दाखिल हो गये हैं। यह इस क्षेत्र में पार्टी की सही नीति से प्रेरित लेखकों तथा कलाकारों की जोरदार रचनात्मक गतिविधियों का ही सुफल है कि हमारे देश में ऐसे क्रान्तिकारी साहित्य और कला का तेजी से विकास हो रहा है, जो आम जनता की वफादारी से सेवा करती हैं।

हमारे देश में सारी जनता साहित्य और कला का आनन्द उठाती है और इस क्षत्र की रचनात्मक सक्रियता में मजदूर, किसान और शेष अवाम बढ़चढ़ कर भाग ले रहे हैं। हमारा साहित्य और कला अब आम जनता ले सम्बन्धित हैं और ये एक नये समाज की रक्षा करने के संघर्ष में उन्हें प्रेरित करने के सशक्त हथियार हैं।

समाजवादी अर्थतन्त्र के तीव्र विकास से हमारी जनता के भौतिक और सांस्कृतिक जीवन में और ज्यादा सुधार आया है।

१९६१ में फैक्टरी और दफ्तरी मजदूरों के वास्तविक पारिश्रमिक १९५६ के मुकाबले में २.१ गुना थे। इसी अवधि में नकदी और जिन्स के रूप में किसानों की आमदनी १.६ गुना बढ़ी और कुल मिला कर उनका जीवनस्तर भूतकाल के मध्यम और अच्छा खाते-पीते मध्यम किसानों के स्तर पर पहुंच गया।

व्यापक भवन-निर्माण से मेहनतकश जनता की आवासीय स्थितियों में भारी सुधार हुआ है। केवल १९५७ से १९६१ के पांच वर्षों में हमने शहरी क्षेत्रों में ७६ लाख वर्ग मीटर के कुल फर्श क्षेत्र के और ग्रामीण क्षेत्रों में ५८ लाख वर्ग मीटर के कुल फर्श क्षेत्र के नये मकानों का निर्माण किया।

आज हमारे मेहनतकश लोग रोटी, कपड़ा और मकान के बारे में किसी भी चिन्ता से मुक्त हैं और वे सब एक सुरक्षित जीवन भोग रहे हैं। इसका अर्थ यह है कि हमने अपनी जनता के दैनिक जीवन की सबसे बुनियादी समस्याओं को हल कर लिया है।

इसके अतिरिक्त मेहनतकश लोग राज्य से अनेक भौतिक और सांस्कृतिक लाभ प्राप्त करते हैं। तमाम स्कूलों में ट्यूशन फीस को उड़ा कर राज्य उच्चतर शिक्षा के संस्थानों और विशिष्ट ज्ञान के स्कूलों में छात्रों को वजीफे भी देता है। फैक्टरी और दफ्तरी मजदूरों के लिए सवेतन छुट्टियों की प्रणाली लागू की गयी है और हर साल लाखों मेहनतकश राज्य के खर्चे पर अवकाश गृहों में सुखद समय का आनन्द लेते हैं और प्रत्येक को मुफ्त चिकित्सा के लाभ मिलते हैं। राजकीय और सार्वजनिक खर्चे से भारी संख्या में स्थापित और संचालित नर्सरियां और बाल-वाटिकाएं दस लाख से अधिक बच्चों का शानदार ढंग से पालन-पोषण कर रही हैं और महिलाओं को सामाजिक श्रम में भाग लेने की स्थितियां उपलब्ध कर रही हैं। अपाहिज लोगों, निराश्रित बूढ़े लोगों और अनाथों, तमाम ऐसे लोगों को राज्य से सुरक्षित जीवन की गारंटी प्राप्त है।

जापानी साम्राज्यवादी शासन के दिनों में, जब हमारे हाथों से देश छिन गया और जब हम अपनी संप्रभुता से वंचित कर दिये गये, तो हमारे मेहनतकश दोहरे बल्कि तेहरे शोषण और दमन के नीचे भूखे और अर्धनग्न रहने को विवश हो गए

थे। अपनी रोजी कमाने में असमर्थ अनगिनत लोग भीख के लिए दर-दर की ठोकरें खा रहे थे।

परन्तु जन-सत्ता और समाजवादी प्रणाली में हमारे मेहनतकश लोगों के जीवन में आमूल परिवर्तन आ गया है। देश के आधे भाग में हमने एक नये जीवन की रचना की है, जिसमें शोषण और गरीबी से मुक्त पूरी मेहनतकश आबादी बिना किसी चिन्ता के एक साथ मिलकर काम करते और अध्ययन करते हुए तथा सभी की खुशहाली के लिए आगे बढ़ने में एक दूसरे की मदद करते हुए जीवन-यापन कर रही है। यह हमारे देश के इतिहास में और हमारी जनता के जीवन में एक महान परिवर्तन है।

साथियो,

कोरिया की मजदूर पार्टी की ऐतिहासिक चौथी कांग्रेस ने समाजवादी क्रान्ति में, और समाजवाद के निर्माण में हमारी जनता की उज्ज्वल विजयों का निचोड़ पेश किया और सातवर्षीय योजना के आकर्षक लक्ष्य निर्धारित किये।

सातवर्षीय योजनाकाल के दौरान तकनीकी और सांस्कृतिक क्रान्ति को पूरी तरह सम्पन्न कर हम समाजवाद की ठोस भौतिक और तकनीकी बुनियादें स्थापित करेंगे और लोगों के भौतिक तथा सांस्कृतिक स्तरों का आमूल उन्नयन करेंगे।

आज हमारे देश में समाजवादी निर्माण एक नये और उच्चतर चरण में दाखिल हो गया है।

पंचवर्षीय योजनाकाल के अन्त तक हमारा मुख्य कार्य था समाजवाद की बुनियादें डालना और अपने पिछड़े कृषि प्रधान देश को एक स्वतन्त्र समाजवादी औद्योगिक-कृषि राज्य में परिणत करना। इस दायित्व को पूरा करने के लिए हमने शहरी और देहाती क्षेत्रों में समाजवादी कायाकल्प को पूर्ण करने, समाजवादी उद्योगीकरण की नींवें डालने और लोगों की रोटी, कपड़ा तथा मकान की समस्याओं को ठोस रूप में सुलझाने पर तमाम प्रयास केन्द्रित किये।

सातवर्षीय योजनाकाल में हमारा मुख्य कर्तव्य है समाजवादी निर्माण को और तेज करना तथा अपने देश को आधुनिक उद्योग और विकसित कृषि के साथ एक समाजवादी औद्योगिक राज्य में परिणत करना। इस अवधि में समाजवादी औद्योगीकरण को पूर्णतया सम्पन्न करते हुए हम राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की तमाम शाखाओं को आधुनिक तकनीक से लैस करेंगे और समुन्नत समाजवादी समाज के

विशिष्ट स्वरूप के अनुरूप उत्पादन शक्तियों के विकास के उच्च-स्तर को प्राप्त करेंगे। हमें न-केवल लोगों की रोटी, कपड़ा और मकान की समस्याओं को और भी अधिक सन्तोषजनक ढंग से सुलझाना चाहिए बल्कि हर एक को धनधान्य से परिपूर्ण और सुसभ्य जीवन बिताने के योग्य भी बनाना चाहिए।

यदि पंचवर्षीय योजनाकाल ऐसा काल था, जिसमें समाजवाद के महान वृक्ष की जड़ें गहरी हुईं और तना मजबूत हुआ तो हम सातवर्षीय योजनाकाल को ऐसा काल कह सकते हैं, जिसमें वृक्ष बढ़ेगा, सुन्दर ढंग से फूलेगा और बढ़िया फल देगा।

जब सातवर्षीय योजना पूरी हो जाएगी तो नये समाजवादी जीवन के तमाम पहलू वास्तव में पूर्णतया खिल उठेंगे।

हमारा उद्योग नाना प्रकार से विकसित होगा और नयी तकनीक से और अधिक पूरी तरह लैस होगा। विभिन्न प्रकारों की मशीनें, उपकरण और उत्पादन के अन्य साधन और उनके साथ ही तरह-तरह की बढ़िया उपभोक्ता चीजें भारी मात्रा में उत्पादित होंगी। कृषि के तकनीकी आधुनिकीकरण के नतीजे के तौर पर अनाज और चारा सहित तमाम कृषि उपजों के उत्पादन में हम निर्णायक वृद्धि प्राप्त करेंगे और किसानों को कमर-तोड़ मेहनत से छुटकारा दिलाएंगे।

हम ज्यादा सुन्दर नगर और गांव बनाएंगे और हमारे तमाम लोग तथा अन्य जनगण भी उन में रहेंगे।

गणतन्त्र के उत्तरी आधे भाग में समाजवाद का निर्माण न-केवल उत्तर के लोगों को, बल्कि पूरे राष्ट्र के लोगों के महत्वपूर्ण हितों के अनुरूप है। सातवर्षीय योजना की पूर्णता उत्तरी आधे भाग में क्रान्तिकारी अड्डे को मजबूत और अजेय बनाएगी। यह हमारे देश के शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण की प्राप्ति में एक निर्णायक चरण की शुरूआत करेगी। सातवर्षीय योजना पूरी कर हम भविष्य में दक्षिण कोरियाई अर्थतन्त्र के तेजी से पुनर्वास के लिए और वहां के लोगों के जीवन की परिस्थितियों में आमूल सुधार लाने के लिए और अधिक ठोस बुनियादें भी डाल सकेंगे।

इस तरह सातवर्षीय योजना गणतन्त्र के उत्तरी आधे भाग में समाजवाद के निर्माण का एक आकर्षक कार्यक्रम है। साथ ही यह एक पुनरेकीकृत, स्वतन्त्र, धन-धान्य से परिपूर्ण और शक्तिशाली कोरिया का निर्माण करने और तीन करोड़ कोरियाइयों के लिए भावी सुख-समृद्धि आश्वस्त करने का एक महान राष्ट्रीय कार्यक्रम भी है। यही वजह है कि उत्तरी आधे भाग के तमाम मेहनतकश इस कार्यक्रम को पूरा करने के लिए असाधारण क्रान्तिकारी उत्साह और देशभक्ति-पूर्ण निष्ठा प्रदर्शित कर रहे हैं और तमाम कोरियाई लोगों की इसके फलीभूत होने में बहुत ज्यादा दिलचस्पी है।

जैसाकि हमारी पार्टी और गणतन्त्र की सरकार ने साफतौर पर संकेत दिया है, हम सातवर्षीय योजना के पूर्वार्ध में भारी उद्योग के अस्थिपंजर में हाड़-मांस भरने उसका अधिक कारगर उपयोग करने और इस आधार पर हलके उद्योग तथा कृषि को तेजी से विकसित करने और जनता की जीवन परिस्थितियों में आमूल सुधार लाने के लिए कड़ा परिश्रम करेंगे। योजना के उत्तरार्ध में जनजीवन की परिस्थितियों को बेहतर बनाना जारी रखने के साथ-साथ भारी उद्योग के केन्द्रों में विस्तार कर, और उनके तकनीकी उपकरणों में सुधार कर, हम समाजवाद की भौतिक तथा तकनीकी बुनियादों को आमूल सुदृढ़ करने पर अधिक जोर देंगे।

हम पहले ही सातवर्षीय योजना के पूर्वार्ध की पूर्णता की दिशा में एक बड़ा कदम उठा चुके हैं। पार्टी के आह्वान का हमेशा वफादारी से स्वागत करते हुए हमारे मेहनतकश लोगों ने समाजवादी निर्माण के तमाम क्षेत्रों में अपनी असीम रचनात्मक क्षमताओं और प्रतिभाओं का प्रदर्शन किया और १९६१ —सातवर्षीय योजना के प्रथम वर्ष—के लिए राष्ट्रीय आर्थिक योजना को कामयाबी से पूरा किया और इस वर्ष के छः शिखरों तक पहुंचने के अपने संघर्ष में श्रम के शानदार कमाल दिखा रहे हैं।

इस वर्ष की राष्ट्रीय आर्थिक योजना ने अपने मुख्य लक्ष्यों के रूप में छः शिखर निश्चित किये हैं। यह औद्योगिक और कृषि उत्पादन में बढ़ोत्तरी की उच्च दर की परिकल्पना पेश करने वाला एक जबर्दस्त और कठिन कार्यक्रम है।

वर्ष का अंत होने में अभी दो महीने से अधिक बाकी हैं लेकिन हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि हमने छः शिखरों को जीतने की लड़ाई में निर्णायक विजय प्राप्त कर ली है।

समाजवाद में आर्थिक निर्माण में कृषि एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब हम अच्छी फसल प्राप्त करते हैं तो हमारे पास खाने को पर्याप्त हो जाता है और फिर देश के आर्थिक जीवन में सब-कुछ ठीक-ठाक चलता है। इस वर्ष के छः शिखरों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण ५० लाख टन अन्न उपज का लक्ष्य है।

हमने उत्पादन की इस ऊंचाई पर पहुंचने के लिए सर्वथा प्रतिकूल मौसमी हालात में संघर्ष किया। इस साल हमारे देश को एक गंभीर सूखे का प्रहार सहना पड़ा, जिसके बाद एक लंबा बरसाती दौर चला जो तीन मास से भी अधिक समय तक जारी रहा और जिसमें चार बड़ी बाढ़ें आईं। इसके अलावा हमें कोहरे, पाले, हानिकारक कीड़ों और तूफानों से नुकसान उठाना पड़ा। वास्तव में हम कह सकते हैं कि यह एक ऐसा साल था जिसमें हमारी कृषि को प्रकृति की गंभीरतम आजमाइशों से त्रस्त होना पड़ा।

लेकिन हमारी समाजवादी कृषि ने इन कठिनाइयों को सफलतापूर्वक पार किया। न केवल इस वर्ष की अन्न उपज गत वर्ष की तुलना में कम नहीं हुई बल्कि हमने ग्रामीण क्षेत्र में असाधारण रूप में भरपूर फसल प्राप्त की।

यह तथ्य कि हमने हाल के वर्षों में निरंतर भरपूर फसलें प्राप्त की हैं और इस जैसे वर्ष में भी ऐसा काम किया है, यह सिद्ध करता है कि हमारा कृषि उत्पादन बदलते मौसम या अन्य सांयोगिक पहलुओं से प्रभावित नहीं होता बल्कि इसके विपरीत औद्योगिक उत्पादन की तरह यह समाजवादी अर्थतंत्र के विकास के नियम के अनुसार पुख्ता और दृढ़ ढंग से बढ़ता है।

कृषि में शानदार विजय हमारी पार्टी की कृषि नीति की विजय है—ग्रामीण क्षेत्र में छोंगसान-री विधि रीति और छोंगसान भावना की विजय है। सबसे बढ़कर यह स्पष्टता हमारे ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित सहकारी अर्थतंत्र की समाजवादी प्रणाली की, हमारी कृषि की ठोस भौतिक और तकनीकी बुनियादों की, और खासतौर पर पार्टी, राज्य और पूरी जनता के परम प्रयत्नों से निर्मित सिंचाई प्रणाली, वन-रोपण और जलरक्षण सुविधाओं की शक्ति की श्रेष्ठता प्रदर्शित करती हैं। यह इसलिए भी संभव बनाया जा सका है कि छोंगसान-री भावना और छोंगसान-री विधि से ओतप्रोत हमारी पार्टी ने राजनीतिक कार्य को प्राथमिकता दी और किसानों को सक्रिय रूप में कम्युनिस्ट शिक्षा दी है ताकि वे अपने काम में सजग उत्साह और निष्ठा प्रदर्शित कर सकें। कृषि में हमारी विजय इसलिए भी संभव हुई है कि हमारी पार्टी ने वितरण के समाजवादी सिद्धांत को सहीतौर पर लागू कर और कार्यटोलियों के लिए बोनस प्रणाली चालू कर उत्पादन के लिए किसानों के उत्साहित करने के लिए भौतिक प्रोत्साहन प्रदान करने के दृष्टिकोण को पूरी तरह अमली रूप दिया।

हमने ५० लाख टन अनाज के शिखर के लिए लड़ाई के दौरान कृषि की भौतिक और तकनीकी बुनियादों को मजबूत किया है और अपनी कृषि प्रविधि को प्रगति के पथ पर और आगे बढ़ाया है। ग्रामीण क्षेत्रों में हमारी ट्रैक्टर शक्ति १५ अश्व शक्ति की इकाइयों के संदर्भ में अब कुल मिलाकर १५ हजार है और कृषि यंत्रीकरण के स्तर में निरंतर वृद्धि जारी है। इस साल सिंचाई में आने वाले क्षेत्र में ३०,००० छोंगबो का विस्तार किया गया है और रासायनिक खाद के उपयोग की मात्रा पिछले साल की अपेक्षा १३ प्रतिशत अधिक है।

अन्न उपज के साथ-साथ औद्योगिक फसलों, पशु संवर्धन, रेशम के कीड़े पालने और फल उगाने सरीखी कृषि की अन्य तमाम शाखाओं ने उच्च उपज दरें प्रदर्शित की है। हल्के उद्योग में इस वर्ष २५ करोड़ मीटर कपड़े के शिखर पर पहुंचने की दिशा में तमाम प्रयास केन्द्रित रहे हैं।

भारी मात्रा में बढ़िया किस्म के कपड़े पैदा करने के लिए वस्त्र उद्योग का तीव्र विकास हमारी जनता की वस्त्र-समस्या को संतोषजनक ढंग से सुलझाने का एक महत्वपूर्ण दायित्व है। पार्टी द्वारा निर्धारित वस्त्र उत्पादन लक्ष्य को पार करने के प्रयास में वस्त्र उद्योग के मजदूर और तकनीकी कार्यकर्ता पहली छमाही की योजना को पहले ही कामयाबी के साथ पार कर चुके हैं और अब दूसरी छमाही में तेजी से उत्पादन बढ़ा रहे हैं। इस बात का पूरा संकेत मिल रहा है कि इस वर्ष २५ करोड़ मीटर कपड़ा तैयार होगा। यह पिछले साल के आंकड़ों से ३० प्रतिशत से अधिक की वृद्धि है और इसका अर्थ यह है कि कपड़े का प्रति व्यक्ति उत्पादन करीब २५ मीटर तक पहुंच जाएगा। बहुत बढ़िया कपड़ों का अनुपात क्रमश: बढ़ना शुरू हुआ है और वस्त्र उद्योग के तीव्र विकास ने घरों में औरतों के काम को आसान बना दिया है और लोगों को बेहतर कपड़ों की आपूर्ति संभव हो गयी है।

इस साल हल्के उद्योग के हमारे केन्द्रों को आमतौर पर विस्तार दिया गया है और दृढ़ किया गया है। छोंगजिन रासायनिक रेशा मिल और किलजू लुगदी मिल के विस्तार की योजनाएं पूरी हो गयी हैं। वर्तमान कपड़ा मिलों को और भी १,०५,००० तकलों से सज्जित किया गया है। १५,००० तकलों के साथ ह्येसान कपड़ा मिल, २०,००० टन की उत्पादन क्षमता के साथ ह्येसान कागज मिल और हल्के उद्योग की अन्य नयी फैक्टरियों जैसी निर्माण परियोजनाओं को कामयाबी से पूरा किया गया है। स्थानीय उद्योग में यंत्रीकरण को भी जोरदार ढंग से आगे बढ़ाया गया है और उसकी तमाम फैक्टरियों को बेहतर उपकरणों से लैस किया गया है।

हमारे देश के प्रचुर समुद्री साधनों का व्यापक उपयोग जन-जीवन स्तर में सुधार के लिए बड़ा महत्व रखता है।

यह पार्टी के सही नेतृत्व, भारी पैमाने पर राज्यीय पूंजी-निवेश और मत्स्य उद्योगों में मजदूरों के निष्ठापूर्ण श्रम का सुफल है कि युद्धोतर-काल में मत्स्य उद्योग की भौतिक और तकनीकी बुनियादों को निर्णायक रूप से दृढ़ बनाया गया। १९६१ में समुद्री उत्पादनों की उपज ५,९०,००० टन तक पहुंच गयी।

इन उपलब्धियों के आधार पर पार्टी और सरकार ने इस साल आठ लाख टन समुद्री उत्पादनों का आकर्षक लक्ष्य निर्धारित किया है और वे क्षेत्र में कड़ा श्रम कर रही हैं। पार्टी की नीति से असीम प्रेरणा प्राप्त कर मत्स्य उद्योग के हमारे तमाम मजदूर इस विशाल कार्य को पूरा करने के लिए वीरोचित ढंग से काम कर रहे हैं और उन्होंने पहले ही महान सफलताएं प्राप्त कर ली हैं। यह कहने की

जरूरत नहीं कि हमारे लिए शिथिल होने का कोई कारण है क्योंकि मछली पकड़ने का मुख्य मौसम—नवम्बर और दिसम्बर—अभी आने वाला है। तथापि हमें पूर्ण विश्वास है कि अब तक प्राप्त उपलब्धियों को देखते हुए और उत्पादन में वर्तमान प्रगति और मत्स्य उद्योग में मजदूरों की प्रखर होती भावना के संदर्भ में हम ८ लाख टन समुद्री उत्पादनों का लक्ष्य संपन्न कर विजय पताका फहराने में समर्थ होंगे।

दो लाख परिवारों के लिए मकानों के शिखर पर पहुंचने का संघर्ष एक शानदार संघर्ष है क्योंकि इस लक्ष्य को प्राप्त कर हम मेहनतकश लोगों की आवासीय स्थितियों को सुधारेंगे और खासतौर पर मिट्टी के झोपड़ों को, जो हजारों साल से बने आ रहे हैं, साफ कर अपने ग्रामीण क्षेत्र को नया रंग-रूप देंगे।

हमारी चौथी पार्टी कांग्रेस ने सातवर्षीय योजनाकाल के दौरान शहरी और देहाती क्षेत्रों में छः लाख परिवारों के लिए आधुनिक मकान बनाने का एक बहुत-बड़ा कर्तव्य सामने रखा है। हमने इस काम को इस वर्ष हाथ में लिया है। मेहनतकश लोगों के लिए भवन-निर्माण की इस विशाल योजना को हमारे समाज में ही हाथ में लिया जा सकता है जिसमें देश की सत्ता और सारी संपदा अवाम के नियंत्रण में है और दृढ़ आर्थिक बुनियादें कायम की जा चुकी हैं।

अब तक हम बड़े पैमाने पर भवन-निर्माण कार्य करते आये हैं। लेकिन इससे पहले कभी भी हमने इतने मकान नहीं बनाये जितने इस वर्ष बनाये हैं और न ही कभी इससे पहले देहाती क्षेत्र में एक वर्ष के अन्दर एक लाख परिवारों के लिए मकान निर्मित किये हैं। तथापि हमारे निर्माण कार्यकर्ता पूरी जनता की सक्रिय सहायता से इस कठिन काम को कामयाबी से कर रहे हैं। शहरी मकानों की तो बात ही दूसरी है, ग्रामीण मकानों के निर्माण में भी निर्णायक परिणाम हासिल किये जा चुके हैं; इस समय हम दो लाख परिवारों के लिए मकान निर्माण के अंतिम चरण में हैं। इस साल हम निश्चित रूप से शहरों के एक लाख परिवारों के लिए और गांवों में भी इतने ही आधुनिक मकानों का निर्माण करेंगे।

इस साल भारी उद्योग को १२ लाख टन इस्पात और डेढ़ करोड़ टन कोयला के शिखरों पर पहुंचने और शेष शिखरों को जीतने के काम में सशक्त समर्थन देने के बड़े भारी कर्तव्य का सामना है। कुल मिलाकर हमारे उद्योग ने अपने काम को काफी हद तक पूरा कर लिया है।

इस वर्ष लोहा और इस्पात उद्योग में मजदूर और तकनीकी कर्मचारी १२ लाख टन ढलवां लोहे और दानेदार लोहे के अपने लक्ष्य पर भी पहुंचेंगे और ११ लाख टन इस्पात उत्पादित करेंगे। इसका अर्थ है कि इस्पात उत्पादन लक्ष्य से कुछ कम रह जाएगा लेकिन पिछले साल की अपेक्षा ढलवां लोहा और दानेदार

लोहे के उत्पादन में २६ प्रतिशत वृद्धि और इस्पात में ४० प्रतिशत से ज्यादा वृद्धि एक साल के लिए एक बड़ी उपलब्धि है।

कोयला उद्योग में बाढ़ से होने वाली क्षति के विरुद्ध पूरे उपाय इस तथ्य के बावजूद नहीं किये गये कि पार्टी ने उनके महत्व पर बार-बार जोर दिया था। परिणामस्वरूप भारी वर्षा के बाद गड्ढों में पानी भर गया और खान के अन्दर के काम में तथा कोयले की ढलाई में भारी बाधा पड़ी। इस तरह कोयला उत्पादन लक्ष्य से काफी कम हो सका। अब हमें आशा है कि कोयला उत्पादन पिछले साल की अपेक्षा करीब १० प्रतिशत बढ़ेगा। लेकिन यदि इस क्षेत्र में कार्यकर्ताओं ने पार्टी की हिदायतों पर तत्परता से और सही ढंग से अमल किया होता तो वे निश्चित रूप से डेढ़ करोड़ टन कोयले के लक्ष्य को पहुंचने की स्थिति में होते।

विद्युत शक्ति, रसायन और मशीन-निर्माण उद्योगों ने अच्छी सफलताएं प्राप्त की हैं और उत्पादन तेजी से बढ़ा है। खासतौर पर हमारे मशीन-निर्माण उद्योग ने कृषि और मत्स्य उद्योग के यंत्रीकरण के लिए जरूरी उपकरण भारी संख्या में उपलब्ध कर, तथा साथ ही धातुशोध, रसायन और विद्युत शक्ति उपकरण तथा कोयला और अन्य खानों और हल्के उद्योग के लिए मशीनें उपलब्ध कर राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के तकनीकी पुनर्निर्माण में एक महत्वपूर्ण काम किया है।

इस साल भारी उद्योग में कई नयी फैक्टरियों और केन्द्रों का निर्माण हुआ है। वे ये हैं : सोंगजिन इस्पात संयंत्र में ८०,००० टन उत्पादन क्षमता की नयी मध्यम—प्लेट रोलिंग शॉप, कांगसोन स्टील प्लांट की, ३०,००० टन की उत्पादन क्षमता की ड्रान-स्टील-पाइप शॉप, १२,००० टन क्षमता की नाम्पो स्मेल्टरी अलौह धातु रोलिंग शॉप, १२,००० टन क्षमता की प्योंगयांग विद्युत तार फैक्टरी, ५०,००० टन क्षमता की पोंगुंग कास्टिक सोडा फैक्टरी और मुनप्योंग स्मेल्टरी में ४५,००० टन क्षमता की गंधक अम्ल शॉप। इसके साथ ही तमाम भारी उद्योग संयंत्रों में तकनीकी उपकरणों में सुधार किया गया है, समुन्नत उत्पादन विधियां और तकनीकी प्रक्रियाएं व्यापक रूप से लागू की गयी हैं और उत्पादन क्षमता में भारी वृद्धि की गयी है।

इस प्रकार उपकरणों से बेहतर तौर पर लैस और सुदृढ़ हमारा भारी उद्योग हलके उद्योग और कृषि के विकास की सेवा करने में और जन-जीवन स्तरों में सुधार लाने में अब ज्यादा कारगर है।

इस साल हमने समाजवादी निर्माण के तमाम क्षेत्रों में एक बहुत ही जोरदार संघर्ष चलाया है। यह हमारे देश में असीम सुख-समृद्धि और हमारे लोगों की खुशहाली के लिए एक गौरवपूर्ण और शानदार लड़ाई है और इसमें हमने ज्वलंत विजय प्राप्त की है।

साथियो,

सातवर्षीय योजना के पहले दो सालों में जबर्दस्त कामयाबियों ने तीन या चार साल में जन-जीवन की परिस्थितियों के आमूल सुधार के लिए उज्ज्वल संभावनाओं का द्वार खोल दिया है। इन संभावनाओं को साकार रूप देने के लिए हमें १९६३ और १९६४ के संघर्ष को दृढ़तापूर्वक जारी रखना होगा।

१९६३ की राष्ट्रीय आर्थिक योजना का मूल कर्तव्य है छः शिखरों को जीतने में इस वर्ष की उपलब्धियों को मजबूत करना तथा उसके साथ ही और भी ऊंचे लक्ष्यों के लिए तैयारियां करना। अगले साल हम कृषि और हलके उद्योग के विकास के लिए भी प्रयास करेंगे और भारी उद्योग के क्षेत्र में अपनी तमाम फैक्टरियों को नये उपकरणों से लैस करेंगे और उन्हें मजबूत बनाएंगे तथा खान उद्योग के विकास के लिए भरसक प्रयास करेंगे। इसके साथ ही दक्षिण कोरिया में जमे अमरीकी साम्राज्यवादियों और सैन्य फासिस्ट गिरोह की निरंतर बढ़ती आक्रामक चालबाजियों के संदर्भ में पार्टी और सरकार हमारी राष्ट्रीय प्रतिरक्षा व्यवस्थाओं को और भी किलेबंद करने पर अधिक ध्यान देंगे।

खान उद्योग का मूलगामी विकास अगले साल भारी उद्योग के लिए एक महत्वपूर्ण काम होगा। खनन कर्म उत्पादन में प्राथमिक प्रक्रिया होता है और इस वजह से यदि हम इस उद्योग को प्राथमिकता नहीं देते, तो हम राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के दूसरे क्षेत्रों को भी सामान्य गति से विकसित नहीं कर सकते।

पार्टी और सरकार प्रोसेसिंग उद्योग का विकास जारी रखते हुए १९६३ और १९६४ में खनन क्षेत्र में पूंजी-निवेश जारी रखेंगे, ताकि धातु और कोयला खानों का भौतिक और तकनीकी आधार दृढ़ हो। साथ ही वे इस बात का ध्यान रखेंगे कि विभिन्न प्रकार की धातुओं और कोयले की राष्ट्रीय अर्थतन्त्र में बढ़ती जरूरतों को पूरी तरह तुष्ट किया जाए।

इस समय हम जिस महान ऐतिहासिक कार्य में संलग्न हैं, उसका तकाजा है कि हमारे देश के प्रचुर खनिज धातु साधनों का व्यापक उपयोग हो। कोयला उद्योग में हमें अगले साल डेढ़ करोड़ टन के शिखर पर निश्चित रूप से पहुंचना होगा और भविष्य में उत्पादन में वृद्धि जारी रखनी होगी। अयस्क खान उद्योग को चाहिए कि वह लोहा और इस्पात उद्योग को पर्याप्त अयस्क सप्लाई करे और विभिन्न अलौह और कच्चे खनिज अयस्कों और अधातु खनिजों का उत्पादन भी बढ़ाये। खासतौर पर यह जरूरी है कि तांबा, सीसा, जस्ता और निकल जैसे अलौह धातु अयस्कों और मिश्र धातुओं के लिए कच्चे मालों की व्यापक खोज, शोध और प्रोसेसिंग को तेज किया जाए और इस्पात तथा मिश्र धातुओं की किस्मों और उत्पादन, दोनों में विस्तार किया जाए। केवल इस तरह ही हम भारी उद्योग के

विकास में एक नये उभार की पूरी तैयारी कर सकते हैं।

खनन उद्योग का विकास करने के लिए हमें भूगर्भीय अन्वेषण को प्राथमिकता देनी चाहिए। इस क्षेत्र में अन्वेषण कर्मियों और तकनीकी उपकरणों के स्तर को और बढ़ाया जाना चाहिए ताकि इस काम में विस्तार लाया जा सके और इसे ज्यादा कामयाबी से किया जा सके।

हमें विद्युत शक्ति उद्योग में भारी पूंजी-निवेश जारी रखना होगा और पहले से ही निर्माणाधीन कांगग्ये बिजलीघर, उनबोंग बिजलीघर, और प्योंगयांग ताप बिजलीघर के निर्माण को तेज करना होगा और इस प्रकार निश्चित कार्यक्रमानुसार उनके कार्य संचालन को आश्वस्त करना होगा।

मशीन-निर्माण उद्योग का और भी विकास पूरे सातवर्षीय योजनाकाल के दौरान एक महत्वपूर्ण काम है। अगले एक या दो साल के अन्दर खासतौर पर बड़े पैमाने पर मशीनों के निर्माण में जोकि अभी तक पिछड़ा हुआ है, तीव्र प्रगति अपेक्षित है। हमें अपने वर्तमान बड़े पैमाने पर मशीनें बनाने वाले संयंत्रों का विस्तार करना चाहिए, उन्हें पूरी क्षमता पर संचालित करना चाहिए और बिजली घरों, कोयला खानों, अयस्क खानों और अन्य बड़े कारखानों के लिए काफी उपकरण उपलब्ध करने में समर्थता के लिए और अधिक नयी फैक्टरियां निर्मित करनी चाहिए। हमें तमाम मशीन-निर्माण फैक्टरियों में उपकरणों के अधिकतम उपयोग में सुधार लाना चाहिए और युक्त ढंग से उत्पादन को संगठित करना चाहिए ताकि वे राष्ट्रीय अर्थतन्त्र को और अधिक मशीनें और उपकरण उपलब्ध कर सकें।

यद्यपि पिछले दो वर्षों में हमारे भारी उद्योग की नींवें बहुत ज्यादा दृढ़ की गयी हैं, फिर भी वे अभी तक पूरी तरह आवश्यक उपकरणों से सज्जित नहीं की गई हैं। अत: हमें भारी उद्योग के अस्थिपंजर पर हाड़मांस भरने का कार्य आगे बढ़ाना दृढ़तापूर्वक जारी रखना चाहिए।

भारी उद्योग के तमाम कारखानों को बेहतर ढंग से सज्जित किया जाना चाहिए और उपकरणों के निरीक्षण और रखरखाव की एक कड़ी प्रणाली स्थापित की जानी चाहिए, तथा आवश्यक सहायक उपकरणों और अन्य परिस्थितियों को पूर्णतया आश्वस्त किया जाना चाहिए, और इस प्रकार उत्पादन को पूरी तरह स्थिर किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त अपने तमाम संभावित साधनों को उपयोग में लाकर उत्पादन प्रक्रियाओं के यन्त्रीकरण और स्वचालन को तेज कर हमें साहसपूर्वक और सकारात्मक ढंग से विज्ञान और प्रविधि की उपलब्धियों को उत्पादन में लागू करना चाहिए, और तकनीकी नूतनता लागू करने के अभियान को और भी व्यापक रूप से विकसित करना चाहिए।

प्रविधि के क्षेत्र में हमें खासतौर पर उन चीजों और कच्चे मालों के स्थानापन्न वस्तुओं के निर्मित किये जाने पर ध्यान देना चाहिये जो हमारे देश में उपलब्ध नहीं है। लोहा और इस्पात उद्योग में हमें लौह-कोक और पेलेट्स के व्यापक उपयोग के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए और लोहा उत्पादन में वृद्धि लाने के लिए लौह-अयस्क के मानकों को ऊंचा करना चाहिए और इसके साथ ही, कोकिंग कोयले की खपत को काफी हद तक घटाना चाहिए । लोहा और इस्पात के निर्माण की प्रक्रिया में आक्सीजन-धमन विधि का व्यापक उपयोग करने और कोयले के गैसीकरण को अमली सूरत देने के लिए भी पग उठाए जाने चाहिए।

हलके उद्योग के लिए अगले वर्ष का मुख्य कार्य यह है कि उत्पादन स्तरों को कायम रखा जाए, २५ करोड़ मीटर कपड़े के इस वर्ष के शिखर को दृढ़ किया जाए और १९६४ में ३० करोड़ मीटर कपड़े के उत्पादन के लिए तमाम स्थितियां उपलब्ध की जाएं। इसके साथ ही हमें रोजमर्रा की जरूरतों और खाद्य पदार्थों में गुणात्मक सुधार लाना होगा और उनके उत्पादन को काफी बढ़ाते हुए उनकी किस्मों में विस्तार करना होगा।

इस काम को पूरा करने के लिए हमें सबसे पहले हलके उद्योग के कच्चे माल के आधारों को दृढ़ करना होगा और हलके उद्योग फैक्टरियों की उत्पादन क्षमता में भारी वृद्धि लानी होगी।

हमें ८ फरवरी विनालोन फैक्टरी, छोंगजिन रासायनिक रेशा मिल तथा ह्येसान कपड़ा मिल के संचालन को पूर्णतया सामान्य गति पर लाना होगा और हलके उद्योग को कच्चे माल उपलब्ध करने वाली अन्य तमाम शाखाओं में उत्पादन बढ़ाना होगा। कपड़ा मिलों और अन्य तमाम हलके उद्योग फैक्टरियों को और ज्यादा मशीनें लगाने के लिए अपने फर्श-क्षेत्र का विवेकपूर्ण उपयोग करना चाहिए, अपने उपकरणों को सुधारना चाहिए और मजदूरों के तकनीकी और कौशल स्तरों को ऊंचा करना चाहिए ताकि उत्पादन को मजबूत गति से बढ़ाया जा सके।

हमारे शहरों और काउंटियों में २,००० से अधिक स्थानीय फैक्टरियां लोगों के लिए उपभोक्ता चीजों के उत्पादन में तीव्र वृद्धि करने की क्षमता रखती है। यह योजना बनायी गयी है कि १९६४ में केवल स्थानीय उद्योग १० करोड़ मीटर कपड़ा और ४०,००० से ५०,००० टन कागज उत्पादित करेगा, तथा प्रत्येक इलाके में दैनिक आवश्यकता की वस्तुओं डिब्बा-बंद आहारों, सोयाबीन की चटनी, सोयाबीन के हलवे और वनस्पति तेल की मांगों को काफी हद तक पूरा करेगा। जब हम स्थानीय पार्टी और आर्थिक कर्मियों के छोंगसान संयुक्त सम्मेलन में निर्धारित

कर्तव्यों को पूरा कर स्थानीय उद्योग को एक उच्चतर चरण में विकसित कर लेंगे तो इस योजना को सम्पन्न करना संभव हो जाएगा।

स्थानीय उद्योग के तीव्र विकास के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है तकनीकी पुनर्निर्माण में जोरदार प्रगति लाना। स्थानीय रूप से संचालित फेक्टरियों को पिछड़ी कारीगर तकनीक से छुटकारा पाना होगा, तमाम उत्पादन प्रक्रियाओं में यन्त्रीकरण और अर्ध-स्वचालन लागू करना होगा और मजदूरों के तकनीकी ज्ञान तथा कौशल में सतत् सुधार लाना होगा।

हमें स्थानीय उद्योग के लिए कच्चे माल के आधारों को दृढ़ बनाना चाहिए ताकि अधिकांश कच्चा माल स्थानीय क्षेत्रों से ही मिल सके। हमें फैक्टरी प्रबन्ध व्यवस्था में सुधार लाने और आम उत्पादन स्तरों का उन्नयन करने पर गम्भीरतापूर्वक ध्यान देना चाहिये।

इस तरह हमारी तमाम स्थानीय रूप से संचालित फैक्टरियों को आकर्षक, आधुनिक और दक्ष बनाया जा सकेगा। उन्हें नयी तकनीक से लैस किया जा सकेगा। वे मुख्यत: स्थानीय कच्चे मालों से विभिन्न उपभोक्ता चीजें तैयार कर सकेंगी और राज्य तथा जनता को अधिक लाभान्वित कर सकेंगी।

कृषि के क्षेत्र में हमें अगले साल चावल की उपज को बढ़ाने पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिये और इस प्रकार कुल उत्पादन में बेहतर अनाज के अनुपात में सुधार लाना चाहिए।

अब हम पूरी आबादी को पर्याप्त अनाज दे रहे हैं और कुछ मात्रा में अनाज को सुरक्षित भी रख सके हैं। लेकिन हम इस पर ही सन्तुष्ट नहीं हो सकते। हमें मेहनतकश लोगों को न-केवल पर्याप्त मात्रा में, बल्कि बढ़िया किस्म का अनाज उपलब्ध करना होगा और इस प्रकार उनके जीवनस्तर को सुधारना होगा।

हमारी पार्टी और सरकार ने इसके लिए कि उत्तरी आधे भाग में तमाम लोग चावल पर निर्वाह कर सकें, अगले कुछ वर्षों में चावल की उपज को ३० लाख टन से अधिक तक बढ़ाने के एक बहुत बड़े काम की शुरूआत की है। वास्तव में यह एक शानदार कार्यक्रम है जो हर व्यक्ति के मन में प्रसन्नता लाता है। यह एक ऐसा कार्य है, जिसे हम निश्चित रूप से पूरा कर सकते हैं।

अनाज और विशेष रूप से चावल की अधिक उपज प्राप्त करने के लिए प्रकृति के कार्यकलाप की परियोजनाओं को जारी रखना जरूरी है।

राज्य विशाल आमनोक-गांग नदी सिंचाई जाल के निर्माण में तेजी लाने पर ध्यान केन्द्रित करेगा जो करीब ९०,००० छोंगबो भूमि को सिंचित करेगा। भविष्य में राज्य उत्तर और दक्षिण ह्वांगहाए प्रान्तों में एक लाख से अधिक छोंगबो धनखेतों और शुष्क खेतों को सिंचाई के अन्तर्गत लाने के लिए र्येसोंग-गांग नदी पर

एक विशाल परियोजना के निर्माण को हाथ में लेगा। यह भी जरूरी है कि मौजूदा सिंचाई सुविधाओं से ज्यादा लाभ उठाया जाए, मध्यम और छोटी सिंचाई परियोजनाओं के निर्माण को जोरदार ढंग से आगे बढ़ाया जाए और पश्चिम तट पर समुद्री भूमि को जोतने-बोने योग्य बनाने के काम को बढ़ावा दिया जाए। जोतने-बोने योग्य बनायी गयी भूमि खासतौर पर अच्छा फल दे रही है। गत वर्ष जोतने-बोने योग्य बनायी गयी ४,००० छोंगबो से अधिक भूमि ने इस वर्ष औसतन प्रति छोंगबो ३ टन से अधिक चावल की उपज दी है। यह निश्चित ही है कि इन धन-खेतों का खारापन जैसे-जैसे कम होता जाएगा, फसलों की उपज उतनी ही बढ़ती जायेगी। यह एक बड़ी अच्छी बात है और हमें इस काम को जारी रखना चाहिए।

अब से शुरू कर १९६४ के बसन्त तक हमें धान के खेतों के क्षेत्र में ६०,००० छोंगबो से अधिक का विस्तार लाना चाहिए ताकि १९६४ में कुल ६०,००,००० छोंगबो धान की खेती के अन्तर्गत आ जाए।

सिंचाई के साथ भूरक्षण के कार्य को भी उचित ढंग से करना होगा। इस साल के अनुभव के आधार पर हमें न केवल बड़ी नदियों को, बल्कि छोटी नदियों को भी नियमित रूप में और सावधानी के साथ सुरक्षित रखना चाहिए और जहां जरूरी हो, सुधार की परियोजनाओं को हाथ में लेना चाहिए। हमें वन और जल रक्षण कार्य—उचित रूप से जंगल लगाना और उनकी देखभाल करना, तमाम नदी तट-बन्धों को ठोस बुनियादों पर कायम करना और नदी तटों को साफ करना—पूरे जोर से जारी रखना चाहिए, ताकि इस वर्ष से भी बड़ी बाढ़ें आने पर नुकसान न हो।

यह जरूरी है कि कृषि में यन्त्रीकरण और रसायनीकरण तेज किया जाए, बीजों में गुणात्मक सुधार का काम जारी रखा जाए और तमाम किस्मों की नयी कृषि तकनीकों को विकसित किया जाए। १९६३ के दौरान राज्य ग्रामीण क्षेत्रों को बड़ी संख्या में लारियां, ट्रैक्टर और विभिन्न किस्मों की अन्य आधुनिक कृषि मशीनरी भी उपलब्ध करेगा। आगामी वर्ष ७ लाख टन रसायनिक खाद प्रयोग किया जाएगा और कृषि के लिए विभिन्न रसायनों और तृणनाशकों की सप्लाई में भी काफी वृद्धि होगी।

इस तरह जब हम ६,००,००० छोंगबो धनखेतों में धान की रोपाई करेंगे, दोहरी फसल के क्षेत्र का विस्तार करेंगे, और तमाम किस्मों की फसलों की प्रति छोंगबो उपज में वृद्धि के लिए कृषि तकनीक में सतत सुधार करेंगे तो हम प्रति वर्ष ५० लाख टन से अधिक फसल काटना जारी रख सकेंगे। इसमें चावल की उपज निश्चित रूप से ३० लाख टन के निशाने पर पहुंच जाएगी।

खाद्य समस्या का पूरी तरह हल हो जाने के बाद पशु संवर्धन के तीव्र विकास

की नयी-नयी संभावनाएं उत्पन्न हो रही हैं।

पार्टी और सरकार की योजना यह है कि १९६४ से चारे के रूप में अनाज भारी परिमाण में अलग रखा जाए। चारे के लिए अनाज के संभरण में भारी वृद्धि को ध्यान में रखते हुए हमें अभी से बढ़िया नस्ल का संवर्धन करने वाले पशुओं को प्राप्त कर, उनकी तादाद बढ़ाकर, तथा उनके बाड़ों और पशु-चिकित्सा और पशु-रोग-निरोधक प्रतिष्ठानों में सुधार और विस्तार ला कर अपने पशु-संवर्धन की बुनियादों का निर्माण शुरू कर देना चाहिए। हमें न-केवल घास चारा खाने वाले पशुओं का बल्कि सूअरों और बत्तखों का भी भारी पैमाने पर पालन करना होगा, ताकि १९६५ तक मांस का उत्पादन २ लाख टन तक पहुंच सके।

तेल और रेशे के उत्पादनों को बढ़ाने के लिए, हमें विभिन्न प्रकार के तिलहेनों और सन, पटुआ तथा रामी जैसे रेशे देने वाली फसलों की बुवाई के क्षेत्रों में विस्तार लाना चाहिए और फल उगाने तथा कीड़े पालने के कामों को और अधिक विकसित करना चाहिए।

उद्योग और कृषि को विकसित करते हुए हमें मेहनतकश लोगों के लिए भवन-निर्माण को भी आगे बढ़ाना चाहिए। भविष्य में भी हमारे निर्माण कर्मियों को शहरी और देहाती क्षेत्रों में मेहनतकश लोगों के लिए ज्यादा आकर्षक, आरामदेह और कार्य के सम्बन्ध में सुविधाजनक आधुनिक मकानों का भारी संख्या में निर्माण करना होगा।

तीन से चार सालों में इन तमाम कार्यों को कामयाबी से पूरा कर हम जनता की जीवन परिस्थिति में आमूल-सुधार लाने और देश की आर्थिक बुनियादों को सुदृढ़ करने में समर्थ होंगे।

तीन से चार साल बाद हमारी जनता के भौतिक तथा सांस्कृतिक जीवन में एक नया, महान परिवर्तन आएगा। तब तक हम ३० लाख टन चावल, दो लाख टन मांस और ३० करोड़ मीटर कपड़ा उत्पादित करने लगेंगे तथा शहरों और गांवों में लाखों परिवारों के लिए नये आधुनिक मकान खड़े हो चुके होंगे। यह स्थिति हमारे लोगों को प्रचुरता का जीवन बिताने—टाइलों की छत वाले मकानों में रहने, चावल और मांस खाने और रेशमी कपड़े पहनने—के योग्य बना देगी। इसका अर्थ यह है कि हमारे देश के मेहनतकश लोगों का पुराना सपना साकार हो जाएगा। वस्तुतः यह एक बड़ी सुखद और गौरवपूर्ण बात होगी।

इसके अतिरिक्त निकट भविष्य में अनिवार्य ९ वर्षीय तकनीकी शिक्षा, जिसके लिए हम तैयारी करते रहे हैं, सार्वभौगिक रूप में लागू कर दी जाएगी। इसके लागू होने से हम अपनी पूरी युवा पीढ़ी का समुन्नत विज्ञान और तकनीकी ज्ञान से युक्त समाजवाद और कम्युनिज्म के दक्ष निर्माताओं के रूप में विकास करने में

समर्थ होंगे। उच्चतर शिक्षा का निरन्तर तीव्र विस्तार किये जाने और अनिवार्य तकनीकी शिक्षा लागू किये जाने से दो या तीन सालों में तकनीशियनों और विशेषज्ञों की कुल संख्या ४ लाख से ऊपर हो जाएगी। इस तरह हमारी तमाम फैक्टरियों और उद्यमों में बिना अपवाद के सारे के सारे शॉप मैनेजर और अन्य उच्चतर कार्यकर्ता योग्यता प्राप्त इंजीनियर और विशेषज्ञ या सहायक इंजीनियर और कनिष्ठ विशेषज्ञ बन जाएंगे।

यह महान संभावना हमारे देश के तमाम मेहनतकश लोगों के लिए अपार जोश का स्रोत है और यह उन्हें उनको वीरोचित श्रम प्रयासों के लिए और भी शक्तिशाली ढंग से प्रेरणा देगी। पार्टी और सरकार के साथ दृढ़तापूर्वक एकजुट हमारे मेहनतकश ऊंची आशा और साहस के साथ तथा एक उज्ज्वल भविष्य की स्पष्ट संभावना को संजोये हुए नयी जीतों की ओर पूरे विश्वास से आगे बढ़ रहे हैं। पार्टी के नेतृत्व में हमारी जनता अपने वीरोचित संघर्ष द्वारा सातवर्षीय योजना को निश्चय ही विजयपूर्वक सम्पन्न करेंगे।

समाजवादी निर्माण में अपने सामने पेश अपार जिम्मेदारियों को कामयाबी के साथ पूरा करने के लिए समाजवाद के निर्माण में एक हथियार के रूप में राज्यीय निकायों की भूमिका और कार्यकलाप को हमें और भी प्रखर करना होगा तथा राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के प्रबन्ध तथा पथप्रदर्शन में सुधार का क्रम जारी रखना होगा।

हमारी पार्टी और सरकार ने नयी बदली हुई परिस्थितियों के अनुरूप राज्यीय और आर्थिक निकायों के कामकाज को पुनर्गठित करने तथा इसके साथ ही अपने कर्मियों के नेतृत्व के स्तर को ऊंचा करने के लिए अनेक महत्वपूर्ण पग उठाये हैं। इन पगों से उन्होंने इस क्षेत्र में महान सफलताएं हासिल की हैं और बहुमूल्य अनुभव संचित किये हैं।

छोंगसान-री में प्राप्त मार्गदर्शन संबंधी अनुभवों के सामान्यीकरण की प्रक्रिया में राज्यीय और आर्थिक निकायों के कार्य में खासतौर पर एक महान परिवर्तन आया है, कार्य करने की क्रान्तिकारी विधियां स्थापित की गयी हैं, नेतृत्व को निचले निकायों के निकटतर लाया गया है और उच्चतर निकाय अपने निचले निकायों की मदद करने लगे हैं; इसके अलावा कार्यकर्ता अवाम को शिक्षित करने, नये सिरे से ढालने, और एकजुट करने और उन्हें उत्साह और सक्रियता से पूरी तरह उजागर करके उनकी तमाम समस्याओं को सुलझाने के लिए उनके बीच गहराई तक जाते हैं।

राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के मार्गदर्शन और प्रबन्ध में छोंगसान-री भावना और छोंगसाग-री विधि को पूर्णतः लागू करने के लिए हमने फैक्टरी-प्रबन्ध के ढांचे को

पुनर्गठित करने, और काउंटी सहकारी कृषि प्रबन्धक समितियों तथा प्रान्तीय ग्रामीण अर्थतन्त्र समितियों की स्थापना करने के प्रयोजन से नये क्रान्तिकारी कदम उठाये।

यद्यपि उद्योग और कृषि में प्रबन्ध व्यवस्था की नयी प्रणालियों को स्थापित हुए कोई ज्यादा समय नहीं हुआ है, फिर भी वे अपनी वरिष्ठता का पूर्णतः प्रदर्शन कर रही हैं।

फैक्टरी प्रबंध ढांचे के पुनर्गठन के फलस्वरूप पार्टी समितियों के सामूहिक नेतृत्व में फैक्टरियों का प्रबन्ध करना और उद्योग पर पार्टी निकायों के नेतृत्व और निरीक्षण को निर्णायक रूप में दृढ़ करना तथा मजदूर वर्ग के बीच पार्टी के राजनीतिक कार्य में सुधार लाना संभव हुआ। अब फैक्टरियों के प्रमुख कार्यकर्ता छोटे-छोटे कामों से मुक्त हैं और इस प्रकार वे उत्पादन को तकनीकी मार्गदर्शन देने और अवाम के साथ बेहतर तौर पर काम करने के लिए उनके बीच गहराई तक जाने में समर्थ हो गये हैं। यह सब इसलिए संभव हुआ है कि फैक्टरी की विभिन्न शाखाओं में दायित्वों और कर्तव्यों का स्पष्ट विभाजन कायम हो गया है, फैक्टरियों को मन्त्रालयों और प्रबन्ध कार्यालयों से मिलने वाले नेतृत्व और सहायता में सुधार हुआ है और एक नयी प्रणाली लागू की गयी है, जिसमें उच्चतर इकाइयां निचली इकाइयों को उपकरण, सामग्री और उपभोक्ता माल उपलब्ध करती हैं।

कृषि में हमने काउंटी सहकारी कृषि प्रबन्ध समितियां स्थापित की हैं, उनकी सेवा के लिए कृषि-अर्थशास्त्री नियुक्त किये हैं और कृषि यन्त्र केन्द्रों, स्थानीय कृषि उपकरण फैक्टरियों और सिंचाई प्रशासन कार्यालयों सरीखे कृषि की सेवा करने वाले राज्यीय निकायों को उनके अधीन ला दिया है। इस प्रकार कृषि का अधिक प्रभावशाली ढंग से—प्रशासनिक ढंग से नहीं, जैसा कि पहले होता रहा है, बल्कि औद्योगिक प्रबन्ध-विधि से—पथप्रदर्शन करना तथा कृषि की उत्पादक शक्तियों, विशेषतः ग्रामीण तकनीकी क्रान्ति के विकास को अधिक उत्साहपूर्वक बढ़ावा देना संभव हुआ है। इसके अतिरिक्त सहकारी फार्मों को राज्य द्वारा प्रदान भौतिक और तकनीकी सहायता तथा नेतृत्व में आमूल सुधार कर और दृढ़ बनाकर, हमने सहकारी स्वामित्व पर राज्य स्वामित्व की नेतृत्वकारी भूमिका को और अधिक बढ़ा दिया है। इसने शहर और गांव के बीच तथा कृषि और उद्योग के बीच उत्पादन की कड़ियों को भी दृढ़ किया है और मजदूर-किसान गठबन्धन में मजदूर वर्ग की नेतृत्वकारी भूमिका को बढ़ाते हुए उस गठबन्धन को मजबूत किया है।

ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि के मार्गदर्शन के लिए स्थापित विशिष्ट निकायों का स्थानीय जन समितियों के कार्य पर बहुत ही ठोस असर हो रहा है। अब प्रांतीय, नगर और काउंटी जन समितियां वाणिज्य, निर्माण, शिक्षा, संस्कृति और सार्व-

जनिक स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान देने और इस प्रकार इन क्षेत्रों में कार्य को बेहतर नेतृत्व प्रदान करने में समर्थ हो गयी हैं।

हम दृढ़ विश्वास के साथ कह सकते हैं कि उद्योग और कृषि में हमारी पार्टी द्वारा प्रारम्भ की गयी यह प्रबंध प्रणालियां समाजवादी अर्थतंत्र की व्यवस्था करने के एक नये शानदार रूप हैं, ऐसे रूप जो मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धांतों और हमारे देश की वास्तविक परिस्थितियों के अनुरूप हैं।

अब सवाल हमारे अधिकारियों की कार्यविधियों को सुधारने और मौजूदा प्रबंध प्रणालियों की श्रेष्ठता के बल पर उनके नेतृत्व के स्तर को निर्णायक रूप से बढ़ावा देने का है। हमारे कर्मियों के काम करने के तौर-तरीकों को नयी प्रबंध प्रणालियों के अनुरूप अभी तक पूर्णतया बदला नहीं गया है और उनका पथप्रदर्शन अभी भी अवाम के महान क्रांतिकारी उत्साह के साथ कदम से कदम मिला कर चलने में असमर्थ है। इन कमियों को यथाशीघ्र दूर किया जाना चाहिए।

हमें पहले राजनीतिक काम को दृढ़ करना होगा और इस प्रकार अवाम की विचारधारात्मक चेतना को सतत प्रखर करना होगा तथा उन्हें क्रांतिकारी कार्यों को पूरा करने में स्वेच्छा से भाग लेने को प्रेरित करना होगा। हमें तमाम क्षेत्रों में राजनीतिक काम को प्राथमिकता देने और मेहनतकशों को पार्टी नीतियों की शिक्षा देने के साथ-साथ जोरदार ढंग से कम्युनिस्ट शिक्षा भी देने और साथ ही उसे व्यावहारिक और प्रशासनिक कार्य से तथा भौतिक और तकनीकी स्थितियों को आश्वस्त करने के कार्य से ठीक ढंग से सम्बद्ध करने के सिद्धांत पर डटे रहना होगा।

इसके साथ ही हमें नेतृत्व को निचली इकाइयों के निकटतर लाना चाहिए और उसकी कार्यविधि में सुधार करना चाहिए। नेतृत्व में महत्वपूर्ण बात यह है कि और भी पूर्वरूप से क्रांतिकारी कार्यविधि—अवाम का भरोसा करने की कार्यविधि—और निचली इकाइयों को वास्तविक सहायता देने की कार्य प्रणाली की स्थापना की जाए।

उत्पादन और निर्माण में सीधे मजदूर और किसान ही संलग्न हैं। वे अपने कार्य-स्थलों में हालात के बारे में अन्य किसी से भी बेहतर जानकारी रखते हैं और वे कई नये विचार सुझा सकते हैं। अतः हमारे नेतृत्वकारी अहलकारों को अवाम से सलाह-मशविरा करने, उनकी राय सुनने, समस्याओं का समाधान खोजने में उनकी जानकारी का उपयोग करने और क्रांति के सामने पेश तमाम कर्तव्यों के निर्वाह के लिए उन्हें गोलबंद करने के लिए उनके कार्यस्थलों में उनके बीच हमेशा गहराई तक जाना चाहिए।

स्पष्टतः निचली इकाइयों को मार्गदर्शन देने का उद्देश्य यह है कि वहां

मजदूरों को अपनी खामियां दुरुस्त करने और अपने काम में अच्छे फल प्राप्त करने में मदद दी जाए। निचली इकाइयों में जाते हुए नेतृत्वकारी अहलकार को मजदूरों को हुक्म नहीं देने चाहिए, बल्कि उन्हें विनम्रतापूर्वक शिक्षा दे कर और उनकी कठिन समस्याओं को सुलझाने के लिए उनके साथ काम कर व्यावहारिक सहायता देनी चाहिए ताकि वे अपना काम भलीभांति कर सकें।

इस प्रकार तमाम क्षेत्रों में छोंगसान री भावना और छोंगसान-री विधि को पूरी तरह लागू करते हुए हमें अवाम के महान क्रांतिकारी उत्साह का कौशल से उपयोग करना चाहिए और अपने राष्ट्रीय अर्थतंत्र की सुरक्षित क्षमता और संभावना से अधिक लामबंद करना चाहिए।

हमारे मेहनतकशों की असीम रचनात्मकता और प्रतिभा समाजवादी निर्माण के महान कार्यक्रम की सफलता की एक निर्णायक गारंटी है।

हमें मेहनतकशों के बीच छोलिमा कार्यटोली आंदोलन को फैलाना और दृढ़ करना चाहिए और उन सबको कम्युनिस्ट विचारों से शिक्षित और दीक्षित करना चाहिए ताकि उन्हें और भी दृढ़ता से पार्टी के साथ एकजुट किया जा सके और उनके क्रांतिकारी उत्साह तथा रचनात्मक क्षमता का निर्बाध विकास हो सके। इस तरीके से हम समाजवादी निर्माण के तमाम क्षेत्रों में नूतनताएं और तीव्र प्रगति लाना जारी रख सकेंगे।

हमारे तमाम कार्यकर्ताओं और अन्य मेहनतकशों को आडंबरहीन जीवन बिताते हुए, अपनी चौकसी में कभी भी शिथिलता न लाते हुए और हर कठिनाई को आत्मनिर्भरता की क्रांतिकारी भावना के साथ वीरतापूर्वक पार करते हुए अनैतिकता और सुस्ती का विरोध करने की क्रांतिकारी भावना का अधिक दृढ़ता से निर्माण करना चाहिए।

क्रांति के लिए संघर्षरत कम्युनिस्टों के रूप में हम में हमेशा आत्मनिर्भरता की भावना होना जरूरी है। अन्यथा हम अपनी शक्ति में विश्वास खो देंगे और अपने देश के आंतरिक साधनों का विकास करने के लिए कोई भी गंभीर प्रयास न करेंगे और इस तरह क्रांति के ध्येय को पूरा करने में असफल रहेंगे।

बेशक हमें समाजवादी देशों के बिरादराना जनगण और संसार के तमाम प्रगतिशील लोगों की सहायता और समर्थन की जरूरत बनी रहेगी। यह हमारी विजय को आश्वस्त करने के लिए महत्वपूर्ण है। लेकिन स्वयं कुछ करने की बजाय विदेशों से ही मदद चाहना कोई क्रांतिकारी मनोवृत्ति नहीं। इस मनोवृत्ति से हम क्रांति संपन्न नहीं कर सकते। हमारी क्रांति की विजय का निर्णायक उपादान हमारी अपनी शक्ति है। हमें अपने देश में एक नये समाज की रचना करनी होगी और मुख्यतः अपने ही प्रयासों से कोरियाई क्रांति की अंतिम विजय हासिल करनी

होगी। यह सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद के सिद्धांतों के अनुरूप है और यह अन्तर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी आंदोलन के विकास में योगदान करेगा।

समाजवादी अर्थतंत्र का निर्माण करते हुए हमें आत्मनिर्भरता के सिद्धांत के परिपालन पर भी दृढ़ रहना चाहिए और इस आधार पर बिरादराना देशों के साथ आर्थिक और सांस्कृतिक सहयोग को बढ़ावा देते हुए एक स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थतंत्र के लिए अधिक ठोस बुनियादों की स्थापना की ओर बढ़ना चाहिए।

स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थतंत्र के निर्माण का अर्थ है विविध शाखा-प्रशाखाओं वाले अर्थतंत्र का निर्माण करना और उसे आधुनिक तकनीक से लैस करना तथा कच्चे मालों के लिए अपने ठोस आधार निर्मित करना और इस प्रकार एक ऐसी व्यापक आर्थिक प्रणाली का निर्माण करना जिसमें अर्थतंत्र की तमाम शाखाएं ढांचे की दृष्टि से एकदूसरे से सम्बद्ध हों, ताकि देश को धनाधान्य से भरपूर और सशक्त बनाने और जन-जीवन की परिस्थितियों को सुधारने के लिए जरूरी भारी और हल्के उद्योग और कृषि के अधिकांश उत्पादन देश के अंदर ही उत्पादित किये जा सकें।

अर्थतंत्र का इस ढंग से निर्माण करके ही हम अपने देश के प्राकृतिक साधनों का सर्वथा विवेकपूर्ण और व्यापक रूप से प्रयोग कर सकते हैं, उत्पादक शक्तियों का तेजी से विकास कर सकते हैं, जन जीवनस्तर को सतत ऊंचा उठा सकते हैं और देश की आर्थिक तथा राजनीतिक शक्ति को और बढ़ा सकते हैं और स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थतंत्र का निर्माण करके ही हम बिरादराना देशों के साथ एकदूसरे की आर्थिक जरूरतों को पूरा कर सकते हैं, सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद तथा पूर्ण समता और पारस्परिक लाभ के सिद्धांतों के आधार पर उनके साथ अधिक कारगर आपसी सहयोग और श्रम-विभाजन आश्वस्त कर सकते हैं और समूचे समाजवादी शिविर की शक्ति के दृढ़ीकरण में योगदान कर सकते हैं।

अपनी पार्टी के नेतृत्व में हमारे देशवासियों ने घनघोर लड़ाइयां लड़ कर एक स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थतंत्र की बुनियाद कायम की हैं। परिणामस्वरूप हमने न केवल देश की आर्थिक शक्ति को सुदृढ़ किया है और अपने जीवनस्तर को और भी ऊंचा उठाया है, बल्कि हम बिरादराना देशों के साथ अधिक आपसी सहयोग को बढ़ावा देने और अपने देश के लिए इन देशों द्वारा वहन किये जा रहे भारी बोझ को काफी कम करने में समर्थ हुए हैं। बिरादराना देशों ने हमें जो सक्रिय समर्थन और सहायता दी है, यह उसकी उपयुक्त भरपाई हैं, और यह समूचे समाजवादी शक्ति के दृढ़ीकरण में हमारा महत्वपूर्ण योगदान है।

हम आत्मनिर्भरता के परचम तले सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के सिद्धांतों पर बिरादराना देशों के साथ अपने सहयोग को सतत विकसित करते हुए अपने

प्रयास जारी रखेंगे और अपने आंतरिक साधनों को अधिक लामबंद करेंगे। इस प्रकार हम अपने देश में समाजवाद के निर्माण में तेजी लाएंगे तथा विश्व समाजवादी व्यवस्था के शक्ति-वर्धन में योगदान करेंगे।

पार्टी और सरकार के गिर्द इस्पाती दृढ़ता से एकजुट हमारी जनता छोलिमा अश्वारोहियों की भावना से प्रत्येक कठिनाई को वीरतापूर्वक पार करते हुए अपना पुरजोर बढ़ाव जारी रखेंगे और सातवर्षीय योजना को निश्चित रूप से पूरा करेंगे और समाजवाद के उच्च शिखर पर जा पहुंचेंगे।

साथी विधायको,

गणतंत्र के उत्तरी आधे भाग में समाजवाद के निर्माण में प्राप्त महान सफलताएं दक्षिण कोरिया के लोगों पर, जो अमरीकी साम्राज्यवाद के औपनिवेशिक शासन के अधीन हैं, एक महान क्रांतिकारी प्रभाव डाल रही हैं। ये सफलताएं कोरिया में क्रांति और प्रतिक्रांति के बीच शक्ति संतुलन को अधिकाधिक क्रांति के पक्ष में करती जा रही हैं।

समाजवादी निर्माण में अपने उत्तर कोरियाई भाइयों द्वारा हासिल की गयी महान जीतों से प्रेरित हो कर दक्षिण कोरियाई जनता ने एक वीरोचित संघर्ष का झंडा बुलन्द किया और सिंगमन-री शासन को उलट दिया जिसने १२ साल तक उन्हें बुरी तरह रौंदा था, और अब वे अमरीकी साम्राज्यवादी औपनिवेशिक शासन और सैन्य तानाशाही के विरुद्ध एक जोरदार संघर्ष चला रहे हैं।

अप्रैल के जन विद्रोह के बाद दक्षिण कोरिया में होने वाली घटनाएं यह प्रकट करती हैं कि शासन में "कानूनन" बदलाव या मात्र शक्ति से एक आतंकवादी तानाशाही की स्थापना करके अमरीकी साम्राज्यवादी दक्षिण कोरिया में राजनीतिक और आर्थिक संकटों पर काबू पाने में समर्थ नहीं हो सकते और न ही लोकतांत्रिक स्वतंत्रता, जीने के अधिकार और देश के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के लिए वहां के अवामी संघर्ष को कुचलने में समर्थ हो सकते हैं।

अमरीकी साम्राज्यवादियों और दक्षिण कोरियाई सैनिक शासन द्वारा ढाये गये खूनी अत्याचारों के बावजूद दक्षिण कोरिया की जनता के विशाल समूहों में अमरीका-विरोधी भावनाएं भड़क रही हैं और देशभक्त तथा जनवादी शक्तियां धीरे-धीरे बलवती होती जा रही हैं।

सैन्य फासिस्ट गिरोह द्वारा सत्ता पर कब्जा किये जाने के बाद डेढ़ वर्ष में

दक्षिण कोरिया में राजनीतिक और आर्थिक संकट गहरे हो गये हैं। अर्थतंत्र में और बिगाड़ आया है, जन जीवनस्तर ह्रास पर है और भ्रष्टाचार तथा सामाजिक अव्यवस्था बढ़ रही है।

दक्षिण कोरिया में तमाम राजनीतिक पार्टियां और सामाजिक संगठन भंग कर दिये गये हैं और पिछले एक साल से अधिक समय से फौजी कानून लागू है।

जनता की जनवादी स्वतंत्रता पर अभूतपूर्व बर्बर प्रहार करते हुए दक्षिण कोरियाई सैनिक सरकार "एक आत्मनिर्भर अर्थतंत्र के निर्माण," "आर्थिक विकास के लिए पंचवर्षीय योजना" या "कंगालों के लिए राहत" के बारे में बढ़-चढ़ कर बातें बनाते हुए जन असंतोष को शांत करने के लिए जबर्दस्त यत्न कर रही है। लेकिन कोई भी यह आशा नहीं करता कि दक्षिण कोरियाई सैनिक शासन, जो-कि केवल अमरीकी साम्राज्यवादी औपनिवेशिक शासन की कठपुतली है, ऐसा कुछ भी कर सकेगा। यह पहले ही स्पष्ट हो चुका है कि ये सारी बातें सर्वथा गलत हैं।

अमरीकी साम्राज्यवादी आधिपत्य में दक्षिण कोरिया का अर्थतंत्र ऐसी विनाश की हालत में पहुंच चुका है जिससे अब उसका उद्धार नहीं हो सकता।

दक्षिण कोरिया के अर्थतंत्र की मुख्य शाखाओं पर कब्जा करने के बाद अमरीकी साम्राज्यवादियों ने इसे अपनी फौजी कठपुतली में बदल दिया है और दक्षिण कोरियाई राष्ट्रीय अर्थतंत्र को सर्वथा नष्ट कर दिया है।

अमरीकी एकाधिकारी पूंजी और दलाल पूंजी के दबाव में दक्षिण कोरिया में राष्ट्रीय उद्योग का गला पूरी तरह घोंट दिया गया है और उसे बरबाद कर दिया गया है। कच्चे मालों के बढ़ते अभाव और धन की कमी तथा बाजार में माल बेचने की बढ़ती कठिनाइयों से सैनिक शासन की स्थापना के बाद केवल एक वर्ष में ही औद्योगिक उत्पादन ६ प्रतिशत गिर गया है।

दक्षिण कोरिया में कृषि भी पूर्णतया नष्ट कर दी गयी है। किसानों के विशाल समुदायों का अभी तक सामंतवादी भू-स्वामी प्रणाली में बुरी तरह शोषण किया जा रहा है। अमरीकी साम्राज्यवादियों और जमींदारों द्वारा किये जा रहे लूट-पाट और शोषण ने दक्षिण कोरियाई कृषि को बुरी तरह तबाह कर दिया है, कुल जोतने-बोने योग्य भूमि और वास्तविक काश्त की भूमि में निरंतर कमी होती जा रही है और कृषि उत्पादन अभी तक पिछड़ी मध्ययुगीन तकनीक पर आधारित है। इस तरह दक्षिण कोरिया, जो पहले अनाज का भंडार था, अब फिर दुर्भिक्ष के क्षेत्र में बदल दिया गया है और उसे हर साल ४० लाख से ५० लाख सोक अमरीकी फाजिल अनाज आयात करना पड़ता है।

तमाम मोर्चों पर आर्थिक दिवालियापन और अमरीकी साम्राज्यवादियों,

जमींदारों और दलाल पूंजीपतियों के हाथों निर्मम शोषण की वजह से दक्षिण कोरियाई जनता अवर्णनीय कष्ट भोग रही है ।

लाखों मेहनतकश अपनी नौकरियां खो चुके हैं और सड़कों पर धक्के खा रहे हैं। चूंकि उन्हें राहत देने के लिए कोई भी कदम नहीं उठाया जा रहा, इसलिए वे भुखमरी के कगार पर हैं। दक्षिण कोरिया में इस समय तमाम सक्षम लोगों में से ६० प्रतिशत बेरोजगार अथवा अर्धबेकार हैं ।

लोग बिलकुल कंगाल हो चुके हैं। तथापि दक्षिण कोरियाई हुक्मरान अपने बढ़ते फौजी खर्चों को पूरा करने के लिए मेहनतकशों से और ज्यादा टैक्स वसूल रहे हैं। १९६२ में दक्षिण कोरियाई जनता पर टैक्सों का भार १९६० के मुकाबले में ४३ प्रतिशत बढ़ गया। सैन्य व्यय में भारी वृद्धि से उत्पन्न गंभीर मुद्रास्फीति के परिणामस्वरूप चीजों के भाव निरंतर बढ़ते जा रहे हैं। इस वर्ष जुलाई में दक्षिण कोरिया में चीजों के भाव १९६० के मुकाबले में ४० प्रतिशत बढ़ चुके थे।

अमरीकी साम्राज्यवादियों ने दक्षिण कोरियाई अर्थतंत्र को पूर्णतया अस्त-व्यस्त कर दिया है और पूरे दक्षिण कोरिया को ऐसे जीवित नरक में बदल दिया है जहां सामूहिक आतंक और अत्याचार व्याप्त हैं और दक्षिण कोरियाई जनता अकथनीय मुसीबतें झेल रही है। अमरीकी लुटेरों के कारण लोगों के जान व माल निरंतर खतरे में रहते हैं और हमारे स्वदेशवासी भाई और बहनें आक्रांताओं द्वारा अपमानित किये जा रहे हैं और मारे जा रहे हैं। दक्षिण कोरिया में व्यापक भुख-मरी का दौर-दौरा है और प्रायः हर रोज कई-कई लोग भूख से मर रहे हैं।

यह दक्षिण कोरिया में अमरीकी साम्राज्यवाद के औपनिवेशिक शासन और दक्षिण कोरियाई शासकों की देशद्रोहपूर्ण नीति की देन है।

दक्षिण कोरिया में वर्तमान स्थिति को समाप्त करने और वहां के लोगों को भूख और गरीबी से मुक्ति दिलाने का एक मात्र उपाय यह है कि अमरीकी सेनाओं को खदेड़ बाहर किया जाए और राष्ट्रीय पुनरेकीकरण संपन्न किया जाए।

जब तक देश सर्वथा स्वतंत्र और पुनः एक नहीं हो जाता, तब तक कोरियाई जनता एक मिनट के लिए भी चैन से नहीं रह सकेगी और न ही दक्षिण कोरिया के लोग स्वयं को अपने वर्तमान कष्टों से मुक्त कर सकेंगे। राष्ट्रीय पुनरेकीकरण के महान कार्य का संपादन उत्तर और दक्षिण में तमाम कोरियाइयों की सर्वसम्मत आकांक्षा है। यह सर्वोच्च राष्ट्रीय कर्तव्य है।

हमारे देश का पुनरेकीकरण विदेशी सेनाओं को खदेड़ने के बाद बिना किसी बाहरी शक्ति के हस्तक्षेप के स्वतंत्रतापूर्वक और शान्तिपूर्ण उपायों द्वारा सम्पन्न किया जाना चाहिए।

दक्षिण कोरिया को अपने उपनिवेश और सैनिक अड्डे में परिणत कर लेने तथा दक्षिण कोरियाई समाज को तबाही के गर्त में ठेल देने के बाद अमरीकी साम्राज्यवादी तनाव बढ़ाकर कोरिया में शान्ति के लिए निरंतर खतरा पैदा कर रहे हैं। वे हर प्रकार की घृणित योजनाएं चलाकर हमारे देश के पुनरेकीकरण में बाधाएं उत्पन्न कर रहे हैं।

दक्षिण कोरिया पर अमरीकी साम्राज्यवादियों का आधिपत्य और उनकी आक्रामक नीति दक्षिण कोरिया की जनता की तमाम मुसीबतों और कष्टों का मूल कारण है। वे दक्षिण कोरियाई समाज की प्रगति और हमारे देश के शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण में मुख्य बाधा हैं।

इतिहास में ऐसा कोई दृष्टांत नहीं है कि जब कोई देश विदेशी आक्रामक सेनाओं के कब्जे में हो और बाहरी हस्तक्षेप से प्रताड़ित हो तो ऐसी अवस्था में वह स्वतंत्रता और पुनरेकीकरण प्राप्त कर सका हो।

अमरीकी आक्रामक सेना को दक्षिण कोरिया से खदेड़ कर ही दक्षिण कोरियाइयों को भूख, गरीबी और औपनिवेशिक दासता से मुक्त कराना और हमारे विभक्त देश को पुनः एक करने की राष्ट्रीय आकांक्षा पूरी करना संभव होगा। जो लोग अमरीकी सेनाओं द्वारा दक्षिण कोरिया पर कब्जे को न्यायोचित ठहराते हुए देश के पुनरेकीकरण की बातें करते हैं, वे वास्तव में पुनरेकीकरण के विरोधी और साम्राज्यवाद के एजेंट हैं।

अमरीकी साम्राज्यवादियों द्वारा कोरिया में अपनी सेनाओं को तैनात किये जाने की कतई कोई वजह नहीं है और न ही इसे किसी भी हालत में उचित ठहराया जा सकता है। अमरीकी सेना को दक्षिण कोरिया से निकलना होगा और कोरियाई प्रश्न को स्वतः कोरियाई लोगों को सुलझाना होगा।

अमरीकी साम्राज्यवादी शोर मचा रहे हैं कि "उत्तर कम्युनिस्ट हमले" को रोकने के लिए दक्षिण कोरिया में अमरीकी सेना की तैनाती जरूरी है। लेकिन वे ऐसा झूठ बोलकर किसी की भी आंखों में धूल नहीं झोंक सकते।

हमारी पार्टी और गणतंत्र की सरकार कोरियाई प्रश्न के शांतिपूर्ण समाधान के लिए अपने प्रयासों पर दृढ़ है। दक्षिण की ओर मार्च करने का हमारा कोई इरादा नहीं है। अस्त्रबल से कोरियाई पुनरेकीकरण के प्रश्न को सुलझाने का हमारा कोई इरादा नहीं है।

"उत्तर से कम्युनिस्ट हमले" की बातें दक्षिण कोरिया पर कब्जे को जारी रखने, पूरे कोरिया पर अपने हमले का विस्तार करने और एशिया में अपने आक्रमण को आगे बढ़ाने के अमरीकी साम्राज्यवादियों के घृणित मन्सूबे पर परदा डालने के सिवाय और कुछ नहीं है। दक्षिण कोरिया के लोगों को चाहिए कि वे कोरियाइयों

को कोरियाइयों से भिड़ाने के अमरीकी साम्राज्यवादियों के कुचक्रों को सर्वथा बेनकाब करें।

हम समझते हैं कि संयुक्त राष्ट्र को कोरियाई प्रश्न पर विचार करने का कोई अधिकार नहीं है और न ही उसे हमारे देश के आंतरिक मामलों में दखल देने का अधिकार है। कोरियाई प्रश्न पर विदेशों द्वारा न्यूयार्क या वाशिंगटन में विचार नहीं किया जाना चाहिए। इस पर स्वतः कोरियाइयों को सिओल या प्योंगयांग में विचार करना चाहिए।

कोरियाई पुनरेकीकरण का प्रश्न कोरियाई लोगों का एक आंतरिक मामला है और इसे केवल वे ही सुलझा सकते हैं। विदेशों के पास कोरिया के आंतरिक मामलों में दखल देने का क्या औचित्य है और वे कैसे हमारे राष्ट्र के आंतरिक मामलों को सुलझा सकते हैं ? बाहरी शक्तियों पर निर्भर रहते हुए देश के पुन-रेकीकण की प्राप्ति का यत्न करना केवल एक भ्रम है और यह सारे कोरिया को साम्राज्यवादी हमले के सामने खुला छोड़ने के बराबर है।

कोरियाई जनता अपने प्रयासों से ही देश का पुनरेकीकरण कर सकती है और उसे करना भी चाहिए।

हमारे देश का पुनरेकीकरण एक पेचीदा और कठिन कार्य है जिसे आसानी से पूरा नहीं किया जा सकता है। हम एक कठिन और लंबे संघर्ष द्वारा ही राष्ट्रीय पुनरेकीकरण के महान कर्तव्य को संपन्न कर सकते हैं क्योंकि विश्व साम्राज्यवाद के सर्वोच्च आका—अमरीकी साम्राज्यवादियों—ने दक्षिण कोरिया पर कब्जा कर रखा है और इस समय वे पूरे कोरिया और एशिया के खिलाफ एक आक्रामक नीति का अनुसरण करते हुए नया युद्ध छेड़ने के लिए जनूनाना ढंग से षड्यंत्र रच रहे हैं।

हमें इस शर्त पर कि विदेशी सेनाएं दक्षिण कोरिया से हटा ली जाएंगी, अनेक दरमियानी कदम उठाते हुए क्रमिक ढंग से अपने देश का स्वतंत्र, शान्तिपूर्ण पुनरेकी-करण संपन्न करना चाहिए।

देश के पुनरेकीकरण को प्राप्त करने के लिए यह बड़े महत्व की बात होगी कि अमरीकी साम्राज्यवादियों द्वारा उत्पन्न की गयी उत्तर और दक्षिण के बीच की तनातनी समाप्त की जाए।

अमरीकी सेना को वापस बुलाया जाना चाहिए, उत्तर और दक्षिण के बीच एकदूसरे पर हमला न करने के संबंध में एक शान्ति-करार किया जाना चाहिए और दोनों में से प्रत्येक की सशस्त्र सेनाओं को घटाकर एक-एक लाख या उससे भी कम कर दिया जाना चाहिए। हमने अनेक बार यह प्रस्ताव किया है और इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हमने कोई भी कोर-कसर नहीं उठा रखी है।

न उत्तर और न दक्षिण अपनी सशस्त्र सेनाओं में और न हथियारों में वृद्धि

करें। इसकी बजाए सशस्त्र सेनाओं को घटाया जाए और तनातनी को दूर किया जाए, ताकि दोनों पक्ष राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के निर्माण और जन जीवनस्तर में सुधार के लिए काम कर सकें।

अमरीकी साम्राज्यवादियों ने दक्षिण कोरिया में ७ लाख भाड़े के टट्टुओं की सेना कायम कर रखी है और इस तरह वे जनता को पीस डाल रहे हैं। दक्षिण में इतनी बड़ी सैन्य-शक्ति का राष्ट्रीय प्रतिरक्षा से कोई भी सरोकार नहीं है। यह केवल आक्रमण की नीति को पूरा करने के लिए अमरीकी साम्राज्यवाद का एक साधन है। यह दक्षिण कोरिया पर असह्य भारी बोझ और कोरिया में शांति के लिए गम्भीर खतरा है।

उत्तर और दक्षिण कोरिया के बीच शांति-समझौता और उनकी अपनी-अपनी सशस्त्र सेनाओं में कटौती सबसे बढ़ कर तो दक्षिण के लोगों को ही फौजी खर्चे के भारी बोझ से राहत देगी और उस तनाव को दूर कर देगी जो उत्तर और दक्षिण के बीच कृत्रिम रूप में पैदा कर रखा गया है, और इस प्रकार आपसी विश्वास का माहौल उत्पन्न होगा।

दक्षिण कोरिया से तमाम विदेशी सेनाओं की वापसी, उत्तर और दक्षिण के बीच शांति-करार, और उनकी सशस्त्र सेनाओं में कटौती देश के पुनरेकीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण प्रारंभिक कदम सिद्ध होंगे।

उत्तर और दक्षिण के बीच तनातनी के उन्मूलन के फलस्वरूप हम एक और कदम आगे बढ़ाने और आर्थिक तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सहयोग में शामिल होने में समर्थ हो जायेंगे।

इस समय दक्षिण कोरिया में ज्वलंत समस्या उसके ध्वस्त अर्थतन्त्र की बहाली और वहाँ के लोगों के जीवन की दुखदायी परिस्थितियों में सुधार की है। इस समस्या के समाधान का एकमात्र उपाय उत्तर और दक्षिण के बीच आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों की स्थापना और आदान-प्रदान तथा सहयोग को बढ़ावा देना है।

हमारी पार्टी के नेतृत्व में उत्तरी आधे भाग में लोगों ने एक वीरोचित संघर्ष द्वारा उद्योगीकरण की बुनियादें रख ली हैं और स्वतन्त्र राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के लिए एक ठोस आधार निर्मित कर लिया है। गणतंत्र के उत्तरी आधे भाग में अब तक स्थापित आर्थिक बुनियादें पूरे कोरिया के राष्ट्रीय अर्थतंत्र के स्वतंत्र विकास के लिए एक निश्चित गारंटी हैं।

उत्तर और दक्षिण कोरिया के बीच जब आर्थिक सहयोग और आदान-प्रदान से दक्षिण कोरिया के लिए उत्तर कोरिया में निर्मित आर्थिक बुनियादों का लाभ उठाना संभव हो जाय तभी उसके उद्योग और कृषि को बहाल और विकसित

किया जा सकेगा, लाखों बेरोजगारों को रोजगार दिया जा सकेगा और उसके लोगों का जीवन आमतौर पर सुधारा जा सकेगा।

हमारे ख्याल में उत्तर-दक्षिण आदान-प्रदान को प्रभावशाली ढंग से संचालित करने के प्रयोजन से उत्तर और दक्षिण कोरिया के प्रतिनिधियों पर आधारित एक आर्थिक समिति गठित करना जरूरी है।

कोरियाई जनता की आकांक्षाओं के प्रतिकूल दक्षिण कोरियाई अधिकारी इस समय विदेशी पूंजी को ला कर संकट से उबरने का मार्ग खोजने का यत्न कर रहे हैं। विदेशी पूंजी का प्रवेश निर्भरता और राष्ट्रीय दिवालियेपन की दिशा में ले जाता है। यह पहले से ही ध्वस्त दक्षिण कोरियाई अर्थतंत्र को विनाश के गड्ढे में ही और भी गहरा फेंक देगा और दक्षिण कोरिया को साम्राज्यवाद पर अधिकाधिक आश्रित कर देगा। मुक्ति के बाद १७ वर्ष से भी अधिक समय में दक्षिण कोरिया को मिली अमरीकी "सहायता" का परिणाम इसका ज्वलंत प्रमाण है।

जब कोरिया की सशक्त आर्थिक बुनियादों पर निर्भर करते हुए उत्तर और दक्षिण अपने प्रचुर आंतरिक साधनों से लाभ उठाने के लिए अपने प्रयासों को संयुक्त करेंगे तो हमारा राष्ट्र न-केवल अपने पैरों पर खड़ा होने में समर्थ हो जायेगा बल्कि एक आधुनिक धन-धान्य से परिपूर्ण शक्तिशाली और स्वतन्त्र राज्य का निर्माण भी कर लेगा।

जब उत्तर और दक्षिण के बीच आदान-प्रदान और आपसी सहयोग अमल में आएगा तो हम देश के प्रारम्भिक पुनरेकीकरण के लिए युगान्तरकारी कार्रवाइयों की दिशा में एक और कदम उठाने में समर्थ होंगे।

प्रारम्भिक पुनरेकीकरण की प्राप्ति के लिए हमारे विचार में महासंघ की स्थापना, जिसके लिए पहले ही गणतन्त्र की पार्टी और सरकार प्रस्ताव पेश कर चुकी हैं, एक उपयुक्त पग होगा।

महासंघ विषयक हमारे प्रस्ताव का उद्देश्य उत्तर और दक्षिण कोरिया में वर्तमान सामाजिक-आर्थिक व्यवस्थाओं को यथावत बनाये रखते हुए और दोनों सरकारों की कार्यगत स्वतन्त्रता को आश्वस्त रखते हुए पूरे रूप से सम्बद्ध मामलों को संयुक्त रूप से सुलझाने के लिए जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया की सरकार और "कोरिया गणतन्त्र" की सरकार के प्रतिनिधियों पर आधारित एक सर्वोच्च राष्ट्रीय समिति की स्थापना करना है।

महासंघ के अन्तर्गत न उत्तर और न दक्षिण एकदूसरे के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करेगा, और न एक अपनी इच्छा दूसरे पर थोपेगा। उत्तर और दक्षिण कोरिया अपनी-अपनी राजनीतिक आस्थाओं के अनुसार स्वतन्त्र रूप से काम करेंगे और समान राष्ट्रीय हित के केवल उन मामलों को, जिनके बारे में

महासंघीय समिति के माध्यम से सहमति हो गयी हो, संयुक्त रूप से सुलझाएंगे।

विभिन्न भाषाओं, रीति-रिवाजों और संस्कृतियों वाले राष्ट्रों के महासंघ के प्रतिकूल हम जिस महासंघ का प्रस्ताव कर रहे हैं, वह एक ही राष्ट्र के, जिसकी अपने पूरे लम्बे इतिहास में एक ही भाषा, रीति-रिवाज और संस्कृति रही है, अस्थायी रूप से विभक्त दो अंगों का एकदूसरे के साथ मिलन होगा। अतः उत्तर और दक्षिण के महासंघ की स्थापना हमारे लिए देश की खुशहाली और राष्ट्र के लाभ के लिए जोरदार काम करना संभव बनाएगी जैसे समन्बित ढंग से राष्ट्रीय अर्थतन्त्र और संस्कृति का विकास करना और तमाम अन्तर्राष्ट्रीय कार्यकलाप के विभिन्न क्षेत्रों में एक राष्ट्र के रूप में सामने आना, आदि।

महासंघ की स्थापना उत्तर और दक्षिण के बीच सम्पर्कों और पारस्परिक सौहार्द्र को बढ़ावा देगी, राजनीतिक-आर्थिक नातों को दृढ़ करेगी और राष्ट्रीय सौहार्द्र का माहौल उत्पन्न करेगी। इस प्रकार वह हमारे देश के सम्पूर्ण शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण की प्राप्ति में एक बड़े ही अनुकूल चरण की शुरूआत करेगी।

हम इन मध्यवर्ती कदमों को उठा कर अपने देश का पूर्ण पुनरेकीकरण हासिल कर सकते हैं और यह हमें अवश्य करना चाहिए।

जैसा कि हमारी पार्टी और सरकार बार-बार स्पष्ट कर चुकी हैं, इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जनवादी सिद्धान्तों के अनुसार पूरे देश में आयोजित स्वतंत्र चुनाव के आधार पर उत्तर और दक्षिण कोरिया के लोगों के तमाम तबकों का प्रतिनिधित्व करने वाली एक संयुक्त केन्द्रीय सरकार स्थापित करनी होगी।

उत्तर और दक्षिण कोरिया, दोनों जगह लोगों के लिए यात्रा की स्वतन्त्रता और राजनीतिक सक्रियता की स्वतन्त्रता तथा विदेशी शक्तियों द्वारा किसी भी हस्तक्षेप की अस्वीकृति स्वतन्त्र अखिल कोरिया चुनावों के लिए पूर्वशर्तें हैं।

दक्षिण कोरिया में देशभक्तिपूर्ण और जनवादी आन्दोलन के दमन को एकदम बंद करना होगा, और बोलने की आजादी, प्रेस आजादी, संघ और सभा की आजादी तथा प्रदर्शन और हड़ताल करने की आजादी की गारंटी करनी होगी। सैन्य शासन द्वारा प्रतिबन्धित तमाम राजनीतिक दलों और सामाजिक संगठनों को बहाल करना होगा और उनकी गतिविधियों की स्वतन्त्रता को आश्वस्त करना होगा।

उत्तर और दक्षिण कोरिया में तमाम राजनीतिक दलों, सामाजिक संगठनों और सार्वजनिक व्यक्तित्वों को देश के तमाम भागों में सक्रियता की आजादी और बिना किसी भी पाबन्दी के जनता के सामने अपने राजनीतिक विचार व्यक्त करने की आजादी की गारंटी देनी होगी।

ऐसी स्थितियां जब आश्वस्त कर दी जाएं, तभी कोरियाई जनता वास्तविक

रूप से स्वतन्त्र चुनावों द्वारा एक अखिल कोरिया केन्द्रीय सरकार स्थापित कर सकती है और देश का अविकल शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण संपन्न कर सकती है।

देश के पुनरेकीकरण पर कोरिया की मजदूर पार्टी और जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया की सरकार की यह स्थिति पूरे राष्ट्र के हितों और पूरी कोरियाई जनता की आकांक्षाओं को अभिव्यक्त करती है।

दक्षिण कोरिया में कुछ लोग हमारे देश के शान्तिपूर्ण एकीकरण के कट्टर विरोधी हैं, उनका कहना है कि पुनरेकीकरण दक्षिण कोरिया को "कम्युनिस्टीकरण" की दिशा में ले जाएगा। दक्षिण कोरिया में कम्युनिज्म का आदर्श लाया जाना है या नहीं लाया जाना है, यह एक ऐसा मामला है, जिस का निर्णय स्वयं दक्षिण कोरियाई जनता ही कर सकती है, और कोई भी इसे उन पर थोप नहीं सकता। कोई भी प्रगतिशील विचार और समाज व्यवस्थाएं बाहर से थोपी नहीं जा सकतीं। उन्हें स्वयं लोग अपनी स्वतन्त्र इच्छा से चुनते हैं। दक्षिण कोरिया के "कम्युनिस्टीकरण" की आशंका के बहाने से देश के पुनरेकीकरण का बिरोध करना पुनरेकीकरण के लिए समूची जनता की हार्दिक आकांक्षा के विरुद्ध जाना है और पूरे राष्ट्र के महत्वपूर्ण हितों से विश्वासघात करना है।

दक्षिण कोरिया के शासक अभी तक "पुनरेकीकरण के लिए कम्युनिज्म का सफाया करने की अपनी पुरानी धारणा" पर अड़े हुए हैं और "कम्युनिज्म पर छा जाने" के लिए अपनी शक्ति का संवर्धन करने के बारे में प्रलाप कर रहे हैं।

पहले ही साम्राज्यवाद की शक्ति द्वारा पूरे कोरिया में औपनिवेशिक प्रणाली थोपने और कम्युनिज्म का सफाया करने के यत्न किये जा चुके हैं, लेकिन यह लक्ष्य सर्वथा असाध्य सिद्ध हुआ है। प्राय: ४० वर्ष तक जापानी साम्राज्यवादी औपनिवेशिक शासन कोरिया में कम्युनिस्ट आन्दोलन को मिटा नहीं सका। सिंगमन-री, जिसने कम्युनिज्म का सफाया करना ही अपने जीवन का ध्येय बना रखा था, अमरीकी साम्राज्यवाद की शक्ति का सहारा लेकर भी अपने ध्येय को प्राप्त न कर सका। उलटे जनता ने ही उसका परित्याग कर दिया और उसके अपराधों के कारण उसका पतन हो गया। दक्षिण कोरिया के उन कट्टरपंथियों को, जो "कम्युनिज्म-विरोध" की कसम खाये बैठे हैं, इतिहास के इन दृष्टान्तों से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। सिंगमन-री के पदचिन्हों पर चलने का जो कोई भी दु:साहस करेगा, उसकी उस जैसी ही नियति होगी।

हमारे देश का पुनरेकीकरण कोई विजेताओं या विजितों का प्रश्न नहीं, बल्कि वह तो साम्राज्यवाद के जुए से स्वयं को पूर्णत: मुक्त करके एक मूलत: संयुक्त राष्ट्र की राष्ट्रीय एकता को बहाल करने का प्रश्न है।

"कम्युनिज्म का सफाया करने" या "कम्युनिज्म पर छा जाने" का अफीमचियों

का सपना न केवल सफलता की तमाम उम्मीदें खो चुका है, बल्कि यह एक बहुत ही हानिकारक विचार भी है, जिसका उद्देश्य देश के पुनरेकीकरण को रोकना और विभक्त राष्ट्र को स्थायी रूप देना है।

देश के पुनरेकीकरण के बारे में हमारी पार्टी और गणतन्त्र की सरकार की स्थिति अकाट्य है। यह सर्वाधिक उचित और विवेकपूर्ण स्थिति है।

हर उस व्यक्ति को, जो वास्तव में राष्ट्र के हितों की रक्षा करता है और जिसे देश के भविष्य की चिन्ता है, दक्षिण कोरिया में, जो इस समय बड़ी कठिन स्थिति में है, जनता के जीवन में सुधार के लिए और देश के शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण के लिए लड़ना चाहिए। यह प्रत्येक कोरियाई का पावन राष्ट्रीय कर्तव्य है।

देश के पुनरेकीकरण के लिए यह सर्वाधिक महत्व की बात है कि हर तरह से उत्तर और दक्षिण के बीच आपसी सूझबूझ को बढ़ाया जाए और राष्ट्रीय सौहार्द्र तथा एकजुटता प्राप्त की जाए। उत्तर और दक्षिण के बीच वैरभाव और शत्रुता तथा राष्ट्रीय एकता प्राप्त करने में विफलता केवल अमरीकी साम्राज्यवादियों को लाभान्वित करती है। साम्राज्यवादी आक्रान्ता अन्य किसी भी बात की अपेक्षा हमारी राष्ट्रीय चेतना और एकता से डरते हैं। वे आक्रमण के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय एकता को हानि पहुंचाने, फूट के बीज बोने और शत्रुता पैदा करने के लिए प्रत्येक घृणित योजना से काम लेते हैं।

उत्तर और दक्षिण कोरिया के तमाम देशभक्त लोगों को राष्ट्र को विभक्त करने की अमरीकी साम्राज्यवादी नीति को निर्णायक रूप से कुचल देना चाहिए और राष्ट्रीय मुक्ति के लिए अमरीका-विरोधी संघर्ष के झण्डे तले और राष्ट्रीय पुनरेकीकरण के झण्डे तले एकजुट हो जाना चाहिए।

हम ऐसे किसी भी व्यक्ति के साथ, भले ही उसकी पिछली भूमिका कुछ भी है और उसकी राजनीतिक आस्था कुछ भी हो, तब तक मिलकर काम करने को तैयार हैं, जब तक वह राष्ट्र के हितों की रक्षा करता है और वतन के पुनरेकीकरण के लिए काम करता है।

हम दक्षिण कोरिया में इस समय सत्तारूढ़ लोगों के साथ मिल कर काम करने को तैयार हैं, बशर्ते वे विदेशी आक्रान्ताओं के साथ षड्यन्त्र रचकर राष्ट्र से विश्वासघात करना बंद कर दें, अवाम का दमन समाप्त कर दें और देश के स्वतन्त्र शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण के लिए संघर्ष में सम्मिलित हों। लेकिन यदि वे ऐसा करने से इन्कार करें और विदेशी शक्तियों पर आश्रित रहना तथा उनके पीछे बंधे रहना, लोकतन्त्र और जनता के जिन्दा रहने के न्यायोचित संघर्ष का दमन जारी रखें और यदि वे अन्त तक देश के पुनरेकीकरण में बाधा डालते रहें, तो यह एक ऐसा अमिट अपराध होगा, जो हमारे राष्ट्र की स्मृति से कदापि धोया न जा

सकेगा और वे समूची कोरियाई जनता के कठोर निर्णय से बच न सकेंगे।

गणतन्त्र के उत्तरी आधे भाग की समाजवादी शक्तियों और दक्षिण कोरिया की देशभक्त, जनवादी शक्तियों के बीच एकता की जानी चाहिए और पूरे राष्ट्र को अमरीकी साम्राज्यवादी हमले के खिलाफ और हमारे देश के शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण के लिये दृढ़तापूर्वक एकजुट हो जाना चाहिए।

दक्षिण कोरिया में जनता के तमाम तबकों—मजदूरों, किसानों, सैनिकों, युवकों और छात्रों, बुद्धिजीवियों तथा दूसरों—को अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रान्ताओं के खिलाफ राष्ट्र-को-बचाओ संघर्ष के लिए बहादुरी से उठ खड़े होना चाहिए। दक्षिण कोरियाई जनता को आक्रमण और युद्ध की अमरीकी साम्राज्य-वादी नीति के खिलाफ लड़ना चाहिए और हमलावर सेना के साथ किसी भी सहयोग को ठुकरा देना चाहिए, दक्षिण कोरियाई जनता को अमरीकी सैनिकों द्वारा हमारे स्वदेशवासियों, हमारे भाइयों और बहनों पर ढाये गये अत्याचारों को बंद करा देना चाहिए और आक्रान्ताओं को अपने क्षेत्र से बाहर निकलने को मजबूर कर देने के लिए एक निर्णयात्मक संघर्ष छेड़ना चाहिए।

दक्षिण कोरियाई जनता को अमरीकी साम्राज्यवाद और उसके साथ मिल कर षड्यन्त्र रचने वाली आन्तरिक प्रतिक्रियावादी शक्तियों, दोनों से लड़ना होगा।

स्वतन्त्र शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण के झण्डे तले दक्षिण कोरिया के मजदूरों और किसानों तथा तमाम देशभक्त, जनवादी शक्तियों को अमरीकी साम्राज्य-वाद के खिलाफ राष्ट्रीय मुक्ति के लिए विशाल संयुक्त मोर्चा बनाना होगा। उन्हें अमरीकी साम्राज्यवादियों और आन्तरिक प्रतिक्रियावादी शक्तियों को पूर्णतया अलग-थलग करना होगा और प्रतिक्रियावादी शासकों पर निरन्तर दबाव डालते हुए उन्हें बाहरी शक्तियों पर निर्भर होने से रोकना होगा।

हम राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्तियों के महान युग में रह रहे हैं, जबकि विश्व के तमाम पददलित राष्ट्र समाजवाद और उपनिवेशवाद की बेड़ियों को परे फेंक कर अपनी स्वतन्त्रता और स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए वीरतापूर्वक उठ खड़े हो रहे हैं। एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका में आज राष्ट्रीय मुक्ति के लिए संघर्ष की भावना प्रखर हो रही है।

ऐसे युग में हमारा विवेकशील और बहादुर राष्ट्र, जिसका एक लम्बा इति-हास और हजारों वर्षों की संस्कृति है और जिसे गौरवपूर्ण क्रान्तिकारी परम्पराएं विरासत में मिली हैं, कैसे यांकी साम्राज्यवाद के दमन के आगे नतमस्तक हो सकता है? हम सबको पूरी दृढ़ता के साथ उठ खड़े होना चाहिए और अमरीकी साम्राज्यवाद तथा उसकी सहयोगी प्रतिक्रियावादी सत्ताधारी शक्तियों से लड़ते

हुए राष्ट्र के पुनरेकीकरण और देश की पूर्ण स्वाधीनता के लिए संघर्ष की ज्वाला को और तेज करना होगा।

जब सारा राष्ट्र दृढ़तापूर्वक एकजुट हो जाएगा और एक जोरदार अमरीका-विरोधी राष्ट्र-को-बचाओ संघर्ष चलाने लगेगा तो अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रान्ता निश्चित रूप से दक्षिण कोरिया से खदेड़ दिए जाएंगे और राष्ट्रीय पुनरेकीकरण का महान ध्येय यकीनी तौर पर सम्पन्न हो जाएगा।

साथियो,

यह हमारी पार्टी और सरकार की विदेश नीति और हमारी जनता के वीरोचित संघर्ष का सुफल है कि जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति आज जितनी दृढ़ हो गई है, उतनी पहले कभी न थी।

इस समय आम अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति अधिकाधिक हमारी जनता के क्रान्तिकारी हित के पक्ष में विकसित हो रही है। समाजवादी शिविर की शक्ति में अपूर्व वृद्धि हुई है और शान्ति तथा समाजवाद की शक्तियां अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में युद्ध और साम्राज्यवाद की शक्तियों को नीचा दिखा रही हैं।

सोवियत जनता मानवता के आदर्श कम्युनिज्म के पथ का मार्गदर्शन कर रही है। सोवियत संघ कम्युनिज्म का भौतिक और तकनीकी आधार कायम करने के लिए व्यापक आर्थिक निर्माण का कार्य कर रहा है और उसकी मेहनतकश जनता के कल्याण में और सुधार किया जा रहा है। सोवियत संघ वैज्ञानिक और तकनीकी विकास में विश्व का नेतृत्व कर रहा है और इस क्षेत्र में महान से महानतर सफताएं प्राप्त कर रहा है। कम्युनिज्म के निर्माण में सोवियत जनता द्वारा हासिल की गयी कामयाबियां समाजवादी शिविर की ताकत को बढ़ाती हैं और विश्व के तमाम जनगण को, जो शान्ति, राष्ट्रीय स्वतन्त्रता और समाजवाद के लिए लड़ रहे हैं, स्फूर्ति प्रदान करती हैं।

बिरादराना चीनी जनता भी समाजवाद के निर्माण में सफलताएं प्राप्त कर रही है।

यूरोप और एशिया के तमाम समाजवादी देशों में, अर्थतन्त्र तेजी से विकसित हो रहा है और जन जीवनस्तर सुधर रहा है।

आज समाजवादी शिविर विश्व भर में प्रगतिशील मानवता की आशा और आकांक्षा का केन्द्र है। यह मानवीय इतिहास के विकास में निर्णायक हैसियत रखता है।

समाजवादी शिविर का दृढ़ीकरण और विकास उपनिवेशों और गुलाम देशों के लोगों को उनके मुक्ति संघर्ष में जबर्दस्त प्रेरणा देता है और साम्राज्यवादी औपनिवेशिक व्यवस्था के अन्तिम विघटन को और तेज करता है।

एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका में पहले ही करोड़ों लोग उपनिवेशवाद के अधम जुए को उतार फेंक चुके हैं और स्वतन्त्र विकास के पथ पर चल पड़े हैं और राष्ट्रीय-मुक्ति संघर्षों की ज्वाला फैल रही है और ऊंची-से-ऊंची होती जा रही है।

दक्षिण वियतनामी जनता अमरीकी साम्राज्यवाद और उसके पिटठुओं के खिलाफ अपने बहादुराना सशस्त्र संघर्ष को जारी रखे हुए है। लाओस की जनता ने विदेशी साम्राज्यवादियों और आन्तरिक प्रतिक्रियावादियों की आक्रामक कुचालों को मिट्टी में मिला देने तथा राष्ट्रीय स्वतन्त्रता प्राप्त करने की लड़ाई में एक महान विजय हासिल की है। और इंडोनेशियाई जनता ने पश्चिम इरियन की मुक्ति के लिए सफल संघर्ष किया है।

एक लम्बे सशस्त्र संघर्ष के बाद अल्जीरियाई जनता ने अपनी स्वाधीनता और मुक्ति हासिल की है और एक स्वतन्त्र राष्ट्रीय राज्य की स्थापना की है, और अभी तक औपनिवेशिक दासता में जकड़े तमाम अफ्रीकी देशों के लोग उपनिवेशवाद के विरुद्ध बहादुरी से लड़ रहे हैं।

कयूबा की बहादुर जनता अमरीकी साम्राज्यवादियों की निरन्तर आक्रामक कुचालों के खिलाफ अपनी क्रान्ति की सफलताओं की दृढ़तापूर्वक रक्षा कर रही है। क्यूबाई जन क्रान्ति की जबर्दस्त विजय तमाम लैटिन अमरीकी लोगों को, जो अमरीकी साम्राज्यवाद के शिकंजे में जकड़े हुए हैं, अपूर्व क्रान्तिकारी स्फूर्ति प्रदान कर रही है। ग्वाटेमाला, कोलम्बिया, वेनेजुएला और तमाम अन्य लैटिन अमरीकी देशों में मुक्ति संघर्ष की लहर तेजी से फैल रही है और उनका संघर्ष आगे बढ़ रहा है।

विश्व समाजवाद की शक्तियों के तीव्र बढ़ाव और औपनिवेशिक प्रणाली के विघटन के कारण साम्राज्यवाद की शक्तियां निर्णायक रूप से कमजोर हो गयी हैं। साम्राज्यवाद के आन्तरिक अंतर्विरोध और उग्र होते जा रहे हैं, और साम्राज्यवादी शक्तियों के बीच टकराव ज्यादा गम्भीर होते जा रहे हैं। तमाम पूंजीवादी देशों में मजदूर वर्ग के नेतृत्व में अवाम के समूहों का क्रान्तिकारी संघर्ष आगे बढ़ रहा है। साम्राज्यवादियों पर अन्दर से और बाहर से प्रहार हो रहे हैं और उन्हें ठेल कर एक कठिन स्थिति में पहुंचा दिया जा रहा है।

पूंजीवाद के दिन लद चुके हैं। वह समय जा चुका है, जबकि साम्राज्यवाद विश्व पर अपना प्रभुत्व जमा सकता था और जब चाहे आक्रमण और लूट मचा

सकता था। हमारा युग एक महान संघर्ष का युग है, क्रान्तिकारी तूफान का युग है, वह युग है जिसमें विश्व भर में घनघोर वर्ग संघर्ष चल रहा है, और जिसमें पृथ्वी के तमाम शोषित लोग और कुचले हुए राष्ट्र मुक्ति की लड़ाई के लिए आगे आ गये हैं। साम्राज्यवाद का विनाश होकर रहेगा। समाजवाद और कम्युनिज्म विश्व भर में विजयी हो रहे हैं।

अमरीकी साम्राज्यवाद के नेतृत्व में संसार की तमाम प्रतिक्रियावादी शक्तियां स्वयं को विनाश से बचाने के हताश प्रयास के अन्तिम चरण में पहुंच गयी हैं। अमरीकी साम्राज्यवादी समाजवादी शिविर का विरोध करते हुए और विश्व भर में कुचले हुए राष्ट्रों और शोषित जनगण के मुक्ति संघर्षों को दबाते हुए एक नया युद्ध छेड़ने के लिए हर ओछे उपाय को काम में ला रहे हैं।

आधुनिक संशोधनवादी समाजवादी शिविर की एकता को जर्जर करने, साम्राज्यवाद की आक्रामक कुचालों की वकालत करने, और जन समुदाय के क्रान्तिकारी संघर्ष को पंगु बनाने का यत्न कर रहे हैं और अमरीकी साम्राज्यवाद की वफादारी से सेवा कर रहे हैं।

बहरहाल, साम्राज्यवादियों और उनके पिट्ठुओं की तमाम कुचालें बेकार हैं। विश्व समाजवादी शक्तियों का तीव्र बढ़ाव और जन क्रान्तिकारी संघर्ष का उभार हमारे दौर का मूल रुझान है, जिसे कोई भी शक्ति रोक नहीं सकती और साम्राज्यवाद का पूर्ण पतन तथा समाजवाद की अन्तिम विजय अवश्यं-भावी है।

इस समय साम्राज्यवादी अमरीकी साम्राज्यवाद के नेतृत्व में शस्त्रास्त्रों की होड़ को बढ़ा कर, अन्तर्राष्ट्रीय तनातनी को तेज कर और एक नया विश्वयुद्ध छेड़ कर संकट से निकलने का मार्ग खोज रहे हैं।

समाजवादी देशों पर हमला करने के लिए अमरीकी साम्राज्यवादी व्यापक पैमाने पर हथियारों के निर्माण में विस्तार कर रहे हैं और सैनिक अड्डों तथा आक्रामक सैन्य गठबन्धनों को ज्यादा मजबूत कर रहे हैं। हमले की अमरीकी साम्राज्यवादी नीति का संचालक केनेडी प्रशासन एक सम्पूर्ण युद्ध और आणविक युद्ध की तैयारियां करते हुए "स्थानीय युद्धों" और "विशेष युद्ध" के मार्ग पर आगे बढ़ रहा है। आक्रामक "नाटो" की फौजी शक्ति को और बढ़ा कर तथा पश्चिम जर्मन प्रतिशोधवादियों को हथियारों से पुनः लैस करके अमरीका और उसके पिछलग्गू देशों के सत्तारूढ़ हलके यूरोप के मध्य में युद्ध के एक खतरनाक केन्द्र का निर्माण कर रहे हैं।

इस समय अमरीकी साम्राज्यवादी कैरीबियन में एक नये युद्ध का कुचक्र रच रहे हैं। क्यूबा पर हमला करने के अपने इरादे की खुल्लमखुल्ला घोषणा कर वे इस

क्षेत्र में अधिक-से-अधिक तनाव पैदा कर रहे हैं और पूरे संसार में शान्ति के लिए गम्भीर खतरा उत्पन्न कर रहे हैं।

एशिया में अमरीकी साम्राज्यवादियों ने हमारे देश के दक्षिणी आधे भाग पर अपने कब्जे को जारी रखा है और उसे अमरीकी आणविक आयुधों और राकेटों के अड्डे में बदल दिया है। अमरीकी आक्रान्ता दक्षिण कोरिया में तैनात अपनी सेना को और अपनी कठपुतली सेना दोनों को मजबूत बना रहे हैं, दक्षिण कोरिया में सामूहिक विनाश के विभिन्न हथियारों को पहुंचाते रहे हैं और गणतन्त्र के उत्तरी आधे भाग के विरुद्ध निरन्तर उत्तेजनात्मक कार्यवाइयां कर रहे हैं।

अमरीकी साम्राज्यवादी चीन लोक जनतन्त्र के अभिन्न अंग ताइवान पर आधिपत्य जमा कर और च्यांग काइ-शेक गिरोह को भड़का कर जनवादी चीन के विरुद्ध हमले की खुली कारवाइयां कर रहे हैं। दक्षिण वियतनाम में वे एक अघोषित सम्पूर्ण आक्रामक युद्ध को चला रहे हैं।

अमरीकी साम्राज्यवादियों ने विशेष रूप से जापानी सैन्यवाद को पुनर्जीवित कर उसे अपने एशियाई हमले में एक "तूफानी दस्ते" के रूप में इस्तेमाल करने के लिए जापान के साथ एक आक्रामक सैन्य-संधि की है।

वर्तमान स्थिति का तकाजा है कि तमाम दुनिया के लोग युद्ध भड़काने के अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके अनुयायियों के षड्यन्त्रों के विरुद्ध अधिकतम चौकसी बनाये रखें और शांति की रक्षा करने के लिए अधिक सक्रियता से लड़ें।

आज शक्तिशाली समाजवादी शिविर शांति के लिए संघर्ष में सबसे आगे खड़ा है। समाजवादी देश उनकी अपनी समाज व्यवस्था की प्रकृतिवश शांति के उत्कट इच्छुक हैं और वे शांतिपूर्ण विदेश नीति का अनुसरण कर रहे हैं।

समाजवादी देशों द्वारा शांति के पक्ष में प्रस्तुत किये गये सुझावों को कार्यरूप देने और विश्व भर में स्थायी शांति बनाये रखने के लिए सबसे पहली आवश्यकता इस बात की है कि हमले और युद्ध की साम्राज्यवादी नीति के खिलाफ प्रबल संघर्ष किया जाए।

साम्राज्यवाद युद्ध का स्रोत है तथा हमले और युद्ध की वर्तमान मुख्य शक्ति अमरीकी साम्राज्यवाद है। शांति के लिए संघर्ष इसके सिवाय और कोई नहीं हो सकता कि हमला करने और युद्ध भड़काने की साम्राज्यवादियों, खासतौर पर अमरीकी साम्राज्यवादियों की नीति के खिलाफ लड़ाई लड़ी जाए।

शांति की भिक्षा नहीं मांगी जानी चाहिए, इसे आम जन समुदाय के संघर्ष द्वारा जीता जाना चाहिए। नये विश्व युद्ध को टालने और चिरस्थायी विश्वशांति को बनाये रखने के लिए हमारे पास एकमात्र उपाय यही है कि समाजवादी शिविर की शक्ति में सतत वृद्धि की जाए, पूंजीवादी देशों में मजदूर वर्ग के आंदोलनों को

तथा उपनिवेशों और गुलाम देशों में जनता के मुक्ति संघर्षों को विकसित किया जाए, हमले और युद्ध की साम्राज्यवादी नीति के विरुद्ध संघर्ष में व्यापक जन समुदाय को संगठित और लामबंद किया जाए और शांति की तमाम शक्तियों को मजबूती से एकजुट कर तथा संघर्ष के तमाम तौर-तरीकों को संयुक्त कर हर जगह साम्राज्यवादियों पर कड़े प्रहार कर इन युद्ध-लिप्सुओं पर दबाव डाला जाए।

अमरीका सेना द्वारा दक्षिण कोरिया पर आधिपत्य और हमले की अमरीकी नीति न केवल कोरियाई प्रश्न के शांतिपूर्ण समाधान में बाधक बन रही है बल्कि सुदूरपूर्व में शांति के लिए गंभीर खतरा भी पैदा कर रही है। कोरियाई जनता अपने देश में एक और युद्ध भड़काने के उद्देश्य से अमरीकी साम्राज्यवादियों की कुचालों को नाकाम बनाने के लिए और उन्हें दक्षिण कोरिया से खदेड़ बाहर करने के लिए अपने दृढ़ संघर्ष को जारी रखेगी।

जापानी सैन्यवाद, जिसे अमरीकी साम्राज्यवादियों द्वारा पुनर्जीवित किया जा रहा है, एशिया में हमले की एक खतरनाक शक्ति के रूप में सिर उठा रहा हैं। जापानी सैन्यवादी खासतौर पर "दक्षिण कोरिया-जापान वार्ताओं" के माध्यम से न-केवल दक्षिण कोरिया में आर्थिक आक्रमण की योजना बना रहे हैं, बल्कि अमरीकी साम्राज्यवादियों की सक्रिय प्रेरणा से आयोजित दक्षिण कोरिया को आक्रामक "नाटो" के साथ एक सदस्य के रूप में जोड़ने की चालें भी चल रहे हैं।

दक्षिण कोरियाई सैन्य शासन अमरीकी साम्राज्यवादियों के हाथों में आक्रमण के हथियार के सिवा और कुछ नहीं है—ऐसा हथियार जो दक्षिण कोरियाई जनता पर थोप दिया गया है। यह किसी भी हालत में कोरियाई जनता का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता। अत: जापान सरकार और दक्षिण कोरियाई सैन्य शासन के बीच जो भी सैन्य या आर्थिक करार होगा उसे कोरियाई जनता कदापि स्वीकार नहीं करेगी, बल्कि उसे ठुकरा देगी। भविष्य में जब कोरिया में एक एकीकृत जन सरकार स्थापित होगी तो स्वभावत: जापान के साथ ये तमाम राजनीतिक और आर्थिक मामले उठाये जाएंगे और उन्हें नये सिरे से हल किया जाएगा। कोरियाई जनता दक्षिण कोरिया पर फिर से धावा बोलने के जापानी सैन्यवाद के मन्सूबे और उसे सक्रिय रूप में शह देने वाले अमरीकी साम्राज्यवादियों के अपराधपूर्ण कृत्यों की तीव्र निंदा करती है।

हमारी जनता ताइवान, दक्षिण वियतनाम, जापान और एशिया के अन्य भागों तथा विश्व भर में अमरीकी साम्राज्यवादियों की हमले की कार्रवाइयों की दृढ़तापूर्वक निंदा करती है, और हम विदेशी क्षेत्रों के अमरीकी सैन्य अड्डों की समाप्ति और अमरीकी सेनाओं की वापसी की दृढ़तापूर्वक मांग करते हैं। हम

एशिया के प्रत्येक भाग से अमरीकी साम्राज्यवाद की आक्रामक शक्तियों को निष्कासित करने के लिए तमाम एशियाई जनता के साथ दृढ़तापूर्वक एकजुट हो कर संघर्ष करेंगे।

हम जर्मन शांति संधि संपन्न करने और पश्चिम बर्लिन स्थिति को सामान्य बनाने से सम्बद्ध सोवियत सरकार और जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार के न्यायोचित रवैये का समर्थन करते हैं।

साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष का झंडा बुलंद किये और पूरे संसार के शांति-प्रिय लोगों के साथ दृढ़ एकता स्थापित करते हुए कोरियाई जनता एशिया और दुनिया में युद्ध भड़काने की अमरीकी साम्राज्यवादियों की चालबाजियों के खिलाफ और शांति की रक्षा के लिए मजबूती से लड़ाई जारी रखेगी। हम अपनी प्रतिरक्षा क्षमताओं को हर तरीके से सुदृढ़ कर और अवाम के समूह को क्रांतिकारी भावना से लैस कर हमेशा जबर्दस्त चौकसी बनाये रखेंगे। इस प्रकार हम निर्णायक रूप से शत्रु के किसी भी आकस्मिक हमले को परास्त करेंगे, समाजवाद की उपलब्धियों की दृढ़तापूर्वक रक्षा करेंगे और शांति तथा समाजवाद की पूर्वी चौकी की मजबूती से हिफाजत करेंगे।

औपनिवेशिक और गुलाम देशों के लोगों का साम्राज्यवाद-विरोधी, राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग के क्रान्तिकारी संघर्ष का एक अंग है और यह शान्ति को बरकरार रखने में एक सशक्त उपादान है। कोरिया की मजदूर पार्टी और गणतन्त्र की सरकार राष्ट्रीय मुक्ति के संघर्ष को सक्रिय समर्थन देना अपनी विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत मानती है।

कोरियाई जनता क्यूबा की बहादुर जनता के अपनी राष्ट्रीय स्वतन्त्रता और क्रांति की उपलब्धियों की रक्षा करने के संघर्ष का हर तरीके से समर्थन करती है और क्यूबा के विरुद्ध अमरीकी साम्राज्यवादियों की आक्रामक चालबाजियों के लिए उनकी जोरदार निंदा करती है। हमारी जनता विदेशी आक्रामक शक्तियों और आंतरिक प्रतिक्रियावादी शक्तियों के खिलाफ, वियतनामियों के देश के पुन-रेकीकरण के लिए उनकी लड़ाई का सक्रिय समर्थन करती है और स्वतन्त्रता, लोक-तंत्र, शांति और तटस्थता के लिए जापानी जनता के संघर्ष में उनका समर्थन करती है। हम राष्ट्रीय स्वतंत्रता के संघर्ष में लाओस और अल्जीरिया की जनता की जीतों पर उन्हें सौहार्द्रपूर्ण बधाई पेश करते हैं और हम स्वतंत्रता तथा मुक्ति के लिए संघर्षरत एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका के तमाम देशों के लोगों का सक्रिय समर्थन करते हैं।

हमारी पार्टी, गणतंत्र की सरकार और सारी कोरियाई जनता हर प्रकार के उपनिवेशवाद और राष्ट्रीय दमन के खिलाफ दृढ़तापूर्वक लड़ाई जारी रखेगी और

तमाम कुचले हुए लोगों के मुक्ति संघर्षों को समर्थन और प्रोत्साहन देगी।

हम पूंजीवादी देशों में मजदूर वर्ग और मेहनतकशों के क्रांतिकारी संघर्ष का, जो पूंजी द्वारा शोषण और दमन के विरुद्ध और अपने जनवादी अधिकारों और समाजवाद के लिए लड़ रहे हैं, सक्रिय समर्थन करते हैं और उनके साथ अपनी दृढ़ एकजुटता प्रकट करते हैं।

समाजवादी शिविर की एकता का दृढ़ीकरण और समाजवादी देशों के साथ मैत्री और सहयोग के सम्बन्धों का सतत विकास, यह हमारे गणतंत्र की विदेश नीति का अचल आधार है।

समाजवादी शिविर की एकता और एकजुटता आक्रमण की साम्राज्यवादी नीति को नाकाम बनाने, तथा शांति और राष्ट्रीय स्वतंत्रता की प्राप्ति तथा समाजवाद के ध्येय की विजय के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण गारंटी है। यह तमाम समाजवादी देशों की पार्टियों, सरकारों और जनगण का पावन अन्तर्राष्ट्रीय कर्तव्य है कि वे अपनी मैत्री और एकजुटता को सुदृढ़ करें तथा समाजवादी शिविर की एकता की रक्षा करें।

समाजवादी देशों के बीच सम्बन्ध मार्क्सवाद-लेनिनवाद और सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के सिद्धांतों पर आधारित हैं। ये सर्वथा एक नये किस्म के राज्यों के बीच सम्बन्ध हैं जोकि साम्राज्यवादी देशों के मध्य सम्बन्धों से मूल रूप से भिन्न हैं।

समाजवादी देश एक समान समाज व्यवस्था, एक समान विचाराधारा और संघर्ष के लक्ष्य से दृढ़तापूर्वक एकताबद्ध हैं। वे अपने समान शत्रु के खिलाफ और समाजवाद तथा कम्युनिज्म के समान ध्येय के लिए संघर्ष में गहरा सहयोग करते हैं और एकदूसरे का समर्थन करते हैं।

साम्राज्यवादी देशों के बीच सम्बन्ध प्रभुत्व और गुलामी के सम्बन्ध होते हैं जिनमें एक बड़ा राष्ट्र एक छोटे राष्ट्र के आंतरिक मामलों में दखल देता है, उस पर अपनी इच्छा थोपता है और एकतरफा सम्मान तथा समर्पण की मांग करता है। लेकिन तमाम समाजवादी देश, बड़े और छोटे दोनों, पूर्णतया समान और स्वतंत्र हैं और इन देशों के बीच ऐसी कोई बात नहीं हो सकती कि एक देश दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करे और दूसरे पर अपनी इच्छा थोपे।

बाहर से तो साम्राज्यवादी देश आपसी "मैत्री" और "एकजुटता" के दावे करते हैं लेकिन पर्दे के पीछे एकदूसरे के खिलाफ तोड़फोड़ की गतिविधियां चलाते हैं, वे "सहयोग" और "सहायता" की वकालत करते हैं, लेकिन वास्तव में वे अन्य देशों को राजनीतिक और आर्थिक रूप में अपने अधीन लाने के लिए उनको साधनों के रूप में प्रयोग करते हैं। इसके विपरीत समाजवादी देश एक आम शत्रु

के खिलाफ, एक आम ध्येय के लिए लड़ने वाले सहयोद्धाओं के रूप में जागरूक और साथीवत मैत्री और सहयोग के सम्बन्ध कायम रखते हैं। इन देशों के बीच चुगली काटने या दो मापदंड अपनाने का सवाल ही नहीं उठता।

समाजवादी देशों के बीच मैत्री, एकजुटता और सहयोग इन्हीं सिद्धांतों पर आधारित हैं। यही कारण है कि उन्हें कभी भी तोड़ा नहीं जा सकता और वे अविनश्वर शक्ति का परिचय देते हैं।

इस समय साम्राज्यवादी और उनके पिट्ठू संशोधनवादी समाजवादी शिविर की एकता को जर्जर करने की घृणित योजना बना रहे हैं। साम्राज्यवादियों की शह पर और उन्हें एकदूसरे के खिलाफ करने के लिए और इन देशों की पार्टियों और सरकारों को उलटने के लिए षड्यंत्र रच रहे हैं। हमें अपनी चौकसी को तेज करना होगा और इन तोड़फोड़ की कार्रवाइयों से दृढ़तापूर्वक लड़ना होगा।

हमारी पार्टी और गणतंत्र की सरकार ने समाजवादी देशों के बीच आपसी सम्बन्धों के लिए मार्क्सवादी-लेनिनवादी आदर्शों का सदा दृढ़तापूर्वक पालन करते हुए तमाम बिरादराना देशों के साथ दोस्ती और सहयोग को सुदृढ़ करने तथा समाजवादी शिविर की एकता की रक्षा करने के लिए सतत काम किया है। हमारे देश ने अब मैत्री, सहयोग और आपसी सहायता की संधियों के अंतर्गत अपने पड़ोसियों, सोवियत संघ और चीन लोक जनतंत्र के साथ एक अटूट गठबंधन स्थापित किया है। हमारी जनता और तमाम समाजवादी देशों के जनगण के बीच मैत्री और सहयोग दृढ़ तथा और भी विकसित हो रहे हैं।

कोरिया की मजदूर पार्टी, गणतंत्र की सरकार और कोरियाई जनता तमाम समाजवादी देशों के लोगों के साथ मैत्री, एकजुटता और आपसी सहयोग को सतत बढ़ावा देने और समाजवादी शिविर की एकता की रक्षा करने के लिए पूरे प्रयास जारी रखेगी।

हमारा देश उन तमाम देशों के साथ जो हमारी जनता की स्वतंत्रता और स्वाधीनता का आदर करते हैं, सामान्य राज्यीय सम्बन्ध स्थापित करना और खासतौर पर एशिया, अफ्रीका या लैटिन अमरीका के स्वतन्त्र राष्ट्रीय राज्यों के साथ मैत्रीपूर्ण सहयोग के सम्बन्ध विकसित करना अपनी विदेश नीति का अविचल आधार मानता है।

हम स्वतन्त्र राष्ट्रीय राज्यों के साथ, जो पहले ही हमारे साथ मैत्रीपूर्ण राज्यीय सम्बन्ध स्थापित कर चुके हैं, अपनी मैत्री को और अधिक दृढ़ करने तथा बढ़ावा देने तथा एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका के अन्य देशों के साथ, जिनसे हमारे राज्यीय सम्बन्ध अभी तक कायम नहीं हुए हैं, सौहार्द्रपूर्ण सम्बन्ध विकसित करने के लिए सक्रिय काम करते रहेंगे। हम उन पूंजीवादी देशों के साथ, जो

हमारे देश के साथ अच्छे सम्बन्धों के इच्छुक हैं, राज्यीय, आर्थिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान की व्यवस्था करने का भी प्रयास करेंगे।

कोरियाई जनता का क्रान्तिकारी संघर्ष शान्ति, राष्ट्रीय स्वतन्त्रता और समाजवाद के लिए विश्व भर में लोगों के संघर्ष का एक अभिन्न अंग है। भविष्य में भी हमारी पार्टी, सरकार और अवाम मार्क्सवाद-लेनिनवाद के बुलन्द किये गये क्रान्तिकारी झंडे, साम्राज्यवाद के विरुद्ध और समाजवाद तथा राष्ट्रीय मुक्ति के लिए संघर्ष के झंडे तले जोरदार लड़ाइयां जारी रख कर अपने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय दायित्वों को निष्ठापूर्वक पूरा करेंगे।

साथी विधायको,

आज हम अपने देश और अपने राष्ट्र की इतिहास के अभूतपूर्व सुख-समृद्धि के युग में रह रहे हैं।

हमारे देश का अर्थतन्त्र निरन्तर बढ़ाव पर है। विज्ञान और प्रविधि तेजी से विकसित हो रही हैं, और हमारी संस्कृति शानदार ढंग से फल-फूल रही है। हमारे नगर और गांव उन्नति कर रहे हैं और उनमें पहले से भी ज्यादा निखार आ रहा है। हमारी जनता का सारा जीवन सुखद तथा आशा और खुशियों से परिपूर्ण है तथा उनके भौतिक कल्याण और संस्कृति का स्तर दिनों-दिन ऊंचा हो रहा है। पूरी जनता इस्पाती मजबूती के साथ पार्टी और सरकार के साथ एकजुट है तथा सारा देश अपूर्व क्रान्तिकारी भावना तथा रचनात्मक उत्साह से बेकाबू हो रहा है।

हमारे लिए इस समय सबसे ज्यादा महत्व का काम यह है कि अपनी पार्टी, सरकार और जनता की अटूट एकता को दृढ़तापूर्वक रक्षा करते और उसे मजबूत बनाते हुए, और जन समुदाय के प्रखर क्रान्तिकारी उत्साह को कायम रखते और बढ़ाते हुए अपने देश की स्थायी सुख-समृद्धि और पूरे राष्ट्र की भावी खुशहाली के लिए संघर्ष को मजबूती से जारी रखें।

हमारी पार्टी ने गणतन्त्र के उत्तरी आधे भाग में समाजवाद के निर्माण के लिए एक आकर्षक कार्यक्रम निर्धारित किया है और इसे सम्पन्न करने के संघर्ष में तमाम मेहनतकश एक होकर कूद पड़े हैं। हर मूल्य पर सातवर्षीय योजना को कामयाबी से पूरा कर, मेहनतकश जनता हमारी पार्टी के नेतृत्व में उत्तरी आधे भाग में क्रान्तिकारी अड्डे को अजेय बनाएगी और दक्षिण कोरियाई जनता को अमरीकी साम्राज्यवादियों तथा उनके पिट्ठुओं के विरुद्ध उनके संघर्ष में और भी सशक्त उत्साह तथा प्रेरणा प्रदान करेगी। हमारी पार्टी के नेतृत्व में कोरियाई जनता निश्चित रूप से राष्ट्रीय पुनरेकीकरण के महान कार्य को पूरा करेगी और कोरियाई क्रांति के लिए अन्तिम विजय प्राप्त करेगी।

हमारी जनता ने, जिसका नेतृत्व एक मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी कर रही है, सत्ता के सूत्र को मजबूती से अपने हाथों में ले रखा है। उसे महान समाजवादी शिविर और सम्पूर्ण विश्व के प्रगतिशील जनगण का सक्रिय समर्थन तथा प्रोत्साहन प्राप्त है और वह अपने न्यायोचित संघर्ष में हमेशा विजयी होगी।

आओ, हम सब पार्टी और सरकार के इर्दगिर्द दृढ़तापूर्वक एकजुट हो जाएं और एक नयी महान विजय के लिए साहसपूर्वक आगे बढ़ें।

ताएआन कार्य-प्रणाली को और अधिक विकसित करने के संबंध में

ताएआन बिजली मशीन कारखाने की पार्टी समिति की विस्तारित बैठक में भाषण

९ नवंबर १९६२

ताएआन बिजली मशीन कारखाने की पार्टी समिति की इस विस्तारित बैठक में मैंने समिति के अध्यक्ष की रिपोर्ट और दूसरे साथियों द्वारा किये गये भाषणों को दिलचस्पी से सुना है।

यह विजेताओं की एक बैठक है जो पार्टी नीतियों को अमल में लाने के लिए संघर्ष में गत वर्ष प्राप्त किये गये महान परिणामों का सारतत्व पेश कर रही है।

आपने इस वर्ष की योजना को निश्चित अवधि से दो मास पहले ही पूरा कर लिया है। तीन या पांच वर्षीय योजना को नहीं, बल्कि एकवर्षीय योजना को निश्चित समय से दो मास पूर्व पूरा कर लेना मशीन-निर्माण उद्योग के लिए, जिसके लिए सूक्ष्म और एक उच्च तकनीकी स्तर की जरूरत होती है, एक अभूतपूर्व उपलब्धि है।

इस वजह से अब आपके पास अगले वर्ष के उत्पादन के लिए तकनीकी तैयारियां करने तथा पर्याप्त मात्रा में कच्चे माल जमा करने के लिए काफी समय है। आपने आने वाले वर्ष में और भी बड़ी सफलताओं की प्राप्ति के लिए एक ठोस आधार कायम कर लिया है।

जहां कहीं भी एक कड़ा संघर्ष किया गया है, वहां उपकरणों को काफी क्षति पहुंचने और इस्तेमाल के अयोग्य हो जाने या फैक्टरी के गंदा हो जाने जैसी विभिन्न नकारात्मक बातें भी उभर सकती हैं।

लेकिन इस फैक्टरी के उपकरणों का ज्यादा बेहतर ढंग से रखरखाव किया गया है और कुल मिलाकर फैक्टरी को ज्यादा बेहतर ढंग से बना कर रखा गया है। पार्टी सदस्यों और कार्यकर्ताओं ने अपने तकनीकी स्तर को ऊंचा बना लिया है और उनका मनोबल ऊंचा है। फैक्टरी के अंदर एकता दृढ़ हुई है। वास्तव में आपने हर चीज को व्यवस्थित रखने के साथ-साथ कड़ी मेहनत की है। इस तरह आपने तमाम क्षेत्रों में महान विजय प्राप्त की है।

यह स्थिति फैक्टरी व्यवस्था की नयी प्रणाली और उत्पादन की प्रक्रिया के उस पथप्रदर्शन की विशिष्ट श्रेष्ठता को स्पष्ट रूप से प्रकट करती है, जिसे पहली बार गत वर्ष के अंत में इस फैक्टरी में लागू किया गया।

यह स्वीकार करना होगा कि यद्यपि फैक्टरी व्यवस्था की पुरानी प्रणाली समाजवादी ही थी, तथापि उसमें पूंजीवाद के कई अवशेष कायम थे। उस प्रणाली में भारी पैमाने पर नौकरशाही, विभागवाद और स्वार्थपरता विद्यमान थी। विशिष्ट लोग निचली इकाइयों की सहायता के लिए नीचे जाने की बजाय नौकरशाही ढंग से अपने मातहतों को चिल्लाकर हुक्म दिया करते थे। कर्मशालाओं के बीच सहयोग की कोई भावना न थी और कुछ लोगों में, "आप अपने काम से काम रखें, और मैं अपने काम को देखूंगा" जैसा स्वार्थपरता का रुझान पाया जाता था। इस प्रकार पुरानी प्रणाली में मजदूरों की सक्रियता और रचनात्मकता को पूर्णतया विकसित करना संभव न था। लोग व्यर्थ ही अपनेआप को व्यस्त रखते थे और उत्पादन में कोई भी बड़ी उपलब्धियां प्राप्त नहीं की जा सकी थीं।

ताएआन कार्य-प्रणाली पुरानी प्रणाली से आमूल भिन्न है। यह एक समुन्नत प्रणाली है जिसमें कम्युनिस्ट औद्योगिक प्रबंध के कई पहलू शामिल हैं। यह नयी व्यवस्था इस सामूहिक कम्युनिस्ट जीवन के सिद्धांत का अद्भुत प्रतिमान है, "एक सबके लिए और सब एक के लिए"। इस व्यवस्था में वरिष्ठ अपने मातहतों की मदद करते हैं, जो अपने काम में कुशल हैं वे कम कुशलों को शिक्षित करते हैं, तमाम लोग एकदूसरे की साथियों के रूप में सहायता कर रहे हैं और तमाम कर्मशालाएं गहरे सहयोग से काम कर रही हैं।

गत वर्ष जब मैंने इस फैक्टरी का दौरा किया तो मैंने पाया कि पार्टी अधिकारियों और प्रशासकों के बीच मधुर सम्बन्ध नहीं हैं, मुख्य इंजीनियर और फैक्टरी मैनेजर एकदूसरे की शिकायत कर रहे हैं तथा मजदूरों और बुद्धिजीवियों के बीच कोई एकता नहीं है। लेकिन इस दौरे में मैंने देखा है कि इन खामियों को दूर कर लिया गया है, हर कोई मेलमिलाप और एकता से काम कर रहा है और सारी फैक्टरी में कम्युनिस्ट जीवन सिद्धांत व्याप्त है।

काम में जब कम्युनिस्ट सिद्धांत का कड़ाई से पालन किया जाता है तो

नौकरशाही और अहंवाद स्वभावत: गायब हो जाते हैं। कई साथी उत्पादन में नवीनताएं लाए हैं और उन्होंने ऊंचे वेतनों के लिए नहीं बल्कि राज्य और जनता के हित में लगन से काम किया है। यदि हम लोगों को भाड़े के टट्टू बनने देते हैं तो कम्युनिज्म के दौर में दाखिल होना असंभव होगा। कम्युनिज्म का दौर न-केवल आर्थिक विकास का ही तकाजा करता है बल्कि लोगों के मस्तिष्क में पुरानी विचारधाराओं के बदल दिये जाने का भी तकाजा करता है। सबसे बढ़ कर महत्व की बात यह है कि लोगों को स्वेच्छा से और सचेतन हो अर्थात कम्युनिस्ट ढंग से काम करने को प्रोत्साहित किया जाए।

हमारी कार्य-प्रणाली लोगों को कम्युनिस्ट पद्धति से काम करने और रहने के योग्य बनाती है। यह बिना अपवाद के सबको संगठित करती है और उनकी निष्ठा तथा रचनात्मकता को पूर्णतया विकसित करती हैं और इस प्रकार उत्पादन में बेहतर परिणाम लाती है।

नयी कार्य-प्रणाली की महान शक्ति अवाम की एकता और सहयोग तथा जागरूक उत्साह और रचनात्मकता में निहित है। यह एक महान शक्ति है जो तब अस्तित्व में आती है जब पार्टी नेतृत्व निचली इकाइयों में गहराई तक पहुंच जाता है।

बेशक ऐसी शक्ति केवल प्रबंध ढांचों के पुनर्गठन से पैदा नहीं हो सकती। अन्य फैक्टरियों ने भी अपने प्रबंध ढांचों को पुनर्गठित किया है और उनमें से कई एक में नये ढांचे अपनी पूरी समर्थता प्रदर्शित करने में अभी तक असफल रहे हैं।

प्रबंध ढांचे अपनी सामर्थ्य तभी प्रदर्शित कर सकते हैं जब उन जैसी ही कार्य-पद्धति भी लागू हो। यदि कार्य नौकरशाही ढंग से संचालित किया जाता है तो प्रबंध ढांचों का बार-बार पुनर्गठन बेकार है। आप महान सफलता प्राप्त कर सके हैं क्योंकि आपने नये प्रबंध ढांचों से निपटने में छोंगसान-री पद्धति से काम लिया।

नये ढांचों के साथ छोंगसान-री पद्धति को पूर्णतया लागू करने के लिए आपने गत वर्ष भर जो निष्ठापूर्ण संघर्ष किया उससे आपने महान सुफल प्राप्त किये और इस तरह नयी कार्य-प्रणाली के महान लाभों को, जोकि जीवन के कम्युनिस्ट सिद्धांत का प्रतिमान हैं, साफतौर पर प्रमाणित कर दिया है।

आपने व्यक्तिगत अनुभवों से सीखा है कि पार्टी द्वारा लागू की गई औद्योगिक प्रबंध और संचालन की कम्युनिस्ट पद्धति सर्वथा व्यावहारिक है। इसके अलावा आपने नयी कार्य-प्रणाली को दृढ़तापूर्वक स्थापित करने के लिए संघर्ष में हरावल दस्ते की एक सम्मानजनक भूमिका निभायी है और इस प्रकार अपने देश के तमाम

मेहनतकश लोगों को दिखा दिया है कि ऐसी कार्य प्रणाली और व्यवस्था दूसरी जगहों पर लागू की जा सकती है।

पार्टी केन्द्रीय समिति के तमाम सदस्य, और गणतंत्र के मंत्रिमंडल के तमाम सदस्य इस बैठक में शामिल हुए हैं। मुझे आपको यह बताते हुए प्रसन्नता अनुभव हो रही है कि पार्टी केन्द्रीय समिति और गणतंत्र की सरकार आपकी उपलब्धियों पर बहुत संतुष्ट हैं।

फैक्टरी पार्टी समिति की तो बात ही क्या की जाए, तमाम पार्टी सदस्यों, मजदूरों, दफ्तरी कर्मियों, आपूर्ति सेवा कर्मियों और शिक्षकों ने पार्टी नीतियों को कार्यरूप देने के लिए एक होकर महान प्रयास किया। यहां तक कि गृहणियों ने भी सक्रिय भूमिका अदा की।

यह एक नियम ही है कि जब हम पुराने ढर्रे से नाता तोड़ कर नया मार्ग अपनाने का यत्न करते हैं तो हमें कठिनाइयों और ढुलमुलयकीनों का सामना करना पड़ता है। किन्तु इस फैक्टरी में पार्टी समिति और तमाम पार्टी सदस्यों ने समस्त कठिनाइयों को बहादुरी से काबू करते हुए पार्टी नीतियों को कार्यरूप देने के लिए सतत कार्य किया और अथक संघर्ष किया है।

मैं पार्टी केन्द्रीय समिति की ओर से फैक्टरी पार्टी समिति, पार्टी सेल समिति के अध्यक्ष और सदस्यों, तमाम पार्टी सदस्यों, जनवादी युवा लीग, ट्रेड यूनियन और महिलाओं की यूनियन के सदस्यों और फैक्टरी के तमाम मजदूरों, तकनीकी कर्मचारियों और कार्यालय कर्मियों के प्रति, जिन्होंने पार्टी की नीतियों को सफल बनाने के लिए निष्ठापूर्वक संघर्ष किया है, आभार व्यक्त करना चाहूंगा।

मैं एक बार फिर ताएआन बिजली मशीन कारखाने में स्थापित नई कार्य-प्रणाली की विशेषताओं पर जोर देना चाहूंगा, यद्यपि आप पहले ही अपने भाषणों में उनमें से कई एक का जिक्र कर चुके हैं।

नयी कार्य-प्रणाली का पहला फायदा यह है कि यह फैक्टरी के सामूहिक प्रबंध और संचालन की गारंटी करती है।

पहले केवल मैनेजर को ही फैक्टरी के मामलों में निर्णय लेने का सारा अधिकार प्राप्त था और उत्पादन के लिए भी वही जिम्मेदार था। मजदूरों को फैक्टरी के प्रबन्ध और संचालन में नाममात्र की ही भूमिका थी। उनका काम केवल यह था कि आठ घंटे तक कार्य करें, अपना काम निपटाएं और फिर घर जाएं। उन्हें इससे कोई सरोकार न था कि फैक्टरी में उत्पादन सुचारु रूप से चल रहा है या नहीं।

इसके मुकाबले में, नयी प्रणाली में फैक्टरी पार्टी समिति नेतृत्व के सर्वोच्च निकाय के रूप में फैक्टरी का संचालन करती है और तमाम पार्टी सदस्य, मजदूर

और तकनीकी कर्मचारी प्रबन्ध में भाग लेते हैं। उत्पादन के लिए जिम्मेदारी किसी एक व्यक्ति के कन्धों पर नहीं होती बल्कि तमाम पार्टी सदस्यों, मजदूरों और तकनीकी कर्मचारियों, और सबसे बढ़कर सामूहिक नेतृत्व की प्रतीक, फैक्टरी पार्टी समिति के कंधों पर होती है।

जब सारी जिम्मेदारी मैनेजर वहन करता है तो मजदूर और तकनीकी कर्मचारी उत्पादन के प्रबन्ध में भाग नहीं लेते, मजदूर उत्पादन के कर्ताधर्ता नहीं होते बल्कि केवल नौकरशाही हिदायतों और हुकमों का पालन करने वाले कर्मचारी होते हैं। यह स्थिति समाजवादी प्रणाली के स्वरूप के प्रतिकूल है और मेहनतकश जनता की रचनात्मकता और सक्रियता को पूर्णतया विकसित नहीं होने देती।

महत्वपूर्ण मामलों पर विचार-विमर्श करना और सामूहिक पद्धति के अनुरूप फैक्टरी का प्रबन्ध करना पार्टी समिति के लिए कई दृष्टियों से लाभदायक है।

मुझे बताया गया है कि इस फैक्टरी की पार्टी समिति में ३५ सदस्य हैं। यदि ये ३५ सदस्य मामलों पर सामूहिक रूप से विचार करें तो कई अच्छे विचार प्रस्तुत किये जा सकते हैं। समिति में पार्टी कार्यकर्ता, प्रबन्धकर्मी, तथा महत्वपूर्ण मजदूर और तकनीकी कर्मचारी शामिल हैं। अतः सही प्रणाली तय करने तथा उपयुक्त कदम उठाने से पूर्व यह फैक्टरी में वास्तविक स्थिति—पार्टी सदस्यों और मजदूरों की मनोवृत्ति और तकनीकी स्तर, तथा साथ ही तकनीकी तैयारियों, सामग्रियों और उपभोक्ता चीजों की आपूर्ति आदि—को पूर्णतया दृष्टिगत रखने में समर्थ होगी।

यदि पार्टी समिति सही सामूहिक नेतृत्व दे, तो वह तमाम पार्टी सदस्यों को गोलबंद कर सकती है, और यदि तमाम पार्टी सदस्य गोलबंद हो जाएं तो वे तमाम मेहनतकशों को काम करने के लिए उत्साहित कर सकते हैं। जब पार्टी समिति के मार्गदर्शन में तमाम पार्टी सदस्य और तमाम मेहनतकश उत्पादन बढ़ाने और फैक्टरी प्रबन्ध को सुधारने के लिए विवेकपूर्वक यत्न कर रहे हों तो सामूहिक नेतृत्व को छोड़ अन्य कोई भी पद्धति पूरी तरह काम नहीं कर सकती। फैक्टरी की सामूहिक शक्ति के पूर्ण उपयोग की और कोई बेहतर विधि नहीं है। यदि इस ढंग से काम किया जाए तो तमाम समस्याएं सही ढंग से सुलझायी जा सकेंगी और उत्पादन में भारी नूतनताएं लायी जा सकेंगी।

नयी व्यवस्था लागू होने के बाद अन्य फैक्टरियां कोई भी उल्लेखनीय सफलताएं प्राप्त करने में असफल रही हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि वहां पार्टी समितियों ने सन्तोषजनक ढंग से काम नहीं किया। मिसाल के तौर पर ह्वांगहाए लोहा कारखाने की पार्टी समिति उन लोगों को, जो केंद्रीय भूमिका अदा कर सकते थे, अपने में शामिल करने में असमर्थ रही और वह मुख्य रूप से ऐसे लोगों पर

आधारित रही जो गौण महत्व के काम में संलग्न थे। अतः पार्टी समिति सामूहिक नेतृत्व के निकाय के रूप में अपने कर्तव्यों को कारगर ढंग से पूरा नहीं कर सकी। परिणामस्वरूप कुछ समय तक लोहा कारखाने में काम अच्छी तरह नहीं हुआ। लेकिन अब पार्टी समिति के कार्य में सुधार लाने के बाद उसने काम को टिकाऊ बना लिया है।

पार्टी समिति के कार्य में सुधार के लिए आपने समिति के सदस्यों की योग्यता के स्तर को ऊंचा किया है और उनके लिए ऐसी परिस्थितियां पैदा की हैं जिनमें वे अपने विचार को पूरी तरह व्यक्त कर सकें। यह बहुत अच्छी बात है।

ताएआन बिजली मशीन कारखाने की तमाम उपलब्धियों ने एक बार फिर साफतौर पर दिखा दिया है कि पार्टी समिति के कार्य को दृढ़ करना और फैक्टरी के हरावल दस्ते के रूप में पूरी पार्टी समिति की भूमिका को सुधारना उत्पादन का मार्गदर्शन करने में पहला और सर्वोच्च प्राथमिकता का काम है।

पूरी पार्टी सदस्यता गतिशील हो और तमाम अवाम गोलबंद किये जा सकें, इसके लिए हमें फैक्टरी में पार्टी समिति और कर्मशालाओं में पार्टी सेल समितियों की भूमिका में सुधार को जारी रखना होगा और प्रत्येक पार्टी सदस्य को काम सौंपने होंगे।

कार्य की नयी व्यवस्था का एक अन्य लाभ यह है कि यह उद्योग के नियोजित प्रबन्ध के लिए सर्वाधिक कारगर है।

जैसाकि ताएआन बिजली मशीन कारखाने के अनुभव से पता चला है, सही नियोजन आश्वस्त करने के लिए नई व्यवस्था का तकाजा है कि उत्पादक अवाम के साथ सीधे विचार-विमर्श किया जाए और उत्पादन के पथप्रदर्शन का दायित्व संभालने वाले लोग स्वतः योजना तैयार करें।

समाजवादी अर्थतन्त्र का प्रबन्ध करने में नियोजन सर्वाधिक महत्वपूर्ण समस्याओं में से एक है। बेहतर नियोजन के लिए जरूरी है कि उत्पादन के तमाम पहलुओं, जैसे उपकरणों की हालत, सामग्रियों की पूर्ति, प्राप्य जनशक्ति और मेहनतकश लोगों का तकनीकी स्तर, पर उचित रूप में ध्यान दिया जाए। इन तमाम पहलुओं से सर्वाधिक परिचित कौन लोग हैं? मजदूर, जो उत्पादन में सीधे भाग लेते हैं।

मजदूरों को इस बात की पूरी जानकारी होती है कि उपकरणों की हालत क्या है, कच्चे माल बिना किसी कठिनाई के उपलब्ध किए जा रहे हैं या नहीं, और उनके सहकर्मी मशीनों का कुशलतापूर्वक उपयोग कर सकते हैं या नहीं। ऐसा कोई भी व्यक्ति वास्तविकता के अनुरूप कोई योजना तैयार न कर सकेगा, जो उत्पादन में प्रत्यक्षतः भाग लेने वालों से सलाह नहीं लेता, बल्कि इसके विपरीत अपनी डेस्क पर बैठे-बैठे हिसाब-किताब करता रहता है।

राजनीतिक अर्थतन्त्र की वर्तमान पाठ्य-पुस्तकें अच्छे नियोजन की सुनिश्चित व्यवस्था करने के लिए कई शर्तें पेश करती हैं। लेकिन वे नियोजन में जन लाइन लागू करने की आवश्यकता को कोई महत्व नहीं देतीं। मेरे विचार में हमें राजनीतिक अर्थतन्त्र की एक नयी पाठ्य-पुस्तक की रचना करनी होगी, जो जन लाइन से मेल खाए।

उत्पादक अवाम को शामिल किये बिना तैयार की गयी योजना आत्मपरक योजना ही होगी। और निचली इकाइयों पर ऐसी योजना थोपना नौकरशाही की कारवाई ही होगी। राज्य योजना, प्रबन्धक कार्यालय की योजना किसी फैक्टरी की और किसी कर्मशाला की योजना भी उत्पादकों के साथ सलाह-मशविरे के बाद ही तैयार की जानी चाहिए।

मुझे पता चला है कि कुछ लोगों के अनुसार पार्टी मजदूरों में केवल आसान काम करने की प्रवृत्ति पायी जाती है। यह विचार गलत है और मजदूरों के क्रान्तिकारी स्वरूप में आस्था का अभाव ही प्रकट करता है। समाजवाद और कम्युनिज्म के निर्माण में मजदूर वर्ग मुख्य शक्ति हैं। एक बार मजदूरों में हालत की सही समझ आ जाए, तो वे तमाम समस्याओं के समाधान के लिए उपाय खोज सकते हैं।

जब हमारी पार्टी को १९५७ में एक कठिनतम स्थिति का सामना करना पड़ा, तो हमने दिक्कतों पर विजय पाने के उपायों के बारे में मजदूरों से चर्चा की। देश के अन्दर और बाहर उत्पन्न कठिन स्थिति के बारे में हमने खुल कर बातचीत का और उन्हें यह समझने में मदद दी कि संकट से उभरने का एकमात्र उपाय यह है कि बचत और उत्पादन वृद्धि द्वारा आर्थिक निर्माण को तेज किया जाना चाहिए। इसका नतीजा यह हुआ कि कांगसोन इस्पात कारखाने के मजदूरों ने अपनी मिल में १,२०,००० टन उत्पादन किया, जोकि अपनी पिछली क्षमता के अनुसार केवल ६०,००० टन उत्पादन करने में समर्थ थी। यह एक ऐसी मिसाल है जो दिखाती है कि जब अवाम के साथ सलाह-मशविरा करके योजना तैयार की जाती है और अवाम उसे अपनी योजना के रूप में स्वीकार कर लेते हैं तो वह निश्चित रूप से सफल हो सकती है, भले ही उसके लिए कितना भी कड़ा और भारी प्रयास करना पड़े।

यदि हमने बगैर अवाम के साथ सलाह-मशविरा किये प्योंगयांग में योजना तैयार की होती, तो हमने कांगसोन इस्पात कारखाने की ब्लूमिंग मिल की केवल ६०,००० टन क्षमता स्वीकार कर ली होती, और यदि हमने ६०,००० टन से ऊंचा लक्ष्य निर्धारित भी किया होता, तो वह पूरा न हो पाता।

इस वर्ष ह्वांगहाए लोहा कारखाने को समस्याओं का सामना करना पड़ा है। इसका कारण यह है कि धातु-प्रबन्ध कार्यालय मजदूरों के सुझावों पर कान

न देकर नौकरशाही ढंग से अपना काम करता रहा है। उत्पादन लक्ष्य चाहे कुछ ऊंचे ही निर्धारित किये गये हे.ते, फिर भी इस वर्ष योजना निश्चित रूप से पूरी कर ली जा सकती थी, बशर्ते कि प्रबन्ध कार्यालय ने उस पर मजदूरों के साथ बातचीत की होती और उनकी राय के अनुसार ठोस पग उठाये होते।

हमें हमेशा उत्पादक जनता के साथ सलाह-मशविरे के आधार पर योजनाएं तैयार करने के सिद्धान्त का कड़ाई से पालन करना चाहिये, ताकि वे उन्हें अपनी योजनाओं के रूप में स्वीकार करें।

योजना की रूपरेखा उन्हीं लोगों द्वारा तैयार की जानी चाहिए, जो वस्तुत: उत्पादन का मार्गदर्शन करते हैं। इससे पूर्व धातु प्रबन्ध का कार्यालय रूपरेखा तैयार करने का सारा काम नियोजनकर्मियों पर छोड़ दिया करता था और उत्पादन का मार्गदर्शन करने वाले लोग योजना की चर्चा तक किये बिना, अपनी मर्जी से काम करते हुए, प्रारूप पर नजर तक न डालते और उसे भेज दिया करते थे। यही कारण है कि कोई योजना उत्पादन की वास्तविक परिस्थितियों पर आधारित न थी और योजना के अनुसार उत्पादन का मार्गदर्शन आश्वस्त न किया जा सका।

कार्य की नयी व्यवस्था उत्पादन का मार्गदर्शन करने वालों को यह सामर्थ्य प्रदान करती है कि वे मजदूरों—वास्तविक उत्पादकों—के साथ विचार-विमर्श कर योजना तैयार करें और इस तरह उन्हें योजना को अपनी योजना के तौर पर स्वीकार करने को प्रेरित करें। हम कह सकते हैं कि यह एक बहुत बड़ा लाभ है।

ताएओन कार्य-प्रणाली का एक और लाभ यह है कि यह उत्पादन के तकनीकी पथप्रदर्शन में सुधार लाने और उत्पादन प्रक्रिया के समन्वित पथप्रदर्शन को आश्वस्त करने में मदद करती है।

अन्तिम विश्लेषण में उत्पादन प्रक्रियाएं तकनीकी प्रक्रियाएं ही होती हैं। बिना तकनीकी ज्ञान के हम उत्पादन का पथप्रदर्शन नहीं कर सकते। तकनीकी पद्धतियों के अनुसार ही उत्पादन का पथप्रदर्शन किया जाना चाहिए।

तकनीकी जानकारी रखने वालों को ही नियोजन से तकनीकी तैयारियों और उत्पादन प्रक्रियाओं तक उत्पादन से प्रत्यक्ष सम्बन्धित सारे काम का समन्वित ढंग से पथप्रदर्शन करना चाहिए।

कार्य की पुरानी व्यवस्था में उत्पादन से सम्बन्धित विभिन्न विभाग एकदूसरे से कटे रहते थे और उत्पादन का समन्वित पथप्रदर्शन करने वाला कोई जनरल स्टाफ नहीं होता था।

प्रत्येक फैक्टरी में संघर्ष उत्पादन को आश्वस्त करने का संघर्ष है। अन्य हर बात को इसी उद्देश्य के नीचे रखना होगा और जो व्यक्ति उत्पादन का पथ-प्रदर्शन करता है, उसे चीफ आफ स्टाफ की भूमिका निभानी होगी। उत्पादन का

नियोजन, तैयारियां और पथप्रदर्शन, ये तमाम कार्य अनेक लोगों में बांट दिये गये तो कोई तालमेल न होगी।

फैक्टरी में चीफ आफ स्टाफ की भूमिका कौन संभाले? संभवत: मैनेजर या चीफ इंजीनियर, लेकिन कोई भी संभाले, उसे तकनीकी ज्ञान में दक्ष होना चाहिए। चीफ इंजीनियर बेहतर हो सकता है, क्योंकि मैनेजर को फैक्टरी के आम मामलों पर ध्यान देना होता है।

सेना में भी चीफ आफ स्टाफ लड़ाई की तैयारी करता है। जिस प्रकार चीफ आफ स्टाफ को हर बात में—लड़ाई की योजना बनाने से लेकर उसकी तैयारियां करने तथा लड़ाइयों की कमान करने तक—प्रवीण होना चाहिए, उसी प्रकार चीफ इंजीनियर को उत्पादन के बारे में पूरा ज्ञान होना चाहिए और उसे एक समन्वित ढंग से तमाम विभिन्न प्रक्रियाओं का पथप्रदर्शन करना चाहिए।

यह हमारे लम्बे संघर्ष के दौरान संचित अनुभवों के आधार पर बनी कार्य-प्रणाली है। ताएआन बिजली मशीन कारखाने में एक वर्ष के अनुभव ने सिद्ध कर दिया है कि चीफ इंजीनियर की कमान में एक समन्वित जनरल स्टाफ की स्थापना इस दृष्टि से बहुत अधिक उपयोगी है कि यह उत्पादन के दक्षतापूर्ण पथप्रदर्शन को आश्वस्त करती है।

इसके अलावा, कार्य की नयी व्यवस्था ने उन विभागों की भूमिका में जबर्दस्त सुधार किया है, जो उत्पादन का सुचारु संचालन आश्वस्त करते हैं।

पहले उत्पादन में लगे हुए लोगों को सामग्रियां समय पर उपलब्ध नहीं की जाती थीं।

वरिष्ठ अधिकारी पत्रक जारी करते परन्तु सामग्रियां उपलब्ध करने की कोई जिम्मेदारी न लेते। यह जिम्मेदारी उत्पादन में लगे लोगों के कंधों पर ही आती थी। इस हालत में आप मैनेजरों और अन्य जिम्मेदार कर्मचारियों को अपना अधिकांश समय उत्पादन के पथप्रदर्शन पर नहीं बल्कि सामग्रियां खोज निकालने के यत्न में दौड़ भाग पर ही लगाना पड़ता था। यह काम करने का नौकरशाही और पूंजीवादी तौर-तरीका है।

अब जब कि हमने एक ऐसी प्रणाली लागू कर दी है, जिसमें उच्चतर स्तर निम्न स्तरों को सामग्रियां उपलब्ध करते हैं तो शॉप मैनेजर सामग्रियों के बारे में कोई भी चिन्ता किये बगैर अपने काम पर ही पूरा ध्यान दे सकते हैं। वे अब उत्पादन के पथप्रदर्शन, उपकरणों के रखरखाव और मजदूरों के तकनीकी स्तर में सुधार पर अपनी तमाम शक्ति केन्द्रित कर सकते हैं।

उत्पादन में निर्णायक पहलू हैं लोग और कलपुर्जे—अर्थात उत्पादक और उपकरण। कच्चे मालों की आपूर्ति भी महत्वपूर्ण है, लेकिन खासतौर पर इस

काम को देखने के लिए लोग नियुक्त हैं। जहां तक उत्पादन का पथप्रदर्शन करने वालों का सम्बन्ध है, उन्हें लोगों और तकनीकी उपकरणों के साथ अच्छा काम करने तक ही अपनेआपको सीमित रखना चाहिए। फैक्टरी के अपने वर्तमान दौरे में मैंने शॉप मैनेजरों के साथ बातचीत की और पाया कि वे सामग्रियां हासिल करने पर अपना समय बर्बाद नहीं कर रहे हैं, बल्कि उपकरणों के रखरखाव, मजदूरों के वैचारिक और तकनीकी स्तर को ऊंचा करने तथा उत्पादन के मार्गदर्शन पर अपनी शक्ति को केन्द्रित किये हुए हैं।

ऊंचे स्तरों से निचलों को सामग्रियों की सुचारु आपूर्ति आश्वस्त करने के लिए यह उचित रहेगा कि मशीन-निर्माण फैक्टरियों में अर्धनिर्मित चीजों के लिए मालगोदाम कायम किये जाएं। ऐसी व्यवस्था खासतौर पर उन फैक्टरियों के लिए महत्वपूर्ण है, जो कई प्रकार के कलपुर्जों और अर्धनिर्मित मालों का प्रयोग कर यन्त्रों को तैयार करती हैं।

कलपुर्जों और अर्धनिर्मित चीजों का भण्डार कर तथा समय पर उन्हें उपलब्ध कर ये मालगोदाम उद्यम के विभिन्न भागों के बीच उत्पादन में सहयोग के लिए कमान चौकियों का काम करते हैं। प्रत्येक कर्मशाला के साथ गहरा सम्पर्क कायम रखते हुए उन्हें सहकारी उत्पादनों के लिए आवश्यक सामग्रियों का योजनाबद्ध भण्डारण करना चाहिए और जिन विभागों को उनकी जरूरत हो, उन्हें उपलब्ध करने में कोई कठिनाई न होनी चाहिए। उन्हें अपनेआपको केवल माल का भण्डार करने तक ही सीमित न रखना चाहिए, अपितु यह भी ठीक-ठीक मालूम करने का यत्न करना चाहिए कि प्रत्येक विभाग को कितने और किस प्रकार के कलपुर्जे तथा सामग्रियां दरकार हैं। उन्हें मांग को पूरा करने के लिए आवश्यक सामग्रियों का हमेशा भण्डार बनाये रखना होगा।

सामग्रियों का सुरक्षित भण्डार रखने से उत्पादन में असन्तुलन दूर करना संभव होता है। ऐसा अवसर होता है कि कई मालगोदामों में, जो सामग्रियों का भण्डार रखते हैं, अनावश्यक चीजें जरूरत से ज्यादा मात्रा में जमा हो जाती हैं और जिन चीजों की वस्तुतः जरूरत होती है, वे बहुत कम मात्रा में संग्रहीत होती हैं। यदि हमें इन तौरतरीकों को पूर्णतया समाप्त करना है और उत्पादन के विभिन्न खण्डों के बीच सामग्रियों की सुचारु उपलब्धि और सहयोग को आश्वस्त करना है तो मालगोदाम रक्षकों को योजनाओं की तैयारी में भाग लेना होगा और सम्बन्धित फैक्टरियों में उत्पादन की वास्तविक हालत की पूरी-पूरी जानकारी रखनी होगी।

प्रबन्ध कार्यालय के अन्तर्गत पूर्ति अभिकरणों को उत्पादन में अन्तर फैक्टरी सहयोग के कारगर ढंग से संचालन की जिम्मेदारी भी सौंपी जानी चाहिए।

विभिन्न फैक्टरियों की जरूरत की सामग्रियों के सुरक्षित भण्डारों का निर्माण करने के लिए पूर्ति अभिकरणों के कर्मियों को उत्पादन प्रक्रिया में काफी प्रवीण होना चाहिए और गलत तौरतरीकों के समाप्त करने, उत्पादन का नियमन करने और उत्पादन समय में कमी लाने में उनका दखल होना चाहिए। इस तरह पूर्ति अभिकरण उत्पादन में सहयोग के लिए कमान चौकी की भूमिका निभाने में समर्थ होंगे और विभिन्न फैक्टरियों के लिए सुचारु रूप में पूर्ति की पक्की व्यवस्था कर सकेंगी।

यदि हम उत्पादन में अच्छे परिणाम प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमें मजदूरों के कल्याण के लिए कुशल आपूर्ति सेवाएं स्थापित करनी होंगी।

इससे पूर्व मजदूरों की रोजमर्रा की जरूरतों की देखभाल करने के लिए जिम्मेदार कोई भी निकाय नहीं था। लेकिन कार्य की नयी प्रणाली के अंतर्गत मजदूरों को उनके दैनिक जीवन में स्थिर स्थितियां उपलब्ध करने के लिए आपूर्ति सेवाएं स्थापित की गयी हैं।

ताएआन बिजली मशीन कारखाने में इस प्रयोजन से एक आपूर्ति समिति गठित की गयी। समिति में फैक्टरी का आपूर्ति सेवाओं का एक डिप्टी मैनेजर, तथा सरकारी निकायों, जनरल स्टोरों, कृषि और पशु फार्मों, सहकारी फार्मों आदि जैसी आपूर्ति सेवाओं के लिए अधिकृत फैक्टरी मजदूरों के जिले के तमाम निकायों के प्रतिनिधि सम्मिलित हैं। इस प्रकार एक नयी आपूर्ति सेवा स्थापित की गयी जोकि जिले में मजदूरों की रोजमर्रा की जरूरतों के लिए प्रबंध करने के लिए पूर्णतः जिम्मेदार है।

भूतकाल में ये तमाम निकाय घनिष्ठ आपसी सम्बन्धों का विकास करने का कोई भी प्रयास न कर विभागीय ढंग से काम करते थे। परिणामस्वरूप वे सामग्रियां उपलब्ध होने पर भी मजदूरों को उन्हें उपलब्ध करने में असमर्थ रहते थे।

लेकिन आपूर्ति सेवाओं के लिए डिप्टी मैनेजर के मार्गदर्शन में आपूर्ति समिति के गठन के बाद इन निकायों ने मजदूरों के लिए स्थिर स्थितियां आश्वस्त करने हेतु गहरे सहयोग से काम करना शुरू कर दिया है। इससे मजदूरों के लिए आपूर्ति सेवाओं में काफी सुधार हुआ है। हमें भविष्य में इस आपूर्ति सेवा व्यवस्था का विकास जारी रखना होगा।

जैसा कि हमने देखा है, ताएआन बिजली मशीन कारखाने में एक साल के अनुभव ने इस बात की पुष्टि कर दी है कि हमारी पार्टी द्वारा प्रस्तुत कार्य की नयी प्रणाली श्रमजीवी अवाम के उत्साह और सक्रियता को उभारने, उत्पादन के पथप्रदर्शन को दृढ़ करने और उत्पादन के लिए आपूर्ति सेवाओं तथा मजदूरों की दैनिक जरूरतों को आश्वस्त करने में अधिक प्रभावशाली है।

हम कार्य की इस प्रणाली को दूसरे क्षेत्रों में लागू कर इसे और विकसित करना जरूरी समझते हैं।

नयी कार्य प्रणाली को लागू करने में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है क्रांतिकारी जुझारू भावना। पार्टी नीतियों को कार्यरूप देने के लिए हमें तमाम दिक्कतों पर बहादुरी से काबू पाते हुए इसे कायम रखना होगा। यही वह चीज है जो हमें ताए-आन बिजली मशीन कारखाने से सीखनी है। भले ही कार्य-प्रणाली कितनी भी अच्छी हो, यदि आपमें ऐसी जुझारू भावना न हो तो आप उसके पूरे लाभों को प्राप्त नहीं कर सकते।

अब मैं उन कर्तव्यों का जिक्र करना चाहूंगा जो आपके सामने पेश हैं।

यह सही है कि आपने भारी सफलताएं प्राप्त की हैं लेकिन आपको समझ लेना होगा कि वे केवल एक साल के काम का परिणाम हैं। अभी आपके काम में कई खामियां हैं और कई ऐसे मामले हैं जिनको अभी अध्ययन और मनन करके विकसित किया जाना है। आपका कर्तव्य है कि अब तक प्राप्त सफलता के आधार पर आप कार्य की नयी प्रणाली को पूर्णता प्रदान करने के लिए लगातार कड़ी मेहनत जारी रखें।

आपको फैक्टरी के प्रबन्ध ढांचे को और अधिक विवेकपूर्ण बनाने के लिए यत्न करना होगा, और साथ ही कार्य की अपनी विधियों में सुधार के लिए अधिक प्रयास करने होंगे। संक्षेप में कहा जाए, तो कार्य की नयी प्रणाली कार्य करने की एक कम्युनिस्ट प्रणाली है। तमाम कर्मियों को कार्य की कम्युनिस्ट शैली और विधि में प्रवीणता प्राप्त करनी चाहिए, अन्यथा सुधार की तो बात ही और है, वे कार्य की इस नयी प्रणाली को बनाये भी न रख सकेंगे। अतः आप सबको छोंगसान-री पद्धति और छोंगसान-री भावना से ओतप्रोत होना होगा।

इसके अतिरिक्त आपको फैक्टरी में पार्टी की नेतृत्वकारी भूमिका के दृढ़ी-करण पर निरन्तर गम्भीरतापूर्वक ध्यान देना होगा। पार्टी समिति और पार्टी सेलों को मजबूत बनाया जाना चाहिए और पार्टी सदस्यों की हरावल भूमिका को प्रखर किया जाना चाहिए।

पार्टी समिति के तमाम पार्टी सदस्य फैक्टरी के स्वामी हैं। पार्टी हर बात का फैसला, संगठन और नेतृत्व करती है।

फैक्टरी पार्टी समिति ने पिछले साल अपने कर्तव्य शानदार ढंग से पूरे किये। उसने फैक्टरी में काम के कमजोर मुद्दों का समय पर पता चलाया, सोचा-समझा, दिक्कतों पर काबू पाने के लिए पार्टी सदस्यों को प्रोत्साहित किया, और पार्टी नीतियों को दृढ़तापूर्वक सम्पन्न किया। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि फैक्टरी समिति ने नेतृत्व की जिम्मेदारी को संभाल कर एक अच्छा काम किया।

समिति ने पार्टी सदस्यों और श्रमजीवी जनता को हमारी क्रान्तिकारी परम्पराओं में शिक्षित करने तथा उन्हें एकजुट करने में अच्छा काम किया और उसने सांस्कृतिक क्रान्ति में भी अच्छे परिणाम हासिल किये हैं।

मैं यह आवश्यक समझता हूं कि इस फैक्टरी की पार्टी समिति के दृष्टान्त का अनुसरण कर अन्य फैक्टरियों में भी पार्टी के कार्य में सुधार लाया जाना चाहिए।

ऐसे भी पार्टी अधिकारी हैं जो मामूली-मामूली कामों के लिए इधर-उधर भाग दौड़ करते रहते हैं। इस परिपाटी से कोई फायदा नहीं। यदि पार्टी अधिकारी सफरी विक्रेताओं की तरह सुबह से ही इधर-उधर दौड़ते-फिरते रहें तो वे नेतृत्व पर बने नहीं रह सकेंगे। उन्हें जनता के बीच गहराई तक जाकर उसके कार्य का अध्ययन करना चाहिए, उसे नया रूप देना चाहिए और उसके काम में हमेशा मदद पहुंचानी चाहिए। तथापि यह एक सत्य है कि दक्षिण प्योंगान प्रान्तीय पार्टी समिति ने ताएआन बिजली मशीन कारखाने की पार्टी समिति के कार्य में कोई भी बड़ी मदद नहीं पहुंचायी। पार्टी को हमेशा पतवार संभाले रहना होगा।

इस फैक्टरी पार्टी समिति के कार्य से हमें जो एक और शिक्षा लेनी चाहिए, वह है पार्टी शक्तियों की उनके अनुकूल सही स्थानों पर नियुक्ति। यहां पार्टी सदस्यों को महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त करने के बाद उनकी हरावल भूमिका को बढ़ाने के लिए महान प्रयास किये गये हैं। इस समय इस फैक्टरी में पार्टी सदस्य ऊंचा तकनीकी स्तर हासिल कर चुके हैं और गैर पार्टी मजदूरों की अपेक्षा अधिक कठिन कार्यों को हाथों में ले रहे हैं।

जब हम सहकारी फार्मों में जाते हैं, तो पार्टी शक्तियों के गलत वितरण के कई मामले सामने आते हैं। कम महत्व के कामों पर नियुक्त पार्टी सदस्य उत्पादन में अच्छे परिणाम प्राप्त करने में असमर्थ रहते हैं और कड़ी मेहनत में अग्रिम पंक्ति में आने में असमर्थ रहते हैं।

यदि पार्टी सदस्य सहज कार्य करेंगे और कोरी बातें बनाएंगे, तो वे कैसे हरावल भूमिका अदा करने का दावा कर सकेंगे ? पार्टी सदस्यों को पहले उत्पादन में मिसाल कायम करनी होगी। उन्हें उत्पादन में कठिन और महत्वपूर्ण काम संभालने चाहिए, और गैर-पार्टी कर्मियों की तुलना में ज्यादा उत्साह से काम करना चाहिए, तकनीक का ज्यादा गम्भीरता से अध्ययन करना चाहिए, अपने जीवन को ज्यादा सभ्य ढंग से नियोजित करना चाहिए और बगैर किसी घमंड के विनम्रतापूर्वक व्यवहार करना चाहिए। ऐसा करने पर ही पार्टी सदस्य प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकेंगे, जनता को अपनी बात सुना सकेंगे और आगे बढ़ने में उसकी मदद कर सकेंगे।

हमें पार्टी सदस्यों की भूमिका को दृढ़ बनाने के लिए तमाम क्षेत्रों में, फैक्ट-रियों में और गांवों में कड़ी मेहनत से काम करना होगा।

इसके साथ ही आत्मनिर्भरता की क्रान्तिकारी भावना को पूरा स्थान देना महत्वपूर्ण है। आत्मनिर्भरता की भावना अपने ही प्रयासों द्वारा क्रान्ति का निर्माण करने की भावना है। हमें अपनेआप को अदम्य क्रान्तिकारी भावना से लैस करना होगा—उस भावना से जो हमें इस योग्य बनाती है कि हम वह कुछ उत्पादित कर सकें जोकि हमारे पास नहीं हैं, वह कुछ हासिल कर सकें जो हमारे पास कम है, वह कुछ अध्ययन द्वारा जान सकें जो हम नहीं जानते, तथा तमाम दिक्कतों और आजमाइशों को बिना तनिक भी डांवांडोल हुए पार कर सकें।

हमें दूसरों की शक्ति पर निर्भर न होकर सब कुछ स्वतः करना होगा। हमें बिरादराना देशों के जनगण से मदद मिली है, लेकिन वह हमारे विकास को तेज करने वाले हेतुओं में से एक है। निर्णायात्मक तो है स्वयं हमारी अपनी जनता का संघर्ष।

मिसाल के तौर पर ताएआन बिजली मशीन कारखाने को लीजिए। यह बिना बाहरी मदद के निर्मित किया गया है। हमने देश के तमाम भागों में स्थानीय रूप से संचालित २,००० से अधिक फैक्टरियां बिना बाहरी मदद के बनायी हैं। अब हम अपनी तमाम छोटी-बड़ी फैक्टरियां मुख्यतः अपने ही प्रयासों से निर्मित कर रहे हैं। हम स्वतः तकनीकी रूपरेखाएं तैयार कर रहे हैं और निर्माण कार्य कर रहे हैं।

यह कहने की जरूरत नहीं कि हम कुछ मशीनें विदेशों से आयात करते हैं लेकिन उन्हें हम अपने पैसे से खरीदते हैं, मुफ्त हासिल नहीं करते। भविष्य में हम कुछ आवश्यक मशीनों का आयात जारी रखेंगे। आत्मनिर्भरता का यह अर्थ नहीं होता कि दूसरों द्वारा निर्मित मशीनों के उपयोग से इनकार किया जाए। न ही इसका अर्थ दूसरों से सीखने का विरोध करना और विदेशी सहायता को पूर्णतया अस्वीकार करना होता है। असल मुद्दा यह है कि आत्मनिर्भरता को हमारी गति-विधियों को निर्देशित करने का मूल सिद्धान्त बनाया जाए।

बेशक जहां तक संभव हो, स्वतः मशीनें निर्मित करना बेहतर होगा। पिछले साल आपने स्वतः कुछ भारी मशीनरी निर्मित की और भविष्य में और ज्यादा निर्मित करना अच्छा होगा। विदेशों से आयात करने की बजाय स्वतः ज्यादा मशीनें बनाने के आपके सुझाव को मैं पूर्णतया स्वीकार करता हूं।

आपने पिछले साल जो मशीनें बनायीं, यदि हम उनका आयात करते तो उन्हें प्राप्त करने में हमें तीन साल लग जाते और जब एक दिन का समय भी हमारे निर्माण के लिए बहुमूल्य हो तो हम कैसे तीन साल तक इंतजार कर सकते हैं? हम

अपने इस्तेमाल के लिए जरूरी जो कुछ भी निर्मित कर सकते हैं, साहसपूर्वक करना होगा।

हम छोलिमा अभियान इसलिए चला सके, कि हम आत्मनिर्भरता की क्रान्तिकारी भावना से ओतप्रोत हैं। इस अभियान में हमें किसी ने मदद नहीं दी। यदि कोई घोड़े पर चढ़ना न जानता हो और उसे उसकी पीठ पर बैठा दिया जाए तो हो सकता है, वह गिर जाए और चोट खा जाए। हम छोलिमा पर स्वतः चढ़े और अब बड़ी तेजी से आगे बढ़ते जा रहे हैं।

हमें अगले तीन से चार वर्षों में और भी ऊंचे शिखरों पर पहुंचने के लिए और कड़ी मेहनत करनी होगी। सबसे पहले हमें जनता के जीवनस्तरों में आमूल सुधार लाना होगा। इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण काम यह है कि सारी आबादी को उसके मुख्य आहार के रूप में चावल उपलब्ध किया जाए।

ऐसा करने में दूसरों की सहायता पर निर्भर रहना मूर्खतापूर्ण होगा। हमें अपने ही उद्यम द्वारा तमाम लोगों को मुख्य आहार के रूप में चावल उपलब्ध करने का यत्न करना होगा।

इस समस्या को हल करने के लिए हमें क्या करना चाहिए ? सिंचाई परियोजनाएं व्यापक रूप में चलायी जानी चहिए और ज्यादा संख्या में ट्रैक्टर, लारियां तथा रासायनिक खाद उत्पादित की जानी चाहिए। और ज्यादा जेनरेटर, विद्युत मोटरें और ट्रांसफार्मर्स निर्मित करने का काम भी आपके सामने पड़ा है।

चावल समस्या का समाधान हमें अन्य अनाजों को चारे के रूप में प्रयुक्त करने में समर्थ बनाएगा और इस प्रकार हम मांस की समस्या भी हल कर सकेंगे।

यदि हम तत्परता से काम करें तो ज्यादा तादाद में मछलियां प्राप्त कर सकेंगे। यदि आप ज्यादा विद्युत उपकरण उत्पादित कर सकें तो हम ज्यादा मत्स्य नौकाएं बना सकेंगे और ज्यादा मछलियां पकड़ सकेंगे।

हर कोई टाइल की छत वाले मकान में रह सके, इस समस्या को हल करना भी सर्वथा हमारे बूते में है।

भविष्य में बेहतर जीवन के निर्माण के लिए हमारे पास एक ठोस बुनियाद है। अपने ही प्रयासों से शानदार जीवन का भोग करना हमारे लिए पूर्णतया संभव है। यह हमारा हक है और कोई भी हमें इससे वंचित नहीं कर सकता।

इसके अतिरिक्त आपको उत्पादनों की क्वालिटी को बेहतर बनाने और सामग्रियों की खपत में बचत करने के लिए सतत एक जोरदार संघर्ष चलाना होगा। आप सब तांबे, अबरक, रेशम और अन्य कई बहुमूल्य सामग्रियों का प्रयोग करते हैं और यदि आप इनकी बर्बादी को न्यूनतम कर सकें और इनकी बचत कर सकें तो इससे राज्य को बड़े लाभ होंगे।

उत्पादनों की क्वालिटी में सुधार के लिए हमें मजदूरों और तकनीकी कर्मचारियों के तकनीकी स्तर को ऊंचा करना होगा। विदेशी और कोरियाई, दोनों तकनीकी साहित्य के और व्यापक अध्ययन तथा नवीनतम तकनीक में प्रवीणता के लिए जोरदार प्रयास किये जाने चाहिए। तकनीकी कर्मचारियों को अपने ज्ञान पर कभी भी सन्तुष्ट होकर न बैठना चाहिए बल्कि इसके विपरीत उन्हें आज की दुनिया में समुन्नत तकनीकी ज्ञान के स्तर तक शीघ्रता से पहुंचने के लिए दृढ़तापूर्वक संघर्ष करना चाहिए।

कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के कार्य में सुधार किया जाना चाहिए। यह फैक्टरी दूसरों के लिए एक नमूना होना चाहिए और उन्हें सक्रिय मदद देनी चाहिए। इस लिए आपको बहुत से कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करना चाहिए और उनमें से कुछेक को दूसरी फैक्टरियों में भेजना चाहिए।

इस फैक्टरी के तमाम मजदूरों को कार्यकर्ताओं के रूप में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। जैसा कि हमें बताया जाता है, पुराने जमाने में किसी भी व्यक्ति के लिए साहित्यिक और सैन्य, दोनों प्रकार की प्रतिभाएं प्राप्त करना जरूरी समझा जाता था। आज आपके लिए समुन्नत तकनीकी ज्ञान और क्रान्तिकारी विचारधारा से लैस कार्यकर्ता बनना जरूरी है।

जब आप यह करेंगे, तो आप की फैक्टरी हमारे देश के मशीन निर्माण उद्योग का विकास करने में एक बहुत बड़ी भूमिका अदा कर सकेगी। यह एक भारी महत्व का काम है। मैं चाहता हूं कि आप इस बैठक में इस कार्य को स्वीकार करें और इसे पूरा करने की कोशिश करें।

इसके बाद आपको मजदूरों के कल्याण के लिए आपूर्ति सेवा में सुधार करना चाहिए। मैंने आपके होस्टल में ऐसी बहुत सी बातें पाई हैं, जिनमें सुधार किया जाना चाहिए। यदि हमें अंक देने हों तो यह मात्र "उत्तीर्ण" ही हो सकता है। आपको अपने होस्टल की व्यवस्था को बेहतर बनाना चाहिए ताकि इसे "शानदार" कहा जा सके। आपूर्ति सेवा में स्थितियों को सुधारा जाना चाहिए और घरों को अधिक साफ-सुथरा बना कर उन्हें और भी ज्यादा आधुनिक रूप दिया जाना चाहिए। आपको इस बात का ध्यान रखना होगा कि सब्जियों की आपूर्ति बराबर कायम रहे और प्रत्येक मजदूर को हर रोज पर्याप्त मात्रा में खाना पकाने का तेल और कोई २०० ग्राम समुद्री आहार उपलब्ध हो। यदि आप अपनी आपूर्ति सेवा में केवल "उत्तीर्ण" होने के अंक प्राप्त करते हैं तो आप एक कार्यकर्ता दस्ता नहीं बन सकते। इस फैक्टरी में काम के सन्तोषजनक ढंग से विकसित होने के बाद ही यह आपके किसी अन्य फैक्टरी में कार्यकर्ता के रूप में स्थानान्तरित होने पर एक आदर्श के तौर पर सेवा करेगी।

फैक्टरी के पीछे पहाड़ियों पर वाटिकाएं लगायी जानी चाहिए और उनके आसपास के क्षेत्रों को साफ-सुथरा रखा जाना चाहिए। और आपको अधिक सुसंस्कृत ढंग से जीवन गुजारना चाहिए। आप अब भी ऐसे लोग देखते हैं, जो अपने जीवन की ओर ध्यान नहीं देते। आपको यह आश्वस्त करना चाहिए कि मजदूर और उनके परिवार हमेशा अच्छा जीवन बिताएं।

हमने इस बैठक में आपके अच्छे अनुभवों से बहुत कुछ सीखा है। मेरा सुझाव है कि ताएआन बिजली मशीन कारखाने में संचित अनुभव को अन्य क्षेत्रों में लोकप्रिय बनाया जाए। मैं आपके भावी काम में आपके लिए और भी बड़ी सफलताओं की कामना करता हूं!

काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समितियों के और अधिक दृढ़ीकरण तथा विकास के बारे में

दक्षिण प्योंगान प्रान्त के पार्टी कर्मियों और कृषि कार्यकर्ताओं की सलाहकार बैठक में दिया गया भाषण

१३ नवम्बर १९६२

हमने इस बैठक में सुकसोन काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समिति के कामकाज पर रिपोर्ट और कई साथियों के भाषण सुने हैं।

सुकछोन काउंटी सहकारी प्रबन्ध समिति ने एक वर्ष के कार्य के अनुभव से सिद्ध कर दिया है कि काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समितियों का गठन सामयिक था और समाजवादी कृषि प्रबन्ध की प्रणाली के रूप में इन समितियों से बहुत बड़े लाभ हैं।

काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समितियों का पहला लाभ यह है कि ये समितियां प्रबन्ध की औद्योगिक विधि द्वारा ग्रामीण अर्थतन्त्र को नेतृत्व प्रदान करती हैं।

भूतकाल में कृषि का निर्देशन करने में जन समितियां मुख्यतया प्रशासनिक पद्धतियों का उपयोग करती थीं। निजी किसानी अर्थतन्त्र के दिनों में यह बिल्कुल सही था।

लेकिन सामूहिक समाजवादी कृषि का प्रशासनिक पद्धतियों द्वारा पथप्रदर्शन नहीं किया जा सकता। इसके अतिरिक्त चूंकि सहकारी फार्मों को विस्तृत किया गया है और उन्हें औसतन ३०० से अधिक घरानों तथा ५०० से अधिक छोंगबो कृषि भूमि वाले बड़े पैमाने के समाजवादी फार्म में बदल दिया गया है और कृषि तकनीक में तीव्र प्रगति की गयी है, इसलिए कृषि का अतीत में प्रयुक्त प्रशासनिक विधियों द्वारा कारगर पथप्रदर्शन करना सर्वथा असंभव हो गया है। बड़े पैमाने

पर संचालित और आधुनिक तकनीक से सज्जित समाजवादी कृषि का औद्योगिक पद्धतियों द्वारा ही पथप्रदर्शन करना होगा।

पूंजीवादी देशों में भी तमाम बड़े फार्म, जिन पर मशीनों से काम होता है, औद्योगिक पद्धति से ही संचालित किये जाते हैं। इससे प्रकट होता है कि यद्यपि पूंजीवादी और समाजवादी अर्थतन्त्र बुनियादीतौर पर भिन्न-भिन्न आर्थिक व्यवस्थाएं हैं, फिर भी तकनीकी रूप से समुन्नत बड़े पैमाने की कृषि का, चाहे वह किसी भी किस्म की हो, केवल औद्योगिक पद्धति द्वारा ही प्रबन्ध किया जा सकता है।

प्रबन्ध की औद्योगिक पद्धति क्या है ? इसमें उत्पादन के नियोजन से संगठन तक, तकनीक के विकास, सामग्रियों की आपूर्ति, और उद्यम की श्रमिक शक्ति तथा वित्तीय गतिविधियों के आवंटन और संगठन तक उद्यम की तमाम गतिविधियों का प्रत्यक्ष नियन्त्रण, आयोजन और ठोस रूप में पथप्रदर्शन शामिल है।

उत्पादन का तकनीकी पथप्रदर्शन प्रबन्ध की औद्योगिक पद्धति की आधार-शिला है।

औद्यौगिक उत्पादन की तरह कृषि उत्पादन भी एक तकनीकी प्रक्रिया पर आधारित है। जब बगैर किसी यन्त्र के हाथ से खेतीबाड़ी की जाती थी, तो कृषि में तकनीकी ज्ञान का कोई अधिक महत्व न दीखता था। लेकिन अब जब कि उसका काफी प्राविधिक रूपांतर हो चुका है, यह अधिकाधिक स्पष्ट होता गया है कि कृषि उत्पादन को भी तकनीकी प्रक्रियाओं से गुजरना होगा।

अब हमारे देहाती क्षेत्रों में सिंचाई की एक आधुनिक प्रणाली स्थापित हो चुकी है और इसके साथ ही भारी संख्या में ट्रैक्टर तथा कृषि यन्त्र काम में लाये जा रहे हैं और धीरे-धीरे रसायन का भी उपयोग किया जाने लगा है। अतः अब प्रबन्ध की औद्योगिक पद्धति और तकनीकी पथप्रदर्शन के बिना कृषि का पथप्रदर्शन करना सर्वथा असंभव है।

कृषि उत्पादन के तकनीकी पथप्रदर्शन के लिए यह जरूरी है कि यन्त्रों और उपकरणों के समान वितरण तथा उपकरणों की समय पर मरम्मत और बदलाई की पक्की व्यवस्था करने, उत्पादकों के तकनीकी और कौशल के स्तरों का उन्नयन करने और तमाम यन्त्रों और उपकरणों के विवेकपूर्ण उपयोग की व्यवस्था करने के लिए पग उठाये जाएं। इसके साथ ही सिंचाई परियोजनाओं का निरन्तर निर्माण करना और सिंचाई सुविधाओं का अच्छा प्रबन्ध करना भी जरूरी है। यदि केवल जल-नियन्त्रण को ही लें तो कहना पड़ेगा कि यह कोई आसान कार्य नहीं है। पम्पिंग उपकरणों की समय-समय पर पड़ताल और मरम्मत जरूरी है तथा पानी देने तथा नालियों के काम योजना अनुसार किये जाने चाहिए। जल-नियन्त्रण एक

तकनीकी प्रक्रिया भी है। इसके अतिरिक्त यह जरूरी है कि विद्युतीकरण और रसायनीकरण लागू किया जाए तथा सारी कृषि तकनीक को खेतों के पुनः समायोजन से सम्बद्ध किया जाए, तथा मिट्टी में सुधार और बीज उत्पादन का तेजी से विकास किया जाय।

अब हम ऐसी स्थिति में हैं कि बगैर तकनीकी जानकारी के हम न अच्छी कृषि कर सकते हैं और न ही कृषि का पथप्रदर्शन कर सकते हैं।

इसके अलावा हमारे सामने देहात में तकनीकी क्रान्ति को बढ़ावा देकर कृषि की उत्पादक शक्तियों के विकास को तीव्र गति प्रदान करने का महत्वपूर्ण कार्य पेश है। तकनीकी क्रान्ति का पथप्रदर्शन करने और उसे उत्साहपूर्वक आगे बढ़ाने के लिए तकनीकी ज्ञान अनिवार्य है।

चूंकि सहकारी फार्मों को बड़ा बनाया गया है और उनके तकनीकी उपकरणों में तेजी से सुधार किया गया हैं और चूंकि तकनीकी क्रान्ति सर्वोच्च प्राथमिकता के रूप में आगे आ गयी है, अतः यह सर्वथा आवश्यक हो गया है कि कृषि प्रबन्ध की पुरानी प्रशासनिक व्यवस्था को समाप्त कर दिया जाए और औद्योगिक पद्धति पर आधारित एक नयी व्यवस्था स्थापित की जाए।

अब यह सवाल पैदा होता है कि प्रबन्ध की औद्योगिक पद्धति का उपयोग करने वाली कृषि के पथप्रदर्शन के लिए इकाई का क्या आकार अपनाया जाए।

सहकारी फार्म बहुत छोटा होता है। इसके पास न तो काफी प्रबन्ध और तकनीकी कार्यकर्ता हैं, और न ही कृषि में व्यापक यन्त्रीकरण लागू करने के लिए आर्थिक आधार है। इसके विपरीत प्रांत बहुत बड़ा है।

अतः हमने काउंटी को बुनियादी इकाई माना है। काउंटी के पास बहुत-से तकनीकी और प्रबन्ध कार्यकर्ता हैं और साथ ही कृषि की सेवा करने वाले तमाम राज्यीय निकाय—कृषि यन्त्र केन्द्र, सिंचाई प्रशासन कार्यालय, आदि—व्यावहारिक रूप से हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक काउंटी के पास लगभग १०,००० छोंगबो कृषि भूमि है। इसलिए प्रबन्ध की औद्योगिक पद्धति का उपयोग करते हुए कृषि का पथप्रदर्शन करने के लिए काउंटी एक उपयुक्त इकाई है, और यह तमाम तकनीकी उपकरणों के व्यापक इस्तेमाल के लिए भी एक सुविधाजनक इकाई है।

सुकछोन काउंटी फार्म सहकारी प्रबन्ध समिति ने प्रबन्ध की औद्योगिक पद्धति का उपयोग करते हुए काउंटी के अन्दर सहकारी फार्मों का नेतृत्व करके कृषि उत्पादन में महान सफलताएं प्राप्त की हैं। हमारे अनुभव से यह सिद्ध हो गया है कि हमारे देश की वास्तविक स्थितियों में काउंटी ही प्रबन्ध की औद्योगिक

पद्धति का उपयोग करते हुए सहकारी फार्मों को नेतृत्व प्रदान करने के लिए सर्वाधिक युक्तियुक्त इकाई है।

काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समिति का एक और लाभ यह है कि यह तमाम लोगों के स्वामित्व के सहकारी स्वामित्व के साथ आवयविक रूप में संयुक्त कर देती तथा सहकारी अर्थतन्त्र के राज्यीय पथप्रदर्शन और सहायता को सुदृढ़ बनाती है।

पिछले समय में कई समाजवादी देशों में ट्रैक्टर किराये पर देने का केन्द्र ही सहकारी अर्थतन्त्र को तमाम लोगों के राज्य अर्थतन्त्र में सम्बद्ध करने वाली एक मुख्य कड़ी था। ट्रैक्टर किराये पर देने के केन्द्र के माध्यम से ही राज्य सहकारी अर्थतन्त्र को तकनीकी मदद उपलब्ध करता और देहात में तकनीकी क्रान्ति को बढ़ावा देता था। लेकिन ट्रैक्टर किराये पर देने का केन्द्र किसानों को भले ही तकनीकी सहायता उपलब्ध करता रहा हो, मगर वह व्यापक ढंग से सहकारी अर्थतन्त्र के उत्पादक कार्यकलाप का प्रत्यक्ष नेतृत्व नहीं कर सकता था।

कृषि के लिए जरूरी राज्य के स्वामित्व वाले तमाम तकनीकी उपकरणों का राज्य के सशक्त समर्थन के साथ व्यापक उपयोग किये बगैर हमारे देश में ग्रामीण तकनीकी क्रान्ति को कामयाबी से सम्पन्न नहीं किया जा सकता। अतः हमने फार्म मशीन केन्द्रों, सिंचाई प्रशासन कार्यालयों और राज्य के स्वामित्व के अन्य निकायों का, जो कृषि की प्रत्यक्ष सेवा करते हैं, सतत विस्तार और दृढ़ीकरण करने तथा उनको आधार बना कर देहात में तकनीकी क्रान्ति को बढ़ावा देने की नीति का अनुसरण किया है।

काउंटी जन समितियां, जो कृषि का प्रत्यक्ष पथप्रदर्शन किया करती थीं, उसका तकनीकी मार्गदर्शन करने में असमर्थ थीं, क्योंकि उनके पास सहकारी फार्मों की सहायता के लिए वांछनीय भौतिक और तकनीकी साधनों का अभाव था। इसके अतिरिक्त ऐसा कोई काउंटी संगठन न था, जिसका ग्रामीण अर्थतन्त्र की सेवा करने वाले राज्यीय निकायों पर संयुक्त नियंत्रण हो, और इस कारण इन निकायों ने कृषि के विकास में अपनी भूमिका कारगर ढंग से न निभायी।

हमने काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समितियां गठित की हैं और उन पर फार्म मशीन केन्द्रों, फार्म उपकरण फैक्टरियों, सिंचाई प्रशासन कार्यालयों, पशुरोग-विरोधी केन्द्रों आदि—तमाम निकायों—पर तथा ग्रामीण अर्थतन्त्र के राज्यीय स्वामित्व में आने वाले तकनीकी उपकरणों और तकनीकी शक्तियों पर संयुक्त नियंत्रण पर आधारित प्रबन्ध की औद्योगिक पद्धति का उपयोग करते हुए सहकारी फार्मों का पथप्रदर्शन करने की जिम्मेदारी डाली है। इस प्रकार राज्य के स्वामित्व को आंगिक रूप में सहकारी स्वामित्व के साथ संयुक्त कर दिया गया है तथा

सहकारी अर्थतन्त्र को दी जाने वाली राज्य की तकनीकी और आर्थिक सहायता को निर्णयकारी ढंग से सुदृढ़ किया गया है।

इससे राज्य द्वारा भेजे गये तकनीशियनों के दल और राज्य के तकनीकी उपकरण सहकारी फार्मों की वेहतर सेवा करने में समर्थ हुए। इसके अलावा इसने तकनीकी उपकरणों की निरंतर बदलाई और सुधार के लिए अनुकूल स्थितियां उत्पन्न कीं और हमें देहात में तकनीकी क्रान्ति को अधिक सक्रियता से तेज करने के योग्य बनाया।

यह आमतौर पर माना जाता है कि धान की खेती के कारण हमारे देश में कृषि का यंत्रीकरण बहुत कठिन है, लेकिन प्रबन्ध समितियों की स्थापना से सहकारी फार्म तथा राज्य की तकनीकी शक्तियां और फार्म यंत्र केन्द्र अपने बीच एक आंगिक कड़ी कायम रखते हुए इस समस्या के समाधान की दिशा में सक्रिय रूप में काम करने में समर्थ हुए हैं। परिणामस्वरूप हमारे कृषि उत्पादन को यंत्रीकृत करने का एक निश्चित मार्ग मिल गया।

काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समितियों के गठन ने सहकारी अर्थतन्त्र को न केवल भौतिक और तकनीकी तौर पर बल्कि, सांगठनिक तौर पर भी सुदृढ़ किया है।

निजी किसानी अर्थतन्त्र के विपरीत, जोकि बिखरा हुआ छोटे पैमाने का और स्वयंस्फूर्त रूप में विकसित होने वाला उद्यम होता है, सहकारी अर्थतन्त्र निश्चित रूप से एक सामूहिक समाजवादी अर्थतन्त्र है जोकि योजना के अनुसार विकसित होता है। तथापि राज्यीय अर्थतन्त्र के मुकाबले में, जोकि तमाम जन-स्वामित्व का प्रतिनिधित्व करता है, सहकारी अर्थतन्त्र ढीली बनावट वाला और : रूप से कमजोर अर्थतन्त्र होता है।

सहकारी अर्थतन्त्र को आवयविक रूप से राज्यीय अर्थतन्त्र के साथ, जोकि एक उच्चतर आर्थिक तन्त्र है, जोड़ते हुए हमने सहकारी फार्मों में पायी जाने वाली स्वच्छन्दता और अव्यवस्था के शेष लक्षणों को खत्म कर दिया है और उसे अधिक सुसंगठित, बेहतर समन्वित और ज्यादा सशक्त अर्थतन्त्र बना दिया।

वास्तव में यह कहा जा सकता है कि सहकारी फार्म काउंटी-व्यापी आधार पर पारस्परिक समन्वय के बिना अपना काम लापरवाही से किया करते थे। अतः उत्पादन का नियोजन करने में अलग-अलग सहकारी फार्म पानी, मशीनों, विद्युत शक्ति, सामग्रियों और अन्य उपलब्ध चीजों के परिणाम के बारे में अनुमान लगाने का काम अच्छी तरह नहीं कर सकते थे और इस प्रकार उनकी योजनाएं अस्तव्यस्त हो जाती थीं।

परन्तु काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समितियों के गठन के बाद प्रत्येक

काउंटी के अन्दर सहकारी फार्मों ने गहरे संबद्धसूत्र विकसित किये हैं और वे अब मशीनों, उपकरणों, सामग्रियों और अन्य हर वस्तु के सही अनुमान के आधार पर उत्पादन की योजनाएं तैयार करने में समर्थ हैं। दूसरे शब्दों में सहकारी फार्म अब अपनेआपको ऐसी स्थिति में पाते हैं जिसमें वे पहले की अपेक्षा अधिक व्यवस्थित ढंग से और योजना के ज्यादा अनुरूप विकास कर सकते हैं।

राज्य और सहकारी स्वामित्व के आँगिक संयोग से सहकारी फार्मों के ही प्रबन्ध को आमूल रूप से सुधारना सम्भव हो गया है। इससे पूर्व प्रत्येक प्रबन्ध बोर्ड अपने काम में केवल अपनी शक्ति पर निर्भर रहता था और इस वजह से बड़े सहकारी फार्म का, जिसमें लगभग ३०० कुटुंब शामिल होते थे, प्रबन्ध कुशलता से नहीं चला सकता था। योजनाओं को तैयार करने की बात तो दूर रही, सहकारी फार्म के प्रबंध कर्मचारी श्रम प्रशासन, फार्म की वित्तीय व्यवस्था और संपत्ति के प्रबंध, खपत और संचय के सही अनुपात का निर्धारण आदि पेचीदा मामलों को समुचित ढंग से निपटा नहीं सकते थे। लेकिन काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समितियां सहकारी फार्मों के प्रबन्ध कर्मचारियों को उपयुक्त सहायता प्रदान कर सकती हैं ताकि वे राज्य अर्थतन्त्र के प्रबन्ध की श्रेष्ठ पद्धतियां लागू कर सही ढंग से इन मामलों से निपट सकें, और इस प्रकार सहकारी फार्मों का अधिक कारगर प्रबन्ध आश्वस्त कर सकें।

कृषि प्रबन्ध की नयी प्रणाली समाजवादी सहकारी अर्थतन्त्र के और अधिक विकास के भी पूर्णतया अनुरूप है।

भविष्य में जब कृषि का प्राविधिक पुनर्निर्माण पूरा हो जाएगा और उद्योग की तरह कृषि में भी मशीनें शारीरिक श्रम का स्थान ले लेंगी, जिससे तमाम लोगों का काम सुकर हो जाएगा और उन्हें चीजें बहुतायत से मिलने लगेंगी, तो सहकारी अर्थतन्त्र एक ऐसे अर्थतन्त्र में बदल जाएगा जिसका स्वामित्व तमाम लोगों के हाथ में होगा।

कुछ लोगों की धारणा है कि सहकारी अर्थतन्त्र को बनाए रख कर कम्युनिस्ट समाज में संक्रमण किया जा सकता है, और वे यहां तक भी कह देते हैं कि निजी अर्थतंत्र को यथावत बने रहने देकर भी हम कम्युनिज्म के चरण में पहुंच सकते हैं। यह सर्वथा गलत है।

निःसंदेह मैं यहां उन चरणों की चर्चा नहीं करना चाहता जिनसे गुजर कर समाजवादी अर्थतन्त्र कम्युनिज्म के चरण में पहुंचेगा, लेकिन इस बात में कोई शक नहीं कि कम्युनिज्म को प्राप्त करने के लिए देश के अर्थतन्त्र को हर हालत में तमाम लोगों के स्वामित्व की एक संयुक्त व्यवस्था में एकीकृत करना होगा, और सहकारी स्वामित्व को तमाम लोगों के स्वामित्व में परिणत करना होगा।

काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समितियों का गठन कर देना सहकारी स्वामित्व पर राज्यीय स्वामित्व की नेतृत्वकारी भूमिका को दृढ़ करके और इन दोनों रूपों के बीच घनिष्टतर सम्बन्धों की स्थापना करके सहकारी स्वामित्व को तमाम जनता के स्वामित्व के सतत निकटतर लाने का एक सर्वाधिक युक्तिसंगत उपाय है।

यद्यपि इस समय सरकारी और राज्य अर्थतंत्रों के बीच भारी अंतर है, तथापि भविष्य में जब यंत्रीकरण और रसायनीकरण में और ज्यादा उन्नति कर ली जाएगी और जब फार्म तथा औद्योगिक श्रम के बीच प्रायः तमाम भेद दूर हो जाएंगे, तो देहात में पारिश्रमिक प्रणाली और आठ घंटे का कार्य दिवस लागू करना संभव हो जाएगा।

यदि काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समितियां अगले कुछ वर्षों में अच्छे परिणाम प्रदर्शित करती हैं तो हमारी योजना उनमें लागत-लेखा प्रणाली लागू करने की है। राज्य इस बात का ध्यान रख सकता है कि ट्रैक्टर चालकों और प्रबन्ध समिति कर्मचारियों के लिए न्यूनतम पारिश्रमिक आश्वस्त रहे और वे अपनी आमदनी का एक बड़ा भाग उत्पादन में प्राप्त परिणामों के अनुसार हासिल करें। इससे सहकारी किसानों की तरह राज्यीय उद्यमों के कर्मचारियों को भी उत्पादन बढ़ाने के लिए अतिरिक्त उत्साह मिलेगा।

हमें पहले ही एक इकाई के रूप में काउंटी में लागत लेखा-प्रणाली लागू करने का कुछ अनुभव प्राप्त है। हमने उंगी और र्योंगयोन फार्मों में ऐसी व्यवस्था लागू की थी और उसके अच्छे परिणाम निकले थे। अतीत में हमारे देश में राज्यीय फार्मों की हालत अक्सर खराब रही, क्योंकि उनके यन्त्रीकरण का स्तर निम्न था और उन्होंने प्रबन्ध की दोषपूर्ण पद्धतियों से काम लिया। जब हमने राज्यीय फार्मों के यन्त्रीकरण स्तर को ऊंचा किया और उनकी कार्यटोलियों में लागत-प्रणाली लागू की तो उन्होंने मुनाफा दिखाया और राज्य को लाभ दिया।

अगर हम भविष्य में काउंटी को एक इकाई मान कर लागत-लेखा लागू करते हैं तो भी हमें सहकारी स्वामित्व को बनाये रखना होगा। और काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समितियों में लागत-प्रणाली लागू करने में इन तमाम को एक ही स्तर पर रखने की जरूरत नहीं। पहले इसे उन काउंटियों में लागू किया जाना चाहिए जिनमें यन्त्रीकरण अपेक्षाकृत काफी आगे बढ़ चुका है और छोंगसान काउंटी जैसे क्षेत्रों को, जहां अब भी हाथ से ही अधिकांश काम होता है, आप आगे के लिए छोड़ सकते हैं।

इस तरह, जब काउंटी आधार पर लागत-प्रणाली लागू की जाएगी और देहात में तकनीकी क्रान्ति और भी प्रगति करेगी, तो मजदूर-किसान मैत्री मजबूत

होगी तथा किसानों पर मजदूर वर्ग का वैचारिक प्रभाव और भी बढ़ेगा। इसके अतिरिक्त जैसे-जैसे यन्त्रीकरण पूरे पैमाने पर आगे बढ़ेगा, वैसे-वैसे उद्योग और कृषि की उत्पादक शक्तियों के बीच की दूरियां धीरे-धीरे समाप्त हो जाएंगी, किसानों के जीवन का भौतिक और सांस्कृतिक स्तर सुधरेगा तथा शहरों और गांवों के बीच अंतर क्रमशः कम होता जाएगा। यह स्थिति हमारे लिए सहकारी अर्थतन्त्र को और भी ऊंचे स्तर पर विकसित करना संभव बना देगी।

लेकिन हमें सहकारी स्वामित्व को सारी जनता के स्वामित्व में बदलने के काम में जल्दबाजी नहीं मचानी चाहिए।

हमारे देश में अब भी कृषि और औद्योगिक श्रम के बीच काफी फर्क है। कृषि में अभी काफी परिमाण में यन्त्रीकरण करने की जरूरत है, क्योंकि वहां काम का एक बड़ा भाग हाथ से किया जाता है।

अतएव कार्य का संगठन करना और उसके परिणामों का मूल्यांकन करना कोई आसान काम नहीं है। आप एक-एक पौधे को लेकर इस बात की पड़ताल नहीं कर सकते, कि फसल बोने से पहले निश्चित मात्रा में खाद दी गयी है, या खरपतवार की सफाई की गयी है, न ही आप आसानी से यह मालूम कर सकते हैं कि किसानों ने अपना काम अच्छी तरह किया है या भीड़ में घुस कर अपना समय बर्बाद किया है। फिर कृषि श्रम का फल तत्काल प्राप्त नहीं होता, जैसे कि औद्योगिक श्रम की हालत में प्राप्त होता है। बसन्त में बोयी गयी फसलें पत-झड़ में कटाई से पूर्व कार्य की विभिन्न प्रक्रियाओं से गुजरती हैं। उन पर मौसमी हालात और अन्य कई प्राकृतिक स्थितियों का भी असर पड़ सकता है। अतः परिणामों के आधार पर उसमें लगाये गये श्रम का मूल्यांकन करना कठिन है।

इन विविध परिस्थितियों की वजह से किसान आमतौर पर राजनीतिक जागरूकता के विकास के मामले में मजदूरों से पीछें रह जाते हैं और स्वार्थपरता की वजह से काफी पिछड़े रहते हैं।

यह कहा जा सकता है कि औद्योगिक और कृषि श्रम के बीच भेदों की अन-देखी कर जल्दबाजी से सहकारी अर्थतन्त्र का राष्ट्रीयकरण करना या किसानों के लिए काम के घंटों के हिसाब से पारिश्रमिक की व्यवस्था लागू करना एक गम्भीर भूल ही होगी।

सहकारी स्वामित्व को तमाम लोगों के स्वामित्व के साथ, जिसे अब हम अपने हाथों में ले रहे हैं, क्रमिक रूप से जोड़ने का अर्थ कदापि सहकारी स्वामित्व को कमजोर करना या उसे एकदम समाप्त कर देना नहीं है। इसके विपरीत, इसका अर्थ उसे मजबूत बनाना है।

वर्तमान परिस्थितियों में राज्य स्वामित्व और सहकारी स्वामित्व के बीच स्पष्टतः भेद करना जरूरी है। किसान भी यही चाहते हैं।

इस समय हमारे लिए यह करना जरूरी है कि सहकारी अर्थतन्त्र को निरन्तर राज्यीय पथप्रदर्शन और सहायता उपलब्ध की जाए ताकि उसकी भौतिक तथा तकनीकी बुनियादें मजबूत हों, किसानों के ऊंचे उत्पादन के लिए उत्साह को तेज किया जाए और उनके जीवनस्तर को शीघ्रता से ऊंचा उठाया जाए।

सहकारी स्वामित्व को तमाम लोगों के स्वामित्व में बदलने के लिए हमें सबसे पहले कृषि में सर्वांगी यन्त्रीकरण लागू करना होगा, ताकि व्यावहारिक रूप से सारा काम मशीनें करें और आदमियों की केवल पूरक हैसियत मे जरूरत हो। हमें किसानों में कम्युनिस्ट शिक्षा का और ज्यादा प्रचार कर उनके विचार को नया रूप देना होगा।

ऐसा करके ही हम सहकारी स्वामित्व को तमाम लोगों के स्वामित्व में सुचारु रूप से बदल सकेंगे और किसानों को कम्युनिज्म की ओर ले जा सकेंगे। यह सही है कि भविष्य में जैसे-जैसे हमारा कार्य प्रगति करेगा, वैसे-वैसे और भी चीजें साफ होती जायेंगी, लेकिन पिछले दौर के अनुभव और इस साल के कार्य ने हमें विश्वास दिला दिया है कि हमारा वर्तमान रास्ता कम्युनिज्म की ओर जाने वाला सही पथ है।

अब मैं काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समितियों के सामने पेश प्रमुख दायित्वों की चर्चा करना चाहूंगा।

पिछले साल के अपने व्यावहारिक कार्य से हमारे सामने यह स्पष्ट हो गया है कि हमारी पार्टी द्वारा स्थापित काउंटी सहकारी कार्य प्रबन्ध समितियां बहुत ही उपयोगी हैं। हम कह सकते हैं कि भविष्य में ग्रामीण प्रश्न को सुलझाने का हमने अति सुविधाजनक मार्ग पा लिया है।

लेकिन मात्र एक वर्ष के अनुभव के आधार पर हम प्रबन्ध की नयी व्यवस्था के तमाम लाभों और खामियों को आत्मसात कर लेने का अभी दावा नहीं कर सकते। अमल के दौरान हमें उसकी और भी उपयोगिताओं तथा खामियों का पता चलाना होगा और प्रबन्ध की नयी व्यवस्था को अधिक सुदृढ़ बनाने और विकसित करने के लगातार प्रयास करने होंगे।

सर्वप्रथम, काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समितियों को सांगठनिक और तकनीकी रूप से मजबूत करना जरूरी है। अपने प्रबन्ध समिति कार्यकर्ताओं की पांतों में कृषि का अनुभव रखने वाले शिक्षित लोगों को शामिल कर उन्हें सुदृढ़ करना, उनके व्यावसायिक स्तर को तेजी से ऊंचा करना और खासतौर पर तकनीशियनों की तादाद बढ़ाना भी जरूरी है। ट्रैक्टर चालक कृषि उत्पादन में

एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं और हमें उनकी पांतों का विस्तार करने तथा उनके विचारधारात्मक स्तर को ऊंचा करने के अपने काम को सक्रिय रूप से आगे बढ़ाना होगा। ट्रैक्टर प्लाटूनों और टुकड़ियों को और ज्यादा मजबूत किया जाना चाहिए तथा फार्म मशीन केन्द्रों और सिंचाई प्रशासन कार्यालयों के कर्मियों के तकनीकी और कौशल स्तरों को निर्णयात्मक रूप से ऊंचा किया जाना चाहिए। इसके अलावा देहात में हमारी तकनीकी कर्मचारियों की पांतों को अत्यधिक विस्तृत किया जाना चाहिए, ताकि प्रत्येक सहकारी फार्म कार्यटोली को एक कृषि शास्त्री सुलभ किया जा सके और सहकारी फार्मों में मुख्य कृषिशास्त्री प्रणाली भी लागू की जा सके।

इस समय काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समितियों को सांगठनिक और तकनीकी तौर पर और सुदृढ़ किया जाना चाहिए, ताकि प्रबन्ध समितियों के तमाम विभाग और उनके मार्गदर्शन में चलने वाले राज्यीय स्वामित्व के तमाम उद्यम अपने कर्तव्य सन्तोषजनक ढंग से पूरे कर सकें।

काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समितियों के कार्य को सुदृढ़ बनाने में उनके अधिकारियों की कार्य पद्धतियों को सुधारने का प्रश्न महत्वपूर्ण है।

प्रबन्ध समितियों के वर्तमान अध्यक्षों में अधिकतर जन समितियों के भूतपूर्व अध्यक्ष ही हैं। जब उन्हें प्रबन्ध समितियों में स्थानान्तरित किया गया तो वे अपने साथ अपनी पुरानी-प्रशासनिक शैली भी लेते आये।

जब वे पहले जन समितियों में काम करते थे तो भी चिल्लाकर हुक्म देने और आज्ञाएं जारी करने की नौकरशाही कार्यशैली हानिप्रद थी, लेकिन वह आज प्रबन्ध समितियों के मामले में और भी असह्य हैं।

प्रबन्ध समितियों को स्वतः उत्पादन कर संगठन और नेतृत्व करना चाहिए। दफ्तर में बैठे-बैठे चिल्ला कर हुक्म देकर और आज्ञाएं जारी कर वे कभी भी समस्याओं को न सुलझा पाएंगी। कार्य की पुरानी नौकरशाही, प्रशासनिक शैली को पूर्णतया समाप्त किया जाना चाहिए और तमाम मामलों में राजनीतिक कार्य को प्राथमिकता दी जानी चाहिए और उसमें भी जनता के साथ काम को पहला स्थान दिया जाना चाहिए। तकनीकी कर्मचारियों के साथ सहकारी फार्मों के अध्यक्षों और कार्यटोली नेताओं के साथ और किसानों के साथ कारगर ढंग से काम किया जाना चाहिए। प्रबन्ध समितियों के अधिकारियों को मात्र हुक्म देने और आज्ञाएं जारी करने वाले अधिकारी न होकर, जनता के वफादार सेवक होना चाहिए।

जमींदारों या पूंजीपतियों का क्रीतदास बनना या प्रभावशाली लोगों की चापलूसी कर उनका दास बनना शर्मनाक है, लेकिन जनता का वफादार सेवक

बनना गौरव की बात है। प्रबन्ध समितियों के अधिकारियों को वफादारी के साथ सहकारी फार्मों और किसानों के हितों की सेवा करनी चाहिए।

जनता का वफादार सेवक बनने के लिए तमाम गतिविधियों में छोंगसान-री पद्धति को पूर्णरूपेण लागू करना होगा। छोंगसान-री पद्धति का अर्थ यह है कि आधारभूत इकाइयों पर नौकरशाही ढंग से कार्य थोपने की बजाय उनके बीच जाकर उन्हें सहायता दी जाए और उनकी गम्भीरतम समस्याओं को सुलझाया जाए। आपको किसानों से सलाह-मशविरा करने उनके बीच जाना चाहिए और बड़ी विनम्रता से उन्हें शिक्षा देनी चाहिए। आपको वास्तविक परिस्थितियों का पूर्ण अध्ययन कर इस ढंग से पथप्रदर्शन करना और सहायता देनी चाहिए कि निचले स्तरों के लोग स्वेच्छया उन्हें स्वीकार कर लें।

उत्पादन के नेतृत्व और उद्यम प्रबन्ध में कार्य की ताएआन प्रणाली लागू की जानी चाहिये। उत्पादन के पथप्रदर्शन की प्रणाली पूर्णरूपेण स्थापित की जानी चाहिए, नियोजन का स्तर ऊंचा किया जाना चाहिए और ऊंची इकाइयों द्वारा उर्वरक, कृषि रसायनों और अन्य सामग्रियों के संभरण की हमेशा पक्की व्यवस्था की जानी चाहिए।

यदि हम काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समितियों के कार्य में छोंगसान-री पद्धति के साथ औद्योगिक प्रबन्ध की ताएआन व्यवस्था को उचित रूप से संयुक्त कर दें तो कृषि व्यवस्था की नयी प्रणाली के लाभ पूर्णतया प्रकट हो जाएंगे और कृषि के विकास में सतत नूतनताएं लागू की जाएंगी।

एक अन्य महत्वपूर्ण कर्तव्य है उपकरणों की उपयोगिता दर में वृद्धि करना।

इस समय काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समितियों के पास काफी परिमाण में उपकरण और अन्य सुविधाएं विद्यमान हैं। सुकछोन काउंटी में २६२ वाटर लिफ्टिंग मशीनें, ४०० किलोमीटर नहरों की एक व्यापक सिंचाई व्यवस्था, भारी परिमाण में उपकरण—२०० ट्रैक्टर और ट्रक, विभिन्न कृषि यन्त्र, ट्रांसफार्मर, बिजली की मोटरें, पम्प आदि—उपलब्ध हैं। हम कह सकते हैं कि यह एक बहुत ही बड़ा प्रतिष्ठान है, जोकि एक सर्वोच्च कोटि के औद्योगिक प्रतिष्ठान के समकक्ष है।

लेकिन सुविधाओं की उपयोग-दर बहुत निम्न है।

पानी के नियन्त्रण में एक कमान प्रणाली की स्थापना और पानी के बेहतर उपयोग के अभियान का परिणाम यह हुआ है कि पिछले साल की तुलना में इस वर्ष पानी की उपयोग दर में वृद्धि हुई है। तथापि अब भी काफी पानी बर्बाद हो रहा है।

आप में से जो लोग लम्बें समय से सुकछोन काउंटी में रह रहे हैं; संभवतः इस

बात से भलीभांति वाकिफ हैं कि जिन दिनों यहां सिंचाई की कोई सुविधा उपलब्ध न थी, हमारे किसानों की स्थिति कितनी दयनीय थी। उन दिनों में सूखे मौसम के संक्षिप्त दौर का ही इतना असर होता था कि हर कोई तबाह हो जाता था और लोग अपना बोरिया-बिस्तर बांध कर रोटी की भीख मांगने को विवश हो जाते। अतः युद्ध के बाद के कठिन दिनों में हमने तमाम दिक्कतों पर काबू पाते हुए सिंचाई की सुविधाओं के निर्माण के लिए सचमुच एक कड़ा संघर्ष छेड़ा। इस समय हम अपनी जरूरत भर की मशीनें स्वयं तैयार कर रहे हैं, लेकिन युद्धविराम के बाद कई सालों तक हमें भारी कठिनाइयों का सामना करते हुए उनका आयात करना पड़ता था।

यदि हम सिंचाई की सुविधाओं का, जिन्हें हमने इतनी बड़ी मेहनत से स्थापित किया है, कारगर ढंग से उपयोग करने में असमर्थ रहते हैं और यदि हम पानी का उचित उपयोग करने में, जिसे भारी परिमाण में विद्युत और धन खर्च कर हजारों री दूरस्थ स्थानों से लाया गया है, असमर्थ रहते हैं, तो यह एक बहुत ही गम्भीर मामला होगा। तनिक भी पानी बर्बाद नहीं किया जाना चाहिए, उसकी प्रत्येक बूंद धान के खेतों और शुष्क खेतों के सिंचित करने के काम में इस्तेमाल की जानी चाहिए। जो पानी एक बार इस्तेमाल हो चुका है, उसे फिर से जमा कर पुनः इस काम में प्रयुक्त किया जाना चाहिए।

यदि आप यह सोचते हैं कि हमारे पम्प पूर्णतया बिजली पर अवलम्बित हैं, तो आप गलती पर हैं। यदि आप केवल कुछ कोड़ी छोंगबो धान के खेतों और शुष्क खेतों को सिंचित करने के लिए एक बड़े ही दूरस्थ स्थान से लम्बे तार बिछा-कर बिजली लाते हैं तो यह तोप से चिड़िया का शिकार करने जैसा ही होगा। इससे भारी परिमाण में बिजली और अन्य सामग्रियों का अपव्यय होगा और इसका कुछ भी फल न मिलेगा।

बिना बिजली के चलने वाली मोटरों का खूब उपयोग किया जाना चाहिए। प्रान्तों में यथासंभव अधिकाधिक पम्प लगाये जाने चाहिए। फिर छोटे आकार के पम्पों को ट्रैक्टरों से जोड़ा जाना चाहिए ताकि जहां जरूरी हो, पानी को ऊपर ले जाया जा सके।

इसके अलावा ट्रैक्टरों की उपयोग-दर में भारी बृद्धि की जानी चाहिए। ट्रैक्टर विभिन्न प्रयोजनों के काम आ सकते हैं। लेकिन इस समय उनमें से अधि-कांश केवल खेतों में जुताई करने तथा गांवों में फसल ढोने के कामों में ही इस्तेमाल किये जाते हैं।

मिसाल के तौर पर, ओंछोन काउंटी को कई ट्रैक्टर मिले हैं लेकिन वह उनका पूरा उपयोग नहीं कर रही है। १०० से २०० ट्रैक्टर बहुत काम कर सकते हैं;

लेकिन उनसे केवल खेतों में जुताई करने का काम लिया जाता है और उसके बाद बेकार छोड़ दिया जाता है। बेशक सम्बद्ध मन्त्रालय और प्रान्त को भी दोषी कहा जा सकता है, क्योंकि वे केवल विद्युत-चालित मशीनें पैदा करते हैं, ट्रैक्टर-चालित मशीनें पैदा नहीं करते।

जैसा कि आपने अपने भाषणों में कहा है, ट्रैक्टर जुताई के साथ-साथ खर-पतवार की सफाई और फसल की कटाई का काम भी कर सकते हैं और आप जहां कहीं भी पम्प द्वारा पानी प्राप्त करना चाहते हैं, वहां ट्रैक्टरों का उपयोग कर सकते हैं। ट्रैक्टरों के साथ क्रेनें या भूमि को खुरचने वाले यन्त्र (अर्थ स्क्रैपर) जोड़कर उनसे अनेक काम लिये जा सकते हैं। तो भी ट्रैक्टर बेकार पड़े रहते हैं और किसान अपनी पीठों पर उसी प्रकार भारी बोझ लाद कर चलते रहते हैं; जिस प्रकार कि वे हमेशा करते आये हैं। यह बिलकुल गलत बात है।

फार्म यन्त्रीकरण ट्रैक्टरों के कारगर इस्तेमाल पर अवलम्बित है। कृषि में यन्त्रीकरण लागू करना प्रबन्ध समितियों का एक महत्वपूर्ण कर्तव्य है, अतः उनका कारगर इस्तेमाल करने में असफल रहना और उन्हें बेकार पड़े रहने देना एक गम्भीर मामला ही है।

प्रबन्ध समितियों को ट्रैक्टरों को अच्छी हालत में बनाये रखने और कृषि में यन्त्रीकरण को बढ़ावा देने के लिए उन्हें अनेक कार्यों में प्रयुक्त करने पर गम्भीरता-पूर्वक ध्यान देना चाहिए।

व्यापक कृषि यन्त्रीकरण के लिए हमें विभिन्न किस्मों के कृषि यन्त्र निर्मित करने होंगे।

हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि कृषि कार्य के तमाम क्षेत्रों को यन्त्रीकृत करने के लिए ट्रैक्टरों के अलावा हमारी कृषि में इस्तेमाल के उपयुक्त अन्य कृषि यन्त्रों के भी डिजाइन तैयार किये जाएं और उन्हें निर्मित किया जाए। छोलिमा नमूने के साथ-साथ छोटे और बड़े, विभिन्न किस्मों के ट्रैक्टर निर्मित करना जरूरी है।

कोई भी किसान कड़ी मेहनत से मुक्ति के खिलाफ नहीं है। यन्त्रीकरण के बारे में पुरातनपंथी विचार प्रमुख कृषि कर्मचारियों के मालिकों में तो पाये जा सकते हैं, किसानों के मस्तिष्कों में नहीं।

पिछले कुछ समय से यन्त्रीकरण के बारे में विशेष रूप से हमारे अधिकारियों का उत्साह मंद पड़ गया है। इसका मुख्य कारण यह है कि राज्य तत्काल स्वयं-सेवी श्रम-शक्ति उपलब्ध करता है। प्रान्तों और काउंटियों को इस स्वयंसेवी श्रम-शक्ति पर निर्भर रहने की आदत-सी पड़ गयी है और वे यन्त्रीकरण लागू करने के लिए कड़ी मेहनत नहीं करतीं।

आज हमारे देश में न-केवल किसान बल्कि पूरा राष्ट्र कृषि कार्य में भाग लेता है। निःसन्देह यह कोई साधारण स्थिति नहीं है।

अन्य समाजवादी देशों में कृषि यन्त्रीकरण द्वारा गांवों से भारी परिमाण में श्रम-शक्ति मुक्त की जाती है और उसे औद्योगिक निर्माण में लगाया जाता है, लेकिन हमारे देश में गाँवों से किसी भी श्रम-शक्ति को मुक्त करना तो दूर रहा, उसे निरन्तर श्रम सहायता देनी पड़ती है। हमारे देश में कृषि व्यापक आधार पर होती है और इस वजह से यन्त्रीकरण के लागू होने के बाद भी ग्रामीण क्षेत्रों में काफी श्रम-शक्ति की जरूरत रहेगी। वास्तव में एक फसल के बीच में दूसरी फसल की बुवाई और मिलवां रोपाई कामों में यन्त्रीकरण लागू कर सकना मुश्किल है और धान की रोपाई तथा शीत-सांचा घनपौधों की फसल-रक्षण सरीखे कई हमारे काम हैं, जिन्हें यन्त्रीकृत करना कठिन है।

चूंकि राज्य देहाती क्षेत्रों से श्रमिकों को बाहर नहीं ले जाएगा, अतः किसानों को भी अतिरिक्त श्रमिकों के लिए जोर देने की बजाय, अपना काम खुद निपटाने का यत्न करना चाहिए। इसके लिए तेजी से यन्त्रीकरण लागू करना जरूरी है।

सुकछोन काउंटी का अनुभव बताता है कि यदि हम ट्रैक्टरों और दूसरी कृषि मशीनों के कारगर उपयोग द्वारा व्यापक यन्त्रीकरण को क्रियान्वित करें तो हम मौजूदा ग्रामीण श्रम-शक्ति से ही कृषि कार्य चलाने में समर्थ हो सकते हैं और जैसा कि राज्य ने प्रस्तावित किया है, किसानों को भारी बोझ से मुक्त करने में समर्थ हो सकते हैं। जब मशीनें श्रम का काम करेंगी और किसान मजदूरों की तरह एक दिन में आठ या नौ घंटे काम कर अच्छी फसलें पैदा करेंगे, तो हम यह कहने में समर्थ होंगे कि हमने देहात में आमतौर पर तकनीकी क्रान्ति ला दी है। तब कहीं जाकर किसानों को अध्ययन के लिए समय मिल सकेगा और वे सर्दियों में मजे से विश्राम की घड़ियां काट सकेंगे। हमें तकनीकी क्रान्ति के इस चरण को प्रथम पग के रूप में पूरा करने को प्रयासशील होना होगा।

हमने कृषि यन्त्रीकरण के लिए पर्याप्त एक तकनीकी आधार कायम कर लिया है। कृषि का व्यापक यन्त्रीकरण पूर्णतया हमारी पहुंच के अन्दर है, बशर्ते कि हम विभिन्न किस्मों के कृषि यन्त्रों को, जिन्हें हम बना सकते हैं, भारी परिमाण में निर्मित करें, पशुओं द्वारा चालित यन्त्रों का और ज्यादा उत्पादन करें और उन्हें कारगर ढंग से इस्तेमाल करें।

अभी तक गांवों में स्वचालन लागू करने के अनुकूल परिस्थितियां उत्पन्न नहीं हुई हैं। इसलिए बहुत ही बड़े पैमाने पर यन्त्रीकरण लागू करने की कोई जरूरत नहीं है। जरूरत इस बात की है कि किसानों के काम को सुकर बनाने और श्रम की बचत करने के लिए हर संभव कदम उठाया जाए।

पशुओं द्वारा चालित यन्त्रों का उपयोग करने या साधारण कृषि उपकरणों में सुधार कर भारी तादाद में हस्तचालित मशीनें निर्मित करने का विचार काफी अच्छा है। मेरी समझ में नहीं आता कि आप गाड़ियां क्यों नहीं बनाते। कृषि गांवों में, जहां सड़कें ऊबड़-खाबड़ होती हैं, तीन पहियों वाले वाहन बेहतर रहेंगे, क्योंकि वे हल्के और चलने में आसान होते हैं। यदि ऐसी चीजें बनायी और इस्तेमाल की जाएं तो किसानों के लिए अपनी पीठें तोड़े बगैर बोझों को अधिक तीव्र गति से ढो सकना संभव होगा।

तमाम काउंटियों में समान रूप से यन्त्रीकरण की व्यवस्था के लिए प्रयत्न करने की कोई जरूरत नहीं है। बेहतर रहे यदि आप पहले समतल क्षेत्रों में भारी संख्या में ट्रैक्टर भेजें और जहां तक पर्वतीय क्षेत्रों का सम्बन्ध है, ऐसी मशीनें बनाएं और सप्लाई करें जो उनकी भू-रचना के लिए उपयुक्त हों।

कृषि के विकास के लिए इस समय पार्टी जिस नीति का अविचल अनुसरण कर रही है, वह यह है कि ग्रामीण क्षेत्र में यन्त्रीकरण लागू किया जाए और इस प्रकार किसानों को थका देने वाले काम से मुक्त किया जाए और मौजूदा ग्राम्य श्रम-शक्ति के साथ कृषि उत्पादन को आश्वस्त किया जाए। अतः प्रबन्ध समितियों को पार्टी की इस नीति को कार्यरूप देने के लिए कृषि में यन्त्रीकरण की व्यवस्था हेतु हर संभव उपाय करने चाहिए।

इसके अलावा प्रबन्ध समितियों को भूमि के बेहतर इस्तेमाल के लिए जोरदार प्रयास करना चाहिए। भूमि कृषि में सर्वाधिक महत्वपूर्ण निधि है। मशीनें और श्रमिक भी महत्वपूर्ण हैं लेकिन भूमि न हो तो वे बेकार हैं। अतः कारगर चकबंदी और मिट्टी में सुधार द्वारा भूमि की उपयोगिता को अधिक-से-अधिक बढ़ाना जरूरी है।

इस समय विभिन्न धनखेतों के बीच अत्यधिक मेड़ें हैं। यही वजह है कि शरद ऋतु में वास्तविक उपज इकाई क्षेत्र के नमूने के आधार पर लगाये गये फसल के अनुमानों से कम होती है। धनखेतों के बीच बहुत-सी मेड़ों को दूर करने के लिए निर्माण के सैक्टर से बुलडोजरों को लाकर और भूमि को खुरचने वाले यन्त्रों (अर्थ स्क्रैपर्स) से युक्त छोलिमा ट्रैक्टरों का उपयोग करके खेतों का पुनर्निर्धारण व्यापक रूप में पुनःसमायोजन किया जाना चाहिए। इसके साथ ही खेतों के किनारों, सड़कों के किनारों और अन्य तमाम उपलब्ध स्थानों पर जितनी भी फसलें बोना संभव हो, बोनी चाहिए।

हमारे देश की बहुत-सी धरती अम्ल है और बहुत-सी में लोहा और अन्य सूक्ष्म तत्वों, केल्शियम तथा पौधों के लिए आवश्यक अन्य तत्वों का अभाव होता है।

फसल-चक्र का सूत्रपात करने के लिए हमारे पास काफी भूमि नहीं है और यह हालत हमें धरती का निरन्तर सुधार करने को विवश करती है। खेतों पर व्यापक रूप से नई मिट्टी बिछाई जानी चाहिये, अम्लीय धरती पर बुझा हुआ चूना डाला जाना चाहिए, और अशक्त धरती में भारी मात्रा में रसायनिक खाद तथा धातुओं का मल मिलाया जाना चाहिये।

इसके अलावा भूमिरक्षण का कार्य उचित रूप से हाथ में लेना चाहिए। मैंने इस बारे में बार-बार जोर दिया है, इसके बावजूद परिणामों से स्पष्ट है कि अभी काफी कुछ करना शेष है। भूमि की सक्रिय रूप से रक्षा करने के उद्देश्य से नदी-सुधार परियोजनाओं को उचित रूप में पूरा करना होगा और तटबंधों की सावधानीपूर्वक रक्षा करनी होगी।

बीज-सुधार के बारे में उचित रूप से काम करना भी जरूरी है। चुने हुए बीजों का उपयोग कर, इस वर्ष कई जगह प्रति छोंगबो उपज में एक टन से भी ज्यादा वृद्धि की गयी है। हमें बीजों की किस्मों में निरंतर सुधार करना चाहिए और बढ़िया बीज सही मिट्टी में बोने चाहिए। खाद देकर भूमि को उपजाऊ बनाने की वैज्ञानिक प्रणाली लागू की जानी चाहिए और योजना के अनुसार ही खाद उत्पादित की जानी चाहिए ताकि उसका खूब उपयोग किया जा सके।

इन तकनीकी मामलों को निपटाने के अलावा यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि हम अपना नियोजन कार्य अच्छी तरह सम्पन्न करें। सहकारी फार्मों के प्रबन्धमंडल के प्रयास इसके लिए काफी न होंगे। इसके मुख्य कारणों में से एक यह प्रतीत होता है कि प्रत्येक प्रबन्धमंडल पानी, कृषि यन्त्रों, उर्वरकों और अन्य सामग्रियों की उपलब्ध वास्तविक मात्रा का सही-सही अनुमान नहीं लगा सकता। यही वजह है कि प्रत्येक सहकारी फार्म द्वारा कथित रूप से बहुत ज्यादा आकलन के आधार पर तैयार की गयी योजनाएं भी वास्तविकता से मेल नहीं खातीं।

काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समितियां स्थापित करने के पीछे हमारे उद्देश्यों में एक था कृषि के नियोजन को सुधारना। अतः प्रबन्ध समितियों को नियोजन का काम सीधे अपने हाथों में लेना चाहिए और इस काम में आमूल सुधार लाना चाहिए।

नियोजन में जरूरी चीज क्या है? जैसाकि ताएआन विद्युत मशीन कारखाने के वार्षिक कार्य के हाल के विश्लेषण से प्रकट होता है, जरूरी चीज योजनाओं की तैयारी में अवाम से सलाह-मशविरा करना है। अवाम से सलाह-मशविरा किये बगैर तैयार की गयी योजना केवल कुछ लोगों के आत्मनिष्ठ दृष्टिकोण को ही अभिव्यक्त करती है और उसे योजना कहना मुश्किल है। अच्छी योजना—

ऐसी योजना जो वास्तविकता के अनुरूप हो—उत्पादकों के साथ विचार-विमर्श के आधार पर ही तैयार करनी होगी।

जब आप अवाम के साथ सलाह-मशविरे के बाद कोई योजना तैयार कर लें तो आपको उन उत्पादक अवाम को उसकी पूरी जानकारी देनी चाहिए जिन्हें उसे कार्यरूप देना हो। योजना को सम्पन्न करने में अवाम रचनात्मकता और सक्रियता तभी प्रदर्शित कर सकते हैं, जब उन्हें लक्ष्य के आंकड़ों, संघर्ष के उद्देश्यों और उन्हें पूरा करने में प्रयुक्त की जाने वाली विधियों की जानकारी हो। काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समितियों के सर्वाधिक महत्वपूर्ण दायित्वों में एक यह है कि सही योजनाएं तैयार की जाएं और उन्हें पूरा करने में कारगर पथप्रदर्शन किया जाए।

इसके अतिरिक्त श्रम प्रशासन को सुधारना होगा। इस समय हमारे देश में श्रम प्रशासन सर्वथा असन्तोषजनक है। यह खासतौर पर कृषि क्षेत्र में बहुत ही पिछड़ी हालत में है।

सबसे बढ़ कर तो कार्य का संगठन अपर्याप्त है। मुख्यतः इसी कारण कई सहकारी फार्मों में किसानों को लम्बे समय तक काम करना पड़ता है। वास्तव में यदि कार्य को भलीभांति संगठित किया जाए तो किसान आज की अपेक्षा काफी कम समय लगा कर भी कृषि फार्म को समुचित ढंग से संपन्न कर सकते हैं।

इसके अलावा ग्रामीण श्रम बल को कृषि न छोड़ने को कहा जाना चाहिए और किसानों को देहात में ही बसने को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। अपने ग्रामीण श्रम बल को बरकरार रखने के लिए प्रभावशाली राजनीतिक और सांगठनिक कार्य किया जाना चाहिए।

इसके साथ ही हमें श्रम-शक्ति का उचित आवंटन करना चाहिए। श्रम-शक्ति का विवेकहीन आवंटन, जैसे कि जिन कामों पर बूढ़े लगाये जा सकते हैं, उन पर युवकों को लगा देना, समाप्त किया जाना चाहिये। युवकों को वे काम दिये जाने चाहिए जो उनके लिए उपयुक्त हों और बूढ़ों को उन कामों पर लगाया जाना चाहिए जो उनकी क्षमता के अनुरूप हों। आजकल ज्यादातर सक्षम लोग इस बहाने कि वे किसी-न-किसी किस्म के नेता हैं या कोई बहुत ही बड़ा तकनीकी कार्य कर रहे हैं, हाथ में ब्रीफकेस लिये अपना अधिकांश समय इधर-उधर घूमने में खर्च करते हैं और कार्य का भार केवल महिलाओं पर छोड़ दिया जाता है। जहां तक संभव हो, महिलाओं को हलके काम दिये जाने चाहिए और पुरुषों को अधिक कड़े काम। संभव हो तो आंकड़ों के संकलन और बहीखातों सरीखे काम महिलाओं पर छोड़े जाने चाहिए और तमाम पुरुषों को बाहर के काम करने चाहिए।

महिलाओं पर कड़े श्रम के काम छोड़ कर पुरुष आसान काम क्यों करते हैं ? यह सब घटिया श्रम प्रशासन का ही फल है।

जन-शक्ति के आवंटन को कार्यटोलियों के बीच समन्वित नहीं किया जाता। ऐसी भी कई कार्यटोलियों के उदाहरण हैं जो फालतू आदमियों के होने पर भी क्षेत्रीयता की भावना से उन्हें उन टोलियों में नहीं भेजते, जिनके पास आदमियों की कमी है। इसे उचित ढंग से समझा-बुझा कर ठीक करना होगा।

श्रमप्रशासन के सर्वाधिक महत्वपूर्ण कर्तव्यों में से एक है सही ढंग से कार्य के नियम निर्धारित करना। उद्योग के मुकाबले कृषि में यह काम बहुत ही पेचीदा और मुश्किल है। अत: हमें कार्य की कसौटियां सही ढंग से तय करनी चाहिए और कार्य का गुणात्मक और परिमाणात्मक मूल्यांकन सही ढंग से करना चाहिए। यह वितरण के समाजवादी सिद्धान्त को सही ढंग से क्रियान्वित करने और श्रमिकों को अधिक उत्साह दिला कर उत्पादन को और ज्यादा बढ़ाने के लिए जरूरी है।

इसके अलावा सहकारी फार्मों के वित्तीय कार्यकलाप, पथप्रदर्शन और निरीक्षण में सुधार किया जाना चाहिए और सहकारी फार्म के प्रबन्ध की कड़ी प्रणाली उचित रूप से लागू की जानी चाहिए। अन्य बातों में एक यह है कि सहकारी फार्मों में खपत और संचय के बीच उचित सन्तुलन कायम रखा जाए। कुछ सहकारी फार्म संयुक्त कोष के लिए थोड़ी खपत करते हैं, जबकि कुछ अन्य फार्म संयुक्त कोष के लिए बहुत ज्यादा राशि अलग रख छोड़ते हैं और किसानों के जीवन के प्रति ध्यान नहीं देते। हमें खपत और संचय के बीच सन्तुलन कायम करना चाहिए, ताकि किसानों की तात्कालिक जरूरतों को पूरा किया जा सके, लेकिन इस के साथ ही आदमनी का काफी हिस्सा संयुक्त कोष के लिए अलग रखा जा सके।

इसके अतिरिक्त किसानों की तकनीकी शिक्षा को मजबूत बनाना होगा और तकनीकी कर्मचारियों को पर्याप्त प्रशिक्षण देना होगा। प्रत्येक पर जोर देना चाहिए कि वह देहात में तकनीकी क्रान्ति के लिए जरूरी तकनीकी ज्ञान हासिल करे। किसानों को बिजली, मशीनरी, द्रव इंजीनियरी और जैविकी की बुनियादी बातों की जानकारी प्रदान की जानी चाहिए। उन्हें मिट्टी, पौधों, पशुओं और जलवायु के बारे में भी शिक्षा दी जानी चाहिए। हमें ग्रामीण क्षेत्रों में विज्ञान और तकनीकी ज्ञान के प्रसार तथा तकनीकी कर्मचारियों के प्रशिक्षण पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

किसानों को विचारधारात्मक शिक्षा देना काउंटी पार्टी समितियों के कार्य का एक महत्वपूर्ण अंग है। उन्हें किसानों की विचारधारात्मक चेतना के स्तर को ऊंचा उठाने के लिए उत्साह के साथ काम करना चाहिए।

ये हैं काउंटी पार्टी समितियों और काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समितियों के तात्कालिक कर्तव्य।

अगले वर्ष का आर्थिक कार्य जैसाकि पार्टी द्वारा पहले ही तय किया जा चुका है, यह है कि आने वाले कुछ वर्षों में अपनी सारी जनता को पर्याप्त चावल उपलब्ध कर देने के लिए पूरे प्रयास किये जाएं। तमाम प्रयास इस संघर्ष के लिए ही किये जाने चाहिए। हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि अगले कुछ सालों में ३०,००,००० टन चावल और २,००,००० टन मांस का वार्षिक उत्पादन हो और खाना पकाने के तेल की प्रति व्यक्ति सप्लाई दर १० ग्राम प्रति दिन तक पहुंच जाए।

इन कर्तव्यों को पूरा करने के लिए हमें धान के खेतों के क्षेत्र में विस्तार करना होगा और चावल की प्रति छोंगबो उपज बढ़ानी होगा। यदि हम प्रत्येक छोंगबो धान के खेत से एक टन ज्यादा चावल प्राप्त कर सकें तो यह काफी होगा। भविष्य में धनखेतों के क्षेत्रफल को बढ़ा कर ६,००,००० छोंगबो करने की हमारी योजना है। उस पर हमें औसतन ४.५ से ५ टन चावल प्रति छोंगबो प्राप्त करना होगा। जहां स्थितियां अधिक अनुकूल हैं, वहां ६ टन तक प्राप्त करना चाहिए; और जहां संभव न हो, कुछ कम उपज प्राप्त की जा सकती है। लेकिन देश भर में धान की औसत उपज ४.५ से ५ टन होनी चाहिए। हमें इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अवश्य प्रयास करना चाहिए। अत: यह आवश्यक है कि धान के खेतों की तीन से अधिक बार जुताई की जाए, खरपतवार की अच्छी तरह निराई की जाए, उच्च कोटि के बीज बोये जाएं और ठीक समय पर पौधों की रोपाई की जाए।

इसके अलावा शुष्क खेती के खेतों में दोहरी फसल व्यापक रूप में लागू की जानी चाहिए। यदि जौ की कटाई के बाद शुष्क खेत में धान या बाजरा बोया जाए तो इन खेतों से चार से पांच टन अनाज प्रति छोंगबो हासिल करना आसान होगा।

जैसा कि आपने अपने भाषणों में जिक्र किया है, पशु-संवर्धन के मामले में यह बात महत्वपूर्ण है कि प्रत्येक किसान के घर में पशु हों और सहकारी फार्म नस्ल बढ़ाने वाले अच्छी कोटि के पशु प्राप्त करें। और आपको घरेलू पशुओं के लिए उपयुक्त बढ़िया मिला-जुला चारा मुहैया करना चाहिये।

पकाने के तेलों और बीन दही की सप्लाई आश्वस्त करने के लिए हमें सोया-बीन, जंगली तिल और पटुआ जैसे तिलहेनों की बड़े पैमाने पर खेती करनी होगी। खासतौर पर सोयाबीन खूब उगायी जानी चाहिए। आपके लिए आमतौर पर यह बात बेहतर रहेगी कि आप अपनी कृषि योजनाएं उन पर लिखित कर्तब्यों के आधार पर तैयार करें।

यन्त्रीकरण के मामले में यह जरूरी है कि जहां तक संभव हो सके, पर्वतीय जिलों को पहले ट्रक और समतल क्षेत्रों को ट्रैक्टर सप्लाई करने की नीति का अनुसरण किया जाए। हांमग्योंग और कांगवोन जैसे प्रान्तों को, जहां परिवहन की समस्या है, ट्रक पहले सप्लाई किये जाने चाहिए। पर्वतीय क्षेत्रों में—जहां ट्रैक्टरों का ज्यादा मोड़ना-घुमाना संभव नहीं होता, फिलहाल पशुओं द्वारा चालित मशीनों के आधार पर यन्त्रीकरण को आगे बढ़ाया जाना चाहिए, तथा ट्रैक्टर और ट्रेलर कृषि यन्त्र पहले समतल क्षेत्रों में भेजे जाने चाहिए जहां उनका अधिक प्रभावशाली उपयोग किया जा सकता है। अभी हमें भारी संख्या में ट्रैक्टर उत्तर और दक्षिण प्योंगान और उत्तर तथा दक्षिण ह्वांगहाए प्रांतों को सप्लाई करने चाहिए। उत्तर प्योंगान प्रान्त में छोंगसान जैसे पर्वतीय क्षेत्रों में ट्रैक्टर भेजने की कोई जरूरत नहीं है। ऐसे क्षेत्रों में ट्रक बेहतर रहेंगे।

अन्त में मैं प्रान्तीय ग्रामीण अर्थतन्त्र समितियों और केन्द्रीय कृषि आयोग के कर्तव्यों की चर्चा करना चाहूंगा।

अब तक कृषि मन्त्रालय ने एक प्रबन्ध कार्यालय की भूमिका निभायी है, लेकिन वह इस ढंग से हमारी कृषि के सम्भावित विकास को आश्वस्त करने के अयोग्य है। अतः प्रान्तीय ग्रामीण अर्थतंत्र समितियों को चाहिए कि उत्पादन का नेतृत्व अपने हाथों में लें। इन समितियों को वे काम करने चाहिए जोकि अब तक कृषि मन्त्रालय द्वारा किये जाते रहे हैं। एक प्रान्तीय ग्रामीण अर्थतन्त्र समिति न कोई प्रबन्ध कार्यालय है न कोई मन्त्रालय। हम कह सकते हैं कि यह दोनों में काम करती है। चूंकि सीधे नियंत्रण के अन्तर्गत १३ प्रान्त और नगर हैं, अतः हमारे पास ग्रामीण अर्थतन्त्र का निर्देशन करने के लिए एक की बजाय १३ कृषि मन्त्री हैं।

प्रान्तीय ग्रामीण अर्थतंत्र समिति को उत्पादन योजनाओं की तैयारी, काउंटियों में योजनाओं की पूर्ति के निरीक्षण और उत्पादन में सीधे नेतृत्व की उपलब्धि में काउंटी सहकारी कृषि प्रबन्ध समितियों की मदद करनी जाहिए। उसे काउंटियों को कृषि मशीनें और फालतू पुर्जे, खादें, कृषि रसायन और अन्य सामग्रियां भी सप्लाई करनी चाहिए। भविष्य में प्रत्येक प्रान्तीय ग्रामीण अर्थतंत्र समिति को अपने नियंत्रण में कृषि यन्त्र कारखाने और कृषि यन्त्र मरम्मत केन्द्र स्थापित करने चाहिए और प्रान्त में उनकी मरम्मत के जरूरी काम की देखभाल भी करनी चाहिए।

प्रान्तीय ग्रामीण अर्थतन्त्र समिति को फसल क्षेत्रों के वितरण, बीजों के चयन, खाद देने की प्रणाली की स्थापना, बुवाई के कार्यक्रम, जन-शक्ति के निर्धारण में भी तकनीकी पथप्रदर्शन करना होगा।

प्रान्तीय ग्रामीण अर्थतन्त्र समितियों को उत्पादन की जिन जटिल समस्याओं का सामना करना पड़े उनके बारे में उन्हें केन्द्रीय कृषि आयोग और मन्त्रिमंडल,

दोनों को रिपोर्ट देनी चाहिए और योजनाएं तैयार कर उन्हें इन दोनों निकायों के सामने पेश करना चाहिए।

केन्द्रीय कृषि आयोग का सर्वाधिक महत्वपूर्ण काम यह है कि वह हमारे देश में कृषि तकनीक के विकास के उपायों का अध्ययन करे।

इस समय ऐसा कोई नहीं है जो कृषि यन्त्रों के बारे में अनुसंधान का कार्य सौंपने और अनुसंधान का निरीक्षण करने का दायित्व संभाले, और अनुसंधान के कार्य को वैसे ही छोड़ दिया जाता है। कृषि आयोग को एक अनुसंधान संस्थान स्थापित करना चाहिए, कृषि यन्त्र अनुसंधान पर प्रत्यक्ष नियंत्रण करना चाहिए और उसे ठोस नेतृत्व प्रदान करना चाहिए।

आयोग बीज सुधार और बीज उत्पादन के योजनाबद्ध अनुसंधान के लिए भी जिम्मेदार है और उसे मिट्टी के सुधार की कार्रवाइयों और पद्धतियों का अध्ययन संगठित करना चाहिए, और साथ ही उनका निर्देशन करना चाहिये। इसके अलावा उसे प्रकृति की कायापलट के दूरगामी उपायों, खादों, मिट्टियों और अन्य महत्वपूर्ण समस्याओं के अध्ययन का संगठन और निर्देशन करना चाहिये। इस बारे में जांच-पड़ताल करना भी आयोग का ही कर्तव्य है कि पशु-पालन का, जिसमें पशु नस्ल सुधार भी शामिल है, विकास कैसे किया जाए, और गांवों में पूरक उत्पादनों को कैसे बढ़ावा दिया जाए।

इस प्रकार कृषि आयोग को कृषि के विकास से सम्बद्ध तमाम समस्याओं पर अनुसंधान के संगठन और पथप्रदर्शन के काम को अपने हाथों में लेना चाहिये और इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इस अनुसंधान के परिणाम बिना किसी विलम्ब के उत्पादन में शामिल किए जाएं।

कृषि आयोग को कई जगहों पर प्रयोगशालाएं, अनुसंधान संस्थान, परीक्षात्मक कार्य के लिए जरूरी तमाम परिस्थितियां सुलभ करनी चाहिए।

इसके अतिरिक्त उस पर सामग्रियों और कृषि मशीनों की सप्लाई के लिए कदम उठाने की भी जिम्मेदारी है।

उसे योजनाओं के अन्तिम प्रारूप भी तैयार करने और चालू योजनाओं की पूर्ति का निरीक्षण करना चाहिये।

केन्द्रीय कृषि आयोग को प्रकृति की कायापलट के उद्देश्य से बड़े पैमाने की परियोजनाओं—जल के उपयोग, आँधियों के विरुद्ध अवरोधों के निर्माण, ज्वार-भाटे वाली भूमियों को खेती के योग्य बनाने, पर्वतीय क्षेत्रों के सुधार और आर्थिक महत्व के वृक्षों के रोपण की परियोजनाओं—का भी निर्देशन करना चाहिए।

अन्त में कर्मचारियों के निर्माण के मामले में कृषि आयोग पर यह दायित्व आता है कि वह तकनीशियनों और वैज्ञानिकों को प्रशिक्षित करे।

ये वे दायित्व हैं, जो कृषि आयोग को पूरे करने चाहिए। प्रत्येक प्रान्त के उत्पादन के नेतृत्व की प्रत्यक्षत: जिम्मेदारी लेनी चाहिए, प्रान्त के लिए योजनाएं तैयार करनी चाहिए, कामकाजी योजनाओं की तैयारी में काउंटियों की मदद करनी और आवंटित सामग्रियों का वितरण करना चाहिए। कृषि आयोग को सामग्रियों के वितरण के बारे में भी चिन्ता नहीं करनी चाहिये; इस काम को प्रान्तीय स्तर पर हाथों में लेना चाहिये।

कृषि आयोग के लिए यह मुनासिब होगा कि वह योजना आयोग से विचार-विमर्श करे और सुझाव दे कि प्रत्येक प्रांत को कितने ट्रैक्टर और कितनी खाद दी जाए, और प्रान्तीय ग्रामीण अर्थतन्त्र समितियों के लिए यह मुनासिब होगा कि वे जो कुछ उनके लिए आवंटित किया जाए, उसे प्राप्त करने और वितरित करने के वास्तविक कार्य को हाथ में लें।

यदि कृषि आयोग इन कामों में व्यस्त हो जाए तथा अनुसन्धान और वैज्ञानिकों के पथप्रदर्शन की उपेक्षा कर दे, तो हमारे पास कृषि विकास के दूरगामी संदर्शों की योजनाएं तैयार करने में प्रवीण कोई भी व्यक्ति न होगा।

कृषि आयोग की भूमिका को दृढ़ किया जाना चाहिये, ताकि हमें अपनी कृषि की संभावना की अधिक सही तस्वीर मालूम हो सके।

सुकछोन काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समिति के कार्य पर रिपोर्ट में परिणामों का जो सार पेश किया गया है उससे पार्टी की केन्द्रीय समिति बड़ी खुश है। इस समिति के साथियों ने बहुत काम किया है, यद्यपि उनकी कुछ आलोचना की गयी है। यन्त्रीकरण के लिए योजनाओं को पूरा करने में असफलता के लिए केवल काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समिति के सदस्य ही जिम्मेदार नहीं हैं। सम्बद्ध प्रान्तीय विभागों को भी इस असफलता में अपने हिस्से की जिम्मेदारी स्वीकार करनी चाहिए।

काउंटी सहकारी कृषि प्रबन्ध समितियों को अपना काम शुरू किये केवल एक वर्ष हुआ है, लेकिन उन्होंने अपनी उपयोगिता का पर्याप्त सबूत पेश कर दिया है। यह आपके महान प्रयासों का फल है।

दक्षिण प्योंगान प्रान्त ने भी इस वर्ष ५० लाख टन अनाज के शिखर पर पहुँचने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

मैं इस अवसर पर पार्टी केन्द्रीय समिति की ओर से सुकछोन काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समिति, दक्षिण प्योंगान प्रान्तीय पार्टी समिति और प्रान्त में काउंटी पार्टी समितियों के कर्मियों, प्रान्तीय ग्रामीण अर्थतन्त्र समिति और काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समितियों और तमाम सहकारी किसानों का आभार व्यक्त करना चाहूंगा!

हमारी जन-सेना श्रमजीवी वर्ग की सेना है, क्रान्ति की सेना है; वर्ग और राजनीतिक शिक्षा को निरन्तर दृढ़ किया जाना चाहिए

राजनीतिक मामलों के डिप्टी रेजिमेंटल कमांडर के स्तर से ऊपर के जन-सेना इकाई के कार्यकर्ताओं और इलाके के पार्टी तथा सरकारी निकायों के कर्मियों के बीच दिया गया भाषण

८ फरवरी १९६३

हमारी जन सेना को जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष की शानदार क्रान्तिकारी परम्पराएं विरासत में मिली हैं और वह विदेशी साम्राज्यवादी आक्रान्ताओं के खिलाफ घनघोर संघर्ष में, जिनका सरगना अमरीकी साम्राज्यवाद है, पनपी और तप कर दृढ़ हुई है। हमारी जन-सेना दुश्मन की घुसपैंठ से देश की संप्रभुता और आजादी की तथा हमारी जनता के जान व माल की गौरवपूर्ण रक्षा कर रही है और हमारी पार्टी तथा हमारी क्रान्ति का दृढ़तापूर्वक संरक्षण कर रही है। हमारी जन-सेना की अजेय शक्ति इस तथ्य में निहित है कि यह मार्क्सवाद-लेनिनवाद के क्रांतिकारी विचारों से दृढ़ता से लैस एक वस्तुतः जन-सेना है और मजदूर वर्ग के नेतृत्व में श्रमजीवी जनता के श्रेष्ठ बेटों तथा बेटियों पर आधारित है। अतः जन सेना को मजबूत बनाने के लिए सबसे पहले यह जरूरी है कि तमाम सैनिकों को हमारी पार्टी की क्रान्तिकारी भावना से पूरी तरह लैस किया जाए ताकि वह क्रान्ति की, पार्टी की और मजदूर वर्ग की वास्तविक सेना बने। सैन्य प्रशिक्षण का संचालन करना और रक्षा-व्यवस्था का निर्माण करना तो आप के लिए महत्वपूर्ण है ही, लेकिन सबसे बढ़कर महत्वपूर्ण यह है कि सैनिकों के बीच राजनीतिक कार्य तेज किया जाए।

हमारी पार्टी की केन्द्रीय समिति ने बहुत पहले ही जन-सेना में अच्छे

राजनीतिक कार्य का संचालन करना जरूरी समझ लिया था और इस कार्य को सुदृढ़ बनाने के प्रयोजन से उसने युद्ध के दौरान ही सेना में पार्टी संगठन कायम कर दिया था और हाल के वर्षों में उसने पार्टी समिति प्रणाली लागू कर दी है तथा कई अन्य महत्वपूर्ण पग उठाये हैं।

आज जन-सेना में राजनीतिक कार्य में सबसे जरूरी बात यह है कि सैनिकों की वर्ग चेतना को और भी प्रखर करने के वैचारिक कार्य को और ज्यादा तेज किया जाए।

तमाम सैनिकों को वर्ग चेतना से लैस कर हमें अपनी सेना को एक ठोस वर्ग सेना में परिणत करना होगा।

यदि विश्व भर में साम्राज्यवाद को पूरी तरह उखाड़ फेंका जाए और हर जगह शोषक वर्गों का सर्वथा सफाया कर दिया जाए, तो हो सकता है कि जनता की वर्ग चेतना इतना महत्वपूर्ण प्रश्न न रहे। लेकिन ऐसा होने में अभी बड़ा लम्बा समय लगेगा।

इस समय अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग और साम्राज्यवाद की प्रतिक्रियावादी शक्तियों के बीच विश्वव्यापी पैमाने पर घनघोर वर्ग संघर्ष चल रहा है और यहां अपने देश में भी क्रान्ति और प्रतिक्रान्ति के बीच गम्भीर वर्ग संघर्ष जारी है। हमारी जन-सेना साम्राज्यवादियों, जमींदारों और पूंजीपतियों से टक्कर लेना और मजदूर तथा अन्य श्रमजीवी लोगों के हित में, हमारे राष्ट्र की पूर्ण मुक्ति के लिए लड़ना अपना कर्तव्य समझती है। यदि हमारे सैनिकों की वर्ग चेतना कुंद हो जाए और वे जमींदारों और पूंजीपतियों तथा साम्राज्यवाद के जघन्य स्वरूप से अनभिज्ञ हो जाएं तो हमारी जन-सेना दुश्मन के खिलाफ एक क्रान्तिकारी सेना की तरह जूझने में सक्षम न होगी।

आपको केवल अपनी सीमाओं पर चौकसी बरतने और कोई गम्भीर घटना न होने देना काफी नहीं समझना चाहिए। आपको तमाम सैनिकों को मजदूर वर्ग के क्रान्तिकारी विचारों से लैस करना चाहिए और इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उनमें से प्रत्येक दुश्मन को जाने, उससे नफरत करे और उच्चकोटि की चेतना से ओत-प्रोत होकर उससे जूझने में सक्षम हो।

१ : सैनिकों और श्रमजीवी जनता में वर्ग शिक्षा और अधिक दृढ़ करने की आवश्यकता के बारे में

हमारी पार्टी लम्बे समय से पार्टी सदस्यों और श्रमजीवी जनता में वर्ग शिक्षा के दृढ़ीकरण पर ध्यान देती आ रही है और कुल मिलाकर यह काम इस समय सुचारु रूप से चल रहा है। फिर भी हम आज इस कार्य के और दृढ़ीकरण की जरूरत को पूरी गम्भीरता से महसूस करते हैं।

तमाम कम्युनिस्टों को श्रमजीवी जनता की वर्ग शिक्षा की आवश्यकता का पूरा अहसास है।

तो भी हमें इस प्रश्न पर पुनः जोर देना होगा क्योंकि हमारे देश की वास्तविकता और आम अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति का यही तात्कालिक तकाजा है।

आज हमारा देश उत्तर और दक्षिण में बंटा हुआ है और हमारे देशवासी अमरीकी साम्राज्यवादियों के मुकाबले में आमने-सामने खड़े हैं। समाजवादी क्रान्ति केवल उत्तरी आधे भाग में विजयी हुई है, जबकि हमारे देश का आधा भाग—दक्षिण कोरिया—अब भी अमरीकी साम्राज्यवादियों के कब्जे में है। वहां जमींदार और पूंजीपति मजदूरों और किसानों का कठोरता से शोषण कर रहे हैं और विदेशी आक्रान्ता हमारे स्वदेशवासियों की निर्दयतापूर्वक हत्याएं कर रहे हैं और उन्हें अपमानित कर रहे हैं।

हमारी पार्टी और जनता को सबसे पहले विदेशी साम्राज्यवाद की आक्रामक सेनाओं को हमारे क्षेत्र से खदेड़ बाहर करना चाहिए। राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति को पूर्ण करना चाहिए और फिर देश भर में समाजवादी क्रान्ति को सम्पन्न करना चाहिए। यह एक बहुत ही कठिन क्रान्तिकारी काम है।

हमें जिस शत्रु का सामना करना पड़ रहा है वह विश्व प्रतिक्रियावाद का मुखिया, अमरीकी साम्राज्यवाद है। अमरीकी साम्राज्यवाद न-केवल हमारी जनता के संघर्ष का निशाना है, बल्कि पूरी दुनिया के मजदूर वर्ग और शान्तिप्रिय जनता के संयुक्त संघर्ष का निशाना भी है। इस प्रकार दक्षिण कोरिया से अमरीकी साम्राज्यवादियों को खदेड़ बाहर करने का प्रश्न हमले की अमरीकी साम्राज्यवादियों की नीति के खिलाफ दुनिया के लोगों के संयुक्त संघर्ष से पूरी तरह जुड़ा हुआ है। यही वजह है कि अमरीकी साम्राज्यवाद के विरुद्ध हमारी क्रान्ति का स्वरूप सुदीर्घ और दुष्कर बन जाता है।

क्रान्ति का स्वरूप जितना भी सुदीर्घ और दुष्कर होगा, उतना ही ज्यादा तमाम पार्टी सदस्यों, श्रमजीवी जनता और खासतौर पर जन-सेना के जवानों और अधिकारियों को, जिन पर हमारे देश की रक्षा का भार है, मजदूर वर्ग की

क्रान्तिकारी भावना से लैस करना जरूरी होगा।

और आज ऐसी परिस्थितियां विद्यमान हैं जिनकी वजह से संभव है कि हम क्रान्ति के शत्रु को भूल बैठें और निश्चेष्ट हो जाएं।

हमारे देश में वे लोग, जिन्होंने जापानी साम्राज्यवाद के विरुद्ध लड़ाई लड़ी थी और अतीत में जमींदारों और पूंजीपतियों के हाथों शोषण तथा दमन सहा था, अब बूढ़े होते जा रहे हैं, जबकि एक नयी पीढ़ी—जो न साम्राज्यवाद, जमींदारों और पूंजीपतियों को जानती है और न जिसने कोई कठिनाई झेली है—बड़ी हो रही है और हमारे समाज के स्वामी के रूप में उभर रही है।

पहले के दिनों में हमें जापानी साम्राज्यवादियों के हाथों हर प्रकार के दमन और घृणा का शिकार होना पड़ता था, तथा जमींदारों और पूंजीपतियों के हाथों घोर शोषण से उत्पीड़ित होना पड़ता था। अतः हम में अपने राष्ट्र और वर्ग के शत्रुओं के प्रति बड़ी घृणा की भावना होती थी और हम उनके विरुद्ध लड़ाई में अपनी जान की परवाह नहीं करते थे।

उन लोगों के लिए, जिन्होंने पहले दमन का कष्ट सहन किया था और गरीबी में दिन काटे थे, आज का हमारा जीवन वस्तुतः असीम सुख-समृद्धि का और सार्थक जीवन है। यहां उपस्थित डिवीजन या रेजिमेंटल कमांडरों में ऐसे लोग भी जरूर होंगे, जिन्होंने कभी दूसरों के लिए खेत मजदूर के रूप में काम किया होगा, या पूंजीपतियों के कोड़े खाते हुए अपना पसीना बहाया होगा। ये साथी अच्छी तरह जानते हैं कि उनका पिछला जीवन कितना दुखपूर्ण था। वे स्कूल में जाने की बात तक नहीं सोच सकते थे और उन्हें जमींदारों तथा पूंजीपतियों के हाथों अवर्णनीय दुर्व्यवहार का शिकार होना पड़ता था। यही कारण है कि वे पार्टी की रक्षा हेतु, जिसके द्वारा लायी गयी सुख-समृद्धि से वे आनन्दपूर्वक जीवन बिता रहे हैं, अपने जीवन को अर्पित करने और शत्रु के हमले से हमारी क्रान्ति के लाभों का संरक्षण करने को हमेशा कृत-संकल्प हैं।

कुछ दिन हुए, मैंने चोटी संख्या १२११ की कहानी पर आधारित एक फिल्म देखी थी। उसमें एक नाटकीय दृश्य था, जिसमें एक भूतपूर्व किराये के मुजारे के पुत्र साथी ली छोल जुन, जिन्हें भूतकाल में एक जमींदार के घर में हर प्रकार के दुर्व्यवहार सहने पड़े थे, जमींदार के बेटे को, जो कठपुतली सैन्याधिकारी बनने दक्षिण भाग गया था, गोली से उड़ा देते हैं। मातृभूमि मुक्ति युद्ध एक अत्यंत भीषण संघर्ष था, क्योंकि यह विदेशी आक्रान्ताओं के विरुद्ध एक राष्ट्रीय मुक्ति युद्ध तो था ही, साथ ही वह अत्यंत गम्भीर वर्ग संघर्ष भी था।

लेकिन यांकियों के खिलाफ युद्ध बंद हुए करीब दस साल बीत चुके हैं, और भूतकाल के मुकाबले में हमारे जीवन के हालात में आमूल परिवर्तन हो गया है।

हमने बहुत पहले ही जमींदारों और पूंजीपतियों को समाप्त कर दिया था और उत्तरी आधे भाग में हमने शोषण और दमन से मुक्त एक समाजवादी प्रणाली का निर्माण कर लिया है। दक्षिणी आधे भाग में अमरीकी साम्राज्यवादी भी हैं और जमींदार तथा पूंजीपति भी, जबकि हमारे उत्तरी आधे भाग में न हमारे राष्ट्र का अपमान और दमन करने वाले साम्राज्यवादी ही हैं, न श्रमजीवी जनता का शोषण करने वाले जमींदार तथा पूंजीपति हैं। हमारे देश में सदियों पुराने पिछड़ेपन और कंगाली का अन्त कर दिया गया है और हमारी मेहनतकश जनता एक खुशहाल, नया समाजवादी जीवन बिता रही है।

इसी शानदार समाजवादी प्रणाली में नयी पीढ़ी—वह पीढ़ी जिसे कभी भी पहले कठिन जीवन से गुजरना नहीं पड़ा है—बढ़ रही है।

ऐसे युवा लोगों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है, जिन्होंने जापानी साम्राज्यवादियों के हाथों दमन की तो बात दूर रही, अमरीकी दुष्टों की क्रूर बर्बरता का प्रहार भी नहीं सहा है और वे फैक्टरियों तथा जन-सेना में, दोनों जगह प्रवेश प्राप्त कर रहे हैं। वास्तव में हम यह नहीं कह सकते कि हमलावरों के विरुद्ध हमारी जनता के मातृभुमि मुक्ति युद्ध को वस्तुत: कोई अनुभव प्राप्त है।

हमारी युवा पीढ़ी भलीभांति नहीं जानती कि जमींदार क्या होते हैं, पूंजीपति क्या होते हैं और कितने नीच साम्राज्यवादी होते हैं। इसी वजह से प्लाटून नेताओं द्वारा इस समय लगायी जा रही राजनीतिक कक्षाओं में कई ऐसे सवाल उठाये गये बताये जाते हैं, जिन पर हम अत्यधिक चकित रह जाते हैं। मुझे बताया गया है कि कुछ युवा सैनिक "तिनकों के सैंडल", "लगान" और "मुजारा" सरीखे शब्दों को बिल्कुल नहीं जानते और प्लाटून नेताओं को उन्हें ये सारी बातें समझानी पड़ती हैं। आश्चर्य का विषय है कि यदि इन युवा लोगों को तिनके के सैंडल, जमींदारी, पूंजीपतियों, शोषण और दमन का कुछ पता नहीं तो वे कैसे साम्राज्यवाद, जमींदारों और पूंजीपतियों के नीचतापूर्ण स्वरूप के बारे में बताये जाने पर उसे पूर्णतया समझ सकते हैं।

इसके अलावा, जहां एक ओर हमारी जीवन परिस्थितियां सुधर रही हैं, वहां दूसरी ओर कुछ युवकों में संघर्ष से विमुखता की मनोवृत्ति उभर रही है। वे कहते हैं कि उन्हें युद्ध की फिल्में अच्छी नहीं लगतीं, क्योंकि वे उबाने वाली होती हैं। वे केवल यह चाहते हैं कि उन्हें आराम की जिन्दगी मिले और वे तमाम कठिनाइयों से बचते हुए केवल ऐश की जिन्दगी के अभिलाषी हैं। वीरता और अध्यवसाय के गुण केवल दिक्कतों पर विजय पाने के लिए पुरजोर संघर्ष से ही पैदा किये जा सकते हैं, लेकिन वे ऐसा संघर्ष नहीं कर रहे हैं; वे निष्क्रिय होकर पड़े हैं और इस वजह

से धैर्य की भावना लुप्त होती जा रही तथा धीरे-धीरे युवकों में काहिली का माहौल छा रहा है।

यहां एकत्र हुए आप साथी कहते हैं कि आप स्कूली शिक्षा के लिए पार्टी के आभारी हैं क्योंकि मुक्ति से पूर्व आपका स्कूल जाना संभव न था और ऐसी स्थिति केवल मुक्ति के बाद ही संभव हो सकी है। लेकिन नयी पीढ़ी शिक्षा के लिए प्राप्त सुविधा को सहज सुलभ मान कर चलती है और कालेज से स्नातक होने पर भी सन्तुष्ट नहीं है।

बेशक पहले जब हम स्कूल जाते थे तो अपने को कठिन स्थिति में पाते थे। पहले थोड़े से ही स्कूल थे और कालेज की बात तो दूर रही, मिडिल स्कूल में प्रवेश प्राप्त करना बड़ा कठिन था। उस समय हमारे पास किताबें खरीदने के लिए पैसे न होते थे और जहां तक मार्क्सवादी साहित्य का प्रश्न है, उसे प्राप्त करना भी बहुत मुश्किल था। अत: पढ़ने के लिए हम पुस्तकालयों से पुस्तकें लिया करते थे। और एक बार पुस्तक हमारे हाथ में आ जाए, तो हम उसे बड़ी देर तक रात में पढ़ते रहते थे, ताकि निश्चित तिथि को वापस न कर सकने पर कहीं हमें जुर्माना न भुगतना पड़े। जब सौभाग्य से हमें कोई मार्क्सवादी पुस्तक मिल जाती तो हम सब-कुछ भुला कर उसे छिप कर पढ़ते थे।

लेकिन आज आप जितने भी मार्क्सवादी-लेनिनवादी प्रकाशन चाहें, किताबों की दूकानों से प्राप्त कर सकते हैं और फिर वे बहुत सस्ते भी हैं। किन्तु युवा लोग अब ज्यादा नहीं पढ़ते, यद्यपि उन्हें ढेरों अच्छी किताबें प्राप्य हैं। ऐसा लगता है कि वे कम-से-कम परिश्रम कर आराम से पढ़ना चाहते हैं।

यदि हम युवा पीढ़ी को शिक्षित नहीं करते और उसे अपने सहारे पर छोड़ देते हैं, तो वे आरामदेह जिन्दगी के इतने आदी हो जाएंगे कि केवल शान्ति से रहना चाहेंगे और कठिनाइयों का सामना करते हुए क्रान्ति का निर्माण करने के दृढ़ जुझारू संकल्प से हाथ धो बैठेंगे।

यदि हमारे देश के लोग, जिनकी अमरीकी साम्राज्यवादियों से सीधी टक्कर है, हमारे वर्ग और राष्ट्र के शत्रु को भुला कर काहिली की जिन्दगी बिताने लगें, तो यह बड़ी खतरनाक और शत्रु के सामने अपने को पूर्णतया निहत्था कर देने के समान बात होगी।

अमरीकी साम्राज्यवादियों के शीघ्र ही दक्षिण कोरिया से चले जाने की कोई संभावना नहीं। तथापि यांकी लम्बे समय तक दक्षिण में पैर जमाये नहीं रह सकेंगे। जापानी साम्राज्यवाद को कोरिया पर कब्जे के ३६ वर्ष बाद नष्ट कर दिया गया था। लेकिन अब हालात उन दिनों से भिन्न हैं। अमरीकी दुष्टों को दक्षिण कोरिया पर आधिपत्य जमाये १७ वर्ष हो गये हैं। अब हम कह सकते हैं

कि वह दिन निकट आ रहा है, जबकि उन्हें खदेड़ बाहर किया जाएगा। यद्यपि भविष्य के बारे में निश्चित रूप से कुछ कहना मुश्किल है, फिर भी हम कह सकते हैं कि यांकी संभवत: १० से २० साल में कोरिया में विनष्ट हो जाएंगे। यदि हम जम कर नहीं लड़ेंगे तो इस काम में २० या अधिक साल लग सकते हैं।

निःसन्देह १० या २० साल कोई कम समय नहीं है। इस अवधि के दौरान कई परिवर्तन होंगे।

वास्तव में इस बात में लेशमात्र सन्देह नहीं है कि १० से २० सालों में प्राय: वे तमाम लोग, जिन्होंने जमींदार और पूंजीपति वर्गों के हाथों निर्मम शोषण और साम्राज्यवादियों के हाथों राष्ट्रीय दमन के कष्ट भोगे हैं, बूढ़े हो चुके होंगे और नयी पीढ़ी, जिसे शोषण और दमन का अनुभव नहीं है, हमारे राज्य और समाज का कर्णधार बन चुकी होगी।

हमारी क्रान्ति समाप्त नहीं हो गयी है और हमें अभी भी बहुत काम करना है। यदि हम अपनी पीढ़ी में क्रान्तिकारी कर्तव्य को पूरा करने में असमर्थ रहते हैं तो हमें इसे सम्पन्न करने का काम अगली पीढ़ी पर छोड़ना होगा। और यदि युवा पीढ़ी शत्रु को भुला दे, संघर्ष से दिल चुराने लगे और केवल आरामदेह जीवन निर्वाह करना चाहे, तो वह हमारे क्रान्तिकारी कर्तव्य को आगे बढ़ाने में असमर्थ होगी। यही नहीं, वह अब तक प्राप्त उपलब्धियों से भी वंचित हो जायेगी।

इसके साथ ही आपको यह न समझ लेना चाहिए कि जो लोग मजदूर और किसान मूल के हैं या जिन लोगों ने पहले बड़ी मुसीबतें भुगती हैं, वे तमाम वर्ग चेतना से पूर्णतया लैस हैं। यदि वे किसी शिक्षा के अभाव में लम्बे समय तक आरामदेह जिन्दगी बिताते हैं तो यह संभव है कि ठोस वर्ग मूल और मुसीबतें सहने वाले लोग भी अपनी पिछली दुर्दशा को, जिसमें उनका दमन और अपमान होता था, भूल जाएं, धीरे-धीरे सुस्त हो जाएं तथा उनकी वर्ग चेतना पंगु हो जाए।

अतएव अमरीकी साम्राज्यवादियों को अपने क्षेत्र से खदेड़ बाहर करने, अपने देश का पुनरेकीकरण करने और कोरियाई क्रान्ति को संपन्न करने के कर्तव्य हेतु हमारे लिए मेहनतकश जनता में वर्ग शिक्षा को और तेज करना जरूरी है। हमें मात्र इस वजह से शिथिल नहीं हो जाना चाहिए कि गणतन्त्र के उत्तरी आधे भाग में समाजवादी व्यवस्था पहले ही विजयी हो चुकी है, शत्रु वर्गों का सफाया किया जा चुका है और हमारी जीवन परिस्थितियों को सुधारा जा चुका है। हमें मेहनतकश जनता की वर्ग-चेतना को प्रखर करने के लिए गम्भीरतापूर्वक प्रयास जारी रखना चाहिए और खासतौर पर युवा पीढ़ी को मजदूर वर्गीय विचारधारा से दृढ़तापूर्वक लैस करने के काम को जारी रखना होगा।

मेहनतकश जनता और खास तौर पर नयी पीढ़ी की वर्ग शिक्षा कोई ऐसी समस्या नहीं है, जिसे केवल कोरियाई कम्युनिस्टों को सामना करना पड़ रहा है। इसका विश्व भर के कम्युनिस्टों को समान रूप से सामना करना पड़ रहा है। जब तक क्रांति पूरी तरह संपन्न नहीं हो जाती और साम्राज्यवाद का अस्तित्व कायम है, तब तक उन देशों में जहां क्रांति की विजय राष्ट्रव्यापी पैमाने पर नहीं बल्कि उनके एक भाग में ही हुई है, तथा समाजवादी देशों में जहां क्रांति पहले ही विजयी हो चुकी है, वर्ग शिक्षा आज अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन के लिए भारी महत्व का विषय बनी हुई है।

आज विश्व साम्राज्यवाद ह्रास और विनाश की ओर खिसकता जा रहा है। लेकिन साम्राज्यवाद अभी भी एक खतरनाक शक्ति बना हुआ है तथा संसार में हर जगह शान्ति, समाजवाद और राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के विरुद्ध कुचालें चल रहा है। हमें केवल इस विश्वास पर बस नहीं कर देनी चाहिए कि कुछ ही वर्षों में साम्राज्यवाद को पूर्णतया उखाड़ फेंका जाएगा। साम्राज्यवाद का हमेशा-हमेशा के लिए सफाया करने और विश्व क्रान्ति को सम्पन्न करने के वास्ते, संसार के लोगों को अभी लम्बे समय तक एक जोरदार संघर्ष जारी रखना होगा।

विश्व क्रान्ति सम्पन्न करने में जितना ही लम्बा समय लगेगा, उतना ही समाजवादी देशों में, जहां पहले क्रान्ति विजयी हो चुकी है, श्रमजीवी जनता की वर्ग शिक्षा का प्रश्न अधिक महत्व धारण कर जाएगा।

सोवियत संघ में समाजवादी क्रान्ति को सफल हुए ४० के करीब वर्ष बीत चुके हैं और अन्य समाजवादी देशों में क्रान्ति को विजयी हुए लगभग २० साल हो गये हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि नयी पीढ़ी द्वारा पुरानी पीढ़ी का स्थान लेने का मामला तमाम समाजवादी देशों में समान रूप से चल रहा होगा। इसके अलावा, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से अधिकतर समाजवादी देशों में निर्माण कार्य शान्तिपूर्ण वातावरण में जारी रहा है और उनके लोगों के भौतिक तथा सांस्कृतिक जीवन में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। इस स्थिति से यह खतरा पैदा हो जाता है कि कहीं शान्तिपूर्ण, आरामदेह जीवन के संदर्भ में लोग उस क्रान्तिकारी भावना को न भुला बैठें, जो पहले कठोर लड़ाइयों के समय उनमें मौजूद थी।

ऐसी परिस्थितियों में यदि इस आधार पर कि समाजवादी क्रान्ति राष्ट्रव्यापी स्तर पर सफल हो गयी है, मेहनतकश लोगों में वर्ग शिक्षा के कार्य को बंद कर दिया जाए तो लोग धीरे-धीरे सुस्त होते जाएंगे और वैचारिक दृष्टि से पतन की ओर बढ़ने लगेंगे। अन्त में वे साम्राज्यवाद के प्रति अपनी घृणा को भूल जाएंगे और क्रान्ति को अन्त तक पहुंचाने का संकल्प भी खो देंगे। इससे भी बदतर बात यह होगी कि वे केवल अपनी भलाई चाहेंगे और इस बात की परवाह नहीं करेंगे

कि दूसरों का दमन और शोषण हो रहा है या नहीं हो रहा है। इसका अर्थ यह होगा कि विजयी समाजवादी देशों में लोग क्रान्ति के लिए संघर्ष को तिलांजलि दे देंगे और विश्व क्रान्ति के कर्तव्य को छोड़ देंगे। विश्व क्रान्ति की परवाह किये बिना केवल अपने ही देश की खुशहाली की चाह करना पूंजीवादी राष्ट्रवाद की अभिव्यक्ति है और यह बुनियादी तौर पर मार्क्सवाद-लेनिनवाद के प्रतिकूल है।

क्रान्तिकारी संघर्ष से हटने और विश्व क्रान्ति को तजने का अर्थ है मार्क्सवाद-लेनिनवाद से द्रोह करना और पथभ्रष्ट हो कर संशोधनवाद को अपनाना। तब कोई अपने देश में भी समाजवाद और कम्युनिज्म का निर्माण नहीं कर सकता।

कुछ समाजवादी देशों में मेहनतकश जनता में विचारधारात्मक कार्य की उपेक्षा की वजह से इस समय युवकों में लम्पटता और काहिली की जीवन-पद्धति के लक्षण दृष्टिगोचर हो रहे हैं। उनमें काम करने की अनिच्छा, या सेना में शामिल होने के विरोध और केवल निकम्मेपन और खुली छूट के जीवन-यापन की आकांक्षा जैसी वुरी प्रवृत्तियां उभरी हैं। जीवन का यह सुस्त, लम्पट और गैर-वर्गीय रंग-ढंग संशोधनवादी विचारधारा के पनपने के लिए अनुकूल आधार उपलब्ध करता है और संशोधनवाद के असर में लोग और भी ज्यादा पथभ्रष्ट होते जा रहे हैं।

परिणामस्वरूप वर्ग चेतना के पंगु हो जाने पर अनेक युवा लोग क्रान्तिकारी दृष्टिकोण से किसी भी चीज को देखने में असमर्थ रहते हैं। वे साम्राज्यवाद के आक्रामक और क्रूर स्वरूप के बारे में कुछ नहीं जानते और साम्राज्यवाद के बारे में, जिसका नेतृत्व अमरीकी साम्राज्यवाद कर रहा है, भ्रम में पड़ कर साम्राज्य-वाद-विरोधी संघर्ष पर संशय व्यक्त करते हैं।

कुछ समाजवादी देशों के युवकों की इस प्रकार की विचारधारात्मक पथ-भ्रष्टता उनके अपने देशों में समाजवाद और कम्युनिज्म के निर्माण के लिए और इसके साथ ही विश्वव्यापी पैमाने पर साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष छेड़ने के लिए भी बड़ी खतरनाक है।

विश्व भर के कम्युनिस्टों का यह कर्तव्य है कि वे अपने देशों की क्रान्ति के प्रति असीम निष्ठा बनाये रखें और इसके साथ ही विश्व क्रान्ति की अन्तिम विजय के लिए लड़ते रहें। अपने देश की क्रान्ति को और विश्व क्रान्ति को अन्तिम रूप से पूरा करने के लिए यह जरूरी है कि तमाम समाजवादी देशों में वर्ग शिक्षा के कार्य को पूरे उत्साह से चलाया जाए। यह कहा जा सकता है कि मेहनत-कश अवाम में वर्ग शिक्षा का दृढ़ीकरण एक महत्वपूर्ण कर्तव्य है जिसे विश्व क्रान्ति के ध्येय ने हमारे युग के तमाम कम्युनिस्टों पर सौंप रखा है।

यह हमारा कर्तव्य हो जाता है कि कोरिया में साम्राज्यवादियों और उनके

पिट्ठुओं-जमींदारों और पूंजीपतियों को कुचल दें, देश भर में समाजवादी क्रान्ति को सम्पन्न करें और विश्व क्रान्ति की अन्तिम विजय के लिए अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन के एक दस्ते के रूप में लड़ें। कोरियाई क्रान्ति की विजय के लिए और विश्व क्रान्ति की विजय के लिए लम्बा संघर्ष करना होगा। यही वजह है कि हमें अपनी क्रान्ति की अन्तिम विजय तक मेहनतकश अवाम में वर्ग शिक्षा के कार्य को निरन्तर जारी रखना होगा।

इसके अलावा वर्तमान काल में संशोधनवादी विचारधारा के उभार के संदर्भ में मेहनतकश अवाम के बीच वर्ग शिक्षा का दृढ़ीकरण और भी अधिक जरूरी हो गया है।

इस समय संशोधनवादी हर प्रकार के मार्क्सवाद-विरोधी, अवसरवादी सिद्धान्तों का प्रसार कर रहे हैं और प्रतिक्रियावादी विचारधाराओं तथा जीवन-यापन की भ्रष्ट पद्धति का व्यापक रूप से प्रसार कर रहे हैं, और इस तरह मेहनतकश अवाम की वर्ग और क्रान्तिकारी चेतना को पंगु बना रहे हैं और विशेष रूप से युवा पीढ़ी को वैचारिक दृष्टि से तबाह कर रहे हैं।

आधुनिक संशोधनवादी मार्क्सवाद-लेनिनवाद के क्रान्तिकारी सिद्धान्तों से द्रोह करते हैं और क्रान्तिकारी संघर्ष तथा वर्ग संघर्ष की आवश्यकता से इनकार करते हैं। यह रट लगाते हुए कि "तमाम मनुष्य समान हैं; सारा संसार एक है," संशोधनवादी वर्ग दृष्टिकोण को ठुकराते हैं और "मानवता", "सार्वभौम दृष्टिकोण" के वर्गेतर दृष्टिकोण का उपदेश देते हैं।

कला के क्षेत्र में भी वे मजदूर वर्ग की क्रान्तिकारी कला और पूंजीवादी वर्ग की प्रतिक्रियावादी कला के बीच कोई भी स्पष्ट भेदरेखा नहीं मानते और "मानवता" की वर्गेतर कला की वकालत करते हैं। संशोधनवादियों की धारणा है कि मजदूर वर्ग को जीवनयापन की भ्रष्ट पूंजीवादी पद्धति को सीखना चाहिए और उनका विश्वास है कि क्रान्तिकारी मजदूर वर्ग को उन अश्लील गीतों और नृत्यों को सीखना चाहिए जिनका शराब पीकर और लंपटपूर्ण मौजमेला करते हुए पूंजीवादी लोग मजा लेते हैं। उनका कहना है कि कला का वर्ग स्वरूप सर्वथा अनावश्यक है।

जहां संशोधनवाद सफल हुआ है, वहां लोग अपने समाजवादी देश से प्यार और उस पर गर्व की भावनाओं से अधिकाधिक दूर होते जा रहे हैं और उनमें यहां तक गिरावट आ गयी है कि वे अहंवादी बनते जा रहे हैं जिन्हें केवल अपने लिए ऐश की जिन्दगी दरकार होती है। इस का अर्थ है धन-लोलुपता की पूंजीवादी विचारधारा की वापसी। उस व्यक्ति से, जो केवल धन को जानता है और केवल व्यक्तिगत आनन्द के पीछे भागता है, राज्य और क्रान्ति के लिए किस प्रकार के

नि:स्वार्थ संघर्ष की अपेक्षा की जा सकती है ? यदि कोई इस पथ का अनुसरण करता है तो वह अपने देश से गद्दारी करने में भी संकोच नहीं करेगा। इस सम्बन्ध में एक दृष्टान्त एक विशिष्ट देश की उस छात्रा का है, जो संशोधनवादी विचारधारा से इतनी प्रभावित हो गयी कि उसने एक अमरीकी जासूस एजेंट से शादी करने को गौरव की बात मान लिया।

हमारा एक छात्र एक अन्य देश में पढ़ते हुए संशोधनवाद से भ्रष्ट हो गया और धीरे-धीरे बहकावे में आकर दुराचारी जीवन में फंस गया। कहा जाता है कि अन्ततः वह ऐसी स्थिति में पहुंच गया है कि एक कोरियाई के रूप में जन्म लेने पर वह शर्म महसूस करने लगा है। बेशक यह एक विचित्र मामला है। लेकिन कुछ भी हो, जब लोग एक बार संशोधनवाद से प्रभावित हो जाते हैं और उनका नैतिक अधःपतन हो जाता है तो वे अन्त में अपने देश को ठुकरा देते और केवल अपने लिए आराम खोजने लग जाते हैं।

संशोधनवादी साम्राज्यवादियों के गुर्गे हैं। इस समय साम्राज्यवादी हमारी पांतों में प्रतिक्रान्तिवादी, गैर-वर्गीय विचारधाराएं फैलाने और हमारे शिविर को कमजोर करने की अपनी कुचालों में संशोधनवादियों को अपने गुर्गों के रूप में इस्ते-कर रहे हैं। अतः संशोधनवाद की घुसपैंठ को रोकने के लिए हमारी क्रान्तिकारी पांतों की वैचारिक एकता को और दृढ़ करो तथा साम्राज्यवाद तथा जमींदार और पूंजीपति वर्गों के विरुद्ध सफलतापूर्वक संघर्ष जारी रखो। वर्ग शिक्षा को तेज करना आज जितना जरूरी है, उतना पहले कभी न था।

२ : वर्ग शिक्षा की मुख्य वस्तु के बारे में

वर्ग शिक्षा विचारधारात्मक शिक्षा होती है, जिसका उद्देश्य जनता को मजदूर वर्ग की विचारधारा से लैस करना है। इसका मुख्य उद्देश्य श्रमजीवी लोगों की वर्ग चेतना को प्रखर करना है ताकि वे बिना किसी ढुलमुलपन के वर्ग शत्रु से जूझ सकें और हर हालत में अपने वर्ग के हितों की दृढ़तापूर्वक रक्षा करने के लिए लड़ सकें।

हमें श्रमजीवी जनता के सामने वर्ग शत्रु के विषाक्त और धूर्ततापूर्ण स्वरूप का पूर्णतया पर्दाफाश करना चाहिए, उसमें इस शत्रु के प्रति गहरी घृणा उत्पन्न करनी चाहिए और इसके साथ ही उसे उसकी वर्ग स्थिति तथा क्रान्तिकारी संघर्ष के औचित्य के बारे में गहराई से कायल करना चाहिए। इस प्रकार तमाम श्रम-जीवी जनता को अपने वर्ग, अपनी पार्टी और अपने समाजवादी देश की भलाई

तथा क्रान्तिकारी ध्येय की विजय के लिए वर्ग शत्रु से अन्त तक दृढ़तापूर्वक लड़ने के वास्ते प्रेरित करना चाहिए।

वर्ग शिक्षा में हमें जिस बात पर मूलतः जोर देना है, वह है श्रमजीवी जनता में साम्राज्यवाद के प्रति घृणा उत्पन्न करना।

साम्राज्यवाद हमारे संघर्ष का प्रथम निशाना है। हर प्रकार का साम्राज्यवाद, खासतौर पर अमरीकी और जापानी साम्राज्यवाद जिससे हमें लड़ना है, बिल्कुल खराब है। हमें सबसे बढ़कर सैनिकों और श्रमजीवी जनता को अमरीकी और जापानी साम्राज्यवाद के प्रति घृणा के विचारों में शिक्षित करना होगा।

कोरिया में अमरीकी और जापानी गुंडों द्वारा ढायी गयी बर्बरताओं की अनगिनत मिसालें हैं। हमें सैनिकों और श्रमजीवी जनता को साफतौर पर बताना चाहिए कि कैसे अमरीकी साम्राज्यवादियों और जापानी साम्राज्यवादियों ने हमारे लोगों की हत्याएं कीं, उनको अपमानित किया और पददलित किया। अमरीकी गुंडों ने उत्तर कोरिया में जो जुल्म ढाये हैं, और इस समय दक्षिण कोरिया में ढा रहे हैं, हमें उन सबके बारे में उन्हें बताना चाहिए। दक्षिण कोरिया में जब यांकी शिकार खेलने जाते हैं, तो वे जलाने की लकड़ी चुन रहे कोरियाइयों को गोली से उड़ा देते हैं और फिर दावा करते हैं कि उन्होंने उन्हें तीतर या खरगोश समझा था, वे बच्चों को केवल कंटीले तारों के अवरोधों के पास आने पर चोर बताकर उन्हें गोली से उड़ा देते हैं, वे कोरियाई नारियों का शील भंग करते हैं और उनके बाल तक काट देते हैं, वे कोरियाई स्त्रियों को नंगा कर उनके शरीरों पर पेंट कर देते हैं और इसी प्रकार के अन्य तमाम जुल्म ढाते हैं। यह सब हमारे राष्ट्र का असह्य अपमान है। हमें श्रमजीवी जनता को इस सबसे अवगत कराना चाहिए। इस प्रकार उसमें हमारे राष्ट्र के शत्रु के विरुद्ध घृणा पैदा की जानी चाहिए।

कवांगजु छात्र कांड आपके सामने है, जबकि जापानी छात्रों द्वारा एक कोरियाई स्कूल छात्रा का मजाक उड़ाये जाने पर देश भर में कोरियाई छात्र जापानी साम्राज्यवाद के विरुद्ध उठ खड़े हुए थे। अमरीकी साम्राज्यवादी इस समय दक्षिण कोरिया में जो अत्याचार ढा रहे हैं, हमें उनको पूर्णतया बेनकाब करना चाहिए और अपने तमाम देशवासियों को उससे अवगत कराना चाहिए।

सैनिकों और श्रमजीवी जनता को साम्राज्यवाद से घृणा की शिक्षा देने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि उसके आक्रामक स्वरूप को उनके दिमाग में बैठा दिया जाए। हमें श्रमजीवी लोगों को केवल साम्राज्यवादियों द्वारा हमारे देश में लोगों को कत्ल किये जाने पर हमारे शहरों और गांवों पर अमानुषिक ढंग से बमबारी किये जाने की कुछेक घटनाओं के बारे में ही नहीं बताना चाहिए, बल्कि श्रमजीवी जनता को ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर इस बात की पूरी तरह अनु-

भूति करानी चाहिए कि आक्रमण और लूट साम्राज्यवाद के अनिवार्य तत्व हैं।

अतीत में साम्राज्यवादियों ने हमारे देश को हड़प लिया और उसे विपुल साधनों तथा सम्पदा से वंचित कर दिया; और आज भी वे दक्षिण कोरियाई जनता को लूट रहे हैं तथा उत्तर कोरिया को निगलने की चेष्टा भी कर रहे हैं। हर साम्राज्यवाद विना किसी अपवाद के चाहे वह जापानी साम्राज्यवाद हो या अमरीकी साम्राज्यवाद, कल का साम्राज्यवाद हो या आज का साम्राज्यवाद, अपने स्वरूप से ही आक्रामक होता है।

जिस प्रकार किसी भेड़िये का क्रूर स्वभाव बदल नहीं सकता, उसी प्रकार साम्राज्यवाद का आक्रामक स्वरूप कदापि बदल नहीं सकता। किसी भेड़िये के बच्चे को पकड़ो और पालो, वह तब भी लोगों को नुकसान पहुंचाएगा और बड़ा होते ही पहाड़ों में भाग जाएगा। यदि साम्राज्यवाद का आक्रामक स्वरूप बदल जाए तो इसका अर्थ यह होगा कि साम्राज्यवाद का अस्तित्व समाप्त हो गया है। साम्राज्यवाद जब तक कायम रहेगा, उसका आक्रामक स्वरूप वैसे-का-वैसा ही बना रहेगा। हमें संशोधनवादियों की इस धारणा को एकदम ठुकरा देना चाहिए कि साम्राज्यवाद का आक्रामक स्वरूप बदल गया है।

जिस दिन से जापानी और अमरीकी साम्राज्यवादियों का हमारे देश से सम्पर्क हुआ है, उन्होंने हमारे देश को हड़पने का यत्न किया है और हमारे लोगों की सम्पदा को लूटने की चालें चली हैं। अमरीकी ठगों ने भारी परिमाण में हमारे देश का सोना लूटा। केवल उनसान, ताएयुदोंग और सुआन खानों से उन्होंने जो स्वर्ण लूटा, वही बहुत ज्यादा था। कई जगह अब भी उन यांकियों के निशान मिलते हैं, जिन्होंने कोरिया का सोना चुराने के लिए ऊंचे-ऊंचे पर्वतों और गहरी घाटियों को छान मारा था। मैंने छोंगसान के पर्वतीय दर्रे पर एक पश्चिमी ढंग का मकान देखा और बुजुर्गों से पूछा कि यह क्या है। उन्होंने बताया कि इसे एक अमरीकी दस्यु ने बनाया था, जो वहां एक वर्ष तक रहा और इस दौरान स्वर्ण की तलाश में घोड़े पर सवार हो कर इधर-उधर जाता रहा। मैंने सुझाव दिया कि इस मकान को ठीक-ठाक हालत में रखना अच्छा रहेगा क्योंकि हम अपनी भावी पीढ़ियों को इसे दिखा सकेंगे।

धूर्त यांकियों ने कोरिया का भारी परिमाण में स्वर्ण लूटा और उसमें से नाम मात्र को खर्च कर कुछेक "खैराती अस्पताल" आदि बनाये तथा ईसाई धर्म कबूलने वालों में कुछ थैले कुनैन बांटी। इसके अलावा अपने काम के लिए जासूसी का प्रशिक्षण देने के वास्ते उन्होंने कुछ कोरियाइयों को चुना और उन्हें पढ़ने के लिए अमरीका भेजा। इस काम को करते हुए उन्होंने विज्ञापित किया कि वे कोरियाइयों के हितैषी हैं और उनकी मदद कर रहे हैं।

आज भी अमरीकी ठग दक्षिण कोरिया में इन्हीं तौर-तरीकों से लोगों को धोखा देने का यत्न कर रहे हैं। उन्होंने दक्षिण कोरिया पर कब्जा कर उसे अपने उपनिवेश में परिणत कर दिया है। और फिर भी वे दावा करते हैं कि वे कोरियाई जनता की सहायता कर रहे हैं। वे हर साल करोड़ों डालर की "मदद" देने का जो दम भरते हैं, हमें उसके वास्तविक स्वरूप को पूर्णतया बेनकाब करना चाहिए।

असल में यांकी दक्षिण कोरिया से हर साल जो कुछ लूटपाट कर ले जाते हैं, वह उनके द्वारा प्रस्तावित तथाकथित मदद के मुकाबले में कहीं ज्यादा होता है। यांकियों ने सात लाख के भाड़े के टट्टुओं की एक कठपुतली सेना कायम कर रखी है। यदि उन्हें कोरिया में इतनी बड़ी ही अपनी सेना रखनी पड़े तो उस पर दक्षिण कोरिया की उनकी "मदद" के परिमाण से बीसियों गुना अधिक खर्च बैठेगा। अमरीकी गुन्डे इस तथ्य पर नादानी का नाटक रचते हैं कि वे दक्षिण कोरिया के युवा और अधेड़ लोगों का तोप के चारे के रूप में प्रयोग करते हैं और वहां विशाल साधनों को लूटते हैं। इसके प्रतिकूल वे इस तरह शेखी बघारते हैं, मानो दक्षिण कोरियाई लोगों की उदर पूर्ति कर रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि दक्षिण कोरिया में भी बहुत से लोगों को अब महसूस होने लगा है कि तथाकथित अमरीकी मदद दक्षिण कोरियाई अर्थतन्त्र को नष्ट करने और उसे पूर्णतया अमरीका का पिछलग्गू बनाने का एक उपाय मात्र है।

हमें लोगों को इस तथ्य से भी पूर्णतया अभिज्ञ करना होगा कि जापानी और अमरीकी साम्राज्यवादियों में कोरिया पर धावा बोलने के प्रयोजन से बहुत पहले ही एक दूसरे से तालमेल स्थापित हो चुका था। इस प्रकार हमें एक ऐतिहासिक तथ्य के आधार पर अपने देश के विरुद्ध फिर से हमला करने के अमरीकी और जापानी साम्राज्यवादियों के मन्सूबों का भण्डाफोड़ करना चाहिए।

पिछले कुछ समय से अमरीकी साम्राज्यवादी और दक्षिण में सैन्य फासिस्ट गुट दक्षिण कोरिया में अपने औपनिवेशिक शासन की, जो पतन के कगार पर है, सहारा देकर खड़े रखने के प्रयास में जापानी साम्राज्यवादियों को प्रवेश की अनुमति जैसी कुचालें भी चल रहे हैं।

दक्षिण कोरिया में पाक जुंग ही और किम जोंग पिल जैसे लोग अमरीका के विशेष गुर्गे हैं और जापानी ठगों के पिट्ठू भी हैं। वे अब जापानी लुटेरों को लाने के उद्देश्य से "कोरिया गणतन्त्र-जापान वार्ता" का आयोजन कर रहे हैं। ये देशद्रोही लोग उस क्षतिपूर्ति को, जो जापानी साम्राज्यवादियों द्वारा हमारे लोगों की ३६ वर्षों तक की गयी लूटपाट के बदले में दिया जाना है, उसकी राशि घटाकर केवल ३० करोड़ डालर निश्चित करने का विचार रखते हैं।

हमारी सरकार ने "कोरिया गणतन्त्र-जापान वार्ता" के अपने दृढ़ विरोध

को सुस्पष्ट कर दिया है। जापानी जनता का एक व्यापक तबका और साथ ही मजदूर वर्ग "कोरिया गणतन्त्र-जापान वार्ता" की अवैधता की भर्त्सना के लिए अपनी आवाज बुलन्द कर रहा है।

जापानी साम्राज्यवाद को देश में लाने के पाक जुंग ही के यत्नों का हमें दृढ़तापूर्वक विरोध करना चाहिए और जापानी साम्राज्यवादियों के विरुद्ध, जो हमारे कोरिया पर पुनः धावा बोलने के षडयन्त्र रच रहे हैं, अपनी चौकसी तीव्र करनी चाहिए।

जातीय भेदभाव और मानवद्वेष—ये साम्राज्यवादियों के अनिवार्य तत्व हैं। हमें साफ-साफ याद है कि बीते दिनों में कैसे जापानी दस्यु कोरियाइयों से घृणा करते थे और किस निर्ममता से उन्हें कत्ल कर देते थे। वे श्वेतों को एक श्रेष्ठ नस्ल मानते हैं और उनकी धारणा है कि श्वेतों को पीली और काली नस्लों पर प्रभुत्व जमाकर उनसे दुर्व्यवहार करना चाहिए। अमरीकी दस्युओं ने कोरियाइयों को अपमानित और कत्ल करने के जो जुल्म ढाये और एशिया, अफ्रीका तथा लैटिन अमरीका के लोगों पर जो अपराध किये हैं और अब भी कर रहे हैं, उनके इतिहास को हमें पूर्णतया बेनकाब करना चाहिए।

इस प्रकार हमें प्रयत्न करना होगा कि हमारे तमाम लोग जापानी और अमरीकी साम्राज्यवाद से जबर्दस्त नफरत करें और न-केवल हमारी पीढ़ी, बल्कि हमारी आने वाली पीढ़ियां भी साम्राज्यवाद के आक्रामक स्वरूप को याद रखें।

इसके अलावा हमें सैनिकों और मेहनतकश लोगों को जमींदारों और पूंजी-पतियों के दुष्टतापूर्ण स्वरूप से पूर्णतया परिचित कराना चाहिए। दक्षिण कोरिया में अब भी जमींदार और पूंजीपति कायम हैं और वे मजदूरों तथा किसानों का निर्मम शोषण करते जा रहे हैं। उत्तर कोरिया में समाजवादी और पूंजीवादी प्रणाली का अस्तित्व मिट चुका है, लेकिन भूतपूर्व जमींदार और पूंजीपति, जो यद्यपि अपदस्थ किये जा चुके हैं, आज भी जीवित हैं।

युवा पीढ़ी को जमींदारों के बारे में कुछ पता नहीं है, परन्तु भूतपूर्व जमींदार अपनी जब्त की गयी जमीन को कदापि नहीं भूले हैं। यद्यपि जमींदारों की जागीरों को जब्त हुए १७ वर्ष बीत चुके हैं, फिर भी वे सम्पत्ति के रिकार्ड रखे हुए हैं। बताया गया है कि उनमें से एक ने, जिसका भरण-पोषण उसका पोता करता था अपने युवा पोते को वह सारी जमीनें दिखाईं जिनसे उसे वंचित किया गया था और उससे कहा कि उसे समय आने पर, यहां तक कि उसकी मौत होने के बाद भी, इन जमीनों को किसी भी उपाय से पुनः हासिल करना चाहिए। प्योंगयांग में हाल ही में एक भूतपूर्व ७२-वर्षीय जमींदार, जो हमेशा बड़बड़ाता और शिकायतें करता रहता था, इस तथ्य के बावजूद कि उसके तमाम बेटे राज्य की कृपा से

स्कूल जाने लगे थे और कालेज से स्नातक होकर लौट चुके थे, हमारे विरुद्ध हो गया। बताया गया है कि उसके पास-पड़ोस के लोगों ने उसे शिक्षित करने का हर प्रयास किया परन्तु यह सब व्यर्थ रहा और अन्त में उनके पास सिवाय इसके कोई चारा न रहा कि उसके पुन: शिक्षण का कार्य उसके बेटों के सुपुर्द कर उसे मुहल्ले से निष्कासित कर दें। मेरे विचार में यह एक शिक्षाप्रद दृष्टान्त है, जो प्रदर्शित करता है कि जमींदारों का वास्तविक स्वरूप नहीं बदलता। जिस प्रकार साम्राज्य-वाद का वास्तविक स्वरूप नहीं बदल सकता, उसी प्रकार जमींदारों और पूंजी-पतियों का वास्तविक स्वरूप भी नहीं बदल सकता।

जमींदार यह नहीं भूले हैं कि हमने उनकी जमीनों को हस्तगत किया है, अत: हम कैसे जमींदारों को भूल सकते हैं? हमें जमींदारों और पूंजीपतियों से घृणा करते रहना होगा और अन्त तक उनसे लड़ते रहना होगा। हमारे लिए यह जरूरी है कि जमींदारों और पूंजीपतियों द्वारा शोषण और लूटपाट की अपराधपूर्ण घटनाओं को बेनकाब करने के लिए कई फिल्मों और नाटकों की रचना की जाए और ऐसे ही विषयों के आधार पर और ज्यादा उपन्यास लिखे जाएं। हमारे लिए यह जरूरी है कि अपने युवा लोगों को ये तमाम फिल्में दिखायें और उपन्यास पढ़वायें, ताकि उन्हें पूर्णतया महसूस हो कि भूतकाल में जमींदार और पूंजीपति कैसे उनके माता-पिताओं का शोषण और दमन करते थे।

सेना के लिए यह भी उचित होगा कि वह कभी-कभी देहातों के उन लोगों में से कुछेक को जो पहले कृषि मजदूर के रूप में बड़ी मुश्किल से आजीविका जुटा पाते थे और जो मुक्ति के बाद बेहतर जीवन-यापन कर रहे हैं, आमन्त्रित करें और उनके साथ गोलमेज सम्मेलन करें। ऐसे गोलमेज विचार-विमर्श द्वारा हम अपने सैनिकों को इस बात की पूर्ण जानकारी दे सकेंगे कि बीते दिनों में हमारे किसानों की कैसी दयनीय दशा थी और जापानी दस्यु तथा जमींदार कितना क्रूर शोषण करते थे।

वर्ग शिक्षा में एक अन्य अति महत्वपूर्ण बात सैनिकों और मेहनतकश लोगों को पूंजीवादी प्रणाली की भ्रष्टता और समाजवादी प्रणाली की श्रेष्ठता समझाने की है।

जमींदारों और पूंजीपतियों जैसे वर्ग अपनी शोषक व्यवस्था से अलग नहीं हो सकते हैं। हमें न-केवल अलग-अलग जमींदारों और पूंजीपतियों से, बल्कि सामूहिक रूप से शोषक वर्गों से घृणा करनी चाहिए और उस शोषक व्यवस्था से, जिसमें उनका प्रभुत्व होता है, लड़ना चाहिए।

पूंजीपतियों के वर्ग सार को पूरी तरह समझने के लिए यह जरूरी है कि पूंजीवादी व्यवस्था की पूर्ण जानकारी प्राप्त की जाए। हमें श्रमजीवी जनता की

मदद करनी चाहिए ताकि वह पूरी तरह समझ सके कि पूंजीवादी व्यवस्था और जीवन की समाजवादी और पूंजीवादी पद्धति बुरी है, जब कि समाजवादी प्रणाली और हमारी जनता की जीवन पद्धति अच्छी है।

पूंजीवादी समाज एक ऐसा समाज होता है, जिसमें जमींदार और पूंजीपतियों सहित मुट्ठी भर विशेषाधिकार संपन्न वर्ग मेहनतकश अवाम का दमन और शोषण करते हैं। राज्य सत्ता और समाज की सम्पदा सर्वथा इन विशेषाधिकार संपन्न वर्गों के हाथों में होती है। मेहनतकश अवाम भूखे मारे जाते हैं और उनके बदन पर मात्र चिथड़े होते हैं। यदि वे बीमार पड़ जाएं तो इलाज कराना उनके बूते में नहीं होता। अपमानित और पददलित होने के बावजूद उनमें अपने मानवाधिकारों की रक्षा करने की कोई शक्ति नहीं होती।

इसके विपरीत समाजवादी व्यवस्था में जन साधारण हर चीज के स्वामी होते हैं। समाजवादी समाज में किसी को भी शोषण और दमन का शिकार नहीं होना पड़ता। हर कोई समान रूप से अच्छी तरह कार्य करता है और जीवन बिताता है। लोग एक साथ पढ़ते और अपना विकास करते हैं। भले ही वे जमींदारों और पूंजीपतियों की तरह ऐश का जीवन बिताने की स्थिति में न हों, परन्तु वे सब रोटी और कपड़े की चिन्ता से मुक्त जीवन बिताते हैं और वे सभी काम तथा अध्ययन कर सकते हैं और चिकित्सा प्राप्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त समाजवादी व्यवस्था में तमाम लोग एकजुट होते हैं और गम्भीरतापूर्वक कार्य करते हैं, ताकि वे समाज का तेजी से विकास कर सकें और विदेशी आक्रान्ताओं के विरुद्ध संघर्ष में पूर्ण उत्साह प्रदर्शित कर सकें।

हमारी व्यवस्था की श्रेष्ठता समझने के लिए उत्तरी आधे भाग की दक्षिणी आधे भाग से तुलना करना बहुत ही प्रभावशाली रहेगा।

समाजवादी व्यवस्था की श्रेष्ठता और पूंजीवादी व्यवस्था के भ्रष्ट तथा प्रतिक्रियावादी स्वरूप के बीच की विषमता उत्तर और दक्षिण कोरिया की सर्वथा विरोधी स्थितियों से बिलकुल साफतौर पर अभिव्यक्त हो जाती है। इस समय हमारा संघर्ष वस्तुत: उत्तर और दक्षिण कोरिया में स्थापित दो सर्वथा विरोधी समाज व्यवस्थाओं के मध्य एक गम्भीर संघर्ष है, यह समाजवादी व्यवस्था का समर्थन करने वाले वर्गों और पूंजीवादी व्यवस्था का समर्थन करने वाले वर्गों के बीच संघर्ष है। हम इस बात के लिए प्रयत्नशील हैं कि लोग अपने लिए इन दो व्यवस्थाओं में से एक को चुनें। अत: यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि उत्तर और दक्षिण कोरिया की समान व्यवस्थाओं के बीच तुलना कर पूंजीवाद के मुकाबले में समाजवाद के लाभों को प्रमाणित किया जाए।

दक्षिण कोरिया में जमींदार और पूंजीपति अब भी सत्ता पर छाये हुए हैं और

प्रचुरता का जीवन बिता रहे हैं, जब कि मजदूर और किसान अति कष्टपूर्ण जीवन बिता रहे हैं। चूंकि सत्ता मजदूरों और किसानों के हाथों में नहीं है, इसलिए राज्य द्वारा उन्हें संरक्षण दिये जाने का तो कोई सवाल ही नहीं। इसके प्रतिकूल उनका तो दमन किया जाता है। पुलिस मजदूरों और किसानों को पीटती है, गिरफ्तार करती है और कारागार में डालती है तथा भारी संख्या में मेहनतकशों और युवकों को बेगारी के लिए विवश करती है तथा यांकियों के लिए तोप के चारे के रूप में कठपुतली सेना में भरती करती है। वहाँ ६० लाख से अधिक बेरोजगार और अर्ध-रोजगारयाफ्ता लोग हैं और लाखों बाल भिखारी दर-दर की ठोकरें खाते रहे हैं, लेकिन शासक उनके लिए कुछ भी करने को तैयार नहीं हैं। जो लोग जनाधिकारों की बात करते हैं, उन्हें वे अंधाधुंध गिरफ्तार कर बन्दीगृह में डाल देते हैं और कत्ल कर देते हैं और लोगों को प्रशान्त महासागर पार दक्षिण अमरीका के दूरदराज के वीरान क्षेत्रों में ले जाकर फेंक देते हैं। हमें दक्षिण कोरियाई शासकों की अपराधपूर्ण निष्क्रमण योजना का पूरी तरह पर्दाफाश करना चाहिए, जो निर्दोष दक्षिण कोरियाई लोगों को इस बहाने कि गरीबी का कारण जमीन की कमी है दूरदराज के क्षेत्रों में निर्वासित कर रहे हैं ताकि वे फिर कभी वापस न आ सकें, जबकि उन्होंने लाखों छोंगबो कृषि योग्य जमीन को बेकार छोड़ रखा है।

उत्तर कोरिया में कोरियाई रहते हैं, जिस प्रकार कि दक्षिण में भी कोरियाई रहते हैं, परन्तु यहां की स्थिति सर्वथा भिन्न है। उत्तरी आधे भाग में तमाम पूंजी-पतियों और जमींदारों का सफाया किया जा चुका है और तमाम शोषकों और दमनकर्ताओं को मिट्टी में मिलाया जा चुका है। राज्य का संचालन स्वतः अवाम ही करते हैं। तमाम फैक्टरियों और फार्मों का स्वामित्व जनता के हाथों में हैं, जो स्वतः उनका प्रबन्ध और संचालन करती है। हर व्यक्ति काम करता है, पढ़ता है तथा रोटी, कपड़ा और मकान की चिन्ता से मुक्त जीवन बिताता है।

दक्षिण कोरिया में असंख्य लोग डिब्बे हाथ में लिए दर-दर भीख माँगते फिरते हैं और बहुत से पुलों के नीचे ठंड और भूख से मर रहे हैं। परन्तु हम सब अब भरपेट खाना खाते हैं, भले ही उसमें आधे उबले चावल और आधे अन्य अनाज हों, और यहां कोई भी ऐसा नहीं है जो बेपनाह होने के कारण पुलों के नीचे सोता हो।

दक्षिण कोरिया में आजकल भारी संख्या में युवक और बच्चे स्कूल नहीं जा सकते हैं और छात्रों को तो स्कूली खर्चा चलाने के लिए अपना खून तक बेचना पड़ता है। लेकिन उत्तरी आधे भाग में तमाम बच्चे और छात्र, जो आबादी का एक चौथाई भाग हैं, निःशुल्क स्कूल में पढ़ते हैं; और हर किसी को उच्चतर

शिक्षा पाने के अवसर भी सुलभ किये जाते हैं।

चूंकि हमारे समाज में हर किसी का कोई-न-कोई धंधा है और हर कोई काम करता है, अतः शत्रु यह विषैला प्रचार अभियान चला रहे हैं कि उत्तरी कोरियाइयों से बेगार ली जा रही है। उनकी आशा के विपरीत इस प्रचार का असर इतना उलटा पड़ेगा कि वस्तुतः दक्षिण के कोरियाई भी उत्तर कोरिया आने को लालायित होने लगेंगे।

एक जासूसी एजेंट ने, जो उत्तर कोरिया में चोरी-छिपे घुस आया था और फिर दक्षिण में भाग गया था, लांछनपूर्ण ढंग से यह दावा किया कि दिन में उत्तर कोरिया की सड़कें जीवित नरक के समान होती हैं जहां एक भी व्यक्ति दिखायी नहीं देता, क्योंकि हर किसी को बलात घसीट कर बेगार के लिए ले जाया जाता है। इस प्रकार का सफेद झूठ किसी को भी धोखा नहीं दे सकता और न ही यह दक्षिण कोरियाई जनता की सहानुभूति प्राप्त कर सकता है। यदि दक्षिण कोरियाई मेहनतकश जो बेरोजगार हैं तथा भूख और गरीबी की भट्टी में जल रहे हैं, यह सुनेंगे तो वे कहेंगे कि कोई भी काम मिले, वे उसे करने को तैयार हैं, भले ही वह बेगार ही क्यों न हो। यदि दिन के समय भी सड़कें परजीवियों से, जो बिना कोई काम किये जिन्दगी बिताते हों, और कोई काम न होने या खाने को कुछ न होने के कारण दर-दर भटकने वाले बेरोजगारों और भिखारियों से भरी हों, तो इस पर कौन गर्व अनुभव कर सकता है? और इसका क्या फायदा है कि बहुत-से हॉकर चिल्ला-चिल्ला कर लोगों से कुछ चीजें खरीदने के लिए अनुनय-विनय करें? केवल पागल लोग ही ऐसी स्थितियों का उन्मूलन करने और हर किसी के काम करने और अच्छा जीवन बिताने का विरोध कर सकते हैं।

कुछ वर्ष हुए, दक्षिण कोरिया से एक विमान यहां आया था। विमान की एक परिचारिका ने प्योंगयांग के बाजारों के बारे में अपने अनुभव बताते हुए कहा था कि दुकानों में प्रसाधन सामग्रियां और विलास की अन्य चीजें उल्लेखनीय नहीं थीं और उनमें केवल साधारण लोगों के लिए उपयुक्त मामूली कपड़ों और आम जनता की खपत की चीजों की बहुतायत थी। इन शब्दों का भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों वाले लोग अलग-अलग अर्थ निकाल सकते हैं। जब जमींदार और पूंजीपति इन्हें सुनेंगे तो वे सोचेंगे कि उत्तर कोरिया एक गरीब समाज है, क्योंकि उसमें टायलट के सामान और प्रसाधन सामग्रियों का अभाव है। जहां तक दक्षिण कोरिया के मेहनतकश अवाम का प्रश्न है, वे उत्तर कोरिया में जीवन को श्रमजीवी लोगों के लिए आदर्श समझेंगे और कहेंगे: "यदि हमारे पास शृंगार और प्रसाधन की सामग्री नहीं है तो क्या फर्क पड़ता है! अगर वे चीजें बहुतायत से हैं जो श्रमजीवी लोगों को चाहिए, तो पर्याप्त है।"

पूंजीपति वर्ग को स्वतन्त्रता की चर्चा करना बहुत प्रिय है। परन्तु उनकी स्वतन्त्रता, श्रमजीवी लोगों का शोषण करने के लिए जमींदारों और पूंजीपतियों की स्वतन्त्रता और मजदूरों तथा किसानों के लिए फटे-पुराने कपड़े पहनने और भूख से त्रस्त रहने की स्वतन्त्रता है।

मुझे बताया गया है कि पानमुनजोम आने वाले दक्षिण कोरियाई संवाद-दाताओं में से कुछेक पूंजीवादी स्वतन्त्रता की तारीफ करते हैं। जब हमारे संवाददाताओं ने उनसे पूछा कि आखिर उन्हें कौन-सी आजादी हासिल है, तो कहा जाता है कि एक दक्षिण कोरियाई संवाददाता ने उत्तर दिया : आप सब प्रात: आठ बजे कार्यालय जाते हैं और काम करते हैं, लेकिन हम ऐसा नहीं करते। एक बार जब हम कोई अच्छी रिपोर्ट लिख लें और रुपया कमा लें तो हम मद्यपान करेंगे। या कई दिन घर पर आराम करेंगे और किसी को इस बारे में कोई चिन्ता नहीं होती है। यदि यह स्वतन्त्रता नहीं है तो क्या है?" किन्तु यह महानुभाव इस तथ्य से आंखें मूंद लेते हैं कि इस समय दक्षिण कोरिया में भारी संख्या में ऐसे लोग हैं, जो अपनी आजीविका कमाने में असमर्थ रहने के कारण एक दिन की कमाई पर दो दिन की रोटी चलाना तो दूर रहा, भूखे रह रहे हैं। उसे इस बात की परवाह नहीं कि दूसरे भूखे रहते हैं या ठंड से मर जाते हैं, देश तबाह होता है या नहीं, वह तो केवल अपने लिए सुखपूर्ण जीवन चाहता है। कितना नीचतापूर्ण विचार है! समाज, राज्य और स्वदेशवासियों की मुसीबतों के सम्बन्ध में कुछ करने की बजाय घर में बैठ कर शराब पीते हुए बेकार समय काटना बहुत ही लज्जाजनक है।

जब तक जेब में पैसे हैं, तब तक निकम्मेपन की रोटी खाने की स्वतन्त्रता मेहनतकश जनता के लिए नहीं, बल्कि धनी पूंजीवादी शोषक वर्ग के लिए स्वतन्त्रता है। मेहनतकश जनता के लिए स्वतन्त्रता सबसे बढ़ कर इस बात में छिपी है कि वह अपने-आपको जमींदारों और पूंजीपतियों द्वारा शोषण और दमन से बाहर निकाले और तमाम लोग शोषकों की भलाई के लिए नहीं, बल्कि स्वयं अपनी और अपने देश तथा समाज की भलाई के लिए काम करने में समर्थ होंगे।

पूंजीपति मानवाधिकारों की बातें करते हैं, लेकिन पूंजीवादी समाज में मेहनतकश जनता को वास्तव में न काम करने का अधिकार होता है और न जिंदा रहने का, न चिकित्सा कराने का अधिकार होता है और न पढ़ने का। केवल समाजवादी समाज तमाम श्रमजीवी लोगों के लिए काम करने और मिल-जुल कर सुखपूर्वक रहने की वास्तविक स्वतन्त्रता तथा अधिकारों को आश्वस्त करता है।

हो सकता है कि पूंजीवादी समाज के एक पहलू पर सरसरी निगाह डालने

से कुछ लोग पूंजीवादी जीवन की शान-शौकत से प्रभावित हो जाएं। रंगारंग रोशनियों से जगमग करते बाजार और प्रशाधन सामग्री तथा चमकीली वस्तुओं से भरी-पूरी दूकानें यह असर डाल सकती हैं कि सर्वत्र सुख-समृद्धि और खुशहाली छायी है। इसके विपरीत हमारी दूकानें, जो श्रमजीवी जनता के लिए आपूर्ति निकायों के रूप में काम करती हैं, किसी एक स्थान में केन्द्रित नहीं हैं, बल्कि प्रत्येक जिले में समान रूप से बंटी हुई हैं और उनमें पायी जाने वाली तमाम चीजें साधारण हैं। पूंजीवादी देशों से ताजा-ताजा आये लोग यह सोच सकते हैं कि हमारे शहर पूंजीवादी शहरों की तुलना में बहुत कम शान-शौकत वाले हैं। लेकिन पूंजीवादी समाज में जो कुछ भी अत्युत्तम और शानदार है, वह केवल अमीर पूंजीपतियों के लिए तैयार किया जाता है, गरीब मजदूरों के लिए नहीं। हो सकता है कि उन लोगों को, जो चीजों को वर्ग दृष्टिकोण से नहीं देख सकते, केवल पूंजीवादी समाज का चकाचौंध करने वाला वह पहलू ही दिखाई दे, जिसका श्रमजीवी जनता से कोई भी सरोकार नहीं है, और वे उसकी ओर आकृष्ट हों।

हमें हमेशा वर्ग दृष्टिकोण से पूंजीवाद और समाजवाद की तुलना करनी चाहिए तथा सैनिकों और श्रमजीवी जनता को समाजवादी व्यवस्था की श्रेष्ठता के बारे में पूरी तरह कायल करना चाहिए। तभी वे अपनी व्यवस्था प्रणाली से प्यार करेंगे, उसे और ज्यादा दृढ़ तथा विकसित करने का जी जान से प्रयास करेंगे, शत्रु के हमले से समाजवादी व्यवस्था और समाजवादी मातृभूमि की रक्षा करेंगे और समाजवाद के ध्येय के औचित्य तथा विजय में दृढ़ आस्था रखते हुए लड़ाई जारी रखेंगे।

सेना में भी राजनीतिक शिक्षा देते समय यह जरूरी हो जाता है कि केवल उत्तरी आधे भाग में समाजवादी निर्माण पर जोर न देकर दक्षिण कोरिया की स्थिति की भी पूरी चर्चा की जाए। आपको सैनिकों के समक्ष इस बारे में काफी विश्लेषणात्मक स्पष्टीकरण पेश करना चाहिए कि कैसे दक्षिण कोरिया में, जमींदार कृषि लगान लगाते हैं, क्यों दक्षिण कोरिया में, जो कभी कोरिया का अन्न-भंडार कहलाता था, आज कई साल से फसलें चौपट होती रही हैं और वर्ष-प्रति-वर्ष लाखों भूखे किसान घास की जड़ों और पेड़ों की छालों पर निर्वाह करते रहे हैं, जब कि पर्वतीय उत्तर कोरिया हर साल अच्छी फसल काटता है और उसके पास काफी अन्न-व्यवस्था है; क्यों दक्षिण कोरिया में बेरोजगारों की संख्या सतत बढ़ती जा रही है और कालेज स्नातकों तक को रोजगार नहीं मिल रहा है और अन्त में वे स्वयं को ढुलाई करने वाले बेरोजगारों की दयनीय स्थिति में पाते हैं; जबकि उत्तरी आधा भाग अपनी जन-शक्ति की कमी के बारे में चिन्तित है; आदि आदि।

हमें सैनिकों को यह भी साफ-साफ समझाना होगा कि दक्षिण कोरियाई जनता के कष्टों और मुसीबतों का बुनियादी कारण अमरीकी साम्राज्यवाद की औपनिवेशिक और दस्युतापूर्ण नीति तथा उसकी प्रतिक्रियावादी शासन प्रणाली में निहित है।

मुक्ति-पूर्व के दिनों में, जब हम जापानी साम्राज्यवादियों के विरुद्ध जूझ रहे थे, हमने छापामारों को विस्तार से बताया था कि कैसे जमींदार किसानों का शोषण कर रहे हैं। हमने उन्हें समझाया था कि जमींदार कितना कृषि लगान वसूलते थे, कैसे जापानी दस्युओं ने कोरियाइयों को उनकी जमीनों से वंचित कर दिया था, कैसे वे टैक्स लगाते थे और एकाधिकार प्रणाली क्या है।

सैनिकों को दक्षिण कोरिया की स्थिति और इसके साथ ही उत्तर कोरिया की स्थिति से पूरी तरह परिचित कराया जाना चाहिए। तभी उनके लिए समाजवादी व्यवस्था की श्रेष्ठता को अधिक गम्भीरतापूर्वक समझाना और क्रान्तिकारी उपलब्धियों की अधिक दृढ़-निष्ठता के साथ रक्षा करना संभव होगा। और इस प्रकार हमारे सैनिक अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके पिट्ठुओं—जमींदारों तथा पूंजीपतियों—से नफरत कर सकेंगे और शीघ्र ही दक्षिण कोरिया में अमरीकी साम्राज्यवादी हमलावरों, जमींदारों तथा पूंजीपतियों का तख्ता उलट देने और हमारे दक्षिण कोरियाई स्वदेशवासियों के जीवन को उत्तर जैसा सुखी बनाने के लिए अपने क्रान्तिकारी उत्साह को प्रखर कर सकेंगे।

श्रमजीवी जनता की वर्ग शिक्षा विचारधारा के क्षेत्र में एक गहरा वर्ग संघर्ष है। शत्रु वर्गों के खिलाफ जोरदार लड़ाई छेड़े बगैर, सैनिकों और श्रमजीवी जनता को मजदूर की विचारधारा मार्क्सवाद-लेनिनवाद के क्रान्तिकारी विचारों से लैस करना असंभव है। इसलिए हमें हर प्रकार के प्रतिक्रियावादी पूंजीवादी विचारों, मार्क्सवाद-लेनिनवाद विरोधी विचारों और अवसरवादी विचारों के खिलाफ जोरदार संघर्ष चलाना चाहिए। खासतौर पर इस समय, जबकि संशोधनवाद ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सिर उठाया है, वर्ग शिक्षा में इस बात का और भी ज्यादा महत्व है कि संशोधनवाद के प्रतिक्रियावादी स्वरूप को बेनकाब किया जाए।

जनता की वर्ग चेतना को पंगु करने के उद्देश्य से आधुनिक संशोधनवादी वर्ग संघर्ष और सर्वहारा अधिनायकत्व से इनकार करते हैं, वर्ग सहयोग और पूंजीवादी उदारतावाद का उपदेश देते हैं और पूंजीवादी व्यवस्था के बीच बुनियादी अंतरों पर फर्क डालते हैं।

वे साम्राज्यवाद का गुणगान करते हुए और यह दावा करते हुए कि साम्राज्यवाद का आक्रामक स्वरूप बदल गया है, साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष को बंद करने

का आह्वान करते हैं और पददलित राष्ट्रों तथा शोषित जनता के मुक्ति संघर्ष का विरोध करते हैं।

युद्ध और शान्ति के प्रश्न के बारे में आधुनिक संशोधनवादियों ने एक बहुत ही विषाक्त "सिद्धान्त" पेश किया है। शान्ति केवल आक्रमण और युद्ध के विरुद्ध व्यापक समुदाय के संघर्ष से ही हासिल की जा सकती है। लेकिन संशोधनवादी साम्राज्यवादियों के "विवेकपूर्ण रवैये" पर अपनी आशाएं टिकाये हुए उनसे तो शान्ति की भीख मांगते हैं। लेकिन आम जनता के साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष का दमन करते हैं। वे युद्धांतक और पूंजीवादी शान्तिवादिता का प्रचार करते हुए साम्राज्यवाद से समभौता कर रहे हैं और युद्ध द्वारा ब्लैकमेल की साम्राज्यवादियों की नीति के समक्ष आत्मसमर्पण कर रहे हैं।

संशोधनवाद वह पूंजीवादी विचारधारा है जो मजदूर वर्ग आन्दोलन में घुस आयी है। अपने प्रतिक्रियावादी स्वरूप पर पर्दा डालने के लिए छलपूर्वक मार्क्स-वादी-लेनिनवादी सिद्धान्तों का प्रयोग करते हुए, क्रान्ति का पाखंड रचने वाले संशोधनवादी वास्तव में पूंजीवादी विचारधारा का प्रचार करते हैं और साम्राज्य-वादियों तथा प्रतिक्रियावादी वर्गों के हितों की सेवा करते हैं।

आधुनिक संशोधनवाद शान्ति, राष्ट्रीय स्वाधीनता और समाजवाद के लिए आम जनता के संघर्ष पर अत्यन्त हानिकारक असर डाल रहा है। जहां संशोधनवाद को सफलता मिलती है, जनता की वर्ग चेतना कुंद हो जाती है और वैचारिक दृष्टि से वह भ्रष्ट हो जाती है और फिर क्रान्तिकारी संघर्ष चलाने में असमर्थ हो जाती है।

अत: इस समय हम संशोधनवाद के विरुद्ध संघर्ष चलाये बगैर श्रमजीवी जनता को कामयाबी से वर्ग शिक्षा नहीं दे सकते या उसे क्रान्ति की विजय के लिए लामबंद नहीं कर सकते। हमें संशोधनवादियों के गैर-वर्गीय और प्रतिक्रियावादी स्वरूप को पूर्णतया बेनकाब करना चाहिए, ताकि तमाम श्रमजीवी स्वत: समाज-वाद और पूंजीवाद के बीच तथा मार्क्सवाद-लेनिनवाद और संशोधनवाद के बीच भेद कर सकें। इस प्रकार हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि हमारे तमाम पार्टी सदस्य और श्रमजीवी अवाम मार्क्सवाद-लेनिनवाद की क्रान्तिकारी पताका और साम्राज्यवाद के विरुद्ध तथा राष्ट्रीय मुक्ति और समाजवाद के लिए संघर्ष की पताका को फहराते हुए क्रान्तिकारी ध्येय की विजय के लिए दृढ़तापूर्वक संग्राम चलायें।

सैनिकों और श्रमजीवी लोगों को समाजवादी देशभक्ति के विचारों से लैस करना वर्ग शिक्षा का एक अन्य महत्वपूर्ण काम है।

हमें न केवल शत्रु से घृणा करना सीखना होगा, बल्कि अपने मित्रों से प्रेम

करना भी सीखना होगा। अपने वर्ग और जनता से प्रेम तथा अपनी पार्टी और देश से उत्कट प्रेम मजदूर वर्ग में सन्निहित महानतम विशेषताओं में से एक है।

हमें अपने देश से बढ़ कर कुछ भी प्रिय नहीं। हमारे देशवासियों के एक-एक रोम को इस बात का अनुभव है कि किसी राज्य-विहीन राष्ट्र की औपनिवेशिक दासता कितनी कष्टदायी होती है।

अपनी मातृभूमि ही तमाम जनता की सच्ची माता होती है। हम अपने देश से अलग होकर न तो रह सकते हैं और न सुखी हो सकते हैं। अपने देश की सुख-समृद्धि और उन्नति द्वारा ही हमारे लिए खुशहाली का मार्ग खोजना संभव हो सकता है। हमारी जनता के तमाम श्रेष्ठ बेटे और बेटियां सबसे पहले उत्कट देशभक्त थे। मुक्ति से पूर्व मुश्किलों और मुसीबतों की परवाह न करते हुए कोरियाई कम्यु-निस्टों ने जापानी साम्राज्यवादियों के विरुद्ध जो लड़ाई लड़ी थी, वह भी अपने देश के पुनरुद्धार के लिए ही थी।

वीर पुरुष ली सु बोक, जिसने अमरीकी साम्राज्यवादियों के सशस्त्र हमले के विरुद्ध हमारी जनता के मातृभूमि मुक्ति-युद्ध में अतुलनीय शौर्य प्रदर्शित किया था, कहते थे कि मुझे अपना संपूर्ण जीवन अपने देश के हित में समर्पित करना पड़ा। यह है भावना सच्चे देशभक्तों की। हमारे तमाम सैनिकों और श्रमजीवियों में यही देशभक्तिपूर्ण भावना होनी चाहिए। हमारे लिए, जिन्होंने अमरीकी साम्राज्यवादी हमलावरों को खदेड़ बाहर करना है और राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति को पूरा करना है, देशभक्ति और भी अधिक अनिवार्य है।

लेकिन, चूंकि हमारी जनता बिना स्वयं अपने राज्य के लम्बे समय तक औप-निवेशिक दासता में रही है, अतः उसमें से बहुत-से लोग अपने देश और राष्ट्र के प्रति गर्व का अनुभव नहीं करते और इस वजह से उनमें अपने देशवासियों और मातृभूमि के प्रति प्यार का अभाव है। इसलिए बहुत-से ऐसे लोग हैं जो जापान में होने पर जापानी बन जाते हैं, रूस में होने पर रूसी और अमरीका में होने पर अमरीकी बन जाते हैं।

यह सही है कि हमारी जनता में इतिहास से विरासत में मिली जी-हुजूरी काफी अंश में बनी हुई है और उसमें राष्ट्रीय स्वाभिमान का अभाव है। लेकिन हमारी सबसे बड़ी खामी यह है कि हम अभी तक श्रमजीवी लोगों को देशभक्ति की पूरी शिक्षा देने में असमर्थ रहे हैं। फलतः कुछ लोगों की ऐसी धारणा दीखती है कि मजदूर वर्ग के लिए देशभक्त होना कोई जरूरी नहीं है, और अन्य लोगों का ख्याल है कि समाजवादी देशभक्ति और सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद एकदूसरे से टकराते हैं।

समाजवादी देशभक्ति और सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद एक ही चीज के दो

अविच्छेद्य अंग हैं। कुछ लोग अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के लबादे में अपने देश से गद्दारी करते हैं, जोकि बहुत ही गलत बात है।

बुनियादीतौर पर देखा जाय तो सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद स्वतन्त्र राष्ट्रों के बीच, राज्यों के बीच अन्तर्राष्ट्रीयतावाद होता है, तथा राष्ट्रों तथा राज्यों से अलग अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की कोई भी परिकल्पना नहीं की जा सकती। यदि कोई यह कहे कि उसे न राज्य चाहिए, न राष्ट्र, बल्कि केवल अन्तर्राष्ट्रीयतावाद चाहिए तो यह सर्वथा अन्तर्राष्ट्रीयतावादी दृष्टि-कोण न होगा, और इसके विपरीत यह ऐसे ध्वस्त जनगण का दृष्टिकोण होगा, जो अपने देश और राष्ट्र को भुला चुके हैं और दूसरों पर आश्रित हो रहे हैं।

कहने की जरूरत नहीं कि जब भविष्य में साम्राज्यवाद को पूरी तरह उखाड़ फेंका जाएगा और विश्वव्यापी पैमाने पर समाजवाद और कम्युनिज्म विजयी हो जाएंगे और जब राष्ट्रों की सीमाएं समाप्त हो जाएंगी, तथा राज्यों का अस्तित्व मिट जाएगा, तो फिर जुदा बात होगी। तब देशभक्ति के प्रश्न के उठने का सवाल ही न रहेगा और अन्तर्राष्ट्रीयता से उसका सम्बन्ध कोई समस्या पेश न करेगा।

लेकिन जब तक सीमाएं कायम हैं और जब तक लोगों के अपने-अपने देश बने हैं तथा वे आज की तरह राष्ट्रीय आधार पर रह रहे हैं, तब तक कोई भी अपने देश और राष्ट्र को भूल नहीं सकेगा।

कोरियाई कम्युनिस्टों के लिए कोरियाई राष्ट्र और ३,००० री कोरियाई धरती से अलग क्रान्ति की बात करना निरर्थक होगा।

जो लोग कोरिया में जन्मे हैं, उनका कर्तव्य हो जाता है कि कोरिया में क्रान्ति की रचना करें और समाजवाद और कम्युनिज्म का निर्माण करें। कोरिया में क्रान्ति की रचना करना कोरियाई जनता का अन्तर्राष्ट्रीयतावादी कर्तव्य है। अतएव जब कोरियाई जनता सबसे पहले कोरियाई क्रान्ति को सन्तोषजनक ढंग से पूरा कर लेगी तभी वह वस्तुतः अपने अन्तर्राष्ट्रीयतावादी कर्तव्य को वफादारी से पूरा करेगी। हमारे पास जो कुछ भी है, उसे कोरियाई क्रान्ति के संपन्न किये जाने के अधीन होना चाहिए। इसके अलावा चूंकि हम अभी तक क्रान्ति के उस चरण में हैं, जिसमें हमें देश भर में राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति को सम्पन्न करना है, अतः हमारे लिए जरूरी हो जाता है कि हम अपनी जनता की राष्ट्रीय गौरव भावना की अभिवृद्धि करें।

श्रमजीवी जनता को देशभक्ति की शिक्षा देने के कार्य में हमें खासतौर पर इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह राष्ट्रीय स्वाधीनता के महान महत्व को

पूरी तरह समझ लें। पार्टी की मांग है कि तमाम क्षेत्रों में जुछे की स्थापना की जाए तथा राजनीतिक स्वाधीनता और आर्थिक आत्मनिर्भरता पर विशेष रूप से जोर दिया जाए।

मूलतः कम्युनिस्ट हर प्रकार की चाटुकारिता के उन्मूलन और संप्रभुता तथा स्वाधीनता की प्राप्ति को अपने संघर्ष का सर्वप्रथम कर्तव्य बनाते हैं। अतः वह कम्युनिस्ट नहीं है, जो राजनीतिक स्वतन्त्रता से इनकार करे और चाटुकारिता का उपदेश दे।

जिस व्यक्ति में राजनीतिक स्वाधीनता का अभाव होगा, वह उस हालत में संशोधनवाद पर अमल करेगा यदि दूसरे ऐसा करेंगे, कठमुल्लापन को स्वीकार कर लेगा यदि दूसरे उसकी गर्त में जा गिरेंगे, आत्मसमर्पण कर देगा यदि दूसरे ऐसा करेंगे। यदि वह हवा के रूख के साथ चलता रहता है, तो जिम्मेदारी से अपने देश की क्रान्ति का नेतृत्व करने वाला कम्युनिस्ट कैसे बन सकता है।

जो आदमी बिना राजनीतिक स्वाधीनता के दूसरों की रौ में बहता है, वह विवेकहीन है, ऐसा मूर्ख आदमी न अपने देश और जनता से प्रेम कर सकता है, न अपनी वास्तविक स्थिति के अनुरूप रचनात्मक ढंग से कुछ कर सकता है। इस प्रकार वह आदमी जिसमें संप्रभुता और स्वाधीनता की भावना का अभाव होता है, अपनी जनता की भलाई के लिए नहीं, बल्कि दूसरों का अनुग्रह प्राप्त करने के लिए कार्य करता है। अतः इस प्रकार का आदमी अन्ततोगत्वा उन महाशक्तिवादी अंध-राष्ट्रवादियों के हाथों में खेल सकता है जो दूसरे देशों को गुलाम बनाने का यत्न करते हैं, और वह इस हद तक भ्रष्ट हो सकता है कि अपनी जनता के हितों को बेच डालने वाला देशद्रोही बन जाए।

आर्थिक आत्मनिर्भरता के बगैर राजनीतिक स्वाधीनता आश्वस्त नहीं की जा सकती। कोई भी राज्य तभी पूर्णतया संप्रभु और स्वाधीन हो सकता है, जब वह राजनीतिक दृष्टि से स्वतन्त्र और आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर हो। हम कोरियाई कम्युनिस्टों के लिए सबसे बढ़ कर मूल महत्व की बात यह है कि हम अपने देश को एक ऐसा राज्य बना दें जिसे पूर्ण राजनीतिक स्वाधीनता और आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त हो। केवल राजनीतिक स्वाधीनता और आर्थिक आत्मनिर्भरता ही हमें स्वतः अपने देश की समस्याएं सुलझाने के योग्य बनाएगी।

यह एक बुनियादी सिद्धान्त है कि किसी भी देश की समस्याएं उसके अपने लोगों द्वारा ही सुलझायी जानी चाहिए। दूसरों पर निर्भरता से स्वतन्त्रता प्राप्त करने और दूसरों की कृपादृष्टि से अच्छा जीवन बिताने की धारणा बहुत ही मूर्खतापूर्ण और गलत होगी। कोरियाई क्रान्ति को स्वतः कोरियाई जनता को

अपने प्रयास से सम्पन्न करना होगा और कोरियाई प्रश्न को स्वतः कोरियाई जनता को ही सुलझाना होगा।

हमें दक्षिणी आधे भाग की जनता को दिखाना होगा कि उत्तरी आधे भाग में राजनीतिक स्वाधीनता और आर्थिक आत्मनिर्भरता दृढ़तापूर्वक स्थापित हो गयी है और उसे निरन्तर प्रेरणा देनी होगी कि वह बिना अमरीका या जोपान पर निर्भर रहे राजनीतिक स्वाधीनता और आर्थिक आत्मनिर्भरता के पथ का अनुसरण करे। दक्षिण कोरिया के कुछ लोग अब भी इस विचार के हैं कि देश का पुनरेकीकरण संयुक्त राष्ट्र द्वारा सम्पन्न किया जाना चाहिए। हम बुनियादीतौर पर इसके खिलाफ हैं। हम कोरियाई जन अपने बीच कोरियाई पुनरेकीकरण के प्रश्न को सुलझा लेने की बजाय संयुक्त राष्ट्र से क्यों मदद मांगें ? ऐसा करने का अर्थ यह है कि हमें अपनी शक्ति पर कोई भरोसा नहीं है। यह हमारे राष्ट्र का अपमान है। अभी ऐसे कई लोग हैं, जो विदेशी शक्तियों पर निर्भर रहने में तनिक भी लज्जा अनुभव नहीं करते क्योंकि भूतकाल से हमारे देश में जी-हुजूरी का प्रवल प्रभाव चला आ रहा है।

ली वंश के सामन्ती समाज में अन्तिम दिनों में हमारे देश की स्थिति विशेष रूप से भयावह थी। लोगों को अपने प्रयास से देश की रक्षा करने से कोई सरोकार न था; इसके विपरीत जब कभी कोई घटना घट जाती तो विभिन्न गुट केवल अपना-अपना उल्लू सीधा करने के लिए विदेशी ताकतों की सहायता प्राप्त करने का भरसक प्रयास करने लगते थे। इस प्रकार कुछ लोग रूस का समर्थन हासिल करते, कुछ जापान का और अन्य चीन का—अर्थात प्रत्येक गुट किसी-न-किसी विदेशी शक्ति का समर्थन प्राप्त करता। यह लालसा १५ अगस्त की मुक्ति के बाद भी प्रकट होती रही है। गुटबाजों ने १९५६ में यही पुराना खेल खेला। तमाम पार्टी-विरोधी गुटबाज हमारी पार्टी के विरुद्ध खुल कर सामने आ गये थे और प्रत्येक ने किसी-न-किसी बड़ी शक्ति का समर्थन प्राप्त कर लिया था।

आज विदेशी शक्तियों पर निर्भरता की बात, जो कुछ दक्षिण कोरियाई लोगों के दिमागों में घर किये हुए है, हमारे देश के पुनरेकीकरण के प्रश्न के हल में एक बहुत बड़ी रुकावट बनी हुई है। इसलिए हमें पूरे उत्साह के साथ दक्षिण कोरियाई लोगों और युवकों में राजनीतिक स्वाधीनता का विचार कूट-कूट कर भरना होगा।

पिछले कुछ समय से दक्षिण कोरियाई युवकों ने इस बात पर जोर देना शुरू किया है कि राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता जरूरी है। यह एक बहुत अच्छा लक्षण है। निश्चय ही अमरीकी साम्राज्यवादी औपनिवेशिक शासन में आर्थिक आत्मनिर्भरता की बात सोची भी नहीं जा सकती

और यदि दक्षिण कोरियाई युवकों में ऐसे विचार बराबर पनपते रहे तो हो सकता है कि अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके पिट्ठुओं के खिलाफ एक सशक्त संघर्ष फूट पड़े। खासतौर पर यदि हम उत्तर कोरियाई लोग संयुक्त राष्ट्रीय निगरानी या विदेशी निगरानी का विरोध करें और स्वत: कोरियाई जनता द्वारा पुनरेकीकरण की प्रबल मांग जारी रखें तो दक्षिण कोरियाई युवक निश्चित रूप से इसके जवाब में उठ खड़े होंगे।

हम इस समय उत्तरी आधे भाग में समाजवाद का निर्माण कर रहे हैं, लेकिन हमें याद रखना होगा कि हमारा देश अब भी बंटा हुआ है। यदि हम शिक्षा कार्य का उसी ढंग से संचालन करें, जिस प्रकार कि वे देश करते हैं, जहां क्रान्ति राष्ट्र-व्यापी स्तर पर विजयी हुई है, तो वह हमारी वास्तविकता के अनुरूप न होगा। हम कैसे राष्ट्रीय संप्रभुता और स्वाधीनता के प्रश्न को भुला सकते हैं, जबकि हमने अभी तक दो करोड़ से अधिक दक्षिण कोरियाई लोगों को मुक्त नहीं कराया है? यदि हमें अपने को मात्र उत्तरी आधे भाग में समाजवाद का निर्माण करने तक सीमित कर लेना हो तो हम निकम्मे बैठ कर समाजवाद की प्रशंसा के गीत गा सकते हैं। लेकिन हमें ऐसा कदापि नहीं करना चाहिए, क्योंकि हम क्रान्ति संपन्न कर रहे हैं। कुछ भी हो, हमें राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति को पूरी तरह सफल करना होगा और देश में एक छोर से दूसरे छोर तक समाजवादी क्रान्ति को सम्पन्न करना होगा। इसके लिए हमें देशभक्ति की शिक्षा को दृढ़ करना चाहिए और राष्ट्रीय मुक्ति तथा देश की संप्रभुता और स्वतन्त्रता पर अधिक बल देना चाहिये। अन्यथा हम कोरियाई कम्युनिस्टों और कोरियाई जनता के जिम्मे लगाये गये क्रान्तिकारी कर्तव्यों को पूरा न कर सकेंगे। यही वजह है कि क्यों इस समय हमारे देश में वर्ग शिक्षा में देशभक्ति की भावना की शिक्षा को विशिष्ट महत्वपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिये।

सैनिकों और श्रमजीवी लोगों को क्रान्तिकारी भावना में शिक्षित करने में एक अन्य महत्बपूर्ण बात यह है कि क्रान्ति की विजय में उनकी आस्था को दृढ़ किया जाए और उनमें भविष्य के लिए प्यार की भावना पैदा की जाए।

हमारे देश में और भी ज्यादा जरूरी है क्रान्ति की विजय में आस्था का होना। जब क्रान्तिकारी संघर्ष एक कठिन और लम्बा रूप धारण कर ले तो वे लोग जिन की क्राति में आस्था अस्थिर हो, श्रान्त और ढुलमुल हो सकते हैं। अत: यह बात तमाम जनता के दिमाग में बैठा दी जानी चाहिए कि क्रान्ति की निश्चय ही विजय होगी।

यदि हमारा वर्तमान क्रान्तिकारी ध्येय विजयी नहीं होगा तो लोग निराश और हतोत्साह हो जाएंगे और भले ही यह ध्येय कितना भी न्यायोचित और अच्छा

क्यों न हो, शायद ही कुछ लोग इसके लिए पूरी निष्ठा से काम करते रहें। लेकिन यदि उन्हें विश्वास हो कि क्रान्ति निश्चय ही जीतेगी तो वे संघर्ष में अपनी सारी ताकत लगा देगें, चाहे अन्तिम विजय उनके जीवनकाल में प्राप्त न भी हो सके। यह क्रान्ति की विजय के बारे में सच्चे कम्युनिस्टों की दृढ़ धारणा है, जिसकी वजह से वे किसी भी शत्रु से, चाहे वह कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, बिना डरे और साहसपूर्वक तमाम कठिनाइयों और संकटों पर काबू पाते हुए क्रान्ति की विजय के लिए बहादुरी से लड़ने में सक्षम होते हैं।

साम्राज्यवाद का पतन और समाजवाद की विजय इतिहास के विकास का एक अकाट्य नियम है। ऐतिहासिक तथ्य सिद्ध करते हैं कि साम्राज्यवाद का नशा अनिवार्य है, यद्यपि थह शक्तिशाली प्रतीत होता है। जापानी साम्राज्यवाद का नाश हुआ, जर्मन और इटालियन साम्राज्यवाद भी कुचल दिये गये। अमरीकी लुटेरों का भी नाश होगा। इस बात के पहले ही साफ-साफ संकेत मिलने लगे हैं कि अमरीकी साम्राज्यवाद का ह्लास हो रहा है। हमें अपने श्रमजीवी लोगों को पूरी तरह समझाना होगा कि साम्राज्यवाद का विनाश हो जायेगा और समाजवाद की विजय निश्चित है। इस तरह हमें हर किसी को इस बात के लिए प्रोत्साहित करना होगा कि वह क्रान्ति की विजय में दृढ़ विश्वास के साथ उसे भी संपन्न करने के लिए अन्त तक लड़े।

इसके अलावा युवकों को न केवल समाजवाद से, जोकि पहले ही स्थापित हो चुका है, बल्कि कम्युनिज्म से भी, जोकि भविष्य में निर्मित किया जाना है, प्यार करना सिखाना चाहिए।

हमें वर्तमान स्थिति पर तुष्ट होकर न बैठे रहना चाहिये। यदि हम चैन से बैठ जाएंगे तो हम न विकास कर सकेंगे न प्रगति कर सकेंगे। हमें हमेशा ऊंचे से ऊंचा लक्ष्य निर्धारित करते जाना होगा और उसकी प्राप्ति के लिए संघर्ष करते जाना होगा। अनवरत संघर्ष और सतत प्रगति से ही हम अपनी क्रान्ति को सम्पन्न करने तथा कम्युनिज्म का स्वर्ग निर्मित करने के योग्य बन सकेंगे।

वे लोग जो भविष्य से प्यार करते हैं, जो अपने सामने हमेशा संघर्ष के ऊंचे लक्ष्य रखते हैं और उनकी प्राप्ति के लिए प्रयास करते हैं, सदैव आनन्दमय और सक्रिय जीवन बिताते हुए अधिक मितव्ययिता और अधिक जुझारूपन से रहने में समर्थ होते हैं।

सैनिकों और श्रमजीवी जनता को श्रमजीवी जनता की क्रान्तिकारी भावना से लैस करने का कार्य पार्टी की नीतियों और क्रान्तिकारी परम्पराओं में शिक्षा के साथ पूर्णतया समन्वित करके किया जाना चाहिये।

स्वयं अपने बुद्धिबल से अपने देश की क्रान्ति को सम्पन्न करने के प्रयोजन से

हमारे लिए यह जरूरी है कि हम अपने आपको अपनी पार्टी की नीतियों और क्रान्तिकारी परम्पराओं से लैस करें। हमारी पार्टी की नीतियां मार्क्सवाद-लेनिनवाद को कोरिया की विशिष्ट स्थितियों में रचनात्मक ढंग से लागू करती हैं और वे हमारी कार्यगत मार्गदर्शक हैं। मार्क्सवाद-लेनिनवाद के झंडे तले कोरियाई क्रान्ति के लिए विजय पथ प्रशस्त करने से सम्बद्ध कोरियाई कम्युनिस्टों के लम्बे वीरोचित संघर्ष के दौरान प्राप्त उपलब्धियां, अमूल्य अनुभव और उनकी अदम्य जुझारू भावना ही हमारी क्रान्तिकारी परम्पराएं हैं। यदि हम अपनी पार्टी की नीतियों और क्रान्तिकारी परम्पराओं से पूरी तरह लैस होंगे तो अपनी क्रांतिकारी स्थिति पर डटे रहने और बिना जुछे की भावना त्यागे संकटों और अग्निपरीक्षाओं में निर्बाध और दृढ़ क्रान्तिकारी संघर्ष चलते जाने में समर्थ होंगे। जो लोग पार्टी नीतियों और क्रान्तिकारी परम्पराओं से लैस होते हैं उन्हें न तो संशोधनबाद भ्रष्ट कर सकता है, न कठमुल्लापन और न ही चाटुकारिता की वृत्ति। सच्चे कोरियाई क्रान्तिकारी ऐसे लोग ही कहे जा सकते हैं जिनमें पार्टी की विचारधारात्मक प्रणाली पूर्णता से प्रतिष्ठापित हो। हमें तमाम सैनिकों और श्रमजीवी लोगों को इसी प्रकार के क्रान्तिकारी बनने का प्रशिक्षण देना चाहिए।

इसका आशय यह है कि हमारे सैनिकों और श्रमजीवी लोगों को सबसे पहले क्रान्ति के उद्देश्यों और कर्तव्यों की पूरी जानकारी प्राप्त करनी चाहिए और साथ ही उन्हें क्रान्तिकारी संघर्ष की पद्धतियों तथा संघर्ष की भावी संभावनाओं का पता होना चाहिए। हमें सैनिकों और श्रमजीवी लोगों को यह समझाना होगा कि सात-वर्षीय योजना के मूल कर्तव्य क्या हैं और जब वह सम्पन्न होगी तो हमारा देश धनधान्य से कितना भरपूर और सुदृढ़ होगा, हमारे लोग कितने खुशहाल होंगे और दक्षिण कोरियाई जनता की दुर्दशा दूर करने में उसका कितना अधिक महत्व होगा। उन्हें इस बात की भी पूर्णतः अनुभूति करायी जानी चाहिए कि हम कैसे समाजवाद का निर्माण कर रहे हैं। इन तमाम मामलों का हमारी पार्टी की चौथी कांग्रेस में पेश रिपोर्ट में साफ-साफ बखान किया गया गया है। तमाम सैनिकों और श्रमजीवी लोगों को पार्टी दस्तावेजों का गहराई से अध्ययन करने और क्रान्ति के प्रत्येक दौर में निर्धारित पार्टी की नीतियों और लाइनों तथा पार्टी केन्द्रीय समिति के मंतव्यों की पूरी जानकारी प्राप्त करने को उत्साहित किया जाना चाहिए। अतः हमें इस बात का प्रयास करना चाहिए कि तमाम लोग उसी तरह सोचें और काम करें जिस तरह कि पार्टी केन्द्रीय समिति सोचती और करती है और हर हालत में पार्टी की नीतियों को पूरा करने के लिए संघर्ष करें।

हमें भविष्य में भी कठिन संघर्ष की अपेक्षा करनी चाहिए। हमें अपने क्रान्तिकारी पूर्ववर्तियों के वीरोचित संघर्ष की मिसालों का अनुसरण करना चाहिए और

इस प्रकार उनकी जुझारू भावना को आत्मसात तथा विकसित करना चाहिए। हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति उसी क्रान्तिकारी संकल्प और अदम्य जुझारू भावना से हमारे देश के पुनरेकीकरण और स्वाधीनता के लिए और कोरियाई क्रान्ति की अन्तिम विजय के लिए संघर्षरत हो जोकि जापान-विरोधी छापामारों ने पाएकदु-सान पर्वत के घने जंगलों में प्रदर्शित की थी।

वर्ग शिक्षा के साथ-साथ कम्युनिस्ट नैतिक शिक्षा को और मजबूत बनाना जरूरी है। अब तक हमारी पार्टी ने कम्युनिस्ट नैतिक शिक्षा की ओर काफी ध्यान दिया है और ठोस सफलताएं प्राप्त की हैं। कार्य और जीवन की कम्युनिस्ट परिपाटी ने श्रमजीवी जनता में जड़ पकड़ना शुरू कर दिया है और ऐसी कई मिसालें हैं कि लोग अपने साथियों और सामूहिक जीवन के लिए निष्ठापूर्वक लड़ते हैं। मजदूरों और किसानों तथा शिक्षकों और डाक्टरों सरीखे बुद्धिजीवियों द्वारा, जिनकी चेतना का स्तर अपेक्षाकृत ऊंचा है, कम्युनिस्ट कृत्य किये जाने के कई सुन्दर और हृदयग्राही वृत्तान्त मिल रहे हैं।

लेकिन हम अब तक प्राप्त सफलताओं पर चैन से बैठे नहीं रह सकते हैं। कम्युनिस्ट नैतिक शिक्षा के कार्य में हममें अभी कई खामियां हैं।

कई लोग अब भी सामूहिक जीवन को प्यार नहीं करते, श्रम से प्यार नहीं करते और राज्य की सम्पत्ति, संयुक्त सम्पत्ति को प्रिय नहीं मानते तथा उसकी रक्षा नहीं करते।

यदि लोगों को नैतिक शिक्षा दिये बिना छोड़ दिया जाता है तो हमारे समाज में भी फिजूल के अहंवादी उत्पन्न हो सकते हैं। यदि लोग स्वार्थी हो जाएं तो पूंजीवादी समाज की तरह वे भी अपने माता-पिता, भाइयों और बहनों, सम्बन्धियों, मित्रों और साथियों की परवाह न कर, केवल अपने लिए प्रचुरता के जीवन की लालसा से मदान्ध हो सकते हैं। इस ढंग के जीवन-यापन का लाभ क्या है ? चूंकि हम एक कम्युनिस्ट समाज की रचना करना चाहते हैं और तमाम लोगों के जीवन को समान रूप से अच्छा बनाना चाहते हैं, अतः हम उन्हें इस प्रकार के अहंवादी बनाने की इजाजत नहीं दे सकते।

केवल इस वजह से कि एक नयी समाजवादी प्रणाली स्थापित कर दी गयी है, बोसीदा विचारों के अवशेष और जीवन की पुरानी आदतें जो हजारों सालों से आयी हैं, थोड़े से समय में स्वतः लुप्त नहीं हो सकती हैं। श्रमजीवी जनता में जीर्ण नैतिक धारणाओं और जीवन के पुराने अभ्यासों के पूर्ण उन्मूलन के लिए एक लम्बा और सतत संघर्ष करना होगा। और नयी कम्युनिस्ट नैतिकता के निर्माण के लिए ठोस रूप से शिक्षा देनी होगी।

लेकिन हम योजनाबद्ध ढंग से श्रमजीवी लोगों में कम्युनिस्ट नैतिक शिक्षा का

कामयाबी से संचालन करने में असमर्थ रहे हैं। कारगर नैतिक शिक्षा के लिए सामाजिक और गृह शिक्षा का ठीक ढंग से संचालन किया जाना चाहिए और इसके साथ ही उन्हें स्कूली शिक्षा के साथ समुचित ढंग से समाविष्ट किया जाना चाहिए।

भविष्य में हमें कम्युनिस्ट नैतिक शिक्षा पर पाठ्य पुस्तकें तैयार करनी चाहिए, पुस्तिकाएं प्रकाशित करनी चाहिए और पत्रिकाओं में लेख लिखने चाहिए और नैतिक शिक्षा के विषय पर कोई फिल्मों और नाटकों की रचना करनी चाहिए।

जन-सेना में भी कम्युनिस्ट नैतिकता की शिक्षा में तेजी लायी जानी चाहिए।

सबसे बढ़कर महत्वपूर्ण यह है कि सेना में अफसरों और जवानों के बीच एकता की क्रान्तिकारी परम्पराओं को और अधिक विकसित किया जाए। अतीत में, जापान-विरोधी छापामारों के बीच कमांडिग अफसर और सैनिक एकदूसरे के साथ सोने के कमरे, आहार तथा सुख और दुख में साझीदार होते थे। उन दिनों कमाडरों का कोई पारिवारिक जीवन नहीं होता था और वे हमेशा जवानों के साथ मिल कर रहते हुए उनका पूरा ध्यान रखते थे।

लेकिन आज अफसरों का एक पारिवारिक जीवन है और वे सैनिकों के साथ सोने के कमरे और आहार के साझीदार नहीं बनते। यह बेशक सही और जरूरी चीज है। अफसरों के, जो अपने जीवनपर्यन्त सेना की सेवा करेंगे और सैनिकों के बीच जो तीन या चार साल की सैनिक सेवा के बाद समाज में लौट जाएंगे, अन्तर होना चाहिए।

फिर भी हमें इस बात का पूरा अहसास होना चाहिए कि चूंकि अफसर सैनिकों के साथ अपने सोने के क्वार्टर और खाने में साझीदार नहीं होते अतः वे अपने जवानों के जीवन से दूर हो सकते हैं, जिससे जवानों और अफसरों के बीच एकता को आश्वस्त करना कठिन हो सकता है। वास्तब में यदि अफसर सैनिकों के बीच नहीं जाते और निरंतर उनके साथ नहीं रहते, तो वे सैनिकों की मनोवृत्ति को अच्छी तरह से समझ न सकेंगे और उनके बीच दूरी उत्पन्न हो सकती है।

यदि हम अफसरों को क्रान्तिकारी परम्पराओं के साथ-साथ पूर्ण कम्युनिस्ट नैतिक शिक्षा देने का प्रबन्ध नहीं करते तो वे अच्छी तरह गरमाये मकान में, जहां उनकी पत्नियां उनके लिए खाना परोसती हों, आरामदेह जीवन बिताते हुए अपने जवानों के जीवन से कोई भी सरोकार न रखेंगे और वे इससे भी ज्यादा आरामदेह जीवन की लालसा करेंगे। कहावत भी है, "ज्यादा को और ज्यादा चाहिए"। और अन्ततः वे पैदल चलने से घृणा करने लगेंगे और कार चाहेंगे। फिर कार मिल गयी तो वे चाहेंगे कि उन्हें उससे बड़ी कार मिले जिसमें वे अपनी टांगें अच्छी तरह पसार सकें। उनके द्वारा क्रान्ति के निर्माण का प्रश्न ही न उठेगा।

यदि आप क्रान्ति का निर्माण करना चाहते हैं तो आपको केवल खुद ही अच्छा जीवन बिताने के अहंवादी विचारों को तजना होगा। क्रान्तिकारियों को अपने व्यक्तिगत जीवन की कुर्बानी देने को हमेशा तैयार रहना चाहिए।

अफसरों को सैनिकों के साथ सुख-दुःख को बांटने की भावना से ही हमेशा अपना दैनिक जीवन संगठित करना चाहिए और इसके लिए उन्हें सतत प्रयास करते रहना चाहिए जिससे वे अपने जवानों से विच्छिन्न न हों। जब आप कोई विशेष स्वादिष्ट व्यंजन ग्रहण कर रहे हों तो हमेशा अपने जवानों के बारे में सोचिए। जब कभी वर्षा हो या आपके सैनिक बाहर डेरे डाले हों और या कठिन मार्च कर रहे हों, तो आपको घर जा कर सोना न चाहिए, बल्कि उनके साथ रहना चाहिए।

अफसरों को इस प्रकार के घृणित तौर-तरीके अपनाने की कड़ाई से मनाही की जानी चाहिए जैसे कि वे अपने पारिवारिक जीवन को अधिक आरामदेह बनाने के लिए अपने जवानों को जलाने की लकड़ी काटने या पानी लाने को कहें। यह तो विशेषाधिकार संपन्न जाति में अधिकारियों के व्यवहार से कुछ कम नहीं है। साम्राज्यवादी सेना में, जहां अधिकारियों को ऐसे विशेषाधिकार प्राप्त होते हैं, अधिकारियों और जवानों के बीच बहुत ही गम्भीर अंतर्विरोध पाये जाते हैं। हमें अपनी क्रान्तिकारी सेना में ऐसी बुरी प्रवृतियों को लेशमात्र भी प्रकट न होने देने के लिए तमाम सावधानियां बरतनी चाहिए।

क्रान्तिकारी सेना में अधिकारी और जवान, सभी साथी हैं, जो क्रान्ति के निमित्त जीवन-मरण, सुख-दुःख में बराबर के भागीदार हैं। वरिष्ठ लोगों को मात-हतों से स्नेह करना चाहिए और उनकी मदद करनी चाहिए तथा मातहतों को वरिष्ठों का सम्मान करना चाहिए और उनकी रक्षा करनी चाहिए, और इस प्रकार उनके बीच दृढ़ एकता आश्वस्त की जानी चाहिए। अधिकारियों को हमेशा अपने जवानों से भाइयों जैसा स्नेह रखना चाहिए और उनके दैनिक जीवन में हमेशा दिलचस्पी लेनी चाहिए। डिवीजनल कमांडर को रेजीमेंटल कमांडर की, रेजीमेंटल कमांडर को बटालियन कमांडर की, बटालियन कमांडर को कम्पनी कमांडर की, कम्पनी कमांडर को प्लाटून कमांडर की मदद करनी चाहिए। अधिकारियों और जवानों के बीच इस तरीके से एकता बनाये रखनी चाहिए। हमारी पार्टी की सेना, एक वर्ग-सेना और एक क्रान्तिकारी सेना बने, इसके लिए अधिकारियों और जवानों के बीच एकता आश्वस्त करना अति महत्वपूर्ण है। केवल इस प्रकार हमारी सेना एकता द्वारा हमेशा दिक्कतों को पार कर सकेगी और चाहे हालात कैसे भी हों, विजय प्राप्त कर सकेगी।

सैनिकों को शस्त्रास्त्रों की अच्छी तरह देखभाल करने तथा गोली-सिक्का कम से कम खर्चने की भावना में भी शिक्षित किया जाना चाहिए। बगैर शस्त्रास्त्रों

और गोली-सिक्का के आप शत्रु से लड़ नहीं सकते। हमें यह जानना चाहिए कि जापान-विरोधी छापामार अपने शस्त्रास्त्रों का कितना ख्याल रखते थे।

जब सैनिक शस्त्रास्त्रों की उचित देखभाल और गोली-सिक्का के इस्तेमाल में किफायत की भावना में शिक्षित हो जाएंगे तो वे इस योग्य होंगे कि जब भविष्य में उन्हें फैक्टरियों या सहकारी फार्मों में काम सौंपे जाएंगे तो वे राज्य सहकारी फार्म सम्पति का समुचित प्रबन्ध कर सकेंगे और समाजवादी निर्माण में देशभक्तिपूर्ण निष्ठा प्रदर्शित कर सकेंगे।

मैं इस बार अग्रिम पंक्तियों में यह देखने के लिए गया कि वे कैसे काम कर रही हैं और मैंने पाया कि सैनिकों की जीवन की परिस्थितियां बुरी नहीं हैं। अब हमें करना यह है कि उनकी वर्ग शिक्षा और कम्युनिस्ट नैतिक शिक्षा को दृढ़ कर उन सबको क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट भावना से पूर्णत: लैस कर दें। हमारी सेना की जुझारू क्षमता के दृढ़ीकरण के लिए आज सर्वाधिक महत्व का काम यह है कि सैनिकों में इस प्रकार का राजनीतिक और वैचारिक कार्य पूरी तरह चलाया जाए।

३ : वर्ग शिक्षा में साहित्य और कला की भूमिका को बढ़ाने के बारे में

मैं कुछ विचार इस बारे में पेश करना चाहता हूं कि वर्ग शिक्षा में विभिन्न शैक्षणिक साधनों, विशेषत: साहित्यिक और कला-कृतियों का कैसे बेहतर उपयोग किया जाए।

हमारे पास समाचारपत्र, पत्रिकाएं, उपन्यास नाटक, फिल्में, आदि शिक्षा के बहुत-से माध्यम हैं। फिर भी ये तमाम शैक्षणिक साधन इस समय अपनी पूरी भूमिका निभा पाने में असमर्थ हैं।

श्रमजीवी जनता के शिक्षण के लिए हमारे पास अच्छी सामग्री का एक खजाना पड़ा है। मिसाल के तौर पर, उत्तर और दक्षिण की सर्वथा भिन्न वास्तविकताओं पर प्रकाश डालते हुए यदि उनकी उचित तुलना की जाए, तो श्रमजीवी जनता समाजवादी प्रणाली के लाभों को गहराई से समझने में समर्थ होगी। लेकिन हम इस काम पर उचित रूप से ध्यान नहीं दे रहे हैं।

इसके अलावा हमने कई शानदार उपलब्धियां हासिल की हैं। प्रशासकीय चीजें इतनी ज्यादा हैं कि उन्हें गिनाया नहीं जा सकता, जैसे समाजवादी निर्माण में हमारी जनता द्वारा हासिल की गयी सफलताएं, उनके द्वारा प्रदर्शित अनुपम वीरोचित शौर्य, श्रमजीवी जनता के बीच सर्जित हो रही बेशुमार कम्युनिस्ट

कहानियां आदि। परन्तु हम उन्हें उचित रूप से प्रचारित करने में असमर्थ रह रहे हैं।

यही वजह है कि जो कोई भी हमारे देश में आता है, भले ही वह कोई विदेशी हो या दक्षिण कोरिया का कोई युवा व्यक्ति हो, वह पाता है कि हम अपने प्रचार में अपनी वास्तविक उपलब्धियों को घटा कर आंक रहे हैं। यह सही है कि हमारा प्रचार उचित स्तर से नीचे है।

जैसा कि मैंने बार-बार कहा है, लेखन को रहस्यपूर्ण बनाना गलत है। साहित्य और कला में कुछ भी रहस्यपूर्ण नहीं है। जो कोई मिडिल स्कूल का स्नातक हो चुका है, वह जो भी महसूस करता और सोचता है, उसे लिख सकता है।

शहरों की बात छोड़िए, गांवों में भी अनेक और सेना में उससे भी अधिक संख्या में, मिडिल स्कूल स्नातक मिल सकते हैं। हमेशा ही बहुत से लोग ऐसे होते हैं, जो लिख सकते हैं। अत: यही उचित रहेगा कि उन सबको अपने अनुभवों और अनुभूतियों के बारे में लिखने को प्रेरित किया जाए। फिर आप उनके लेखों को इकट्ठा कर सकते हैं और उच्चकोटि के योग्यता प्राप्त लेखकों की मदद से उनमें से अच्छी-अच्छी कहानियां छांट सकते हैं और उन्हें संवार-निखार सकते हैं। बस, इस बारे में मुझे केवल इतना ही कहना है।

पटकथा और नाटक लेखन में भी यही विधि अपनायी जा सकती है।

इस समय हमारे मेहनतकशों का सांस्कृतिक स्तर सामान्यत: कोई निम्न स्तर का नहीं है। हमारे पास बहुत से पेशेवर लेखक और कवि हैं। यदि हम अपनी तमाम शक्तियों को गोलबन्द करें तो कोई भी कार्य करना असंभव न रहेगा।

जब हम जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष कर रहे थे तो हमारे पास न लेखक थे न कवि। लेकिन हमने नाटक खेले, गीत रचे तथा पुस्तिकाएं और पत्रिकाएं निकाली थीं।

हम मिल-बैठते और नाटक लिखने या गीत रचने के बारे में आपस में सलाह मशविरा करते। और इस पर भी जनता हमारे नाटकों की दिल खोल कर प्रशंसा करती और उनसे प्रभावित हो कर बहुत से युवक छापामारों में शामिल होने के लिए एकदूसरे से जलते। यह अनुभव स्पष्ट करता है कि हमारे नाटक दर्शकों का मन मोह लेते थे।

प्राथमिक स्कूल स्नातकों या मिडिल स्कूल स्नातकों द्वारा बड़ी अच्छी पत्रिकाएं-पुस्तिकाएं आदि भी निकाली जाती थीं।

नि:सन्देह इन रचनाओं के निखार में कमी का रहना अनिवार्य था। फिर भी वे जनता को प्रभावशाली ढंग से शिक्षित करने को काफी थीं।

साहित्य और कला में कोई असाधारण बात नहीं है। जरूरी चीज है सत्य को अभिव्यक्त करना। अतः जब तक उन्हें जनता भलीभांति समझती है, उनमें थोड़ा बहुत भद्दापन होने से कुछ बिगड़ता नहीं है।

जहां तक पत्रिकाओं का प्रश्न है, मेरे विचार में छोलिमा की रूप रेखा ठीक रहेगी। इस प्रकार की पत्रिकाओं की संख्या बढ़ायी जाए और प्रत्येक गांव, फैक्टरी तथा स्कूल में बहुत-से लोगों को विभिन्न चीजों के बारे में लिखने और पत्रिका को भेजने के लिए प्रेरित किया जाए।

बेशक शुरू-शुरू में हो सकता है कि उनका काम अच्छा न हो। लेकिन उचित यही रहेगा कि भले ही उनके लेख घटिया ढंग से लिखे हुए हों, उन्हें संवार-निखार कर छाप दिया जाए। इस प्रोत्साहन से उन्हें अगली बार बेहतर लेख लिखने की प्रेरणा मिलेगी। बार-बार ऐसा करने से उनके लेख की गुणात्मक विशेषता प्रखर हो जाएगी।

इस प्रकार हमें मजदूरों और किसानों, कार्यटोली नेताओं और प्रबन्ध कर्मचारियों को, तथा उनके साथ-ही-साथ काउंटी पार्टी समितियों और काउंटी जन समितियों के अध्यक्षों को लिखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

दृश्यलेखों और नाटकों को व्यापक पैमाने पर रचना होगा। जब बहुत से लोग रचनात्मक कार्य में शामिल होंगे तो विविध प्रकार की सामग्री उभर कर सामने आ सकेगी और इससे इस काम को व्यापक पैमाने पर प्रोत्साहन मिलेगा।

इस स्थिति से अच्छी सामग्री प्रचुरता से हासिल की जा सकेगी। यदि उनमें अति उल्लेखनीय चीजें मिलें तो उनको संवारने-निखारने के लिए पत्रकार या लेखक रचना लिखने वालों के पास जाकर उनकी सहायता कर सकते हैं।

हम नाटक "एक लाल आन्दोलनकर्ता" को एक अच्छी रचना क्यों समझते हैं? इसलिए कि यह हमारे गांवों में हो रही उत्साहवर्धक घटनाओं का एक बहुत ही अच्छा चित्रण पेश कर वास्तविकता को अभिव्यक्त करता है। ली सिन जा सरीखे लोग रिह्योन-री में ही नहीं मिलते हैं, बल्कि अन्य कई स्थानों पर भी देखे जा सकते है। यदि बहुत-से लोग अपने आसपास हो रही ऐसी शानदार घटनाओं के बारे में लिखें तथा लेखक और कलाकार इस आधार पर अपनी रचनाएं रचें, तो वे ऐसी तमाम उत्कृष्ट रचनाएं तैयार कर सकते हैं जिनकी कि जरूरत है। हमारी साहित्य और कला कृतियां हमेशा ऐसे सजीव स्रोतों पर आधारित होनी चाहिए।

हमें लेखन में रुचि रखने वाले लोगों से लिखवा कर बहुत-सी अच्छी-अच्छी कहानियां खोजनी होंगी और मेहनतकश जनता को शिक्षित करने के लिए उन्हें समाचारपत्रों में छापना होगा और उन्हें साहित्यिक आभा प्रदान करनी होगी।

इसके बाद मैं आपको बताना चाहूंगा कि कैसे उपन्यासों, फिल्मों और नाटकों में क्रान्तिकारी परम्पराओं पर आधारित विषयों को समाविष्ट किया जाना चाहिए।

हमारे देश की वर्तमान स्थिति के संदर्भ में यह स्वाभाविक ही है कि साहित्य और कला हमारी क्रान्तिकारी परम्पराओं और युद्ध अनुभवों से बहुत से विषयों को ग्रहण करें। लेकिन इन विषयों को ऐसे ढंग से निरूपित किया जाना चाहिए जिससे वे आज के हमारे युवा लोगों की भावनाओं के अनुकूल हों।

इस समय हमारे युवा लोग क्रान्तिकारी परम्पराओं या युद्ध पर आधारित फिल्मों को बहुत ही कठोर और उबाने वाली पाते हैं। इसका अर्थ यह है कि इन फिल्मों में आज के हमारे जीवन का उचित रूप से समावेश नहीं किया गया है।

इसीलिए मैं कहता हूं कि हमारे साथी नहीं जानते कि कैसे कारगर ढंग से दवा दी जानी चाहिए। लोग कड़वी दवा लेना नहीं चाहते, भले ही वह उनके लिए कितनी भी अच्छी क्यों न हो। कड़वी दवा देने से पहले उसको मधुर बना लेना चाहिए। लेकिन असल बात यह है कि आप नहीं जानते कि उसे मधुर कैसे बनाया जाना चाहिए।

आप जब कोई युद्ध फिल्म बनायें तो आपको चाहिए कि आप उसमें शुरू से आखिर तक केवल लड़ाइयों के दृश्य न दिखायें, बल्कि लड़ाई के थोड़े से दृश्य जोड़ कर यथासंभव आज के जीवन को चित्रित करें और साथ ही युवा लोगों की पसन्द के अनुरूप अपनी रचनाओं में भावात्मकता को प्रचुरता से समाविष्ट करें।

मान लीजिए, आप चोटी संख्या १२११ की लड़ाई पर आधारित एक फिल्म बनाना चाहते है। आप उसे शुरू इस तरह कर सकते हैं कि एक सैनिक चोटी संख्या १२११ पर जी-जान से लड़ने वाले एक वीर नायक को स्मरण करता है और फिर आप नायक के पिछले जीवन के साथ-साथ उसके वर्तमान जीवन को उचित ढंग से जोड़ कर पेश कर सकते हैं। इस तरह आप एक दिलचस्प फिल्म बना सकते हैं। आप चाहें तो नायक का बचपन भी दिखा सकते हैं और यह भी प्रदर्शित कर सकते हैं कि वह कैसे स्कूल में पढ़ता था, कैसे अपने दोस्तों से स्नेह करता था और किस प्रकार की लड़की से उसे प्यार हुआ। इसके बाद आप यह दिखा सकते हैं कि सेना में शामिल होने के बाद उसने चोटी संख्या १२११ पर शत्रु से कितनी बहादुरी से लोहा लिया और उस समय स्वयं वह सैनिक क्या कर रहा था और उसने नायक के संघर्ष को किस दृष्टि से देखा। आप यह भी चित्रित कर सकते हैं कि वह इस समय समाजवाद के निर्माण में कितनी सक्रियता से भाग ले रहा है, इस कार्य में उसकी गति क्या है और उसके बहादुर दोस्त तथा उसके माता-पिता कैसा व्यवहार कर रहे हैं, इत्यादि। इस तरह आप फिल्म में आज के जीवन के विषय को पेश कर सकते हैं। अतः पिछले और वर्तमान जीवन को पेश करना, लड़ाई में वीरता और बहादुरी

को चित्रित करना तथा जीवन की भावनाओं को भलीभांति प्रतिबिम्बत करना सर्वथा संभव है।

परन्तु हाल ही में प्रदर्शित की गयी फिल्म "चोटी संख्या १२११" में शुरू से लेकर आखिर तक लड़ाई ही लड़ाई दिखायी गयी है।

इसके मुकाबले में "फिलम चमचमाती धूप में" (अंडर दि ब्राइट सन) एक बढ़िया फिल्म है। यह न-केवल जापान-विरोधी छापामारों के क्रान्तिकारी संघर्ष का ही सच्चा चित्रण पेश करती है, बल्कि समाजवादी निर्माण के लिए आज के संघर्ष और समाजवादी व्यवस्था में जनता के सुखी जीवन को भी चित्रित करती है। बेशक पिछले जमाने की स्मृतियों का चित्रण जरा लम्बा प्रतीत होता है, फिर भी मेरी राय में यह एक अच्छी रचना है जोकि किसी भी तरह हमारे वर्तमान जीवन के लिए उपयुक्त है।

हमें फिलम-निर्माण में बहुत बड़ा सुधार लाना होगा।

फिल्म अवाम के शिक्षण का एक अति महत्वपूर्ण साधन हैं। लेकिन अभी हमारी सिने कला बहुत ही पिछड़ी हालत में है।

फरवरी-८ फिलम स्टूडियो को स्थापित हुए कई वर्ष बीत गये हैं, परन्तु उसने कोई भी उल्लेखनीय युद्ध-फिलम निर्मित नहीं की है।

निःसन्देह लेखकों और कलाकारों को शिक्षित करने में असफलता के लिए हम लोग दोषी हैं, परन्तु मुख्य कारण यह है कि लेखन कला पर रहस्य का पर्दा पड़ा हुआ है। यदि आप यह समझते हैं कि केवल चंद पेशेवर लोग ही दृश्य लेखों की रचना कर सकते हैं तो आप भारी गलती कर रहे हैं। कोई भी शानदार रचना कर सकता है, यदि वह जनता के बीच जाए और सत्य का चित्रण करे। दोषी वे लेखक और कलाकार ही हैं जो वास्तविक जीवन की गहराई में न जाकर साहित्य और कला को रहस्यपूर्ण बना देते हैं।

हमें फिल्में बनाते अब कई वर्ष हो गये हैं, फिर भी हम मजदूर वर्ग से सम्बन्धित एक भी फिल्म नहीं बना पाये हैं। हमारे देश में हजारों फैक्टरियां और एक बहादुर मजदूर वर्ग है। मजदूरों के वीरोचित संघर्ष की ऐसी घटनाओं का कोई अभाव नहीं है, जिनको चित्रित किया जा सकता है। परन्तु अभी तक ऐसी कोई फिलम सामने नहीं आयी है, जिसमें मजदूर वर्ग का चित्रण किया गया हो।

एक दिन मैंने कुछ लेखकों और कलाकारों के साथ एक रूसी फिलम "उज्ज्वल पथ" देखी और फिर उनके साथ इस बारे में विचार-विमर्श किया कि अपने देश में फिलम क्षेत्र में सुधार के लिए हमें भविष्य में क्या करना चाहिए। फिलम एक नारी के बारे में है, जो एक सराय में पहले दासी थी। वह एक बुनकर के रूप में नाम कमाती है, स्ताखानोव आन्दोलन के समय एक नया आविष्कार करती

है और कालांतर में सोवियत की सदस्य बनती है। यह मजदूर वर्ग के संघर्ष को अच्छी तरह पेश करती है और इसमें जो स्वस्थ संगीत है वह दर्शकों को साहस दिलाने का काम करता है।

अतः मैंने अपने लेखकों और कलाकारों को बताया कि उन्हें भी फिल्मों का इसी ढंग से निर्माण करना चाहिए।

हमारे देश में, जहां कि छोलिमा आन्दोलन आगे बढ़ रहा है, मजदूर वर्ग के वीरोचित संघर्ष की कितनी ही मिसालें हैं। हमने युद्धोत्तर वर्षों में मलबों पर जो निर्माण किया है, वह अपनेआप नहीं हुआ है। वह असाधारण देशभक्तिपूर्ण निष्ठा प्रदर्शित करने वाले हमारे मजदूर वर्ग के वीरोचित संघर्ष का ही सुफल है।

वास्तव में हमारे मजदूर वर्ग ने खूब अच्छी लड़ाई लड़ी है। शत्रु की बमबारी से अपनी फैक्टरियों की रक्षा करने के लिए उन्होंने मशीनों के जोड़ खोले और उन्हें वे अपनी पीठों पर लादकर पर्वतों और नदियों के पार ले गये। उन्होंने बेहद दुश्वारी के हालात में युद्धोत्तर पुनर्वास और निर्माण के लिए कड़ी लड़ाइयां लड़ीं।

लेकिन जब आपसे अतीत की कुछ यादगारों को चित्रित करने को कहा जाता है तो आप केवल अमरीकी लुटेरों की अंधाधुंध बमबारी से हुए भयंकर विनाश के दृश्यों का चित्रण ही क्यों करते हैं? ऐसा वही लोग कर सकते हैं, जो जन संघर्ष से अनजान हों।

जैसाकि मैंने पिछले साल एक बार कहा था, वृत्तचित्र भी घटिया ढंग से बनाये जा रहे हैं।

इस समय, हमारे वृत्त चित्रों में कलकल करती नदियों और माउंट कुमगांग-सान और माउंट छिल्बो-सान सरीखी गगन चुम्बी चट्टानों के साथ शानदार प्राकृतिक दृश्यों की पूरी-पूरी शृंखलाएं दिखायी जाती हैं लेकिन उनमें से कुछेक ही यह प्रदर्शित करती हैं कि लोग फैक्टरियों, स्कूलों, अस्पतालों और अन्य स्थानों पर कैसे काम करते हैं। यही वजह है कि क्यों मैंने एक बार कहा था: "आप जल-प्रपातों के इतने ज्यादा दृश्य चित्रित करते हैं, लेकिन क्या आप माउंट कुमागांग-सान के जल-प्रपातों पर जीवन के बारे में कभी सोचते हैं?

वृत्त चित्रों में अक्सर सभा-कक्षों का भी चित्रण होता है। आमतौर पर वृत्त-चित्रों में शुरू में ही सभा-कक्ष दिखाए जाते हैं। सभा-कक्षों का प्रदर्शन बहुत हो चुका है। आप हमेशा उन्हीं का प्रदर्शन क्यों करते हैं? किसी सभा के मंच का दृश्य फिल्माने या भाषण देते या पुरस्कार देते प्रमुख कार्याधिकारियों को फिल्माने से लाभ क्या है? बार-बार एक जैसे दृश्य दिखाने से दर्शक फिल्म में रुचि खो देंगे।

वृत्त चित्रों को फैक्टरियों, फार्मों और मछली पकड़ने के बन्दरगाहों में

वीरोचित ढंग से श्रम करते लोगों को प्रदर्शित करना चाहिए। यदि कोई वृत्तचित्र केवल उन्हीं लोगों को, जिन्हें आप हमेशा देखते हैं और आपके जाने-पहचाने सम्मेलन हालों को ही पेश करती है तो उसका प्रयोजन क्या है ?

जहां तक सभा कक्षों का सम्बन्ध है, वर्ष में दो-एक बार जब जन संसद के अधिवेशन या पार्टी कांग्रेस जैसी महत्वपूर्ण बैठकें हो रही हों; उनके दृश्य फिल्माइए। इससे ज्यादा नहीं। सक्रिय कार्यकर्ताओं की बैठकें तो प्रायः नित्य होती हैं, अतः आप कैसे उन सबको फिल्मा सकते हैं ?

वृत्त चित्र से यह आशा की जाती है कि संघर्ष के विकसित होने के क्रम में जब कि वह ताजा ही हो, उसका सजीव दृश्य प्रस्तुत करें। वृत्त चित्रों को यह प्रस्तुत करना चाहिए कि हमारे देश भर में—फैक्टरियों और कृषि गांवों में, स्कूलों और अस्पतालों में लोग कैसे काम करते हैं। ऐसा करने पर ही वह हमारी भावनाओं के अनुकूल होगा, समाजवादी व्यवस्था की श्रेष्ठता को प्रतिबिम्बित करेगा और इस प्रकार दर्शकों में लोकप्रियता प्राप्त करेगा तथा उसका एक शैक्षणिक महत्व होगा। हमारा सिनेमा बहुत पिछड़ा हुआ है। हमें फीचर फिल्म और वृत्त चित्र दोनों के स्तर को तेजी से ऊंचा करना होगा ताकि वे हमारे जीवन को विशद रूप में अभि-व्यक्त कर सकें।

हमारी साहित्य और कला कृतियों के स्तर को ऊंचा करने के लिए हमारे लेखकों और कलाकारों को वास्तविक जीवन में और गहराई तक जाना होगा।

हमारे यहां बार-बार पुरस्कार देने की एक बुरी परिपाटी चल पड़ी है। जब कभी कोई रचना होती है या कोई अच्छा गीत तैयार होता है तो पुरस्कार दिये जाते हैं। और जिन रचनाओं और गीतों को पुरस्कृत नहीं किया जाता, वे तिरस्कृत मान ली जाती हैं।

निःसन्देह, मुझे बहुत-से इनाम देने पर कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन मैं समझता हूं कि हमारे लिए बेहतर यह है कि हम और ज्यादा मेहनत करें तथा उसके बाद इनाम पाएं। हमें तनिक और ज्यादा विनम्र होना चाहिए और अपने काम में सुधार के लिए अधिक गम्भीर प्रयास करना चाहिए। जब आप अपनी रचना के लिए इनाम प्राप्त करते हैं तो मद्यपान के लिए एकत्र होना कोई अच्छी बात नहीं है। यह विनाश और लम्पटता की दिशा में ले जा सकती है।

वर्ग शिक्षा और कम्युनिस्ट नैतिक शिक्षा को तेज करने, पार्टी नीतियों का प्रचार करने और जनता के वीरोचित संघर्ष को प्रदर्शित करने के लिए हमें और ज्यादा मेहनत करनी होगी। हमें बहुत-सी श्रेष्ठ रचनाएं रचनी होंगी।

इसके अलावा दक्षिण कोरिया की वास्तविक स्थिति से हमारी जनता के बेहतर ढंग से अवगत किये जाने के लिए यह जरूरी है कि एक सचित्र पत्रिका प्रकाशित की

जाए, जिसमें दक्षिण कोरिया की वास्तविकता प्रदर्शित करने वाली बहुत-सी तस्वीरें हों। इस तरह हमें लोगों को प्रेरित करना होगा कि वे अपने दक्षिण कोरियाई स्वदेशवासियों के जोखिम-भरे जीवन के प्रति सहानुभूति का अनुभव करें, अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके पिट्ठुओं से घृणा करें, और उत्तरी आधे भाग में समाजवादी निर्माण को और तेज करने, किफायत का जीवन बिताने तथा क्रान्ति को उसकी मंजिल तक पहुंचाने के लिए सतत संघर्ष करने का दृढ़ संकल्प करें।

यदि हम रेडियो, समाचारपत्रों, पत्रिकाओं, उपन्यासों, नाटकों, फिल्मों आदि जैसे शैक्षणिक साधनों की भूमिका को प्रखर करने का निरंतर प्रयास करें, और अपनी वास्तविकता के तकाजों के अनुरूप वर्ग शिक्षा तथा कम्युनिस्ट नैतिक शिक्षा दें, तो हम इस कार्य में और भी बड़ी सफलताएं हासिल करेंगे।

४ : सेना में पार्टी कार्य के दृढ़ीकरण के बारे में

अब मैं संक्षेप में सेना में पार्टी कार्य का जिक्र करना चाहूंगा। जो लोग पार्टी कार्य का अर्थ यह लेते हैं कि बैठकें की जाएं, पार्टी में नये सदस्यों को प्रवेश दिया जाए और गलती करने वालों को दंण्डित किए जाए, वे सर्वथा गलती पर हैं।

पार्टी कार्य का जरूरी तत्व है कार्यकर्ताओं के साथ काम करना और पार्टी संगठनों को कार्यरत होने के लिए प्रेरित करना। पार्टी कार्य सबसे बढ़ कर उन लोगों के साथ काम करना है जो पार्टी संगठन के आधार हैं। जब कार्यकर्ताओं के साथ काम अच्छी तरह से चल रहा हो तो हम कह सकते हैं कि पार्टी कार्य भली भांति संचालित हो रहा है। सेना में कार्यकर्ताओं से आशय है अधिकारीगण। पार्टी समितियों को अधिकारियों के साथ खूब काम करने को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी।

कार्यकर्ताओं के साथ कार्य को निजी वार्तालापों द्वारा या बैठक में सामूहिक विधि द्वारा संचालित किया जा सकता है। यदि कार्यकर्ताओं के साथ कार्य करने के लिए कटिबद्ध होने में कमांडर, राजनीतिक मामलों के डिप्टी कमाण्डर, रेजीमेंट के चीफ आफ स्टाफ और रेजीमेंटल पार्टी समिति की कार्यकारिणी के सदस्य अपने प्रयासों को समन्वित करें तो वे अपने अपने हाथों की हथेलियों की तरह ही रेजीमेंट के तमाम कमांडरों से परिचित हो सकेंगे।

लेकिन आप कार्यकर्ताओं के साथ अपने कार्य को नियमित ढंग से नहीं कर रहे हैं, बल्कि उनके साथ केवल तब बात कर लेते हैं जब कोई गड़बड़ी होती है। आप कार्यकर्ताओं के साथ निरन्तर सम्पर्क बनाये रखने, उनके गुणों-अवगुणों

का अध्ययन करने और उन्हें शिक्षा देने का काम भलीभांति नहीं कर रहे हैं। यदि आप केवल बैठकों में कार्यकर्ताओं से मिलें या मात्र आदेश जारी करें और या रिपोर्ट प्राप्त करें तो आप उनकी वास्तविक हालतों को पूर्णतया समझ नहीं सकते।

जब आप कार्यकर्ताओं से बार-बार मिलें और बातचीत करें, तो आप निश्चित रूप से जान सकेंगे कि उनमें गुण क्या हैं और अवगुण क्या हैं और विभिन्न अनिर्णीत समस्याओं को ठीक ढंग से समझ सकेंगे। यदि कुछ साथी ऐसे हैं, जिनका राजनीतिक स्तर निम्न है तो उनके इस स्तर को ऊंचा करने की समस्या साफ तौर पर सामने आ जाएगी; जिन साथियों का सांस्कृतिक स्तर नीचा है या जिनका नैतिक आचरण शिथिल है, उनका सांस्कृतिक स्तर ऊंचा करने या उनके नैतिक जीवन को सही पथ पर लाने की समस्या उभर कर सामने आ जाएगी; और जिनको सैन्य मामलों का नाकाफी ज्ञान होगा, उनकी व्यावहारिक जानकारी के स्तर को ऊंचा करने की समस्या प्रकट हो जाएगी।

मैं इस समय आपके साथ यह बैठक कर रहा हूं, लेकिन केवल इस बैठक से मेरे लिए आपकी यूनिटों की वास्तविक स्थितियों की पूरी-पूरी जानकारी हासिल करना कठिन है। निःसन्देह मेरे लिए आप में से हरेक के साथ व्यक्तिगत रूप से बातचीत करना असम्भव है। जहां तक मेरा सम्बन्ध है, मेरे पास ऐसे कार्यकर्ता हैं, जिनके साथ मुझे दिन-प्रतिदिन का कार्य करना होता है। मैं अपना रोजमर्रा का कार्य मुख्यतः पार्टी केन्द्रीय समिति के उपाध्यक्षों और विभागीय निदेशकों, उपप्रधान मन्त्रियों और मन्त्रिमण्डल के अन्य सदस्यों, विभिन्न सामाजिक संगठनों के जिम्मेदार कार्यकर्ताओं और सेना के उच्चस्तरीय जनरलों के साथ करता हूं। उनके साथ अपनी वार्ताओं के दौरान मुझे काफी समस्याओं का पता चल जाता है।

अभी-अभी राजनीतिक मामलों के एक डिप्टी रेजीमेंटल कमांडर ने हमें बताया है कि उसने एक महीने में आठ व्यक्तियों से बातचीत की। यह तो बहुत कम संख्या है। उसे करीब २० व्यक्तियों के साथ बातचीत करनी चाहिए थी। वह अपने अन्य काम को करते हुए एक दिन में कम से कम एक व्यक्ति के साथ बातचीत कर सकता है।

आप जिस आदमी के साथ बात करना चाहते हैं, उसे आप बुलवा सकते हैं लेकिन आप किसी यूनिट में जा भी सकते हैं और अपने साथियों के साथ रहते हुए या उनके कार्य में उनकी मदद करते हुए या किसी बैठक में उनकी उपस्थिति का लाभ उठाकर उनसे बातचीत कर सकते हैं।

आप की व्यक्तिगत वार्ता की परिधि में उनकी राजनीतिक और विचारधारात्मक जीवन से लेकर यूनिट मे उनके सैनिक जीवन, सांस्कृतिक जीवन तथा

निजी जीवन तक कोई भी समस्या आ सकती है। यदि किसी साथी की कमजोरी यह है कि उसमें राजनीतिक ज्ञान का अभाव है, तो आप उसे राजनीति से सम्बद्ध किताबें पढ़ने का सुझाव दे सकते हैं और उसका सांस्कृतिक स्तर नीचा है तो आप उसे कुछ उपन्यास या कविताएं पढ़ने के लिए सलाह दे सकते हैं। और फिर यह पड़ताल करने के लिए कि उसने किताबों के मजमून को उचित रूप में समझ लिया है या नहीं, आप उसे कह सकते हैं कि किताबों से हासिल किये गये ज्ञान को अपने कार्य से सम्बद्ध करें। इस तरह आप हमारे कार्यकर्ताओं को ठोस ढंग से क्रान्तिकारी परम्पराओं की शिक्षा, वर्ग शिक्षा और पार्टी नीतियों में शिक्षा भी दे सकेंगे।

कार्यकर्ताओं के साथ कार्य इस तरह भी किया जा सकता है कि कार्यकारिणी किसी साथी से उसके कार्य के बारे में रिपोर्ट सुने। यह काम गम्भीर भूलें करने वाले साथियों की खामियों की खूब खुलकर चर्चा करने तथा बैठक में उन्हें बुरा-भला कहने की बजाय इस ढंग से किया जाना चाहिए कि उनके वास्तविक कार्य को पूरी तरह समझा जाए, उन्हें अच्छी सलाह दी जाए और बेहतर तरीके से काम करने में उनकी सहायता की जाए। इस समय हमारे कार्यकर्ताओं में बहुत बड़ा बहुमत मेहनती और अच्छे लोगों का है। उनमें कमी केवल इस बात की है कि वे नाकाफी योग्यता प्राप्त हैं और यह नहीं जानते कि वे कैसे अपने कार्य को उपयुक्त ढंग से करें। यही वजह है कि कार्यकर्ताओं के साथ कार्य में मुख्यतया इस बात पर जोर देना जरूरी है कि वे कार्यविधियां सीखने और अपनी योग्यता सुधारने के उद्देश्य से शिक्षा प्राप्त करें।

आप यह न समझें कि कार्यकर्ताओं के साथ राजनीतिक कार्य करने की जिम्मेदारी केवल डिवीजनल राजनीतिक विभाग अध्यक्ष या राजनीतिक मामलों के डिप्टी रेजीमेंटल कमाण्डर की ही है। यह काम डिवीजनल और रेजीमेंटल कमाण्डरों, तमाम पार्टी सदस्यों द्वारा किया जाना चाहिए।

हमारा अनुभव हमें सिखाता है कि जनता को व्यक्तिगत वार्तालापों और बैठकों द्वारा शिक्षित करना अति महत्वपूर्ण हैं। पिछले जमाने में, जब हम छापामार युद्ध में व्यस्त थे, हम अपने बिस्तर-असबाब लिए हुए यूनिटों में जाते थे और जवानों के साथ मिलकर मार्च करते थे और विश्राम काल के दौरान प्रचार कार्य करने तथा छापामारों को शिक्षित करने के लिए उनके साथ कुछ प्रश्नों पर बहस छेड़ देते थे। चूंकि हम हमेशा एक-एक छापामार के साथ बातें करते थे, इसलिए हमें प्रत्येक साथी के गुणों और कमजोरियों, आचार तथा शौकों की भी पूरी जानकारी थी। इससे जिनकी आलोचना की जाती थी, वे बिना कुछ बुरा माने आलोचना स्वीकार कर लेते और अपनी गलतियों को तत्काल सुधारते थे।

यदि हम कार्यकर्ताओं के साथ इस ढंग से काम करें तो हम उन्हें गलती करने से रोक सकेंगे और अपनी पांतों को ठोस आधार पर निर्मित कर सकेंगे। हमने पहले इस ढंग से कार्यकर्ताओं के साथ कार्य नहीं किया था और इसके परिणाम-स्वरूप हमें पता न चल सका कि पार्टी-विरोधी कार्यकर्ता बहुत से लोगों को भ्रष्ट कर रहे हैं और हम उन्हें नुकसान पहुंचाने से रोक न सके। यदि हम कार्यकर्ताओं के साथ कार्य पर उचित रूप से ध्यान न देंगे तो भविष्य में भी इसी की पुनरावृत्ति हो सकती है।

हमारे कार्यकर्ता राज्य की अमूल्य निधि हैं। मातृभूमि मुक्ति युद्ध के सालों में उन्होंने अपनी जान की परवाह किये बगैर बहादुरी से लड़ाई लड़ी, हमारी पार्टी और देश की रक्षा की और युद्धोत्तर वर्षों में हमारी जन सेना के दृढ़ीकरण और विकास के लिए भी निष्ठापूर्वक लड़ाई की। हमें इन कार्यकर्ताओं को सक्रिय मदद देनी चाहिये ताकि वे पहले की अपेक्षा और भी अधिक दृढ़तापूर्वक पार्टी के इर्दगिर्द एकजुट हों और गलतियों से बचते हुए अपने कार्य में शानदार परिणाम प्राप्त करें। इस बीच हमें नये युवा कार्यकर्ताओं को वर्ग शिक्षा और क्रान्तिकारी परम्पराओं की शिक्षा देते रहना होगा, ताकि वे सब हमारी जन सेना की गौरव-पूर्ण परम्पराओं को विरासत के रूप में प्राप्त कर सकें और ऐसे शानदार सैनिक कार्यकर्ताओं के रूप में विकसित हो सकें, जोकि पार्टी तथा क्रान्ति के प्रति असीम निष्ठा संजोये हुए हों।

पार्टी संगठनों को निरन्तर क्रियाशील रखना पार्टी कार्य में एक अन्य महत्व की चीज है। इस बात पर हमेशा ध्यान देना जरूरी है कि पार्टी सेल और पार्टी समितियां आवश्यक मामलों के बारे में विचार करने के लिए समय पर बैठकें करती हैं या नहीं, वे उनसे ठीक ढंग से निबटती हैं या नहीं, वे पार्टी सदस्यों के लिए अध्ययन का कैसे संगठन करती हैं, वे जन शिक्षा-कार्य का कैसे संचालन करती हैं, आदि। साथ ही तमाम स्तरों पर पार्टी संगठनों का निरीक्षण करना जरूरी है ताकि वे पार्टी नियमों में वर्णित सिद्धान्तों के अनुरूप पार्टी सदस्यों के लिए समुचित सांगठनिक जीवन आश्वस्त कर सकें।

जब कार्यकर्ताओं की पांतों का दृढ़तापूर्वक निर्माण हो जाए और पार्टी संगठन अपना कार्य सामान्य ढंग से करने लगें, तो तमाम पार्टी सदस्य सक्रिय हो जायेंगे, और जब यह स्थिति आ जाएगी तो तमाम सैनिक सक्रिय हो जाएंगे। अतः सेना में पार्टी समितियों को कार्यकर्ताओं के साथ कार्य को तथा पार्टी संगठनों को क्रिया-शील बनाए रखने के कार्य को सामान्य गति प्रदान करने के लिए कोई कोर-कसर उठा न रखनी होगी।

५ : स्थानीय आबादी के साथ संबंधों के सुदृढ़ीकरण के बारे में

आज हमारी जन सेना के सुदृढ़ीकरण में सबसे जरूरी समस्याओं में से एक है स्थानीय आबादी के साथ कार्य करने की समस्या।

जैसा कि आप सब जानते हैं, जापान-विरोधी छापामारों का मूलमंत्र था, "जिस प्रकार मछली बिना पानी जिंदा नहीं रह सकती, उसी प्रकार छापामार जनता के बिना नहीं जी सकते।" अंतिम विश्लेषण में यह सिद्धान्त जन दृष्टिकोण के महत्व पर जोर देता है। सेना में कमांडर बिना अपने जवानों के नहीं रह सकते, जबकि सेना बिना जनता के नहीं रह सकती।

सेना कितनी भी मजबूत क्यों न हो, वह तब तक अपनी शक्ति प्रदर्शित नहीं कर सकती, जब तक उसे स्थानीय जनता का समर्थन प्राप्त न हो। यह बात हमारे वर्तमान शासन में भी उतनी ही सही है, जितनी कि छापामार युद्ध के समय थी। यदि उन क्षेत्रों में जहां सेना तैनात हो, लोगों की हालत खराब हो या वे हमारी सरकार तथा सेना के प्रति आदर-सम्मान का भाव न रखते हों तो यह स्थिति सैनिकों के मनोबल पर भारी असर डालेगी और शत्रु के खिलाफ लड़ाई में बहुत बाधक भी होगी। अत: जन-सेना को हमेशा जनता के साथ गहरा सम्बन्ध बनाये रखना होगा। और एक आरामदेह जीवनस्तर हासिल करने में उसकी सक्रिय रूप में मदद करनी होगी।

स्थानीय आबादी के साथ कार्य में दो सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्नों को हल करना जरूरी है। एक यह कि अच्छा जीवन बिताने में उसकी मदद की जाए और दूसरा यह कि उसकी वर्गचेतना को उजागर किया जाए।

इस कार्य को भलीभांति पूरा करने के लिए सबसे पहले जरूरत इस बात की है कि उन क्षेत्रों में, जहां सैनिक टुकड़ियां तैनात हों, वास्तविक स्थितियों को सही तौर पर समझा जाए। कम से कम रेजीमेंट और डिवीजन के राजनीतिक विभागों को उस काउंटी की, जहां उसकी टुकड़ियां तैनात हों, आम स्थितियों की पूरी जानकारी होनी चाहिए, तथा जिस री में जिसके सैनिकों की रिहायश हो, उसकी ठोस स्थिति की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। स्थानीय स्थिति को समझने के लिए सबसे पहले जरूरत इस बात की है कि स्थानीय पार्टी संगठनों के बारे में पूरी जानकारी हो। आप को यह विस्तृत जानकारी होनी चाहिए कि री पार्टी समिति का अध्यक्ष किस किस्म का व्यक्ति है, री पार्टी समिति का ढांचा कैसा है, सहकारी फार्म प्रबन्ध बोर्ड अध्यक्ष और कार्यटोली नेता किस प्रकार के लोग हैं, आबादी का ढांचा क्या हैं, उनके कार्य में कमियां क्या हैं, आदि।

क्षेत्र में वास्तविक स्थिति से पूर्ण परिचय प्राप्त करने के बाद आपको

स्थानीय पार्टी संगठनों की मदद के लिए कदम उठाने होंगे। अब तक जनसेना ने स्थानीय आबादी की विभिन्न प्रकार से मदद का है। उसने श्रम में उसका हाथ बंटाया है और साथ ही उसे तकनीकी तथा आर्थिक सहायता दी हैं। निश्चित रूप से यह आवश्यक है। लेकिन केवल इस प्रकार की सहायता मूल समस्याओं को सुलझाने के लिए काफी नहीं है। पर्वतीय क्षेत्रों के कुछ गांवों में लोगों की हालत बहुत पिछड़ी हुई है। इसका मूल कारण असन्तोषजनक पार्टी कार्य ही है, यद्यपि जनशक्ति का अभाव या अन्य प्रतिकूल भौतिक स्थितियां भी इसके लिए आंशिक रूप से जिम्मेदार हैं। जब तक पार्टी कार्य को सही ढंग से चालू नहीं किया जाता तब तक चाहे कितनी भी भौतिक और तकनीकी सहायता उपलब्ध की जाए, वह बेपेंदे के बर्तन में पानी डालने से अधिक कुछ न कर सकेगी और वह सब व्यर्थ हो जाएगी।

जन-सेना को सबसे पहले स्थानीय पार्टी संगठनों को राजनीतिक मदद देनी चाहिए, ताकि वे अपना काम अच्छे ढंग से पूरा कर सकें। यह अच्छी बात है कि आप उनकी मदद करने के लिए पार्टी बैठकों में भाग लेते हैं तथा पार्टी नीतियों को जनता में स्पष्ट करते और प्रचारित-प्रसारित करते हैं। सेना के पास कई योग्य प्राध्यापक और पार्टी के सांगठनिक कार्य का अनुभव रखने कई साथी हैं। यदि री पार्टी संगठनों के कार्य में उनकी सहायता के लिए यूनिटों में इन राजनीतिक तत्वों को गोलबंद किया जाए तो री पार्टी संगठनों के कार्य में सुधार लाने में बहुत मदद मिलेगी।

कुछ लोगों का ख्याल है कि अग्रिम क्षेत्रों के पर्वतीय होने से वहां के लोगों की दशा अच्छी नहीं है, लेकिन यह सही नहीं है। जहां तक प्राकृतिक परिस्थितियों का सम्बन्ध है, छांगसोंग और प्योकदोंग की परिस्थितियां यहां की अपेक्षा अधिक प्रतिकूल हैं और इस पर भी अब वहां के लोगों की दशा अच्छी है। कल जब हमने एक यूनिट का दौरा किया तो हमने छांगसोंग के एक सैनिक के साथ बातचीत की। उसने बताया कि छांगसोंग में उसके परिवार के हिस्से में २.५ टन अनाज और २,५०० वोन नकदी आयी, जबकि यहां इस कृषि गांव में प्रति घराना औसतन हिस्सा करीब १.६ टन अनाज और १०० वोन नकदी रहा। सैनिक ने यह भी बताया कि यहां की प्राकृतिक स्थितियां छांगसोंग से कोई कम अनुकूल नहीं हैं।

यह कहने की जरूरत नहीं कि शुरू से ही छांगसोंग के लोगों की दशा अच्छी न थी। आज वे प्रचुरता का जो जीवन बिता रहे हैं, उसे विकसित करने के बारे में उन्हें प्रेरित करने में हमें चार या पांच वर्ष लगे हैं।

जब १९५५ में पहली बार मैं छांगसोंग गया तो वहां की स्थानीय जनता की जीवन स्थितियां भयावह थीं। काउंटी के कार्य को ठीक-ठाक करने तथा जनता की

आजीविका में सुधार लाने के लिए मैंने एक या दो वर्ष तक विभिन्न विधियों का प्रयोग किया परन्तु समस्या को सुलझाने में असमर्थ रहा।

अतः पार्टी ने सबसे पहले काउंटी पार्टी संगठन के कार्य में सुधार लाना जरूरी समझा। उसने काउंटी पार्टी समिति के अध्यक्ष पद के लिए एक शानदार कार्यकर्ता का चयन किया और पूरे जोरों के साथ कार्य को आगे बढ़ाने से पूर्व उत्तम साथियों पर आधारित काउंटी पार्टी समिति का निर्माण किया।

तमाम दूसरे कामों की तरह काउंटी कार्य में एक अति महत्वपूर्ण समस्या यह है कि पार्टी नीतियों के क्रियान्वयन में काउंटी के पार्टी समिति अध्यक्ष और काउंटी के अन्य कार्यकर्ता स्वतः एक आदर्श प्रस्तुत करें। छांगसोंग काउंटी पार्टी समिति के अध्यक्ष में उत्कृष्ट कार्यक्षमता थी, यद्यपि वह बहुत कम बोलते थे। वह व्यक्तिगत रूप से पार्टी-सेल बैठकों का पथप्रदर्शन करने गये, जनता में उन्होंने भाषण दिये और स्थानीय रूप से संचालित फैक्टरियों के निर्माण स्थलों पर अपनी पीठ के ऊपर बोझ ले जाने में नेतृत्व किया। चूंकि काउंटी पार्टी समिति के अध्यक्ष अपनी पीठ पर एक छिगे रखे काम करने के लिए सवेरे-सवेरे बाहर आये, अतः न केवल उपाध्यक्ष और काउंटी पार्टी समिति के विभागीय अध्यक्षों ने उनका अनुसरण किया, बल्कि अस्पताल से नर्सें तक बाहर आ गयीं। इस प्रकार उन्होंने बाढ़ की रोकथाम के लिए पुश्तों का निर्माण किया तथा मकान और फैक्टरियां खड़ी कीं। उन्होंने भारी परिमाण में जंगली फल एकत्र करने तथा उन्हें सुरक्षित करने में सक्रियता दिखायी और पर्वतीय स्थलों का प्रयोग कर पशुसंवर्धन का व्यापक रूप से विकास किया। प्रत्येक किसान ने एकत्रित किये गये मात्र जंगली बेरों या "हा" फलों के बदले में १०० वोन नकद प्राप्त किये और बेचने के लिए पैदा किये गये एक बछड़े के बदले में और भी १०० वोन कमाये। ऐसा करने में उन्होंने पार्टी के नारे "पर्वतीय क्षेत्रों में पर्वतों का उचित-प्रयोग करो" को साकार रूप देने का एक शानदार दृष्टान्त स्थापित किया और इस तरह साबित कर दिया कि पर्वतवासी भी मैदानवासियों जैसा अच्छा जीवन बिता सकते हैं।

यह क्षेत्र पहाड़ों और घास से भरा पड़ा है परन्तु मैंने बीहड़ों में एक भी भेड़ या गाय नहीं देखी। ऐसा प्रतीत होता है कि यहां के किसान पर्वतों को उपयुक्त उपयोग के योग्य बनाये बिना केवल पर्वतों की तराई में थोड़े-थोड़े भूखन्डों पर निर्भर रहते हैं। इससे भी बुरी बात यह है कि यहां के पार्टी और सरकारी निकायों के कार्यकर्ता किसानों के बीच उचित राजनीतिक कार्य करने में असमर्थ रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप कृषि असन्तोषजनक है। यही वजह है कि लोगों की हालत अब भी खराब है।

आप कम्युनिस्ट हैं, जो अपने प्राणों के जोखिम पर क्रान्ति के लिए लड़ने को

तैयार हैं। यह सर्वथा बेतुकी बात होगी, यदि आप अपने पड़ोसियों का भी उचित रूप से नेतृत्व न कर सकें। वास्तव में एक क्रान्तिकारी सेना को न केवल कुशलतापूर्वक शत्रु से जूझने में सक्षम होना चाहिए बल्कि उसे यह ज्ञान भी होना चाहिए कि जनता में राजनीतिक कार्य का किस प्रकार संचालन किया जाना चाहिए। जापान-विरोधी छापामार हाथों में शस्त्रास्त्र उठाये शत्रु से जूझने में बड़े बहादुर योद्धा तो थे ही, इसके साथ ही वे सबके सब स्थानीय जनता के बीच शानदार राजनीतिक कार्यकर्ता भी थे।

जिन लोगों को वास्तविक स्थिति की पूरी जानकारी न हो तो वे यह सोच सकते हैं कि छांगसोंग की जनता इसलिए समृद्ध हो गयी है कि केन्द्र ने उसे काफी कुछ दिया है। लेकिन हमने उसे कोई विशेष चीज नहीं दी। हमने उसे यदि कुछ दिया भी है तो वह कुछ सक्षम कार्यकर्ता मात्र हैं। हमने छांगसोंग में जनता को मुख्यत: उसके पार्टी कार्य में सहायता दी है।

मूल समस्या तब तक सुलझायी नहीं जा सकती, जब तक लोगों को कुछ जन शक्ति उपलब्ध कर आप उनकी मदद करते रहेंगे, जैसा कि आप इस समय कर रहे हैं। हमें लोगों की राजनीतिक और क्रान्तिकारी ढंग से मदद करनी होगी। पार्टी कार्य में मदद देकर हमें तमाम स्थानीय लोगों को प्रेरित करना होगा कि वे अपने बूते पार्टी नीतियों को सक्रिय रूप में क्रियान्वित करें तथा अपने क्षेत्रों का शानदार ढंग से निर्माण करने के लिए और अपने जीवनस्तर को ऊंचा करने के लिए भरसक प्रयास करें।

पर्वतीय क्षेत्रों में जनता की जीवन स्थितियों में सुधार के लिए पार्टी नीति स्पष्ट रूप से निर्धारित की गयी है। आवश्यकता इस बात की है कि छांगसोंग और पुकछोंग में प्राप्त अनुभवों का कारगर उपयोग कर स्थानीय उद्योग, पशुसंवर्धन, फलोत्पादन आदि में व्यापक विकास किया जाए। यदि लोग अपने पार्टी कार्य में रुचि लेना शुरू कर दें और इस प्रकार कार्य करने को प्रेरित हो जाएं तो तमाम समस्याएं सुलझ जाएंगी।

इस समय स्थिति यह है कि जैसे ही छांगसोंग के लोगों को पार्टी द्वारा प्रसारित किसी नये प्रस्ताव या निर्देश की भनक मिलती है, वे उनका मजमून जानने के लिए स्वत: पार्टी और राज्यीय निकायों में आते हैं। यदि हर कोई पार्टी नीतियों के प्रति इतना सचेत हो जाए तो सब कुछ सुचारु रूप से संचालित होने लगेगा। हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि लोग स्वत: जाग्रत हों और अपने ही प्रयासों से प्रचुरता का जीवन हासिल करें। यदि हम अच्छा राजनीतिक कार्य करेंगे तो यहां के लोग भी छांगसोंग की जनता की तरह प्रचुरता का जीवन प्राप्त करने में समर्थ होंगे।

अग्रिम क्षेत्रों में स्थानीय जनता का जीवनस्तर दो या तीन वर्षों में तेजी से सुधारना और उसे पार्टी के साथ और भी दृढ़त से एकजुट करना जरूरी है।

प्रथम चरण में हमें उनके दिमाग में पार्टी नीतियां उन्हें समझाने के कार्य से शुरूआत करनी चाहिए। यदि लोग पार्टी नीतियों को समझ लें और उन्हें व्यावहारिक रूप दें तो उनका जीवनस्तर भी सुधरेगा और उनकी एकता भी स्वाभाविक रूप से और अधिक दृढ़ होगी। जहां जन सेना के सैनिक तैनात हों, उसके पासपड़ोस के क्षेत्र को उचित ढंग से निर्मित किया जाना चाहिए। आप केवल इसी प्रकार जनता की सहायता प्राप्त कर सकते हैं और बिना किसी अन्य चिंता के शत्रु से लड़ सकते हैं।

राजनीतिक कार्य पद्धति का पार्टी दस्तावेजों में स्पष्ट रूप में वर्णन किया गया है। ये दस्तावेज हर बात को पूर्णतः स्पष्ट करते हैं—जनता की वास्तविक स्थितियों को कैसे समझा जाना चाहिए, पार्टी नीतियों का कैसे प्रचार किया जाना चाहिए, भूतपूर्व "शान्ति रक्षा दल" के सदस्यों के परिवारों के साथ, दक्षिण जाने वालों के परिवारों के साथ, और पेचीदा पृष्ठभूमि वाले अन्य समूहों के साथ कार्य का कैसे संचालन किया जाना चाहिए और बदमाशों के विरुद्ध कैसे लड़ाई की जानी चाहिए। आपको केवल यह करना है कि आप उन्हें पढ़कर अधिक गम्भीरता से समझें और स्थानीय पार्टी संगठनों की कारगर मदद करें।

बुरे आदमी तो स्थानीय पार्टी अधिकारियों के बीच भी मिल सकते हैं। ऐसे मामलों में आपके लिए उचित यह होगा कि अपनी राय उच्चतर स्तर के पार्टी निकायों को पेश करें। काउंटी पार्टी समितियों और प्रान्तीय पार्टी समितियों को सतत प्रेरित करते रहना भी जरूरी है, ताकि वे अग्रिम रेखा के पास रहने वाले लोगों में अपना कार्य करती रहें।

जब स्थानीय पार्टी संगठन और जन सेना अपने प्रयासों को इस तरह संयुक्त करेंगे और पूरे उत्साह के साथ राजनीतिक कार्य को करेंगे तो अग्रिम रेखा क्षेत्रों में कार्य में तेजी से सुधार आएगा, वहां की जनता की दशा अच्छी होगी और आपकी पिछली पंक्ति वस्तुतः सुदृढ़ होगी।

६ : सैनिक और अन्य समस्याओं के बारे में

अब मैं सेना की समस्याओं के बारे में चंद शब्द कहना चाहूंगा।

आप अब तक काफी काम कर चुके हैं। आपने बहुत से रक्षा-निर्माण के कार्य किये हैं और कार्यकर्ताओं की पांतें उचित रूप से निर्मित की गयी हैं। सैनिकों के

हौसले बुलन्द हैं। आपके पास आवश्यक सामग्रियों के काफी सुरक्षित भंडार हैं और हर चीज पूर्ण समर-सन्नद्धता में है। जवान और अधिकारी, दोनों अच्छा जीवन निर्वाह करते हैं।

इस बार मैं व्यक्तिगत निरीक्षण से और भी आश्वस्त हो गया हूं कि आप वस्तुत: अच्छा जीवन बिता रहे हैं। वैसे रक्षा मन्त्री और प्रधान राजनीतिक ब्यूरो के निदेशक की रिपोर्टों से ही इस बारे में मैं पहले ही आम समझदारी प्राप्त कर चुका था। आपका जीवन १९५५ की अपेक्षा, जब मैं पानमुन काउंटी गया था, काफी भिन्न दिखायी देता है।

लेकिन अब तक प्राप्त उपलब्धियों पर सन्तोष कर हमें शिथिलता नहीं अपनानी चाहिए। हमें जुझारू प्रशिक्षण को और अधिक प्रभावशाली ढंग से चलाना होगा और अपनी समर-सन्नद्धता को और भी परिपूर्ण बनाने के लिए सतत प्रयास करने होंगे।

हमें याद रखना होगा कि हमारे अधिकतर रंगरूटों में समर-अनुभव का अभाव है और इस तथ्य को ध्यान में रखना होगा कि एक के बाद एक नये-नये प्रकार के आयुध बनाये जा रहे हैं और इसके संदर्भ में तकनीक में भी निरन्तर परिवर्तन हो रहे हैं। हमें नये प्रकार के आयुधों में पूर्ण पारगंत होना होगा। और शत्रु द्वारा जहाजों से लाये नये आयुधों के विरुद्ध रक्षा व्यूह-रचनाओं का अध्ययन जारी रखना होगा।

जन-सेना के जिम्मे पार्टी और जनता के लिए हमारे देश की रक्षा करने का बहुत बड़ा काम है।

आपको हर दृष्टि से पूरी तरह तैयार होना होगा ताकि किसी भी शत्रु को कुचलने में आप पूर्णतया सक्षम हों। साथ ही आपको नये निरन्तर विकासोन्मुख सैन्य विज्ञान और प्रविधि से स्वयं को पूर्णत: लैस रखना होगा।

चूंकि आप राकदोंग-गांग नदी क्षेत्र तक बढ़ते गये थे और तीन साल से अधिक समय यांकियों, से लोहा लेते रहे थे, केवल इस वजह से आप यह दावा न करें कि आप बिना हथियार उठाये शत्रु को परास्त कर सकते हैं। न ही आप यह सोचें कि आपको और ज्यादा कुछ सीखने की जरूरत नहीं है क्योंकि आप जापान-विरोधी छापामार संघर्ष के दिनों से लड़ते आये हैं। हमें नये सैन्य विज्ञान और तकनीकी ज्ञान की जानकारी हासिल करने के लिए लगातार एक किताब और पढ़ लेने का यत्न करना चाहिए।

आपको शत्रु के आयुधों तथा रणनीति और कार्यनीति का भी अध्ययन करना चाहिए। यदि हम शत्रु को अच्छी तरह जानते हों तो उसे शिकस्त दे सकते हैं।

आधुनिक युद्धप्रणाली में तोपों, टैंकों और इन जैसे आयुधों का बेहतर उप-

योग करना तथा तीव्र गतिशीलता आश्वस्त करना महत्वपूर्ण है। अतः हमें तमाम शस्त्रास्त्रों की तकनीकी जानकारी और कौशल बढ़ाना चाहिए और हर व्यक्ति को अचूक निशानेबाज बनने के लिए अपनी क्षमता में सतत सुधार करना चाहिए।

हमें कदापि निशाने से चूकना न चाहिए और इस प्रकार कीमती गोलों को बर्बादी से बचाना चाहिए। यदि शत्रु १०० में से केवल एक निशाना प्राप्त कर सकता है तो हमें दागी गयी १०० गोलियों में से एक को भी बर्बाद नहीं होने देना चाहिए।

हमारे तमाम आयुध और युद्ध सामग्रियां जनता की सम्पत्ति हैं। जो लोग जन सम्पत्ति की कद्र नहीं करते और उसकी देखभाल नहीं करते, वे देशभक्त नहीं हैं।

इस समय हमारी जनता एक साथ दो कठिन उद्देश्यों को पूरा करने में संलग्न है। हम एक ओर सर्वांगीण उद्योगीकरण लागू कर रहे हैं और इसके साथ ही दूसरी ओर राष्ट्र की रक्षा-क्षमताओं में अभिवृद्धि के महान कार्य को पूरा कर रहे हैं। यह हमारी समुन्नत सामाजिक प्रणाली और हमारी पार्टी की सही नीतियों का सुफल है कि हम अपने बूते इन दो कठिन कार्यों को पूरा कर रहे हैं। इन कार्यों को एक साथ पूरा किया जाना चाहिए। वास्तव में, यदि हमने एक शक्तिशाली उद्योग की स्थापना न की होती तो आज हमारी रक्षा-क्षमताएं जो हैं, न हो सकती थीं और यदि हमने देश की रक्षा क्षमताओं में बढ़ोतरी न की होती तो हमारी जनता आज सुरक्षा की भावना से समाजवाद का निर्माण करने में समर्थ न होती।

समाजवादी देशों में आबादी के अनुपात से हमारे देश के पास सबसे बड़ी सेना है। हम व्यापक पैमाने पर आर्थिक निर्माण कार्य हाथ में लेते हुए राष्ट्र के रक्षा निर्माण के निमित्त भारी परिमाण में सामग्रियां और शक्तियां लगा रहे हैं। आप जिन सुरंगों से होकर आये हैं, उनके निर्माण पर बहुत ही अधिक परिमाण में लोहा और सीमेंट खर्च किया गया है। इतनी ही सामग्री और साजसामान से हम भारी संख्या में फैक्टरियों और मकानों का निर्माण कर सकते थे। अतः यह जरूरी हो जाता है कि हम सुरंगों और अन्य तमाम सैन्य प्रतिष्ठानों का, जिनका हमने निर्माण किया है, सम्मान और अच्छी तरह देखभाल करें और शस्त्रास्त्रों, गोला बारूद तथा अन्य युद्ध सामग्रियों के खर्चे में अधिकतम बचत करें। तभी हमारे लिए यह संभव हो सकेगा कि हम बड़े भारी पैमाने पर आर्थिक निर्माण और राष्ट्रीय रक्षा निर्माण को जारी रख सकें।

प्राचीन काल से लड़ाई में बहादुरी के जौहर दिखाने वाले लौह पुरुष को "शततुल्य" की उपाधि से विभूषित किया जाता है। इसका अर्थ है, एक ऐसा

आदमी जो सौ दुश्मनों पर भारी हो। यदि हम अपने प्रशिक्षण को बेहतर बनायें और अपनी रक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करें तो हमारे लिए "शततुल्य बराबर" बनना सर्वथा संभव हो जाएगा।

हम इस समय सेना में विस्तार करने की स्थिति में नहीं हैं। हमारे पास पहले ही जन-शक्ति की कमी है। सेना का और विस्तार राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के निर्माण में बाधा डालेगा।

अतः हमारे लिए एकमात्र सही उपाय यही है कि हम वर्तमान सैनिकों के साथ अपने मोर्चों को दृढ़ करें, बेहतर सैन्य प्रशिक्षण की व्यवस्था करें और तमाम सैनिकों को क्रान्तिकारी भावना से पूर्णतया लैस करें ताकि उनमें से हरेक सौ और दुश्मनों से टक्कर ले सके। यदि रक्षा-निर्माण कार्य और भी उचित ढंग से सम्पन्न किया जाए और तमाम सैनिक अचूक निशानेबाज का स्तर प्राप्त कर लें, स्वयं को अदम्य जुझारू भावना से लैस कर लें तो हरेक को सौ के बराबर बनाना बड़ा आसान होगा।

हमारी जनता समाजवादी निर्माण में छोलिमा भावना से तभी आगे बढ़ाव जारी रख सकती है, जब आप अपनी लड़ाकू क्षमता में वृद्धि करें और अपनी रक्षा पंक्ति को अभेद्य बनायें। इससे पार्टी के इस नारे को साकार किया जा सकेगा कि एक हाथ में दरांती और हथौड़ा और दूसरे में राइफल लेकर, समाजवादी निर्माण और राष्ट्रीय रक्षा दोनों को आश्वस्त किया जाना चाहिए।

यदि हम समाजवाद का बेहतर ढंग से निर्माण करें और अपनी शक्ति को और अधिक बढ़ाएं, तभी राष्ट्रीय पुनरेकीकरण के प्रश्न को शीघ्र सुलझाया जा सकता है।

हमारे देश के दक्षिणी आधे भाग में क्रान्ति की समस्या के समाधान के लिए दो बातें जरूरी जरूरी हैं। एक यह कि हम उत्तरी आधे भाग में अधिक सफलतापूर्वक समाजवाद की रचना करें और अपने क्रान्तिकारी मोर्चे को अभेद्य गढ़ में परिणत कर दें, तथा दूसरी यह कि दक्षिणी आधे भाग में जनता को स्वतः उठ खड़े होने के लिए प्रोत्साहित करें। दक्षिणी आधे भाग में क्रान्ति तब तक सम्पन्न नहीं हो सकती, जब तक कि वहां के लोग स्वतः उठ खड़े नहीं होते।

इसका निश्चय ही यह आशय नहीं है कि हम दक्षिणी आधे भाग में क्रांति लाने का कार्य केवल दक्षिण कोरियाई लोगों पर छोड़ देते जा रहे हैं। अमरीकी साम्राज्यवादियों को खदेड़ बाहर करना और देश को पुनः एक करना, यह सम्पूर्ण कोरियाई जनता का समान कर्तव्य है। इसलिए हमें अपनी क्रान्ति को पूर्णतः सम्पन्न करने के प्रयोजन से सतत संघर्ष जारी रखना चाहिए। हमें अपने दक्षिण कोरियाई स्वदेशवासियों को नहीं भूलना चाहिए; हमें अपनी क्रान्तिकारी शक्तियों को दृढ़ता से तैयार करना चाहिए।

फिर भी दक्षिण में जनता के संघर्ष के बिना दक्षिणी आधे भाग में क्रान्ति को सम्पन्न करना असम्भव ही है। दक्षिण की ओर पहले अभियान के दौरान हमें इसकी गम्भीर अनुभूति हुई थी।

अमरीकी दुष्टों के जरखरीद जासूस पाक होन योंग ने डींग मारी थी कि दक्षिण कोरिया में दो लाख पार्टी सदस्य हैं और अकेले सिओल में उनकी संख्या ६० हजार है। लेकिन वास्तविकता यह है कि यांकियों से मिलकर इस बदमाश ने दक्षिण कोरिया में हमारी पार्टी को पूर्णतया नष्ट कर दिया। यद्यपि हम राक-दोंग-गांग नदी क्षेत्र तक आगे बढ़ गये थे, फिर भी दक्षिण कोरिया में कोई विद्रोह नहीं भड़का। पुसान ताएगु से बिल्कुल पास ही है और यदि पुसान में कुछ हजार मजदूर प्रदर्शन करने के लिए उठ खड़े हुए होते तो मामला कुछ और हो गया होता। यदि दक्षिणी आधे भाग में कुछ लोग विद्रोह का झण्डा बुलन्द कर देते तो हमने निश्चित रूप से पुसान को भी मुक्त करा लिया होता और फिर अमरीकी दस्यु इस धरती पर कदम न रख पाते।

अतः यह सबसे महत्वपूर्ण बात है कि दक्षिणी आधे भाग में जनता को जाग्रत किया जाए और उसे क्रान्तिकारी संघर्ष में भाग लेने को प्रेरित किया जाए।

चेतना के समुचित स्तर पर तमाम लोगों के पहुंचने में अभी कुछ समय लगेगा। भूख और गरीबी दक्षिण कोरियाई जनता को निरन्तर प्रशिक्षित तथा जाग्रत कर रही हैं। बार-बार धोखा खाने और व्यक्तिगत रूप से भीषण कठिनाइओं का सामना करने पर ही लोगों में चेतना उत्पन्न होती है।

जब सिंगमन-री का तख्ता पलटा गया, तो मैं राजनीति के सोंगदो कालेज के छात्रों से मिला, जोकि अति उत्तेजित थे क्योंकि उनमें से अधिकतर दक्षिणी आधे भाग से आये हुए थे। वे खुशी से झूम रहे थे और एक स्वर से बोले : "अब सब कुछ तय हो गया है। प्रधानमन्त्रीजी, क्या ऐसा नहीं है ? "उस समय मैंने इन शब्दों से उन्हें सम्बोधित किया" जब सिंगमन-री का तख्ता पलटेगा तो कोई सिंगमन 'छांग' आ जाएगा। जब सिंगमन 'छांग' का तख्त पलटेगा तो कोई सिंगमन 'पाक' आ जायेगा। पुनरावृत्ति की इस प्रक्रिया में दक्षिणी आधे भाग के लोग पूर्णतः चैतन्य होंगे। और अंततोगत्वा शत्रु के विरुद्ध उठ खड़े होंगे। तब कहीं 'जाकर दक्षिणी आधे भाग में क्रान्ति की समस्या सुलझेगी और आप अपने जन्म-स्थानों को लौट सकेंगे।'

यह एक तथ्य है कि सिंगमन-री का तख्ता पलटने के बाद सिंगमन 'छांग' पदासीन हुआ। जब छांग म्योन सत्ता में था, दमन किंचित कम हो गया और लोग थोड़ा उभरने लगे। उस समय पुनरेकीकरण का प्रश्न वास्तव में समाधान की ओर बढ़ता दीखने लगा। लेकिन जब तक यांकी वहां कायम हैं, यह कार्य इतना

आसान नहीं हो सकता उत्तर के युवकों से मिलने के लिए दक्षिण कोरियाई युवकों की पान मुनजोम दौड़े जाने की योजना से डर कर यांकियों ने अपने जासूसों को छांग म्योन शासन का तख्ता पलटने को उकसाया और जासूसों के वर्दीधारी गिरोह को सत्तासीन कर दिया। देर-सबेर इन सैन्य गिरोहों को भी उखाड़ फेंका जाएगा। लेकिन यह साफ है कि उनके स्थान पर कोई अन्य दुष्ट सत्तारूढ़ हो जाएगा। यह मत सोचिए कि पाक जुंग ही के उखाड़ फेंके जाने के बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। असल सवाल लोगों को जाग्रत करने का है। तमाम युवा लोगों को जगाना होगा, मजदूरों और किसानों को जगाना होगा और फिर "कोरिया गणतन्त्र सेना" के सैनिकों को जगाना होगा। वे धीरे-धीरे जागृत हो रहे हैं। हमें उनको शीघ्र जागृत करने के लिए सक्रिय सहायता देनी होगी।

यदि दक्षिण के युवा लोग आएं और कम से कम प्योंगयांग देखें तो कितनी जल्दी वे जागृत हो उठेंगे ! यदि हम कामयाबी से समाजवाद का निर्माण करें, दक्षिण कोरियाई लोगों को उत्तरी आधे भाग में जनता के सुखी जीवन का दर्शन करायें और उन्हें चैतन्य करने के लिए अथक शिक्षा कार्य करें तो तमाम दक्षिण कोरियाई लोग हमारे पक्ष में हो जाएंगे। तब यांकियों के पास कोई रास्ता न रहेगा और दक्षिणी आधे भाग में क्रान्ति का प्रश्न हमेशा-हमेशा के लिए सुलझ जाएगा।

चीनी जनता ने भी जंगी सरदारों के बीच सत्ता के लिए छीनाझपटी से लम्बे समय तक कष्ट भोगा था। बु फेई-फु, चांग त्सो-लिन, फेंग यु-शियांग और अन्य कई जंगी सरदार सत्तारूढ़ हुए और एक के बाद एक अपदस्थ कर दिये गये। बार-बार ऐसा होता रहा और इस प्रक्रिया में लोगों की आंखें खुलनी शुरू हुईं और उन्होंने च्यांग काई-शेक को हराने के लिए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का साथ दिया और अन्ततोगत्वा क्रान्ति को सम्पन्न किया।

केवल आत्मनिष्ठ आकांक्षा से क्रान्ति नहीं आ सकती। क्रान्ति की विजय के लिए तमाम वस्तुगत परिस्थितियों का परिपक्व होना आवश्यक है। दक्षिणी आधे भाग में क्रान्ति की विजय के लिए यह जरूरी है कि उत्तरी आधे भाग में क्रान्तिकारी शक्तियों को और दृढ़ बनाया जाय, तथा खासतौर पर दक्षिण मे लोगों को जगाया जाय। जिस प्रकार दक्षिण के युवा लोग उठ खड़े हुए थे और उन्होंने सिंगमन-री का तख्ता पलट दिया था, उसी प्रकार तमाम दक्षिण कोरियाई जनता को अमरीकी साम्राज्यवाद के विरुद्ध उठ खड़े होना होगा।

यदि हम दक्षिणी आधे भाग में कठपुतली सैनिकों के साथ भी उचित रूप से कार्य का संचालन करें तो उन्हें जनता के पक्ष में, क्रान्ति के पक्ष में जीत लेना संभव है। कठपुतली सेना के अफसर जमींदारों और पूंजीपतियों के बेटे हो सकते हैं परन्तु सैनिक तो सभी मजदूरों और किसानों के बेटे-बेटियां हैं। यदि उनमें

वर्ग चेतना जगा दी जाए तो हो सकता है कि वे अपनी बन्दूकों का रुख अमरीकी दुष्टों की ओर मोड़ दें।

हमें शत्रु सैनिकों के साथ कार्य को तेज करते जाना चाहिए। यह कोई लुकी-छिपी बात नहीं है कि क्रान्तिकारी सेना शत्रु के सैनिकों के बीच राजनीतिक कार्य करती है। एक बार सेना क्रान्ति के पक्ष में हो जाए तो शासक वर्गों का विनाश अनिवार्य हो जायेगा। अतः कठपुतली सेना को जनता के पक्ष में करने के उद्देश्य से शत्रु के सैनिकों में काम करना अति महत्वपूर्ण है।

ऐसा लगता है कि आपने अभी तक पूरी तरह यह अनुभव नहीं किया है कि दक्षिणी आधे भाग में क्रांति के लिए दक्षिण कोरियाई लोगों में जागृति का आना और खासतौर पर उनके संघर्ष का छिड़ना जरूरी है। बेशक शत्रु के सैनिकों को अपने पक्ष में लाने के लिए उन्हें शिक्षित करना कोई आसान कार्य नहीं है। यह कार्य लम्बी अवधि की एक विस्तृत योजना के तहत बड़े उद्यम के साथ संपन्न किया जाना चाहिए। चंद असफल प्रयासों के बाद आपको हिम्मत हारकर बैठ नहीं जाना चाहिए।

क्रान्ति के लिए तैयारियां जरूरी हैं। अब आगे आपको "कोरिया गणतन्त्र सेना" के साथ अथक कार्य करना चाहिए और पर्याप्त तैयारियां करनी चाहिए। ऐसी तैयारियां इस समय संभवतः महत्वहीन लगें, लेकिन आगे चलकर वे एक बड़ी निधि का रूप धारण कर लेंगी।

दक्षिणी आधे भाग में क्रान्ति बड़ी हद तक अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति से भी सम्बद्ध है। अमरीकी दुष्टों के विरुद्ध संघर्ष विश्व में सर्वत्र छेड़ा जाना चाहिए और उन्हें अंधी गलियों में पहुंचा दिया जाना चाहिए। सबसे पहले तमाम एशियाई लोगों को एकजुट होकर यांकियों को एशिया से खदेड़ बाहर करना होगा। अमरीकी साम्राज्यवाद जनता से अधिकाधिक कटता जा रहा है और उसकी पराजय का दिन निकट आता जा रहा हैं।

आज आम अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति हमारी क्रान्ति के अनुकूल है। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में समाजवाद की शक्तियां साम्राज्यवाद की शक्तियों की अपेक्षा कहीं अधिक मजबूत हैं। इसके अलावा उपनिवेशों में राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन तेज होता जा रहा है। साम्राज्यवादी शिविर के अन्दर अंतःविरोध और भी बढ़ते जा रहे हैं। फ्रांस अमरीका के विरुद्ध है तथा ब्रिटेन और फ्रांस के बीच भी गहरा विरोध पैदा होता जा रहा है। स्थिति साम्राज्यवादियों के प्रतिकूल और हमारे अनुकूल है।

यही कुछ दक्षिण कोरिया की स्थिति के बारे में कहा जा सकता है। इस समय दक्षिण कोरिया पर काबिज अमरीकी साम्राज्यवादी और उनके पिट्ठ

हताश स्थिति में पहुंच गये हैं। जंगी सरगना आपस में बटे हुए हैं, एक दूसरे से टकरा रहे हैं और भूतपूर्व डेमोक्रेटिक पार्टी तथा लिबरल पार्टी के गुट भी पाक जुंग ही के विरुद्ध आवाज बुलंद कर रहे हैं।

इस सबसे स्पष्ट है कि भविष्य में दक्षिण कोरियाई क्रान्ति के विकसित होते जाने के लिए परिस्थितियां विद्यमान हैं।

हमें अपने-आपको खूब तैयार करना चाहिए, लेकिन इसलिए नहीं कि स्थिति हमारे प्रतिकूल है या युद्ध का भारी खतरा है। जब हमारी पार्टी ने अपनी रक्षात्मक शक्ति में वृद्धि के लिए प्रस्ताव पारित किया तो उसका उद्देश्य सम्पूर्ण जनता को सशस्त्र करना और पूरे देश को एक दुर्ग में बदल देना तथा इस प्रकार शत्रुओं को हमें भड़काने के प्रयासों से रोकना था। हम देश की रक्षा शक्ति को जो दृढ़ करते हैं, उसका उद्देश्य शत्रु द्वारा छेड़ दिये गये किसी युद्ध से निबटना इतना नहीं है, जितना दक्षिण कोरिया में क्रान्तिकारी शक्तियों के बढ़ने और जन संघर्ष के तेज होने पर आवश्यकता पड़ने पर दक्षिण कोरियाई क्रान्ति को मदद पहुंचाने तथा शत्रु को युद्ध छेड़ने के दुःसाहस से रोकने से लिए पूरी तैयारियां करना है।

दुश्मन हमेशा कमजोर स्थल खोजते हैं और जैसे ही उसका पता चलता है, वे टूट पड़ते हैं। साम्राज्यवाद की प्रकृति ही ऐसी है कि वह कमजोर पर झपटता है। यदि हम बिना चौकसी के ऊंघने लगें या सारा समय बेकार गवांते रहें तो दुश्मन हम पर हमला कर सकता है, अतः हमें अपनी रक्षा क्षमताओं को बढ़ाना होगा, सतर्क रहना होगा और हमेशा पूर्ण जुझारू स्थिति में डटे रहना होगा।

यांकी क्यूबा से उतनी ही घृणा करते हैं, जितनी पैर में चुभे कांटे से करते हैं, और दुष्ट केनेडी क्यूबा पर चढ़ दौड़ने के मौके की ताक में है। लेकिन प्रधान मन्त्री फिडेल कास्ट्रो के नेतृत्व में कयूबाई जनता अन्तिम आदमी तक लड़ने को दृढ़ संकल्प है और उसने यांकियों द्वारा मौके पर पड़ताल को स्पष्टतः ठुकरा दिया है।

इस समय क्यूबा के पास नियमित सेना के अतिरिक्त भारी संख्या में मिलीशिया जवान हैं। क्यूबा अमरीका का उपनिवेश रहा है, इसलिए वह अवश्य ही यांकियों को बेहतर जानता है और उनसे गहरी नफरत करता है। हमने हाल के संकट में देखा कि कैसे कंधों पर राइफलें उठाए और लड़ने का संकल्प किये सम्पूर्ण जनता उठ खड़ी हुई थी। दुकानों पर माल बेचने वाली महिलाएं काम करते समय रिवाल्वर साथ रखती थीं और तमाम फैक्टरी मजदूर स्वचालित राइफलें लिये होते थे। वे सबके सब किसी भी क्षण शत्रु से जूझने को तैयार थे। जब हर कोई इस तरह लामबंद हो जाए तो यांकी भी शक्तिहीन हो जाते हैं। अतः वे अंततः क्यूबा पर हमला करने में असमर्थ रहे।

सबसे जरूरी चीज एकता है। जब तक सारी पार्टी और तमाम लोग एकजुट

हों, भय पास नहीं फटक सकता।

यह कहने की कोई जरूरत नहीं है कि क्यूबा हमारी अपेक्षा बहुत ज्यादा कठिन स्थिति में है। वह शत्रु से दूर नहीं है लेकिन समाजवादी शिविर से बहुत दूर है। फिर भी क्यूबाई जनता का वीरोचित संघर्ष उसे कायम रखेगा। जैसाकि हमारी पार्टी ने घोषित किया था क्यूबाई जनता ने उस समय कामरेड फिडेल कास्ट्रो के नेतृत्व में सात राइफलें लेकर सशस्त्र संघर्ष छेड़ा जब यांकियों के पास परमाणु बम थे, और अन्ततः क्रान्ति को विजय मंडित करते हुए उन्होंने अपने ही प्रयासों से अमरीकी कठपुतली सरकार को उलट दिया। यदि केवल क्यूबाई जनता पूर्णतया एकजुट रही तो वह अपनी क्रान्ति की बराबर रक्षा करती रहेगी।

वस्तुतः यह अचम्भे की बात है कि क्यूबा ने अमरीका की नाक तले समाजवादी क्रान्ति संपन्न की है और उसे डटे हुए चार साल हो चुके हैं। इससे पूर्व, जब स्पेनी क्रान्ति हुई तो सोवियत संघ और अन्य कई देशों ने स्वयंसेवक भेजे परन्तु अन्त में फासिस्टों ने उसे विफल कर दिया था। अब स्थिति वह नहीं है, जो पहले हुआ करती थी। अब यह स्पष्ट हो चुका है कि यदि लोग एकजुट होकर लड़ें तो कहीं भी क्रान्ति विजयी हो सकती है। लेटिन अमरीकी लोग क्यूबा की मिसाल का अनुसरण करते हुए क्रान्तिकारी संघर्ष के लिए बहादुरी से उठ खड़े हो रहे हैं। भविष्य में विश्व के तमाम भागों में और भी लोग साम्राज्यवाद के खिलाफ उठ खड़े होंगे।

वर्तमान स्थिति क्रान्ति के लिए बहुत अनुकूल है। मुझे एक मात्र और सबसे बड़ी चिन्ता इस बात की है कि कहीं आप अपनी सतर्कता शिथिल न कर दें और श्रान्त न हो जाएं, क्योंकि आपको लम्बे समय से शत्रु का सामना करना पड़ रहा है। हमारे देश में लम्बे युद्ध विराम की वजह से संभव है, आप थकावट महसूस करने लगें। आपको इसके खिलाफ चौकसी बरतनी होगी। संशोधनवाद की घुसपैठ को रोकना भी जरूरी है। संशोधनवाद हमारी एकता को आघात पहुंचाता है और जनता की जुझारू भावना को कमजोर करता है।

यदि हम सब वैचारिक दृष्टि से एकजुट रहें और कार्रवाई के लिए सर्वथा कटिबद्ध रहें तो शत्रु हम पर हमला करने का दुःसाहस न करेगा। हमें कभी भी ढिलाई न बरतनी चाहिए। हमें दक्षिण कोरियाई जनता के संघर्ष में उसकी मदद के लिए तैयारी करनी चाहिए।

हमारी जनता ने राष्ट्र की रक्षा-क्षमता में अभिवृद्धि और समाजवाद के निर्माण दोनों क्षेत्रों में महान सफलताएं प्राप्त की हैं। आज हमारी अग्रिम और पिछली पंक्तियां सुदृढ़ की जा चुकी हैं और जनता का हौसला बहुत बुलन्द है। हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि हमने और भी महान विजय हासिल करने के

लिए मजबूत बुनियादें कायम कर ली हैं।

जन सेना की स्थापना की १५वीं वर्षगांठ के अवसर पर अग्रिम क्षेत्रों का निरीक्षण दौरा करते हुए मैं आपके किये गये कार्यों को देख कर बहुत ही खुश हुआ हूं। मैं पार्टी केन्द्रीय समिति को रिपोर्ट दूंगा कि अग्रिम क्षेत्रों में हमारे जवानों और अधिकारियों का मनोबल बहुत ऊंचा है, और वे सभी विश्वसनीय ढंग से मातृभूमि की रक्षा पंक्ति की हिफाजत कर रहे हैं। मैं कामना करता हूं कि आप अपने कार्य में उत्तरोत्तर और भी महान सफलताए प्राप्त करें। पूर्वकाल की तरह आगे भी हम विजय प्राप्त करते रहेंगे।

तकनीकी क्रान्ति को सम्पन्न करने में वैज्ञानिकों और तकनीशियनों का कर्तव्य

वैज्ञानिकों और तकनीशियनों के सम्मेलन में दिया गया भाषण

२२ मार्च १९६३

साथियो,

हम ११ वर्ष के अन्तराल के बाद वैज्ञानिकों और तकनीशियनों का सम्मेलन आयोजित कर रहे हैं।

वैज्ञानिकों के पहले सम्मेलन और इस सम्मेलन के बीच जो दशाब्दी गुजरी है उसमें हमारे वैज्ञानिकों और तकनीशियनों की पांतों में विस्मयकारी वृद्धि देखने में आयी है। मुक्ति के फौरन बाद हमारे पास सिर्फ चन्द दर्जन राष्ट्रीय तकनीकी कार्यकर्ता थे। जब हमने १९६२ में वैज्ञानिकों का सम्मेलन किया था तो वैज्ञानिक और तकनीकी कार्यकर्ताओं की संख्या कुछेक सैंकड़े से ज्यादा नहीं थी। आज १० वर्ष की अवधि के बाद अकेले इंजीनियरों और वैज्ञानिकों की संख्या ६०,००० के लगभग हैं और यदि हम कनिष्ठ विशेषज्ञों को भी जोड़ दें तो वज्ञानिकों और तकनीशियनों की कुल संख्या १,८०,००० पहुंच जाती है।

न सिर्फ वैज्ञानिक और तकनीकी कार्यकर्ताओं की पांतों में अत्यधिक वृद्धि हुई है बल्कि विज्ञान और प्रविधि के विकास के क्षेत्र में भी महान उपलब्धि की गयी हैं। इस दस वर्ष की अवधि में हमारे राष्ट्र के अर्थतंत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। हमने युद्ध के ध्वंसावशेषों पर तीनवर्षीय योजना चलायी और पंचवर्षीय योजना पूरी की; और अब हम देश के औद्योगीकरण और तकनीकी क्रान्ति को सम्पन्न करने के लिए सफलतापूर्वक सात वर्षीय योजना लागू कर रहे हैं। निर्माण के इस महान संघर्ष के दौरान हमारे वैज्ञानिकों और तकनीशियनों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

हमारे लोगों ने समाजवादी निर्माण के क्षेत्र में जो सबसे बड़ी सफलता पायी है वह यह है कि हमने स्वयं अपने बल पर कारखानों के डिजाइन बनाना, उनका निर्माण और संचालन करना सीख लिया है। यह शानदार सफलता हमारे वैज्ञानिकों और तकनीशियनों के निष्ठापूर्ण प्रयासों से जुड़ी हुई है।

पार्टी की केन्द्रीय समिति की ओर से मैं इस अवसर पर वैज्ञानिक अनुसंधान के क्षेत्र में आपकी विशिष्ट उपलब्धियों की अत्यधिक सराहना करता हूं तथा वैज्ञानिक और तकनीशियनों के प्रति इस बात के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं कि उन्होंने आर्थिक और सांस्कृतिक निर्माण क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान किया है।

साथियो, आज हमारे सम्मेलन का तीसरा दिन है। आप में से अनेक लोगों ने यहां इस विषय पर विचार-विमर्श किया है कि अब आगे क्या किया जाना है तथा इस संबंध में अपने बहुमूल्य सुझाव पेश किये हैं। वैज्ञानिकों और तकनीशियनों का यह सम्मेलन हम आज चौथी पार्टी कांग्रेस के डेढ़ वर्ष बाद आयोजित कर रहे हैं जो थोड़ा बहुत देर से किया गया मालूम होता है। बहरहाल, यह विलम्ब कोई बुरी चीज नहीं है। इस काल में हमने चौथी पार्टी कांग्रेस द्वारा निर्धारित कर्तव्यों की तामील करते हुए बहुत-सी चीजों की आजमाइश की है तथा विभिन्न अनुभव जुटाये हैं। कई क्षेत्रों में हमें इस बात की स्पष्ट समझदारी प्राप्त हो गयी है कि पार्टी कांग्रेस ने वैज्ञानिकों और तकनीशियनों को जो दायित्व सौंपे थे, उन्हें पूरा कर सकना पूरी तरह संभव है या नहीं। हमें अपनी अच्छाइयों और बुराइयों की बेहतर समझदारी प्राप्त हो गयी है। मेरा विचार है कि कुछ अनुभव संचित कर लेने तथा अपनी अच्छाइयों और बुराइयों से स्वयं को यथेष्ट अवगत कर लेने के बाद उन सारी चीजों का निचोड़ निकालने और अपने कर्तव्यों पर विचार-विमर्श करने के लिए अब इस सम्मेलन को बुलाना हमारे लिए अपेक्षाकृत अधिक लाभकारी है।

शुरू-शुरू में मैं आपको वैज्ञानिकों और तकनीशियनों के लिए चौथी पार्टी कांग्रेस द्वारा निर्धारित कर्तव्यों की याद दिलाना चाहूंगा। पार्टी कांग्रेस ने उनपर समाजवादी निर्माण के व्यावहारिक कार्य के दौरान उभरकर सामने आयी फौरी वैज्ञानिक और प्राविधिक समस्याओं को हल करने के लिए अत्यधिक प्रयास करने तथा समुन्नत मानव जाति द्वारा अर्जित वैज्ञानिक उपलब्धियों को आत्मसात करके अपने देश के विज्ञान को निकट भविष्य में अन्तर्राष्ट्रीय धरातल पर लाने का दायित्व सौंपा था। उसने हमारे वैज्ञानिकों पर तकनीकी क्रान्ति को सम्पन्न करने में सक्रिय रूप से भाग लेने, कृषि समेत राष्ट्रीय अर्थतंत्र की सारी शाखाओं के यंत्रीकरण के लिए अपने भरसक प्रयत्न करने, अर्थतंत्र की कुछ शाखाओं में व्यापक यंत्रीकरण और स्वचालन लागू करने तथा हमारे देश के प्राकृतिक संसाधनों पर टिकी हुई एक स्वतंत्र औद्योगिक प्रणाली की मजबूती के साथ स्थापना करने का दायित्व भी

सौंपा था। एक शब्द में ये देश के औद्योगीकरण के दायित्व हैं।

पार्टी ने सातवर्षीय योजनाकाल में औद्योगीकरण सम्पन्न करने का कर्तव्य निर्धारित किया है। हम आज लगातार ३ वर्षों से इसकी तामील करते आये हैं। उस काल में हमने आर्थिक और सांस्कृतिक निर्माण के क्षेत्र में तथा विज्ञान और प्रविधि के उत्थान के मामले में महान सफलताएं प्राप्त की हैं।

किन्तु हम अभी तक जो कुछ कर सके हैं उस पर हम संजीदगी से नजर डालते हैं तो हमें यह स्वीकार करना पड़ता है कि जिस तरह हमारा उद्योग अभी भी विभिन्न दृष्टियों से नाकाफी तौर पर लैस है ठीक उसी तरह हमारा विज्ञान और प्रविधि अभी भी गहनता और विस्तार की दृष्टि से बढ़ नहीं सकी है। कई क्षेत्रों में हमारा विज्ञान और प्रविधि अपूर्ण, एकांगी तथा आंशिक है।

खासतौर पर हमारे देश में यंत्र-इंजीनियरिंग स्तर से नीचा है जिससे हमें अनुसंधान कार्य चलाने और उसके नतीजों को उत्पादन में लागू करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। हमारे मशीन निर्माण उद्योग को जिस तरह हमें आवश्यक मशीनें और उपकरण प्रदान करना चाहिए वैसा कर पाने में वह असफल है। अपने संक्षिप्त इतिहास और अनुभवहीनता के कारण हमारे मशीन निर्माण उद्योग के पास सिर्फ थोड़े से ही डिजाइन-निर्माता हैं और उनकी योग्यता निम्न है। साथ ही हमारा धातु कर्म उद्योग पर्याप्त मात्रा में निर्माण कार्य संबंधी विभिन्न प्रकार के उन इस्पाती, खासतौर पर मिश्र इस्पात और हलकी धातुओं जैसी सामग्रियों की सप्लाई कर पाने में असफल हैं, जिनकी मशीन निर्माण में आवश्यकता पड़ती है।

तकनीकी क्रान्ति सम्पन्न करने के दौरान, चौथी पार्टी कांग्रेस द्वारा विज्ञान के लिए निर्धारित कर्तव्यों को पूरा करने के दौरान हमें यही कमियां और खामियां नजर आयीं तथा इन्हीं कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अंतिम विश्लेषण में, यही वे खामियां हैं जिनका आपके भाषणों में उल्लेख हुआ है। ये ऐसी कमियां हैं जिनसे हम अपनी त्वरित प्रगति के दौरान पूरी तरह बच नहीं सकते।

हममें बहुत-सी कमजोरियां हैं और भविष्य में हमें बहुत से काम करने हैं। हमारे पास कतई कोई वजह नहीं है कि अभी तक जो नतीजे हासिल किये जा चुके हैं उन पर हम आत्मतुष्ट होकर बैठे रहें। हमने तो सिर्फ अभी नींव रखी है।

जैसाकि आप सभी जानते हैं, ब्रिटेन को अपना औद्योगीकरण पूरा करने में ३०० वर्ष लगे, तथा जापान को आधुनिक उद्योग का निर्माण शुरू किये लगभग एक शताब्दी हो गयी।

और औद्योगिक निर्माण का हमारा इतिहास कितने दिनों का है? अगर युद्ध विराम के वर्ष से लें तो सिर्फ १० वर्ष का तथा मुक्ति के वर्ष से जोड़ें तो अधिक से

अधिक १७ वर्ष का। इस अवधि में हमने युद्ध के मलबे से अर्थतन्त्र का पुनर्वास कर लिया है, औद्योगीकरण की नींव डाल दी है तथा अपने बूते सारे कारखानों और उद्योगों का प्रबंध करने में पूरी तरह सक्षम वैज्ञानिक और तकनीकी कार्यकर्ताओं की पांतें तैयार कर ली हैं। यह एक उल्लेखनीय उपलब्धि है।

बहरहाल, दस वर्ष की अवधि किसी देश का और खासतौर पर हमारे देश जैसे पिछड़े देश का औद्योगीकरण करने के लिए बहुत ही कम समय है। यह कैसे सोचा जा सकता है कि इतने कम समय में अतीत से विरासत में प्राप्त आर्थिक और सांस्कृतिक पिछड़ेपन को पूरी तरह दूर कर दिया जाएगा तथा वैज्ञानिक और तकनीशियन व्यापक और गहन ज्ञान अर्जित कर लेंगे और अनुभव की सम्पदा संचित कर लेंगे? साथ ही यह जाहिर है कि हमने इस अल्प अवधि में जो उद्योग निर्मित किया है वह वैज्ञानिक और तकनीकी कार्यकर्ताओं के सारे तकाजों को पूरा कर सकने में असमर्थ है।

हमारी आर्थिक नींव अभी अपनी पूरी संभावनाओं को साकार नहीं कर पा रही है। विज्ञान और प्रविधि के क्षेत्र में जो अनुभव संचित किया है, वह पर्याप्त समृद्ध नहीं है तथा हमारे वैज्ञानिक और तकनीकी कार्यकर्ताओं का ज्ञान व्यापक और गहन नहीं है। इस सबसे सिद्ध होता है कि हमारे पास आत्मतुष्ट होने के लिए कतई कोई आधार नहीं है। हमें विनम्रतापूर्ण, ईमानदारी के रुख के साथ अपना अध्ययन कार्य जारी रखना चाहिए। अगर हम इस बात की डींग हांकते हैं कि अब औद्योगीकरण की नींव डाल दी जाने और बड़ी संख्या में वैज्ञानिकों और तकनीशियनों के प्रशिक्षित कर लिये जाने के बाद एक बार फैसला कर लेने पर हम कोई भी काम पूरा कर सकते हैं, तथा किसी छोटी-मोटी सफलता की पूरी तरह जांच किये बगैर भी उसको मोटी-मोटी सुर्खियां देते हैं तो यह सब उद्धत रुख का सूचक है।

हमें यह महसूस करना चाहिए कि अगर हमारे विज्ञान और प्रविधि को उद्योगीकरण की अपेक्षाओं को पूर्णतः पूरा करना है तो अभी बहुत-सा काम करना शेष है तथा साथ ही अगर इन्हें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाना है तो अभी भी काफी समय की आवश्यकता है। हमें और अधिक वैज्ञानिक और तकनीकी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करना चाहिए तथा अपनी ओर से आपको और अधिक व्यापक तथा और अधिक गहन ज्ञान अर्जित करने की कोशिश करनी चाहिए।

हमारे वैज्ञानिकों और तकनीशियनों में उत्तरदायित्व की भावना तथा एक क्रान्तिकारी के लिए शोभनीय अजेय संकल्प का भी अभाव है। अनुसंधान के क्षेत्र में बहुत से साथी मुख्यतः समाजवादी निर्माण की फौरी समस्याओं को हल करने पर जुटने की बजाय अपनी मर्जी के मुताबिक कार्य करते हैं या गौण महत्व की

समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। कुछेक लोग अपने अनुसंधान कार्य की कठिनाइयों पर विजय पाये बगैर अपनी अध्ययन परियोजनाओं को अधूरा छोड़ देने तथा इस या उस विषय में चोंच मारने के गैरजिम्मेदाराना और कमजोर रुख का भी परिचय देते हैं। वैज्ञानिक और तकनीकी कार्यकर्ताओं को इस प्रकार के गलत रुख को सुधारना चाहिए, पार्टी और राज्य के प्रति जिम्मेदाराना रुख अपनाना चाहिए तथा किसी भी कठिनाई को दूर करने का क्रान्तिकारी गुण अर्जित करना चाहिए।

वैज्ञानिक अनुसंधान को विकसित करने के लिए राज्य योजना आयोग और आर्थिक मंत्रालयों को चाहिए कि वे उनके कार्य के लिए हर संभव अनुकूल परिस्थिति की व्यवस्था करें। इस प्रसंग में भी अभी तक अनेक कमियां सामने आयी हैं। हम इस बात से इनकार नहीं करते कि बहुत-सी ऐसी परिस्थितियां हैं जो वैज्ञानिकों की सारी आवश्यक अपेक्षाओं को पूरा करने में बाधक होती हैं। किन्तु मुद्दा यह नहीं है। सवाल यह है कि हमारे कुछ आर्थिक कार्यकर्ता इतने अदूरदर्शी हैं कि वे दीर्घकालीन राष्ट्रीय योजना पर कतई विचार किये बगैर सिर्फ तात्कालिक उत्पादन पर ध्यान देते हैं। हम अपने वैज्ञानिकों के लिए उन परिस्थितियों की भी व्यवस्था करने में असफल रहे हैं जो अच्छी तरह हमारी पहुंच में हैं।

हम उनके लिए अनुसंधान की उन सुविधाओं की भी गारंटी नहीं करते रहे जो आसानी से सुलभ थीं। मैं एक उदाहरण देना चाहूंगा। विरामसंधि के फौरन बाद ही हमने प्योंगयांग में एक विज्ञान पुस्तकालय बनाने का निर्णय किया तथा दसियों हजार पुस्तकों की खरीद के लिए भी बन्दोबस्त कर लिया। जिन पुस्तकों के लिए हमने आदेश दिया उनमें से अधिकांश बहुत पहले ही आ गयीं। मगर आज के दिन तक पुस्तकालय निर्मित नहीं हो सका है। हालांकि हम इसके निर्माण के लिए हर साल दबाव डालते रहे फिर भी वह किसी न किसी बहाने टाल दिया जाता रहा। इसके लिये दोष का भागी राज्य योजना आयोग नहीं है जो हर साल अपनी योजना में इस परियोजना को शामिल करता रहा है। उल्टे प्योंगयांग नगर इसे हर साल यह दावा करते हुए छोड़ देता रहा है कि निर्माण कार्य पर जोर-दबाव अधिक है। अकेले यह उदाहरण सिद्ध कर देता है कि हमारे आर्थिक कार्यकर्ता वैज्ञानिक अनुसंधान कार्य पर बहुत ही कम ध्यान देते हैं।

इसके अलावा वित्तीय संस्थाएं वैज्ञानिक कार्यकर्ताओं के लिए विदेशी पुस्तकें प्राप्त करने से कोई सरोकार नहीं रखतीं। खुद तकनीकी पुस्तकों में न तो पूंजीवादी और न संशोधनवादी विचार निहित होते हैं। विदेशी तकनीकी साहित्य से भयभीत होने के लिए कोई वजह नहीं। हमें संसार के सारे देशों से जितनी सूचनाओं की जरूरत हो उतनी सूचनाएं जुटानी चाहिए। चूंकि हम अनुसंधान के लिए भौतिक

परिस्थितियों की सुनिश्चित व्यवस्था करने में असफल रहते हैं, इसलिए वैज्ञानिक कार्यकर्ता अनुसंधान कार्य में अपनी शक्ति न लगा पाने के कारण तुच्छ प्रश्नों पर अपना समय बरबाद करते हैं। इस स्थिति को सुधारा जाना चाहिए।

उनके लिए पायलट संयंत्र भी ठीक-ठीक से नहीं निर्मित किए जाते। यह आम समझदारी की बात है कि वैज्ञानिक अनुसंधान के परिणामों की किसी पायलट संयंत्र में पूरी तरह आजमाइश कर लिये जाने के बाद ही उन्हें उत्पादन में लागू किया जाना चाहिए। अगर उस पिछली सीढ़ी को लांघ कर अनुसंधान के परिणामों को सीधे उत्पादन में लागू कर दिया जाता है तो वह अक्षम्य दु:साहस है। कुछ समय पहले मैंने अपने साथ पार्टी के केन्द्रीय समिति के विभागीय निदेशकों को लेकर नाम्पो नगर पार्टी समिति के कार्य का मार्गदर्शन किया। शायद इस बैठक में नाम्पो भट्ठी के मुख्य इंजीनियर मौजूद हैं। एक गंधक कारखाने, एक कच्चे जस्ते के यार्ड, एक सिकाई की भट्ठी और एक चद्दरें तैयार करने वाले कारखाने जैसे अनेक नये कारखानों और सुविधा-साधनों—जोकि कुल मिलाकर पांच थे—के बीच में ही धातु गलाने की भट्ठी को रोक दिया गया। भट्ठी के बंद किये जाने से बहुत बड़ी मात्रा में सामग्रियों और जन-बल की बरबादी हुई। इन सारी परियोजनाओं को मुख्यत: इसलिए निर्माण के बीच में ही छोड़ दिया गया था कि धातु गलाने की भट्ठी ने उत्पादन में ऐसी चीजों का सूत्रपात करने की कोशिश कि जिन्हें तकनीकी दृष्टि से पूरी तरह हल नहीं किया जा सका था, जोकि परियोजनाओं के गलत वितरण के कारण भी समस्या पैदा हुई थी। यदि उत्पादन में लागू करने के पहले उपयुक्त प्रयोग के माध्यम से पायलट संयंत्रों को निर्मित किया गया होता और तकनीकी समस्याओं को पूरी तरह हल किया गया होता तो ऐसी बरबादी की नौबत नहीं आती। किन्तु आर्थिक कार्यकर्ता एक ओर तो पायलट संयंत्र के निर्माण के लिए धन देने से मक्खीचूस की तरह कुड़मुड़ाते हैं ओर दूसरी और यह मानकर चलते हैं कि इतनी बड़ी राष्ट्रीय क्षति से बचने का कोई चारा नहीं।

आर्थिक कर्मचारियों को सिर्फ तात्कालिक उत्पादन से ही सरोकार नहीं रखना चाहिए। उन्हें भविष्य में दूर तक देखना चाहिए और ख़ुशी से पायलट संयंत्रों के लिए धन देना चाहिए। इस ढंग से वैज्ञानिक कार्यकर्ताओं के लिए अपने अनुसंधान के नतीजों की पूरी तरह पुष्टि करने तथा पायलट संयंत्रों के माध्यम से उन्हें पूर्णता प्रदान करने के लिए अनुकूल परिस्थितियों की व्यवस्था की जानी चाहिए।

इसके अलावा हम वैज्ञानिक क्षेत्रों में अनुसंधान को जो मार्गदर्शन देते हैं उसमें सुधार किया जाना चाहिए। अभी वैज्ञानिक कार्यकर्ताओं के अनुसंधान कार्य के संगठन और निर्देशन में अनेक कमियां सामने आती हैं। न तो विज्ञान अकादमी और न ही विज्ञान एवं प्रविधि का राजकीय आयोग वैज्ञानिक अनुसंधान का सम्यक

मार्गदर्शन करता है। मार्गदर्शन के कार्य में उनकी पहली कमी यह है कि उन्होंने पार्टी की नीति के अनुरूप औद्योगीकरण और तकनीकी क्रान्ति के सबसे फौरी सवालों को हल करने पर ध्यान केन्द्रित करने की बजाय बहुत सारी समस्याओं पर शक्ति बिखरा दी है। ऐसी महत्वपूर्ण समस्याओं को हल करने की कोशिश नहीं की गयी जिनसे दूसरी समस्याओं को हल करने में मदद मिलती। वैज्ञानिक लोग गलत ढंग से ऐसे विषयों पर भी ध्यान केंद्रित करने लगते हैं जो बहुत दिनों तक प्रयोग में नहीं लाये जा सकते अथवा वे ऐसी समस्याओं में डूब जाते हैं जिन्हें दूसरे लोग पहले ही हल कर चुके हैं। बेशक ऐसी समस्याओं का अनुशीलन करना जरूरी है जिन्हें सैद्धान्तिक और तकनीकी दृष्टि से हल किया जा सका है जिससे कि उन्हें अपने देश की वास्तविक परिस्थितियों के अनुरूप प्रयोग में लाया जा सके। हम इस तरह के अनुसंधान के विरुद्ध नहीं हैं।

जो लोग वैज्ञानिक अनुसंधान कार्य का संगठन और निर्देशन करते हैं उन्हें पार्टी की नीति की पूरी तरह तामील करनी चाहिए जिसके अनुसार विज्ञान के क्षेत्र में समाजवादी निर्माण की व्यावहारिक समस्याओं को हल करने के लिए प्रयास करना अभीष्ट है।

वैज्ञानिक अनुसंधान के मार्ग-दर्शन से संबंधित दूसरी कमी यह है कि मंत्रालयों में कार्य का संगठन विभागवादी ढंग से किया गया है। हर मंत्रालय ने शक्तियों का वितरण ऐसे युक्तियुक्त ढंग से करने की बजाय जिससे कि हमारे पास अभी जो थोड़े से अनुभवहीन वैज्ञानिक और तकनीकी कार्यकर्ता हैं वे अपने अनुसंधान कार्य में एक-दूसरे के साथ सहयोग कर सकें, स्वयं अपने-अपने शोध संस्थान और प्रयोग-शालाएं खोल रखी हैं। मंत्री लोग विज्ञान अकादमी और अन्य मंत्रालयों के तहत आने वाली अन्य शोध संस्थाओं को स्वयं अपना नहीं मानते और उन्हें तभी चैन मिलता है जब उनके मंत्रालयों के पास स्वयं अपनी संस्था हो जाये। फलतः एक ही तरह की अनेक शोध संस्थाएं अस्तित्व में हैं तथा इस बात के अनेक उदाहरण हैं जहां एक ही विषय का अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग अध्ययन किया जाता है। मिसाल के लिए, अकेले टेलीविजन अनुसंधान के क्षेत्र में संचार मंत्रालय, प्रसारण आयोग, मशीन-निर्माण उद्योग मंत्रालय जैसी कई जगहों पर शक्ति बिखरी हुई है। वैज्ञानिक अनुसंधान की शक्तियों के इस तरह बिखरे होने की वजह से किसी भी समस्या को उचित ढंग से हल नहीं किया जा सकता। अगर हम इस गलत प्रथा को समाप्त करना चाहते हैं तो हमें बिखरी हुई वैज्ञानिक अनुसंधान शक्तियों को केन्द्रीयकृत करना पड़ेगा। साथ ही राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के विकास के अनुरूप वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए एक संदर्श प्रस्तुत करने वाली योजना बनायी जानी चाहिए, तथा आर्थिक निर्माण के दौरान सामने आने वाली व्यावहारिक

समस्याओं को हल करने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान शक्तियों को केन्द्रीभूत किया जाना चाहिए। इससे हम अपनी मौजूदा अनुसंधान शक्तियों से ही बहुत-सा काम कर सकेंगे।

इसके अलावा हमें वैज्ञानिकों को पार्टी की नीतियों की शिक्षा देने का काम तेज करना चाहिए। इस बैठक ने यह बात दो टूक तौर पर सिद्ध कर दी है कि वैज्ञानिकों और तकनीशियनों को पार्टी नीतियों की शिक्षा देने का काम घटिया ढंग से चलाया गया है। पार्टी की नीति सभी मामलों के सही समाधान का पैमाना है। इस बात को समझे बगैर कोई किसी एक समस्या को भी सही ढंग से हल नहीं कर सकता। आप सभी अनुसंधान में लगे हैं और आपने विस्तृत पठन-पाठन किया है। किन्तु यदि आप पार्टी की नीतियों से परिचित नहीं हैं तो न तो आप साफ-साफ यह समझ सकते हैं कि जिस विषय का आप अध्ययन कर रहे हैं पार्टी उसकी फौरी तौर पर अपेक्षा रखती है या नहीं, और न आप सही-सही इस बात का फैसला कर सकते हैं कि वह मुख्य समस्या क्या है जिसे आज फैसलाकुन तौर पर हल किया जाना है। अच्छे किस्म के कृषि-यंत्र अभी तक नहीं बनाये जा सके हैं, इसका कारण चाहे यह हो कि वैज्ञानिक और तकनीशियन पार्टी की नीति के बारे में अभी साफ नहीं हैं या यह कि वे अपने अनुसंधान कार्य में इसे पूरा करने के लिए पर्याप्त प्रयास नहीं करते। अगर आप ग्रामांचल में तकनीकी क्रान्ति संबंधी पार्टी की हमारी नीति को समझते होते तो आप अच्छी किस्म के ऐसे कृषि-यंत्र बनाने में पूरी तरह सफल हो गये होते जो अपने देश की परिस्थितियों के अनुकूल होते। वैज्ञानिकों और तकनीशियनों को अपना सारा ज्ञान और प्रतिभा पार्टी को समर्पित करना चाहिए। जनता का वैज्ञानिक, जनता का तकनीशियन बनने के लिए यह जरूरी है कि पार्टी की नीतियों का गहराई से अध्ययन किया जाये और उनमें पूरी तरह पारंगत हुआ जाय तथा सदा इन मानदंडों के अनुरूप सही दिशा में काम किया जाय।

आइए, अब मैं आपको तकनीकी क्रान्ति से संबंधित कुछ समस्याओं के बारे में बताऊं। जैसा कि आप सभी जानते हैं, हमारी पार्टी की चौथी कांग्रेस ने राष्ट्रीय अर्थतंत्र की सभी शाखाओं में सर्वांगीण तकनीकी क्रान्ति सम्पन्न करने और देश के औद्योगीकरण करने के काम को सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य के रूप में प्रस्तुत किया था।

अगर हमारे देश में पहले पूंजीवाद का सामान्य रूप में विकास हुआ होता तो प्रविधि का विकास हो चुका होता और फलतः तकनीकी क्रान्ति के दायित्व को आज समाजवादी निर्माण की एक समस्या के रूप में न उठाया जाता। जो देश पूंजीवाद के सामान्य दौर से गुजर चुके हैं और अत्यन्त उन्नत प्रविधि से

सम्पन्न हैं, वहां तकनीकी क्रान्ति के बगैर महज समाजवादी क्रांति के जरिए पूंजीवादी स्वामित्व वाले उत्पादन के साधनों को जनता की सम्पत्ति में बदल कर समाजवाद और कम्युनिज्म का निर्माण किया जा सकता है।

जिन दिनों पूंजीवादी देशों में औद्योगिक क्रान्ति का दौर चल रहा था और प्रविधि का तेजी से विकास हो रहा था, उन दिनों लम्बे अरसे तक हमारा देश सामन्ती हुकूमत और जापानी साम्राज्यवाद के उपनिवेशी प्रभुत्व के अधीन एक गतिहीन, पिछड़ा हुआ कृषि प्रधान राज्य बना रहा। इसीलिए यह जरूरी है कि हमारा देश समाजवाद के निर्माण के दौरान तकनीकी क्रान्ति सम्पन्न करे।

हमारी पार्टी ने हमारे देश के उत्तरी आधे भाग में जनवादी और समाजवादी क्रान्ति सम्पन्न करने के बाद सर्वांगीण तकनीकी क्रान्ति का कर्तव्य प्रस्तुत किया। इस प्रकार हम ऐसी स्थिति में हैं कि समाजवादी व्यवस्था की श्रेष्ठता का अवलम्ब लेते हुए तकनीकी क्रान्ति को तेजी से आगे बढ़ा सकें।

यह सही है कि हमारा देश पहले पिछड़ा हुआ और गत्यावरोध का शिकार था तथा उन्नत देशों के बाद अब वह अपनी तकनीकी क्रान्ति सम्पन्न कर रहा है। तो क्या हमारे लिए विकसित पूंजीवादी देशों के उद्योग की बराबरी में पहुंच सकना असंभव है? निश्चय ही नहीं। पूंजीवादी देशों को जिन कामों को पूरा करने में शताब्दियां लगीं उन्हें हम दशाब्दियों के बीच पूरा कर सकते हैं। हम उन्हें पकड़ लेने और पीछे छोड़ देने में पूरी तरह सक्षम हैं क्योंकि हमारी समाजवादी व्यवस्था पूंजीवादी व्यवस्था से इतनी श्रेष्ठ है कि दोनों की तुलना ही नहीं की जा सकती तथा यह त्वरित आर्थिक और प्राविधिक विकास के लिए व्यापक संभावनाओं का द्वार खोल देती है। गणतंत्र के उत्तरी आधे भाग की दक्षिण कोरिया से तुलना करने मात्र से यह बात स्पष्ट हो जाती है।

गणतंत्र के उत्तरी आधे भाग में, जहां उत्पादन के साधन जनता की सम्पत्ति में बदले जा चुके हैं तथा शोषण और उत्पीड़न से मुक्त समाजवादी व्यवस्था की स्थापना की जा चुकी है, राष्ट्रीय अर्थतन्त्र का विकास बहुत ही तेज गति से हो रहा है।

इसके विपरीत दक्षिण कोरिया, जो न सिर्फ आरम्भ से ही पिछड़ा है बल्कि साथ ही पूंजीवाद के पथ पर चल रहा है, अर्थतंत्र का विकास तेज गति से नहीं हो सकता। आज के दक्षिण कोरिया में मौजूदा कारखाने दिवालिया हो चुके हैं, ग्रामीण अर्थतंत्र का ह्रास होता जा रहा है, बेरोजगारी बढ़ती जा रही है तथा जनता के रहन-सहन का स्तर बद से बदतर हो गया है। दक्षिण कोरिया के लोग इस दुरवस्था से बाहर आने के लिए संघर्ष करते रहे हैं।

परिणामतः सिंगमन-री हुकूमत उखाड़ फेंकी गयी और सिंगमन "छांग"

हुकूमत का पतन हो गया। इसके बाद सिगमन "पाक" सत्ता में आया; वर्तमान स्थिति को देखा जाय तो वह दिन दूर नहीं जब उसका भी पतन हो जाएगा। होजोंग जैसे लोग कल सत्ता में आ सकते हैं। किन्तु चाहे जो शासक उमड़ कर आए, हालात तब तक नहीं बदलेंगे जब तक कि अमरीकी साम्राज्यवादी उपनिवेशी हुकूमत का अस्तित्व बना रहेगा।

उदाहरण के लिए, जापान के औद्यौगीकरण का इतिहास तकरीबन १०० वर्ष का है। किन्तु अगर हम अभी तक हासिल की जा चुकी सफलताओं को लेकर आत्मतुष्ट न हो रहें और गलतियां न करें तथा अगर हम विकास की मौजूदा दर बरकरार रखें तो प्राविधिक दृष्टि से जापान के बराबर पहुंच जाने और उससे आगे बढ़ जाने में हमें १०० वर्ष नहीं बल्कि १५ से २० वर्ष तक लगेंगे। इसलिए यह सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है कि हम समाजवादी व्यवस्था की श्रेष्ठता से लाभ उठाते हुए अपने देश के आर्थिक विकास की ऊंची रफ्तार को बनाये रखें।

हम छोलिमा गति को तभी बरकरार रख सकते हैं जबकि इस श्रेष्ठता के आधार पर हम अपने राष्ट्रीय अर्थतंत्र के सुनियोजित और आर्थिक विकास संचय और उपयोग के बीच उचित संतुलन तथा उद्योग और कृषि के बीच सही साम्यावस्था की गारंटी कर सकें। हम इस रफ्तार को तभी बरकरार कर सकते हैं जबकि हम संतुष्ट हो कर बैठ न रहें बल्कि विज्ञान और प्रविधि को तेजी के साथ विकसित करने के लिए सीखने और अध्ययन करने का काम जारी रखें।

हम समाजवादी लाइनों पर उत्पादन के संबंधों को पुनर्गठित करके शोषण और गरीबी के स्रोतों को पहले ही स्थायी तौर पर उन्मूलित कर चुके हैं। किन्तु अकेले यही पर्याप्त नहीं है। अब हमें जिस चीज की जरूरत है वह है तकनीकी रूपान्तरण जिससे लोग सुगमता से काम कर सकें तथा प्रचुरता का जीवन बिताते हुए भरपूर अर्जन कर सकें।

जैसा कि आप सभी जानते हैं, हम इस समय राष्ट्रीय अर्थतंत्र के हर क्षेत्र में जन-बल की समस्या की गिरफ्त में हैं। जब हम और अधिक खानों को विकसित करना चाहते हैं तो पाते हैं कि हमारे पास जन-बल की कमी है; जब हम और अधिक जमीन तोड़ने और अधिक मछली पकड़ने चलते हैं तो हमें आदमियों की जरूरत पड़ती है। राष्ट्रीय अर्थतंत्र के हर क्षेत्र में तकनीकी क्रान्ति के बगैर हम जन-बल की कमी दूर नहीं कर सकते और उत्पादन नहीं बढ़ा सकते, और इसीलिए जनता के रहन-सहन का स्तर और ऊंचा नहीं उठा सकते।

आज जनता के जीवन-स्तर को ऊंचा करने के लिए हमारी पार्टी ने कौन-सा नारा दिया है? सारे लोगों के लिए एक भरपूर जिन्दगी की व्यवस्था करनी है अर्थात् उन्हें चावल और गोश्त की पूर्ति करनी है, नयनाभिराम वस्त्रों से और

जाड़ों में गर्म ओवरकोटों से सज्जित करना है तथा उनके लिए और अधिक मकान बनाने हैं। इस लक्ष्य के लिए औद्योगिक और कृषि उत्पादन में मूलगामी तौर पर वृद्धि की जानी चाहिए। जब उत्पादन बढ़ेगा तभी राष्ट्रीय आय बढ़ेगी और जनता का जीवन-स्तर सुधरेगा। इसी कारण हमारी पार्टी की चौथी कांग्रेस ने सातवर्षीय योजना की अवधि में औद्योगिक उत्पादन का कुल मूल्य बढ़ाकर लगभग ३.२ गुना करने का कर्तव्य पेश किया है।

औद्योगिक उत्पादन के कुल मूल्य को बढ़ाने के दो रास्ते हैं; एक है मजदूरों की संख्या बढ़ाना; दूसरा है तकनीकी क्रान्ति सम्पन्न करके श्रम उत्पादकता में वृद्धि करना। इस समस्या के प्रसंग में हमारे देश की परिस्थितियां मजदूरों की संख्या बढ़ाकर उत्पादन मूल्य में वृद्धि करने की इजाजत कभी नहीं देंगी। आजकल हमारे पास श्रमशक्ति की अत्यधिक कमी है तथा यदि उत्पादन का विस्तार कर दिया जाता है तो उसके लिए मौजूदा दर को देखते हुए आबादी में वृद्धि की आवश्यक जनशक्ति की संतोषप्रद गारंटी नहीं की जा सकती। साथ ही आबादी बढ़ने का अर्थ है खपत का बढ़ना और मजदूरों की वृद्धि मात्र से ही काम नहीं चलता। हमारे लिए एकमात्र समाधान यह है कि प्रति कर्मचारी उत्पादन मूल्य में वृद्धि करने के लिए मौजूदा कारखानों को यंत्रीकृत और स्वचालित किया जाए तथा इस प्रकार जो श्रमशक्ति मुक्त हो उसका उपयोग अन्य शाखाओं में उत्पादन के विस्तार के लिए किया जाए।

हमें ठीक अभी ही बहुत से काम करने हैं किन्तु श्रम की नाकाफी सप्लाई के कारण हम उन्हें नहीं कर सकते। इसलिए तकनीकी क्रान्ति सम्पन्न करना आवश्यक है। उससे जो कार्यशक्ति मुक्त होगी उसकी मदद से हमें खनिज संसाधनों का पता करना चाहिए जो कि हमारे देश में बहुतायत से हैं, कोयले और कच्चे लोहे की और अधिक खानें विकसित करनी चाहिए तथा और अधिक नये कारखाने निर्मित करने चाहिए। मछियारी उद्योग को और अधिक विकसित किया जाना चाहिए जिससे और अधिक मछलियां पकड़ी जा सकें, तथा ग्रामीण अर्थतंत्र में और अधिक जमीन तोड़ी जानी चाहिए और फसल की प्रति छोंगबो उपज में उल्लेखनीय वृद्धि की जानी चाहिए।

पार्टी की चौथी केन्द्रीय समिति के पांचवें पूर्णाधिवेशन ने अपने सारे सदस्यों के लिए एक लाल चिट्ठी जारी की जिसमें उनसे यह आह्वान किया गया कि उद्यमों में वे जनबल की बचत करें और मुक्त श्रम शक्ति को ग्रामांचलों में भेजें। कुछ समय पहले नाम्पो नगर पार्टी समिति का मार्गदर्शन करते समय मैंने नाम्पो भट्टी के तकनीशियनों के साथ इस बात पर विचार-विमर्श किया कि कैसे तकनीकी क्रान्ति तेजी से और सफलतापूर्वक सम्पन्न की जाय तथा श्रम की बचत करते हुए

कैसे उत्पादन बढ़ाया जाय। उस समय मैंने उनसे पूछा कि धातु गलाने की इस भट्ठी ने कितने मजदूर ग्रामांचल में भेजे हैं तथा उन्हें भेज देने के बाद वे अपनी उत्पादक-योजना को पूरा कर पाये हैं या नहीं। उन लोगों ने जवाब दिया कि उन्होंने लगभग ५०० लोगों को भेजा है और अपनी योजना श्रेय के साथ पूरी कर ली है। मैंने तब उनसे पूछा कि पहले क्यों उनके पास ५०० मजदूर अतिरिक्त थे? उन्होंने बताया कि अपना काम ज्यादा आसानी से करने के लिए उन्हें रखा था।

अगर हम आलसी हैं तो पार्टी द्वारा पेश किये गए तकनीकी क्रान्ति के दायित्व को हम कभी नहीं पूरा कर पाएंगे। हमें इसे पूरा करने के लिए बहुत-सी कठिनाइयों और बाधाओं पर विजय पानी होगी। इसलिए हमने निम्नलिखित कर्तव्य प्रस्तावित किया। वे उन ५०० मजदूरों का उपयोग किए बगैर ही उत्पादन प्रक्रियाओं को यंत्रीकृत और स्वचालित करके मौजूदा श्रम बल से उत्पादन के वर्तमान प्रति मजदूर मूल्य को १५,००० वोन से बढ़ाकर ३०,००० वोन पहुंचाने का यत्न करें। इसके बाद तकनीशियनों ने इस मामले पर विचार-विमर्श करने के लिए एक पार्टी बैठक की और एक निष्कर्ष पर पहुंचे। उन लोगों ने नगर पार्टी समिति की पूर्ण बैठक में भाग लिया और कहा कि वे इस काम को १९६७ तक पूरा कर डालेंगे। बेशक उन्होंने इतनी जल्दबाजी से यह हिसाब लगाया है कि यह सही नहीं भी हो सकता है। फिर भी इस तरह का दृढ़ संकल्प अपने में ही एक अच्छी चीज है।

अगर हर पार्टी द्वारा प्रतिपादित तकनीकी क्रान्ति के कर्तव्य का कोई अध्ययन करता है और उसे आगे बढ़ाने के लिए कठिन प्रयास करता है तो उसे पूरा करने में हम पूर्णतः सफल रहेंगे। हमारे देश में इस क्रान्ति के लिए आवश्यक परि-स्थितियां मौजूद हैं। हमने आधार के रूप में भारी उद्योग की स्थापना कर ली है जिसकी धुरी है मशीन निर्माण उद्योग तथा उद्योगीकरण के लिए पुख्ता नींव रख दी है।

सवाल इस बात पर निर्भर है कि वैज्ञानिक और तकनीशियन पार्टी द्वारा प्रस्तुत तकनीकी क्रान्ति के कर्तव्य को पूरा करने के लिए स्वतः कर्मठता के साथ आगे बढ़ते हैं या नहीं। विज्ञान और प्रविधि के क्षेत्रों में सचमुच हमारे सामने बहुत-सा काम करने को है।

शुरू-शुरू में कृषि के यंत्रीकरण को लीजिए। उद्योग में यंत्रीकरण और स्वचालन अपेक्षाकृत आसान है; किन्तु कृषि में यंत्रीकरण अपेक्षाकृत मुश्किल और लम्बी प्रक्रिया है। किन्तु इसी कारण हम कृषि में यंत्रीकरण को आगे बढ़ाये बगैर इंतज़ार नहीं करते रह सकते। ग्रामीण अर्थतंत्र में तकनीकी क्रान्ति के बगैर

किसानों के काम के भारी बोझ को हल्का नहीं किया जा सकता। कारखानों में मजदूरों को आठ घंटे सिर्फ अपनी खरादों पर काम करना पड़ता है; जहां स्व-चालन सही ढंग से लागू किया जा चुका है वहां वे इन आठ घंटों में कुछेक बार बटनों को दबाते भर रहते हैं और फिर घर चले जाते हैं। किन्तु गांवों में किसान आम तौर पर प्रतिदिन १२ घंटे से अधिक काम करते हैं और कृषि के सबसे व्यस्ततापूर्ण दिनों में १४ घंटे तक काम करते हैं। हमारे किसानों के लिए ऐसा कोई मौसम नहीं होता जब काम कम हो। जाड़ों में भी उन्हें आराम के लिए समय नहीं मिलता बल्कि वे खाद बनाते रहते हैं और पुआल के झोले तैयार करते हैं। इसी कारण नौजवान लोग गांवों में रहना पसंद नहीं करते बल्कि कारखानों में चले जाना बेहतर समझते हैं।

हमारे देश का किसान तबका उत्पीड़न और शोषण से मुक्त हो गया है तथा उसका जीवन-स्तर पहले के मझोले किसानों के स्तर पर पहुंच गया है किन्तु हम उसे अभी तक कठोर और कमरतोड़ श्रम से पूरी तरह त्राण नहीं दिला सके हैं। हमारे किसान हमारे पूर्वजों के जमाने से हजारों वर्ष से जिस कष्टकर श्रम को झेलते आये हैं आज, हम कम्युनिस्टों के सामने उन्हें उस श्रम से मुक्त करने का उच्च सम्मानजनक दायित्व आ पड़ा है।

किन्तु जाहिर है कि हमारे वैज्ञानिकों और तकनीशियनों को किसानों के कठिन श्रम की परवाह नहीं है और वे ग्रामांचल में तकनीकी क्रान्ति को महत्वपूर्ण सवाल नहीं समझते। अगर हम किसानों द्वारा पैदा किये गये चावल से अपना पेट भरते हुए इसी तरह चलते जाते हैं तो हम उनसे सीधे रू-ब-रू कैसे हो सकते हैं? हमें और गम्भीरता से सोचना चाहिए तथा ग्रामीण यंत्रीकरण को आगे बढ़ाना चाहिए जिससे खेतिहर मजदूर और औद्योगिक मजदूर पर श्रम का भार बराबर पड़े।

साथ ही किसानों की आय और रहन-सहन के स्तर को मजदूरों के लगभग बराबर किया जाना चाहिए। जैसा कि आप जानते हैं, कम्युनिस्ट समाज का निर्माण करने के लिए यह जरूरी है कि शहर और गांव के भेद समाप्त किये जा सकें। आपको महज यह नहीं सोचना चाहिए कि शहरों की तरह गांवों में मकानों और सांस्कृतिक प्रतिष्ठानों का निर्माण करके इस समस्या का हल किया जा सकता है। अकेले यह काफी नहीं है। शहर और गांव के भेदों से निजात पाने के लिए मजदूरों और किसानों के बीच श्रम की सघनता, आमदनी और जीवनस्तर और दूसरी सारी दशाओं को बराबरी के दर्जे पर लाया जाना चाहिए। किसानों की आय और जीवन-स्तर को मजदूरों के बराबर लाने के लिए कृषि पैदावार को और तेजी के साथ विकसित किया जाना चाहिए और इसके निमित्त ग्रामांचल में भी तकनीकी

क्रान्ति संपन्न की जानी चाहिए। हम कम्युनिज्म में तभी प्रवेश कर सकते हैं जबकि कृषि उत्पादनकारी शक्तियों को और अधिक विकसित करें; औद्योगिक और खेतिहर मजदूर के अन्तर को दूर करें तथा ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी क्रान्ति के जरिए सारे किसानों के लिए यह सम्भव बनायें कि वे भी मजदूरों जैसा ही प्रचुरता का जीवन बिता सकें।

दक्षिण कोरियाई लोगों के लिए उनके संघर्ष में गणतंत्र के उत्तरी आधे भाग की ग्रामीण तकनीकी क्रान्ति एक महान प्रेरणादायी शक्ति भी होगी। दक्षिण कोरिया में काफी बड़ी संख्या में मजदूर हैं, किन्तु आबादी का विशाल बहुमत किसान है। उत्तरी आधे भाग में हम पहले ही किसानों को शोषण और गरीबी से मुक्त कर चुके हैं, और अगर हम उन सभी को कठोर और कष्टकर श्रम से मुक्त करने तथा प्रचुरता और सुख से पूर्ण जीवन प्रदान करने के लिए ग्रामीण तकनीकी क्रान्ति पूरी कर लें तो दक्षिणी आधे भाग के किसान हमारा समर्थन करेंगे तथा अमरीकी साम्राज्यवादी उपनिवेशी हुकूमत और सामन्ती शोषण प्रणाली के खिलाफ और अधिक पुरजोर ढंग से उठ खड़े होंगे।

तकनीकी क्रांति उद्योग और ग्रामीण अर्थतंत्र दोंनों में ही सम्पन्न की जानी चाहिए। इस क्षेत्र में तकनीकी क्रांति के लिए महत्वपूर्ण यह है कि मौजूदा जीर्ण-शीर्ण मशीनरी और उपकरणों के स्थान पर नयी मशीनरी और उपकरण लाए जायें, जिनका यंत्रीकरण नहीं किया जा चुका है उनका यंत्रीकरण किया जाए, तथा जिनका यन्त्रीकरण किया जा चुका है उनका स्वचालन किया जाय। जब हम नये कारखानें बनायें तो उन्हें बिना चूके यंत्रीकृत या स्वचालित किया जाना चाहिए। यह सच है कि कृषि से उद्योग की तुलना नहीं की जा सकती, किन्तु उद्योग में भी अभी बहुत-सा कठिन श्रम तथा काफी जीर्ण-शीर्ण मशीनरी और उपकरण बरकरार हैं। केन्द्र नियंत्रित उद्योगों में निर्माण, परिवहन, मछियारी और स्थानीय उद्योगों में यही स्थिति है—सारी शाखाओं में हालात कमोबेश एक सी ही हैं।

मैं मछियारी उद्योग में म्योंग्ताए मछलियों की अंतड़ियों की सफाई के यंत्रीकरण की मिसाल देना चाहूंगा। जबकि हमारे देश में सालाना लगभग ३,००,००० टन म्योंग्ताए पकड़ी जाती हैं फिर भी हम म्योंग्ताए के बहुत से नमक मिले अंडे और अंतड़ियों को खाने के लिए इस्तेमाल नहीं कर रहे हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि इस क्षेत्र के वैज्ञानिक और तकनीशियन म्योंग्ताए मछलियों की अंतड़ियों की सफाई जैसे कष्टकर श्रम के यंत्रीकरण पर पर्याप्त ध्यान नहीं देते; वे इस समस्या का हल पुरजोर ढंग से नहीं खोजते। कहा जाता है कि वे म्योंग्ताए की अंतड़ियों की सफाई करने वाली मशीन बनाने के लिए आज पिछले दस साल

से काम करते रहे हैं, मगर वे ऐसी कोई चीज बनाने में सफल नहीं हुए जिसका जिक्र किया जा सके। यही नहीं, जाड़े में म्योंग्ताए की धुलाई और प्रोसेसिंग के लिए सुविधाओं की उचित व्यवस्था नहीं की जा सकी है जिससे म्योंग्ताए की प्रोसेसिंग बहुत पिछड़ी हुई है।

जापानी साम्राज्यवादी हुकूमत के दिनों में लोग जाड़ों में भी ठंडे मौसम में ठिठुरते-कांपते हुए म्योंग्ताए की अंतड़ियों की सफाई करने तथा म्योंग्ताए के नमकीन अंडे तैयार करने और बेचने के लिए मजबूर होते थे जिससे कि वे अपना पेट पाल सकें क्योंकि उन्हें दूसरा कोई रोजगार नहीं मिल सकता था।

किन्तु आज हालात बिल्कुल भिन्न हैं। सारे बच्चे और नौजवान स्कूल जाते हैं या सेना में काम करते हैं, तथा गृहणियां अपने पतियों के वेतन पर सुख से रहती हैं। भला कौन जाड़े के ठंडे मौसम में ठिठुरते हुए म्योंग्ताए की अंतड़ियों की सफाई करने की बात सोचे? जैसा कि मैं राज्य योजना आयोग से हमेशा कहता हूं, म्योंग्ताए मछलियों की अंतड़ियों की सफाई कोई अपनी चाह से तब तक नहीं करेगा जब तक कि हम इमारतें न खड़ी कर दें, इमारतों और मशीनों की व्यवस्था न कर दें तथा मजदूरों के लिए हम पानी के नल न बिछा दें जिससे कि वे मकानों के भीतर बैठ कर आराम से काम कर सकें।

स्थानीय उद्योग में भी हम उत्पादन के यंत्रीकरण के मामले में बहुत पिछड़े हैं और बहुत से श्रम बरबाद करते हैं। इसी वजह से मैंने पिछले साल छांगसोंग में संयुक्त सम्मेलन बुलाया था और यह सिफारिश की थी कि वे कम से कम अर्ध-यंत्रीकरण लागू करें। किन्तु यह काम भी अभी ठीक ढंग से पूरा नहीं किया जा सका है क्योंकि हमारे पदाधिकारी समस्या को पूरी तरह समझते नहीं हैं।

हमें तकनीकी क्रान्ति में सक्रियता के साथ तेजी लानी चाहिए और इस बात को साफ-साफ समझ लेना चाहिए कि इसके बगैर हम आज जिस तरह चाहते हैं उस तरह उद्योग, कृषि, मछियारी या किसी भी अन्य क्षेत्र को और आगे नहीं बढ़ा सकते और न ही जनता के जीवन-स्तर में सुधार लाने के सवाल को हल कर सकते हैं।

अब मैं तकनीकी क्रांति की कुछ महत्वपूर्ण समस्याओं का जिक्र करना चाहूंगा।

तकनीकी क्रान्ति के लिए वैज्ञानिकों को दूसरी चीजों के साथ-साथ यांत्रिक इंजीनियरिंग के गहनतर अध्ययन और विकास के लिए यत्न करना चाहिए।

जैसा कि आप लोगों ने अपने भाषणों में ठीक ही लक्षित किया, हमारे देश ने मशीन निर्माण उद्योग के लिये दर असल व्यापक तौर पर नींव डाल दी है और अगर इस उद्योग का सही इस्तेमाल किया जाय तो यह किसी भी मशीन का निर्माण कर सकता है।

बहरहाल, डिजाइन के काम में बाधाओं की वजह से कोई प्रगति नहीं हो पाती। भोंडी डिजाइनों और बिना बारीकी की गणनाओं के कारण अभी भी बड़े यंत्रों और बारीक यंत्रों का निर्माण नहीं हो पा रहा है।

हमने छोलिमा ट्रैक्टर बनाने के लिए बहुत प्रयास किया। चूंकि हमारे पास कोई खाका नहीं था इसलिए हमने एक ट्रैक्टर खरीदा उसे खोल डाला, एक-एक पुर्जे की डिजाइन बनायी और खुद अपना ट्रैक्टर तैयार किया। यह कहना जरूरी नहीं है कि इस ढंग से अपने आप ट्रैक्टर बनाने में बहुत बड़ी सफलता मिली है किन्तु फिर भी हम अभी तक यह नहीं जानते कि अपनी कृषि के अनुरूप तरह-तरह के ट्रैक्टरों की डिजाइन कैसे बनायी जाय। दूसरों ने जो कुछ बनाया है हम महज उसकी नकल कर सकते हैं।

आज हमारे देश में अकेले यांत्रिक इंजीनियरिंग अनुसंधान संस्थानों में तकरीबन ६०० वैज्ञानिक कार्यकर्ता हैं। संख्या की दृष्टि से देखा जाय तो यह काफी बड़ी शक्ति है किन्तु हमारे वैज्ञानिक और तकनीशियन अभी भी डिजाइन बनाने के काम, यांत्रिकी के विज्ञान आदि में कुशल नहीं हैं, क्योंकि उनके पास व्यवहार और गहन ज्ञान का अभाव है।

जैसाकि कल विचार-विमर्श हुआ था, खुद अपने बूते हमने जो कारखाने बनाये हैं उनमें कमियां हैं। इसमें संदेह नहीं कि हमने अल्प समय के भीतर तेजी से अर्थतंत्र को विकसित करने के लिए कारखानों के निर्माण का कार्य तेज किया। इसका मतलब यह रहा है कि इनमें से कुछेक को बिना बारीकी के जोड़जाड़ कर खड़ा कर दिया गया। पर हम उन कारखानों में भी कमियां पाते हैं जिन्हें उतावली में तैयार नहीं किया गया था। इन सारी खामियों का कारण है हमारी डिजाइनों, यांत्रिक विज्ञान, तापगति विज्ञान आदि में बारीकी की कमी। दूसरे शब्दों में, बहुत से कारखाने यांत्रिक इंजीनियरिंग की समस्याओं के पूरी तरह हल न किये जा सकने के कारण अभी भी अपनी पूरी समाई भर नहीं चल पाते हैं।

यही बात कोयले के उत्पादन पर लागू होती हैं। अगर हम सिर्फ यहां की परिस्थितियों के अनुरूप अपनी कोयला खानों में व्यापक यंत्रीकरण लागू कर दें तो यहां हम नवीकरण ला सकते हैं। कोयला खानों द्वारा कोयले के उत्पादन में जो घट-बढ़ होती है उसका कारण यह है कि वे या तो हमारी खानों की वास्तविक परिस्थितियों से मेल न खाने वाली विदेशी मशीनों का उपयोग करती हैं या उनसे नकल की गयी मशीनों का उपयोग करती हैं। फलतः उत्पादकता बहुत ही निम्न है। चूंकि हम अभी भी अपने देश की विशिष्ट परिस्थितियों के अनुरूप मशीनें बनाने में असमर्थ हैं, इसलिए हमारे पास विदेशी मशीनों का प्रयोग करने के अलावा कोई चारा नहीं है।

बहरहाल, मैं आप लोगों को यह सोचने के लिए प्रेरित नहीं करना चाहता कि हमारे मशीन निर्माण उद्योग और मशीन कर्मियों की स्थिति भयावह है। हमने आज जो इतने कम समय में मशीन निर्माण की नींव रख ली है तथा वैज्ञानिकों और तकनीशियनों की पांतें खड़ी कर ली हैं, यह एक बड़ी उपलब्धि है। हमारी क्षमताओं का अभी भी सीमित होना अवश्यभावी है क्योंकि हमारे मशीन-निर्माण उद्योग का इतिहास संक्षिप्त ही है तथा हमारे नये-नये प्रशिक्षित तकनीशियनों को व्यापक अनुभव संचित करने के लिए समय नहीं मिल सका है। अगर हम आज के बाद आगे इन कार्यकर्ताओं की पांतों में गुणात्मक दृष्टि से सुधार लाने पर ध्यान दें तो इस कमी को आसानी से दूर कर सकते हैं।

अगर पिछले दस वर्षों में हमने वैज्ञानिकों और तकनीशियनों की पांतों का निर्माण करने की कोशिश की हैं, तो अब आगे हमें उनकी क्वालिटी में सुधार लाने और उनकी जुझारू क्षमता को पुख्ता बनाने के लिए प्रयास करना चाहिए।

ऊपर जिन चन्द तथ्यों का उल्लेख किया गया है वे यह बात साफ-साफ साबित कर देने के लिए पर्याप्त हैं कि हमारे लिए यांत्रिक इंजीनियरिंग के विकास के लिए बहुत ही ज्यादा प्रयास करना जरूरी है। अगर हम ऐसा नहीं करते हैं तो हम न तो राष्ट्रीय अर्थतंत्र के विकास के साथ उत्पन्न होने वाली फौरी तकनीकी समस्याओं को हल कर सकेंगे और न हम तकनीकी क्रान्ति में तेजी ला सकेंगे। यही नहीं, जब तक यांत्रिक इंजीनियरिंग विकसित नहीं होगा तब तक रसायन और धातुकर्म क्षेत्र में भी आपकी उपलब्धियों को प्रयोग में नहीं लाया जा सकेगा।

आज मशीन निर्माण उद्योग के सामने जो तात्कालिक, महत्वपूर्ण दायित्व है वह है राष्ट्रीय अर्थतंत्र की हर शाखा का पुरजोर यंत्रीकरण और स्वचालन। अगर गढ़ाई सांचा प्रयोग में लाया जा सके, ढलाई का यंत्रीकरण किया जा सके तथा अत्यन्त कार्यक्षम मोटरों और जिगों को इस्तेमाल में लाया जा सके तो मशीन-निर्माण उद्योग की मौजूदा मशीनरी और उपकरणों की उत्पादकता दुगुने से अधिक कर लें तो सचमुच हम बहुतेरी समस्याओं को हल कर ले जायें।

हमारे खान उद्योग का मूलगामी तौर पर विकास आज हमारे देश की फौरी जिम्मेदारियों में से एक है और यह भी मशीन-निर्माण उद्योग की सहायता से ही संभव है।

आजकल हासोंग और छाएरयोंग खानें ह्वांगहाये लोहा कारखाने को पर्याप्त खनिज लोहा सप्लाई नहीं कर रही हैं; मुसान खान पूरी क्षमता भर काम नहीं कर रही है तथा र्योंगयांग खान में भी स्थिति मुश्किल है। इस सबका कारण है खनन उपकरणों की अपर्याप्तता। अगर इन खानों को ३० से ४० टन वाली ट्रकें और बड़े-बड़े एक्सकेवेटर सप्लाई किये जा सकें तो वे आज से कहीं अधिक खनिज लोहे की

सप्लाई कर सकें और उसे राष्ट्रीय अर्थतंत्र के सभी क्षेत्रों को सप्लाई कर सकें।

हमारी पार्टी ने मशीन-निर्माण उद्योग को हिदायत दी है कि वह आजकल जितनी बड़ी मशीनें बना रहा है उससे बड़ी मशीनों का निर्माण करे। उस पर सबसे पहले विशाल खनन उपकरणों तथा बड़े-बड़े एक्सकेवेटरों, बुलडोजरों, ट्रैक्टरों और जहाजों जैसे परिवहन साधनों का उत्पादन करने का कठिन कार्य-भार सौंपा गया है।

वैज्ञानिकों को इस काम को पूरा करने में सक्रियता के साथ मदद करनी चाहिए। अभी इस समय कुछ ऐसी कठिनाइयां हैं जिनसे मशीन-निर्माण उद्योग मंत्रालय के कर्मचारी अकेले निबट नहीं सकते।

उदाहरण के लिए डिजाइनों के परीक्षण के काम को लीजिए। अभी इस समय विभिन्न मशीन निर्माण कारखानों में तैयार किये गये डिजाइनों को जांचने परखने वाली कोई संस्था नहीं है। इसलिए उनकी उपादेयता की परीक्षा किये बगैर उन्हें मनमाने ढंग से इस्तेमाल में लाया जाता है। किन्तु दरअसल अगर उनकी जांच भी की जाय तो कोई व्यक्ति इतना सक्षम नहीं है जो उनकी परीक्षा कर सके। गैर-जानकार लोग खुद उनकी परीक्षा नहीं कर सकते। आज के बाद आगे विज्ञान अकादमी को डिजाइनों की परीक्षा के लिए उत्तरदायी बनाया जाना चाहिए।

यही बात सांचों के उत्पादन के केन्द्रीयकरण के बारे में लागू होती है। कई साथी सांचों की क्वालिटी सुधारने की समस्या के बारे में बोले और उनकी रायें सबकी सब अच्छी हैं। और दरअसल यह आज मशीन निर्माण उद्योग के सामने एक कठिन समस्या है। फिर भी इस समस्या को हल करने में सबसे महत्वपूर्ण यह है कि सांचों के उत्पादन का केन्द्रीयकरण किया जाए। हमारी पार्टी बहुत दिनों से इस मुद्दे पर बार-बार जोर देती आयी है। सांचों के उत्पादन का केन्द्रीय-करण करके ही श्रमसाध्य कार्य का आसानी से यंत्रीकरण किया जा सकता है, उपकरणों के प्राविधिक स्तर का उन्नयन किया जा सकता है तथा सांचों की क्वा-लिटी को भी सुधारा जा सकता है। बहरहाल, इस जिम्मेदारी को अभी तक पूरा नहीं किया जा सका है।

यह सच है कि सम्बद्ध संस्थाओं में, जिनमें मशीन निर्माण-उद्योग मंत्रालय भी शामिल है, कर्मचारियों में जिम्मेदारी के अभाव से यह समस्या पैदा होती है। किन्तु ऐसा लगता है कि विभिन्न आर्थिक और तकनीकी समस्याओं को हल करने में हम जो असफल रहे हैं वह भी इसके कारण है।

इन फौरी जिम्मेदारियों को पूरा करने का प्रयास करते समय हमें यांत्रिक इंजीनियरिंग को लगातार विकसित करने की कोशिश करनी चाहिए तथा डिजाइन निर्माताओं के प्रशिक्षण के बारे में काफी पहले से अनुमान लगा लेना चाहिए

जिससे कि हमारे देश के अर्थतंत्र का योजनाबद्ध ढंग से विकास किया जा सके।

विज्ञान अकादमी को चाहिए कि वह अपने अनुसंधान कार्य को बिखराने की जगह समाधान की अपेक्षा रखने वाली तकनीकी क्रांति की सबसे महत्वपूर्ण समस्या—यांत्रिक इंजीनियरिंग के विकास—के लिए प्रमुख रूप में प्रयत्न करे। यांत्रिक इंजीनियरिंग के क्षेत्र की जो अनुसंधान संस्थाएं आज राष्ट्रीय अर्थतंत्र के सभी इलाकों में बिखरी हैं उन्हें इकट्ठा करके हमें इस क्षेत्र के वैज्ञानिकों और तकनीशियनों को संकेन्द्रित करना चाहिए। साथ ही सम्बद्ध राजकीय संगठनों को चाहिए कि वे यांत्रिक इंजीनियरिंग प्रयोगशालाओं को उपकरणों से समुचित रूप में लैस करें तथा काम के लिए जरूरी सारी परिस्थितियों की व्यवस्था करें। शुरूआती तौर पर मशीन निर्माण उद्योग मंत्रालय को चाहिये कि वह विज्ञान अकादमी के अनुसंधान कार्य के लिए एक सुसज्जित पायलट मशीन निर्माण उद्योग कारखाने का निर्माण करे। हम दफ्तर में महज बातें करके और किताबों के पन्ने पलट कर कुछ भी नहीं कर पायेंगे। एक अच्छा पायलट कारखाना बना कर और सकारात्मक प्रयोग चला कर ही ठोस नतीजे हासिल कर सकना संभव है।

हमारे राष्ट्रीय अर्थतंत्र की आगे और प्रगति के लिए एक अन्य महत्वपूर्ण दायित्व है रेडियो इंजीनियरी और इलेक्ट्रानिकी का विकसित किया जाना।

हमारी पार्टी बहुत दिनों से इस मामले पर जोर देती आयी है। फिर भी अभी तक इस क्षेत्र में अनुसंधान कार्य बहुत संजीदगी से नहीं चलाया गया है।

रेडियो इंजीनियरिंग और इलेक्ट्रानिकी सिर्फ संचार तथा रेडियो और टेलीविजन के क्षेत्रों में ही आवश्यक नहीं हैं। विदेशों के अनुभव, धातुकर्म, रसायन, मशीन निर्माण और पावर उद्योगों जैसे क्षेत्रों में भी इलेक्ट्रानिकी के विस्तृत प्रयोग की ओर इंगित करते हैं। खासतौर पर द्रुत और जटिल प्रक्रियाओं को इलेक्ट्रानिक उपकरणों के बगैर नियंत्रित या विकसित कर सकना असंभव है।

इसलिए दूसरे देशों से पीछे रह जाने से बचने के लिए हमें इलेक्ट्रानिक उद्योग पर समुचित ध्यान देना चाहिए।

कुछ समय पहले संचार उपकरण कारखानों के मजदूरों और तकनीशियनों से मेरी बातचीत हुई थी। उस समय उन लोगों ने कहा था कि हम प्रसारण आयोग के कर्मचारियों के सहयोग से इस वर्ष स्वयं टेलीविजन का उत्पादन करेंगे। आयात किये गये इलेक्ट्रानिक ट्यूबों से टेलीविजन और रेडियो के सेट बनाना बेशक महत्वपूर्ण है। किन्तु इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि हम स्वयं अपने इलेक्ट्रान ट्यूबों और अर्धसंवाहकों का उत्पादन करें।

इलेक्ट्रान ट्यूबों का उत्पादन इलेक्ट्रानिकी के विकास के लिए आधार भूमि प्रस्तुत करता है। मंत्रिमंडल और राज्य योजना आयोग को शीघ्र ही एक इलेक्ट्रान

ट्यूब कारखाने और एक अर्धसंवाहक कारखाने का निर्माण करना चाहिए और इस प्रकार इलेक्ट्रानिकी के क्षेत्र में अनुसंधान कार्य में तेजी लाने के लिए बेहतर परिस्थितियों की व्यवस्था करनी चाहिए।

हालांकि ठीक अभी यंत्रीकरण हमारे देश के लिए प्रमुख कर्तव्य है, फिर भी थोड़े दिनों में ही स्वचालन को प्राथमिकता मिल जाएगी। इसलिए यह जरूरी है कि हम स्वचालन के लिए दूरदर्शितापूर्ण तैयारियां शुरू कर दें। इलेक्ट्रानिकी ही स्वचालन के लिए तैयारियों की कुंजी है। फलतः तकनीकी क्रान्ति सम्पन्न करने तथा राष्ट्रीय अर्थतंत्र का भविष्य में विकास करने—दोनों के लिए ही इलेक्ट्रानिकी के क्षेत्र में अनुसंधान कार्य लाजिमी तौर पर एक फौरी जिम्मेदारी है।

अब मैं भारी उद्योग के विकास के लिए कुछ ऐसे कर्तव्यों के बारे में बात करना चाहूंगा जिनका संबंध तकनीकी क्रान्ति करने से है।

धातुकर्म उद्योग के सामने महत्वपूर्ण जिम्मेदारी इस बात की है कि वह तकनीकी क्रांति के लिए आवश्यक सामग्रियों की संतोषजनक सप्लाई आश्वस्त करे।

पिछले साल हम लोग १२ लाख टन इस्पात के उत्पादन के लक्ष्य तक पहुंचने के लिए संघर्ष करते हुए बहुत बड़ी मात्रा में उत्पादन करने में सफल हुए थे। फिर भी इस्पात से बने कुछ खास तरह के पुर्जों की कमी है गोकि हम जितने इस्पात का उत्पादन कर रहे हैं उसका इस्तेमाल नहीं कर पा रहे हैं। हम विभिन्न किस्मों और स्तरों के पर्याप्त इस्पात और इमारती इस्पात तैयार नहीं करते और इस कारण ऐसे पुर्जों की अपनी आवश्यकता पूर्ण रूप में पूरी कर सकने में अभी भी असमर्थ हैं।

यही कारण है कि हम जिन मशीनों का निर्माण करना चाहते हैं उनका अभी भी निर्माण नहीं कर पाते और जिनका उत्पादन करते हैं उनकी क्वालिटी की गारंटी नहीं कर पाते, और साथ-साथ बड़ी मात्रा में इमारती इस्पात की बरबादी भी कर रहे हैं।

धातुकर्म उद्योग के सामने पेश फौरी कर्तव्य यह नहीं हैं कि उत्पादित इस्पात की शुद्ध मात्रा में वृद्धि की जाए बल्कि यह कि इस्पात के प्रकार-भेद और इस्पाती पुर्जों के स्तर में वृद्धि की जाय जिससे कि हम जो कुछ उत्पादन करें उसका कारगर ढंग से इस्तेमाल हो सके।

भविष्य में किम छाए लोहा कारखाने का बड़े पैमाने पर विस्तार करने की योजना है। मगर फिलहाल मौजूदा धातुकर्म कारखाने में चद्दर बनाने की सुविधाओं को और पुख्ता करके इस्पाती चद्दरों के प्रकार भेद और स्तर का विस्तार करने तथा मिश्र इस्पात और हलकी धातु के उत्पादन का विकास करने के लिए कोशिशें की जानी चाहिए।

हमारे देश में मिश्र धातुओं में इस्तेमाल में आने वाले तत्वों की सप्लाई बहुतायत से है तथा मिश्र इस्पात उत्पादन के विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियां विद्यमान हैं। तकनीकी क्रान्ति के लिए मिश्र इस्पात अपरिहार्य है। हमें मिश्र इस्पात के प्रकार भेदों का विस्तार करके खासतौर पर तापरोधक, अम्लरोधक और लौह चुम्बकीय सामग्रियों का बड़े पैमाने पर उत्पादन करके इस्पात उत्पादन को विविधतापूर्ण बनाना चाहिए।

मिश्र इस्पात के साथ-साथ हलकी धातुओं की बहुत ही फौरी मांग है। सातवर्षीय योजना में २०,००० टन अल्युमिनियम के उत्पादन का लक्ष्य तय किया गया है। हमें यथासंभव शीघ्र से शीघ्र कम से कम १०,००० टन के उत्पादन से शुरूआत करनी चाहिए। सिर्फ १०,००० टन अल्युमिनियम से बड़ी मात्रा में तांबे के तारों की वैकल्पिक व्यवस्था कर सकते हैं तथा अनेक हल्की मशीनें बना सकते हैं।

कल के आपके भाषणों से ऐसा लगता है कि अल्युमिनियम के उत्पादन का भविष्य अभी भी उज्ज्वल नहीं है। यह आज अभी जरूरी है कि आप बेधड़क हो कर अपना अनुसंधान कार्य आगे बढ़ाना शुरू कर दें। किसी बात को लेकर चिन्ता में पड़े रहने से कोई नतीजा नहीं निकलेगा। आपको निर्भीक होकर कदम उठाना है। अगर विरामसंधि के बाद हम भय की चपेट में आ गये होते तो एक मकान भी ठीक-ठीक न बना पाये होते। आपको आस्था लेकर हलकी धातु के उत्पादन के लिए निर्भरता के साथ कटिबद्ध हो जाना चाहिए तथा यथासंभव शीघ्र से शीघ्र गुत्थीदार मसलों को हल कर डालना चाहिए।

धातुकर्म उद्योग के वैज्ञानिक कार्यकर्ताओं को तकनीकी कार्य के लिए आवश्यक सामग्रियों की समस्या हल करने के उद्देश्य से खासतौर पर मशीन निर्माण उद्योग के लिए आवश्यक अनेक प्रकार के इस्पातों, स्तरीय इस्पाती पुर्जों तथा हल्की धातुओं के उत्पादन का प्रयत्न करना चाहिए।

अपने भाषणों में आपने यह सुझाव दिया कि वैज्ञानिकों को वर्तमान धातुकर्म कारखानों में इस्पात का सालाना उत्पादन १५ लाख टन से बढ़ाकर १६ लाख टन तक पहुंचाने की कोशिश करनी चाहिए। मैं समझता हूं कि यह एक बहुत ही अच्छा विचार है।

धातुकर्म उद्योग के वैज्ञानिकों के सामने पेश केन्द्रीय जिम्मेदारियों में से एक यही है कि सक्रियता के साथ वर्तमान उपकरणों में सुधार ला कर उत्पादन में प्रक्रियाओं को पंजीकृत या स्वचालित करके तथा सारे अतिरिक्त साज-सामान की व्यवस्था करके उन्हीं उपकरणों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए ठोस उपाय किये जायं। अगर हम वर्तमान उपकरणों से १५ से १६ लाख टन इस्पात का उत्पादन करते हैं, मिश्र इस्पात, हल्की धातुओं और विभिन्न प्रकार के स्तरीय इस्पाती

पुर्जों का निर्माण करते हैं तथा उनका युक्तियुक्त ढंग से इस्तेमाल करते हैं तो हम अगले कुछ दिनों तक अपने राष्ट्रीय अर्थतंत्र के सारे तकाजों को पूरा कर ले जाएंगे।

मशीन निर्माण उद्योग मंत्रालय विभिन्न प्रकार की मशीनों और उपकरणों के उत्पादन के लिए सालाना कुल २,००,००० टन से ३,००,००० टन इस्पात की खपत करता है और फिर भी वह बड़ी मात्रा में इस्पात की बरबादी कर रहा है। हमारी मशीनें दूसरे देशों की तुलना में भरकम, बेढंगी और बेडौल होती हैं। अगर हम, गढ़ाई के काम का यंत्रीकरण कर दें, सांचों के उत्पादन में और बारीकी ला सकें तथा पावर प्रेस प्रणाली विकसित कर सकें तो ऐसे दसियों हजार टन इस्पात की बचत मुमकिन हो जाय जिसका हम मशीनों के उत्पादन में इस्तेमात करते हैं।

अगर मशीन निर्माण कारखाने अपने उपकरणों की मौजूदा उपयोग दर दुगुनी कर दें तथा भविष्य में और अधिक बड़ी मशीनों और बारीक मशीनों का निर्माण करने लगें तो भी फिलहाल ५,००,००० टन इस्पात से मशीन निर्माण उद्योग की जरूरतें पूरी हो जाएंगी। अगर हम सिर्फ तकरीबन १५,००,००० टन इस्पात का उत्पादन कर सकें तो चाहे पूंजीगत निर्माण में और अन्य क्षेत्रों में बहुत से इस्पात का उपयोग क्यों न किया जाय, वह काफी होगा।

इसलिए अभी ही धातुकर्म कारखानों का और विस्तार करना जरूरी नहीं है। पूंजी का निवेश चद्दरें बनाने वाली मिलों में तथा मिश्र इस्पात और हल्की धातु के उत्पादन में किया जाना चाहिए।

रसायन उद्योग में भी वैज्ञानिकों को सबसे पहले मौजूदा सुविधाओं की उपभोग दर पर ध्यान देना चाहिए।

वैज्ञानिक कार्यकर्ताओं को सबसे पहले विनालोन कारखाने और छोंगजिन रासायनिक धागा मिल का उत्पादन सामान्य बनाने तथा सिनुइजु रासायनिक धागा मिल का निर्माण कार्य पूरा करने के लिए अपनी शक्ति एकत्र करनी चाहिए, न कि बिखरानी चाहिए।

विनालोन कारखाने में उत्पादन को सामान्य बनाना अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि हमारी जनता आज न सिर्फ अच्छी क्वालिटी के कपड़े की बल्कि ऐसे कपड़े की मांग करती है जो गर्म और टिकाऊ हो। मेरा विचार है कि अगर वैज्ञानिक कार्यकर्ता प्रति इकाई उत्पादन में खर्च होने वाले कच्चे माल की मात्रा लगातार कम करने तथा वर्तमान उपकरणों को और सुधारने तथा विस्तृत करने पर ध्यान केन्द्रित करें तो वे विनालोन का सालाना उत्पादन २०,००० टन और बाद में ३०,००० टन तक पहुंचा सकते हैं।

छोंगजिन रसायनिक धागा मिल और किल्जु लुगदी मिल में, जोकि दोनों ही

धागे के उत्पादन के क्षेत्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं, उत्पादन को सामान्य बनाना एक ऐसा फौरी कर्तव्य है जिसे वैज्ञानिकों को शीघ्र से शीघ्र पूरा करना चाहिए। हमें यथासंभव शीघ्र से शीघ्र कृत्रिम धागे का सालाना उत्पादन ३०,००० टन के स्तर पर पहुंचाने और उसे स्थिरता प्रदान करने के लिए हर साधन का इस्तेमाल करना चाहिए। साथ ही सिनुइजु रसायनिक धागा मिल को पूरा करने में वैज्ञानिकों को और अधिक भूमिका निभानी चाहिए।

इन तरीकों से ही हम धागे की फौरी जरूरत पूरी कर पायेंगे।

धागे की फौरी समस्या को हल करने के लिए प्रयास करते हुए ही हमें तेल की प्रोसेसिंग के माध्यम से भविष्य में रसायनिक धागे के उत्पादन में दीर्घकालीन अनुसंधान कार्य भी करना चाहिए।

रसायन उद्योग के सामने एक और महत्वपूर्ण समस्या यह है कि कृत्रिम रबड़ का उत्पादन किस प्रकार किया जाय।

हम बड़ी संख्या में ट्रैक्टरों और ट्रकों का निर्माण तो कर रहे हैं मगर उनके लिए जरूरी रबड़ का उत्पादन हम नहीं कर सकते। जितनी जल्दी हो सके हमें कम से कम १०,००० टन के आसपास कृत्रिम रबड़ प्रतिवर्ष पैदा करना चाहिए।

इस प्रकार रबड़ की मांग स्वयं हमारे उत्पादन और विदेशों से आयात दोनों के जरिए पूरी की जानी चाहिए। सर्वथा आयात पर ही निर्भर करना सुरक्षित नहीं है। पार्टी आशा करती है कि हमारे वैज्ञानिक कार्यकर्ता निकट भविष्य में कृत्रिम रबड़ का उत्पादन करने लगेंगे।

रसायन उद्योग की एक और महत्वपूर्ण समस्या है रसायनिक उर्वरकों तथा विभिन्न प्रकार के कृषि रसायनों के उत्पादन में वृद्धि करना।

हम इस समय गल्ले की उपज बढ़ाते जाने की योजना बना रहे हैं, किन्तु जब तक बड़ी मात्रा में उर्वरकों का उत्पादन नहीं किया जाता तब तक इस कर्तव्य का निर्वाह नहीं किया जा सकता। इसलिए पार्टी की केन्द्रीय समिति की राजनीतिक समिति उर्वरकों का उत्पादन बढ़ाने के सवाल पर हमारे तकनीशियनों से विचार-विमर्श करने जा रही है।

यह महत्वपूर्ण बात है कि तकनीशियन इस समस्या को हल करने के लिए अधिक से अधिक कोशिश करें। अगर हमारी तकनीकी शक्तियों को उचित ढंग से लामबंद किया जाए तो इसे निश्चय ही हल किया जा सकता है।

हमें ग्रामांचल में इस्तेमाल के लिए और अधिक उर्वरकों का उत्पादन करना चाहिए। भूमि की उर्वरता बढ़ाने तथा गल्ले की पैदावार को अपने लक्ष्य तक पहुंचाने का यही एक मात्र रास्ता है।

इसके अलावा हमें इस बात की व्यवस्था करनी चाहिए कि खरपतवार को नष्ट

करने वाली दवाओं का व्यापक पैमाने पर इस्तेमाल किया जाए। हमारी कृषि में निराई एक सबसे श्रमसाध्य कार्य है और एक ऐसा महत्वपूर्ण कार्य है जिसका फसल के पैदावार पर निर्णायक असर पड़ता है। चूंकि हमारे देश में वर्षा की ऋतु लम्बी होती है और भारी वर्षा होती है, इसलिए घास आसानी से पैदा हो जाती है। और घास-पात के चलते अनाज की पैदावार गिर जाती है। सिर्फ घास-पात नष्ट करने वाली दवाओं का प्रयोग करके खर-पतवार समाप्त कर देने से ही गल्ले की पैदावार में १५ से २० प्रतिशत की बढ़ोतरी हो जाएगी। इसलिए हमें बड़ी मात्रा में कृषि रसायनों का उत्पादन और सप्लाई करनी चाहिए जोकि भूमि की उर्वरता बढ़ाने में सहायक होगी, पाले और हानिकारक कीड़ों पर काबू पायेगी, खर-पतवार को नष्ट कर देगी, आदि-आदि।

इसके बाद हमें बिजली में किफायतशारी पर चौकसी से ध्यान देना चाहिए।

आज हमारा देश प्रति व्यक्ति पावर उत्पादन में समाजवादी जगत में तीसरे या चौथे स्थान पर है, किन्तु कुल औद्योगिक उत्पादन के मूल्य की दृष्टि से यही स्थिति नहीं है। इसका अर्थ यह हैं कि हम बिजली बहुत अधिक बरबाद करते हैं। इस तरह के अविवेक को दूर करने की दृष्टि से पार्टी कांग्रेस ने यह कर्तव्य निर्धारित किया कि जो औद्योगिक शाखाएं बहुत अधिक बिजली खर्च करती हैं उन्हें ऐसी शाखाओं में बदल दिया जाए जो बिजली पावर की बहुत ही कम खपत करती हैं या कतई नहीं खर्च करतीं। हमारे वैज्ञानिकों को इस समस्या का समाधान करने के लिए अपना दिमाग लगाना चाहिए।

बहरहाल, अभी इस महत्वपूर्ण कार्य को बहुत ही निष्क्रिय ढंग से पूरा किया जा रहा है। इसका कारण यह प्रतीत होता है कि लोग यह अच्छी तरह नहीं समझते कि इस क्षेत्र के कर्मचारियों पर बिजली पावर में किफायतशारी का महत्वपूर्ण दायित्व है।

सबसे पहले यहां मौजूद आप वैज्ञानिक कार्यकर्ताओं को यह साफ-साफ समझ लेना चाहिए कि अधिक मात्रा में बिजली-पावर खर्च करने वाले क्षेत्रों के प्रति हमारे उद्योग का रुझान जापानी साम्राज्यवाद की दस्युतापूर्ण उपनिवेशी नीति का दुष्परिणाम है। चूंकि जापानी साम्राज्यवादी हमारे बिजली-पावर को अपने देश के औद्योगिक केन्द्रों में स्थानान्तरित नहीं कर सके इसलिए उन्होंने हमारे देश के प्रचुर पावर संसाधनों की लूट-खसोट करने की कोशिश में कच्चे माल के उत्पादन के लिए अविवेकपूर्ण, फिजूलखर्ची से भरी अनेक प्रक्रियाएं संगठित कर दीं।

हमने एक स्वतंत्र अर्थव्यवस्था निर्मित की है और हमारा इरादा मशीन निर्माण उद्योग तथा उद्योग की कई अन्य शाखाओं को विकसित करने का है; इसलिए हमें अभी ही बहुत बड़ी मात्रा में पावर की जरूरत है। पावर की तेजी के

साथ बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिए हमें कई नये विद्युत केन्द्रों का निर्माण करना चाहिए तथा बिजली की अधिक से अधिक किफायत करनी चाहिए। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण बात है कि अविवेकपूर्ण फिजूलखर्ची से भरी उत्पादन प्रक्रियाओं को ऐसी प्रक्रियाओं में बदल कर जो बिजली का बहुत ही कम खर्च करती हों या कतई ही खर्च न करती हों, बिजली की किफायतशारी की जाय। इसलिए हमारे वैज्ञानिकों को इस समस्या के प्रति अत्यधिक चिन्ता दिखानी चाहिए तथा यथा-संभव शीघ्र इसका बेचूक हल निकालना चाहिए।

अब मैं मछियारी उद्योग के बारे में संक्षेप में बातें करना चाहूंगा। हमारे देश की सीमा पर तीन तरफ समुद्र है, अतः हमें इस उद्योग के विकास के लिए गम्भीरता से प्रयास करना चाहिए। मगर वैज्ञानिक इसे विकसित करने के ढंग का अध्ययन करने की मुश्किल से ही परवाह करते हैं। वे सोचते हैं कि इसका अध्ययन सिर्फ मत्स्य-पालन कालेज के स्नातकों को ही करना चाहिए। यह गलत बात है।

मछियारी उद्योग को विकसित करने के लिए इतना ही जान लेना काफी नहीं है कि हमारे यहां कितनी तरह की और कितनी मात्रा में मछलियां पायी जाती हैं और कहां वह बहुतायत से पायी जाती हैं। मछियारी उद्योग को विकसित करने के लिए आपको हर कोण से इस समस्या का अनुशीलन करना चाहिए, और इन बातों का अध्ययन करना चाहिए कि हमारी विशिष्ट परिस्थितियों की रोशनी में किस प्रकार मछियारी नौकाएं बनायी जानी चाहिए, समुद्र पर कैसे विजय पायी जानी चाहिए तथा किस प्रकार जीव-विज्ञान मछलियों के पालन-पोषण में सहायक हो सकता है।

भविष्य में मछली मारने के वैज्ञानिक तरीकों का व्यापक प्रयोग करके मछियारी उद्योग का तेजी के साथ विकास किया जाना चाहिए और इसके लिए वैज्ञानिक और तकनीशियनों को बंसी का अध्ययन करने, समुद्र पर विजय पाने के लिए इफरात साज-सामान तैयार करने तथा मछलियों के झुण्ड का पता लगाने वाले अत्यन्त कार्य कुशल यंत्रों का उत्पादन करने के लिए जुट कर प्रयास करना चाहिए। दस्तकारी के तौर-तरीकों से मछियारी उद्योग कतई आगे नहीं बढ़ सकता। इसलिए विज्ञान अकादमी को उसके विकास के लिए सुनिश्चित वैज्ञानिक शक्तियों की भी नियुक्ति करनी चाहिए।

अन्त में मैं कृषि विज्ञान की समस्याओं का जिक्र करना चाहूंगा।

आप लोगों ने अपने भाषणों में कृषि फसलों में विभिन्न किस्मों के सुधार लाने के लिए कई अच्छे तरीके सुझाये। मैं इस बात से सहमत हूं कि इस तरह के सुधार अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। खासतौर पर हमें इस समस्या पर अत्यधिक ध्यान देना

चाहिए और हवा से होने वाली क्षति को रोकना चाहिए।

आज हमारा देश सूखे के खतरे पर विजय पा चुका है जिसका नतीजा यह है कि हमारी फसलें सुचारु रूप से बढ़ती हैं। और बारिश की कमी का उन पर असर नहीं पड़ता। मगर हर अगस्त में आने वाले तूफान से फूल लेती हुई फसलों को काफी क्षति पहुंचती है। पिछले साल भी सूखे के लम्बे दौर के बावजूद फसलें अच्छी तरह बढ़ीं; किन्तु बहुत-सा मक्का और धान एक तूफान से क्षतिग्रस्त हो गया। यह घटना लगभग हर साल दुहरायी जाती है।

इसलिए फसल की किस्मों में सुधार लाने और तूफान से होने वाली क्षति को कम से कम करने के लिए निर्णायक उपाय किये जाने चाहिए। हमें नयी किस्में पैदा करनी चाहिए—मसलन ऐसी फसलें जो छोटी मगर लम्बी बालियों वाली होती हैं तथा ऐसी फसलें जो लम्बी होती हैं लेकिन आंधी को झेल सकती हैं।

इसके अलावा पहाड़ों के किनारों का विवेकपूर्ण उपयोग करने के संबंध में अनुसंधान कार्य किया जाना चाहिए क्योंकि हमारे देश का बहुत बड़ा हिस्सा इसी प्रकार का है। हमारे देश में पहाड़ी किनारों समेत कुल काबिल-काश्त-जमीन लगभग १८ से २० लाख छोंगबो है और हम सिर्फ इसलिए ३,००,००० से ४,००,००० छोंगबो पहाड़ी किनारों को ठुकरा दिया जाना गवारा नहीं कर सकते कि उनमें पैदावार कम होती है। अभी तो ऐसी जोतों में खाद भी नहीं डाली जाती है और कोई उनमें खाद डालेगा भी नहीं क्योंकि वह बारिश में बह जाती है।

इसलिए वैज्ञानिकों को ऐसे किनारों पर बारहमासी फसलें लगाने, उन्हें बह जाने से बचाने और मिट्टी को सुधारने के तरीकों का अध्ययन करना चाहिए। अगर हम वहां कम से कम चारे के लिए फसलें ठीक-ठीक पैदा करने में सफल हो जायें तो उससे बड़ी सहायता मिलेगी। अगर हम बहुत-सा चारा पैदा करें तो हमें मांस मिल सकता है।

और नयी निकाली गयी जमीनों के सदुपयोग के लिए फौरन अनुसंधान कार्य किया जाना चाहिये। समुद्र से लाखों छोंगबो जमीन का उद्धार करना है। इसलिए हमारे लिए इस जमीन का सदुपयोग करने के लिए मुस्तैदी से कदम उठाना एक फौरी कर्तव्य है।

हमने ऊपर अपने राष्ट्रीय अर्थतंत्र के विकास की ऐसी अनेक समस्याओं का जिक्र किया है जिसके लिए यह जरूरी है कि हमारे वैज्ञानिक और तकनीकी कार्यकर्ता उनका चुस्ती से हल निकालें।

आज हमारी जनता के सामने मुख्य कर्तव्य है तकनीकी क्रान्ति। इसलिए हमारे वैज्ञानिकों को और अधिक निष्ठा के साथ इस क्रान्ति के लिए काम करना चाहिए। वैज्ञानिक कार्यकर्ताओं को धातुकर्म और रसायन उद्योगों तथा राष्ट्रीय

अर्थतंत्र की अन्य सारी शाखाओं की मौजूदा सुविधाओं में सुधार लाने के लिए, जिससे उनकी उपयोग दर में वृद्धि की जा सके, उद्योग, कृषि और मछियारी का तेजी के साथ विकास करने के लिए तथा जनता के जीवन-स्तर को और अधिक तेजी के साथ ऊंचा करने के लिये अपना सारा ज्ञान और शक्ति लगा देनी चाहिए।

मेरा यह स्वप्न है कि उस सम्मेलन के बाद पार्टी के हमारे लाल वैज्ञानिक कार्यकर्ता राष्ट्रीय अर्थतंत्र का विकास करने में, स्वतंत्र अर्थतंत्र की नींव को और अधिक सुदृढ़ करने में तथा जनता की जीवनगत परिस्थितियों को और अधिक ऊंचे स्तर पर पहुंचाने में महान योगदान करेंगे और इसके लिए वे हमारी पार्टी की चौथी कांग्रेस द्वारा निर्धारित कर्तव्य को पूरा करने के संग्राम में स्वयं को पूरी तरह समर्पित देंगे तथा वैज्ञानिक प्रगति के भव्य चरण आगे बढ़ायेंगे।

र्यांगगांग प्रान्त में पार्टी संगठनों के कर्तव्य

कोरिया की मजदूर पार्टी की र्यांगगांग प्रान्तीय समिति के पूर्णाधिवेशन में समापन भाषण

१६ अगस्त, १९६३

साथियो,

हमने र्यांगगांग प्रान्तीय पार्टी समिति के पूर्णाधिवेशन में तीन दिन तक भाग लिया है और आपके साथ कृषि के इमारती लकड़ी उद्योग के प्रश्नों तथा अन्य विभिन्न समस्याओं पर गम्भीरतापूर्वक बहस की है।

जैसाकि आपने रिपोर्ट और तकरीरों में जिक्र किया है, र्यांगगांग प्रान्त ने पिछले कुछ सालों में राजनीति, अर्थतन्त्र, संस्कृति और जन-कल्याण के तमाम क्षेत्रों में भारी तरक्की की है।

इस अवधि में ह्येसान पेपर मिल और ह्येसान फ्लैक्स मिल कायम हो गयी हैं जिनका १९५८ के मेरे दौरे के समय कोई वजूद न था, और कई स्थायीय उद्योग फैक्टरियां भी निर्मित की गयी हैं। इसके अलावा कृषि और वन विद्या कालेज और पठारी कृषि अनुसंधान संस्थान, पटुआ अनुसंधान संस्थान और वनविज्ञान अनुसंधान संस्थान सरीखे वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान कायम किये गये हैं और विभिन्न विशेषताओं वाले कई तकनीकी स्कूल भी स्थापित किये गये हैं।

जैसाकि मैंने पुंगसान काउंटी की पाबाल-री से होकर जाते हुए माउंट पाएकदु-सान की तराई की अपनी हाल की यात्रा के दौरान पता किया, अर्थतन्त्र और संस्कृति के विकास के साथ-साथ जन जीवनस्तर में भी उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि र्यांगगांग प्रान्त ने अब अपने अर्थतन्त्र और संस्कृति के और आगे विकास के लिए, अपनी जनता को और ज्यादा प्रचुरता का जीवन उपलब्ध करने के लिए, तथा देश के अर्थतन्त्र की प्रगति में भारी योगदान करने के लिए एक ठोस बुनियाद कायम कर ली है।

हम इससे बड़े खुश हैं। मैं अब उन सफलताओं की, जो आपने हासिल की हैं, चर्चा न करूंगा, क्योंकि उनका रिपोर्ट में काफी जिक्र किया गया है और कई साथियों ने बहस के दौरान उनका बखान किया है।

मामले का सारतत्व यह है कि आपको अब तक हासिल की गयी सफलताओं को देखते हुए आत्मतुष्टि का शिकार नहीं हो जाना चाहिए तथा आपको बिना रुके बढ़ते जाने की भावना को कायम रखना चाहिए और कड़ा संघर्ष जारी रखना चाहिए।

अब मैं उन कुछ महत्वपूर्ण आर्थिक कर्तव्यों और पार्टी कार्य का जिक्र करना चाहूंगा जिनका र्यांगगांग प्रान्त को सामना करना है।

१ : आर्थिक कार्य के बारे में

१ : कृषि के बारे में

दूसरे प्रान्तों के मुकाबले में र्यांगगांग प्रान्त में अनाज की पैदावार नगण्य है।

केवल इस वजह से कि र्यांगगांग प्रान्त में अनाज की उपज थोड़ी है, यहां कृषि के महत्व को कम करके नहीं आंका जाना चाहिए। यहां कृषि का विकास इस समय हमारे देश के लिए राजनीतिक, आर्थिक और फौजी दृष्टि से अधिक महत्व रखता है।

र्यांगगांग प्रान्त में जन जीवन के स्तर में सुधार सबसे बढ़कर इस क्षेत्र में कृषि के विकास पर निर्भर करता है। किसानी आबादी र्यांगगांग प्रान्त की कुल जन-संख्या की लगभग आधी है। इसके साथ ही भारी संख्या में मजदूर शहतीर और खनन उद्योगों में भी काम करते हैं। यदि प्रान्त में अपने फैक्टरी और दफ्तरी कर्म-चारियों के लिए अनाज की कमी पड़ जाए तो वह दूसरे प्रान्तों से उसे ला सकता है, लेकिन जहां तक उसके किसानों के लिए अन्न और उसके फैक्टरी तथा दफ्तरी मजदूरों के लिए पूरक आहार का प्रश्न है, उनकी मांगें स्वभावतः अपनी ही उपज से पूरी की जानी चाहिए।

इसके अलावा र्यांगगांग प्रान्त हमारे देश का एक गौरवपूर्ण पुराना क्रान्ति-कारी युद्ध क्षेत्र रहा है। र्यांगगांग प्रान्त के पार्टी संगठनों की यह जिम्मेदारी है कि इस पुराने क्रान्तिकारी समर क्षेत्र में रहने वाली हमारी जनता को मुक्ति-पूर्व की अपेक्षा कहीं बेहतर जीवनस्तर उपलब्ध करें। जो किसान और मजदूर लम्बे समय तक जापानी साम्राज्यवादी शासन के अधीन चीथड़ों में लिपटे रहे और भूखों

मरते रहे, वे जब अच्छे कपड़े पहनने लगेंगे, और अच्छा खाना खाने लगेंगे तथा सुखद जीवन बिताने लगेंगे, तभी वे कहेंगे कि वे वास्तव में मुक्ति और समाजवादी व्यवस्था से लाभान्वित हुए हैं।

हमारे देश के कुल फसल क्षेत्र का काफी बड़ा भाग रयांगगांग प्रान्त में है। हमारे देश में खेती की कुल भूमि जिसमें फलों का क्षेत्र शामिल नहीं है, १८,००,००० छोंगबो है। इस समय रयांगगांग प्रान्त में ६०,००० छोंगबो कृषि भूमि है और यदि इसमें पोताए-री में खेती योग्य बनायी जा रही नयी जमीन को भी जोड़ा जाए तो ये आंकड़े एक लाख के करीब पहुंच जाएंगे। हमारे देश में जहां कृषि भूमि बड़ी ही सीमित है, इसे किसी भी तरह कम नहीं कहा जा सकता।

यदि इस एक लाख छोंगबो भूमि का पूरा-पूरा उपयोग किया जाए तो प्रान्त अपनी कृषि आबादी के लिए अन्न के मामले में सुगमता से आत्मनिर्भरता प्राप्त कर सकता है और इसके साथ ही भविष्य के लिए कुछ अन्न सुरक्षित भी रख सकता है। लेकिन पर्याप्त खाद्य भंडार की बात तो दूर रही अभी रयांगगांग प्रान्त अपनी किसान आबादी के लिए भी काफी अन्न पैदा नहीं कर पा रहा है।

रयांगगांग प्रान्त में कृषि उपज की इस दयनीय स्थिति और अन्न में आत्म-निर्भरता प्राप्त करने के मामले में असफलता के कारण क्या है ?

कुछ साथियों के ख्याल में इसका कारण यह है कि जैसे आदेश मिले उनके अनुसार पटुए की आवश्यकता से अधिक बुवाई की गयी थी। कहना पड़ेगा कि यह जिम्मेदारी से कतराने की बात है।

रयांगगांग प्रान्त में कृषि की बदहाली का मुख्य कारण इस तथ्य में छिपा है कि प्रान्त में कृषि के क्षेत्र में पार्टी संगठन और अहलकार इस क्षेत्र की विशिष्टताओं को ध्यान में रखते हुए ग्राम्य अर्थतन्त्र का उचित संगठन और पथप्रदर्शन नहीं करते, खासतौर पर इसका कारण यह है कि वे पहाड़ी प्रदेशों के जलवायु और मिट्टी संबंधी परिस्थिति के अनुरूप कृषि की वैज्ञानिक विधियों का ईमानदारी से अध्ययन करने और उन विधियों को कृषि उत्पादन में लागू करने के लिए कोई सक्रिय प्रयास नहीं करते।

जैसाकि सर्वविदित है, रयांगगांग प्रान्त हमारे देश में सबसे ऊंचे पठार पर स्थित है। मशहूर पाएकमु और काएमा, दोनों पठार यहीं हैं।

रयांगगांग प्रान्त के जलवायु की अनेक अपनी विशेषताएं भी हैं। दक्षिण की गर्म हवाएं और मंगोलिया की दिशा से आने वाली ठंडी हवाएं इसी क्षेत्र में मिलती हैं। यही वजह है कि यह जिला आमतौर पर धुंध से ढंका रहता है और धूप थोड़े समय के लिए ही निकलती है। सबसे बढ़कर तो यह है कि पाला पतझड़ के प्रारम्भ में ही शुरू हो जाता है और सर्दी बहुत ही ज्यादा होती है। एक ही क्षेत्र में भी

जलवायु में अत्यधिक विविधता पायी जाती है। एक घाटी का मौसम दूसरी से भिन्न होता है और एक ही घाटी में भी धूप वाला हिस्सा छांह वाले हिस्से से भिन्न होता है।

इस तरह कृषि की दृष्टि से र्यांगगांग प्रान्त प्रतिकूल प्राकृतिक परिस्थितियों के कारण काफी कठिनाई में फंसा हुआ है। इसीलिए प्राचीन काल से लोग मुख्यत: खेती के अनुकूल समतल क्षेत्रों में ही कृषि करते आये हैं।

पूर्वकाल में हमारे कृषि शास्त्रियों ने भी अपने अनुसंधान कार्य को समतल भूमि पर कृषि तक ही सीमित रखा था और वे पर्वतीय कृषि की ओर प्राय: जरा भी ध्यान नहीं देते थे। अत: र्यांगगांग प्रान्त में वहां के क्षेत्र के जलवायु और मिट्टी संबंधी हालत के अनुकूल कृषि की कोई भी वैज्ञानिक प्रणाली लागू नहीं की गयी।

बगैर पहाड़ी प्रदेशों के कुदरती हालात के अनुकूल वैज्ञानिक कृषि प्रणाली का अध्ययन किये तथा बगैर उसे कृषि उत्पादन में लागू किये र्यांगगांग प्रान्त की कृषि में किसी भी बढ़ोतरी की आशा नहीं की जा सकती। इसीलिए हमारी पार्टी एक अर्से से र्यांगगांग प्रान्त के पठारों में कृषि के अध्ययन और विकास पर जोर देती आयी है। आज से बहुत पहले १९५४ में जब मैंने उत्तर हामग्योंग प्रान्त का मार्गदर्शन किया था, तो मैंने पहाड़ी प्रदेशों की कृषि के अध्ययन का सवाल उठाया था, और १९५८ में मैंने व्यक्तिगत रूप से यहां आ कर एक बार फिर इस समस्या पर जोर दिया था। उस समय हमने र्यांगगांग प्रान्त में कृषि के एक महत्वपूर्ण कर्तव्य के रूप में प्रस्ताव किया था कि आलू, पटुआ और हॉप लता जैसी अत्यन्त लाभकारी और पाला न खाने वाली फसलों की प्राथमिकता के आधार पर व्यापक बुवाई की जाए और भविष्य में क्रमश: अनाज की फसलों की व्यापक खेती की दिशा में कदम बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक अनुसन्धान किये जाएं। और हमने यह हिदायत भी की थी कि पहाड़ी प्रदेश की कृषि के अध्ययन और विकास के लिए र्यांगगांग प्रान्त में एक कृषिविज्ञान अनुसंधान संस्थान की स्थापना की जाए।

लेकिन तब से लेकर अब तक र्यांगगांग प्रान्त में पार्टी संगठनों और कृषि क्षेत्र के कर्मियों ने पार्टी द्वारा निर्धारित कार्यों को जी-जान से पूरा नहीं किया है। वहीं १९६१ में जाकर प्रस्तावित अनुसंधान संस्थान की स्थापना की गयी और उसके अस्तित्व में आने के बाद भी प्रान्तीय पार्टी समिति ने वैज्ञानिक कर्मचारियों के लिये अनुसंधान संबंधी उपयुक्त परिस्थितियां उपलब्ध न कीं और कृषि शास्त्रीय गवेषणा की उपेक्षा की। यही वजह है कि र्यांगगांग प्रान्त के पास अभी भी ऐसी कोई निश्चित तकनीकी पथप्रदर्शिका नहीं है जिससे यह पता चल सके कि पाएकमु और काएमा पठारों में कौन-सी फसलें बोयी जानी चाहिए और उनकी खेती कैसे की जानी चाहिए।

प्रान्त में पार्टी संगठनों और प्रमुख कृषि कर्मियों की हालत अभी तक यह है कि

वे वैज्ञानिकों और तकनीकी कर्मचारियों पर पूर्णतया भरोसा करने और उनके साथ सहयोग करने को तैयार नहीं दीखते। जब कर्मचारियों से अवाम पर विश्वास करने को कहा जाता है तो कई एक सहर्ष किसानों के बीच जाते हैं और उनके कृषि संबंधी अनुभवों पर ध्यान देते हैं, लेकिन दूसरी ओर वे उन अनुभवों के आधार पर वैज्ञानिक कृषि विधियों की जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से अनुसंधान कार्य के लिए वैज्ञानिक और तकनीकी कर्मचारियों को संगठित और गोलबंद करने के अपने प्रयास में विफल रहते हैं।

र्यांगगांग प्रान्त के ग्रामीण क्षेत्रों के अहलकारों ने आज विज्ञान से लाभ न उठाने का जो रुख अपनाया है और जिस विश्रृंखलता से ग्राम्य अर्थतन्त्र का कार्य संयोजित और संचालित किया जाता है, उसके परिणामस्वरूप वहां की स्थिति इस समय क्या है?

यद्यपि वे अपने प्रान्त के बारे में बड़ी शेखी बघारते हैं कि वह एक पुराना क्रान्तिकारी समरक्षेत्र तथा सामरिक महत्व का चंदावल क्षेत्र है, फिर भी उसके अवाम का जीवनस्तर कोई बहुत ऊंचा नहीं है, क्योंकि उसमें खेती-बाड़ी का कुशलतापूर्वक संचालन नहीं किया गया है। पूरक आहार पर्याप्त मात्रा में नहीं है और बाजारों में बेर, आड़ू और खूबानी जैसे फल कहीं नजर नहीं आते। आखिर ऐसा क्यों है कि र्यांगगांग प्रान्त के निवासियों को नियमित रूप से फल नहीं मिल पाते, जबकि दूसरे प्रान्तों के लोगों ने अपने लिए फल वाटिकाएं लगायी हैं और अब उनके यहां नाना प्रकार के फल उपलब्ध हैं?

यह बेशक सही है कि कृषि के मामले में र्यांगगांग प्रान्त को अन्य जिलों की तुलना में अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, क्योंकि वह अधिकांशत: पहाड़ी प्रदेश है और उसकी जलवायु ठंडी है। लेकिन कृषि के लिए उसकी प्राकृतिक स्थितियां कितनी भी प्रतिकूल क्यों न हों, फिर भी यदि पार्टी संगठन और प्रमुख कृषि अधिकारी उसे क्षेत्र के विशिष्ट हालात के लिए उपयुक्त कृषि की विज्ञान-सम्मत विधियों का अध्ययन करने और उन्हें सक्रियता से लागू करने के कार्य में वैज्ञानिकों के प्रयासों में सहयोग दें तो यहां भी खूब और तगड़ी फसल प्राप्त की जा सकती है।

अन्य देशों का अनुभव इस धारणा को झुठलाता है कि हमारे देश के काएमा और पाएकमु पठारों में अन्न की अधिक उपज प्राप्त नहीं की जा सकती क्योंकि उनका मौसम बहुत ठंडा है। यह अनुभव इस धारणा को भी काटता है कि ठंड की वजह से पोताए-री में घरेलू जानवरों की नस्ल बढ़ाना असंभव है। असल मामला यह है कि पार्टी संगठन और कृषि क्षेत्र के कर्मी इस जिले में कृषि विकास के लिए अनुसंधान के प्रति उदासीन हैं।

इस समय आप वैज्ञानिक कृषि प्रणाली की स्थापना के लिए अनुसंधान करने की बजाय केवल कृषकों के अनुभवों पर निर्भर होकर विश्रृंखल ढंग से खेती करते हैं। इससे काम न चलेगा। बेशक, आमतौर पर कृषकों के अनुभव मूल्यवान होते हैं, परन्तु उनमें से सभी अच्छे नहीं कहे जा सकते। उनमें से कुछ अच्छे होते हैं और कुछ पिछड़े हुए कहे जा सकते हैं। अतः उनके अनुभव स्वतः हमारी कृषि नीति का निर्धारण नहीं कर सकते।

अनुभव से चिपके रहना और विज्ञान की अनदेखी या उपेक्षा करना गलत है। कुछ भी हो, अनुभव केवल जानकारी का काम करता है। कृषकों के अनुभवों को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर देखना गलत है, लेकिन इसके साथ ही इनके मूल्य को कम आंकना भी उचित नहीं है। उनके अनुभवों को दृष्टिगत रखते हुए हमें कृषि की नयी वैज्ञानिक विधियों का अध्ययन करना होगा।

सबसे पहले पार्टी संगठनों को चाहिए कि वे कृषि वैज्ञानिकों को रयांगगांग प्रान्त के किसानों द्वारा अर्जित तमाम महत्वपूर्ण अनुभवों को एकत्र और व्यवस्थित करें। किस विशिष्ट जिले में किस प्रकार की फसलें अच्छी होती हैं और उनकी उपज कितनी होती है, इस बारे में पड़ताल की जानी चाहिए और उन्हें सविस्तार समझा जाना चाहिए। इस बीच विभिन्न पौधों के बीज जमा किये जाने चाहिए।

नयी, वैज्ञानिक आधार वाली कृषि विधियों का पता करने के लिए अब तक प्राप्त आंकड़ों के आधार पर व्यापक कृषि परीक्षण किये जाने चाहिए। बगैर अनवरत परीक्षणों के निश्चित वैज्ञानिक निष्कर्ष नहीं निकाले जा सकते। रयांग-गांग प्रान्त के किसान अपने पुराने तौरतरीकों से चिपके हुए हैं और वे गेहूं और "बोड़ा" फ़लियों जैसी अनाज की फसलें बोने को तैयार नहीं हैं। इसका कारण ऐसी फसलों के बारे में साफ-साफ वैज्ञानिक निष्कर्षों का अभाव ही हो सकता है। इस लिए प्रान्तीय पार्टी समिति को चाहिए कि अगले दो या तीन सालों में पहाड़ी प्रदेश में खेती के विषय में विज्ञान पर आधारित एक तकनीकी पथ-प्रदर्शिका की तैयारी हेतु सक्रिय रूप से कृषि शास्त्रियों को प्रोत्साहित करे।

अनुसन्धान की बुनियादी धुरी यह होनी चाहिये कि पहाड़ी प्रदेशों में पाले से प्रभावित न होने वाली, शीघ्र पकने वाली और अधिक उपज देने वाली अनाज की फसलें कैसे व्यापक रूप से बोयी जा सकती हैं।

सबसे पहले यह जरूरी होगा कि गेहूं और "बोड़ा" बीन सरीखी अधिक उपज वाली फसलों के बीजों को ठंडी जलवायु सहने योग्य बनाया जाए, ताकि उन्हें पहाड़ी प्रदेशों में बोया जा सके। इस समय गेहूं और "बोड़ा" बीन जैसी अधिक उपज वाली फसलों की खेती के तकनीकी पथप्रदर्शन का अभाव है, इसी वजह से रयांगगांग प्रांत के किसान यह अनिवार्य समझते हैं कि उन्हें केवल जई बानी

चाहिए, जोकि कम उपज देने वाली फसल है। अतः हमें किसानों को अमली तौर पर यह प्रदर्शित करके सिखाना होगा कि रयांगगांग प्रान्त में अधिक उपज वाली अनाज की फसलें बोयी जा सकती हैं। इसके साथ ही हमें इन फसलों की प्रयोगात्मक खेती के द्वारा इनके बीज प्राप्त करने होंगे।

रयांगगांग प्रांत के जलवायु संबंधी विशिष्ट हालात में ऐसे बीज प्राप्त करना भी महत्वपूर्ण है, जोकि हमें भीषण जाड़े का प्रतिरोध करने वाले तथा जल्दी से पकने वाले पौधे दें। इस क्षेत्र में बर्फ बसन्त के अन्त में पिघलने लगती है और शरद ऋतु के प्रारम्भ में ही पाला पड़ने लगता है इसके अलावा अगस्त में वर्षा ऋतु शुरू हो जाती है और फसलों के उगने का समय बहुत अल्प रह जाता है। अतः रयांगगांग प्रान्त में केवल जल्दी से पकने वाली फसलें ही अधिक और निश्चित उपज दे सकती हैं।

हमें बिभिन्न पौधों के संयोग द्वारा नयी संकर किस्में पैदा करने के लिए अनेकों प्रयोग भी करने चाहिए। इस तरह हमें जल्दी पकने और ज्यादा उपज देने वाली किस्में प्राप्त करनी चाहिए।

अनाज की फसलों के बारे में अनुसंधान के साथ-साथ हमें औद्योगिक फसलों, सब्जियों और फलों के अनुसन्धान कार्य को भी व्यापक पैमाने पर हाथ में लेना चाहिए।

हॉप रयांगगांग प्रान्त की एक प्रसिद्ध और विशिष्ट उपज है। परन्तु चूंकि इस क्षेत्र में कोई वैज्ञानिक अनुसन्धान नहीं किया गया है, इसलिए हॉप की खेती में बहुत ज्यादा मेहनत लगती है और काफी नीला थोथा बर्बाद होता है। वैज्ञानिकों को ऐसी विधि खोजनी चाहिए जिससे कम-से-कम श्रम और नीले थोथे के थोड़े उपयोग से भारी परिमाण में बढ़िया किस्म के हॉप की पैदावार हासिल की जा सके।

सब्जियां उगाने की तकनीकां का भी अध्ययन किया जाना चाहिए और उन का प्रचार किया जाना चाहिए।

कुछ दिन हुए, मैंने एक प्रदर्शनी में कापसान में उत्पादित "बारहमासी मूलियां" देखी थीं और वे असाधारण थीं। प्रदर्शनी के संयोजकों का कहना था कि रयांगगांग प्रान्त में मूलियों की वर्ष में तीन फसलें हासिल की जा सकती हैं। कितनी शानदार बात है यह! और यह एक बड़ी भूल है कि ऐसी अच्छी फसल का बेधड़क होकर प्रचार नहीं किया जाता।

कुछ कामरेडों का कहना है कि रयांगगांग प्रान्त में बंदगोभी बोने के परिणाम उत्साहवर्धक नहीं रहे हैं क्योंकि उनका भीतरी भाग खूब गठा हुआ नहीं था, लेकिन प्रयोगात्मक भूखण्ड पर स्वतः मैंने उन्हें ठोस पाया। कुछेक तो प्योंगयांग

की तुलना में भी बेहतर हैं। यदि आपको विज्ञान में विश्वास हो और साहस से परीक्षण करें और उनके परिणामों का खूब प्रचार करें, तो रयांगगांग प्रान्त भी सब्जियों के मामले में आत्मनिर्भर बन सकता है।

यदि रयांगगांग प्रान्त में सेब खूब नहीं उगते, तो उन्हें बोने की कोई जरूरत नहीं हैं। बेहतर यही होगा कि वे फलवृक्ष ज्यादा से ज्यादा लगाए जाएं जो यहां अच्छी तरह उगते हैं। कोई कारण नहीं कि आड़ू बिल्कुल उगाये ही न जा सकते हों, यद्यपि संभव है, ये फल मैदानी इलाकों के आड़ुओं की अपेक्षा छोटे हों। बेर और खूबानी भी काफ़ी हो सकते हैं यदि उनकी मेहनत से देखभाल की जाए। प्रयोगात्मक भूखण्ड पर जो अंगूर मैंने देखे थे, वे खूब बड़े हो रहे थे। अत: पर्याप्त अनुसन्धान पर आधारित विधियों का उपयोग कर तथा इन परीक्षणों का व्यापक इस्तेमाल कर रयांगगांग प्रान्त में फलों के वृक्ष भी बड़े पैमाने पर बोए जाने चाहिए।

रयांगगांग प्रांत सरीखे पठारी क्षेत्र के जलवायु सम्बन्धी और जमीनी हालात के अनुकूल कृषि की वैज्ञानिक विधियों का अध्ययन करना तथा उन्हें सक्रिय रूप से अमल में लाना कोई आसान काम नहीं है। फिर भी यदि विभिन्न स्तरों पर पार्टी संगठन, जिनमें प्रान्तीय पार्टी समिति भी शामिल है, और कृषि के क्षेत्र में प्रमुख कार्यकर्ता इस परियोजना के लिए तथा कृषि वैज्ञानिकों और तकनीशियनों को जोरदार तरीके से संगठित तथा लामबंद करें और राज्य कृषि तथा पशु फार्मों के कर्मियों और सहकारी कृषकों को कार्य हेतु कारगर ढंग से उभारें तो इस समस्या को सुलझाना संभव हो सकता है।

पठारी क्षेत्र की कृषि के अध्ययन की विधि में सुधार के लिए प्रान्तीय पार्टी समिति को प्रान्त के कृषि शास्त्रियों का नेतृत्व करना चाहिए। जब तक कृषिशास्त्री ह्येसान में पड़े रहेंगे और वास्तविकताओं से आंखें मूंद कर किताबों के पन्ने पलटते रहेंगे, जैसा कि वे इस समय कर रहे हैं, तब तक अनुसन्धान कार्य समुचित रूप से सम्पन्न नहीं हो सकेगा। इसलिए प्रान्तीय पार्टी समिति को इस बात का ध्यान रखना होगा कि कृषि विज्ञान अनुसन्धान संस्थान की शाखाएं विभिन्न इलाकों में स्थापित की जाएं, ताकि वे सीधे खेती में काम करते हुए वैज्ञानिक जांच-पड़ताल का काम भी करती रहें। इसके अलावा काएमा और पाएकमु समेत रयांगगांग प्रांत में विभिन्न स्थानों पर प्रयोगात्मक प्लाट बनाए जाएं, जहां व्यापक पैमाने पर वैज्ञानिक कृषि की जांच पड़ताल की जाए।

प्रयोगात्मक प्लाटों का अर्थ यह नहीं कि बस बेदिली से कुछेक पौधे उगा दिये जाएं। प्रत्येक फसल के लिए कम से कम एक छोंगबो भूमि नियत की जानी चाहिए। तभी परीक्षणाधीन फसलों के बारे में सही-सही निष्कर्षों पर पहुंचना संभव होगा।

यह सिफारिश की जाती है कि जिन फसलों के बारे में प्रयोग के पहले साल प्रारम्भिक निष्कर्ष निकाले गए हों, उन्हें अगले साल दर्जनों या सैकड़ों छोंगबो जमीन पर उगाया जाए। मुझे पता चला है कि फार्म नं० ५ में इस वर्ष करीब २०० छोंगबो भूमि पर प्रयोग रूप में गेहूं बोया गया है। शाबाश !

फसलों की खेती के अनुसन्धान का कार्य इस ढंग से प्रयोगात्मक प्लाटों में किया जाना चाहिए और पशुसंवर्धन पर परीक्षण राजकीय कृषि और पशु फार्मों में किये जाने चाहिए। सहकारी फार्मों की तुलना में राजकीय कृषि और पशु फार्मों में पालतू जानवरों के काफी ज्यादा शेड हैं और फिर उनके अपने तकनीकी कर्मचारी भी हैं जो निश्चित काम दिये जाने पर तथा वैज्ञानिकों द्वारा थोड़ी-सी मदद उपलब्ध किए जाने पर स्वतः अनुसन्धान कार्य कर सकते हैं।

मौके पर अनुसन्धान कार्य कर रहे कृषि शास्त्रियों को चाहिए कि वहां के सहकारी कृषकों तथा राजकीय कृषि और पशु फार्म कर्मियों के साथ गहरे नाते बनाये रखेंगे और उनके साथ अपने प्रयासों को समन्वित करें।

वैज्ञानिक गवेषणा के कार्य में ह्येसान के कृषि और वन विद्या कालेज उच्चतर कृषि स्कूलों और कृषि-तकनीकी स्कूलों के शिक्षकों और छात्रों को भी सक्रिय रूप से शामिल किया जाना चाहिए। इस से वैज्ञानिकों की मदद होगी और साथ ही शिक्षकों तथा छात्रों को बहुत ज्यादा फायदा होगा। वैज्ञानिक अपने अनुसंधान में शिक्षकों और छात्रों से सहायता प्राप्त कर सकेंगे और शिक्षक तथा छात्र वैज्ञानिकों से कृषि विज्ञान के बारे में बहुत कुछ सीख सकेंगे।

प्रान्त में वैज्ञानिकों और तकनीशियनों का कारगर ढंग से उपयोग करते हुए प्रान्तीय पार्टी समिति को भारी संख्या में नये वैज्ञानिकों और तकनीशियनों के प्रशिक्षण पर पूरा ध्यान देना चाहिए।

सबसे पहले ह्येसान के कृषि और बन विद्या कालेज का विस्तार किया जाना चाहिये। इस समय इस कालेज के स्नातकों की मांग बहुत ज्यादा है। यदि प्रत्येक सहकारी फार्म में दो कृषि-शास्त्री भेजने हों तो अकेले रयांगगांग प्रान्त में ५०० से अधिक ऐसे लोग दरकार होंगे। और यदि प्रत्येक कार्यटोली के साथ एक कृषि शास्त्री को नियुक्त किया जाए तो १२०० से अधिक दरकार होंगे। यदि प्रांत में पार्टी निकायों और कृषि नेतृत्व एजेंसियों में दरकार तकनीकी कार्यकर्ताओं को भी जोड़ा जाए तो ह्येसान के कृषि और वनविद्या कालेज को कम से कम २,००० से ३,००० विशेषज्ञों को प्रशिक्षण देना होगा। ह्येसान के कृषि और बन विद्या कालेज को रयांगगांग प्रान्त के अतिरिक्त छागांग प्रान्त की रांगरिम काउंटी, दक्षिण हामग्योंग प्रान्त की छांगजिन काउंटी तथा उत्तर हामग्योंग प्रान्त की योन्सा और मुसान काउंटियों सरीखे पहाड़ी क्षेत्रों में भी अपने स्नातक भेजने चाहिये।

इतनी बड़ी तादाद में कृषि-तकनीकी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने के लिए ह्येसान कृषि और वनविद्या कालेज में और अधिक संकाय स्थापित करने होंगे और उसमें प्रवेश बढ़ाना होगा। वन विद्या संकाय में पढ़ाये जाने वाले वर्तमान कृषि पाठ्यक्रमों को उससे अलग कर उसका एक स्वतन्त्र कृषि संकाय के रूप में विस्तार किया जाना चाहिए और कृषि शाखा तथा पशु सवंर्धन के नये संकाय स्थापित किये जाने चाहिये पत्राचार पाठ्यक्रमों का भी और विस्तार किया जाना चाहिए, ताकि प्रान्त में सहकारी फार्मों से अधिकाधिक संभावित संख्या में प्रबन्ध कर्मचारी सर्दियों में आकर अध्ययन कर सकें।

ज्ञान के अभाव में वर्तमान कार्यकर्ताओं को बर्खास्त कर देने की धारणा के स्थान पर अतिरिक्त शिक्षण की व्यवस्था को लागू कर उनके स्तर में सुधार करना जरूरी है।

कृषि और वन विद्या कालेज में विस्तार के साथ-साथ कालेज पाठ्य पुस्तकों की समस्या को भी हर हालत में हल करना होगा।

कुछ दिन हुए, मैंने कालेज के प्रोफेसरों के साथ बातचीत की। उनके अनुसार कालेज के पास इस समय छात्रों के लिए कृषि की कोई पाठ्यपुस्तकें नहीं हैं। पहाड़ी क्षेत्र कृषि के बारे में वैज्ञानिक अनुसन्धान आंकड़ों के अभाव में यह स्वाभाविक ही है कि इस विषय के बारे में कोई भी पाठ्यपुस्तक रची नहीं जा सकी। इसके अलावा छात्रों को विदेशी पाठ्यपुस्तकों की मदद से, जिनमें हमारे देश के खास हालात पर विचार नहीं किया गया है, पढ़ाना असम्भव है।

अत: एक साल के लिए किसानों के अनुभवों से प्राप्त आम आंकड़ों के आधार पर ही पढ़ाया जाना चाहिये। इस बीच प्रोफेसरों को प्रयोगात्मक प्लाटों पर जाना चाहिए और कृषि अनुसन्धान संस्थान के वैज्ञानिकों से मिलकर अनुसन्धान कार्य करना चाहिए और इस प्रकार ऐसी वैज्ञानिक सामग्री इकट्ठी करनी चाहिए; जिसके आधार पर अगले बर्ष लेक्चर दिये जा सकें। यदि वे लगभग तीन वर्ष तक ऐसा काम करें तो वे वैज्ञानिक आंकड़ों के आधार पर कृषि-पाठ्यपुस्तकें तैयार करने में पूर्णतया समर्थ हो जाएंगे।

साथ ही बड़ी-बड़ी काउंटियों में उच्चतर कृषि स्कूल खोले जाने चाहिए। मिसाल के तौर पर पुंगसान काउंटी में इस प्रकार के स्कूल की बहुत ही जरूरत है। एक ऐसी काउंटी में एक उच्चतर कृषि-तकनीकी स्कूल में कृषि विभाग के अतिरिक्त पशुसंवर्धन का एक विभाग भी स्थापित किया जाना चाहिए ताकि इस क्षेत्र में भारी संख्या में तकनीशियनों का प्रशिक्षित किया जा सके। और सामजीयोन जैसे स्थानों में एक उच्चतर वन्य स्कूल खोलना मुनासिब होगा।

इस प्रकार विभिन्न विशिष्ट ज्ञानों में तकनीशियनों को प्रशिक्षित करने के

लिए जिला आधार पर उच्चतर तकनीकी स्कूल स्थापित किये जाने चाहिए और जो विज्ञान किसी एक काउंटी में सिखाये नहीं जा सकते, उनकी शिक्षा के लिए अन्य काउंटियों के साथ आदान-प्रदान के आधार पर स्कूल कायम किये जाने चाहिये।

वैज्ञानिक तकनीशियन और शिक्षक, जिन्होंने प्रान्त में खेती-बाड़ी में विशेषज्ञता प्राप्त कर रखी है, अब पहाड़ी प्रदेशों में कृषि के वैज्ञानिक उपायों का अध्ययन करने के बहुत उत्सुक हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि पार्टी संगठन और कृषि के लिए जिम्मेदार प्रमुख कर्मी उनके साथ अपने कार्य में सुधार करें और उन्हें उनके अनुसन्धान में हर सम्भव मदद दें।

पार्टी संगठनों और प्रमुख कर्मियों को वैज्ञानिकों के साथ सतत सम्पर्क बनाये रखना चाहिये और उन्हें इस बारे में रिपोर्ट देने को कहना चाहिये कि उनका अनुसन्धान कार्य कैसे चल रहा है। उन्हें वैज्ञानिकों को पार्टी नीतियों से परिचित कराना चाहिये, उनके साथ प्रयोगात्मक प्लाटों पर जाना चाहिये और उनके अनुसन्धान कार्य के दौरान यदि कोई भी समस्या उत्पन्न हो, तो उसे उसी समय सुलझाने में उनकी मदद करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त उन्हें कालेज प्रोफेसरों से बराबर मिलते रहना चाहिए, उनसे पूछना चाहिए कि उनका अध्यापन कार्य कैसे चल रहा है और छात्र अपने अध्ययन कार्य में कैसी तरक्की कर रहे हैं, तथा उनकी समस्याओं में दिलचस्पी लेनी चाहिए।

कृषि विज्ञान अनुसन्धान संस्थान के वैज्ञानिकों तथा कृषि और वन विद्या कालेज के प्राध्यापकों को खास तौर पर रिहायशी क्वार्टर, परिवहन के साधन और अनुसन्धान कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए आवश्यक प्राविधिक तथा वैज्ञानिक पुस्तकें उपलब्ध की जानी चाहिए।

हमें उन्हें पठारी कृषि से सम्बद्ध विदेशी वैज्ञानिक अनुसन्धान के आंकड़े भी उपलब्ध करने चाहिये। चीन में चिंघाई, तिब्बत, शिगान पर्वतीय क्षेत्र और सुंगारी नदी के दक्षिणी क्षेत्रों के कुदरती हालात र्यांगगांग प्रान्त से मिलते-जुलते हैं, और उनके कृषि-अध्ययन हमारे वैज्ञानिकों के अनुसन्धान कार्य में सहायक होंगे।

र्यांगगांग प्रान्त में कृषि के लिए एक अन्य महत्वपूर्ण बात यह है कि विभिन्न फसलों का उचित स्थान नियत किया जाना चाहिए।

समुद्री सतह से ऊंचे और विशिष्ट जलवायु वाले इस क्षेत्र में फसल उपज इसी बात पर निर्भर करती है कि फसल क्षेत्रों का वितरण मुसासिब ढंग से किया गया है या नहीं। दुर्भाग्यवश, र्यांगगांग प्रान्त में फसल क्षेत्रों का वितरण गलत है।

इस खामी का मुख्य कारण यह है कि नियोजन के मामलों में काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समितियां आत्मनिष्ठता से काम ले रही हैं।

इस समय काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समितियां अपनी काउंटियों में वास्तविक स्थिति का अध्ययन किये बगैर ही यांत्रिक तौर पर लक्ष्य के आंकड़े नियत करती हैं और आत्मनिष्ठ ढंग से ही निचली इकाइयों पर उन्हें थोप देती हैं। आलू और पटुए की मिसाल ही लीजिए। इनकी बुबाई के क्षेत्र के ऐसे बढ़े-चढ़े कोटे थोप दिए गये कि उन्हें पूरा करने के लिए निचली इकाइयों को कृषि के अयोग्य दलदली जमीनों का भी उपयोग करना पड़ता है। इसका मतलब यह है कि काउंटी प्रबन्ध समितियां धक्केशाही से फसल क्षेत्रों का नियतन करती हैं, और इस नियतन का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं होता। वे केवल यह परिकल्पना करती हैं कि यहां ठंडे प्रदेश में आलू और पटुआ खूब उगेंगे और ऊंचे तथा नमी वाले क्षेत्र में जई तथा पैनिक घास की बहार आ सकती है। यह सुस्पष्ट है कि इस परिपाटी से अच्छी फसलें हासिल नहीं की जा सकतीं।

असल में काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समितियां अभी तक अपनी भूमिका उचित रूप से निभाने में असमर्थ दीखती हैं। इस बैठक में सामसु काउंटी पार्टी समिति के अध्यक्ष द्वारा दिए गए भाषण से प्रकट होता है कि काउंटी प्रबंध समितियों के कार्यकर्ता किस हद तक धक्केशाही से काम कर रहे हैं। जैसाकि आप सबसे सुना है, पोछोन काउंटी में छोंगरिम-री के सहकारी फार्म के अध्यक्ष कम से कम यह तो बखूबी जानते हैं कि कृषि कार्य के लिए क्या कुछ किया जाना चाहिये, परन्तु समासु काउंटी पार्टी समिति के अध्यक्ष ने जो भाषण दिया, उससे इस बारे में उनकी अज्ञानता प्रकट होती है कि क्या और कैसे काम किया जाना चाहिए। बेशक यह स्वत: काउंटी पार्टी समिति के अध्यक्ष की ही खामी है। लेकिन अपनी काउंटी में कृषि कार्य के बारे में क्या कुछ किया जाना चाहिये, इस बारे में उनकी अज्ञानता यह भी प्रकट करती है कि समसु काउंटी सहकारी प्रबन्ध समिति अपना काम मुनासिब ढंग से नहीं कर रही है। स्वयं काउंटी पार्टी समिति के अध्यक्ष को अपनी काउंटी में कृषि कार्य के बारे में सब कुछ मालूम होना चाहिये, लेकिन वह अकेले तो कुछ भी नहीं कर सकते। काउंटी प्रबन्ध समिति को सहकारी फार्मों में वास्तविक हालात का गहन अध्ययन और वैज्ञानिक विश्लेषण कर उनकी मदद करनी चाहिए। चूंकि समसु काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समिति ने अपना कार्य उचित रूप से नहीं किया, इसलिए काउंटी पार्टी समिति के अध्यक्ष को अपनी काउंटी में कृषि की स्थिति के बारे में कुछ भी ज्ञान नहीं है, अत: बैठक में वह ऐसा निरर्थक भाषण न करते तो क्या करते।

काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समितियों की स्थापना में हमारा उद्देश्य ग्राम्य अर्थतन्त्र में प्रबन्ध की औद्योगिक विधियां लागू करना था। दूसरे शब्दों में, मुद्दा यह था कि भूतकाल की प्रशासकीय विधियों से, जिनका उस समय उपयोग किया

गया, जबकि ग्राम्य अर्थतन्त्र का पथप्रदर्शन का कार्य जन समितियों के हाथों में था, बचा जाए और भौगोलिक विशिष्टताओं के अनुरूप वैज्ञानिक और तकनीकी तरीके से कृषि उत्पादन कार्य का निर्देशन किया जाए।

इस वजह से काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समितियों को विभिन्न फसलों की बुवाई और कटाई के समय को दृष्टिगत रखते हुए, निश्चित रूप से वैज्ञानिक योजनाओं की रूपरेखा तैयार करनी चाहिए, दो खातों के बीच पर्याप्त सन्तुलन बनाये रखना चाहिए, तथा मिट्टी के उपजाऊपन और खादों की बनावट का अध्ययन करना चाहिए और लाभप्रदता का सविस्तार आकलन करना चाहिए। यदि योजनाएं बनायी जाती हैं और बगैर किसी वैज्ञानिक तथा तकनीकी आकलन के फसल क्षेत्र ऊलजलूल ढंग से बांट दिये जाते हैं तो फिर हमें प्रबन्ध समितियों तथा उनके नियोजन, जनशक्ति और तकनीकी विभागों का संगठन करने की क्या जरूरत थी? काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समितियों के कर्मियों को अपने दायित्वों के प्रति पूर्णतया जागरूक होना चाहिए और कृषि उत्पादन में अपने वैज्ञानिक और तकनीकी पथप्रदर्शन को सुधारना चाहिए।

प्रत्येक क्षेत्र के कुदरती हालात के अनुरूप फसलों के वितरण के लिए वैज्ञानिक आधार पर योजना की तैयारी के साथ इसकी शुरूआत की जानी चाहिए। सही मिट्टी में सही फसल उगाने के पार्टी द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त के अनुसार खूब उगने वाली फसलों को बोया जाना चाहिए। कुछ भी हो वे फसलें बोई जानी चाहिए, जो राज्य की जरूरतों को पूरा करें और किसानों को लाभान्वित करें। भले ही फसलें खूब हों, यदि वे राज्य की जरूरतें पूरी नहीं कर पातीं और किसानों को कोई नफा नहीं देतीं तो उनकी बड़े पैमाने पर बुवाई बेकार है। अतः काउंटी सहकारी फार्म प्रबन्ध समितियों के कर्मियों को फार्मों में जाना चाहिए और उन फसलों का, जो खूब उगने वाली हों और इसके साथ ही जो राज्य की जरूरतों के अनुकूल हों तथा किसानों के लिए बहुत लाभकारी हों, वैज्ञानिक और तकनीकी अध्ययन करना चाहिए। इसी आधार पर फसल क्षेत्रों के वितरण के लिए ठोस योजनाओं की रूपरेखा तैयार की जानी चाहिए। तभी कारगर ढंग से कृषि करना और फसलों की उपज बढ़ाना संभव हो पाएगा।

र्यांगगांग प्रान्त में फसल क्षेत्रों के वितरण के प्रश्न के सम्बन्ध में मैं खास तौर पर अधिक उपज देने वाली अन्न की फसलों की बड़े पैमाने पर बुवाई की जरूरत पर जोर देना चाहूंगा। केवल इसलिए कि आपको खाद्यान्न में आत्म-निर्भर होने को कहा गया है, यूंही बिना किसी योजना के अनाज की ऐसी फसलें न बोनी चाहिए जो मात्र १०० से २०० किलोग्राम प्रति छोंगबो उपज देने वाली हों।

यदि अनाज की कोई फसल बोयी जाती है तो उसकी उपज कम से कम एक

टन प्रति छोंगबो होनी चाहिए। यदि हमारे देश में जिसके पास कुल १८ लाख छोंगबों कृषि भूमि है, खाद्यान्न की उपज एक टन प्रति छोंगबो भी हो, तो भी कुल उत्पादन १८ लाख टन से अधिक न होगा। यह मात्रा हमारी जनता को आहार के लिए नियमित रूप से मांड तक मुहैया कर पाने में असमर्थ रहेगी।

सारे देश की तरह रयांगगांग प्रान्त में भी प्रति छोंगबो उपज इतनी होनी चाहिए जिससे कम से कम पांच लोगों का पेट भर सके। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रत्येक छोंगबो अन्न की उपज दो टन होनी चाहिए। यदि यह बात भी ध्यान में रखी जाए कि फैक्टरी और दफ्तरी कर्मचारियों के लिए सामग्री दूसरे प्रान्तों से लायी जाती है, तो साफ है कि प्रान्त की केवल आधी आबादी की उदरपूर्ति के लिए ही प्रति छोंगबो कम से कम एक टन अन्न की उपज होना जरूरी है।

लेकिन, लगता है कि आप २०० से ३०० किलोग्राम प्रति छोंगबो उपज से ही सन्तुष्ट हैं और आपने अधिक उत्पादन को आश्वस्त करने के लिए या अनुसन्धान कार्य करने के लिए कदम नहीं उठाये हैं। इससे काम नहीं चलेगा। अन्न के दाने बादलों से नहीं गिरते और न ही धरती से अपने आप फूट पड़ते हैं। अन्न उत्पादन में वृद्धि के लिए अनुसन्धान और प्रयास जरूरी है। केवल इसी उपाय से लोगों के लिए पर्याप्त अनाज पैदा करना संभव होगा।

आज हमारी पार्टी और उसके तमाम सदस्य हमारे देश के पूरे घराने के मुखिया हैं। अतः लोगों के लिए आहार की गारंटी देना हमारी पार्टी और उसके तमाम सदस्यों का कर्तव्य है।

पार्टी कार्यकर्ताओं को इसकी स्पष्टतः अनुभूति करनी होगी और उन्हें जिम्मेदारी की भावना से काम करना होगा। उन्हें प्रान्त की भौगोलिक स्थितियों के लिए उपयुक्त अधिक उपज वाली फसलें व्यापक रूप से बोनी चाहिए और एक टन प्रति छोंगबो से अधिक उपज हासिल करने के लिए दृढ़तापूर्वक प्रयास करना चाहिए।

रयांगगांग प्रान्त में ठंड सहने और जल्दी पकने वाली फसलें समद्र तल से अधिक ऊंचे क्षेत्रों में बोयी जानी चाहिए और अनाज की फसलें यथासंभव निचले क्षेत्रों में।

मूलतः सन, आलू, "बोड़ा" बीन, गेहू और जौ ऊंचे क्षेत्रों में व्यापक पैमाने पर बोये जाने चाहिए। सन हमेशा बड़े पैमाने पर बोयी जानी चाहिए भले ही उसकी हर तीन या चार वर्ष बाद बुवाई करनी पड़े। जई या पैनिक घास की बजाय—जिनकी प्रति छोंगबो उपज २०० किलोग्राम से कम है—सन की खेती करना राज्य के लिए अधिक लाभकारी है, तथा जिन क्षेत्रों में उपज दो टन प्रति छोंगबो से अधिक हो वहां अधिक अनाज बोना लाभकारी है।

जब सन फसल में गिरावट आती है, तो गिरावट की दर १०० और २००

किलोग्राम प्रति छोंगबो के बीच रहती है। अतः १५,००० या २०,००० छोंगबो सन बोना मुनासिब रहेगा। यदि सन भारी परिमाण में पैदा हो तो उसके बदले में मानवीय खपत के लिए मक्के का आहार प्राप्त किया जा सकता है।

रयांगगांग प्रान्त में योजना अन्न की फसल के रूप में जई की बड़े पैमाने पर बुवाई की है, लेकिन यह अनावश्यक है। जैसा कि आप को अनुभव से मालूम हुआ है, जई की उपज बहुत कम होती है। जब जई की प्रति छोंगबो उपज ६०० किलोग्राम होती है, तो भी छंटाई में वह छट कर आधी रह जाती है। वास्तव में उबली जई स्वादिष्ट भी नहीं होती। हम इसे छापामार संघर्ष के दिनों में खाते थे, लेकिन यह मक्के के दलिया से घटिया होती है।

कम उपज की और अस्वादिष्ट जई की अपेक्षा अन्य फसलें बोना बेहतर है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि जई की खेती बिल्कुल की ही न जाए। पहाड़ी भूमियों में उत्तम खेती-बाड़ी के बारे में वैज्ञानिक अनुसन्धान और प्रयोग अभी तक पर्याप्त रूप से नहीं किये गये हैं और इस बात को ध्यान में रखते हुए अभी जई बोयी जानी चाहिए। जब परीक्षणों के वैज्ञानिक निष्कर्ष प्राप्त हो जाएं तो अगले साल या उससे अगले साल जई के स्थान पर गेहूं या जौ की खेती की जानी चाहिए।

जई के मुकाबले में गेहूं की उपज ज्यादा होती है और वह ज्यादा स्वादिष्ट होता है और जहां जई उगती है, वहां गेहूं अवश्य ही उगना चाहिए। गेहूं की बहुतायत से फसल लेने के लिए इस जिले की जलवायु और जमीनी हालात के अनुकूल बीज प्राप्त करना भी एक महत्वपूर्ण काम है।

रयांगगांग प्रान्त के आलू, जो कि पहाड़ी प्रदेशों में खूब उगते हैं, हर साल भारी मात्रा में बोए जाने चाहिए। लेकिन बिना परिणामों को ध्यान में रखे आलू नहीं बोने चाहिए। मैंने एक बार कहा था कि आलू शुष्क खेती की फसलों का बादशाह है। इसी वजह से रयांगगांग प्रान्त उसे चावल और मक्के के खेतों में भी बोता है। ऐसा नहीं किया जाना चाहिए। आपको उन क्षेत्रों में आलू नहीं बोने चाहिए, जहां चावल और मक्के की खूब उपज होती हो। आलू तो उन पहाड़ी भूमियों की शुष्क खेती की फसलों का बादशाह है जहां अनाज की अच्छी फसल नहीं होती।

परीक्षणात्मक आधार पर "बोड़ा" बीन उगाना भी अच्छा रहेगा। क्योंकि इस फसल पर अभी तक कोई भी अनुसन्धान नहीं किया गया है, अतः पहले साल इस की व्यापक खेती नहीं की जानी चाहिए, बल्कि परीक्षणात्मक आधार पर ३,००० छोंगबो पर इसे बोया जाना चाहिए। यदि इसकी प्रति छोंगबो उपज एक टन से अधिक हो तो अगले साल से इसकी व्यापक स्तर पर खेती की जानी चाहिए, यदि "बोड़ा" बीन बड़े पैमाने पर बोयी जाए, तो उसके डंठल अच्छे काम आ सकते हैं।

विश्लेषण के अनुसार सूखे डंठलों में ६ प्रतिशत और ताजा डंठलों में १२ प्रतिशत तक प्रोटीन होती है और इनका पशुओं के अच्छे चारे के रूप में उपयोग किया जा सकता हैं।

हॉप लता का बुवाई क्षेत्र १,००० छोंगबो से अधिक होना चाहिए, क्योंकि उसकी खेती पर काफी जनशक्ति खर्च होती है। लेकिन इसका क्षेत्र १,००० छोंगबो से कम भी नहीं होना चाहिए।

पटुआ और सरसों की भी व्यापक खेती की जानी चाहिए। पटुआ से ६०० किलोग्राम प्रति छोंगबो बीज मिलते है। यह बड़ी अच्छी फसल है, क्योंकि बीजों से तेल मिलता है और डंठलों से रेशे प्राप्त होते हैं।

रयांगगांग प्रान्त के निचले क्षेत्रों में धान और मक्का जैसी बड़ी उपज की फसलें भारी पैमाने पर बोयी जानी चाहिए।

यह कहने की जरूरत नहीं कि सही जमीन पर सही फसल के सिद्धान्त का निचले क्षेत्रों में भी कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए। केवल इसलिए कि धन-खेतों में विस्तार होना चाहिए, धान की खेती के अयोग्य क्षेत्रों में अनापशनाप तौर पर धनखेतों का विकास नहीं किया जाना चाहिए, जैसा कि अमनोकगांग सहकारी फार्म में किया गया। इस फार्म ने धरती का उचित विश्लेषण किये बगैर शुष्क खेतों के एक विशाल क्षेत्र को धनखेतों में बदलने पर दो वर्ष लगाये और फिर उसने उन क्षेत्रों को उनकी मूल स्थिति में वापस लाने में दो वर्ष और जाया किए। इस गलती का परिणाम यह हुआ कि चार साल तक वहां कोई भी अच्छी फसल नहीं हुई। इस तरह भारी नुकसान हुआ।

लेकिन जिन क्षेत्रों में चावल की अच्छी फसल होती है, वहां और अधिक धन-खेत तैयार करना अच्छा होगा। इसी प्रकार कापसान और समसु काउंटियों में जहां कहीं चावल की अच्छी उपज होती है, और ज्यादा तादाद में धनखेत तैयार किये जाने चाहिये। यदि धनखेत तैयार किये जाएं तो हम आवश्यकता के अनुसार पानी चढ़ाने के पम्प उपलब्ध कर सकते हैं।

धान और मक्के के साथ-साथ निचले क्षेत्रों में गेहूं और जौ की भी व्यापक बुवाई की जानी चाहिए। इसी तरह बीज भी बड़े पैमाने पर बोयी जानी चाहिए और बीजों में सुधार और प्रति छोंगबो एक टन से अधिक उपज के लिए अत्यधिक प्रयास किये जाने चाहिए।

रयांगगांग प्रान्त के एक विशाल क्षेत्र में बड़ी सरसों भी बोयी जानी चाहिए। उसकी पत्तियां सहआहार—साग—के रूप में खायी जाती हैं और बीजों से तेल तथा सरसों मिल सकता है। यदि आप एक छोंगबो से केवल ६०० किलोग्राम सरसों बीज प्राप्त करें तो भी यह असली से बेहतर फसल होगी। खेती के तरीकों के और

आगे अध्ययन के बाद सहकारी फार्मों में बड़ी सरसों की व्यापक बुवाई इस जिले में लोगों के जीवनस्तर में भारी योगदान करेगी।

इस बात पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि बीजों का चयन ठीक हो।

बिना उचित बीज-चयन के अच्छी खेती असंभव है। अनुभव बताता है कि मुनासिब चयन द्वारा प्राप्त अच्छे बीज पैदावार में २० से ३० प्रतिशत तक बढ़ोतरी ला सकते हैं।

परन्तु अभी र्यांगगांग प्रान्त में बीजों का चयन घटिया ढंग से होता है और उनके संरक्षण तथा देखभाल के कार्यों की भी अनदेखी की जाती है।

जैसा कि सभी क्षेत्रों के बारे में र्यांगगांग प्रान्त के बारे में खासतौर पर कहा जा सकता है, जो भी बीज हाथ लगे, उसे बो देने से काम नहीं चलेगा। मैदानों में ऐसी कोई मिसाल नहीं मिलती कि यदि घटिया बीज बोया जाए तो फसल पूर्णतया विफल रहे, भले ही उपज में कुछ कमी हो जाए। लेकिन र्यांगगांग प्रांत के पहाड़ी प्रदेश में, यदि बीज जरा भी घटिया हों तो फसल पूर्णतया असफल रहेंगी क्योंकि पौधे पकेंगे ही नहीं। अतः इस क्षेत्र के लिए उपयुक्त बीज हर हालत में भंडार में रखने होंगे, भले ही इसकी वजह से अन्न का अभाव होने पर दूसरे प्रान्तों से आयात क्यों न करना पड़े। तभी आप निश्चित आधार पर अच्छी खेती का संचालन कर सकेंगे।

भविष्य में र्यांगगांग प्रान्त में बीज चयन की एक प्रणाली की पूर्ण प्रतिष्ठा की जानी चाहिए। प्रत्येक सहकारी फार्म को अपना एक पृथक बीज प्लांट स्थापित करना चाहिए और तकनीशियनों की मदद से बीज चयन का कार्य बड़े पैमाने पर संचालित करना चाहिए। बीजों के संरक्षण और देखभाल की एक कड़ी प्रणाली भी स्थापित की जानी चाहिए, जिसके अन्तर्गत बीजों को कीट-रहित कर एक निश्चित स्थान में रखा जाए और समय पर उनका वितरण किया जाए।

प्रान्तीय ग्राम्य अर्थतन्त्र समिति को कृषि आयोग और पार्टी केन्द्रीय समिति के कृषि विभाग की मदद से इन उपायों की क्रियान्विति के लिए ठोस कार्रवाई करनी चाहिए।

र्यांगगांग प्रान्त में कृषि यन्त्रीकरण को भी पूरे जोरशोर से आगे बढ़ाया जाना चाहिए।

अन्य प्रान्तों की अपेक्षा र्यांगगांग प्रान्त में प्रति किसान घराने पर खेतीबाड़ी में ज्यादा भूमि है। मिसाल के तौर पर, पुंगसान काउंटी में हर किसानों के पास औसतन ३.५ से ४ छोंगबो खेती की भुमि है। यदि हर घराने में काम करने वाले दो प्राणी हों तो प्रत्येक के पास १.६ से २ छोंगबो भूमि होगी। यह बहुत ज्यादा भूमि है। इसी वजह से र्यांगगांग प्रान्त में बीज समय पर नहीं बोये जाते और

शरद ऋतु में फसल की कटाई जनबल की कमी के कारण पिछड़ जाती है। इससे पैदावार पर निर्णायक असर पड़ता है।

श्रम दबाव को कम करने के लिए सबसे ज्यादा जरूरी बात यह है कि तमाम कृषि कार्य का यन्त्रीकरण हो।

कहा जाता है कि र्यांगगांग प्रान्त में ९०,००० छोंगबो कृषि भूमि में से ३०,००० पर यन्त्रीकरण लागू किया जा सकता है। यदि इतने क्षेत्र पर भी यन्त्रीकरण पूरी तरह लागू कर दिया जाए तो एक तिहाई फार्म भूमि की समस्या हल हो जाएगी। यदि सीधे राजकीय प्रबंध के अन्तर्गत पहले से यन्त्रीकृत भूमि को इस ३०,००० छोंगबो में जोड़ दिया जाए तो कुल यन्त्रीकरण क्षेत्र ४०,००० छोंगबो हो जाएगा।

जब यह कार्य पूरा हो जाए तो जुताई-बुवाई की शेष भूमि का काम ग्रामीण श्रम बल से चल सकता हैं तथा बुवाई और कटाई सरीखे कृषि कार्य भी समय पर किये जा सकते हैं। इसके अलावा यदि प्रान्त में फैक्टरी और दफ्तरी कर्मी तथा छात्र लामबंद किये जाएं और वे बुवाई तथा कटाई में तनिक मदद दें तो प्रान्तों की तरह जनशक्ति का अभाव कोई बड़ी समस्या नहीं रह जाएगा।

परन्तु आप कृषि के यन्त्रीकरण की ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं। कुछ साथी तो ऐसे हैं कि पर्वतीय क्षेत्रों में अतीत की बिना किसी तौर-तरीके की कृषि संबंधी आदतों को समाप्त करने में असफल रहने पर यन्त्रीकरण को ही मुसीबत कहने लगते हैं।

बेशक, र्यांगगांग प्रान्त में कृषि के यन्त्रीकरण में कई पेचीदा समस्याएं पैदा होंगी। इसके लिए जरूरी है कि तकनीक में निपुणता हासिल हो, इस क्षेत्र के विशिष्ट हालात के लिए उपयुक्त मशीनों का निर्माण हो, भूखण्डों की ठीक व्यवस्था हो और नयी सड़कों का निर्माण हो। लेकिन हम अब केवल शारीरिक श्रम के साथ खेती बाड़ी करना जारी नहीं रख सकते।

बगैर यन्त्रीकरण के कृषि कार्य को यूं ही हाथों में लेना बोसीदा विचारों की अभिव्यक्ति मात्र है। जब तक इन अभिव्यक्तियों के विरुद्ध संघर्ष नहीं छेड़ा जाता, रियांगगांग-प्रान्त में फार्म यन्त्रीकरण लागू करना संभव न होगा। आपको साफ तौर पर समझ लेना होगा कि कृषि के यन्त्रीकरण का कार्य एक वैचारिक संघर्ष से जुड़ा हुआ है और यह हर उपलब्ध उपाय को काम में लाकर यन्त्रीकृत कृषि के क्षेत्र को यथासंभव अधिक से अधिक विस्तार करने का प्रयास है।

इस बात का ध्यान रखना होगा कि जिन फसलों को यन्त्रों द्वारा कृषि करना मुश्किल है, उन्हें उन खेतों में बोया जाए, जहां तत्काल यन्त्रीकरण करना कठिन है, जब कि आसानी से यन्त्रीकृत की जाने वाली फसलें उन खेतों में लगायी जाएं जहां यन्त्रीकरण लागू करना सरल है।

इस समय आप बोसीदा विधियों का उपयोग कर समतल भूमियों में सन उगाते हैं। जब ऐसी हालत है तो सन उन क्षेत्रों में, उगाना बेहतर होगा, जहां यन्त्रीकरण लागू करना कठिन है, जबकि समतल भूमियों में आसानी से यन्त्रीकृत की जा सकने वाली फसल की अधिकतम बुवाई करना ठीक होगा। निःसन्देह, मेरे कहने का आशय यह नहीं है कि सन की खेती का यन्त्रीकरण न किया जाए। भविष्य में सन के लिए उपयुक्त मशीनें भी बनायी जानी चाहिए और फिर उसकी खेती का भी यन्त्रीकरण किया जा सकता है।

आलू की खेती को भी यन्त्रीकृत किया जाना चाहिए। यह काम बिना नये आविष्कार या किसी विशेष अध्ययन के करना संभव है, क्योंकि इस बारे में पहले ही विदेशी अनुभव मालूम है। केवल करना यह होगा कि आलू प्लांटर्स और हारवेस्टर्स का, जोकि पहले ही बन चुके हैं, अध्ययन कर उनके जैसे यन्त्र तैयार किये जाएं।

तनिक और अध्ययन और प्रयास से यन्त्रों द्वारा गेहूं, जौ और जई सरीखी फसलों की भी मशीन से काश्त करना सर्वथा संभव हो जायेगा।

भले ही हम रयांगगांग प्रान्त में कृषि का यन्त्रीकरण शुरू कर दें, तो भी हम एकदम सारे कृषि कार्यों का यन्त्रीकरण नहीं कर सकते। तथापि यदि हम केवल जुताई, निराई और कटाई को ही यन्त्रीकृत कर लें, जब कि बुवाई शारीरिक श्रम के अन्तर्गत ही रहे, तो भी कृषि कार्य आज की अपेक्षा कहीं अधिक आसान हो जाएगा और तमाम कृषि कार्य समय पर करना संभव हो जाएगा।

यन्त्रीकरण लागू करने के लिए राज्य को चाहिए कि इस क्षेत्र की भौगोलिक स्थितियों में काम के लिए उपयुक्त भारी संख्या में ट्रैक्टर और अन्य किस्मों की कृषि मशीनें उपलब्ध करे। रयांगगांग प्रान्त के पास इस समय ५०० ट्रैक्टर हैं और उसने केवल अन्य ४०० की मांग की है। इतने ट्रैक्टर देना हमारी बिसात में है ही। ट्रैक्टर मरम्मत केन्द्र भी समुचित ढंग से स्थापित किये जाने चाहिए ताकि मरम्मत कार्य की प्रान्त के अन्दर ही व्यवस्था हो सके। ट्रेलर आदि वस्तुओं को अन्य जिलों द्वारा निर्मित और उपलब्ध किये जाना चाहिए।

लेकिन आलू की खेती के लिए इस्तेमाल किये जाने वाले ट्रेलर प्रान्त के अन्दर ही बनाये जाने चाहिए। अन्य प्रान्त बड़े पैमाने पर आलू की खेती नहीं करते, अतः इस काम के लिए प्रयुक्त होने वाले ट्रेलरों के बारे में उनकी दिलचस्पी ज्यादा नहीं है और वे इस पर अनुसन्धान करने को तैयार नहीं हैं। अतः स्वाभाविक रूप में आपको काम स्वतः हाथ में लेना होगा।

आलू और सन जैसी फसलों की खेती के लिए जरूरी कृषि मशीनों पर अनुसन्धान कर रहे लोगों को कृषि वैज्ञानिक अनुसन्धान संस्थान म कार्य सौंपा जाना चाहिए। यहां तैयार किये डिजाइनों की मशीनें फिलहाल हमारी कृषि यन्त्र

फैक्टरियों में निर्मित की जानी चाहिए। भविष्य में उनका निर्माण प्रान्त के अन्दर ही करने के लिए कदम उठाये जाने चाहिए।

पशु चालित मशीनें भी सक्रिय रूप से काम में लायी जानी चाहिए। रयांग-गांग प्रांत में पशुओं की बहुतायत है, अतः वह पशु-चालित बुवाई, निराई, कटाई, आदि की मशीनें भारी संख्या में निर्मित कर उनका व्यापक उपयोग कर सकता है। गाड़ियां भी भारी संख्या में बनायी जानी चाहिए परन्तु बैलों का ढुलाई के लिए उपयोग वहीं किया जाना चाहिए जहां गाड़ियां न चल सकती हों। यदि लद्दू पशुओं का इस ढंग से व्यापक उपयोग किया जाए तो लदाई की समस्या को भी जो कृषि कार्य में एक बाधा बनी हुई है काफी हद तक सुलझाया जा सकता है।

परिवहन में एक महत्वपूर्ण बात यह है कि ट्रकों का दक्ष उपयोग बढ़ाया जाए। यदि एक सही वार्षिक परिवहन योजना और उचित सांगठनिक कार्य के ट्रकों का अधिक कुशलतापूर्वक प्रयोग हो तो वर्तमान ट्रक ही ढुलाई का काम पूरा करने के लिए काफी होंगे। लेकिन यदि और अधिक विस्तृत जांच-पड़ताल से ऐसा दिखायी दे कि प्रांत में कृषि की सेवा में लगे ट्रकों की तादाद नाकाफी है तो और अधिक ट्रक उपलब्ध किये जाने चाहिए।

भूरक्षण और भूसुधार के कार्य का समुचित ढंग से संचालन किया जाना चाहिए।

यद्यपि यह कहा जाता है कि रयांगगांग प्रान्त के पास एक विशाल भूक्षेत्र है, फिर भी वास्तव में उसके पास ऐसे नीची जमीन का क्षेत्र बहुत बड़ा नहीं है जो सीमित मात्रा में मक्के तक की खेती के लिए पर्याप्त उपजाऊ हो। अतः यहां यह बात खासतौर पर महत्व रखती है कि निचले क्षेत्रों की जमीन की सावधानी के साथ रक्षा की जाय और पूर्ण उपयोग किया जाए।

चूंकि आप भूरक्षण कार्य उचित रूप से नहीं करते, इसलिए निचले क्षेत्रों में जो थोड़ी सी उपजाऊ भूमि है, वह भी यहां-वहां पानी में बह जाती है। पुंगसान काउंटी के आस-पास बहुत-सी अच्छी जमीनें थीं, परन्तु उनमें से अधिकांश पिछले साल बाढ़ों में बह गयीं। कापसान काउंटी में भी उपजाऊ भूमि का एक विशाल क्षेत्र पूर्णतया नष्ट हो गया। यदि आप इसी प्रकार भूरक्षण की अनदेखी करते रहेंगे, तो रयांगगांग प्रान्त में तमाम उपजाऊ भूमि खत्म हो जाएगी और अन्त में केवल घटिया भूमि शेष रह जाएगी।

रयांगगांग प्रान्त के लिए छांगसोंग और पुकचोंग काउंटियों के दृष्टांत का अनुसरण करना जरूरी है। जब छांगसोंग काउंटी पार्टी समिति के अध्यक्ष को वहां का काम सौंपा गया, तो मैंने उनपर पहली जिम्मेदारी इस बात की डाली कि वे काउंटी के निचले क्षेत्रों में अच्छी जमीन का सावधानीपूर्वक रक्षा करने के लिए

व्यवस्था करें और चूंकि काउंटी के पास उपजाऊ भूमि बहुत थोड़ी है, इसलिए वहां एक इंच भूमि को भी बाढ़ में बहने से बचायें। उन्होंने काउंटी में पहुंचते ही एक तटबंध बनाना शुरू कर दिया। वह प्रातः ५ बजे उठ जाते और खुद अपनी पीठ पर एक छिंगे में पत्थर ढोते। जब काउंटी पार्टी समिति के अध्अक्ष ने इस प्रकार पहल की तो काउंटी पार्टी समिति के कर्मियों की तो बात ही क्या, अस्पताल की नर्सें तक बाहर आकर तटबंध निर्माण में हाथ बंटाने लगी। परिणामस्वरूप छांगसोंग काउंटी में आज भूरक्षण कार्य प्रभावशाली बन चुका है, और यद्यपि भूमि थोड़ी ही है, फिर भी उसका धान की पैदावार के लिए कारगर ढंग से उपयोग किया जाता है।

जैसा कि मैंने पुंगसान के अपने वर्तमान दौरे में देखा, पुकछोंग काउंटी में भूरक्षण और चकबंदी के क्षेत्रों में भी शानदार काम किया गया है। पुकछोंग में भी कोई बहुत बड़ा क्षेत्र नहीं है। परन्तु उसके लोग अपने पास की जो भी सीमित भूमि है, उसपर कुशलतापूर्वक खेती करते हैं। परम्परा से पुकछोंग में बढ़िया सेब पैदा होते हैं, क्योंकि वहां के निवासी बड़ी कुशलता से वृक्ष लगाते हैं। बगानों का अच्छा प्रबन्ध कृषि जानकारी के उनके उच्च स्तर का द्योतक है। पुकछोंग के अवाम उस सारी भूमि का जो १९७५ में नामदाएछोन नदी के उफनने पर नष्ट हो गयी थी, पुनरुद्धार कर चुके हैं।

जहां पुकछोंग के लोग अपनी जमीन पर इतना अच्छा काम करते हैं, वहां मात्र एक पहाड़ी पर पुंगसान के लोग अपनी भूमि का बड़ी लापरवाही से प्रबन्ध करते हैं। क्यों? कारण यह है कि वहां के नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं में भूरक्षण के काम की कोई चिंता नहीं है और वे उसे पूरा करने की कोई कोशिश नहीं करते।

रयांगगांग प्रान्त के पार्टी संगठनों और कृषि कार्यकर्ताओं को इससे गहरा सबक सीखना चाहिए और भूरक्षण के कार्य में जुट जाना चाहिए। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि मुट्ठी भर मिट्टी भी बाढ़ में बहकर न जा सके।

भूमि सुधार के बारे में भी काफी कुछ किया जाना चाहिए। यह मानना होगा कि रयांगगांग प्रान्त में भूमि अन्य प्रान्तों की अपेक्षा अधिक ऊसर है। लेकिन मिट्टी सुधारने का प्रयास करने की बजाय दिन-रात घटिया भूमि का रोना रोना गलत है। पुराने जमाने से लोग यह कहते आये हैं कि मेहनती किसान के लिए कोई जमीन घटिया नहीं होती। यह बात पूर्णतया सही है। भूमि की लोग जितनी मेहनत से देखभाल करेंगे, वह उतनी ही बेहतर बनेगी।

जैसा कि हर कोई जानता है, हमारे देश के पास कृषि भूमि सीमित मात्रा में है जबकि उसकी आबादी बहुत है। अतः हम किसी भी हालत में भूमि को मात्र इसलिए तज नहीं सकते कि वह घटिया है। भूमि का पूरा फायदा उठाया जाना

चाहिए और घटिया भूमि को उपजाऊ भूमि में बदला जाना चाहिए। जमीन पर नयी मिट्टी और तेजाबी जमीन पर खूब चूना बिछाना चाहिए और दलदली जमीन को भी सुधारना चाहिए।

इस समय र्यांगगांग प्रान्त में ३,७०० छोंगबो दलदली जमीन है। यदि उसमें नालियां खोदी जाएं, उसका पानी निकाला जाए और उसका स्तर थोड़ा-सा ऊंचा किया जाए, तो उसे अच्छी जमीन में बदला जा सकता है। अधिक जमीन हासिल करने के लिए राज्य करोड़ों वोन की पूंजी लगाकर ज्वार भाटे की भूमि को भी कृषि योग्य बना रहा है। जब यह हालत हो तो हम दलदली भूमि को क्यों छोड़ दें, जिसे कि उपयोगी भूमि में बदला जा सकता है, बशर्ते कि उसमें नालियां खोदी जाएं और उसकी अच्छी देखभाल की जाए।

कारगर भूसुधार कार्य द्वारा र्यांगगांग प्रान्त में सारी कृषि को उपजाऊ बनाया जाना चाहिए।

अब मैं पशु संवर्धन की चर्चा करना चाहूंगा।

इस बैठक में भाषणों के दौरान जैसी कि व्यापक चर्चा की गयी है, पशु संवर्धन के विकास के लिए सबसे पहले जरूरत इस बात की है कि राज्य कृषि और पशु फार्मों के कार्य का तथा विशिष्ट प्रबन्ध का पुनर्गठन किया जाए।

इस समय पशु संवर्धन का संचालन अच्छी तरह नहीं हो रहा और न ही फसल उगाने का कार्य अच्छी हालत में है, क्योंकि ये सब काम एक साथ एक ही फार्म में किये जा रहे हैं। फसल फार्म को राज्य के कृषि और फार्मों से पृथक किया जाना चाहिए तथा पशु संवर्धन के कार्य को विशिष्टता प्रदान की जानी चाहिए। बेहतर यह हो कि करीब २०० से ३०० छोंगबो भूमि चारे की खेती के लिए पशु फार्म को दी जाए और शेष भूमि पर एक राज्य फसल फार्म गठित किया जाए या उस भूमि को एक सहकारी फार्म के हवाले कर दिया जाए।

और यह अच्छा रहेगा कि हर पशु फार्म अलग-अलग पशुओं के मामले में विशेषज्ञता प्राप्त करे। इस समय एक ही पशु फार्म में एक साथ सूअर, गायें, खरगोश और अन्य पालतू जानवर पाले जाते हैं, इसका परिणाम यह है कि उनमें से किसी की भी नस्ल अच्छी नहीं होती। विभिन्न पालतू जानवरों में विशेषज्ञता द्वारा ही हम प्रत्येक पशु नस्ल के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकेंगे और उनकी नस्ल सुधारने की विधियां जान सकेंगे। दूसरे देशों का अनुभव भी बताता हैं कि एक नस्ल का विशेषीकृत पालन एक ही फार्म में विभिन्न नस्लों के पालन की अपेक्षा कहीं अधिक फायदेमंद होता है।

ह्येसान के आस-पास, जहां कि चरागाह भूमि सीमित हैं, भारी संख्या में खरगोश और पालतू मुर्गे पैदा किये जाने चाहिए। इसके लिए बेहतर यह होगा कि

ह्वेसान में विशेषीकृत खरहा और मुर्गी फार्म स्थापित किये जाएं और यदि संभव हो तो विशेषीकृत बत्तख फार्म भी बनाया जाये। यदि बत्तखों और मुर्गियों का साथ-साथ पालन और संवर्धन संभव हो तो एक विशिष्ट कुक्कुट फार्म भी स्थापित किया जा सकता है। इस तरह ह्वेसान के लोगों को काफी परिमाण में चूजे, खरगोश का गोश्त और बत्तखें उपलब्ध की जानी चाहिए।

इसके अलावा प्रान्त के व्यापक चरागाह भूमि वाले अन्य पशु फार्मों में गायों और भेड़ों जैसे पशुओं के पालन में विशेषीकरण किया जाना चाहिए।

चरागाह भूमि में पशु फार्मों पर गायों और भेड़ों को शीघ्रता से मोटा-ताजा करने के उपाय काम में न लाये जाने चाहिये। इसकी बजाय ये उपाय ह्वेसान के आस-पास खरगोश या मुर्गी फार्मों में प्रयुक्त किये जाने चाहिये, भले ही राज्य को उन्हें कुछ आहार देना पड़े। इस उपाय को काम में लाने से थोड़े से समय में भारी मात्रा में मांस पैदा करना संभव होगा।

हमारे देश में फार्म नं० ५ सबसे पुराना सरकारी फार्म है, अतः उसे पशु फार्म और अनाज फार्म के बीज बांटे बिना उसकी वर्तमान हालत में छोड़े रखना बेहतर होगा। तथापि उसकी जन शक्ति की स्थिति पर कड़ाई से पुनरावलोकन किया जाना चाहिए। हमें बताया गया है कि फार्म कर्मचारियों के बहुत से परिजन बिना कुछ किये अपना समय बेकार गंवा रहे हैं। उन सबको काम दिया जाना चाहिए। मिसाल के तौर पर, इन लोगों को आलू स्टार्च मिल में काम पर लगाया जा सकता है और मिल से भारी संख्या में लोगों को मुक्त कर कृषि के काम पर लगाया जा सकता है।

सहकारी फार्मों में भी पशु संवर्धन कार्य को समुचित ढंग से गठित किया जाना चाहिये।

सहकारी फार्मों में पशु-संवर्धन टोलियों को बहुत ही व्यापक पैमाने पर कार्य नहीं करना चाहिए; उन्हें प्रजनन करने वाले पशुओं का संवर्धन करने और उनके बच्चों का वितरण करने के कार्य तक ही अपनी गतिविधि को सीमित रखना चाहिये। कार्यटोली को मूल इकाई मानते हुए लघु स्तरीय सामूहिक पशुसंवर्धन पर जोर दिया जाना चाहिये। एक कार्यटोली को अधिक से अधिक ३० चौपायों और करीब १०८ से २०० भेड़ों का संवर्धन करना चाहिये।

इसके साथ ही सहकारी फार्मों को संवर्धन के लिए हर परिवार को पालतू जानवर देने चाहिए। हमारे देश में, जहां चरागाह भूमि सीमित है, प्रत्येक परिवार के लिए घरेलू जानवर पालना बेहतर रहेगा।

परन्तु पशु प्रत्येक परिवार में बांटे नहीं जाने चाहिये। जहां तक भेड़ों का सम्बन्ध है, हम प्रत्येक परिवार को एक भेड़ दे सकते हैं।

इस तरह फार्म के प्रत्येक परिवार को एक भेड़, एक या दो सूअर और करीब ३० चूजे पालने चाहिये।

पहाड़ी रयांगगांग प्रान्त में भेड़ें, गायें और खरगोश जैसे घासखोर जानवर भारी संख्या में पैदा किए जाने चाहिए।

चूंकि आपने इस बैठक में खरगोशों के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा है, इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि आपको उनमें कोई दिलचस्पी नहीं है। फिर भी यह एक तथ्य है कि खरगोश पालन से आपको थोड़े से चारे के प्रयोग से बहुतायत से मांस मिलेगा। यदि खरगोशों को शीघ्रता से मोटा किया जाए तो एक किलोग्राम दाने के इस्तेमाल से एक किलोग्राम मांस प्राप्त किया जा सकता है। यही वजह है कि इस समय अन्य देशों में भी भारी संख्या में खरगोश फार्म स्थापित किये गये हैं।

मुर्गियां भी भारी पैमाने पर पैदा की जानी चाहिए।

पशु संवर्धन के क्षेत्र में इस समय दुनिया भर में यह रुझान जोरों पर है कि सूअरों की बजाय चूजों को व्यापक रूप से पैदा किया जाए। अन्य देशों की दस्तावेज से पता चलता है कि वे व्यापक पैमाने पर मुर्गी-पालन कर रहे हैं। बड़े पैमानें पर मुर्गी पालन हमारे लिए कोई नयी बात नहीं है। कोरिया के लोग प्राचीन काल से ही मुर्गी पालकों के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं।

मुर्गी-पालन सरल है और वे बहुत थोड़ा आहार लेती हैं। २.३ से २.५ टन चारे से हम एक टन चूजे का मांस पैदा कर सकते हैं।

हम अभी इसी समय आपको पशु संवर्धन के विकास के लिए विशिष्ट लक्ष्यों के आंकड़े न देंगे। जहां तक भेड़ों का संबंध है, बेहतर यही हो कि आप सातवर्षीय योजना के अन्त तक एक लाख पैदा करने का यत्न करें।

२ : शहतीर उद्योग के बारे में

रयांगगांग प्रान्त हमारे देश का सबसे समृद्ध शहतीर क्षेत्र है। अतः हमारी पार्टी ने इस क्षेत्र में इमारती लकड़ी उद्योग के विकास पर विशेष रूप से ध्यान दिया है। रयांगगांग प्रान्त के निर्माण का मूलतः उद्देश्य भी यही था कि यहां इमारती लकड़ी उद्योग का बड़े पैमाने पर विकास हो।

लेकिन रयांगगांग प्रान्तीय पार्टी समिति ने विगत काल में शहतीर उद्योग के विकास पर पूरा-पूरा ध्यान नहीं दिया है। प्रान्तीय पार्टी समिति की सबसे बड़ी असफलता यह है कि प्रान्त में आर्थिक कार्य के अन्य क्षेत्रों की ही तरह इमारती

लकड़ी उद्योग का भी वह घटिया ढंग से मार्ग निर्देशन कर रही है।

प्रान्तीय पार्टी समिति शहतीर उद्योग का पथप्रदर्शन करने की बजाय शहतीर केन्द्रों पर इस बात के लिए दबाव डालती है कि वह बड़े परिमाण में शहतीर का उत्पादन करें अथवा योजनाओं को पूरा करने में उनके असमर्थ रहने पर उन्हें झाड़ बताती है।

खासतौर पर प्रान्तीय पार्टी समिति शहतीर उद्योग में कार्यकर्ताओं के साथ अपने कार्य की अनदेखी करती है। चूंकि समिति ने केवल कार्यकर्ताओं के अध्ययन तक अपने को सीमित रखते हुए उन्हें शहतीर उद्योग की शिक्षा-दीक्षा नहीं दी है, अतः इस उद्योग में कार्य करने वाले कर्मचारी गुण की दृष्टि से अत्यंत अकुशल हैं। इस उद्योग के बहुत से कर्मचारियों को वन प्रांत के अर्थशास्त्र का ज्ञान तक नहीं है। उन्हें मालूम नहीं है कि उनके विशिष्ट विभाग के यन्त्रों का कैसे संचालन किया जाना चाहिए। उन्हें यह भी ज्ञात नहीं है कि जनबल का किस प्रकार सही ढंग में संगठन किया जा सकता है। जब ऐसी हालत हो तो इमारती लकड़ी उद्योग की स्थिति का ठीक न होना स्वाभाविक ही है।

शहतीर उद्योग में पार्टी पथप्रदर्शन को मजबूत किया जाना चाहिए। इस प्रयोजन से सबसे पहले जरूरत इस बात की है कि प्रान्तीय पार्टी समिति के शहतीर उद्योग विभाग की भूमिका को प्रखर किया जाए और इस बीच शहतीर उद्योग में उद्यमकर्ताओं के काउंटी पार्टी समितियों द्वारा पथप्रदर्शन को भरपूर तेज किया जाए।

इस समय काउंटी पार्टी समितियां इस वजह से शहतीर केन्द्रों में काम नहीं करतीं कि वे दूसरे दर्जे के उद्यम हैं और न ही वे शहतीर शिविरों और पेड़ गिराने वाली टोलियों को कोई मार्गदर्शन देती हैं। यह एक सांगठनिक गलती है। काउंटी पार्टी समितियों को शहतीर केन्द्रों के साथ काम करना चाहिए और अपनी काउंटियों में शहतीर केन्द्रों तथा पेड़ काटने वाली टोलियों के पथप्रदर्शन का प्रत्यक्षतः दायित्व संभालना चाहिए।

इस उद्देश्य से हमें काउंटी पार्टी समिति में एक शहतीर उद्योग विभाग का गठन करना होगा या भविष्य में सांगठनिक या प्रचार विभाग में निर्देशकों की तादाद बढ़ानी होगी, ताकि वे इस क्षेत्र में कर्मचारियों के साथ राजनीतिक कार्य को तेज करते हुए शहतीर शिविरों और पेड़ काटने वाली टोलियों में पार्टी संगठनों का सीधे पथप्रदर्शन कर सकें। इस संदर्भ में शहतीर केन्द्र तक सीमित प्राथमिक पार्टी संगठन के नाते उसे सीधे काउंटी पार्टी समिति के नेतृत्व में लाना उचित रहेगा।

खासतौर पर पार्टी संगठनों को शहतीर उद्योग में कार्यकर्ताओं के साथ अपने कार्य को निर्णायक ढंग से तेज करना चाहिए। शहतीर उद्योग के नेतृत्व के कर्मी

दल को पार्टी नीतियों में शिक्षित करने तथा आर्थिक ज्ञान और तकनीकी जानकारी से लैस करने के लिए आपको उनके लिए समय-समय पर अल्पावधि के पाठ्यक्रम आयोजित करने चाहिए और इस सिलसिले में शुरूआत मैनेजरों, चीफ इंजीनियरों और डिप्टी मैनेजरों से की जानी चाहिए। उन्हें कार्यस्थलों पर ही सक्रिय मदद और योजनाबद्ध शिक्षा दी जानी चाहिए ताकि वे अपना पार्टी कार्य समुचित ढंग से कर सकें।

इसके अलावा पार्टी संगठनों को चाहिए कि वे शहतीर केन्द्रों को नया रूप दें ताकि वे शहतीर शिविरों पर, जोकि पेड़ काटने वाली टोलियों को प्रत्यक्ष मार्ग-दर्शन देने वाली इकाइयां हैं, ध्यान केन्द्रित कर सकें।

शहतीर उद्योग में पेड़ गिराने की एक चक्र प्रणाली बड़े पैमाने पर लागू की जानी चाहिए।

पेड़ गिराने की चक्र प्रणाली लागू करना कई तरह से अच्छा है। एक तो यह जन बल, उपकरणों और धन को बिखराने की बजाय उन्हें केन्द्रित करना संभव बनाता है और लकड़ी काटने वालों के जीवन की स्थिति में स्थिरता लाता है। इस प्रणाली को लागू करने से इस बात की संभावना पैदा होती है कि इमारती लकड़ी उद्योग में सट्टेबाजी का उन्मूलन करके और उसकी जगह शहतीर का नियोजित ढंग से उत्पादन करके मजदूरों की दायित्व भावना को बढ़ाया जाय, क्योंकि यह उन्हें पेड़ों की कटाई के जिलों को अपनी कार्यशालायें मानते हुए वहां पेड़ उगाने, उन्हें बड़ा करने तथा काटने का अवसर प्रदान करता है। इसलिए तमाम शहतीर केन्द्रों को चक्र कटाई प्रणाली अपनानी चाहिए।

आपको इमारती लकड़ी उद्योग में यन्त्रों और उपकरणों का अधिक कुशल उपयोग करना चाहिए।

इस समय, र्यांगगांग प्रान्त में इमारती लकड़ी उद्योग में यन्त्रों और उप-करणों का उपयोग बहुत ही थोड़ा होता है। यद्यपि यहां बीसियों ट्रैक्टर हैं, फिर भी उनके प्रयोग की दर मात्र ३० प्रतिशत है। युपयोंग शहतीर केन्द्र में भी जहां स्थिति सर्वोत्तम बतायी जाती है, ३६ ट्रैक्टरों में से केवल ११, ३२ आरा मशीनों में से १२ और १५ इंजनों में से ५ काम कर रहे हैं। चूंकि ऐसी स्थिति उस जगह है, जहां सब ठीक-ठाक बताया गया है तो यह बिलकुल साफ है कि अन्यत्र स्थिति बहुत ही बुरी होगी। यह एक बहुत ही गम्भीर मामला है।

उपकरणों के उपयोग की इतनी निम्न दर से कोई भी देश नहीं चल सकता, भले ही उसकी आर्थिक क्षमता कितनी भी बड़ी हो। इमारती लकड़ी उद्योग के प्रमुख कर्मियों को पूरी तरह मालूम होना चाहिए कि यन्त्रों और उपकरणों के उप-योग की नितान्त निम्न दर के लिए वही जिम्मेदार हैं।

शहतीर उद्योग में यन्त्रों और उपकरणों का उपयोग बढ़ाने के लिए हमें पहले तकनीकी अध्ययनों को तेज करना होगा।

इस सैक्टर में यन्त्रों और उपकरणों के वर्तमान आंशिक संचालन और अल्प उपयोग के मुख्य कारणों में एक स्पष्टत: यह है कि कर्मियों का तकनीकी स्तर निम्न है। अत: हमें उन्हें प्रविधि का प्रशिक्षण देना होगा।

कुछ लोग अब भी प्रविधि को कोई रहस्यपूर्ण चीज समझते हैं, लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं है। कोई मैकेनिक आकाश से नहीं गिरता या धरती से नहीं उगता। जो कोई भी तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त करने में मन लगाएगा, वह यन्त्रों का संचालन करने में सक्षम होगा और एक शानदार मैकेनिक बनेगा।

जैसा कि मैं अक्सर कहता रहा हूं, कमांडरों से लेकर सिपाहियों तक सबको अपने अस्त्रों के प्रयोग में कुशलता प्राप्त करने को प्रयासशील होना चाहिए। इसी प्रकार शहतीर उद्योग में भी, प्रबन्ध-कर्मियों से ले कर नीचे मजदूरों तक तमाम लोगों में तकनीकी अध्ययन को तेज किया जाना चाहिए; ताकि वे अपने क्षेत्र में मशीनों और उपकरणों के बारे में प्रवीणता प्राप्त कर सकें और उनका कुशलतापूर्वक संचालन कर सकें।

इसके साथ ही हमें अपने यन्त्रों और उपकरणों का अधिक सावधानी से संचालन करने के लिए और भी ज्यादा प्रयास करना चाहिए।

राज्य द्वारा उपलब्ध यन्त्र और उपकरण कितने भी अच्छे क्यों न हों, यदि उनका सावधानी के साथ उपयोग न किया जाए, तो वे जल्द ही बेकार हो जाएंगे। बिना उचित सावधानी के यन्त्रों और उपकरणों का संचालन पुरानी पूंजीवादी विचारधारा के अवशेषों का ही सूचक है। चूंकि पूंजीवादी समाज में तमाम मशीनरी और उपकरण पूंजीपतियों के होते हैं, इसलिए कर्मचारियों द्वारा उनका कुसंचालन स्वाभाविक ही है। लेकिन समाजवादी समाज में तमाम यन्त्र और उपकरण मजदूर वर्ग और जनता की सम्पत्ति है, और उनकी अच्छी तरह देखभाल करना जरूरी है।

पार्टी संगठनों को वनप्रान्तर विभाग में कर्मियों और अधिकारियों के बीच विचारधारात्मक और शैक्षणिक कार्य सुदृढ़ करना चाहिए, ताकि वे यन्त्रों और उपकरणों का संचालन उसी प्रकार पूरी सावधानी से करें, जिस प्रकार अपने यन्त्र और उपकरण होने पर वे करेंगे, और अच्छे लोगों को लेकर ट्रैक्टर चालकों की पांतों का निर्माण करना चाहिए और उनकी जिम्मेदारी की भावना को बढ़ाना चाहिए।

राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के अन्य क्षेत्रों की ही तरह शहतीर उद्योग में भी आपको तीन मास से अधिक के सामान्य उपयोग के लिए पर्याप्त फालतू पुर्जे स्टाक में रखने चाहिए और उचित अवसर पर यन्त्रों तथा उपकरणों की मरम्मत और रखरखाव

करनी चाहिए। यही एक उपाय है, जिसके द्वारा यन्त्रों और उपकरणों की सेवा अवधि को लम्बा किया जा सकता है और उनकी संचालन दर को भी बढ़ाया जा सकता है।

हमें शहतीर उद्योग के लिए और अधिक मशीनों के निर्माण हेतु स्वतः प्रयास करने चाहिए। लकड़ी चीरने की आरा मशीनों और चरखियों जैसे यन्त्रों के निर्माण पर राज्य को और अधिक ध्यान देना चाहिए और हमें शहतीर उद्योग के लिए यन्त्र मरम्मत केन्द्रों का पर्याप्त रूप में निर्माण करना चाहिए। राज्य के लिए उचित यह है कि वह मरम्मत केन्द्रों की स्थापना के लिए खान उद्योग की ही तरह एक समिति का गठन करें। इस समिति को प्रत्येक शहतीर केन्द्र में एक मध्यम आकार का मरम्मत केन्द्र और ह्येसान या पाएगाम जैसे केन्द्रीय क्षेत्रों में एक बड़ा मरम्मत केन्द्र स्थापित करना चाहिए।

इसके साथ ही शहतीर उद्योग में जल मार्गों का युक्तियुक्त उपयोग जरूरी है।

बहुत समय हुआ जब हमने इमारती लकड़ी के परिवहन के लिए जलमार्गों के अच्छे उपयोग के महत्वपूर्ण कार्य को अपने हाथ में लिया था। मैंने शहतीर उद्योग के सक्रिय कार्यकर्ताओं की १९५४ की राष्ट्रीय बैठक में भी इस समस्या के महत्व पर जोर दिया था।

जैसाकि आप सभी जानते हैं, हमारे देश के पर्वतीय क्षेत्रों में नदियों में लट्ठे के बेड़ों के उपयोग की अनुकूल परिस्थितियां मौजूद हैं। घाटियों के ढलवां होने की वजह से हमारी नदियां बड़ी तेजी से बहती हैं और जुलाई तथा अगस्त की वर्षा ऋतु और बसन्त के दौरान वे भरीपूरी हो जाती हैं। अतः इमारती लकड़ी संग्रह स्थलों से भारी परिमाण में लकड़ी उफनती नदियों के माध्यम से नीचे भेजी जा सकती हैं।

शहतीरों की आवाजाही में जल शक्ति का उपयोग राज्य के लिए बहुत लाभदायक है, क्योंकि यह इस काम को सुगम बनाता है और बहुत-सी जनशक्ति, सामग्री और धन की बचत करता है। हाल ही में मैंने रिम्योंग्सु में लट्ठों के बेड़ों द्वारा लकड़ी ले जाने का काम होते देखा। एक ही समय में जितने बड़े परिमाण में इमारती लकड़ी नदी में बह कर नीचे पहुंचती है, यदि उतनी ही लकड़ी को रेल द्वारा ले जाना हो तो उसकी लदाई और उतराई में ही काफी समय लगेगा और आवाजाही में बहुत ज्यादा कोयला खर्च होगा तथा बड़ी संख्या में माल डिब्बों का प्रबन्ध करना पड़ेगा। इसके विपरीत लट्ठों के बेड़ों द्वारा लकड़ी की आवाजाही के लिए किसी विशेष उपकरण, कोयला या गैसोलीन की जरूरत नहीं पड़ती।

इसलिए पार्टी नीति का अनुसरण करते हुए शहतीर उद्योग कर्मियों को शहतीर के परिवहन के लिए उसे नदियों में नीचे बहाने की विधि का व्यापक उपयोग

करना चाहिए। इस उद्देश्य से समय पर जल मार्गों का सुधार किया जाना चाहिए और बांधों को कंक्रीट से और मजबूत बनाया जाना चाहिए ताकि वे टूट न जाएं। और कृषि तथा वन विद्या कालेज में शहतीर-बेड़ा तकनीशियनों को भारी संख्या में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। इस सिलसिले में बेहतर यह होगा कि छात्रों को न केवल शहतीर उद्योग के यन्त्रों की जानकारी ही दी जाए, बल्कि पाठ्यक्रम के अंग के रूप में वन विद्या में जलमार्ग उपयोग के वैज्ञानिक और तकनीकी मूल तत्वों के बारे में भी शिक्षा दी जाए।

यदि शहतीर-बेड़ा परिवहन को सफल बनाना है तो हमें बड़ी तादाद में युवा लोगों और भूतपूर्व सैनिकों को इस क्षेत्र में लाना होगा। इस समय अधिकतर शहतीर-बेड़ों के चालक बूढ़े हैं—उनकी औसत आयु ४७ वर्ष के आसपास है। यह तथ्य लकड़ी की तीव्र गति से परिवहन के विकास के मार्ग में बाधा उपस्थित कर रहा है।

पहले मत्स्य उद्योग में भी काम करने वालों में बूढ़ों की संख्या अधिक थी। अतः हमारी पार्टी ने युवा लोगों का भारी संख्या में इस क्षेत्र में काम करने का आह्वान किया। इससे मत्स्य उद्योग का नये सिरे से महान नवीकरण का दौर आया। इसी प्रकार यदि भारी तादाद में युवा लोग और भूतपूर्व फौजी इस कार्य क्षेत्र में आएंगे तो शहतीर के बेड़ों द्वारा परिवहन को नया रूप मिलेगा।

इसके साथ ही हमें इमारती लकड़ी उद्योग में कर्मचारियों के लिए श्रम के बचाव और सुरक्षा उपकरणों की सप्लाई में सुधार करना होगा।

इस समय इस क्षेत्र में कर्मचारियों के लिए श्रम के बचाव और सुरक्षा के उपकरणों की सप्लाई नाकाफी है। बचत के आधार पर मजदूरों को छोटे साइज के बूट, विनाइल बरसातियां और लम्बे रेशे के कपड़ों से बने गद्दीदार परिधान उपलब्ध किये जाते हैं। पहाड़ों में कार्य और वापस शिविरों की पैदल यात्रा से जल्द ही उनके कपड़े जर्जर हो जाते हैं। इस वजह से वे उचित ढंग से काम नहीं कर सकते।

इसकी वजह यह नहीं है कि राज्य द्वारा की जाने वाली सप्लाई नाकाफी होती है। राज्य द्वारा पर्याप्त कपड़े और बूटों के लिए काफा धन की व्यवस्था की गयी है। श्रम के बचाव और सुरक्षा के उपकरणों की काफी तादाद में सप्लाई में असफलता इस तथ्य की ओर इंगित करती है कि अभी कुछ अधिकारी शहतीर कर्मचारियों के बारे में गलत धारणाएं बनाये हुए हैं।

वास्तव में श्रम बचाव और सुरक्षा उपकरणों में बचत से राज्य की जरा भी भलाई नहीं होती। यह तो हो सकता है कि कर्मचारियों ने अनेक वृक्ष गिराये हों लेकिन वे उत्पादन बढ़ाने में असमर्थ रहे हैं, क्योंकि उन्हें लापरवाही से बनाये गये

वस्त्र और बूट दिये गये जो सर्दियों में शीत से उनकी रक्षा नहीं कर सकते थे। इस तरह "बचत" ने वास्तव में राज्य का नुकसान ही किया।

यदि वृक्षों को कटाई करने वालों से खूब अच्छे काम की अपेक्षा है तो उन्हें पहले पायदार बूट और गर्म कपड़े उपलब्ध किये जाने चाहिए। इस समस्या को हल करने के लिए हमें खास तौर पर शहतीर कार्यकर्ताओं के वास्ते कपड़ों के उत्पादन हेतु रयांगगांग प्रान्त में एक फैक्टरी लगानी होगी।

यह कोई बहुत मुश्किल काम नहीं है रयांगगांग प्रान्त में बहुत-सी कपड़ा फैक्टरियां हैं और हम बड़ी आसानी से उनमें से एक को शहतीर-कर्मियों के लिए कपड़ों और बूटों के उत्पादन में विशेषीकरण प्राप्त करने का काम सौंप सकते हैं। जिस फैक्टरी को यह काम सौंपा जाए, उसे बूटों के साइज, परिधानों के स्टाइल और मोटाई तथा उनकी सिलाई की विधि के मानकीकरण की योजनाएं तैयार करनी चाहिए और उन योजनाओं को विचार-विनिमय और गम्भीरतापूर्वक अध्ययन के लिए मजदूरों के समक्ष पेश करना चाहिए ताकि वह जिम्मेदाराना ढंग से वन प्रान्तर के मजदूरों को उपयुक्त वस्त्र उपलब्ध कर सकें।

हैवी ड्यूटी बरसातियां बनाकर शहतीर-कर्मियों को उपलब्ध की जानी चाहिए। इसके लिए हमारे पास एक विशिष्ट फैक्टरी होनी चाहिए जो उनकी जरूरतों के अनुरूप ऐसी बरसातियां बना सके। इस समय रयांगगांग प्रान्त स्वत: बरसातियां निर्मित करने की स्थिति में भी नहीं है। इसलिए मेरे ख्याल से बेहतर यही होगा कि खासतौर पर शहतीर काटने और मछली मारने वालों के लिए ही बरसातियां तैयार करने के लिए हामहुंग या छोंगजिन में एक फैक्टरी लगायी जाए।

इसके अलावा, हमें शहतीर की प्रोसेसिंग में सुधार और उपयोग में वृद्धि करनी चाहिए।

इस बार मुझे मालूम हुआ है कि मेरी पिछली यात्रा के बाद आपने शहतीर की बरबादी को काफी कम कर दिया है। मिसाल के तौर पर, वियोन आरा मिल ने व्यापक पैमाने पर यन्त्रीकरण लागू कर दिया है और वह लकड़ी के बचे-खुचे टुकड़ों का उपयोग कर डाइनिंग टेबलों और रोजमर्रा की जरूरत की अन्य चीजों का भारी मात्रा में निर्माण कर रही है। यह बड़ी अच्छी बात है।

लेकिन पार्टी की मांगों की तुलना में शहतीर की प्रोसेसिंग का स्तर अभी बहुत नीचा है। खासतौर पर शहतीर की बरबादी अभी तक खत्म नहीं की गयी है।

ह्येसान क्रेफ्ट पेपर मिल में बढ़िया लट्ठों का लुगदी की लकड़ी के रूप में अंधाधुंध उपयोग किया जाता है। रयांगगांग प्रान्त में पेड़ों के ऊपरी सिरों के संसाधन विपुल हैं और हमने उन्हीं के उपयोग के लिए ह्येसान में फैक्टरी लगायी

थी। यदि बढ़िया लकड़ी के लट्ठों से बांस का कागज बनाना है तो इस फैक्टरी को ह्ये सान में लगाने की क्या जरूरत थी ? ऐसी हालत में उसे प्योंगयांग में लगाया जा सकता था, जहां भारी संख्या में तकनीशियन मौजूद हैं और विशेषज्ञों को पथ-प्रदर्शन मिलने की अधिक संभावना है। फैक्टरी कर्मचारियों का कहना है कि वे बढ़िया लट्ठों को इस्तेमाल कर रहे हैं, क्योंकि पेड़ों की चोटियों की सप्लाई कम होती है। इमारती लकड़ी उद्योग को इसकी जिम्मेदारी लेनी होगी।

इमारती लकड़ी की प्रोसेसिंग को और विकसित करने को तथा खासतौर पर पेड़ों की चोटियों और बचे-खुचे टुकड़ों का अच्छा इस्तेमाल करने के लिए प्रान्तीय पार्टी समिति तथा नगर और काउंटी पार्टी समितियों को पूरी शक्ति से प्रयास करना होगा।

इसकी शुरूआत इस तरह की जानी चाहिए कि पेड़ गिराने और लकड़ी चीरने के क्षेत्र जनता की जरूरत का सामान भारी परिमाण में तैयार करने के लिए पेड़ों की चोटियों और-बचे खुचे टुकड़ों का यथोचित अधिकाधिक उपयोग करें।

पेपर मिल लकड़ी के कबाड़ के कारगर उपयोग करके फर्नीचर तथा रोजमर्रा के इस्तेमाल की दूसरी चीजें निर्मित करने में पूरी तरह सक्षम है। यदि कुछ स्थानों पर पक्का माल तैयार करना असंभव है तो आप अर्ध तैयार माल बना सकते हैं और अन्यत्र उन्हें जोड़ सकते हैं। उदाहरणतया, डाइनिंग टेबल को लीजिए। टांगें एक जगह और ऊपरी भाग किसी दूसरी जगह बना कर और फिर उन्हें जोड़ कर मेजें तैयार की जा सकती हैं।

और आपको कागज मिलों में पेड़ों की चोटियों का व्यापक उपयोग करना होगा। जैसाकि कल आपने अपने भाषणों में कहा, आप पेड़ों की चोटियों की बनी लुगदी का उपयोग कर और उसे सुखाकर या जमा कर जरूरत के मुताबिक कागज तैयार कर सकते हैं। अतः इमारती लकड़ी उद्योग के क्षेत्र में कागज मिलों को पर्याप्त मात्रा में पेड़ों की चोटियां उपलब्ध करने का प्रयास होना चाहिए।

इसके अतिरिक्त वन रक्षण और वन रोपण के कार्य में सुधार करना जरूरी है।

वन हमारे देश की अमूल्य प्राकृतिक निधि हैं और इस सम्पदा की उचित रक्षा करने तथा उसका स्वस्थ विकास आश्वस्त करने का महत्वपूर्ण कर्तव्य रयांगगांग प्रान्त के पार्टी संगठनों के कंधों पर आ पड़ा है। जैसाकि आप भलीभांति जानते हैं, हमारे देश की अधिकांश वन सम्पदा रयांगगांग प्रान्त में पायी जाती है। अछूते घने बन केवल रयांगगांग और उत्तर होमग्योंग प्रांतों में ही हैं। यदि आप पेड़ों को गिराते जाएं और नये पेड़ न लगायें तथा उनकी रक्षा न करें तो वह समय दूर न होगा, जब हमारे देश की सारी सम्पदा लुप्त हो जाएगी।

वन देश के एक कीमती प्राकृतिक साधन स्रोत है। अर्थतन्त्र की तमाम शाखाओं में, जिनमें निर्माण और उद्योग भी शामिल हैं, शहतीर की जरूरत पड़ती है। इस समय हम ५० प्रतिशत से अधिक रेशों के कच्चे माल के लिए लकड़ी पर निर्भर हैं और बांस के कागज समेत विभिन्न किस्मों के कागज लकड़ी से बनाये जाते हैं। यह कहना उचित ही है कि वन रेशम और कागज के समतुल्य हैं। अत: आपको वनों के रक्षण और रोपण के लिए सक्रिय रूप से प्रयास करने होंगे।

जंगल की आग की रोकथाम हमारे वनों के रक्षण में सर्वाधिक महत्व का कार्य हैं। दुर्घटनावश कहीं वन में आग लग जाए तो अवश्य ही भारी मात्रा में लकड़ी नष्ट हो जाती है। बेशक, वनाग्नि के बाद पुन: पेड़ लगाये जा सकते हैं, लेकिन वृक्षारोपण द्वारा एक वन पट्टी बनाने में हमें १०० वर्ष लग जाएंगे।

परन्तु इस समय र्यांगगांग प्रान्त में वन रक्षण कार्य की व्यवस्था नाकाफी है। यद्यपि माउंट पाएकदु-सान को जाने वाली सड़क पर बहुत ज्यादा यातायात है, फिर भी वहां "अपने वनों का ध्यान रखिए" या "जंगल में आग लगाने का कारण पैदा करने से बचिए" का एक भी संकेत दिखायी नहीं देता।

यह सही है कि संकेत पट लगाना एक औपचारिकता मात्र है। लेकिन संकेत पटों के प्रभावशाली उपयोग से जनता की सतर्कता में बढ़ोत्तरी की जा सकती है। यदि कोई व्यक्ति सिग्रेट सुलगाने के लिए दियासलाई जलाने वाला हो और उस की नजर ऐसे संकेत पट पर पड़ जाए तो वह ऐंसा करने से परहेज कर सकता है।

इस समय र्यांगगांग प्रान्त में अनेक विमान जंगली आग का पता चलाने के लिए भेजे जाते हैं। लेकिन आग की निगरानी मात्र ही पर्याप्त नहीं है।

वनाग्नियों को रोकने के लिए यह जरूरी है कि प्रान्त की सारी जनता में वन रक्षण की भावना उत्पन्न की जाए। पार्टी संगठनों और तमाम दूसरे संगठनों—ट्रेड यूनियनों, जनवादी तरुण लीग महिला यूनियन, तरुण पायनियर दल, स्कूलों बालवाड़ियों, पड़ोस की जन इकाइयों, घरों आदि—में वन रक्षण की शिक्षा में तेजी लायी जानी चाहिए। इस तरह र्यांगगांग-प्रान्त के तमाम निवासियों को बचपन से ही यह सिखाया जाना चाहिए, ताकि वन रक्षण और दावाग्नि की रोकथाम के लिये ऐहतियात उनकी आदत का अंग बन जाए।

इसके साथ ही अग्नि शमन दल का गठन किया जाना चाहिए ताकि जैसे ही जंगल में आग लगे, वह उससे जूझ पड़े और आग-अवरोध गांवों तथा काउंटी मुख्यालयों में निर्मित किये जाने चाहिए।

वनों की ठीक-ठीक रक्षा करने और उनके स्वस्थ बढ़ाव की व्यवस्था करने के लिए आपको वनस्पति रोगों या हानिप्रद कीड़ों द्वारा किये जाने वाले नुकसान का कारगर ढंग से मुकाबला करना चाहिए। पहले तो आपको उपयोगी कीट-

भक्षियों का अंधाधुंध सफाया किया जाने की मनाही करनी चाहिए। दूसरे, आपको समय रहते वनस्पति रोगों तथा कीड़ों से होने वाले किसी भी नुकसान का पता लगाना चाहिए और नियमित रूप से जंगलों में कीट-नाशक दवाइयों का छिड़काव करना चाहिए।

उन्नतीदरतालों (बनों) के अंधाधुंध निर्माण को नियन्त्रित किया जाना चाहिए। पहाड़ों में ताल (बर्न) बनाने की बजाय आर्थिक मूल्य के जंगलात—इमारती लकड़ी के वन या रेशे के वन—लगाना अधिक लाभकारी है। उन भूखंडों को छोड़ कर, जिन्हें बर्नों में बदलना राज्य के लिए बहुत ही जरूरी है, एक भी प्योंग बर्न और नहीं होना चाहिए।

वन-रक्षण के कार्य के साथ-साथ वृक्ष तथा वन-रोपण के अभियान को एक सर्वजन आन्दोलन के रूप में चलाया जाना चाहिए। इसके लिए यह जरूरी है कि सहकारी फार्मों में गठित की गई वन-रोपण टोलियों की भूमिका बढ़ायी जाए। प्रान्तीय पार्टी समिति को चाहिए कि वन-रोपण टोलियों के कर्म का विवेचन करे और एक बैठक बुलाए। भविष्य के लिए आप यह संकल्प कर लें कि हर साल वन-रोपण कार्य का विवेचन किया जाएगा और कारगर ढंग से अपना कार्य करने वालों को इनाम दिया जायेगा और अच्छे वस्त्र भेंट किये जाएंगे।

३ : स्थानीय उद्योग के बारे में

हमारी पार्टी द्वारा पहले से ही निर्धारित नीति के अनुसार स्थानीय उद्योगों में स्थानीय रूप से प्राप्त कच्चे मालों और अन्य साधनों को व्यापक पैमाने पर प्रयोग किया जाना चाहिए और स्थानीय क्षेत्रों की जरूरतों को पर्याप्त रूप से दृष्टिगत रखा जाना चाहिये। तभी हम स्थानीय रूप से उपलब्ध तमाम विशाल सुरक्षित भण्डारों का उपयोग कर सकेंगे और लोगों की विविध आवश्यकताओं को सन्तोष-जनक ढंग से पूरा कर सकेंगे।

र्यांगगांग प्रान्त स्थानीय उद्योग के विकास के लिए आवश्यक कच्चे मालों से खूब भरा पड़ा है। स्थानीय औद्योगिक विकास से श्रमजीवी जनता की आमदनी में वृद्धि होगी और इस क्षेत्र में बहुतायत से मिलने वाले पटुए, इमारती लकड़ी और जंगली फलों के सही उपयोग से राज्य का बड़ा लाभ होगा।

सबसे पहले, सही काम पर पटुए की प्रोसेसिंग करके र्यांगगांग प्रान्त को भारी मात्रा में लिनेन का निर्माण करना चाहिए। इस समय असामयिक प्रोसेसिंग की वजह से बहुत सारा पटआ बर्बाद हो जाता है। अब यह स्थिति जारी नहीं रहनी

चाहिए। पटुआ मिलों को पटुआ बर्बाद न कर समय पर उसको प्रोसेस करना चाहिए और इस तरह उससे जनता के लिए और भी बढ़िया किस्म के लिनेन के कपड़े तैयार करने चाहिए।

रोजमर्रा की जरूरत की चीजों तथा खिलौनों आदि लकड़ी के सामानों के निर्माण के लिए, स्थानीय उद्योग में भी पेड़ों की चोटियों का व्यापक उपयोग किया जाना चाहिए और पिसी लुगदी का प्रयोग कर बहुत-सा कागज बनाना चाहिए। बचे-खुचे पटुए और रेशों के टुकड़ों को जलाने के काम में लाने की बजाय इकट्ठा कर कागज बनाने के काम में लाना चाहिए।

र्यांगगांग प्रान्त में स्थानीय उद्योग की फैक्टरियों को जनता के लिए खास तौर पर भारी परिमाण में सर्दियों के कपड़े तैयार करना चाहिए। जैसा कि हर कोई जानता है, र्यांगगांग प्रान्त हमारे देश का सबसे ठंडा क्षेत्र है, जहां प्राय: सात मास तक ठंड पड़ती है। अत: इस क्षेत्र में अन्य सब बातों की अपेक्षा यह अधिक महत्वपूर्ण है कि सर्दियों के लिए खूब अच्छी तैयारी की जाए।

लेकिन ऐसा लगता है कि केवल गर्मियों के लिए तैयारी की जाती है और सर्दियों के लिए तैयारियों की उपेक्षा की जाती है, क्योंकि गर्म इलाकों से बहुत सारे लोग र्यांगगांग प्रान्त में आ बसे हैं। इसका स्वत: अर्थ यह है कि सर्दियों में लोगों के पास सिवाय ठिठुरने के और कोई चारा नहीं होता। ऐसी स्थिति सर्वथा कायम न रहनी चाहिए।

आपको प्रान्तीय आबादी के लिए ठंड के कपड़ों की समस्या निश्चित रूप से सुलझानी होगी। ऐसा करने के लिए स्थानीय उद्योग की फैक्टरिथों को पहले और अधिक परिमाण में तथा सर्दियों के बेहतर कपड़े, जूते और टोपियां निर्मित कर उपलब्ध करनी चाहिए।

इसके साथ-साथ, हर किसी को सर्दियों के लिए अपने कपड़े पूरी तरह तैयार करने चाहिए। राज्य तो निश्चय ही कदम उठाएगा, परन्तु आपको भी चाहिए कि अपने लिए सर्दियों के कपड़े खरीदने के लिए गर्मियों में कम खर्च करें और पैसा बचाएं।

ब्लूबेरी और अन्य जंगली फलों को कुशलतापूर्बक प्रोसेस करना भी एक महत्वपूर्ण कार्य है।

ब्लूबेरी र्यांगगांग प्रान्त की एक प्रसिद्ध स्थानीय विशेष उपज है। यदि आप सही ढंग से ब्लूबेरी को प्रोसेस कर शराब या शर्बत तैयार करें तो वे लोगों को बहुत ही पसन्द आयेंगे और आप अपनी आमदनी काफी बढ़ा सकेंगे।

इस समय र्यांगगांग प्रान्त में शानदार फैक्टरियां हैं लेकिन प्रोसेसिंग की व्यवस्था अपर्याप्त हैं। भविष्य में फल प्रोसेसिंग संयंत्रों को तकनीकी पथप्रदर्शन

दिया जाना चाहिए ताकि वे और भी ज्यादा जंगली फलों को उपयोग में ला सकें।

मिसाल के तौर पर, पुंगसान काउंटी में सरपत बहुतायत से पाया जाता है। उसकी सींकों से भारी संख्या में ट्रंक तैयार किये जाने चाहिए।

अब मैं भूगर्भीय अन्वेषणों की संक्षेप में चर्चा करना चाहूंगा।

रयांगगांग प्रान्त में भरपूर खनिज साधन विद्यमान हैं। लेकिन चूंकि भूगर्भीय अन्वेषण अभी तक गम्भीरतापूर्वक नहीं किये गये हैं, अतः कहा जा सकता है कि इस क्षेत्र में रयांगगांग प्रांत अभी भी अछूती धरती ही है। खनिज साधनों का और अधिक उपयोग करने के लिए प्रांत में तमाम स्तरों पर पार्टी संगठनों को भूगर्भीय अन्वेषक दल के साथ गहरे सहयोग से काम करना चाहिए।

२ : पार्टी कार्य पर

पिछले वर्षों में रयांगगांग प्रांत में पार्टी संगठनों के काम में कुछ प्रगति हुई है, लेकिन बहुत-सी खामियां अभी तक कायम हैं। पार्टी कार्य में मुख्य खामी यह है कि नौकरशाही और आत्मनिष्ठता का बहुत बोलबाला है और पार्टी की जन लाइन को पूरी तरह अमल में नहीं लाया जाता।

बेशक आज हम इस खामी की कोई पहली बार चर्चा नहीं कर रहे हैं।

जब हम १९५८ में यहां आये थे, तो हमने रियांगगांग प्रांत में पार्टी संगठनों का यह एक महत्वपूर्ण कर्तव्य निश्चित किया था कि पार्टी कार्य में नौकरशाही और आत्मनिष्ठता को समाप्त किया जाए तथा कार्यकर्ताओं और अवाम के साथ उचित ढंग से काम किया जाए। लेकिन आपने पार्टी द्वारा सौंपे गये इस कर्तव्य को पर्याप्त रूप से पूरा नहीं किया। रयांगगांग प्रांत में कोई भी आर्थिक कार्य, जिसमें कृषि, इमारती लकड़ी उद्योग और स्थानीय उद्योग शामिल हैं, कामयाबी से जो सम्पन्न नहीं हो सका है, और उसका मुख्य कारण यही है कि पार्टी कार्य भलीभांति नहीं किया गया है।

कार्यकर्ताओं के साथ कार्य में नौकरशाही और आत्मनिष्ठता अपने आपको गम्भीरतम रूप में अभिव्यक्त होते रहे हैं। जैसा कि हमने जोर दिया है, कार्यकर्ताओं के साथ कार्य पार्टी समिति का प्रथम और सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य होता है। उनके साथ पर्याप्त कार्य तमाम कामों की कामयाबी की पूर्व शर्त है। कार्यकर्ताओं के साथ कार्य से हमारी मुराद यह है कि अच्छे ढंग से काम करने के लिए उनको लगातार मदद दी जाए, उन्हें योजनाबद्ध ढंग से शिक्षा और प्रशिक्षण दिया जाए, और इसके साथ-साथ उन्हें हमेशा ठीक से समझा जाए तथा उन पर

निगाह रखी जाए और योग्य कार्यकर्ताओं का चयन किया जाए तथा उनकी पदोन्नति की जाए।

लेकिन रयांगगांग प्रांत में पार्टी संगठन कार्यकर्ताओं को शिक्षित और प्रशिक्षित करने की बजाय यह आरोप लगा कर कि उन्होंने अपने कार्य में भूल की है, उन्हें बिना सोचे-विचारे हटा देते हैं और उन लोगों को जो यदि थोड़ी-सी सहायता मिल जाए तो अपना काम पूरा करने में पूर्णतया सिद्धहस्त होते हैं, किसी-न-किसी बहाने से बर्खास्त तक कर देते हैं।

यह कोई संयोग की बात नहीं है कि इस समय प्रांत में बहुत-से कार्यकर्ता बेचैन, हतोत्साह और अपने वरिष्ठजनों से भयभीत हैं। ऊपर से यदि कोई ऐसे निर्देश दिये भी जाते हैं जोकि वास्तविक स्थितियों से मेल नहीं खाते, तो भी वे उन्हें अनिच्छापूर्वक पूरा करते हैं, क्योंकि उन्हें डर होता है कि यदि उन्होंने ऐसा न किया तो उन्हें बर्खास्त कर दिया जाएगा। जहां वे निर्देशों पर अमल नहीं भी करते, वहां वह झूठ-मूठ रिपोर्ट दे देते हैं कि उन्होंने निर्देशों को कार्यरूप दे दिया है। वे केवल सड़क के बिलकुल पास वाली जमीन से खरपतवार हटा देते हैं और उसे उपजाऊ बना देते हैं, उन खेतों में जिन पर पर्यवेक्षक की सबसे पहले निगाह पड़ सकती हो, फसल की कटाई प्रारम्भ कर देते हैं और फिर झूठी रिपोर्ट पेश कर देते हैं कि सब काम पूरा हो गया है। अधिक उपज की रिपोर्ट देने के लिए दबाव इतना प्रबल होता है कि वे उच्चतर निकायों को प्रेषित अपनी रिपोर्ट में गले-सड़े आलुओं को भी कुल उपज में शामिल करने की हद तक बढ़ जाते हैं।

यदि कार्यकर्ताओं के साथ इसी प्रकार काम किया जाए जिस प्रकार कि आप साथी कर रहे हैं तो जान लीजिए कि वे कभी भी सृजनात्मक पहल का प्रदर्शन न कर सकेंगे और न ही अपने क्रान्तिकारी कर्तव्यों को उचित रूप से पूरा कर सकेंगे।

पार्टी संगठनों की यह कोशिश होनी चाहिए कि जब तक संभव हो, कार्यकर्ताओं को उनके कामों पर ही लगाए रखा जाए और अविवेकपूर्ण ढंग से उन्हें हटाने से बचा जाए। मात्र इस वजह से कि कार्यकर्ताओं में कुछ दोष है, उन्हें हटाने से और नये व्यक्तियों को पदोन्नति देकर उनके स्थानों पर नियुक्त करने से सब ठीक-ठाक हो जाएगा, यह सोचना भारी भूल होगी। हमारे देश की एक कहावत है, "किसी की पुत्र वधु के मधुर स्वभाव की प्रशंसा तभी होती है, जब उसकी दूसरी पुत्र वधु आ जाए।" यह कहावत स्पष्टत: आप पर लागू की जा सकती है।

आप चाहे कितनी भी बार कार्यकर्ताओं को नये व्यक्तियों से बदलते जाएं, आपको ऐसा कोई न मिलेगा जो शुरू में त्रुटि रहित हो। हमारे अधिकतर कार्यकर्ता मजदूर, किसान या बुद्धिजीवी मूल के हैं, जिनको अतीत में बड़े पैमाने के अर्थतन्त्र की व्यवस्था करने और राज्य सत्ता का संचालन करने का कोई अनुभव

नहीं है। अतः यह स्वाभाविक ही है कि उनमें अपने काम के बारे में कोई क्षमता न हो। इसके अतिरिक्त अतीत के शोषक समाज में आये पुराने विचारों के अवशेष हमारे कर्मियों के मनों में अभी विद्यमान हैं। इस वजह से जो लोग कल तक कृषि कार्य से सम्बद्ध थे, और आज कार्यकर्ता बन गये हैं, उनमें से कुछेक में झूठा गौरव मौजूद हो सकता है। और वे दिखावटी प्रदर्शन कर सकते हैं। फिर भी यदि हम मात्र इस वजह से कि वे बेकार के आदमी हैं, उन्हें बर्खास्त कर दें, तो हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि ऐसा एक भी आदमी नहीं है जो अपना कार्य करने में समर्थ हो। यह कहने की जरूरत नहीं कि हम उन लोगों को, जो हमारी पार्टी से विश्वासघात करें या राज्य का विरोध करें, सहन नहीं कर सकते। लेकिन जब तक वे ऐसा नहीं करते, हमें इस आधार पर कि उनके काम में कोई खामी है, उन्हें अंधाधुंध निष्कासित या अपदस्थ नहीं करना चाहिए।

इसके साथ ही हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि प्रमुख कार्यकर्ता अपने पदों पर ५ से १० वर्ष तक कार्य करें। उदाहरण के लिए एक काउंटी पार्टी समिति अध्यक्ष को कम के कम दस वर्ष तक उसकी काउंटी में काम करते रहने दिया जाना चाहिए। इस तरह कार्यकर्ता के लिए ऐसी स्थितियां आश्वस्त की जानी चाहिए, जिनमें वे अपने कामों का ठंडे दिमाग से और गम्भीरतापूर्वक गहरा अध्ययन कर सकें।

हमारे पार्टी अधिकारियों को चाहिए कि सरकारी निकायों के कार्यकर्ताओं तथा कृषि, शहतीर उद्योग और खनन समेत तमाम आर्थिक क्षेत्रों में काम करने वाले कार्यकर्ताओं को खुले दिल से शिक्षित करें और मदद दें। उन्हें चाहिए कि ऐसे तमाम कार्यकर्ताओं को निरन्तर शिक्षित करते रहें, ताकि वे गलतियां करने से बच सकें। इसका अर्थ यह कतई नहीं है कि कार्यकर्ताओं की आलोचना न की जाए। जब कार्यकर्ता अच्छे ढंग से काम न करें तो हमें उनकी अविलम्ब आलोचना करनी चाहिए। आलोचना करना कार्यकर्ताओं को शिक्षित करने का एक स्वाभाविक तरीका है।

आलोचना कर्मियों को बर्खास्त करने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें बेहतर कर्मी बनाने के लिए की जानी चाहिए। इस प्रकार तमाम कर्मियों को समुचित ढंग से शिक्षित कर उनमें यह भावना पैदा की जानी चाहिए कि वे आलोचना के भय के बिना ही अपनी भूलों को दिलेरी से सुधारने में सक्षम हों।

इसके अलावा पार्टी अधिकारियों को कार्यकर्ताओं का ख्याल रखना, उनका खूब सम्मान करना और उनकी राय का आदर करना सीखना होगा। यदि पार्टी अधिकारी केवल कार्यकर्ताओं को झाड़ बतायें, उनके प्रति सख्ती का रवैया अपनाये रखें और उनकी सम्मतियों को अनदेखी करें तो कोई भी स्वेच्छया पार्टी संगठनों

के पास आकर उन्हें सूचित न करेगा कि स्थिति वास्तव में क्या है। यह बात पार्टी कार्य में अनिवार्यत: आत्मनिष्ठता की दिशा में ले जाएगी और पार्टी संगठनों के लिए अपनी भूमिका उचित रूप से निभा पाना असंभव बना देगी।

हमारे पार्टी अधिकारियों को कार्यकर्ताओं के प्रति उतना ही दयालु होना चाहिए जितनी कि माता अपने बच्चों के प्रति होती है, काम में और काम के बाहर हमेशा उनमें दिलचस्पी लेनी चाहिए, और उनके समक्ष यदि कोई जटिल समस्या उभर आये तो उसे तत्काल समझ कर सुलझाने में मदद करनी चाहिए।

उन्हें कार्यकर्ताओं के सुझावों पर पूरा ध्यान देना चाहिए। निचले स्तर के कार्यकर्ता अपनी राय पेश करने से पूर्व उस पर विभिन्न पहलुओं से विचार करते हैं। अत: उनकी राय को एकदम रद्द नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि मौके पर गम्भीरतापूर्वक उसके बारे में विचार करना चाहिए। यदि उनके विचार सही निकलें तो आपको उनका समर्थन करना चाहिए और उन्हें क्रियान्वित करने में सक्रिय मदद देनी चाहिए और अगर उनके विचार तथ्यों के अनुरूप न हों और गलत हों, तो आपको प्रस्तावों के समक्ष धैर्यपूर्वक इसे स्पष्ट करना चाहिए ताकि वे समझ सकें कि वे विचार ऐसे क्यों हैं। इसी तरह तमाम कार्यकर्ता स्वेच्छा से पार्टी समिति के पास आएंगे और अपने कार्य में उत्पन्न जटिल समस्याओं के बारे में या अपने व्यक्तिगत मामलों के बारे में भी खुल कर बातचीत करेंगे।

इस तरह कार्यकर्ताओं का मूल्यांकन कर, उन्हें शिक्षित कर तथा उचित सहायता दे कर, हमें उन्हें प्रशिक्षित कर ऐसे शानदार इन्सान बनाना चाहिए, जो अपने कार्य में अपने दिमाग का प्रयोग करें, सक्रिय रूप से सृजनात्मक विचार पेश करें और सौंपे गये कार्यों को स्वतन्त्रतापूर्वक सम्पन्न करें—हमें उनको ऐसे इन्सान नहीं बनाना चाहिए जो केवल वह करने को बाध्य हो, जिसके लिए उन्हें आदेश दिया जाए।

र्यांगगांग प्रान्त में पार्टी संगठनों को न केवल कार्यकर्ताओं के साथ कार्य में, बल्कि अवाम के साथ कार्य में भी आत्मनिष्ठता और नौकरशाही को तजना होगा और पार्टी की जन लाइन को व्यावहारिक रूप देना होगा।

जब तक हम अवाम पर विश्वास नहीं करते और उनका दिल नहीं जीत लेते, तब तक हम पार्टी की नीतियों को वास्तविकता का रूप नहीं दे सकते और न ही हम अपने क्रान्तिकारी कर्तव्यों के साथ कामयाबी से आगे बढ़ सकते हैं। जन लाइन की तामील क्रान्ति और निर्माण में विजय के लिए बुनियादी गारंटी है। यही वजह है कि हमारी पार्टी ने जन लाइन को कार्यरूप देने की जरूरत पर निरन्तर जोर दिया है।

अतीत में, प्रचंड जापानी साम्राज्यवादियों के खिलाफ १५-वर्षीय लम्बे संघर्ष

में हमारे छापामार विजयी हुए, क्योंकि उन्होंने "जिस तरह मछली बिना पानी जिन्दा नहीं रह सकती" उसी तरह छापामार बिना जनता के जिंदा नहीं रह सकते," के नारे का अनुसरण करते हुए हमेशा जनता पर भरोसा किया, उसके साथ मधुर सम्बन्ध बनाये रखे और उनका सक्रिय समर्थन प्राप्त किया।

यदि हमें पार्टी की जन लाइन को कार्यरूप देना है, तो हमें पहले जनता की मांगों को सुनना होगा और उसके हितों की रक्षा के लिए सोत्साह कार्य करना होगा। जब कभी आपको किसी समस्या का सामना करना पड़े तो आपको हमेशा पहले से सोच लेना चाहिए कि उसका अवाम के हितों पर क्या असर पड़ेगा।

किन्तु रयांगगांग प्रांत में कई अधिकारी अवाम की रायों को स्वीकार किये बिना और इस बात पर कान दिये बिना कि उनके द्वारा किये जा रहे काम को अवाम पसन्द करते हैं या नहीं करते हैं, आत्मनिष्ठ ढंग से काम कर रहे हैं। वे अवाम के हितों पर कुठाराघात करने का दुःसाहस करते हैं। वास्तव में आप जन लाइन को पूरा करने की जरूरत पर जोर देने, छोंगसान-री भावना, छोंगसान-री पद्धति और ताएआन कार्य-प्रणाली के बारे में चर्चा करने के लिए शब्दों का दरिया बहा देते हैं, लेकिन आप उसे अमल में नहीं लाते।

क्प्सान काउंटी में नेतृत्वकारी कर्मियों ने आलू बुवाई क्षेत्र प्राप्त करने के विचार पर अमल करते हुए और किसानों के विचारों की उपेक्षा करते हुए ऐसी उर्वर भूमि पर, जहा सैकड़ों वर्षों से दूसरी फसलें बोयी जाती रही हैं, आलू की खेती करने की हिदायतें जारी कर दीं। इसका कृषि पर भारी असर पड़ा। इससे पूर्व उनहुंग काउंटी में भी जुलाई में जब कि आलू बोने का मौसम खत्म हो चुका था, इस बिना पर कि अभी तक ४०० छोंगबो आलू के खेत सुरक्षित नहीं किये जा सके थे, किसानों को उन खेतों में आलू की बुवाई के लिए हल चलाने की हिदायत दे दी गयी जिनमें फसलें पहले से बोयी जा चुकी थीं। हमें बताया गया है कि जब किसानों ने कहा कि जुलाई में बोये गये आलू नहीं उगेंगे, तो पार्टी भावना के अभाव का आरोप लगा कर उन पर दहाड़ते हुए, नेतृत्वकारी कर्मियों ने उन्हें इस योजना को अमल में लाने को मजबूर किया।

जब हमने इससे पहले कांगसो काउंटी में छोंगसान-री के पार्टी संगठन का मार्गदर्शन किया, तो हमने किसानों के विचारों पर कान न देने और उन्हें नौकरशाही ढंग से आदेश देने और इस प्रकार कृषि को विफलताओं का शिकार बनाने वाले नेतृत्व की कार्रवाइयों की कटु आलोचना की। लेकिन यहां के नेतृत्वकारी कर्मियों ने उस आलोचना से कोई सबक नहीं सीखा और वे अब भी ऐसे ही तौर-तरीकों से काम ले रहे हैं। यही वजह है कि कृषि में कोई ठोस परिणाम नहीं निकले हैं और पार्टी की नीतियों को सही ढंग से कार्यरूप नहीं दिया जा सका है।

इसके अलावा र्यांगगांग प्रान्त में नेतृत्वकारी कर्मियों ने किसानों को इस आधार पर अपनी साग बाड़ियों से मक्के उखाड़ डालने को मजबूर किया कि उन्हें आलू या पटुआ बोने चाहिए थे। उन्होंने किसानों को अपनी साग-बाड़ियों में उगे थोड़े से आलू भी राज्य को बेचने के लिए विवश किया और इसके लिए यह तर्क पेश किया कि वे "अन्न की फसलें" हैं। इस धरती पर हम इससे बढ़कर और कौन-सा नौकरशाही कृत्य देख सकते हैं ? यदि आप इस ढंग से काम करते हैं तो इससे किसी को भी सन्तोष का अनुभव नहीं होगा।

इससे भी बदतर बात यह है कि र्यांगगांग प्रांत में लोगों को कुत्तों के संवर्धन की इजाजत नहीं है। निःसन्देह, यह पहली बार नहीं है, जबकि मैंने इस मामले का जिक्र किया हो। १६५८ में, जब हमने उत्तर हामग्योंग प्रान्त के किमछाएक जिले की यात्रा की, तो हमने नेतृत्वकारी कर्मियों की इस बात के लिए तीव्र आलोचना की कि उन्होंने कुत्तों के नस्ल-संवर्धन की मनाही कर दी थी, क्योंकि उनके विचार में यह सार्वजनिक सफाई के लिए एक मुसीबत थी। और इस बार साम्जियोन काउंटी में हमने वहां के कर्मियों से यही कुछ सुना है। कुछ साथियों ने कहा कि उन्होंने ऐसा इसलिए किया कि कुत्ते पागल हो जाते हैं और लोगों को काटते हैं। जब कोई कुत्ता पागल हो जाए, तो उसे मार दिया जाना चाहिए, लेकिन स्वस्थ कुत्तों के संवर्धन पर क्यों पाबन्दी लगायी जाए ?

चाहे समसु और कप्सान के लोग कितने भी आज्ञाकारी क्यों न हों, यदि आप उन्हें यह कह कर परेशान करते रहेंगे कि आप दलदलों में आलू बोएं, धान के खेतों को समाप्त कर दें, सागबाड़ियों से मक्का उखाड़ फेंके, वहां पैदा किये गये तमाम आलू राज्य को बेच दें और अपने कुत्तों को त्याग दें तो वे निश्चित रूप में बहुत खुश नहीं होंगे। पुराने सामन्ती दिनों या जापानी साम्राज्यवादी शासन काल के सरकारी अधिकारियों के हाथों में फर्क क्या है ? यदि आप इसी ढंग से काम करते रहेंगे, तो आप अवाम से और भी ज्यादा कट जाएंगे और र्यांगगांग प्रान्त के समक्ष प्रस्तुत कर्तव्यों को पूरा करने में असमर्थ रहेंगे।

इसके अतिरिक्त और भी कई बातें हैं, जो आपके आत्मनिष्ठ और नौकरशाही कार्य-पद्धति को अभिव्यक्त करती हैं। जैसा कि कल आपने अपने भाषणों में कहा है, आप अवाम के बीच जाने की बजाय डेस्क पर बैठ कर आत्मनिष्ठ ढंग से योजनाओं को तैयार करते हैं और फिर नौकरशाही ढंग से अपने मातहतों पर उन्हें थोप देते हैं। अतएव यह साफ है कि ऐसी योजनाओं की सही तारीफ नहीं हो सकती।

आज यहां प्रान्तीय पार्टी समिति के अधिकारी और काउंटी पार्टी समितियों

तथा री पार्टी समितियों के अध्यक्ष उपस्थित हैं। आप इससे पूर्व अपने कार्य में जो आत्मनिष्ठ और नौकरशाही तौर-तरीके काम में लाये हैं, उनके गम्भीर परिणामों का आपको पता होना चाहिए और ऐसी गलतियों को दुहराया न जाना चाहिए।

कृषि, शहतीर उद्योग और र्यांगगांग प्रान्त के अर्थतन्त्र के अन्य तमाम क्षेत्रों के बारे में हमारी पार्टी की सभी नीतियां सही हैं। लेकिन पार्टी की नीति कितनी भी अच्छी क्यों न हो और उसके क्रियान्वयन के लिए उपायों पर कितना भी विचार-विनिमय क्यों न हो, यदि उस नीति को लागू करने के लिए उत्तरदायी अधिकारी नौकरशाही ढंग से काम करते हैं और पार्टी की जन लाइन को पूरा करने में असमर्थ रहते हैं तो उसे कामयाबी से अमल में नहीं लाया जा सकता।

अत: र्यांगगांग प्रान्त के पार्टी संगठनों को निश्चयात्मक रूप से अपने कार्य में अपने-आपको आत्मनिष्ठता और नौकरशाही से छुटकारा दिलाना होगा और पार्टी की जन लाइन को पूरा करने के लिए नये उत्साह से प्रयास करना होगा। जनहितों के समर्थन में परचम बुलन्द करना तमाम कार्यकर्ताओं को कार्य का एक लौह-नियम मानना चाहिए और उन्हें अवाम के बीच जाना चाहिए, वे जो कुछ कहें उसे सुनना चाहिए, उन्हें समझाना चाहिए, राजी करना चाहिए और उनके स्वैच्छिक उत्साह तथा सृजनात्मक पहल को पुरजोर तरीके से प्रेरित करना चाहिए। छोंगसान-री भावना और छोंगसान-री कार्य-पद्धति का स्पष्टत: यही आशय है और यह ताएआन कार्य प्रणाली की बुनियादी तौर पर पूर्व आवश्यकता है।

केवल दिखावटी नारे या साइनबोर्ड लगाकर या क्रान्ति का संग्रहालय बना कर आप कोरियाई कम्युनिस्टों के लाल खून से रंगे क्रान्तिकारी युद्ध क्षेत्र में जी रहे होने के सम्मान को जीवित नहीं रख सकते। आपको पार्टी की जन लाइन को अन्य किसी भी प्रान्त की तुलना में अधिक अनुकरणीय ढंग से अमल में उतार कर क्रान्तिकारी योद्धाओं के आदर्श का अनुसरण कर वास्तविक कार्यों द्वारा इस गौरव को बुलन्द रखना होगा। ऐसा करके ही आप क्रान्तिकारी संग्रामों के इस क्षेत्र में रहने के अधिकारी बन सकेंगे।

अब मैं संशोधनवाद के विरुद्ध संघर्ष को तेज करने के बारे में कुछ शब्द कहना चाहता हूं।

संशोधनवाद एक विचारधारा है, जो मार्क्सवाद-लेनिनवाद के मूल सिद्धान्तों को नकारता है और क्रान्ति की आवश्यकता से इनकार करता है। संशोधनवादी कहते हैं कि यदि अन्य लोगों ने क्रान्ति का निर्माण जारी रखा तो हो सकता है, युद्ध छिड़ जाए और फिर उन्हें क्षति उठानी पड़े। अत: वे साम्राज्यवाद के विरुद्ध

संघर्ष और उपनिवेशों में राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष, दोनों से दूर रहने का उपदेश देते हैं।

यह उचित ही है कि हम संशोधनवाद के विरुद्ध लड़ें। हमने अभी क्रान्ति पूरी नहीं की है। हमने अपने क्षेत्र के केवल आधे भाग और अपनी एक-तिहाई जनता को मुक्त कराया है। अतः कोरियाई कम्युनिस्टों पर यह दायित्व आता है कि वे न-केवल उत्तरी आधे भाग में समाजवाद के निर्माण को बढ़ावा दें, बल्कि अमरीकी साम्राज्यवादियों को दक्षिणी आधे भाग से खदेड़ बाहर करें और हमारे राष्ट्र को मुक्त करें।

जब देश का आधा भाग विदेशी साम्राज्यवाद के औपनिवेशिक जुए तले पड़ा हो, तो हम कैसे साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष से बाज रह सकते हैं?

हम क्रान्ति को तज नहीं सकते, न ही हम साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ना बन्द कर सकते हैं। संशोधनवादी चाहे कैसी भी चालें चलें, हमें क्रान्ति को जारी रखना होगा और जरा भी ढिलाई बरते बिना साम्राज्यवाद के विरुद्ध दृढ़तापूर्वक लड़ते रहना होगा। क्रान्ति को जारी रखने के लिए पूरी जनता को क्रान्तिकारी भावना से पूर्णतया लैस करना होगा।

इस उद्देश्य से हमारे पार्टी सदस्यों को, जो जनता को शिक्षित करने के लिए जिम्मेदार हैं, सबसे पहले अपने-आप को क्रान्तिकारी विचारों से लैस करना होगा। और खासतौर पर क्रान्तिकारी संग्रामों के इस क्षेत्र में—वह क्षेत्र जिसमें हमारे क्रान्तिकारी पुरखों के रक्तरंजित संघर्ष के चिन्ह बिखरे हैं—रहने और काम करने वाले तमाम कार्यकर्ताओं और मेहनतकश अवाम को चाहिए कि वह स्वयं को क्रान्तिकारी भावना से दूसरों से ज्यादा सज्जित करें।

आर्थिक निर्माण के क्षेत्र में भी हमें आत्मनिर्भरता की क्रान्तिकारी भावना प्रदर्शित करते हुए एक स्वतन्त्र राष्ट्रीय अर्थतन्त्र का निर्माण करना चाहिए। अपने पैरों पर खड़े होना कम्युनिस्टों की महान क्रान्तिकारी भावना का परिचायक है। स्वावलम्बन द्वारा एक स्वतन्त्र राष्ट्रीय अर्थतन्त्र का निर्माण करके ही हम अपने समक्ष उपस्थित क्रान्तिकारी कर्तव्यों को सफलतापूर्वक सम्पन्न कर सकते हैं। हमें अपने ही प्रयासों द्वारा देश के पुनरेकीकरण के क्रान्तिकारी कर्तव्य को पूरा करना होगा। और हमें भविष्य में पूरे कोरिया में समाजवाद तथा कम्युनिज्म का निर्माण करना होगा। इसके लिए हमें एक स्वतन्त्र राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के विकास द्वारा समाजवाद की ठोस भौतिक और तकनीकी बुनियाद डालनी होगी। जब सीमाएं लुप्त हो जाएंगी और विश्वव्यापी पैमाने पर कम्युनिज्म साकार हो जाएगा तो दूसरी ही स्थिति उत्पन्न हो जाएगी। लेकिन जब तक सीमाएं कायम हैं और हरेक देश के अपने-अपने क्रान्तिकारी कर्तव्य विद्यमान हैं और हर देश अपने आर्थिक

जीवन की व्यवस्था स्वयं करता है, तब तक हरेक के अपने-अपने ही साधन होंगे। खासतौर पर, चूंकि दक्षिणी आधे भाग में बहुत-से लोग अभी भी अमरीकी और जापानी साम्राज्यवादियों पर निर्भरता चाहते हैं, इसलिए हमें स्वतन्त्र राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की रचना के नारे को अभी और भी बुलन्द रखना होगा।

अन्त में मैं कहना चाहता हूं कि मुझे दृढ़ विश्वास है कि आप प्रान्तीय पार्टी समिति के इस पूर्णाधिवेशन में प्रदर्शित भावना के अनुरूप अपने काम में और भी सुधार तथा दृढ़ता लाकर र्यांगगांग प्रान्त के समक्ष उत्पन्न तमाम कर्तव्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न करेंगे।